दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला-२६

श्रीहेरुकाभिधानं

चक्रसंवरतन्त्रम्

भवभट्टकृतया विवृत्या समेतम्

༄༅། །རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་དཔལ་བདེ་མཆོག་ཉུང་ངུ་དང་།

བྷབ་བྷཊྚ་ཡིས་མཛད་པའི་དཀའ་འགྲེལ་དང་བཅས་པ།

པོད་གཉིས་པ།

द्वितीयो भागः

सम्पादकः
जनार्दनशास्त्री पाण्डेयः

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द-२५४६ खीस्ताब्द-२००२

RARE
BUDDHIST
TEXTS
SERIES
26

CAKRASAṂVARATANTRAM
with the VIVṚTI COMMENTARY

Vol. II

CIHTS
SARNATH
2002

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला-२६

श्रीहेरुकाभिधानं

चक्रसंवरतन्त्रम्

भवभट्टकृतया विवृत्या समेतम्

༄༅། །རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་དཔལ་བདེ་མཆོག་ཉུང་ངུ་དང་།

བྷབ་བྷཊྚ་ཡིས་མཛད་པའི་དཀའ་འགྲེལ་དང་བཅས་པ།

པོད་གཉིས་པ།

द्वितीयो भागः

सम्पादकः

जनार्दनशास्त्री पाण्डेयः

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द-२५४६ ख्रीस्ताब्द-२००२

RARE
BUDDHIST
TEXTS
SERIES
26

CAKRASAṂVARATANTRAM
with the VIVṚTI COMMENTARY

Vol. II

CIHTS
SARNATH
2002

चक्रसंवरतन्त्रम्

भवभट्टकृतया विवृत्या समेतम्

द्वितीयो भागः

རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་དཔལ་བདེ་མཆོག་ཉུང་ངུ་དང་།

བླ་བ་བྷ་ཊ་ཡིས་མཛད་པའི་དཀའ་འགྲེལ།

པོད་གཉིས་པ།

RARE BUDDHIST TEXTS SERIES - 26

ŚRĪHERUKĀBHIDHĀNAM CAKRASAMVARATANTRAM
with the VIVṚTI COMMENTARY of BHAVABHAṬṬA

[Vol. II]

Editor
Janardan Shastri Pandey

RARE BUDDHIST TEXTS RESEARCH UNIT
CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2546 C.E. 2002

RARE BUDDHIST TEXTS SERIES - 26

Co-Editors

Thakur Sain Negi
Thinlay Ram Shashni
Vijaya Raj Vajracharya
Banarsi Lal
Tsering Dolkar
Ranjan Kumar Sharma

Chief Editor : *Prof. Geshe Ngawang Samten*

Publication Incharge : *Sri Samten Chhosphel*

First Edition : 550 copies, 2002

Price : H.B. Rs. 400.00 (set of 2 vols.)
P.B. Rs. 300.00 (set of 2 vols.)

© Copyright by Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi -221007, India, 2002. All rights reserved.

Publisher :
Central Institute of Higher Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221007, India.

Printed at Surabhi Printers, Maldahiya, Varanasi

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला-२६

श्रीहेरुकाभिधानं

चक्रसंवरतन्त्रम्

भवभट्टकृतया विवृत्या समेतम्

༄༅། །རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་དཔལ་བདེ་མཆོག་ཉུང་ངུ་དང་།

ཧྣབ་ཧྣཊྚ་ཡིས་མཛད་པའི་དཀའ་འགྲེལ་དང་བཅས་པ།

པོད་གཉིས་པ།

द्वितीयो भागः

सम्पादकः

जनार्दनशास्त्री पाण्डेयः

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द-२५४६ ख्रीस्ताब्द-२००२

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला-२६

सम्पादक-मण्डल

ठाकुरसेन नेगी
ठिनलेराम शाशनी
विजयराज वज्राचार्य
बनारसी लाल
छेरिङ् डोलकर
रञ्जनकुमार शर्मा

प्रधान सम्पादक : प्रो० गेशे ङवङ समतेन
प्रकाशन प्रभारी : श्री समतेन छोस्फेल

प्रथम संस्करण : ५५० प्रतियाँ, २००२

मूल्य : (सेट) सजिल्द : रु० ४००.००
अजिल्द : रु० ३००.००

© केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी - २२१००७
२००२, प्रकाशन सम्बन्धी सभी अधिकार सुरक्षित ।

प्रकाशक : केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी-२२१००७

मुद्रक : सुरभि प्रिन्टर्स, मलदहिया, वाराणसी ।

विषय-सूची

विषय-सूची

संस्कृत v-vii

भोट viii-ix

विषयः पृष्ठे

षड्विंशे पटले **४८३-४८७**

मन्त्रानुशंसा, शिष्यपरीक्षाविधिवर्णनं च ४८३

सप्तविंशे पटले **४८८-४९७**

वीरसाधकेनाचरणीयचर्याव्रतपूजाविधेर्निदर्शनम् ४८८

अष्टाविंशे पटले **४९८-५०३**

अध्यात्महोमवर्णैकत्वविधिवर्णनम् ४९८

एकोनत्रिंशे पटले **५०४-५०६**

श्रीहेरुकयोगिनोऽध्युषिते देशे सत्त्वानामर्थायावस्थितिः,
दूतीलक्षणशक्त्यवस्थादिवर्णनविधानं च ५०४

त्रिंशे पटले **५०७-५१३**

मूलमन्त्रादपरमन्त्रस्य मुरजबन्धेन मन्त्रोद्धारविधिवर्णनम् ५०७

एकत्रिंशे पटले **५१४-५१८**

पूर्वपटलयोः (२७,२८) उद्दिष्टानां पूजा बलिहोमक्रियाणां
निर्देशनं वीरवीरेश्वरीणां करे न्यस्तानां पूजाविधिश्च ५१४

द्वात्रिंशे पटले **५१९-५२३**

पूजादिद्रव्यार्थं पशूनां तिर्यञ्चां च गणना, महाप्रेतसाधनविधिश्च ५१९

त्रायस्त्रिंशे पटले **५२४-५२६**

मुद्राया भक्ष्यादिकृता गुह्यपूजा सत्कारपूर्वकं कर्तव्येति
निर्देशो विधानं च ५२४

चतुस्त्रिंशे पटले **५२७-५२९**

अद्वयदूतीसमूहाकर्षणाय होमविधिवर्णनम् ५२७

पञ्चत्रिंशे पटले	**५३०-५३२**
अद्वयकर्मसमापत्त्या शान्तिकादिकर्मणां कालमृत्युवञ्चनस्य च विधिनिरूपणम्	५३०
षट्त्रिंशे पटले	**५३३-५३४**
कर्मप्रसराणां सिद्धये बहिर्मुद्राया पूजाविधानम्	५३३
सप्तत्रिंशे पटले	**५३५-५३७**
वशीकरणाधिकारे भैषज्यादिहोमप्रकारवर्णनम्	५३५
अष्टत्रिंशे पटले	**५३८-५४१**
योगिनीस्थानानामेव गुह्यवीरालयत्ववर्णनम्	५३८
एकोनचत्वारिंशे पटले	**५४२-५४३**
डाकिन्युपलम्भस्याष्टविधाट्टहासस्य च विधिवर्णनम्	५४२
चत्वारिंशे पटले	**५४४-५४५**
पञ्चवर्णवशीकरणस्य महामुद्रासेवनविधेश्च वर्णनम्	५४४
एकचत्वारिंशे पटले	**५४६-५५०**
उत्पन्नसामर्थस्य योगिनः कर्मसिद्धिस्वरूपवर्णनं चतुर्विंशति-योगिनीनां तावत्संख्याकगोप्याक्षरेषु न्यासविधानं च	५४६
द्विचत्वारिंशे पटले	**५५१-५५३**
हासमन्त्रस्य योगिनीरूपमायायाश्च विधिवर्णनम्	५५१
त्रिचत्वारिंशे पटले	**५५४-५५९**
योगिन्यवलोकन-नग्नपूजा-सप्ताक्षरकर्मविधाननिरूपपणम्	५५४
चतुश्चत्वारिंशे पटले	**५६०-५६२**
षड्योगिनीनां सप्ताक्षरमन्त्रद्वारा साक्षात्करणविधानम्	५६०
पञ्चचत्वारिंशे पटले	**५६३-५६८**
षड्योगिनीकवचमन्त्रेण शेषाक्षरमन्त्रषट्कस्य कर्मविधिप्रसरः	५६३
षट्चत्वारिंशे पटले	**५६९-५७१**
हकारपञ्चकेन हस्तौ सम्मर्द्य विविधसिद्धिसाधनविधानम्	५६९

सप्तचत्वारिंशे पटले **५७२-५७४**

सर्वबुद्धडाकिनीमन्त्रस्य सर्वकर्मकर्तृत्वविधानवर्णनम् ५७२

अष्टचत्वारिंशे पटले **५७५-५७९**

सर्वडाकिन्यालयस्य वज्रवाराहीमन्त्रस्य तद्गोप्यमण्डलस्य च विधानम् ५७५

एकोनपञ्चाशे पटले **५८०-५८२**

सप्तजन्मसाध्यं पश्वादिरूपपरिवर्तनसाधनविधानम् ५८०

पञ्चाशे पटले **५८३-५८७**

वश्यहोमपीठादिभूमिनिर्देशनम् ५८३

एकपञ्चाशे पटले **५८८-५९७**

भावनापिण्डार्थादिनिरूपणम् ५८८

फलभोगं विना कर्मनाशो न भवति, उपायेन तद्विशुद्धिरेव भवतीति विचार: (टी०) ५८९

ग्रन्थानुशंसा ५९०

भोट-संस्करण **६०१-८९९**

परिशिष्टानि **९००-९४९**

[क]- चक्रसंवरतन्त्र-श्लोकार्धानुक्रमणी (संस्कृत) ९००-९२४

[ख]- चक्रसंवर-गद्यानुक्रमणी (संस्कृत) ९२५-९२६

[ग]- चक्रसंवरविवृतावुद्धृतवचनानुक्रमणी (संस्कृत) ९२७-९२९

[घ]- संकेतसूची (संस्कृत) ९३०

[ङ]- चक्रसंवर-श्लोकानुक्रमणी (भोट) ९३१-९४७

[च]- चक्रसंवरविवृतावुद्धृतवचनानुक्रमणी (भोट) ९४८-९४९

*

དཀར་ཆག

ལེའུ།	མཚན་བྱང་།	ཤོག་གྲངས།
༢༦	སློབ་མ་ཡོངས་སུ་བརྟག་པ་དང་སྒོམ་པའི་ཚོ་གའི་ལེའུ།	༦༠༡
༢༧	སྤྱོད་པ་དང་བརྟུལ་ཞུགས་དང་མཆོད་པ་དང་གཏོར་མའི་ཚོ་གའི་ལེའུ།	༦༡༤
༢༨	ནང་གི་སྦྱིན་སྲེག་དང་རིགས་ཅན་དང་ལྡན་པའི་ཚོ་གའི་ལེའུ།	༦༤༠
༢༩	ཕོ་ཉའི་མཚན་ཉིད་དང་ནུས་པའི་གནས་སྐབས་ཀྱི་ཚོ་གའི་ལེའུ།	༦༥༦
༣༠	ཛྷ་ཛ་བཅིང་བའི་སྔགས་ཀྱི་བཏུ་བའི་ལེའུ།	༦༦༤
༣༡	བཟའ་བ་དང་སྦྱིན་སྲེག་དང་གཏོར་མའི་བྱ་བ་ལ་ལག་པའི་བརྡའི་ཚོ་གའི་ལེའུ།	༦༨༢
༣༢	དུད་འགྲོ་ཞུགས་དང་རོ་ལངས་སྒྲུབ་པ་དང་བསྐྱེད་པའི་རིམ་པའི་ཚོ་གའི་ལེའུ།	༦༩༦
༣༣	གསང་བའི་མཆོད་པ་དང་བསྙེན་བཀུར་གྱི་མཆོད་པའི་ལེའུ།	༧༠༩
༣༤	ཕོ་ཉ་མོའི་སྦྱིན་སྲེག་དང་ལས་ཀྱི་ཚོ་གའི་ལེའུ།	༧༡༧
༣༥	གཉིས་སུ་མེད་པའི་ལས་དང་དུས་མ་ཡིན་པར་འཆི་བ་བསླུ་བའི་ཚོ་གའི་ལེའུ།	༧༢༤
༣༦	དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་མཆོད་པ་དང་ལས་ཀྱི་ཚོ་གའི་ལེའུ།	༧༣༡
༣༧	ནང་གི་བདག་ཉིད་ཀྱི་དབང་དུ་བྱ་བའི་ཚོ་གའི་ལེའུ།	༧༣༥
༣༨	རྣལ་འབྱོར་མའི་སྒྲུབ་པའི་ས་དང་གསང་བའི་དཔའ་བོའི་གནས་ཀྱི་ཚོ་གའི་ལེའུ།	༧༤༢
༣༩	བལྟ་བ་དང་ཧ་ཧར་དགོད་པའི་ཚོ་གའི་ལེའུ།	༧༥༣
༤༠	རིགས་ལྔ་པོ་དབང་དུ་བྱ་བ་དང་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་བསྙེན་པའི་ཚོ་གའི་ལེའུ།	༧༥༧
༤༡	ཡི་གེ་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞིའི་དཀྱིལ་འཁོར་དགོད་པའི་ཚོ་གའི་ལེའུ།	༧༦༣

༤༢ བཞད་པའི་སྟགས་དང་མཁའ་འགྲོ་མའི་གཟུགས་ཀྱི་སྒྱུ་མའི་ཆོ་གའི་ལེའུ། ༧༧༦

༤༣ ཉེ་བའི་སྙིང་པོའི་ལས་སྒྲུབ་པའི་ཆོ་གའི་ལེའུ། ༧༨༥

༤༤ རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་གི་ཡི་གེ་བདུན་གྱི་ལས་ཀྱི་ཆོ་གའི་ལེའུ། ༨༠༣

༤༥ རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་དང་ཚིག་གི་དངོས་གྲུབ་ལུང་བསྟན་པའི་ཆོ་གའི་ལེའུ། ༨༡༠

༤༦ ཡི་གེ་ཧ་ལྷའི་ལས་ཀྱི་ཆོ་གའི་ལེའུ། ༨༢༥

༤༧ སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཁའ་འགྲོ་མའི་སྟགས་ཀྱི་ལས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོ་གའི་ལེའུ། ༨༣༡

༤༨ དཔའ་བོ་དང་མཁའ་འགྲོ་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གནས་གསང་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཆོ་གའི་ལེའུ། ༨༣༨

༤༩ སྐྱེ་བ་བདུན་པའི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་གཟུགས་ཡོངས་སུ་བརྗེ་བའི་ཆོ་གའི་ལེའུ། ༨༥༠

༥༠ དབང་གི་སྦྱིན་སྲེག་དང་གནས་ལ་སོགས་པའི་ས་བསྟན་པའི་ཆོ་གའི་ལེའུ། ༨༥༨

༥༡ བསྒོམ་པར་བྱ་བ་བསྡུས་པའི་དོན་ལ་སོགས་པའི་ལེའུ། ༩༧༡

*

अविकल्पितसङ्कल्प अप्रतिष्ठितमानस ।
अचिन्त्यमनसिकार निरालम्ब नमोऽस्तु ते ॥

अनालयं यथाकाशं निष्प्रपञ्चं निरञ्जनम् ।
आकाशसमचित्तोऽसि निरालम्ब नमोऽस्तु ते ॥

शिष्यपरीक्षासंवरविधिपटलः षड्विंशतिमः

अतः परं मन्त्रपदं त्रिषु लोकेषु न विद्यते ।
श्रीहेरुकमन्त्रं ज्ञात्वा सर्वान् मन्त्रान् परित्यजेत् ॥ १ ॥

इदानीं मन्त्रानुशंसामाह— **अत** इत्यादि। अतो मूलमन्त्रात् श्रेष्ठमन्त्रपदम्। विद्यता वज्रवाराही तस्याः सम्बोधनं **विद्यते**। नास्तीत्यस्य निर्देशो वा। **मन्त्रं** मूल-मन्त्रादिकम्। **ज्ञात्वा सर्वान् मन्त्रान् परित्यजेत्**। **श्रीहेरुकस्य मन्त्रो**ऽपि श्रीहेरुकः। तयोरभेदात्॥ १ ॥

अनुलोमविलोमेन [1]योगिन्यः संव्यवस्थिताः ।
अधोर्ध्वं सिद्धिदा नित्यमात्मदूतीं तु सर्वगाः ॥ २ ॥

चतुर्थपटलोक्तानां महावीर्यादीनां योगिनीनां क्रमन्यासमाह— **अनुलोमे**त्यादि। अनुलोमस्यान्यथाभावो विलोमोऽननुक्रमस्तेन पूर्वं **योगिन्यः संव्यवस्थिता** दर्शिताः। इदानीमनुलोमेन न्यासितव्या इति दर्शयन्नाह— **अधोर्ध्वमि**ति। अध एवोर्ध्वं कार्य-मित्यर्थः। प्रचण्डादयः ख्याता यास्ता ऊर्ध्वं चित्तचक्रादौ न्यसेदिति भावः। तत्कि-मित्याह— **सिद्धिदा नित्यमि**ति। तथाभाव्यमानाः सिध्यन्तीत्यर्थः। अत आह— **आत्मदूतीं तु सर्वगा** इति। आत्मा चित्तं चित्तचक्रमित्यर्थः। तमात्मानमारभ्येत्यर्थः। सर्वगास्त्रिचक्रगा भवन्ति। आरभ्येत्यस्य लोपः॥ २ ॥

तं दूती तु [2]सत्त्वार्थसिद्धिदं दर्शनं स्पर्शनं तथा ।
चुम्बनं गूहनं नित्यं योगपीठं विशेषतः ॥ ३ ॥

दूतीमिति प्रथमा बहुवचनं द्वितीयैकवचनम्। **तु**रवधारणे। **तं दूती सत्त्वार्थ-सिद्धिदमि**ति। तमिति ताः दूती दूतयः। कथमित्याह— **दर्शनं स्पर्शनं तथे**ति। दर्शनमुपलम्भः साक्षात्क्रियेत्यर्थः। स्पर्शनं भावनाचित्तमित्यर्थः। यद्येतद्द्वयं स्यात्तदा

---

1. दूतयः- भो०
2. सर्वार्थ- भो०

सर्वसिद्धिदा इत्यर्थः। **चुम्बने**त्यादि। चुम्ब्यन्त इति चुम्बनाः। **गुह्यन्त** इति गूहनाः। कर्मणि ल्युट्। योगिनीपीठादिकं **योगपीठम्**। **विशेषत** इति। कामशास्त्रविहितो बन्धादिविशेषः॥ ३॥

यावन्तो योगसङ्घाताः सर्वसिद्धिकरं स्मृतम् ।
सर्वसद्भावं देयं च नान्यथा तु कदाचन ॥ ४॥

यावन्त इति निःशेषपीठादिगताः। केन इत्याह— **योगसङ्घाता** इति। योगिनी-समूहा इत्यर्थः। किं कुर्वन्तीत्याह— **सर्वसिद्धिकरं स्मृतमि**ति। सर्वसिद्धिकराः स्मृताः। नपुंसकत्वमेकवचनान्तत्वं चार्थत्वात्। [1]अथवा प्रथमाबहुवचनत्वेनाकारस्य बिन्दोरेकस्य च ह्रस्वत्वं लोपश्च नैरुक्ताद्विधेः। [**देयं**] दातव्यं **सर्वसद्भावमि**ति। सर्वथा सद्भावो भवत्यनेनेति तथा चरुभोजनादिकं तत्तथा लक्षितायास्ताभ्यो देयम्। ततस्ताः सिद्ध्यन्तीत्यत आह— **नान्यथा तु कदाचने**ति। **तु**रवधारणे। ४॥

माता भगिनी पुत्री वा भार्या वै दूतयः [2]स्थिताः ।
यस्य मन्त्रं ददेन्नित्यं तस्य सो हि विधिः स्मृतः ॥ ५॥

अनेन मात्रादिवद् योगिन्यः स्निग्धाः स्युरित्याह— **माता भगिनी पुत्री वा भार्या वै दूतयः स्थिता** इति। भार्येत्येकपत्नी । **यस्य मन्त्रं ददेन्नित्यं तस्य सो हि विधिः स्मृत** इति। यस्मै योगिने योगिनी मन्त्रमात्मानं दद्यात् सा गृहीत्वा सिद्धिं साधयेदिति समर्पयेत्, तस्य मन्त्रनयविधिः स्मृतः, तस्य तदर्थत्वात्। मन्त्रमिति सम्भाषणं वा॥ ५॥

[3]समयान्यतमं वक्ष्ये योगतन्त्रेषु दुर्लभम् ।
वामेन याति नरः स्त्री वा सिद्धि(द्ध)श्चेष्टानि गच्छन्ति(ति) ॥ ६॥

समयान्यतमं वक्ष्य इति। समयेति द्वितीयाबहुवचनलोपे। अन्यत्वं पञ्चामृतादेः। बहुत्वे चैकत्वम्। **समयान्यथ वक्ष्येऽहमि**ति पाठेऽपि तथैव। समयमन्यम्। विभक्ति-लोपे त्वथशब्दस्याकारलोपः। समयानीति नपुंसकनिर्देशो वा। समयमाह— **वामे**-

1. इतः पूर्वं 'तथागतस्यागमवचनात्'- इत्यधिकं भो०
2. स्मृताः- भो०
3. समयान्यथ वक्ष्येऽहं- भो०

नेत्यादि। **नरः** पुरुषः। वामेन नरं स्त्रियं वा स्थापयित्वाऽन्यः पुरुषः स्त्रियो **(स्त्री) वा** याति स च श्रीचक्रसंवरे योगी योगिनी वेति ज्ञायते। अतश्च **सिद्धिरिष्टानि गच्छति** नियता भवति॥ ६॥

विज्ञायते सुदूरेऽपि गृहे क्षेत्रे व्यवस्थितः ।
श्रीहेरुकपरो योग आचार्यो योगमातरः ॥ ७॥

अत आह— **विज्ञायते सुदूरेऽपी**ति। पूर्वोक्तलक्षणादर्शनेऽपि वामावर्तगमनाल्लक्ष्यते दूतो दूती वा। कुत्र दूत इत्याह— **गृह** इत्यादिना। **श्रीहेरुकपरो योग** इति। श्रीहेरुकः परः श्रेष्ठो यत्र स तथा। न तथा स्यात् श्रीहेरुकः परः स योगो न भवत्येव। श्रीहेरुकपरो योगस्तु योग एवेति भावः। अनेन योगे**नाचार्यो योगमातरश्**च योगिन्यः श्रेष्ठा इति योज्यम्॥ ७॥

अस्मिन् तन्त्रे साधकाः साधुमेव च नावमन्तव्याः ।
नाप्यधिक्षेप्तव्याः पूजनीयाश्च [1]शक्तितः ॥ ८॥

कुत इत्याह— **अस्मिंस्तन्त्रे साधकाः साधुमेव चे**ति। अस्मिन्निति नकारस्य स्वरूपावस्थानम्। साधुशब्दात्प्रथमाबहुवचनस्य खण्डमध्ये नादेश इति। **श्रीचक्रसंवरतन्त्रे**ष्वतिसाधकाः साधव एव भवन्तीत्यर्थः। अतो **नावमन्तव्या** अल्पत्वेन न बोद्धव्याः। **नाप्यधिक्षेप्तव्याः**। अतः **पूजनीयाश्च [2]शक्तितः**। यथा विभवमित्यर्थः॥ ८॥

[3]काकास्यादयोऽष्टौ ह्येते [4]भक्तिश्रद्धाविवर्धिकाः ।
सिद्धीनां कारणं नित्यं समयानां च पालनम् ॥ ९॥

भक्तिरेव कथं तेषु जातस्येत्याह—**काके**त्यादि। **काकास्यादयोऽष्टौ** देव्यो **भक्तिश्रद्धाविवर्धिका** भवन्ति। ताश्च **कारणं सिद्धीनाम्**। तानि काकास्यादिरूपाणि सिद्धिकारणानि। अष्टौ कानीत्याह— **समयाना**मित्यादि। **चो**ऽवधारणे। समयपालनं प्रथमम्॥ ९॥

---

1. भक्तितः- अभि०
2. भक्तितः- क. भो०
3. अष्टौ दूतया ह्येते- अभि०
4. मुक्ति- भो०

[1]अन्यदैवतसंयोगान्न च कामविमोहितः ।
अद्वैतमप्रतिहतं समयाचारचेष्टितम् ॥ १० ॥

अन्यदैवतसंयोगाद् न भक्षे(वे)न्निवर्तितः। किं भूतः सन्नित्याह— **कामविमोहित** इति। कामो विषयस्तत्र विमोहात्प्रथमं प्रवृत्तः। पश्चान्निवर्तित इतिभावः। तन्निवर्तनं द्वितीयम्। न विद्यते द्वैतं विकल्पो यत्र **तदद्वैतम्**, निर्विकल्पत्वं तृतीयम्। तत्समुच्चये। प्रतिहतं प्रतिघातं स्वीकृतनिश्चितसिद्धान्तवृद्धिः। न प्रतिहत**मप्रतिहतं** दृढाधिमोक्षत्वं चतुर्थम्। **समया**नां योगिनीनाम्, **आचारः** कामसेवादिः। तत्र **चेष्टितं** व्यापारः पञ्चमम्॥ १० ॥

नारीश्वर्या समन्थानं ब्रह्मचर्या तथा[2]धानम् ।
अक्रोधः श्रोत्रसञ्चार इत्यष्टौ समयाचाराः ॥ ११ ॥

नारीश्वर्या समन्थानमिति। ईश्वर्यमित्यैश्वर्यम्। वृद्धिरनित्या। न तदनीश्वर्यम्। तन्न भवतीति नारीश्वर्यं निर्विभक्तिकम्। क्व तदित्याह— **समन्थान** इति। योगिनी वज्रस्फालने। तत्रैश्वर्यमेव षष्ठम्। **ब्रह्मचर्यम**नासङ्गः कुतेत्याह— **तथाधान** इति। तथतासु यस्य बोधिचित्तस्याधानमादानं तत्रानभिनिवेशः सप्तमम्। न क्रोधो**ऽक्रोधः**। वैमुख्यमेवाभिप्रेतम्। **श्रोत्राणी**न्द्रियाणि तेषां सञ्चरन्त्यस्मिन्निति **सञ्चारो** विषयग्रामः। **चो**ऽवधारणे। विषयग्रामासङ्गतौ च वैमुख्यमष्टमं कारणम्। **इति** कारणान्**यष्टौ**। अष्टौ सिद्धिकारणानि येषु सन्ति तेषु भक्तिः प्रवर्तते। त एव पूजनीयाश्च। कुत इत्याह— **समयाचारा** इति। योगिनीव्यवहारात्॥ ११ ॥

ज्ञातव्याः साधकैर्नित्यं सिद्धाः साधने स्थिताः ।
सामान्यं सर्वतन्त्राणां न हन्तव्या निर्हेतुभिः॥ १२ ॥

समयपरिपालनादयोऽष्टौ समयाः सिद्धिकारणानीति **ज्ञातव्याः साधकैः साधने स्थिताः सिद्धाः** निश्चिताः। **सामान्यं सर्वतन्त्राणाम्**। कथम् एषां सिद्धिकारण-

---

1. अपि- अभि०
2. ध्यानम्- भो०

त्वमित्याह— **न हन्तव्या** न वध्याः। कैरित्याह— **निर्हेतुभिर्ह**न्तृभिः। निर्हेतुभिः प्रत्यक्षादिभिः प्रमाणैः॥ १२॥

श्रद्धामात्रेण गृह्यन्ते न करेण न चक्षुषा ।
अप्रकाश्यमिदं गुह्यं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ १३॥

यतः **श्रद्धामात्रेण गृह्यन्ते**। अत आह— **न करेण, न चक्षुषे**ति। अतश्च गोप्यमित्याह— **अप्रकाश्यमि**त्यादि। समयाष्टकम्॥ १३॥

कनिष्ठां चालयेद्धीमान् दूतयः समवस्थिताः ।
शुद्धाशुद्धाथ मिश्रं वै साधकस्त्रिविधा स्थितिः ॥ १४॥
आराधको विशुद्धश्च दीपको गुणवान्नरः ॥ १५॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने शिष्यपरीक्षासंवरविधिपटलः षड्विंशतिमः॥ २६॥

दूत्यनुरागणविधिमाह— **कनिष्ठामि**त्यादि। खगमुखानाडीं बन्धूककुसुमसदृशीं [1]कुसुमसदृशेन किंबीजेनानामिकामध्यमाग्रसंपुटन्यस्तेन चालयेच्चोदयेत्। किमर्थमाह— **दूतय** इत्यादि। दूतीनां संव्यवस्थानं स्ववस्थानं स्रवन्मदत्वम्। शिष्यपरीक्षामाह— **शुद्धे**त्यादि। **शुद्धो** विशुद्धाशयः। **अशुद्धो** विपरीतः [मिश्रो] विमिश्रितश्च। **साधकास्त्रिविधाः**। **आराधक** इति। गुणेषु गुणिषु कर्मफलसम्बन्धेनातिसंप्रत्यययुक्तः। **विशुद्धः** शास्त्रोक्तानुव्यापी **दीपको** बुद्धिमान्। अलोभाद्वेषामोहा[दि]गुणधरः। अत एव **नरो** नीतिज्ञः॥ १४-१५॥

शिष्यन्ते स्वशासने नियुज्यन्त इति शिष्याः। तेषां परीक्षा परित ईक्षणं गुणेन दोषेण चालोकनं **शिष्यपरीक्षा**। **संवरः** समयः। सा **विधीयते** येन स चासौ **पटलश्चे**ति स तथा। **षड्विंशतितमः**।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ षड्विंशतितमः पटलः॥ २६॥

*

1. कुंकुमकुसुम- भो०

चर्याव्रतपूजाबलिविधिर्नाम पटलः सप्तविंशतिमः

अथ वीरचर्याव्रतं सर्वयोगिनीसाधकः ।
लक्षणभेदं ज्ञात्वा तु आशुसिद्धिं प्रवर्तते ॥ १ ॥

अथेति समयपरिपालनादिसिद्धिनिमित्तयोगिनीलक्षणमन्त्रसामर्थ्यानन्तरं चर्याव्रतं भवतीति ज्ञेयम्। चर्या [1]योगचर्या तस्यां व्रतमेकान्तेन प्रवृत्तेः। सा च किं कृत्वा केन वा चरणीयेत्याह— **वीर** इत्यादि। **तु**रवधारणे। योगिनीनां **लक्षणभेदं ज्ञात्वै**व **सर्वयोगिनीसाधको** वीरो भवति। कुतः किमित्याह— **आशुसिद्धिं प्रवर्तते** ॥ १ ॥

ग्रामे ग्रामे व्रजन् तस्य दूतयो रूपलक्षणम् ।
दूतयोऽसिधारं च पवित्रं पुण्यवर्द्धनम् ॥ २ ॥

ग्रामे ग्रामे व्रजन् तस्येति। जनानां सन्दोहे सन्दोहे तस्य योगिनो व्रजो गमनं ततो दूतयः प्रवर्तन्त इति द्रष्टव्यम्। साक्षाद्भवन्तीति भावः। कथं ता ज्ञातव्या इत्याह— **रूपलक्षणमि**ति। रूपमेव लक्षणं प्रतीतिहेतुः। तच्च प्रागुक्तम्। **दूतयोऽसिधारं चे**ति। दूतयोऽसिधाराव्रतं च द्वयमिदं पवित्रम्। अतः पुण्यवर्द्धनम्। यस्य मते तदसिधाराव्रतं पवित्रं तदाशयाभ्युपगमादुक्तं तत् पवित्रमिति। द्वयोर्मध्ये नवनिशितं खड्गं स्थापयित्वा कमनीयकामिनी शय्याशयनमसिधाराव्रतम्। अथवा दूतयोऽसिधाराश्च द्वयं समं दुरभ्यस(स्त)त्वात्। किं च दूतीनां दर्शनमति**पवित्रं पुण्यवर्द्धनम**सिधारं चार्थसाधकं भवति। **चः** समुच्चये॥ २॥

साधकः सिद्धिमाप्नोति सम्पर्काद् दूतयस्तथा ।
अचिरादेव सिद्ध्यन्ति जपध्यानपूजनैर्विना ॥ ३ ॥

अत आह— **सिद्धिमाप्नोति सम्पर्कादि**ति। दूतीदर्शनादिसंपर्कात् साधकः सिद्धिमाप्नोति। कुत इत्याह— **दूतय** इत्यादि। तथाभूतस्य योगिनो दर्शनादिना दूतयोऽपि **सिद्ध्यन्त्या**मुखीभवन्ति, यतः बहि**र्जापध्यानपूजनैर्विना अचिरादेव** कल्पासंख्येय-

---

1. योगिनीचर्या- भो०

कोटिनिषेधात्। अथवा मन्त्रजापमण्डलचक्रभावनापञ्चोपचारदेवतापूजाभिर्विनापि दूतयः सिद्ध्यन्तीति तथाभूतस्य योगिनोऽतिशयोक्तिरेषा। दूतय इति दूतीनां सम्पर्कात् सिद्धिमाप्नोति। जपादिना विनाप्यविचारादेव सिध्यन्ति साधका इति। दूतीसम्पर्क-माहात्म्यमुक्तमिति **केचित्**॥ ३ ॥

पूजाश्चैव प्रवर्तन्ते मन्त्रमुद्राश्च साधकाः ।
एतत्पूजा परं नास्ति इति शास्त्रस्य निश्चयः ॥ ४॥

दूतीमार्ग[1]रता नित्यं साधकाः सिद्धितत्पराः ।
चरुञ्च भोजयेन्नित्यं मन्त्रविद्यासमन्वितः ।
साधकः सुसमाहितः ॥ ५॥

दूतीदर्शनादेव पूजादयः प्रवर्तन्त इत्याह— **पूजाश्चैवे**त्यादि। मन्त्राश्च मुद्राश्चेति **मन्त्रमुद्राः**। **एतदि**ति दूतीदर्शनादिकम्। **इति शास्त्रस्ये**ति। **श्रीसंवराख्यस्य योगिनी-तन्त्रस्य**। अत एव **दूतीमार्गरता** योगिन्युपदेशस्थिताः साधका भवन्ति। **नित्यं** सर्वदा सिद्धौ तत्परास्तन्निष्ठाः। **दूतीमार्गरतानां तु साधकाः सिद्धितत्परा** इति **पाठान्तरे तु-**र्यस्मात्। निर्धारणे षष्ठी। दूतीमार्गरतानां मध्ये यः कश्चित् सिद्धितत्परः स तत्साधको भवति। आराधनविशेषमाह— **चरुं चे**त्यादि। चकार आराधनसमुच्चये। चरुमेकत्र-भोजनं योगिनीभि**र्भोजयेन्नित्यं** सादरं निरन्तरं दीर्घकालं च। **मन्त्रविद्यासमन्वित** इति। मन्त्रजापाद्यन्वित इत्यर्थः। **साधकः सुसमाहित** इति। सुसमे श्रीहेरुक आहितो योगो येन स तथा। **सर्वयोगप्रवृत्तस्ये**ति **पाठान्तरे** प्रथमार्थे षष्ठी। स्थिरचलादिषु शून्यतायोगप्रवृत्तेः। प्रमत्तस्यानधिकारात् सुसमाहित इति चार्थान्तरम्॥ ४-५ ॥

आचरेत् सर्ववर्णेभ्यो न च भक्ष्यं विचारयेत् ।
अभेद्यं तत्त्वतस्तस्य दूतयो द्वौ च साधने ॥ ६॥

आचरेत् सर्ववर्णेभ्य इति। सर्वैर्वर्णैः सहैकत्र भुञ्जीतेत्यर्थः। भक्षणीयं चाभक्ष्य-मिदमिति न विभज्यते। कुत एवं सकलं कुर्वीतेत्याह— **अभेद्यं तत्त्वतस्तस्ये**ति। अभेद्यं सकलं तस्य चर्यायोगिनः तत्त्वत एकस्वरूपतः। दूतयोऽप्यभेद्याः सर्वाभेदात्। अत आह— **दूतय** इति। **द्वौ च साधन** इति। द्वे साधननिर्विकल्पता दूतयश्च॥ ६ ॥

---

1. रतानां तु- भो०, अभि०

[1]**द्विविधः साधयेच्चैव एक एव हि दूतयः ।**
[2]**प्रचोदिता सिद्धयस्तु साधनसन्निकर्षतः ॥ ७ ॥**

साध्ये च द्वे इत्याह— **द्विविधः साधयेच्चैव।** लौकिकं सुखं संक्लेशं लोकोत्तरं निष्क्लेशम्। **एक एव हि** साधनभागः। हिरत्यन्तनिश्चये। कोऽसावित्याह— **दूतय** इति। उभयसिद्ध्यर्थं दूत्य एव केवला नान्यदित्यर्थः। यतो निर्विकल्पता तत्प्रसादेन सेत्स्यति। तासां प्रसादः कुत इत्याह— **प्रचोदिता** इति। प्रसादा यथोदितास्तदाशय-साधनेनामुखीकृताः। उभयसिद्धिसाधने सान्निध्यार्थम्। [3]**अभेद्यं तत्त्वं तदा तस्येति।** तत्त्वं तत्स्वरूपत्वमभेद्यं तस्य दूतयोऽपि। **द्वौ साधन** इति। द्वे साधने। पुण्यसंभारो योगिन्यश्च। चरमाणस्य सिद्धिद्वयं साधयतः। किञ्च **एक एव हि दूतय** इति। एक-साधनभागो दूतयः। सिद्धेस्तासां सन्निकर्षकारणत्वादिति **पाठान्तरव्याख्या।** इह च ग्रन्थाधिक्यमस्ति "**क्षेत्रस्थानानि सिद्धानि डाकिन्योऽत्र च सङ्गताः। तत्र स्थितो जपं कुर्यादेकत्र चरुमाहरेत्॥" क्रीडन्ते तत्रस्था** इति। ग्रन्थोऽयमेवमवतारणीयः। हृदयकृतेत्याह— **क्षेत्रे**त्यादीति। **आहरेदा**हारं कुर्यात्॥ ७ ॥

गुरुपर्वाभिषिक्तं च सुयन्त्रसमन्वितम् ।
दूतयः सम्यगुक्तं च मुद्रासंयोगशीलश्च ॥ ८ ॥

प्राप्ताभिषेक एव योगिनीप्रिय इत्याह— **गुर्वि**त्यादि। **गुरुपर्व** गुरुपरम्परागते-नायाताः क्रमादुदकादिरूपा विशेषाः। तैः प्राप्ताभिषिक्तम्। **अभिषिक्तम**भिषेकः। युक्तान्युचितान्याचार्यादीन्यभिषिक्तानि यस्य तत्तथा। शैष्यकमित्यध्याहार्यम्। **सुयन्त्रितं** सुसंवरम्। **सुमन्त्रितमि**ति पाठे जप्तमन्त्रम्। **समन्वितमि**ति च **पाठान्तरे** प्राप्तसम्प्र-दायम्। **दूतयः सम्यगुक्तमि**ति। दूति(ती)भिः शोभनमुक्तम्। शैष्यकेण धर्मेण शिष्यो धर्माविशेषतः। अनयोरभेदात्। ततश्चैवंभूतो योगी योगिनीप्रिय इति भावः। कुत एव-मित्याह— **मुद्रासंयोगशीलश्चे**ति। मुद्रासंयोगेन प्राप्तसहजानन्दज्ञान इति तस्य भोक्त-व्यम्(?)। अतश्चकारो यस्मादर्थे॥ ८ ॥

---

1. सिद्धिविध्योराचरणस्य- भो०
2. स्वमुदिता- भो०
3. अन्यमातृकायां स्थितस्य पाठान्तरस्येयं व्याख्या।

सम्पूर्ण[1]ज्ञानदेहोऽत्र [2]सम्पूर्णस्तत्र देहजा ।
प्रातरुत्थाय चित्तात्मा स(श)कलीकृत्य विग्रहम् ॥ ९ ॥

संपूर्णज्ञानदेहोऽत्र श्रीहेरुकस्तज्ज्ञो भवति। संपूर्णस्तत्र[3]देहजा इति। निर्विभक्तिकं प्लुतोच्चारणं च। श्रीहेरुकत्वाय भावनाक्रममाह— **प्रातरि**त्यादि। प्रातः प्रभाते। **उत्थाय** शय्योत्थाय। **चित्तात्मा** भवति। चित्तमात्रमेवात्मा स्वरूपं यस्य स तथा। किं कृत्वैवमित्याह— **स(श)कलीकृत्य विग्रहमि**ति। प्रज्ञाशस्त्रेण स्कन्धादिरूपं शरीरं खण्डशो विभज्य शून्यतां भावयेदिति भावः॥ ९ ॥

अभ्यङ्गानि च शास्त्राणि देहस्थानि समाचरेत् ।
पवित्रीकृत्य देहं तु स ततं मन्त्रमुच्चरेत् ॥ १० ॥

किंपूर्वकमेवमित्याह— **अभ्यङ्गानि च शास्त्राणि देहस्थानि समाचरेदि**ति। शिष्यते(क्ष्यन्ते) सत्त्वा एभिरिति शास्त्राणि तथागताः। तानि देहस्थानि चक्षुरादि-न्यस्तानि कुर्यात्। अभ्यङ्गानि परमार्थतो निःस्वभावानि। अथवा शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दोविचितिर्ज्योतिषश्चेति वेदाङ्गानि षट्। तानि अतिक्रान्तान्यभ्य-ङ्गानीति तद्गम्यानि न भवन्तीत्यर्थः। **पवित्री**त्यादि। स्कन्धादिविशुद्ध्यनन्तरं शून्यतया पवित्रीकृत एव। ॐ स्वभावशुद्धाः सर्वधर्माः स्वभावशुद्धोऽहमिति **मन्त्रमुच्चरेत्**। उच्चारयेत्। **स** इति योगी, **ततं** विततं नानातन्त्रोक्तत्वात्॥ १० ॥

दर्शयेद् योगस्थानानि शास्त्राणि च न लङ्घयेत् ।
नाक्रोशेत् समयी नर अभियुक्तान्नातिक्रमेत् ॥ ११ ॥

योगस्थानानि समाधिस्थानानि कवचद्वयस्थानानीत्यर्थः। **दर्शयेदि**ति। तन्मन्त्र-स्तज्जाभिर्देवताभिर्वाऽधितिष्ठेदित्यर्थः। अतश्च भावनाया दिङ्मात्रं दर्शितम्। **शास्त्राणि च न लङ्घयेदि**ति। योगिनीर्न लङ्घयेत्। अथवा देवताचिह्नानि वेदानीति **केचित्**। चर्यायोगी क्रीडार्थं क्वचिदुपहासेन वेदार्थमपि पालयेदिति भावः। **नाक्रोशेत् समयी**

---

1. ज्ञानहेतुजा- भो०
2. नास्ति- भो०, गृहीतस्तु टीकानुसारी।
3. तद्धेतुजा- भो०

नर इति। समयी चर्यायोगी नाक्रोशेच्चित्तमुत्पादयेदिति भावः। **अभियुक्तान्नातिक्रमे-दिति**। श्रीचक्रसंवराभियुक्तान्॥ ११॥

ताभिः सार्धं सुखं कुर्यात् समयाचारमाचरेत् ।
मुक्त्यर्थी तदर्थी च वैभ्रमं युज्यते यदि ॥ १२॥

ताभिरिति। योगिनीभिः। **सुखं** सुरतादिसुखम्। **मुक्त्यर्थी तदर्थी चे**ति। मोक्षार्थी सुखार्थी च। चेष्टितं कामशास्त्रोक्तं कृत्वा ताभिः सार्धं सुप्यादिति सम्बन्धः। **वैभ्रमं** विलाससंभूतम्। युज्यतीति **युज्यते**। **यदि** चेष्टितं तत्कुर्यादित्यर्थः। यदि चेष्टिताय स्पृहयन्ति तास्तदेति यावत्॥ १२॥

रात्रौ च सततं नग्नः कृष्णरक्तः सदा भवेत् ।
प्राण्यङ्गवाससावासं कण्ठिका वलयं तथा ॥ १३॥

कुण्डलं ब्रह्मसूत्रं च शिरोमाला विभूषितम् ।
ग्रीवायां कण्ठिका चैव मेखला घुर्घुरारवैः ॥ १४॥

जटामकुटपट्टाङ्कं मिथ्याकेशाद्यलङ्कृतम् ।
[1]सवज्रपद्मं खट्वाङ्गडमरुकध्वनिहूँकृते ॥ १५॥

रात्रावित्यादि। **कृष्णरक्तः** कृष्णः पक्षः रक्तः। **कण्ठिका**दि नरकेशरचितं चूडेति। **वलय**संचयः। **ब्रह्मसूत्रं मेखला** च केशरचिते। **घुर्घुरा** नूपुरं तस्या **रवा**स्तैः सह **कण्ठिका**दिबिभृयादित्यर्थः। **जटामकुटे**ति जटामुकुटम्। **अङ्कपट्टश्चे**ति वीरपट्टः। **मिथ्याकेशाद्यलङ्कृतमि**ति। अन्यकेशचामरादिरचितमित्यर्थः। वज्रलाञ्छितं पद्मं कपालं **वज्रपद्मं सह** वज्र**खट्वाङ्गडमरुकध्वनिहूँकृते** वर्तत इति स तथा॥ १३-१५॥

सर्ववीरयोगिन्यः कवचत्रयविभूषितम् ।
[2]प्राण्यङ्गवाससावासं सुखार्थी चालयेत् सुखम् ॥ १६॥

सर्वे वीरा यत्र तत्**सर्ववीरं** चक्रत्रयं तस्य **योगिन्यः** प्रचण्डादयः। एतास्तेन योगिना भावयितव्या इति भावः। अत एव स **कवचत्रयभूषितम्**। त्रिचक्रवर्तिन्यः

1. सवज्रकपालं- भो०
2. नास्ति- भो०, गृहीतस्तु टीकानुसारी।

कवचत्रयं मारशस्त्रनिराकरणात्। [1]षट्त्रिंशद्देवताभावयुक्त इत्याशयः। **प्राण्यङ्ग-वाससावास**मिति। चर्माम्बरेण वासं कुर्यादिति ज्ञेयम्। वसनं वास आच्छादन-मित्यर्थः। भावे घञ्। ताभिः सार्धं सुखं कुर्यादित्यस्य निर्देशमाह— **सुखार्थी चाल-येत् सुख**मिति॥ १६॥

यज्ञोपवीतं च संत्यज्य शौचं श्रीहेरुकस्थितम् ।
[2]पञ्चमुद्राप्रतिबद्धं तु साधकः सिद्ध्यभियुक्तकः॥ १७॥

कण्ठिकावलयकुण्डलचूडामणिभूषितम् ।
यज्ञोपवीतं भस्म च सर्वकालव्यवस्थितम् ॥ १८॥

रात्रौ तु प्रकटं नित्यं दिवासु[गु]प्तं च कारयेत् ।
[3]क्रियाज्ञानं सुगुप्तं च प्रशान्तवर्जितश्रमः ॥ १९॥

शौचं च त्रिविधं ज्ञेयं स्वस्त्रोतसि व्यवस्थितम् ।
वर्णावर्णमुखाक्षेपशिखा[दि]बन्धनवर्जितम् ॥ २०॥

यज्ञोपवीतं च संत्यज्य शौचं श्रीहेरुकस्थितमिति। **चो**ऽनुक्तसमुच्चये। श्रुतिस्मृत्यादिविहितयज्ञोपवीतादिजनितं शौचं त्यक्त्वा श्रीहेरुकयोगस्थितं शौचमित्याशयः।

पञ्चमुद्राप्रतिबद्धं साधकः सिद्ध्यभियुक्तकः ।
कण्ठिकावलयकुण्डलचूडामणिभूषितम् ॥

यज्ञोपवीतं भस्म च सर्वकालव्यवस्थितम् ।
रात्रौ तु प्रकटं नित्यं दिवासु(गु)प्तं च कारयेत् ॥ इति।

क्रियाज्ञानं सुगुप्तं च प्रशान्तवर्जितश्रमः ।
शौचं च त्रिविधं ज्ञेयं स्वस्त्रोतसि व्यवस्थितम् ॥ इति।

---

1. सप्तत्रिंशद्- भो०
2. 'पञ्चमुद्रा प्रतिबद्धं' इत्यारभ्य 'स्वस्त्रोतसि व्यवस्थितम्' इति यावत् पाठष्टीकाकृता 'इत्यधिको ग्रन्थ' इत्युक्त्वा निराकृतः।
3. भेदज्ञानं- भो०

अधिको ग्रन्थः। अस्यायमर्थः— वज्ररत्नपद्मकर्मतथागतकुलैः प्रतिबद्धं कार्यमित्याशयः। **रात्रौ** पञ्चकुलप्रतिबद्धं **प्रकटं** निर्गतम्। **तु**रतिशयार्थः। **दिने** तत्**सुगुप्तं कारयेत्**। **वा** नियमार्थः। प्रतिक्षेपात्सत्त्वानामवद्यं मा भूदिति। क्रियया सेवया ज्ञानं सहजानन्दज्ञानं च सुगुप्तम्। **प्रशान्तः** कारुणिको **वर्जितश्रमश्च**। **शौचं च** तस्य **त्रिविधं** तच्चानवग्रहेण रागादिप्रवर्तनम्। अथवा दूत्यमित्यादि वक्ष्यमाणम्। अतः **स्वस्रोतसि** स्वचित्ते **व्यवस्थितमिति**। **वर्णा** ब्राह्मणादयः। **अवर्णा** अन्त्यजाः। **मुखं** प्रधानम्। आक्षिप्यत इत्या**क्षेपो**ऽप्रधानम्। **शिखा** चूडा **आदि**शब्दात् मौञ्जभस्मजटादि च। तेषां **बन्धनं** धारणं तेन **वर्जितम्**॥ १७-२०॥

दूत्यं तु प्रथमं शौचं द्वितीयं सोममिष्यते ।
एकत्रप्राशनं चैव तृतीयं शौचमुच्यते ॥ २१॥

एतच्छौचप्रपालनाच्छौचशुद्धिः प्रजायते ।
योगिनश्च क्रमात् प्राप्य कस्य सिद्धिर्न जायते ॥ २२॥

शौचान्तरमाह— **दूत्यं** त्वित्यादि। **दूत्यं** दूत्यः। बिन्दोरेकस्य लोपः। **सोमम**िति सोमो बोधिचित्तम्। **एकत्रप्राशनं** यत् स चरुरित्यर्थः। चरुमिति। बिन्दोरेकस्य लोपे। तच्च तृतीयं शौचम्। **एतच्छौचप्रपालनाच्छौचशुद्धिः क्रमात्प्राप्य कस्य सिद्धिर्न जायते** इति। एतेषां शौचानां प्रपालनात् शौचशुद्धिं प्राप्य [कस्य] महामुद्रासिद्धिर्न जायते॥ २१-२२॥

तत्त्वसंग्रहे यदुक्तं च तथोक्तं चक्रसंवरे ।
गुह्यतन्त्रे समाख्यातं [1]परमाद्ये तथैव च ॥ २३॥

महावज्रभैरवे च जपव्रतादिसिद्धिदम् ।
[2]तदिदं ध्यानमात्रेण मन्त्री साधयेत् क्षणात् ॥ २४॥

संवर इति **संवरोत्तरे**। **गुह्यतन्त्र** इति **गुह्यकोस(शा)दौ**। **तथे**ति निरवग्रहेण। **एवा**वधारणे। **च**कार आचारसमुच्चये। व्रतं च जपश्चेति नियमः। आदिशब्दादिन्द्रिय-

1. हरितन्त्रे- अभि०
2. तदत्र- भो०

निग्रहादि, तेन सिद्धिं ददातीति **जपव्रतादिसिद्धिदा** देवता। **तत्त्वसंग्रहादौ** जपादिना सिद्धिरिति समुदायार्थः। इह तु **श्रीचक्रसंवरे तदिदं** श्रीहेरुक**ध्यानमे**व केवलं महा-मुद्रासिद्धिसाधकमित्याशयः। अत एव **योगी साधयेत् क्षणा**दिति॥ २३-२४॥

योगमार्गरतानां तु अयं शौचं समाचरेत् ।
शौचानां यत्पुण्यं तदेकेन वक्तुं न शक्यते ॥ २५॥

शौचमेवानुशंसयन्नाह— **योगे**त्यादि। चित्तमात्रसमापत्ति**र्योगः**। स एव संबोधि-**मार्ग**स्तद्**रतानां** मध्येऽ**यं** श्रीहेरुकयोगं **शौचं** प्रागुक्तं **समाचरेत्**। शौचप्रयोजनमाह— **शौचाना**मित्यादि। दूत्यादयः शौचहेतुत्वाच्छौचानि। तेभ्यो **यत्पुण्यं तदेकेन** वक्त्रेण **वक्तुं न शक्यते**॥ २५॥

साधको गुणविस्तरः मुखं त्वनेकशतसहस्त्राननम् ।
श्रीहेरुकमहाज्ञानविशुद्धं सर्वलक्षणसाधनम् ॥ २६॥

कुत इत्याह— **साधको गुणविस्तर** इति। साधको यतः शौचगुणविस्तीर्णः। केन शक्यत इत्याह— **मुखं त्वनेक**मिति। अनेकानि मुखानि यदा पुनः स्युस्तदा शक्यत इत्याह। जात्यैकवचनम्। द्वित्वादेरप्यनेकत्वमित्याह— **सहस्त्रानन**मिति। सहस्रसंख्यमाननं सहस्राननं सहस्रमानननानीत्यर्थः। कुतस्तादृशः साधक इत्याह— **श्री**त्यादि। **श्रीहेरुक एव महाज्ञानं विशुद्धं** निष्क्लेशम्। सर्वाणि दशबलादिगुण-लक्षणानि यत्र तत् **सर्वलक्षणम्**। तद्योगोऽपि तथाभूत इति भावः॥ २६॥

साधकस्य च सौख्याम्बुप्राशनमद्वयमेव च ।
तेन च अद्वययोगात्मा पवित्रं पापनाशनम् ॥ २७॥

साधकस्य चेति। चो यस्मात्। **साधकस्य सौख्याम्बु** बोधिचित्तं तत्**प्राशने**। **अद्वययोगात्मा** सौख्याम्बुप्राशनाद्वययोगात्मा सर्वपापविनिर्मुक्त इति योज्यम्। कुत इत्याह— **पवित्रं पापनाशन**मिति। यतः सौख्याम्बु तदेवम्भूतमित्यर्थः॥ २७॥

सर्वपापविनिर्मुक्तः स्पर्शनाद्घ्राषणादपि ।
समाचरति नरश्रेष्ठः शुद्धकायो निरामयः ॥ २८॥

सर्वपापविशुद्धात्मा लभेत् ताथागतीं श्रियम् ।
उत्पद्यते तथा जन्मैः तथागतकुलेषु च ॥ २९ ॥

स्पर्शनात्संभाषणादपीति साधकस्येत्यर्थः। पञ्चानन्तर्यादीनि सर्वाणि पापानि। **शुद्धकायो निरामय** इति। निरामयत्वात् शुद्धकाय इति बोद्धव्यम्। **समाचरती**ति सौख्याम्बु **नर** इति सुबोधम्। **जन्मै**र्जन्मनि जन्मनि **तथागतकुल उत्पद्यते** ॥ २८-२९ ॥

एवं पूजां सदा कृत्वा [1]दातव्यं भक्तितो बलिः ।
योगी स्वेच्छानि कर्माणि राजा भवति धार्मिकः ॥ ३० ॥

एवं पूजामिति। योगिनीः पूजयेद् **बलिं** दद्यादित्यर्थः। स च कदा देय इत्याह— **दातव्य**मिति। बलिविधानम्। **स्वेच्छानि** स्वेप्सितानि **कर्माणि** शान्तिकादीनि ॥ ३० ॥

यथाविधि च दातव्यं [बलिः पूजा तथैव च] ।
[2]कृष्णपक्षे तु शुक्ले वा या भवेद् दशमी तिथिः ॥ ३१ ॥

आसु प्रयत्ना[त् परि]पूजनीया मद्यैश्च मांसैरपि वज्रदेव्यः[3] ।
[4]ताः पूजिता भक्तिमतो जनस्य श्रीहेरुकस्याभिरतिं गतस्य ।
सन्तुष्टचित्ता वरदा भवन्ति तासां करस्थानि यतो वराणाम् ॥ ३२ ॥

रात्रौ व्रती बलिं दद्यात् मुक्तकेशश्च नग्नकः ।
श्रीहेरुकात्मैव योगेन आराधयति मातरः ॥ ३३ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने चर्याव्रतपूजाबलिविधिर्नाम पटलः सप्तविंशतिमः ॥ २७ ॥

---

1. दद्यात्तु- भो०, गृहीतस्तु टीकानुसारेण।
2. द्र०- यो० सं० १०.३-४
3. ''पूर्वोक्तमुद्रादिकमन्त्रयोगैः संरक्ष्य रक्ष्येण यथाविधानतः'' इदमस्योत्तरार्धम्। (द्र०- यो० सं० १०.४)
4. द्र०- यो० सं० १०.१०-११

विधिरत्र **तन्त्रान्तरोक्तः** पूजाकालविशेषमाह— **कृष्णे**त्यादि। **वा**-शब्दान्नवमी-चतुर्दश्यौ। **तु**र्विशेषार्थः समुच्चयार्थो वा । **कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां शुक्लपक्षे त्वि**ति **पाठान्तरे।** तुशब्दो दशमीनवम्यौ समुच्चिनोति। शेषं यदिति या दशमी नवमी वा भवति। चतुर्दश्यां तावत्पूजा कार्या दशमीनवम्योरपि। किमन्यदित्याह—

आसु प्रयत्नात्परिपूजनीया मद्यैश्च मांसैरपि वज्रदेव्यः ।
ताः पूजिता भक्तिमतो जनस्य श्रीहेरुकस्याभिरतिं गतस्य ।
सन्तुष्टचित्ता वरदा भवन्ति तासां करस्थानि यतो वराणाम् ॥ इति।

आसु तिथिषु पूजायां प्रयत्नः कार्यः करस्थानि करस्था वराणाः वराः ईप्सितानि। शेषं सुबोधम्॥ ३१-३४॥

चर्याव्रतपूजाबलयो विधीयन्ते येनासौ **पटल**श्चेति स तथा। **सप्तविंशतिमः** सप्तविंशतितमः॥

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ सप्तविंशतितमः पटलः॥ २७॥

*

अध्यात्महोमवर्णैकत्वविधिपटलोऽष्टाविंशतिमः

ततो-

पूजयेत् वरमात्मानं सुविशुद्धात्मा यः [साधकः] ।
निर्वाणं निर्गतं वीरं सर्वबुद्धादि पूजितः ॥ १ ॥

समतापटलमाह— **ततो पूजे**त्यादि। तत इत्यर्थे ततोशब्दोऽपि द्रष्टव्यः। आर्षत्वादुत्वं वा। यतः समतां विना संबोधिर्न स्यात् तत **आत्मानं पूजयेदि**त्यर्थः। बाह्यगुह्यपूजाभ्यां विशुद्ध आत्मा चित्तमस्येति **सुविशुद्धात्मा**। किम्भूतमात्मानमित्याह— **निर्वाणं निर्गतं वीरमि**ति। निर्वाणं विरमानन्दो बहिर्बुद्धिविषयानुपलम्भात्। ततोऽनन्तरं निश्चयेन गतः स्थितः तं पूजयेदिति प्रतिपत्तिपूजया आत्मानं चित्तं सहजानन्दस्थितम्। अथवा निरुपमत्वेन सहजानन्दं गतो गतवान् बुद्धवानात्मा। उपदेशं विना विरमानन्दमनवबुद्ध्य विरमानन्दं सहजज्ञानात् पूर्वमुद्दिशन्तमुपहसन्त्यविदग्धबुद्धयः। ते हि विरमँ बोधिचित्तच्यवनं बुद्ध्य आत्मानं विप्रलभन्ते। तैरिह सहजानन्दो नोपलभ्यते। स्थाप्य तु स्वचित्तरक्षायै जाग्रियताम्। ततः किं स्यादित्याह— **सर्वे**त्यादि। **सर्वबुद्धादयः पूजितः** पूजिता भवन्तीत्यर्थः। सर्वबुद्धादीति प्रथमाबहुवचनलोपात्। पूजित इति आकारे ह्रस्वे सति। सहजानन्दज्ञानं बुद्धवत्यात्मनि बुद्धा बुद्ध इति सिद्धम्। **सर्वबुद्धादिपूजितमि**ति **पाठे** ततः सर्वबुद्धादिजातं पूजितं स्यादिति॥ १ ॥

सर्ववीरस्य योगिन्यः स्थावरं जङ्गमं तथा ।
पूजयेद् भ्रातृचारास्तु सोमसङ्गमसंस्थिताः ॥ २ ॥

किं च सर्वमेव बुद्धमित्याह— सर्वेत्यादि। **सर्ववीरस्ये**ति। प्रथमाबहुवचनस्य भावः। **स्थावरं** वृक्षादि। **जङ्गमं** मनुष्यादि। इयं तत्त्वपूजा। **पूजयेद् भ्रातृचारास्त्वि**ति। **तुः** समुच्चये। सहश्रावका भ्रातरः। चरति स्वागमस्थितिरेष्विति त एव चाराः। सोमेन बोधिचित्तेन सङ्गमो योगस्तत्र समतया स्थिताः **सोमसङ्गमसंस्थिताः**। द्वितीयार्थे प्रथमा। तानपि पूजयेदित्यर्थः॥ २ ॥

भ्रातृपुत्रैकसार्धं सुखदुःखसमुद्भवम् ।
न तत्र प्रकाशयेज्ज्ञानं मन्त्रमुद्रा तथैव च ॥ ३॥

भ्रातृपुत्रैकसार्धं सुखदुःखसमुद्भवं न तत्र प्रकाशयेज्ज्ञानमिति। तेषु भ्रातृषु ज्ञानं न प्रकाशयेदिति सम्बन्धः। भ्रातॄणां पुत्राणामेकेषां सुहृदां ज्ञानेन सार्धं समम्। किञ्चैतैरिदंतया ज्ञानं सुखं दुःखं च समुद्भवतो यतस्तत्तथा। तथापि ताभ्यामलिप्तं सुखस्य प्रकृतस्य दुःखाङ्गिकत्वात्। साधारणमप्यसाधारणं निपुणैरेव वेद्यत्वात्। परमार्थतोऽप्रकाशनं प्रकाशयितुमशक्यत्वात्। तैरपि आत्मग्रन्थमागमे प्रक्षिपतीति प्रक्षेपः। सर्वकर्मफलादिदूषयतीति सर्वदूषकः। तदेतयोरपि न प्रकाशयेदिति भावः। एतेष्वतिसंवासात् प्रकृतिविरुद्धत्वाच्चावज्ञाकरणान्नरकं यान्ति। ततस्ते शिष्यभावमपि नार्हन्तीति ज्ञातव्यम्। अर्थान्तरमुच्यते— भ्राता आनन्दः धर्मसङ्केतत्वात्। पुत्रः परमानन्दः। एकसार्धो विरमानन्दः। सुखदुःखयोः समतयोद्भवः स्थितिरस्येति स तथा। अयं सहजानन्दः। तत्र सहजज्ञानं कर्तृ न प्रकाशयेत्, प्रकाशाभावात्। न चात्मानं प्रकाशयेत्, स्वात्मनि क्रियाविरोधात्। इदं कार्यमिदमकार्यमिति विवेकः प्रक्षेपः। सर्वदूषको रागादिक्लेशराशिः सर्वं कायादि न तत्र भवतीति सहजानन्दलक्षणमित्यर्थः। इदमेव पुनः पुनर्निगद्यते । अस्यैव परमपुरुषार्थसाधनत्वात्॥ ३ ॥

चरुं च भक्षयेच्चैव समयाचारकृत् सदा ।
न दद्यात् कस्यचिन्मन्त्रमुपदेशं न विनाशयेत् ॥ ४॥

यथार्थमुपदेशं तु दद्यात् समयवर्तिनाम् ।
दूतीं त्यक्त्वा न चान्यं तु गच्छेत् कामविमोहितः॥ ५॥

चरुं चेत्यादि। पवित्राणि पञ्चामृतानि। भक्षणे किमित्याह— **समयाचारकृत्** इति। समयो गोकुदहनलक्षणः। केन हेतुनेत्याह— **सदे**ति। सदनं सत्, विकल्पादवसादः। हेतौ तृतीया। अचिन्त्यो हि मणिमन्त्रौषधीनां प्रभावः। **मन्त्रं** मन्त्रादि। **कस्यचिदि**ति महीपादेः। **उपदेशं न विनाशयेदि**ति। सकृदुपयाचितो न तृष्णया सेकादिकं **दद्यात्**। **यथार्थमुपदेशं तु दद्यात्**। अतस्तुशब्दो विशेषे। **दूतीं** समयिनीम्। **चः** समुच्चये **तु**रवधारणे। **कामविमोहितो**ऽयं कामिनीविशेषं **न गच्छेत्**॥ ४-५ ॥

दूतीरक्षा[1] सदा मोक्ष अतिक्रम्यापि भोजयेत् ।
सत्कारं न च वै कुर्यात् जन्महीनापि संस्थितः ॥ ६ ॥

दूतीरक्षा सदा मोक्ष इति । दूत्या बाह्याङ्गनाया रक्षा कवचनम्। तया सर्वग्रहणप्रशमः। अथवा वशीकरणेन दूत्या अनन्यगामिता कार्येति दूतीरक्षा। ततो मोक्षः सतततत्त्वानुसरणात्। ''परोच्छिष्टं न भुञ्जीत'' इतिवचनादिति **केचित्**। तथागतकुलोत्पन्नानां दूतीनां प्रकाशसेवा रक्षेत्य**परे**। **अतिक्रम्याऽपि भोजयेदि**ति। दूत्यो गौरवगृहीता इति ताभिः सह सुरते तासु न गौरवं कुर्यात्। [2]कचग्रहणादिनापि ताः सुरतसुखं भोजयेत्। अत आह— **सत्कारं नैव कुर्यादि**ति। ''हठेनाक्रम्य भुञ्जीत न ताः सत्कारभोजनम्'' इति **वचनाज्जन्महीनापि** भोजयेत्सुखमिति॥ ६ ॥

माता च भगिनी पुत्री भार्या च दूतयः स्थिताः ।
तपः संक्षीयतेऽवश्यं वक्रं वा सिद्धयस्तथा ॥ ७ ॥

कदा सिद्धिरित्याह— **माते**त्यादि। यदा मात्रादिवत् स्निग्धा भवेयुस्तदा सिद्धिरिति भावः। यदा पुनर्वक्रीभवन्ति तदा सिद्धयोऽपि वक्रा इत्याह— **तप** इत्यादि। अनादिकालं कृतं तपः क्षयं याति। कुत इत्याह— **वक्रं वे**ति । वा यस्मात्। यतो दूतीहृदयं वक्रं **तथा सिद्धयो**ऽपि वक्रीभवन्ति विमुखीभवन्तीत्यर्थः॥ ७॥

आकर्षयेच्चोत्तमसार्धमेवं द्रव्यस्य निश्चयः ।
वामाचारः सदा लोके वामपादं पुरः क्रमेत् ॥ ८ ॥

तथाभूतया दूत्या किमित्याह— **आकर्षयेदि**त्यादि। **उत्तम**बोधिचित्तं रजोऽन्वितं यत्। अतः **सार्धम**धिकम्। **एवं द्रव्यस्य निश्चय** इति। द्रव्यं बोधिचित्तं तस्य निरवद्यग्रहणं निश्चयः। **वामाचारः सदा लोके वामपादः पुरः क्रमे**दिति सुबोधम्॥ ८॥

वामहस्तपरिवर्तनं वामोर्ध्वप्रतिपूजकाः ।
वामग्रहणमात्रस्तु वामतर्पणभक्षणम् ॥ ९ ॥

---

1. ०रक्ता- भो०, अभि०, गृहीतस्तु टीकानुसारी।
2. कुच- भो०

वामहस्तपरिवर्तनं वामहस्तेन स्थिरीभूय गात्रविपरिवर्तनम्। **वामोर्ध्वप्रतिपूजका** इति। ऊर्ध्वशब्देन वज्रं तेन योगिनीनां प्रतीत्याशयं पूजका योगिनः। **वामे**त्यादि सुबोधम्॥ ९ ॥

अव्रतघ्नो व्रतपूर्णः साधकः कृततत्परः ।
समया कुलाचारेण एकत्र चरुभोजकः ॥ १० ॥

अव्रतघ्नो व्रतपूर्ण इति। ब्राह्मणादिव्रतमव्रतम्। समयाद्याचारनियमः कृते देवताभावनादौ निघ्नः **कृततत्परः**। **समया** योगिन्यः **कुलाचारो** चारः। **एकत्र** क्वचित् प्रदेशे **चरुभोजकः**॥ १० ॥

पञ्चवर्णसमाचारोऽ[1]चतुर्वर्णश्च कीर्तितः ।
एकवर्णसमाचारो योगसिद्धिः प्रपूजकः ॥ ११ ॥

पञ्चसु वर्णेषु समाचरति भुंक्त इति **पञ्चवर्णसमाचारः**। कुतो यतः, **अचतुर्वर्णश्च कीर्तित** इति। न विद्यन्ते चतुरो वर्णा एव यस्य स तथा योगी। लोके कल्पितत्वात्। एवं भूतो योगिनीमध्ये कीर्तितो वर्णितः। अथवा चत्वारो वर्णा यस्य स तथा चतुर्वर्णश्चतुर्मुखश्रीहेरुकयोगित्वात्। आर्षत्वादुत्वम्। कुतोऽचतुर्वर्णत्वमित्याह— एकत्वेन वर्णानां समाचारो निश्चयो यस्य स **एकवर्णसमाचारः**। श्रीहेरुकयोगित्वेऽपि एकत्वेन वर्णसमाचारविशुद्ध्या चतुर्वर्णमुखत्वमिति भावः। ११ ॥

गोमांसं हयमांसं च श्वानमांसं च चित्रिणाम् ।
त्रिकोणं मण्डलं कुर्यात् ध्रुवं बुद्धोऽपि नश्यति ॥ १२ ॥

रत्नत्रयाद्यपकारिणां विनाशभयार्थं कर्मप्रसरमाह— **गोमांसे**त्यादि। होमोपयिकाविहितेन विधानेन कुण्डादिकमनुष्ठेयम्। अभिचाराद्युपकरणेन कटुतैलादिभिः प्रज्वाल्य वह्निं खण्डरोहां दक्षिणनासापुटेनान्तःप्रवेश्यापानमार्गनिर्गतां विचिन्त्य तया गृहीतवज्रांकुशकर्तीचिह्नया नग्नं विह्वलीभूतं सार्ध(साध्य)माकृष्य तयैव खण्डखण्डीकृतं तं विचिन्त्य गोमांसादिकं तन्मांसमिति बुद्धिस्थीकुर्वन् महाक्रोधाहङ्कारेण मुक्तं मारयति। मूलमन्त्रेण जुहुयात्। **चित्रिणां** कुक्कुटादीनाम्॥ १२ ॥

---

1. चतु- भो०

मन्त्रमुद्रासमोपेतं वीराणां भोजनं तथा ।
श्रीहेरुकस्य निर्माणमुपचारं शास्त्रवर्जितम् ॥ १३ ॥

धारणं सततं कुर्यात् रक्षा च सर्वकर्मणा ।
योगमद्वयज्ञानं च चेतश्चैकपदं स्थितम् ॥ १४ ॥

मुद्रामन्त्रमयी बाह्याङ्गना, तया सह भोजनं तद्वीराणां प्रशस्तमित्याह— **मन्त्रे**-त्यादि। **मन्त्र[मुद्रा]समोपेतं** मन्त्रेण समतया चोपेतम्। तत्र **भोजने** श्रीहेरुकस्य निर्माण-मात्मनि देवीनां **चोपचारं** योगिनीषु कुर्यात्। एतच्च सर्वेषु **योगिनीतन्त्रेषु** वक्तुमिष्टमित्याह— **श्रीहेरुके**त्यादि। अन्यदा च सततं श्रीहेरुकयोगस्य धारणं कार्य-मित्याह— **धारणमि**त्यादि। **योगमि**ति योगस्य। योगोऽस्यास्तीति योगं धारणविशे-षणम्। **अद्वयज्ञाने**ति। श्रीहेरुकाद्वयत्वं जानातीति तत्तथा। **चेतश्चे**ति तत **एक-पद**त्वम्॥ १३-१४॥

निर्विघ्नः स यथा सिद्धौ नात्र कश्चित् प्रसिद्ध्यते ।
तस्य दूती वरा दिव्या उद्युक्ता च सहान्विता ॥ १५ ॥

एष यथा निर्विघ्नः सिद्ध्यर्थं तथा नान्यत्रोपायः प्रतीयत इत्याह— **निर्विघ्न** इत्यादि। **तस्य च दूती वरा** श्रेष्ठा एवंभूता [1]**दिव्या** सिद्धौ योग्या भवति। **सह** क्षान्तिस्त**दन्विता**॥ १५॥

[2]अरक्तो रतिसंयोगाद्योगद्रव्यविभागता ।
गुरूपदेशसंरक्ता तदर्थधनदसमाः ॥ १६ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने अध्यात्महोमवर्णैकत्वविधि-
पटलोऽष्टाविंशतिमः॥ २८॥

अरक्तो रतिसंयोगादिति। बहिः रतिसंयोगं प्राप्यारक्तो विरक्तः सदा योगी भवेत्। योगः समाधिः द्रव्यं भक्ष्यं ताभ्यामन्ययोर्योगभक्षयोर्विभागोऽस्येति स तथा। तस्य भावो

1. दिव्यद्रव्यसिद्धौ- इत्यधिकम् भो०
2. अरक्ता- भो०

योगद्रव्यविभागता कार्या। अथवा योगजस्य द्रव्यस्य बोधिचित्तस्य विभजनं विभागता प्रज्ञया सह भोगभागित्यर्थः। विशेषे भागोऽस्येति विभागस्तस्य भावो विभागता। योगिनो गुरूपदेशरागिणो भवेयुरित्याह—**गुर्वि**त्यादि। श्रीहेरुकयोगोपदेशे गुरुभिर्दत्ते संरज्यन्तामिति भावः। अतस्तदर्थयन्तीति **तदर्थाः**। इतश्च धनं श्रद्धादि। तथा **चाह**— "श्रद्धाधनं प्रज्ञाधनं श्रुतधनं वीर्यधनं प्रीतिधनं समाधिधनं स्मृतिधनं चेति।" तद्ददाति कामिनामर्थसम्पादनान्नियतमिति **धनदः** श्रीहेरुकस्तत्**समाः** ॥ १६ ॥

अध्यात्महोमात् लौकिकहोमबहिर्भावात् **वर्णैकत्वं** चैते विधीयन्ते येनासौ पटलश्चेति सोऽध्यात्महोमवर्णैकविधिपटलोऽष्टाविंशतिमोऽष्टाविंशतितमः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतावष्टाविंशतितमः पटलः ॥ २८ ॥

*

दूतीलक्षणशक्त्यवस्थाविधिपटल एकोनत्रिंशतिमः

अथापरं समुद्दिष्टं दूतीलक्षणज्ञायते ।
येन सम्यग्विजानाति डाकिन्यः समयस्थिताः॥ १ ॥

ऊष्मक्रियया विना न चर्येति तदर्थकथनार्थं पटलमाह— **अथे**त्यादि। अथेत्याध्यात्मिकहोमादिकथनानन्तरम्। **अपरमि**त्यन्यन्निष्पादनम्। किं तदित्याह— **समुद्दिष्टमि**ति। अपरः समुद्देशः कृत इत्यर्थः। किमर्थमित्याह— **दूतीलक्षणज्ञायत** इति। तल्लक्षणज्ञानाय। **येन सम्यग्विजानाति डाकिन्यः समयस्थिता** इति। द्वितीयार्थे प्रथमा॥ १॥

भ्रातरं पितरं वापि स्वामिनं पश्यति क्षणात् ।
स्थूलजिह्वा पिङ्गलाक्षा कर्कशी पिङ्गशिरोरुहा ॥ २ ॥

भ्रातरं वीरं **पितरं** श्रीहेरुकं **स्वामिनं** यस्य ते **पश्यति** स्वाम्येव स्वामित्वम्। क्षणान्मन्त्रसामर्थ्यात्। **स्थूले**त्यादि। **पिङ्गलेऽक्षिणी** यस्याः सा तथा। **कर्क्कशी** स्पर्शने। **पिङ्गलाः शिरोरुहाः** केशा यस्याः सा तथा॥ २॥

सामान्या सर्वसिद्धीनां जपव्रतरता सदा ।
स्मरणेन समायुक्तं दूत्यादिपदान्वितम् ॥ ३ ॥

सर्वसिद्धिसाधारणीत्याह— **सामान्या सर्वसिद्धीनामि**ति। स्मरणं चिन्ता तेन समायुक्तं समनुयोगः। कस्य चिन्तेत्याह— **दूत्ये**त्यादि। **पदान्वितमि**ति। **आदि**शब्दात् समयरक्षणम्। पदं ज्ञानं तेनान्वितं **स्मरणसमायुक्तम्** एतेनैतदुक्तं समयपरेण दूतीभावना कार्येति॥ ३॥

चतुर्विंशपरा डाकिन्यो भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ।
मूलमन्त्रं जपेन्नित्यं सर्वकामार्थसाधकः ॥ ४ ॥

अस्माच्च जयते मन्त्रः योगक्रीडाफलप्रदम् ।
सर्वमारप्रशमनं त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ ५ ॥

दूत्य एव कियत्य इत्याह— **चतुर्विंशपरा डाकिन्यो भुक्तिमुक्तिफलप्रदा** इति। प्रचण्डादयश्चतुर्विंशतिडाकिन्य इत्युपलक्षणत्वात्। द्वादशापीह ज्ञेयाः। किमर्थं ता भाव्या इत्याह— भुक्तिः स्वर्गादिः। [मुक्तिः] क्लेशादिबन्धनापगमः। ते फले प्रकर्षेण **ददती**ति तास्तथा। तासां श्रीहेरुकनायकमण्डलस्थानां भावनया मूलमन्त्रं **जपे**दित्याह— **मूले**त्यादि सुबोधम्। **त्रैलोक्यं जयते** सम्पद्यते वशतया। अत एव ततो **भुक्तिमुक्तिफलप्रदाः** ॥ ४-५ ॥

मन्त्रमुद्रासमोपेतं सिद्ध्यभियुक्तश्च साधकः ।
मुद्राहीनं न सान्निध्यं मन्त्रं भवति देहिनाम् ॥ ६ ॥

कुत एवमित्याह— **मन्त्रे**त्यादि। मन्त्रस्तत्त्वचोदनं भाषणम्। **मुद्रा** देवता ताभ्यां साध्यत**योपेतः** सिद्धितत्परः स **साधको** भवति। मन्त्र एव केवलः कुतो न जप्यत इत्याह— **मुद्रे**त्यादि। देवभावनामुक्तं **सान्निध्यं** साक्षात्करणं कर्तृ **मन्त्रं** कर्म। **न भवति** न प्राप्नोतीत्यर्थः। **देहिनो** योगिनो विशिष्टदेहयोगात्॥ ६ ॥

अभियोगेन बोद्धव्यं [1]यथा ऊष्मक्रियात्मनि ।
ये द्विषन्ति महायोगं सर्वकामार्थसाधकम् ॥ ७ ॥

श्वानयोनिशतं गत्वा चण्डालेष्वपि जायते ।
यथा क्वचित् घृतार्थी सलिलं मथ्नाति श्रद्धया ॥ ८ ॥

न च सम्पद्यते सर्पिः कायक्लेशस्तु केवलम् ।
अन्यथा च वृथा भद्रधारणं पूजनमपि ॥ ९ ॥

जीवनोपायहेतुत्वादन्ययोगसमाश्रितः ।
महायोग[2]धरा वीरा यस्मिन् देशे वसन्ति वा ॥ १० ॥

चण्डालम्लेच्छसत्त्वेऽपि तद्देशं परिकल्पयेत् ।
[3]तस्याहं नित्यं तिष्ठामि सत्त्वानु][4]ग्रहहेतुना ॥ ११ ॥

---

1. यावत्- भो०
2. वरा- भो०
3. तत्राहं- भो०
4. इतः परं २२ पटलस्य तृतीयश्लोकादनुपलब्धा मातृका पुनः प्रारभ्यते।

इति श्रीहेरुकाभिधाने दूतीलक्षणशक्त्यवस्थाविधि-पटल एकोनत्रिंशतिमः ॥ २९ ॥

तच्च मन्त्रसान्निध्य**मभियोगेन** सादरनिरन्तरदीर्घकालाभ्यासेन **बोद्धव्यम**धिगन्तव्यम्। तदेव किं तदित्याह— **यथा ऊष्मक्रियात्मनी**ति। सत्त्वो व्रजनार्थं शान्तिकपौष्टिकाभिचारादिकमूष्मा तस्य क्रिया निष्पादनम्। सा यथात्मनि भवति तथा सामर्थ्यं तदेव सामर्थ्यमिति यावत्। ये रत्नत्रयापकारिणस्तेष्विहैव दुःखादिदानात् सामर्थ्यं दर्शितव्यम्। किञ्च परत्रापि मन्त्रसामर्थ्यमित्याह— **य** इत्यादि। **महायोगं** श्रीहेरुकयोगम्। शेषं सुबोधम्। महायोगान्नान्यः सम्बोधिसाधक इत्याह— **यथे**त्यादि। श्रद्धयाऽभिसंप्रत्ययेन यथैवं [1]तथान्ययोगाभ्यासान्न किञ्चित् फलमितिभावः। अन्यस्य योगस्य **भद्र**हेतुत्वेन **धारणम्**। पूजनमिवेति **पूजनमपि** वा। तद्यथा अन्ययोगधारणं न परलोकार्थमित्याह— **योगमन्यमि**ति। श्रीहेरुकयोगिनां निवासस्थानमपि पुण्यजनकमित्याह— ते **महायोगधरा** इत्यादि। **चण्डालदेशोऽपि** वीरैरध्यासितो यस्तं **देशमपि** सद्देशमेव **परिकल्पयेत्**। **तस्ये**ति श्रीहेरुकयोग्यधिष्ठितस्य देशस्य सम्बन्धिनो ये **सत्त्वास्तेषाम् अनुग्रहार्थं नित्यं तिष्ठामि** ॥ ७-११ ॥

शक्तिर्मन्त्रशक्तिः। **अवस्था** श्रीहेरुकयोग्यध्युषिते देशे सत्त्वानामर्थायावस्थितिः दूतीलक्षणशक्त्यवस्था **विधीयन्ते** ज्ञानार्थं येन स चासौ **पटलश्चे**ति स तथा। **ऊनत्रिंशतिम** ऊनत्रिंशत्तमः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतावेकोनत्रिंशतिमः पटलः ॥ २९ ॥

*

1. यथैवं मथनात्- भो०

मुरजबन्धमन्त्रोद्धारविधिपटलस्त्रिंशतिमः

अथान्यतमं वक्ष्ये प्रस्तारं तु सुदुर्लभम् ।
येन विज्ञातमात्रेणाशुसिद्धिः प्रसाधकः ॥ १ ॥

अथेति मूलमन्त्रोद्धारप्रस्तारादनन्तरमन्यतमं प्रस्तारं वक्ष्ये। आस्तीर्यन्ते वर्णा मन्त्रा(मात्रा)श्चास्मिन्निति **प्रस्तारः**। एकोनपञ्चाशत्कोष्ठकरेखासन्तानः। किं भूतोऽयमित्याह— **सुदुर्लभमि**ति। यतोऽस्माच्चतुर्मुखो मन्त्र उद्ध्रियते ततः स तथा। मन्त्रस्यैवोद्धरणीयस्य को विशेष इत्याह— **येने**त्यादि। येनेति मन्त्रेण। **आशुसिद्धिः प्रसाधक** इति। तेन विघ्नप्रशान्तिः॥ १ ॥

भूमिभागे समे रम्ये चन्दनेनोपलिप्य च ।
सुगन्धगन्धमृदिते पुष्पप्रकरसङ्कुले ॥ २ ॥

दीपमालासमाकीर्णे धूपामोदमनोरमे ।
सकलीकृत्य चात्मानं दिशाबन्धं तु कारयेत् ॥ ३ ॥

मुरजबन्धं ततः कृत्वा नवरेखा तु वर्तुलम् ।
वर्णमात्रं समालिख्य प्रस्तरेत् सुसमाहितः ॥ ४ ॥

कुत्र प्रस्तृणीयादित्याह— **भूमी**त्यादि। चन्दनपञ्चामृतमभिप्रेतं तत्स्वरूपज्ञस्याह्लादकत्वात्। **सुगन्धगन्धश्च**न्दनादिः। पञ्चामृतमिश्रेण सुगन्धेन गन्धेन लेप्यो भूमिभाग इत्यर्थः। **पुष्प**सुगन्धं चम्पकादि। **धूपः** पिण्डधूपादिः। एवंभूते स्थाने शून्ये शून्यतां विभाव्य दिग्बन्धादिपूर्वकं वर्णमात्रं प्रस्तरेत् प्रस्तृणीयात्। वर्णा अकारादयः ककारादयश्च, वर्णा एव **वर्णमात्रम्**। किंकृत्वेत्याह— **समालिख्ये**ति। समत्वेनाकारादिककारादिक्रमेणारोप्य। लिखनमेव किंपूर्वकमित्याह— **मुरजे**त्यादि। मुरजस्येव बन्धः संस्थानां(नं) यस्य स तथा प्रस्तारः। अनुलोमविलोमाभ्यां ततः स्वरवर्णाग्रहणाद्विमुखत्वेन मुरजसाम्यम्॥ २-४॥

तत्रस्थमुद्धरेद्वीरं सर्वकामार्थसाधकम् ।
अनुलोमविलोमेन स्वरवर्णांश्च साधकः ॥ ५ ॥

वीरो मन्त्रः। **सर्वकामार्थसाधकमि**ति मन्त्रविशेषणम्। कुतस्ततो वीरमुद्धरे-दित्याह— **अनुलोमविलोमेन स्वरवर्णाश्च साधक** इति। स्वरा अकारादयः। वर्णाः ककारादयश्च ध्वनिरूपत्वात्। यतस्तानुद्धरेत्॥ ५॥

एतत्संख्यान्तर्गतं [1][कारयेत् कुशलं] मुनेः।
कोष्ठद्वात्रिंशति संगृह्य पञ्चमेन तु भेदितम्॥ ६॥

एतत्संख्यान्तर्गतमिति। कोष्ठकसंख्यान्तर्गतं यथा भवति तथा समुद्धरेदित्यर्थः। कस्य वचनादेतदित्याशङ्क्याह—**मुनेरि**ति। **कोष्ठद्वात्रिंशति संगृह्ये**ति। कोष्ठेति निर्वि-भक्तिम्। ककाराधिष्ठितं कोष्ठकमारभ्य द्वात्रिंशत्तमं कोष्ठकं सकाराधिष्ठितं गृह्यते। ककारात्प्रभृतिगणनया सकारस्यैव ग्रहणम्। सर्वत्रैवं कोष्ठकग्रहणेन कोष्ठकस्थाने चाक्षरं गृह्यते। अस्यैवोपयोगित्वात्। **कोष्ठतृतीयमिति पाठे** तालव्यशकाराधिष्ठित-मारभ्य दन्त्यसकाराधिष्ठितं तृतीयं गृह्यते। **पञ्चमेन तु भेदितमि**ति। उकारेण विशे-षितम्॥ ६॥

शतार्धार्धं समादाय चतुर्विंशतिभेदितम् ।
कोष्ठषट्त्रिंशतिमं कोष्ठत्रयेण भेदितम् ॥ ७॥

शतार्धार्धं समादायेति। ककाराधिष्ठितं कोष्ठकमारभ्य गणनया मकारम्। तथा **चतुर्विंशतिभेदितमि**ति। तथा ककाराधिष्ठितमारभ्येत्यर्थः। **चतुर्विंशतिभेदितम्**। चतु-र्विंशतितमं भकारम्। तेनाधोभागे शतार्धार्धं भेदितम्। **कोष्ठषट्त्रिंशतिमं कोष्ठत्रयेण भेदितम्**। अकाराधिष्ठितमारभ्य नकाराधिष्ठितं षट्त्रिंशतिमं षट्त्रिंशत्तमम्। कोष्ठत्रयं तृतीयम्। कोष्ठमकाराधिष्ठितमारभ्येकारस्तेन भेदितम्॥ ७॥

द्वात्रिंशत्ततो गृह्य पञ्चमेन तु भेदितम् ।
पञ्चविंशत्ततो गृह्य चतुर्विंशति [2]योजयेत् ॥ ८॥

द्वात्रिंशत्ततो गृह्य कोष्ठपञ्चमेन तु भेदितमिति। तत इति ककाराधिष्ठितमारभ्य। **तु**रेवार्थे समुच्चये वा। एवं पूर्वत्रापि **पञ्चविंशत्ततो गृह्य चतुर्विंशतियोजयेदि**ति।

---

1. नास्ति क., गृहीतस्तु भोटानुसारी।
2. योजितम्- भो०

पञ्चविंशं पञ्चविंशतितमं मकाराधिष्ठितम्। तत इति ककाराधिष्ठितात्। **चतुर्विंशतीति** चतुर्विंशतितमं भकारं तच्च तृतीयान्तम्। मकारमधोभागे भकारेण योजयेदित्यर्थः॥८॥

त्रयस्त्रिंशसमादाय कोष्ठपञ्चदशा[1]र्चितम् ।
पञ्चमेन समायुक्तं शोभनं परमं मतम् ॥ ९॥

त्रयस्त्रिंशसमादाय कोष्ठपञ्चदशार्चितमिति। तत इति वर्तने। ककाराधिष्ठितमारभ्य त्रयस्त्रिंशत्तमं हकाराधिष्ठितम्। पञ्चदशमनुस्वाराधिष्ठितमकाराधिष्ठितमारभ्य। **पञ्चमेन समायुक्तं शोभनं परमं मतमि**ति। अकाराधिष्ठितमारभ्य पञ्चमत्वम्। पञ्चमेन उकारेण बीजमिदं शोभनं सर्वार्थकारित्वात्॥ ९॥

[2][द्वाविंशतिसमायुक्तं [3]सप्तविंशतिमेव च ।
[4]एतत्सर्वं समादाय] प्रथमं पदमुच्यते ॥ १०॥

द्वाविंशतिसमायुक्तं तथा सप्तविंशतिमेव चेति। द्वाविंशतीति द्वाविंशतितमं फकाराधिष्ठितम्। अकाराधिष्ठितात्सप्तविंशतितमं टकाराधिष्ठितम्। **एतत्सर्वमादाय प्रथमं पदम्**। प्रथमं मन्त्रवाक्यमुच्यत इति प्रथमं पदम्॥ १०॥

कोष्ठकादेकोनविंशतिमं वह्निपुत्रेण समायुक्तम् ।
कोष्ठत्रितयेन भेदितं साक्षरं भवेत् ॥ ११॥

यवर्गाच्चाष्टमं बीजं कोष्ठषट्त्रिंशेन समायुतम् ।
पुनरेवं पदञ्चैव सर्वकामार्थसाधकः ॥ १२॥

कोष्ठकादेकोनविंशतिमं वह्निपुत्रेण समायुक्तं कोष्ठत्रितयभेदितमिति। अकाराधिष्ठितात्कोष्ठादेकोनविंशतितमं गकाराधिष्ठितम्। वह्निः पुत्रो यस्य स रेफः। अकाराधिष्ठितात्कोष्ठत्रितयभेदितम(इ)काराधिष्ठितम्। **यवर्गाच्चाष्टमं बीजं षट्त्रिंशति-**

---

1. ०न्वितम्- भो०
2. [ ] नास्ति क., भो० देगे संस्करणेऽपि।
3. एकादश- भो०
4. 'एतत्सर्वं समादाय' नास्ति भो०, गृहीतं तु टीकानुसारि।

समायुतं पुनरेवं पदं चैवेति। यकारश्चासौ वर्गश्चेति यवर्गो यकारः ततो अष्टमं बीजं हकारः कोष्ठषट्त्रिंशतीति अकाराधिष्ठितात् षट्त्रिंशत्तमं कोष्ठं नकाराधिष्ठितम् पुनरेवम्भूतं पदम्। **चकार एव**कारश्च समुच्चयावधारणयोः॥ ११-१२॥

स्वयम्भूं ततो गृह्य कोष्ठात् पञ्चमसंयुतम् ।
बिन्दुना ऊर्ध्वभूषितम् ॥ १३ ॥

सर्वार्थसाधकं नाम द्वितीयं पदमुच्यते ।
एकोनविंशतिकोष्ठं तु सप्तविंशेन भेदितम् ॥ १४ ॥

तृतीयेन तु संयुक्तं त्रयस्त्रिंशत्समादाय कोष्ठद्वितीयेन तु ।
विंशकेन समायुक्तं शोभनं परमं हितम् ॥ १५ ॥

स्वयम्भूं ततो गृह्येति। स्वयम्भूर्हकारः। तत इति ग्रिह्ण ग्रिह्ण पदात्। **कोष्ठात् पञ्चमसंयुतमि**ति। अकाराधिष्ठितात् पञ्चममुकाराधिष्ठितम्। **बिन्दुना ऊर्ध्वभूषितमि**ति। नेह सर्वत्रैवार्धचन्द्रः बिन्दुमात्रेण भूषितत्वात्। **सर्वकामार्थसाधकं नामे**ति। अनया संज्ञया प्रसिद्धमित्यर्थः। फट्कारः पूर्वतोऽनुवर्तनीयो बिन्दुना ऊर्ध्वयोजितमित्यतः **द्वाविंशतितमं ततो गृह्य तथैकादशमेव चे**ति **क्वचित्पाठे** ककाराधिष्ठिताद् द्वाविंशतितमं फकाराधिष्ठितम् एकादशं टकाराधिष्ठितम्। इति फट्कारः सुबोधः। इति **द्वितीयपदम्**। **एकोनविंशतिकोष्ठं तु सप्तविंशेन भेदितम्**। **तृतीयेन समायुक्तमि**ति। अकाराधिष्ठितादेकोनविंशतितमं गकाराधिष्ठितम्। **तुः** समुच्चये। सप्तविंशतितमं रेफाधिष्ठितम्। **त्रयस्त्रिंशत्समादाय कोष्ठद्वितीयेन तु विंशकेन समायुक्तं शोभनं परमं हितमि**ति। त्रयस्त्रिंशत् त्रयस्त्रिंशत्तमं ककाराधिष्ठितात् अकाराधिष्ठिताद् द्वितीयमाकाराधिष्ठितम्। ककाराधिष्ठितात् विंशतितमं नकाराधिष्ठितम्॥ १३-१५॥

एकविंशतिकोष्ठं तु तथा षड्विंशसंयुतम् ।
द्विरभ्यासपदं चैव उद्धरेत्सुसमाहितः ॥ १६ ॥

एकविंशतिकोष्ठं तु तथा षड्विंशसंयुतमिति। एकविंशतितमं ककाराधिष्ठितात् पकारो ग्राह्य इत्यर्थः। **तुः** समुच्चये। तथेति ककाराधिष्ठितात् षड्विंशतितमं यकाराधिष्ठितम्। **द्विरभ्यासपदं चैवे**ति। द्वितीयं समीपे तादृशं पदम्। नियमेनापीत्यर्थः॥ १६॥

विलोमेन ततो गृह्य कोष्ठकात्प्रथमं च वै ।
चतुर्थान्तेन संयुक्तं तथा पञ्चदशार्चितम् ॥ १७॥

विलोमेन ततो गृह्य कोष्ठकात्प्रथमं च वै। चतुर्थान्तेन संयुक्तं तथा पञ्चदशा-र्चितमिति। विपरीतत्वेन ततः प्रस्तारात् प्रथमाद्धकाराधिष्ठिताद्धकारमेव प्रथमं गृहीत्वा तृतीयं पदमुच्यत इति सम्बन्धः। अकाराधिष्ठिताच्चतुर्थमीकाराधिष्ठितं तस्यान्तम् उकाराधिष्ठितम्। अन्यत् सुबोधम्॥ १७॥

धर्मार्थमोक्षकामानां तृतीयं पदमुच्यते ।
कोष्ठकाद् द्वितीयं बीजं तु षड्त्रिंशतिकोष्ठकात् ॥ १८॥

तृतीयं पदं धर्मादीनां पदमित्यपरं पदमध्याहार्यम्। इहापि फट्कारोऽनुवर्तनीयः। इति तृतीयपदम्। **कोष्ठात् द्वितीयं बीजं त्वि**ति। अकाराधिष्ठितात् [1]आकाराधिष्ठितं द्वितीयं बीजं देवतानाम्। **तु**रवधारणे। **षट्त्रिंशतिकोष्ठकादि**ति। षट्त्रिंशत्तमात्कोष्ठ-कादकाराधिष्ठितं कोष्ठमारभ्य नकाराधिष्ठितान्नकार एव ग्राह्य इति भावः॥ १८॥

तथा द्वा(षड्)विंशमेव च [चतुर्थं पदमुच्यते] ।
त्रयस्त्रिशं समादाय कोष्ठत्रयोदशार्चितम् ॥ १९॥

नकारमादाय **चतुर्थं पदमुच्यत** इति ज्ञेयम्। शेषं सुबोधम्। **त्रयस्त्रिशमि**ति हकारम्। **कोष्ठत्रयोदशे**ति अकाराधिष्ठितात्॥ १९॥

कोष्ठकाद्दशमं चैव विलोमेन तु साधकः ।
[2]**[अकाराधिष्ठितात्] कोष्ठादेकोनविंशतिमं तथा ॥ २०॥**

[3]**[ककाराधिष्ठितात् कोष्ठात्] त्रयोविंशति कोष्ठकात् ।**
द्वितीयकोष्ठसंयुक्तं बिन्दुना ऊर्ध्वभूषितम् ॥ २१॥

---

1. अकारा- क.
2. नास्ति- क., भो०, गृहीतं तु टीकानुसारि।
3. नास्ति- क., भो०, गृहीतं तु टीकानुसारि।

पार्थिवं तु ततो गृह्य अष्टमं तु पुनस्तथा ।
अग्निना[1] भेदयेद् धीमान् [2]हूँफट्कारान्तयोजिता ॥ २२ ॥

कोष्ठकाद्दशमं चैव विलोमेन तु साधक इति। हकाराधिष्ठिताद् दशमं भकाराधिष्ठितम्। **कोष्ठकादेकोनविंशतिममि**ति। अकाराधिष्ठितात्। एकोनविंशतिमं गकाराधिष्ठितम्। **त्रयोविंशतिकोष्ठादि**ति। ककाराधिष्ठितात् त्रयोविंशतितमं कोष्ठं वकाराधिष्ठितं ततो व(ब)कार एव ग्राह्य इत्यर्थः। अकाराधिष्ठिताद् द्वितीयमाकाराधिष्ठितम्। **बिन्दुना ऊर्ध्वभूषितमि**ति। बिन्दुमात्रं बिन्दुः। **पार्थिवं** वकारबीजम्। **तत** इति प्रस्तारात्। **अष्टमं** ककाराधिष्ठितात्। **अग्निने**त्यादि सुबोधम्। इहापि फट्कारश्चानुवर्तनीयः। **हूँफट्कारान्तयोजिते**ति। हूँफट्कारावन्ते योजितावस्येति हूँफट्कारान्तयोजितेति। निष्ठान्तस्य परनिपातः। निर्विभक्तिकं पदम्। प्लुतोच्चारणं च॥ २०-२२।

एतत्त्रैलोक्यविजयं नाम मन्त्रं पदैश्चतुर्भिर्भूषितम् ।
ॐकारदीपकाः सर्वे हुँफट्कारान्तयोजिता ॥ २३ ॥

एतदिति मन्त्रवाक्यं [3]समयम्। त्रैलोक्यं हरिहरहिरण्यगर्भान्निःशेषेण जयतीति **त्रैलोक्यविजयम्।** शेषं सुबोधम्। **ॐ** इत्यादि। चत्वारि मन्त्रपदानि प्रणवदीपकानि, ततः प्रणवस्वरूपमुक्तम्। हूँफट्कारौ पूर्वं **हूँकारफट्कारावन्ते योजितौ** येषां मन्त्राणां ते तथा। ततोऽयं मन्त्रः— ॐ सुम्भ निसुम्भ हुँ हुँ फट्[4] फट्। ॐ ग्रिह्ण ग्रिह्ण हुँ हुँ फट् फट्। ॐ ग्रिह्णापय ग्रिह्णापय हुँ हुँ फट् फट्। ॐ आनय हो भगवान् वज्र हुँ हुँ फट् फडिति॥ २३॥

विद्याराजचक्रवर्तिमन्त्रोऽयं न भूतो न भविष्यति ।
तत्त्वसंग्रहे परमाद्ये संवरे वज्रभैरवे ॥ २४ ॥

चतुःक्रोधसमायुक्तमष्टमूर्तिसमन्वितम् ।
मण्डलं तस्य रक्षार्थं सर्वदुष्टविशेषतः ॥ २५ ॥

---

1. अग्निपुत्रेण भेदयेत्- भो०
2. हुँकारान्त- भो०
3. समूहम्- भो०
4. हुँ हुँ फट्- भो० (अग्रेऽप्येवमेव)।

अनेन लब्धमात्रेण म्रियते ह्यविचारणात् ।
चक्रयोगात्समुच्चार्य सर्वसिद्धिफलोदयम् ॥ २६ ॥

विद्याराजचक्रवर्तीति। विद्याभिर्देवताभी राजन्त इति विद्याराजाः, विद्याराजानामन्येषां मध्ये चक्रवर्ती **तत्त्वसंग्रहादौ यन्मण्डलं तस्य रक्षार्थं** मन्त्रोऽयम्। एतदेवाह—

तत्त्वसंग्रहे परमाद्ये संवरे वज्रभैरवे ।
चतुःक्रोधसमायुक्तमष्टमूर्तिसमन्वितम् ॥
[1]मण्डलं तस्य रक्षार्थं सर्वदुष्टविशेषतः ॥ इति।

अष्टमूर्तयो अष्टौ लोकपालाः। **सर्वदुष्टे**ति। सर्वदुष्टेभ्यो मण्डलरक्षार्थम्। **अनेने**ति मन्त्रेण **म्रियत** इति दुष्टो यः कश्चित्। **चक्रयोगा**दिति। आत्मसकाशात् प्रज्ञायां तत आत्मनि प्रवेशेन जपात् **सर्वसिद्धिफलोदयम्**॥ २४-२६ ॥

[2]**ॐ सुम्भ निसुम्भ हुँ हुं फट् फट्। ॐ ग्रिह्ण ग्रिह्ण हुँ हुँ फट्। ॐ ग्रिह्णापय ग्रिह्णापय हुँ हुं फट्। ॐ आनय हो भगबाँ(वाँ) [3]वज्र हुँ हुं फट्॥ २७॥**

इति श्रीहेरुकाभिधाने मुरजबन्धमन्त्रोद्धारविधि-पटलस्त्रिंशतिमः॥ ३०॥

मन्त्रपदचतुष्टयं भवतीति मन्त्रसमुदायमाह— **ॐ** इत्यादि। अत्रापरौ हुँफट्कारौ गोपितौ। **मुरजबन्धमन्त्रोद्धारो विधीयते** येन स चासौ पटलश्चेति स तथा। **त्रिंशतिमं** त्रिंशत्तमः॥

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ त्रिंशतिमः पटलः॥ ३०॥

*

---

1. सुखमण्डलरक्षार्थं- भो०
2. अस्य मन्त्रस्य मूलस्थे टीकास्थे च पाठे भेदो वर्तते। चतुर्ष्वेव पादेषु मूलस्थे पाठे केवलं प्रथमे पादे फट् फडिति पदद्वयमन्यत्र फडित्येकमेवास्ति। टीकायां तु चतुर्ष्वेव फट् फडिति द्विवारं वर्तते। अन्यच्च भोटपाठे हुँ हूँ इति पूर्वो ह्रस्वोऽपरश्च दीर्घोऽस्ति किन्तु संस्कृतमातृकासु उभावेव ह्रस्वौ हुँकारौ। अत्र मन्त्रज्ञैर्विद्वद्भिः किमुचितमिति निर्धारणीयम्।
3. विद्याराज- भो०

भक्ष्यहोमबलिक्रियाहस्तछोमाविधिपटल एकत्रिंशतिमः

ततः

महामांसेन सर्वेषां नाशनं वज्रजं स्मृतम् ।
एतत्सर्वक्रूराणां नाशको दारुणस्तथा ॥ १ ॥

एवं श्वानशूकरमांसानां ताम्रचूडानां तथैव च ।
भक्ष्यहोमबलिक्रिया[1] कर्तव्याऽविचारतः ॥ २ ॥

सप्तविंशतितम उद्दिष्टा पूजा बलिक्रिया च, अष्टाविंशतितमे होमक्रिया, तन्निर्देशार्थमिदानीं पटलमाह— **तत** इति। होमात्। **सर्वेषामिति**। गुरुबुद्धबोधिसत्त्वाद्यपकारिणाम्। **वज्रजं** कायवक्त्रादिकम्। **श्रीसमाजे**ऽप्युक्तम्— ''महामांसेन सर्वेषां नाशनं वज्रजं स्मृतम्'' (गु० स० १५.७७) इति। अभेद्यज्ञानजं वा वज्रजम्। कुत एवमित्याह— **एतदित्यादि**। एतदित्येष इत्यर्थः। स च मांसहोमो यतः **सर्वक्रूराणां नाशको दारुणस्तथा**। तेन महामांसेन कृत इत्यर्थः। इतो होमान्तरेभ्योऽतिशय उक्तः। ''अत्यन्तक्रूररौद्रेषु सौम्यता नोपयुज्यते'' इति **वचनात्** तेषामपायगमनं निषेधार्थम्। त एवं ततो निवर्तनीयाः। **एवमिति**। **नाशको दारुणः**। पश्वादि(**श्वादि**)-मांसहोमोऽपि। **भक्ष्येति** भक्षणं पूजार्थम्। तेषामेव मांसेन पूजादिक्रिया कार्येत्यर्थः। किमनेनाभिमतं स्यादिति [न वा विकल्पविचारस्]तद्विपरीतोऽविचारः॥ १-२ ॥

सिद्ध्यत्यशेषनिःशेषसर्वराज्यं प्रसिद्ध्यति ।
शङ्खशुक्तिकमुक्तानां त्रयो निमित्तसम्भवाः ॥ ३ ॥

[2]धर्मज्ञानशरीराणां कपालं केन दूष्यते ।
कपालमालिनं वीरं चन्द्रार्धकृतभूषणम् ॥ ४ ॥

ततः किमित्याह— **सिद्ध्यतीत्यादि**। **अशेषं** सकलं खड्गादिनिकृष्टाः[सिद्धयः शेषाः पश्चा**न्निःशेषं** बुद्धत्वम्। **सर्वराज्यं** चक्रवर्तित्वम्] एषां स्वयमव्यापादितानां

---

1. अभिचार- इत्यधिकं भो०
2. धर्मकाय- भो०, क.

ग्रहणम्। पात्रं च कपालमेव चर्यायोगिना कार्यमित्याह— [**शङ्खे**त्यादि। **मुक्ता** इति मुक्ताजनको जन्तुविशेषः, तस्यास्थिविशेषमपि मुक्ताशब्देने]त्युच्यते। यथा शङ्खादयो वैदिकानां पवित्रास्तथा कपालमपि [प्राण्यङ्गविशेषेणान्तरमिति दर्शयितुमाह—] **त्रयो निमित्तसंभवा** इति। निमित्तं कर्मक्लेशाः स्कन्धादयश्च। एते शङ्खादयस्त्रयो निमित्तात् [संभवन्ति। मनुष्योऽपि तथा, तत्कथं वेदवादी कपालं दूषयेत्। ननु] भैषज्यादिषु तदुपयोगेन शङ्खादिभ्यः पवित्रतया [क्रियते चेत् किमन्यजनप्रयोजनं न दृष्टं] भगवतापि नोपलब्धं कपालात् कार्यम्। न हि रत्नं सर्वजनसाधारणं स्वरूपज्ञानम्। केषु दूषणमित्याह— **धर्मज्ञानशरीराणामि**ति। धर्माणां स्कन्धादीनां शून्यतादिना ज्ञानं बोधस्तदेव शरीरं स्वरूपं येषां ते तथा योगिनाम्। तेषु सप्तम्यर्थे षष्ठी। अत एव श्रीहेरुकमपि तद्धारिणं **केन दूषयेदि**त्याह— **कपाले**त्यादि। कपालं मेलितुं शीलमस्येति कपालमाली। शिखादित्वाद्वा कपालमालाऽस्यास्तीति मत्वर्थीयः। पञ्चकपालशिरोमालाधारित्वात्। **वीरः** निःसङ्गत्वात्। चन्द्रार्धमेव कृतं संस्कृतं भूषणं यस्य स **चन्द्रार्धकृतभूषणः**। निष्कलङ्कनिर्माणग्रहणविशुद्ध्या चन्द्रार्धधारणम्॥ ३-४॥

[एवमेव हि] वीराणां वीरजं स्मृतम् ।
छोम्मकान् दर्शयेत् पञ्चवामहस्तं तु साधकः॥ ५॥

स **वीराणाम**पि मध्ये ये **वीरा** हरिहरादयस्ते **जायन्ते** यतस्तं **स्मृतं** प्रसिद्धं केन दूषयेत्। **छोम्मकान् दर्शयेत् पञ्चे**ति। वज्रवाराह्यादयः पञ्चदेव्यः कथिताः। जटामकुटस्थेषु पञ्चसु कपालेषु तान् दर्शयेत् ध्यायात्। **वामहस्तं तु साधक** इति। **दर्शयेदि**ति सम्बन्धः। **तु**र्विशेषे। वामहस्तस्थं समयादि दद्यादिति भावः॥ ५॥

वीराणामालयो ह्येष छोम्मकानां प्रवर्तनम् ।
वामोद्भवं जगत् सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ ६॥

कुत इत्याह— **वीराणामि**त्यादि। **वीराणां** वज्रसत्त्वादीनाम्। **आलय एष** वामो हस्तः। **हि**र्यस्मात्। कुतो यतो वामाद्धस्ता**च्छोम्मकानां** सङ्केतितानां वीरवीरेश्वरीणां **प्रवर्तनम्**। तया विशुद्ध्येदमित्याह— **वामे**त्यादि। **वामा** शून्यता। ''शून्येभ्यो धर्मेभ्यः शून्या एव धर्माः प्रजायन्ते'' इति **वचनात्**। **वामा** प्रज्ञा च **तदुद्भवं जगत्सर्वं**

स्कन्धादि। न [1]ह्युपायमात्रेण किञ्चिदर्थक्रियाकारित्रैलोक्यमित्यादिना बहिरपि तथेति प्रतिपादयति॥ ६ ॥

वज्रसत्त्वस्तनवे स्थितः लतायां वैरोचनस्तथा ।
[एवमेव भवेत्तत्र] गुरवे पद्मनर्तकः ॥ ७॥

धारायां स्थितो वीरः सर्वसिद्धिप्रदायकः ।
कनिष्ठायामाकाशगर्भ तनुरव्ययः ॥ ८॥

[2]नखेषु च हयग्रीव[स्तथा चैवोक्त]मालयम् ।
एते सर्ववीराणां वामसम्भव[3]कारणम् ॥ ९॥

हस्तपूजामाह— **वज्रसत्त्व** इति। **वज्रसत्त्वस्तनवे**ऽङ्गुष्ठे भावनीयः। **लतायां** तर्जन्यां **वैरोचनः**। **गुरवे** मध्याङ्गुलौ **पद्मनर्त्तकः** पद्मनर्त्तेश्वरः। **धारायाम**नामिकायां, **वीरः** श्रीहेरुकः। **कनिष्ठायामाकाशगर्भे**ति निर्विभक्तिकं स च **तनुः** सूक्ष्मः दुरवबोधरूपत्वात्। न व्येतीत्य**व्ययः**। आकाशगर्भो वज्रसूर्यः। सर्वाङ्गुलि**नखेषु** च **हयग्रीवः**। **चः** समुच्चये। **वामो**द्भवत्वमेषामपीत्याह— **आलयमि**ति। आत्मग्राहादिस्वभावो लीयते न दृश्यते यत्र विचाराद् वज्रसत्त्वादिदेवता जायते तदालयम्। **एत** इति। षष्ठ्यर्थे प्रथमा। एषां **सर्ववीराणां वामसंभवः** करः **कारणम्**॥ ७-९ ॥

हस्ततले श्रीहेरुकवज्रवाराहीसमागमोत्सुकः ।
पृष्ठे तु सर्वडाकिन्यो [दर्शयेदात्मपञ्चकम्] ॥ १०॥

करन्यासं भवेदेतत् सर्वप्रियसमागमम् ।
एवं विधिविधानेन पूजयेद्वीरमुत्तमम् ॥ ११॥

पृथिवी लोचना ख्याता अब्धातुर्मामकी स्मृता ।
तेजः पाण्डरा ख्याता वायुस्तारा प्रकीर्तिता ॥ १२॥

हस्ततल इति हस्तमध्ये। **श्रीहेरुकवज्रवाराही**ति। श्रीहेरुकसमापन्ना वज्रवारा-

---

1. नह्यपाय- भो०
2. नखेषूक्तो- भो०
3. कारिणाम्- क.

हीत्यर्थः। अतः **समागमोत्सुकः**। **पृष्ठे तु सर्वडाकिन्य** इति। पार्श्वादिषु सर्वा डाकिन्यः। **तु**शब्दस्य पृष्ठोपलक्षणत्वाभिधायकत्वात्। एतदुक्तम्— करमध्ये साष्टदलं पद्मं तस्य किञ्जल्के श्रीहेरुकसमापन्ना वज्रवाराही। पूर्वदले डाकिनी। उत्तरे लामा। पश्चिमे खण्डरोहा। दक्षिणे रूपिणी। ऐशाने यामिनी। आग्नेये मोहनी। नैर्ऋते सञ्चाल(रि)णी। वायव्ये त्रासनीति विभाव्यम्। **करन्यासं भवेदेतत्सर्वप्रियसमागममिति**। करे देवतान्यासो यत्र विधिविधाने तत्करन्यासम्। सर्वाणि प्रियाणि समागच्छन्त्यनेनेति तत्तथा। **एवम**नेन क्रमेण **वीरं पूजयेत्**। डाकिन्यादीनां संज्ञानान्तरमाह— **पृथिवी**त्यादि॥ १०-१२॥

चुम्बिका शून्ये तु [एवं] पारमितास्तथा ।
मध्ये तु सर्ववीरालयं पृष्ठे तु विसर्जयेद् बुधः ॥ १३॥

चुम्बिकेति वज्रवाराह्या अपरं नाम। सैव **शून्ये** शून्यतायाम्। शून्यताविशुद्ध्येत्यर्थः। अतः **पारमिता** इति। या दानशीलक्षान्तिवीर्यध्यानपारमिताडाकिन्यादयो वज्रवाराह्यन्ताः क्रमेण ज्ञेयाः। **तथा**शब्दः **प्रज्ञापारमिता** पञ्चभिः पारमिताभिः सङ्गच्छत इति सूत्र(च)यति। **मध्ये तु सर्ववीरालयमि**ति। मध्ये सर्ववीराणां वज्रपदादीनामालयं क्रीडनं पश्येदिति ज्ञेयम्। सर्ववीरक्रीडास्थानविशुद्ध्या करमध्यमिति भावः। **पृष्ठे** तस्य **विसर्जयेद् बुध** इति। करपृष्ठे वा सर्वदेवता दर्पणप्रतिबिम्बे तत्पश्येदित्यर्थः। तेन करस्योपरि पृष्ठे च भावयेदिति विशेषार्थं **तु**शब्देन दर्शयति। अतो य एव द्रष्टा स बुधः॥ १३॥

अप्रकाश्यमिदं गुह्यं गोपनीयं प्रयत्नतः ।
एवं छोम्मयेद् वीरं एकमेव चरुमारभेत् ।
सर्ववीरसमायोगडाकिनीजालसंवरम् ॥ १४॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने भक्ष्यहोमबलिक्रियाहस्तछोमाविधिपटल एकत्रिंशतिमः॥ ३१॥

"**छोम्मकान् दर्शयेत् पञ्च**" इति (३१.५)। पञ्चामृतमपि छोम्मकाभिधानमिति ज्ञेयम्। ततश्च करन्यासविषयम्। तत्रैव पञ्चामृतम्। वुँ आँ ज्रीँ खँ हूँ बीजोत्पन्नं

वैरोचनाद्यात्मकं त्र्यक्षराधिष्ठितं सम्पाद्य प्रचण्डादीनाम्। ॐ प्रचण्डे [1]हूँ हूँ फट् फडिति। ॐ खण्डकपालिन् [2]हूँ हूँ फट् फडिति सर्वनामग्रहणपूर्वकमनामाङ्गुष्ठ-वक्त्राभ्यां चतुर्विंशतिवारांस्तर्पणानि दत्त्वा जिह्वायामेकं दद्यादिति पञ्चामृतोपभोग इत्यर्थान्तरं ज्ञेयम्। ततः पूजा स्यात्। छोम्मकमपि करन्यासपूर्वकं दद्यादिति च ज्ञेयम्। कपालादौ च तथैव पञ्चामृतं करन्यासपूर्वकमास्वादयेदिति बोद्धव्यं तन्त्रस्यार्थ-बहुलत्वादेव। **छोम्मयेद्वीरमि**ति पूजयेदित्यर्थः। तत्रैकस्मिन् भवेदिति। अनेन पञ्चा-मृतादिविधिना **चरुकम**भक्ष**मेक**पात्रगतं भुञ्जीतेत्यर्थः। चरुभोगफलमाह— **सर्ववीर-समायोगडाकिनीजालसंवरमि**ति। हेरुकत्वं भवतीत्यर्थः॥ १४ ॥

भक्ष्यहोमबलिक्रिया अन्य**छोम्मका विधीयन्ते** येनासौ **पटल**श्चेति स तथा। **एकत्रिंशतिम** एकत्रिंशत्तमः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतावेकत्रिंशत्तमः पटलः॥ ३१ ॥

*

1-2. हुँ हुँ- भो०

तिर्यक्पशुवेतालसाधनोत्पत्तिक्रमविधिपटलो द्वात्रिंशतिमः

अतः परं समाख्यातं भक्ष्यभोजनमेलकम् ।
येन सम्यग्विधानेन आशु सिद्धिः प्रवर्तते ॥ १ ॥

इदानीं पूजादिसाधनपदार्थपटलमाह— **अतः परमि**त्यादि। **अतः** पूजादिकथनात्परं **समाख्यातं** नियतं समाख्यास्यमानत्वात्। किं तदित्याह— **भक्ष्यभोजनमेलकमि**ति। भक्ष्याणां पश्वादीनां भोजनं भोगो मिलति येन तत्तथा, मन्त्रसामर्थ्यम्। **येन** भक्ष्यभोजनमेलकेन **सम्यक्** शोभनं **विधानं** देवतायोगादि यत्र भक्ष्यभोजनमेलकेन तत्तथा। **सिद्धि**र्महामुद्रासिद्धिः। **आशु** इहैव जन्मनि॥ १ ॥

पशूनां [1]कर्षणं चैव पूर्वोक्तक्रमसाधकः ।
पशवश्च तथा पञ्च खरमानुषकूर्मोष्ट्रशृगालहयादिभिः ॥ २ ॥

पूजादिद्रव्यमाह— **पशूनामि**त्यादि। **कर्षणं** सामान्यतः सिद्धानां **पशूनां** मध्ये श्रेष्ठतया निष्कर्षणं पृथक्करणम्। **चैवे**ति। यतः पशवः श्रेष्ठा एव ग्राह्या इत्यर्थः। तत्साधकश्च कीदृगित्याह— पूर्वोक्तेन क्रमेण देवतायोगेन पशुभिः पूजां साधयतीति स तथोक्तः **पूर्वोक्तक्रमसाधकः**। के ते कर्षणीयाः पशव इत्याह— **पशव** इत्यादि। **चो**ऽपिशब्दार्थः। **तथे**ति यथा पशवस्तथा प्रतिपाद्यन्त इत्यर्थः। **खरो** गर्दभः। **मानुषः** प्रसिद्धः। वनमानुष इति **केचित्**। **कूर्मः** कच्छपः। **उष्ट्रो** दीर्घकन्धरः। **शृगालः** प्रसिद्धः। खरमानुषकूर्मोष्ट्रशृगालेति प्रथमाबहुवचनलोपे सति **पञ्च** तावदेते श्रेष्ठाः। **हयादिभिरि**ति सहार्थे तृतीया। आदिशब्दात् श्वा गौश्च॥ २ ॥

एते पशुप्रसिद्ध्यङ्गा सिद्धिसाधन[2]मेव च ।
वर्णानां [3]ब्राह्मणः पशुश्चतुष्पदानां हस्तिरुच्यते ॥ ३ ॥

एते पशुप्रसिद्ध्यङ्गा इति। प्रकृष्टा सिद्धिरेवाङ्गं स्वरूपं येषां ते तथा। सामान्य-

---

1. नामाकर्षणं- क.
2. मण्डले- भो॰
3. वर्णोत्तमः- भो॰

सिद्धिरपि तेभ्य आप्यत इत्याह— **सिद्धिसाधनमेव चे**ति। आकर्षणवेताडादिसिद्धि-रपि साधननिष्पत्तिः। **एव** नियमार्थः। **चः** सिद्धिसमुच्चये। पुनः पशुकर्षणमाह— **वर्णानामि**त्यादि। वृण्वन्ति सिद्धिमिति वर्णा मनुष्याः। मनुष्याणां मध्ये वर्णतो वर्णेभ्यो **ब्राह्मणः पशुः**। चतुष्पदानां खरादीनां हस्ती। अत आह— **चतुष्पदानां हस्तिरुच्यत** इति। इकारान्तोऽपि हस्तिशब्दोऽस्ति॥ ३॥

पक्षिणां हंस एव च तिर्यगाणां कच्छप[1]निर्जितः ।
देवानां मुखचालनं [नानारूपेण कथ्यते] ॥ ४॥

पक्षिणां हंस एव चेति। कर्षणप्रस्तावायातं पक्षिकर्षणमप्याह— काकादीनां मध्ये हंस एव श्रेष्ठ इत्यर्थः। स च राजहंस इति चकारात्। **तिर्यगाणां कच्छपनिर्जित** इति। जलजानां तिरश्चां कच्छपनिर्जितः। कच्छपः श्रेष्ठः स च निरंकुरिति यस्य प्रसिद्धिः। **देवानां मुखचालनमि**ति । छागलो महिषः कुक्कुटाश्चेति मुखं चालयतीति मुखचालनं छागलादयः। केषां मुखचालनमित्याह— दीव्यन्ति **नानारूपेणे**ति देवा दानवादयः॥ ४॥

एते पशुसमाख्याताः सिद्धिसाधनमण्डलम् ।
काकवकजम्बुकद्विजमहामन्त्रिक्रौञ्चसारसकादम्बकाः॥ ५॥

एते पशुसमाख्याताः सिद्धिसाधनमण्डलमिति। एते पशवः पक्षी चायं समैर्बुद्धैराख्याताः। सिद्धिसाधनं चैतन्मण्डलं चेति तत्तथा। तत्र पूजार्थं पक्षिकर्षणमाह— **काके**त्यादि। जम्बुकः पुण्डरीति यस्य प्रसिद्धिः। द्विजमहामन्त्री शुकः। क्रौञ्चो रवविशेषः। **काकवकजम्बुकद्विजमहामन्त्रिक्रौञ्चसारसकादम्बकाः** श्रेष्ठा इत्याकूतम्। एषामपि श्रेष्ठो हंस इति प्रागुक्तम्। तत्र यदि हंसशब्देन क्षत्रियो योगिविशेषो वा कैश्चिदिष्यते तदा नेयं व्याख्या॥ ५॥

भक्ष्यहोमबलिक्रियासिद्धिर्भवति कामिनी ।
कृष्णशुनीपयसा कृष्णमाषतण्डुलान्वितम् ॥ ६॥

1. उच्यते- क.

शववक्त्रे तु मन्त्रेण जुहुयादविशङ्कितः ।
शतमष्टोत्तरं यावत् होतव्यं साधकोत्तमैः ॥ ७॥

एभिः किमित्याह— **भक्ष्यहोमबलिक्रिये**ति। भक्षणं भक्ष्यम्। अनया किमित्याह— **सिद्धिर्भवतिकामिनी**ति। काकादिभिः कादम्बकान्तै**र्भक्ष्यहोमबलिक्रिया** तस्याः सिद्धिः। काकवकजम्बुकद्विजमहामन्त्रिक्रौञ्चसारसकादम्बकभक्ष्यहोमबलिक्रियासिद्धिरिति समग्रं पदम्। महाप्रेतसाधनमाह— **कृष्णे**त्यादि। सुम्भमन्त्रेण मूलमन्त्रेण च पूर्वसेवां कुर्वत्(न्) लब्धनिमित्तोऽक्षतमपूतिकं शवमादाय श्मशानेऽर्धरात्रे कृष्णशुनीदुग्धम्रक्षितैः साखण्डतण्डुलैः कृष्णैर्माषैः तस्य वक्त्रे तेनैव मन्त्रेण होमं कुर्यात्। एतदेवाह—**कृष्णे**त्यादि। **कृष्णशुनीपयः होतव्यं साधकोत्तमै**रिति॥ ६-७॥

तत उत्तिष्ठते प्रेतः किङ्करोऽहमिति चाब्रवीत् ।
पातालोत्तिष्ठखड्गं च ग्रहनिग्रहमेव च ॥ ८॥

उत्तमत्वेन कृतपूर्वसेवत्वं दर्शयति— **पाताले**ति पातालसिद्धिः। बिले प्रवेशसिद्धिरिति यावत्। **उत्तिष्ठे**त्यन्तरीक्षगमनम्। **खड्गं** चेति खड्गसिद्धिः। **वा**शब्दाच्चक्रादिसिद्धिः। **ग्रहे**त्यवग्रहम्। **निग्रहमि**ति दुष्टमर्दनम्॥ ८॥

गुलिकाञ्जननिधानं वा पादलेपो रसायनम् ।
दत्त्वा चैकां [1][तथा सिद्धिं ततो] गच्छति नान्यथा ॥ ९॥

गुलिकाञ्जननिधानं वा पादलेपो रसायनमिति। **वा** समुच्चये। अन्यत्सुबोधम्। आसां सिद्धीना**मेकां** काञ्चित्**सिद्धिं दत्त्वा गच्छति नान्यथा** नियतत्वात्॥ ९॥

अधोर्ध्वदूतयः सिद्धा अस्मिंस्तन्त्रे न संशयः ।
गोष्ठोपलिकाश्चैव शेषाः शुष्कशिरास्ततः ॥ १०॥

अधोर्ध्वदूतयः सिद्धा अस्मिंस्तन्त्रे न संशयः इति। अधोयोगिन्यः पृथ्वीगताः। ऊर्ध्वयोगिन्योऽन्तरीक्षगताः। ततः सिद्धेः सिद्धाः स्युरिति भावः। **गोष्ठोपलिकाश्चै-**

1. नास्ति- क.

वेति। गोष्ठशुष्कगोमया:। **शेषा: शुष्कशिरास्तत** इति। शेषा: कपर्दका:। शुष्कशिरा रिष्ठका:। **तत** इति तदर्थमक्षसूत्रम्॥ १०॥

महा[1]शङ्खमयं कुर्याद् [2]अभेद्यं कच्छपस्य तु ।
[एतच्चैवाक्षसूत्रं] तु सिद्धिं यच्छत्यनुत्तमाम् ॥ ११॥

कच्छपेति कच्छपस्यास्थ्नाऽक्षसूत्रं कार्यम्। वेताडसाधने नियतमेतत्। शान्ति-पुष्टिवश्यानामभिचारस्य पुत्रञ्जीवस्य सर्वकर्मिकेति **चतुष्पीठोक्त**कर्मान्तरेषु गुलिका द्रष्टव्या॥ ११॥

चतुर्भुजं चतुर्वक्त्रं यावल्लक्षभुजं तथा ।
सितदेहं [महोग्रं च] भैरवाकार[मेव च] ॥ १२॥

निरीक्षयन् तु वज्रवाराहीं तद्वर्णायुधधारिणीम् ।
कपालमालिनं वीरं भस्मगात्रावलेपनम् ॥ १३॥

चतुर्भुजमित्यादि। वेताडसाधने वज्रशूलकपालखड्ग(खट्वाङ्ग)धारिचतुर्भुजं भावयेदिति सम्बन्ध:। शुक्लश्यामरक्तपीतपूर्वोत्तरादिचतुर्मुखो भगवान्। **यावल्लक्ष-भुजमि**ति मुखे भुजे वा नियमो नास्तीति भाव:। किञ्चोपदेशोऽपेक्षणीय:। अथवा शुक्लचतुर्मुखत्वमेव। चिह्नान्युपदेशात्। अतोऽन्यत्राप्येवं ज्ञेयमुपदेशात्। **तथे**ति। उपदेशो यथेत्यर्थ:। **निरीक्षयन् तु वज्रवाराहीं तद्वर्णायुधधारिणीमि**ति। वज्रकपाला-दिधारिणीम्। इतश्चतुर्मुखत्वमस्या:। भगवान् शुक्लो भगवत्यपि शुक्ला॥ १२-१३॥

[3]मुद्रादि[भूषित]गात्रं तु जटामकुटाङ्कशूलिनम् ।
ईषद्दंष्ट्राकरालास्यं महाप्रेतकृ[तासनम्] ॥ १४॥

[4]ततो ज्ञात्वा विधिवद्योगी भावयेत् सर्वदेवताम् ।
सदा कालं तु साधक: ।
एवंगुणविशिष्टानां सिद्धिर्भवति कामिनी ॥ १५॥

---

1. सुखमयं- भो०
2. अथवा- भो०
3. पञ्चमुद्रा- क.
4. ज्ञात्वा एतन्मन्त्रं भावयेत् सदा कालं तु साधक:।- भो०

इति श्रीहेरुकाभिधाने तिर्यक्पशुवेतालसाधनोत्पत्ति-क्रमविधिपटलो द्वात्रिंशतिमः॥ ३२ ॥

इमं भावनाक्रमं **ज्ञात्वा सर्वदेवताः** षट्त्रिंशत्संख्या इत्यर्थः। **सदाकालं** संख्या-त्रयं **भावयेत्**। लक्षभुजमुखादित्वे दक्षिणेषु सर्वेषु वज्रं वामेषु शूलं तथा। खट्वाङ्गं कपालं वा। सर्वाणि मुखानि शुक्लानि। अन्यत् सर्वं साधनक्रमेण ज्ञेयम्॥ १४-१५ ॥

तिर्यञ्चाः पक्षिणः। **पशवः** खरादयः। **वेतालः** प्रेतः। एषां **साधनोत्पत्तिक्रमो विधीयते** येन स चासौ **पटल**श्चेति **द्वात्रिंशतिमो** द्वात्रिंशत्तमः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ द्वात्रिंशतिमः पटलः॥ ३२ ॥

*

गुह्यपूजासत्कारविधिपटलस्त्रयस्त्रिंशतिमः

अतः परं नास्ति सर्वः सर्वयोगेषु साधकः ।
भक्ष्यभोज्यमत्स्यमांसादिभिः कर्तव्यो यथाशक्तितः ॥ १ ॥

इदानीं सत्कारपूर्वकं पूजाद्यनुष्ठेयमिति दर्शयन्नाह— **अत** इत्यादि। ततः पूजाद्यनुष्ठातुः **परम**परं यथा भवति तथा-तथा **साधक** इति सम्बन्धः। **सर्वेषां** साध्यानां **योगाः** प्राप्तयस्तेषु। निमित्तसप्तमीयम्। सत्कारं प्रतिपादयन्नाह— **भक्ष्ये**त्यादि। **भक्ष्यं** गोकुदहनादि। **भोज्यं** दधिघृतखण्डलड्डुकादि। बहुभक्ष्यत्वात् भोज्यं दध्याद्येव। **मत्स्या** रोहितादयः। **मांसानि** छागलादीनि। **आदि**शब्दादन्येऽपि यथालाभं भक्ष्यादिविशेषाः। एभिः **कर्तव्यः** करिष्यते **साधकः** पूजामिति ज्ञेयं प्रकृतत्वात्। एवं पूजां करिष्यन्नसाधारणः साधक इति भावः। **यथाशक्तित** इति। यादृशी शक्तिर्भवति सा तत्र व्यापारयितव्येति भावः। एवं शक्त्यानतिक्रमः॥ १ ॥

अविद्यमानेऽपि कर्तव्यं पञ्चखाद्यादियत्नतः ।
रात्रौ तु सदा कुर्यात् भक्ष्यभोजनविस्तरम् ॥ २ ॥

पञ्चामृतोत्पादनसामर्थ्ये तु **अविद्यमाने पञ्चखाद्यादि** पञ्चामृतं भावनयापि **कर्तव्यं** सेवितव्यम्। **यत्नतो** नियमात्। **रात्रौ तु सदा कुर्या**दिति। दिवा तावद् भक्ष्यादि कुर्यात् सेवयेत्। रात्रौ नियमेन। **तु**शब्दस्य तदर्थत्वात्॥ २ ॥

दूती च ततो[1]ऽद्यात् [2][विशेषेण तु साधकः] ।
[3]स्वाङ्गे शिरः कृत्वा वीराद्वयप्रपूजितम् ॥ ३ ॥

दूती च ततोऽद्यादिति। अद्यत इति अत् (=अन्नं) भक्ष्यादि। अद्यात् भक्षयेत्। **स्वाङ्गे शिरः कृत्वे**ति। स्वहस्ते कपालमादाय ततो भक्ष्यानद्यात्। दूत्या सह पूजां कुर्यादिति समुदायार्थः। **वीराद्वयप्रपूजितमि**ति। समापत्तिपूजाऽपि वीरेण तया सह

---

1. दूतीं-----प्रदद्यात्- भो०
2. नास्ति- क.
3. स्वोत्सङ्गे- भो०

साध्येत्यर्थः। **स्वोत्सङ्ग** इति **क्वचित् पाठे**। तत्र वीरेण स्वोत्सङ्गे कमलधर्मोदयं कृत्वा वीराद्वयपूजितं साधयितव्यमिति व्याख्येयम्॥ ३॥

माता वा यदि वा भगिनी पुत्री वा बान्धवी भार्या वै ।
एवं विधिविधानेन कुर्याद् बन्धबन्धनमुक्तकम् ॥ ४॥

माता वा यदि वा भगिनी पुत्री वा बान्धवी भार्या वै इति पञ्च योगिन्यो मात्रादिवत्स्निग्धत्वात्। आभिः सार्धं बद्धान्सुष्ठु मुक्तकं मोक्षं कुर्यात्॥ ४॥

ततः सिद्ध्यन्ते मन्त्रा यावदाहूतसंप्लवः ।
आचार्यमूर्तिमा[1]धाय पूजां गृह्णामि साधकः ॥ ५॥

ततः सिध्यन्ति मन्त्रा इति देवताः। कियता कालेनेत्याह— **यावदाहूतसंप्लव** इति। यावदाहूतानां क्लेशानां संप्लवोऽन्यथाभावः। तादृशो योगिनीसत्कारः कार्य इत्याह— **आचार्ये**त्यादि। आचार्ये तादृशीं निजां **मूर्तिमाधाय पूजां गृह्णामि** तत् सिद्धि**साधकः** सन्निति। **भगवानाह**— 'तादृशे ह्याचार्ये पूजिते वज्रधरः पूजितः स्यात्', तत्पूजया सर्वतथागताः पूजिताः स्युरिति भावः॥ ५॥

वीराणामासनं चैव मुद्रामेव न संशयः ।
गीतनृत्यादि कर्तव्यं साधकः सुसमाहितः ॥ ६॥

यावद् भ्रमन्ति संसारे दुःखशोकपरिप्लुताः ।
न भवन्ति च योगज्ञा तावत् सर्वेऽपि देहिनः ॥ ७॥

पूजयेत्ततो मुद्रां सर्वभावेन साधकः ।
पूजिताः पूज्यमिच्छन्ति निर्दहन्त्यपमानिताः ॥ ८॥

वीराणामासनं स्थानं **मुद्रां** चिह्नं गृह्णामि। **गीतं** वज्रपदान्वितम्। **नृत्य**मालीढादि-पदेन। एवञ्च **साधकः सुसमाहितो** देवतायोगात्मा। श्रीहेरुकयोगमाहात्म्यमाह— **यावदि**त्यादि। **संसारे यावद् भ्रमन्ति** तावच्छ्रीहेरुक**योगज्ञा न भवन्ति**। **च**कारस्य तावदर्थत्वात्। न रताश्च तत्रैव के त इत्याह— **यावत् सर्वेऽपि देहिन** इति। यावन्तः

---

1. मास्थाय- भो०

सर्व एव देहिन इत्यर्थः। **मुद्रां** देवतां **पूजयेत्**। तत्किमित्याह— **पूजिता** इत्यादि। पूजयतीति पूज्यः। पूजक इत्यर्थः॥ ६-८॥

आदिसिद्धा महामुद्रा योगतन्त्रेषु मानवः ।
सुयत्नतः पूजनीयाः पश्चाद्वीर[1]वीरत्वमाचरेत् ॥ ९ ॥

आदिसिद्धा प्रकृतिसिद्धा महामुद्रा देवता। कथमेतादृशीं तां लोको न जानातीत्याह— **मानव** इति। मानादिक्लेशान् वाति प्राप्नोतीतिमानवः। मानवत्वात् तदज्ञ इत्यर्थः। तथा **पूजनीया** पूर्वविधिना सत्कार्येत्यर्थः। **पश्चाद् वीरवीरत्वमाचरेदि**ति। पूर्वं विकल्पं विहाय ततो वीरस्य चित्तस्य निर्विकल्पत्वमाचरेत्॥ ९॥

एवं पूजां ततः कृत्वा पातालोत्तिष्ठसाधकः ।
शान्तिपुष्टिवश्याकर्षणमारणोच्चाटनादिकम् ॥ १० ॥

जम्भनं स्तम्भनं चैव विद्वेषे निग्रहे[2] तथा ।
[3][पूजयेत् कर्मसिद्धिं तु] अक्लेशेन तु सिद्ध्यति ॥ ११ ॥

सर्वकर्मेषु यत्किञ्चित् साधकस्य न संशयः ॥ १२ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने गुह्यपूजासत्कारविधि-पटलस्त्रयस्त्रिशत्तमः॥ ३३॥

एवं पूजा तावद् भवति। **ततस्तया पाताला**दिसर्वसिद्धि**साधको** भवति। **शान्ती**त्यादि सुबोधम्॥ १०-१२॥

गुह्यपूजा भक्ष्यादिकृता **सत्कारो** गौरवं वन्दनादि। तौ **विधीयेते** येनासौ **पटल**श्चेति स तथा। त्रयस्त्रिंशतिमस्**त्रयस्त्रिशत्तमः**।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ त्रयस्त्रिशत्तमः पटलः॥ ३३॥

*

1. वीरैर्वीरत्वं समाचरेत्- क. भो०
2. निग्रहेऽनुग्रहे- क.
3. नास्ति- क.

अद्वयदूतीहोमाकर्षणविधिपटलश्चतुस्त्रिंशतिमः

अथ डाकिन्यजालस्य चक्राख्यं[1] विधिविस्तरम् ।
[2]यस्मिन् कर्मणि सा क्षिप्रं साधकस्य न संशयः ॥ १ ॥

अथेति पूजासत्कारकथनानन्तरम्। **डाकिन्यजालचक्राख्यविधिविस्तरं** वक्ष्य इति द्रष्टव्यम्। डाकिनीनां भावो डाकिन्यं तदेव जालवज्जालं क्लेशमकरादिबन्धनात् तस्य चक्रं मण्डलं तदाख्याति(यते) येनासौ, विधिविस्तरो भवति यत्र कर्मणि तत्तथा। विधिविस्तरो डाकिनीन्यासादिः। किं तदित्याह— **यस्मिन्नि**त्यादि। **से**ति खण्डरोहा। सिद्ध्यतीति ज्ञेयम्॥ १ ॥

सर्ववीरडाकिन्यः पुष्करेषु नियोजयेत् ।
निक्षिपेत भ्रुवोर्मध्ये अवधूतीपदं तथा ॥ २ ॥

वीरोच्छुष्ममुखेनाग्नौ [3]नान्यं जुहुयात्ततः ।
गोमांसरुधिरेणाशु पञ्चाहुतय[स्तथा] ॥ ३ ॥

सर्ववीरस्य मण्डलस्य **पुष्करेषु** चतुर्विंशत्सु चतुर्विंशतिवीरान्विता डाकिन्यो न्यसितव्याः। अत आह— **नियोजयेदि**ति। ता नियोजयेदिति। **नियोजिता** इति **पाठे**ऽप्येवमेव। पुष्करशब्दोऽत्र पत्राभिधायी। अतो बहुवचनम्। **निक्षिपेत भ्रुवोर्मध्येऽवधूतीपदं तथा** इति [4][वीरादिसर्वदेवानां तृतीयं नेत्रमनेन सूचितम्। यस्माद् भ्रुवोर्मध्ये नासानुरूपे ललाटे। पापनाशकत्वात् अवधूती चित्तमात्रम्। तत्पदं तस्य चिह्नं तृतीयं नेत्रम्। ललाटमपि वीरस्थानम्। अनेन देवतान्यासं दर्शितम्। एवंभूता योगिन्यः जुहुयात्। **वीरोच्छुष्ममुखेनाग्नौ नान्यं जुहुयात्ततः** इति।] वीरोच्छुष्मं मुखं क्रोधाविष्टं मुखम्, तेन लक्षितः सन् जुहुयात्। नान्यं पदार्थं गोमांसमेवेति भावः। **ग**वित्यादि सुबोधम्। प्रथमं **पञ्चाहुतयो** देयाः॥ २-३ ॥

---

1. इतः परं 'सकलारेषु नियोजयेत्' इत्यधिकः पाठः- क.
2. यत्किञ्चित् कर्मणि- क. भो०
3. नान्नं- क. भो०
4. [ ] नास्ति- क.

ततो नवाहुतीर्दद्यात् ज्वलिते च हुताशने ।
ज्वालामालार्णवं पश्येच्चक्रं [वै] सर्वतोमुखम् ॥ ४ ॥

चतुर्वक्त्रं तु वीरेशं वीरवीरालयं तथा ।
दले दूत्यश्च चत्वारि [1]चक्रवीराद्वयं सुखम् ॥ ५ ॥

ततो नवाहुतीर्दद्याज्ज्वलिते च हुताशन इति सुबोधम्। अग्निमुखे हुत्वा ततो देवतामुखे जुहुयादित्याह— **ज्वालेत्यादि**। कुण्डमध्ये **चक्रं पश्येत्। सर्वतोमुखम्**। चतुर्द्वारत्वाच्चतुर्मुखं श्रीहेरुकम्। **वीरैर्लक्षितं वीरालयं** चक्रम्। वीरान्वितयोगिनीयुक्तं पश्येदितिभावः। **दले दूत्यश्च चत्वारी**ति। दल इति जातिमात्रेण। पूर्वादिदलेषु चतस्रो डाकिन्यः। ''डाकिनी च तथा लामा खण्डरोहा च रूपिणी'' इति। **चक्रवीरे**ति त्रिचक्रगता वीराद्वयसत्सुखानुभवेन स्थिता इति भावः। त्रिचक्रगताभिर्योगिनीभिरद्वयवीरसमापन्नाभिरस्तीति तत्तथाऽद्वयसुखमिति योज्यम्॥ ४-५ ॥

[2][यथा विध्याकारेण] [3]खण्डरोहां बाह्यतो दद्यात् ।
स्वरूपैर्विनिविष्टां तु चक्रमध्ये तु दर्शयेत् ॥ ६ ॥

खण्डरोहां बाह्यतो दद्यादिति। पृष्ठदलस्थां खण्डरोहां कुर्यात्। **स्वरूपैर्विनिविष्टां तु चक्रमध्ये तु दर्शयेदि**ति। एकस्तुशब्दो विशेषार्थः, द्वितीय एवार्थः। स्वरूपैः कर्मानुरूपैः शान्तिकादौ शुक्लादिरूपैर्दर्शयेद् भावयेत्। खण्डरोहां बाह्यतो दद्यादिति यदुक्तं न्यासविधौ तत्तस्याः सर्वेषु कर्मसु प्राधान्यसूचनाय। आकर्षणादौ तां प्रयोजयेदिति ज्ञेयम्॥ ६ ॥

[4]एष ते चक्रनिर्दिष्टं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।
चक्रोद्धासं तथा कुर्याद् यथाकर्मानुरूपतः ॥ ७ ॥

एष ते चक्रनिर्दिष्टं सर्वसिद्धिप्रदायकमिति। चक्रे निर्दिष्टं देवतासन्दोहं सर्वसिद्धिप्रदायकमेष ते मृगयते साधकः। **कर्मानुरूपत** इति ज्ञेयमेतदुक्तं कर्मानुरूपवर्ण-

1. चक्रवर्तिवीरा- क., सर्ववीर- भो०
2. नास्ति- क., गृहीतस्तु भोटानुसारेण
3. खण्डरोहां च बाह्यतः- भो०
4. एष ते चक्रोद्धासं कुर्याद् यथाक्रमम्- क. भो०, गृहीतपाठस्तु टीकानुरोधात्।

वद्धाविताया देवतायाः। **मुखे पूर्णाहुतीर्दद्यादि**ति। न च होमाधिकरण एव कर्मानुरूपवर्णता किन्त्वन्यत्रापि। **सर्वसिद्धिप्रसाधक** इति **पाठे** साधको विशिष्यते॥ ७॥

[1]विद्यार्णवे यथा वीर समासात्परिभाषितम् ।
दूत्याद्वययोगेन सिद्ध्यन्ते नात्र संशयः ॥ ८॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने अद्वय[2]दूत्यहोमाकर्षणविधि-पटलश्चतुस्त्रिंशतिमः॥ ३४॥

कथं चक्रनिर्दिष्टो देवतासन्दोह इत्याह— **विद्यार्णव** इत्यादि। **वीरे**ति वीरेण वज्रधरेण **दूत्या** समापन्नो जुहुयादित्यर्थः॥ ८॥

अद्वयदूत्युपलक्षितो **होम**स्तेना**कर्षणं** त**द्विधीयते** येन स तथा **पटलः**। **चतुस्त्रिंशतिम**श्चतुस्त्रिंशत्तमः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ चतुस्त्रिंशत्तमः पटलः॥ ३४॥

*

---

1. इतः पूर्वं 'सर्वसिद्धिप्रसाधकः' इत्यधिकम्- क.
2. दूत्यहोमकर्मविधि- भो०

अद्वयकर्मकालमृत्युवञ्चनविधिपटलः पञ्चत्रिंशतिमः

अथ कर्मवरं श्रेष्ठं यथानुक्रम[1]लक्षितम् ।
पूजाऽद्वययोगात्मा प्रतिकर्मसुयोजिता ॥ १ ॥

अथेति देवतान्यासकथनानन्तरम्। **कर्मवरं** भवतीति ज्ञेयम्, तच्च शान्तिकादि-विधौ मन्त्रजापलक्षणं **श्रेष्ठम**भिमतार्थकारित्वात्। **यथा[नु]क्रमलक्षितमि**ति। यथा-क्रमेण क्रूरकर्मादिक्रमेण लक्षितं प्रतीतम्। कथं जपितव्यो मन्त्र इत्याह— **पूजा** कार्या, किंभूताऽ**द्वयो**ऽभेदो **योगः** समापत्तिर्वज्रवाराह्यालिङ्गनमसौ **आत्मा** स्वरूपं यस्याः सा तथा पूजा **प्रतिकर्मसुयोजिता** ॥ १ ॥

ये प्रसिद्धिकरा मन्त्रा भेदास्तेषां [2]यथाक्रमम् ।
वर्णदूत्यादि तन्मन्त्रं शरवेग परिभ्रमेत् ॥ २ ॥

ये प्रसिद्धिकरा मन्त्रा भेदास्तेषां यथाक्रममिति। प्रतिपत्तिसिद्धिं कर्तुं शीलं येषां ते तथा मूलमन्त्रादयः। प्रतिपत्तिशान्तिकादिकर्मसु योजितास्ते भेदाद् द्रष्टव्याः। क्रमानतिक्रमात् भेदमाह— **वर्णे**त्यादि। दूत्य आदिभूता येषां वीराणां ते दूत्यादयो वर्ण्यन्त इव वर्णाः खण्डकपाल्यादयः। वर्णा दूत्यादयश्च यत्र स तथा तन्मन्त्रस्तस्य श्रीहेरुकस्याष्टपदादिमन्त्रः। स **तन्मन्त्र**स्तं जपेदिति ज्ञेयम्। कथमित्याह— **शरवेग परिभ्रमेदि**ति। शरवेगेति तृतीयालोपे। शरवेगेन परितो भ्रमेत्तन्मन्त्रः॥ २ ॥

अन्योन्यघटिता [3]मन्त्राः प्रवेशेन तु भेदिताः ।
बीजमालां ततो ग्रस्तां हूँकारान्तःप्रतिष्ठिताम् ॥ ३ ॥

तदेवाह— **अन्योन्ये**त्यादि। **तु**र्विशेषे। शान्तिकविधौ तु शिथिलं करमध्य-वल्यमानरज्जुवदन्योन्यस्थाने घटितानि पुनः पुनर्गतान्यक्षराणि येषां ते**ऽन्योन्यघटिता मन्त्रा** इति संक्षेपार्थः। **प्रवेशेन तु भेदिता** इति। स्वमुखादन्तःप्रविष्टाः पुनर्वज्रमार्गे-

---

1. लम्बितम्- क.
2. इतः पूर्वं 'वक्ष्यामि' इत्यधिकम्- क.
3. वीराः प्रदेशेन- भो०

णोत्सृष्टाः पद्ममार्गेण देवीहृदयप्रविष्टास्ततस्तन्मुखगतास्ततोऽपि स्वमुखप्रविष्टा इति प्रवेशभेदस्यार्थः। क्रूरविधौ स्वमुखाद्देवीमुखं प्रविशन्तस्ततोऽपि पद्ममार्गेण निर्गत्य वज्रं प्रविशन्तस्ततः स्वमुखमासाद्य देवीमुखमिति क्रमः। एवं विधिं पूरयन्नाह— **बीजमालां ततो ग्रस्तामि**ति। निर्विडं परस्पर[1]लग्नाक्षरां मन्त्रमालां भावयेदिति ज्ञेयम्। **हूँकारन्तःप्रतिष्ठितामि**ति। हूँकारयोरन्तःप्रतिष्ठितः साध्यो यस्यां सा तथा। हूँ देवदत्तं मारय हूँ इति जप्यमन्त्रावसाने। हूँ हूँ फट् फट्कारपूर्वस्थानविदर्भणम्॥ ३॥

निरोधात्तु भवेत्साध्यः पदमेकं न गच्छति ।
सम्पुटं सम्पुटीभावेन वज्रशृङ्खलबन्धेन ॥ ४॥

वज्रेण भेदयेच्चैव पिच्छकं भ्रामयेत् ततः ।
आकर्षयेदङ्कुशेनेव क्षोभणे मुषलं तथा ॥ ५॥

अत आह— **निरोधात्तु भवेत्साध्यः पदमेकं न गच्छती**ति। **तु**रवधारणे। हूँकाराभ्यां निरोधात्। **संपुटं संपुटीभावेने**ति। शान्तिकविधौ। ॐ देवदत्ताय स्वाहा ॐ। इति पूर्ववद्विदर्भणं संपुटीविदर्भणं संपुटीभावः। पूर्वापरयोः ॐकाराभ्यां निरोधः। **वज्रे**त्यादि। हूँकारान्तःप्रतिष्ठितामित्यस्य निर्देश उक्तः। क्रूरविधौ **वज्रेण** हूँकारसंज्ञकेन **भेदयेत्**। पूर्वापरयोः साध्यस्य हूँकारदानं भेदनम्। किंभूतेनेत्याह— **वज्रशृङ्खलबन्धेने**ति। वज्रशृङ्खला बद्धा यस्य तत्तथा। **वज्रं पिच्छकवद् भ्रामयेत् तत** इति। भ्रामयेन्मन्त्रमिति ज्ञेयम्। प्रज्ञोपाययोर्मुखादिषु मन्त्रेण प्रवेशनिर्गमयोः शीघ्रत्वं दर्शितम्। क्रूरविधौ कृष्णा वज्रहस्ता खण्डरोहा, शान्तौ शुक्ला वाम[हस्त]खट्वाङ्गा। **आकर्षयेदङ्कुशेनेवे**ति। यदा आकर्षणं तदा जः देवदत्तमाकर्षय जः। इति विदर्भणं पूर्ववत्। अङ्कुशशब्देन जःकारः। मूलमन्त्रं जपन् [2]मन्त्रप्रभासतयाऽङ्कुशहस्तया रक्तया खण्डरोहया साध्यं हृदि विद्ध्वाऽऽकर्षति। **क्षोभणे मुषलं तथे**ति। सैन्यादिक्षोभणे हूँ देवदत्तादीन् क्षोभय हूँ इति विदर्भणम्। खण्डरोहा च स्ववर्णयुक्ता मुषलहस्तेति तथाशब्दार्थः॥ ४-५॥

---

1. रक्ताक्षरां- भो०
2. मन्त्रप्रभासतया- नास्ति भो०

[1]अशने वज्रमेवोक्तं [2]वेधने शरयोजितम् ।
[3]कालमृत्युवञ्चनं चैव अङ्गे खट्वाङ्गयोजितम् ॥ ६ ॥

कपालार्घपात्रं तु वक्त्रे अस्त्रनियोजितम् ॥ ७ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने अद्वयकर्मकालमृत्युवञ्चन-विधिपटलः पञ्चत्रिंशतिमः ॥ ३५ ॥

अशने भक्षणे **वज्रमेव** खण्डरोहा स्वरूपधारिणी। फट् देवदत्तं भक्षय फडिति विदर्भणम्। **वेधने** वेधे शरहस्ता खण्डरोहा फट् देवदत्तं वेधय फडिति विदर्भणम्। **कालमृत्युवञ्चनं चैव अङ्गे खट्वाङ्गयोजितमि**ति। कालमृत्युवञ्चने वामे खट्वाङ्ग-धारिणी खण्डरोहा। हूँकारः शुक्लः स्रवदमृतधारासहस्रः। हूँ देवदत्तं जीवय हूँ इति विदर्भणम्। सर्वत्र कर्मसु मन्त्रप्रभासं यातायाः खण्डरोहाया वक्त्रे कपालेनार्घो देय इत्याह— **कपालार्घपात्रं तु वक्त्र** इति। तु-शब्दार्थः। **अस्त्रनियोजितमि**ति। अर्घदाना-नन्तरं अङ्कुशाद्यस्त्रनियोजनं साध्यस्याङ्गे कुर्वतीं खण्डरोहां भावयेदिति भावः॥ ६-७॥

अद्वयकर्मेति समापत्त्या शान्तिकादि**कर्मकालमृत्युवञ्चनं** च **विधीयते** येनासौ **पटल**श्चेति स तथा। **पञ्चत्रिंशतिमः** पञ्चत्रिंशत्तमः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ पञ्चत्रिंशत्तमः पटलः॥ ३५ ॥

*

1. ग्रसने- क. भो०
2. भेदने- भो०
3. अकाल- भो०

तत्त्वपूजाकर्षणविधिपटलः षट्त्रिंशतिमः

अथ मुद्रा महापूजा मन्त्रन्यासप्रकीर्तिता ।
आशुसिद्धिकरा ह्येते मुद्रा पूजा न संशयः ॥ १ ॥

अथेत्यद्वयकर्मानन्तरम्। **मुद्रा** बहिर्मुद्रायाः **पूजा** भवति। कीदृशीत्याह— मन्त्रस्य त्र्यक्षरस्य न्यासेन प्रकीर्तिता **मन्त्रन्यासप्रकीर्तिता मुद्रा**, तत्पूजा। मन्त्रश्च त्र्यक्षरः। **आशुसिद्धिकरा ह्येते**। हिर्यस्मात्॥ १ ॥

मन्त्रं संयोज्य द्वौ लिङ्गे डाकिन्य वीरमद्वयम् ।
[1]डाकिनीनां योजनं मन्त्री हृदयाभिस्तथैव च ॥ २ ॥

योगिनीं मन्थयेद्धीमान् शुद्धकायो यथेप्सितम् ।
वीरपूजाऽद्वयं ज्ञात्वा कर्म कुर्वीत यत्नतः ॥ ३ ॥

मन्त्रसंयोगमाह— **मन्त्रे**त्यादि। मन्त्रेति **मन्त्रं** त्र्यक्षरं **संयोज्य** मन्थयेद् योगिनीमिति सम्बन्धः। **द्वौ लिङ्ग** इति। द्वयोः प्रज्ञोपाययोर्लिङ्गम्। एतदेवाह— **डाकिन्य वीरमद्वयमि**ति। डाकिन्येव डाकिन्यं वीरश्च विद्यते यस्य तदद्वयं तस्य लिङ्ग इति भावः। हूँकारेण वज्रं पद्मं च प्रणवेन वज्रमणिमाःकारेण पद्मकिञ्जल्कं निष्पाद्य कायादौ त्र्यक्षरं विन्यस्य **योगिनीर्मथ्नीयात्। शुद्धकायो यथेप्सितमि**ति। इत्थं शुद्धकायः। अद्वयसमापत्तिपूजा प्रोक्ता। **वीरपूजा** मत्स्यमांसादिकृता, इति **अद्वयं ज्ञात्वा** कृत्वा। **कर्म** शान्तिकादिकं **कुर्वीत यत्नतः** समाधानतः॥ २-३ ॥

विभज्य स्वेच्छया मन्त्री विपरीतां तु योजयेत् ।
निग्रहानुग्रहार्थेषु कर्मभावं प्रभावयेत् ॥ ४ ॥

विभज्य पृथक् पृथक् कृत्वा शान्तिकादीनि कर्माणि **विपरीतानि** परस्परतो भिन्नानि **योजयेत्**। साध्येन तमेवार्थमाह— **निग्रहे**त्यादि। **निग्रहानुग्रहाश्चार्थाः** प्रयोजनानि तेष्विति निमित्तसप्तमी॥ ४ ॥

---

1. इतः पूर्वं ''मुद्रास्तम्भेदनं कर्म अवयोज्या तु वै तथा'' इत्यधिकः पाठः- क.

भेदिता तत्त्वभेदेन नाडिमार्गेषु योजिताः ।
प्रसाधयेत् प्रयोगार्थं [बाह्याभ्यन्तरं तथा] ॥ ५ ॥
अनेन साधयेत् क्षिप्रं सदेवासुरमानुषान् ॥ ६ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने तत्त्वपूजा[1]कर्षणविधि-पटलः षट्त्रिंशतिमः ॥ ३६ ॥

अन्योन्यघटिता इत्याद्युद्दिष्टस्य निर्देशमाह— **भेदिता** इत्यादि। **नाडीमार्गेषु** पद्म-मार्गेषु पूर्वोक्तानि क्रमेण **योजिता** मन्त्राः। तेषां प्रकृत्वात्। **तत्त्वभेदेन** कर्मप्रसरभेदेन। **प्रसाधयेत् प्रयोगार्थमि**ति उदाहरणार्थं शान्तिकादि प्रसाधयेत्। **अनेन** सिद्धिर्नान्यत्र सिद्धारम्भः सर्वं **साधयेत्**॥ ५-६ ॥

तत्त्वानां कर्मप्रसराणां सिद्ध्यर्थं **पूजा** तस्याः **कर्षणं** निश्चयः, तद् **विधीयते** येनासौ **पटल**श्चेति स तथा। **षट्त्रिंशतिमः** षट्त्रिंशत्तमः पटलः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ षट्त्रिंशत्तमः पटलः ॥ ३६ ॥

*

1. कर्म- भो०

अध्यात्मवश्याधिकारविधिपटलः सप्तत्रिंशतिमः

अथान्यतमं प्रवक्ष्यामि विग्रहाक्रान्तसाधनम् ।
अन्योन्यवलिता मन्त्रा डाकिन्यश्चैकत्र योजिताः ॥ १ ॥

इदानीम**थे**त्यादिना वशीकरणं वक्तुं प्रक्रमते। जपसाध्यकर्मानन्तर्येऽथशब्दः। **अन्यतम**मित्युपायम्। सम्यक्[1]प्रतिपत्तिं विभज्य वक्ष्यामि **संप्रवक्ष्यामि**। विग्रहं शरीरं तदाक्रान्ताः सत्त्वास्तान् साधयतीति **विग्रहाक्रान्तसाधक** उपायस्तमित्यर्थः। एत-दाह— **अन्योन्यवलिता मन्त्रा डाकिन्यश्चैकत्र योजिता** इति। मूलमन्त्रो विद्याराजो डाकिनीमन्त्रश्च त्रयमेकत्रीकृत्य भैषज्यं साधयेदित्यर्थः॥ १ ॥

भुक्तमुद्गीर्णं भोज्यं तु जपान्तेन तु छर्दयेत् ।
ततः पूर्णसप्तरात्रेण [2]खादनादिषु योजयेत् ॥ २ ॥

अनेन वशमायान्ति यावज्जीवं न संशयः ।
कपिलाया घृतं पीत्वा जपान्तेन तु छर्दयेत् ॥ ३ ॥

ततस्तेनात्मानं मुखमभ्यङ्ग्येत्ततः ।
यदि क्रुद्धो भवेन्नित्यं दर्शनाद् वशमानयेत् ॥ ४ ॥

अभ्यङ्ग्य तिलतैलैस्तु शालिपिष्टकसमन्वितम् ।
कृत्वा शंकुलिकां मन्त्री भक्षणेन प्रयोजयेत् ॥ ५ ॥

एतदेवाह— **भुक्तमि**त्यादि। **जपान्तेन तु छर्दये**दिति। भुक्तमुद्गीर्णं प्रक्षाल्य पुन-स्तद्भक्षयित्वा वमेत्। अपक्वकर्पूरमिश्रं कृत्वा मन्त्रत्रयेण **सप्तरात्री**स्त्रिसन्ध्यं जपेत्। **ततः खादनादिषु** दद्याद् यथोक्तं भवति। कपिलाया गोर्घृतं **कपिलाघृतं** सप्तजप्तं **पीत्वा** वमेत्। तेनात्मानं मुखं चाभ्यजनीयम्। **तत** इति। अभ्यङ्गानन्तरम्। **अभ्यङ्ग्ये**त्यादि। अभ्यङ्ग्याङ्गं तत**स्तिलतैलं** ग्राह्यम्। **तुः** प्रयोगसमुच्चये। **शालिपिष्टकसमन्वितमि**ति।

---

1. प्रत्येकं- भो०
2. खानपानादिषु- क. भो०

शालिपिष्टकमयीं **शंकुलिकां** कृत्वा तेन तैलेन पक्त्वा भक्षणेन एवं दद्यात्। **तु**रेवार्थे। सर्वत्रैव मन्त्रजपो ज्ञेयः॥ २-५॥

यावज्जीवं सदा वश्यं यदि कर्म न मुञ्चति ।
भक्षयित्वा तिलान् कृष्णांश्छर्दितान् राजिकैः सह ॥ ६॥

कुष्ठं चापान[1]युक्तं तु करजोदरकीटकम् ।
पीषयेदात्मरक्तेन शुक्रेणैव तु भावयेत् ॥ ७॥

खानपानाञ्जनैर्वस्त्रैर्लेपं चैव प्रयोजयेत् ।
वशीकरणमेवं तु यावज्जीवं न संशयः ॥ ८॥

यदि कर्म न मुञ्चति यदि मुक्तो न स्यात्। **भक्षयित्वा तिलान् कृष्णांश्छर्दितान् राजिकैः सह। कुष्ठञ्चापानयुक्तं तु करजोदरकीटकम्** इति। **चः** प्रयोगसमुच्चये **तु**र्विशेषे। कृष्णास्तिला राजिकाभिः सह भक्षयित्वा छर्दनीयाः। **कुष्ठं** सप्तवार**ापान**-निर्गतं कार्यम्। **करजो** नखः। **उदरकीटक** उदरनिर्गतः किञ्चूलकः। **खानं** खाद्यम्। **लेपो** गात्रे॥ ६-८॥

गोमांसाहु[2]तयो होमस्तद्रक्ताभ्यक्तदेवताः ।
तत्क्षणाद्वशमायाति म्रियते यदि नागच्छति ॥ ९॥

[3]**मांसं तस्याग्रतो ध्यात्वा होमये[च्च] विचक्षणः ।**
होमान्ते च बलिं दत्त्वा त्रैलोक्यमाकर्षयेत् क्षणात् ।
सप्तरात्रेण सिद्धिः स्यात्॥ १०॥

गोमांसाहुत्या होमरक्ताभ्यक्तास्त्विति। गोमांसाहुतयो होमार्थं तद्रक्ताभ्यक्ताः। गोरुधिराक्तेन गोमांसेन होमाद् देवतासाध्यस्य विज्ञानं वशीभवति। अथवा **देवता** लौकिकीदेवता मांसं गोरेव। अत आह— **तस्ये**ति। **अग्रत** इति। श्रीहेरुकपटस्य

1. संयुक्तं- क.
2. हुत्या होमरक्ताभ्यक्तास्तु- इति टीकासम्मतः पाठः।
3. आत्मानं- भो०

तत्प्रतिमाया वा तन्मुखे वा पूर्वापरयोः सार्वकर्मिकं कुण्डम्। **सप्तरात्रेण सिद्धिः स्यादिति**। सप्तसु रात्रिषु त्रिसन्ध्यं होमात् सिद्धिः॥ ९-१०॥

दुर्लभं त्रिषु लोकेषु समयाचारलक्षणम् ।
गोपनीयं प्रयत्नेन गूढमन्त्रैः सदा स्वयम् ॥ ११॥

न च लभते गूढार्थं मन्दभाग्यो न [1]सिद्ध्यति ।
साधकैरल्पपुण्यैश्च मया तुष्टेन लभ्यते ॥ १२॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने अध्यात्मवश्याधिकारविधि-पटलः सप्तत्रिंशतिमः॥ ३७॥

दुर्लभमिति वश(श्य)विधानम्। समयाचारैर्योगिभिर्लक्ष्यत इति **समयाचार-लक्षणं** वश(श्य)विधानम्। **मन्दभाग्यः** स्तोकप्राक्तनपुण्यः। **अल्पपुण्यैरिति**। अल्प-वर्तमानपुण्यैरेभिः **साधकैर्न लभ्यते मया तुष्टेन** पुनर्**लभ्यते**॥ ११-१२॥

वशेऽपि कृतं वश्यं कर्म तदधिक्रियते येन **वश्याधिकारो** भैषज्यादिहोमप्रकारः। स **विधीयते** येनासौ **पटल**श्चेति स **सप्तत्रिंशतिमः** सप्तत्रिंशत्तमः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ सप्तत्रिंशत्तमः पटलः॥ ३७॥

*

1. पश्यति- क.

योगिनीस्थानप्रदेशगुह्यवीरालयविधिपटलोऽष्टत्रिंशत्तमः

ततः छोम्मकानि तु डाकिनीनां शरीरस्य तु लक्षणम् ।
वीराङ्गभेदं तथैव च [1][यत्साध्यं सिद्धमेव तत्] ॥ १ ॥

एतत्तन्त्रोक्तं सर्वगोप्यमित्यत आह— **तत** इत्यादि। **छोम्मकानि** डा इति पुरुष इत्यादि ग्रन्थोक्ताः छोम्मकाः। **तु**र्विशेषे। **डाकिन्यः** प्रचण्डादयः। **शरीरं** हस्तादि-छोम्मकदानार्थं तस्य लक्षणं डाकिनीजातस्य चिह्नवर्गगन्धादि। **वीराङ्गभेदं** वर्णमुख-भुजादि। **तथैव चे**ति गोपनीयः॥ १ ॥

न च लिखति वीरेश्वरो न पठेत् कस्यचिदग्रतः ।
[2][गोपयेत् सर्वाकारेण] वामाचार[3]सुगोपितम् ॥ २ ॥

छोम्मकादिकं वीराङ्गभेदञ्च **वीरेश्वरो** योगी **न लिखति** न वदतीत्याद्यपि द्रष्टव्यम्। **कस्यचिदग्रत** इति। अन्यतन्त्रीयादेः पुरतः। **न पठे**दिति। तन्त्रम्। **वामाचार-सुगोपितम**िति। वामाचारैः श्रीचक्रसंवरयोगिभिः सुष्ठुगोपितं छोम्मकादि॥ २ ॥

प्रमादात् पठते मन्त्री गुह्यलक्षणडाकिनीः ।
नाहं तस्य पश्यामि डाकिनीसहस्रमनेकधा ॥
भक्ष्यं न सो दुरात्मकः ॥ ३ ॥

प्रमादात् पठते मन्त्री गुह्यलक्षणडाकिनीरिति। पुस्तकगता डाकिनी यदि प्रमादात् स्वव्यापारानवधानात् पठति लिखति वदति च। **नाहं तस्य पश्यामि**। सिद्ध्यादिकं न पश्यामीत्यर्थः। किञ्चान्यदपीत्याह— **डाकिनीसहस्रमनेकधा भक्ष्यं** भक्ष्यकं तस्य भवतीत्यर्थः। **न**-शब्दः शिरश्चाले। कुत इत्याह— **सो दुरात्मक** इत्यादि। सो दुरात्मक इति स्वार्थेऽण्। स(सु)दुरात्मक इत्यर्थः। आत्मा विशिष्टं चित्तम्॥ ३ ॥

---

1. नास्ति- क., टीकाकृतापि न गृहीतं भोटपाठे वर्तते।
2. नास्ति- क., टीकाकृतापि न गृहीतं भोटपाठे वर्तते।
3. ०रास्तु साधकाः- भो०

समयघ्नो दुराचारो ब्रह्मघ्नश्च न संशयः ।
पापाचारो मूढो[1] वञ्चितोऽसौ दुरात्मकः ॥ ४॥

समयो मन्त्रमुद्रासिद्धान्ताः ब्रह्माणो बुद्धाः। पापमेवाचरतीति **पापाचारः**। अतो दुष्ट आचारोऽधार्मिकव्यवस्थाऽस्येति **दुराचारः**। **मूढ** इत्यतिमुग्धः। **वञ्चितो**ऽभिमत-वियोगात्। **असावि**ति यः पाठादिकर्ता॥ ४॥

नाहं तस्य परित्राता भक्ष्यमाणस्य योगिनीभिः ।
गुह्यकानां मध्ये तु पशुरेव स साधकः ॥ ५॥

तस्य च **नाहं परित्राता** दुरात्मनो दुष्टस्वरूपस्य **योगिनीभिर्भक्ष्यमाणस्य**। कुत इदमित्याह— गूहन्ति संवृण्वन्ति रक्षन्तीति **गुह्यका** योगिन्यः। **तु**रप्यर्थः। रक्षिकाणा-मपि तासां **मध्ये पशुरेव** छगल एव यतो वध्यः, महापराधत्वात्। **साधक**स्तादृशः। अतस्तुशब्दो विशेषे॥ ५॥

पतितोऽसौ बुद्धलोकाद् गुरुद्रोहः समयद्रोहकः ।
[2]यस्तु पालयते तन्त्रं श्रीहेरुकघोरदर्शनम् ॥ ६॥

पतित इत्यादि। बुद्धस्य लोके दर्शनं **बुद्धलोकः**। ततोऽपि पतितो भवेदिति भावः। स च **गुरुद्रोहः समयद्रोहकश्च**। **यस्तु** यः पुनः **पालयते** रक्षति **तन्त्रं श्रीहेरु-कघोरदर्शनम्**, अनधिगततत्त्वानां भयजनकत्वात्॥ ६॥

तस्याहमनुग्राही डाकिनीसार्द्धं शुभाननम् ।
गुरवश्चानुमन्यन्ति गूहयन्ति च साधकाः ॥ ७॥

तस्याहमनुग्राही। अनुग्रहः स्नेहविशेषः। **डाकिनी**ति तृतीयालोपे। **शुभे** कल्याणे **आननं** यस्य तद्यथा भवति तथानुग्राही। **अनुमन्यन्ति**। तमनुमन्यन्ते **गुरवो**ऽपि। **गूहयन्ति** गूहन्ति। आलिङ्गन्ति तमालोक्यापरे **साधकाः**। अस्य पक्षनिक्षेपोऽयमिति लोकेषु साधुषु प्रतिपादनं गूहनमित्ययमर्थो वा॥ ७॥

---

1. मूढात्मा- भो०
2. ''यस्तु ----- साधकाः'' पाठो नास्ति- क.

योगिनीनां प्रियो नित्यं सिद्धिस्तस्य न संशयः ।
साधको वीरतां याति त्रैलोक्ये खेचराधिपः ॥ ८ ॥

पूज्यो भवति सर्वत्र साधको वीरकाङ्क्षिणः ।
योगस्तस्य प्रवर्तते सम्प्रदायं च विन्दति ॥ ९ ॥

वीरकाङ्क्षिण इति। वीरत्वकाङ्क्षी। **योगस्तस्य प्रवर्तते**। प्रबन्धनयोगः समाधिः प्रवर्तते। **संप्रदायं** शिष्यसम्पन्नज्ञेयाकारानुमतिं **विन्दति** गुरुसकाशात् लभते॥ ८-९ ॥

आचार्यं तु वीरं दृष्ट्वा श्रीहेरुकव्रतधारिणम् ।
दृष्ट्वा दृष्ट्वैव संहृष्य मन्त्रेणानेन साधकः ॥ १० ॥

वीरेति। लोकयात्रानिर्भयत्वात्। **श्रीहेरुकव्रतधारिणा**मिति। स्वशास्त्राभिहित-परिपालकत्वात्। वीरतां दृष्ट्वा हृष्येदन्यः साधक इति सम्बन्धः। **दृष्ट्वा दृष्ट्वैव मन्त्रेणानेने**ति। श्रीहेरुकयोगलक्षितेन लक्षितः **साधको**ऽन्यांस्तादृशान् **दृष्ट्वा** दृष्ट्वैव हृष्येदिति भावः॥ १० ॥

मूलमन्त्रपरं वीरं सप्तवारानुच्चारेत् ।
प्रणवहूँकारभेदितम् ++++++++ ॥ ११ ॥

तेषां प्रणम्य यत्नेन सर्वबुद्धादिपूजितम् ।
नित्यमेव महावीरं क्रीडायुक्तो न संशयः ॥ १२ ॥

यथोक्तं **मूलमन्त्र**मुच्चारयंस्तेषां श्रीहेरुकव्रतधारिणां **प्रणम्य प्रयत्नेन** संहृष्येदिति सम्बन्धः। ततः किमित्याह— **सर्वबुद्धादिपूजितमि**ति। वज्रधरादिपूजा स्यात्। तत्र प्रणामे कथमेवमित्याह— यतः स योगी **महावीर**स्य श्रीहेरुकस्य **क्रीडायुक्तः**, तान् योगिनो विलोकयतामेतत् स्यात्॥ ११-१२ ॥

तेषां हृदिस्था[1] वाराही वीरयोगिन्यद्वयस्थितम्।
तेन तस्य सुजन्मनः प्राणिनः पुण्यदर्शनात् ॥ १३ ॥

स्मरतां तु किमित्याह— **तेषामि**त्यादि। हृदिस्था वीराः श्रीहेरुकव्रतधारिणो येषां

1. वाराह्या महावीरयोगिन्यमद्वयरूपतः- क., गृहीतस्तु टीकानुरोधेन।

ते **हृदिस्थवीराः**। प्रथमाबहुवचनार्थे षष्ट्येकवचनम्। **योगिन्यमद्वयस्थित**मिति। बहुवचने अमादेशो निरुक्तविधिना। ततोऽयमर्थः। कुत ईदृशास्त इति। यतस्तेषां योगिन्यो देव्योऽद्वयरूपेण स्थिता इति। **तेन** यस्मात् **सुजन्मनः प्राणिनः पुण्यदर्शनादि**ति। कथं **तस्यै**तदिति। यतस्तस्य श्रीहेरुकव्रतधारिणः पुण्यदर्शनात् प्राणिनः शोभनोत्पादा भवन्ति॥ १३॥

नदीतटसमुद्रेषु प[1][र्वतेषु चतुष्पथे ।
तडागकूपपुष्करिणीशून्यालयप्रतोलिषु ॥ १४॥

एवं संरक्तनयना स्थिता सर्वत्र डाकिन्यः ।
महाभैरवश्मशाने च पाताले खेचरी तथा ॥ १५॥

वेतालैरप्यनेकैस्तैर्भीषणैश्च महाबलैः ।
एतैः सार्धं महावीरः क्रीडते च यथासुखम् ॥ १६॥

कुहरे गह्वरे गुह्ये गूढमानुष्ययोगिनी ।
तत्तत्स्थानप्रदेशेषु क्रीडते साधकेन तु ॥ १७॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने योगिनीसाध्य(स्थान)प्रदेशगुह्यवीरालयविधिपटलोऽष्टत्रिंशतिमः॥ ३८॥

क्रीडास्थानमाह—**नदीत्यादि**। **संरक्तनयनाः**। श्रीहेरुकव्रतधारिदर्शनानुरागादिति। च-शब्दो हर्षे। **कुहरे** विले। **गह्वरे** पर्वतोदरे। **गुह्ये** गहने वने। गूढा मानुष्यो योगिन्यो यत्र तद् **गूढमानुष्ययोगिनी**स्थानम्। सर्वेषां नद्यादीनां विशेषणमेतत्॥ १४-१७॥

योगिनीस्थानान्येव **गुह्यवीरालयो विधीयन्ते** येनासौ **पटल**श्चेति स तथा। अष्टत्रिंशतिमोऽ**ष्टत्रिंशत्तमः**।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतावष्टत्रिंशत्तमः पटलः॥ ३८॥

*

1. इतः परं चतुश्चत्वारिंशत्तमपटलस्य समाप्तिं यावत् पाठो नोपलब्धः मातृकायाम्। टीकासाहाय्येन भोटपाठात्संस्कृते पुनरुद्धारः क्रियते।

दर्शनाट्टहासविधिपटल ऊनचालीशतिमः

अथ महासिद्धियोगी हासमन्त्रमष्टविधम् ।
ततः संदर्शयन् तस्मै प्रददाति न संशयः ॥ १ ॥

अथेति योगिनीस्थानानन्तरं क्रमेण **हासात्**। **अष्टविधं** यथा भवति तथा **महासिद्धियोगी** महासिद्धौ महामुद्रासिद्धौ श्रीहेरुकयोगी। **मन्त्र**श्चात्र— किलि किलि चिलि चिलि सिलि सिलि धिलि धिलि इति विद्याराजस्य शेषो मन्त्रस्तेनाष्टविधो हासः। [1]हा हा हे हे हो हो हूँ हूँ इति देवीमन्त्रेणाप्यष्टविधौ हासः। **तत** इत्यादि सुबोधम्॥ १ ॥

घोरेण बहुशब्देन डाकिन्यश्च भयङ्कराः ।
तेन श्रुतेन तं वीरं[2] त्रसन्ति विद्रवन्ति च ॥ २ ॥

न भीयते यदि वीरः डाकिनीसार्धमेव च ।
ताभिर्वामकरे गृह्य नीयते स्वपुरं ततः ॥ ३ ॥

योगिनीवेष्टिते भयावहेऽपि न भेतव्यमित्याह— **तं वीरभीतं विद्रवन्ति चे**ति। चो यस्मात्। **तत** इति वेष्टितात्। **न भीयते वीर** इति। यदि वीरो न बिभेति तदा ताभिर्वामकरे गृहीत्वा नीयते स्वपुरं स वीर इत्युभयकार्यमित्येतदाह— **वामकरे ततो गृह्य स्वपुरं नीयते ताभिरि**ति। **डाकिनीसार्द्ध**मिति तृतीयालोपे॥ २-३ ॥

श्रीहेरुक[3]शक्तिकामेन नीयते खेचरीपदम् ।
तत्राभिरतो नित्यं गमिष्यति सुखावतीम् ॥ ४ ॥

न जरामृत्युः [4]सर्वत्र साधको मन्त्रविग्रहः ॥ ५ ॥

---

1. ह हा हे है हो हौ हुँ हूँ- भो०
2. ते वीराः- भो०
3. भक्ति- भो०
4. संसारे- भो०

इति श्रीहेरुकाभिधाने दर्शनाट्टहासविधिपटल ऊनचालीशतिमः॥ ३९ ॥

श्रीहेरुक[1]शक्तिकामेनेति। श्रीहेरुकसङ्गाभिलाषेण **खेचरीपदं सुखावतीम्**। एतदेव स्वपुरमिति विवृतम्। **न जरामृत्युसर्वत्रेति** तयोर्विकल्पजत्वात्। तद्धानौ तद्धानिरितिभावः। विकल्पहानिरेव कुत इत्याह— **साधको मन्त्रविग्रह** इति। मन्त्रः सर्वधर्मस्वरूपसाक्षात्करणम्। तदात्मकत्वादिति भावः॥ ४-५॥

दर्शनं डाकिन्युपलम्भोऽ**ट्टहासश्च** तौ **विधीयेते** येनासौ **पटल**श्चेति स तथा। **ऊनचालीशतिम** ऊनचत्वारिंशत्तमः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतावूनचत्वारिंशत्तमः पटलः॥ ३९॥

*

1. आसक्ति०- भो०

पञ्चवर्णवशीकरणमहामुद्रासेवनविधिपटलः चालीशतिमः

ततः संप्रवक्ष्यामि येन मर्त्यं वशं नयेत् ।
मासेन सिध्यते वीरं मन्त्रयोगविधिस्थितम् ॥ १ ॥

इदानीं केवलं वशीकरणहोमपटलमाह— **तत** इत्यादि। यतो वशीकृताः सत्त्वाः स्वशासने नियोजितुं शक्याः। **ततः संप्रवक्ष्यामि**। किं तदित्याह— **येन मर्त्यं वशं नयेदिति**। येन होमेनावशं सत्त्वं वशं नयेत् तमित्यर्थः। तच्च कियता कालेन सिध्यतीत्याह— **मासेन सिध्यत** इति। किंभूतं **वीरं मन्त्रयोगविधिस्थितमिति**। मन्त्रादिपूर्वकमित्यर्थः॥ १ ॥

पिशितं सोन्मत्तकेन मत्स्यमांसेन संयुतम् ।
सर्वावस्थोऽपि वीरेशः सप्ताहात् साधकस्य च॥ २ ॥

महासिद्धिं प्रददाति निशिहोमपरायणः ।
अष्टोत्तरशतेनैव त्रिसन्ध्यं साधयेद् यदि ॥ ३ ॥

ससैन्यं नृपतिं वश्यं अर्धेन तु वीरमन्त्रिणम् ।
मंत्रिणं च तदर्धेन सप्ताहाद्वशमानयेत् ॥ ४ ॥

कस्य योगेन सिध्यतीत्याह— **पिशितं** प्रागुक्तं मत्स्याश्च। पिशितेन बाह्यो होमः। तेन मत्स्यैश्चाभ्यन्तर इति ज्ञेयम्। **सर्वावस्थोऽपि** चतुर्भुजादिरपि **वीरेशः** श्रीहेरुकः। **सप्ताहादिति**। मासत्रयं त्रिसन्ध्यमष्टोत्तरशताहुतिदानं विधाय ततः सप्ताहहोमेन साध्यसिद्धिं ददाति साधकाय। **निशिहोमपरायण** इति। निशा प्रज्ञा सांकेतिकत्वात्। प्रज्ञायुक्तो जुहुयादिति भावः। एतदेवाह— **शतेत्यादि** सर्वतन्त्रः(सर्वत्र) समुच्चये। **अर्द्धेन त्विति**। चतुःपञ्चाशताहुतिभिः। **तदर्धेन त्विति**। सप्तविंशत्या। **मन्त्रिणं** सन्धिविग्रहादिकं(करं) **वशमानयेदिति** सम्बन्धः॥ २-४ ॥

सामन्तानां द्वात्रिंशद् होमयेदाहुतिक्रमात् ।
ब्राह्मणं विंशतिरेव सप्ताहेन तु होमयेत् ॥ ५ ॥

एवं क्षत्रियं तु सप्त वैश्यं च पञ्च होमयेत् ।
शूद्रे तु त्रयमेव स्यादेकं जुहुयात्तु अन्त्यजे ॥ ६ ॥

[1]एकमासनमाश्रित्यैवं वीरः कुलक्रमात् ।
आकर्षयेत् सर्वसत्त्वान् मन्त्रशक्त्या तु साधकः ॥ ७ ॥

सामन्तादिषु सायन्तने योगिकाद्यर्थं द्वात्रिंशदाहुतयो देयाः। **होमयेदाहुतिक्रमा-दिति**। वर्णक्रमेणाहुतयो देया इति प्रतिपादयति। एतदेवाह— **विंशतिमित्यादि**। ब्राह्मणं प्रति विंशतिमाहुतिर्दद्यात्। **शूद्रे त्रयमेवे**ति। आहुतित्रयम्। **एकं जुहुयात्तु अन्त्यज** इति। एकं एकवारं जुहुयादेकाहुतिं दद्यादित्यर्थः। चण्डालाद्यर्थम्। **एकमा-सनमाश्रित्य** इति। श्रीहेरुकमाश्रितः॥ ५-७ ॥

एवं कुर्वन् मर्त्यवीरः कामं तु विधिपूर्वकम् ।
सेवयन् देवतायोगं भद्रकल्पमवाप्नुयात् ॥ ८ ॥
डाकिनीनां मनोज्ञः स्यात् साधको नात्र संशयः ॥ ९ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने पञ्चवर्णवशीकरणमहामुद्रासेवन-विधिपटलः चालीशतिमः ॥ ४० ॥

होमो नियमव्रतादिशून्य इति दर्शयन्नाह— **कामं तु** इत्यादि। रूपशब्दादिकं कामं **विधिपूर्वकं** देवतायोगविधिपूर्वकं सेवते। पञ्चकामगुणाभ्यासी होमं कुर्यादित्याकूतम्। ततः किमित्याह— **अवाप्नुयादि**ति। वशीकरणसिद्धिमिति शेषः॥ ८-९ ॥

पञ्चवर्णवशीकरणं तत्पूर्वकं **महामुद्रा**साधनं **विधीयते** येनासौ **पटल**श्चेति स तथा। **चालीशतिम**श्चत्वारिंशत्तमः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ चत्वारिंशत्तमः पटलः॥ ४० ॥

*

1. मासं- भो०

चतुर्विंशत्यक्षरमण्डलविन्यासविधिपटल एकचालीशतिमः

अथ कर्मवरं श्रेष्ठं येन जानन्ति साधकाः ।
वश्याकर्षणविद्वेषमारणोच्चाटनादिकम् ॥ १ ॥

जृम्भणं स्तम्भनं चैव मोहनं कीलनं च वै ।
वाचोपहरणं मूकबधिरमन्धता तथा ॥ २ ॥

षण्ढत्वकरणं चापि रूप[स्य] परिवर्तनम् ।
द्वादशैतन्महाकर्म साधकः साधयेत् सदा ॥ ३ ॥

सिद्धिः स्मरणमात्रेण साधकस्य न संशयः ।
सर्वोत्तरेषु डाकिन्य पीठादि तु सर्वव्यापिनी ॥ ४ ॥

उत्पन्नसामर्थ्यस्य योगिनः कीदृक् कर्मसिद्धिरिति पृच्छायाम**अथ** शब्दः। ततश्च भगवानाह— **कर्मवरं श्रेष्ठमि**ति। अतिशयेनाभिमतार्थावाहकत्वाद् भवतीति ज्ञेयम्। कथमित्याह— **येन जानन्ति साधका** इति। यथा साधकज्ञानं तथा श्रेष्ठम्। तत्किमित्याह— **वश्ये**त्यादि। **अथ कर्मवरं वक्ष्य** इति [1]**क्वचित्पाठः** सुबोधः। वश्याकर्षणयोरेकत्वं मारणोच्चाटनयोश्चैवेति द्वादशैते कर्मप्रसराः। एतेषां **महाकर्मणां स्मरणं** चिन्तामात्रं ततो जायते तेषां **सिद्धिः** साधकसम्बन्धिनी। चतुर्विंशतेर्योगिनीनां स्थानान्याह— [2]**सर्वोत्तरेष्वि**ति। सर्वश्रेष्ठेषु पीठादिषु। **पीठादी**ति सप्तमीलोपे। **सर्वव्यापिनी**ति प्रथमाबहुवचनलोपात्। चतुर्विंशतिरेव पीठादौ डाकिन्य इति **तु**-शब्दो विशेषयति॥ १-४॥

स्वयोनिषु ज्ञानयुक्ता देशे देशेऽभिजातकाः ।
डाकिन्यः कथितास्तास्तु वज्रमण्डलनायिकाः ॥ ५ ॥

कुलतायां विविक्ते च सिन्धौ च नगरे तथा ।
सुवर्णद्वीपे सौराष्ट्रे तथा च गृहदेवता ॥ ६ ॥

---

1. 'क्वचित्' नास्ति - भो०
2. पूर्वोत्तरेषु- भो०

प्रेतपुर्यां हिमस्थाने काञ्च्यां लम्पाकदेशके ।
कलिङ्गे कोशले चैव त्रिशकुनिरोड्रके तथा ॥ ७॥

कामरूपे मालवे च देवीकोट्टे रामेश्वरे ।
गोदावर्यामर्बुदे चोड्डियाने जालन्धरे तथा ॥ ८॥

पुल्लीरमलयादीनां कन्या वीराद्वय[1]व्यापिनी ।
ताः सर्वाः कामरूपिण्यो मनोवेग[2]निवृतये ॥ ९॥

स्वयोनिषु स्वजातिषु। **वज्रमण्डलनायिकाः** श्रीहेरुकमण्डलोपनायिकाः। **कुलतायामि**त्यादिना स्थानान्याह— पीठादिशब्देनोद्दिश्य कुलतायामित्यादिनिर्देशे क्रियमाणे श्मशानादय एव पीठान्ता बोद्धव्याः। एतच्चोपदेशार्थम्। पुल्लीरमलयादि-शब्दैः पीठादयो बोद्धव्याः। **गृहदेवते**ति सप्तमीलोपात्। **त्रिशकुनिरि**ति सप्तम्यर्थे प्रथमेति **तथा**शब्दार्थः। **वज्रमण्डलनायिका** अपि कुत्र कुत्र प्रदेशे तत्र सन्तीति प्रश्ने **कुलतायामि**त्याद्युक्तम्। एतेष्वर्बुदादिषु देशेष्वित्याह— ओडियानजालन्धरपुल्लीर-मलया आदिभूता येषां ते **ओडियानजालन्धरपुल्लीरमलयादयो**ऽर्बुदादयः कुलता-न्ताः। भावश्चायं पुल्लीरमलयादिं कृत्वा जालन्धरौडियानार्बुदादिषु सन्तीत्युपदेशार्थं व्यतिक्रमनिर्देशः। एतेन मण्डले शरीरे च पुल्लीरमलयादिषु योगिनीन्यासः कथितः। [3]पुत्रिणी **कन्या वीराद्वयव्यापिनी**ति। कन्याः सर्वदा तथैवावस्थितत्वाद् वीरैः खण्ड-कपाल्यादिभिरद्वयत्वं व्याप्तं शीलं यासां तास्तथा विभक्तिलोपश्च। पुँ जाँ ओँ अँ गोँ राँ देँ माँ काँ ओँ त्रिँ कोँ कँ लँ काँ हिँ प्रँ गृँ सौँ सुँ नँ सिँ मँ कुँ। इति चतुर्विंशतिरक्षराणि मन्त्रभूतानि गोपितानि। एतेभ्यः सार्द्धचन्द्रबिन्दु[4]नादेभ्यो यथा-क्रममुत्पन्नेषु शरीरस्थेषु पुल्लीरमलयादिषु प्रचण्डादय ॐ कर कर प्रचण्डे हूँ हूँ फट् फडित्यादि मन्त्रजा भाव्याः। **कामरूपिण्य** इति। इच्छामात्रप्रतिबद्धरूपाः। किमर्थमित्याह— **मनोवेगनिवृत्तय** इति। यत्र प्रयोजने मनः प्रवृत्तं तत्सिद्धौ ततो मनोवेगनिवृत्तिः॥ ५-९॥

1. योगिनी- भो०
2. प्रवृतये- भो०
3. 'पुत्रिणी' नास्ति - भो०
4. 'नाद' नास्ति - भो०

षड्योगिन्यः कुलतायां मरुदेशे षड्मातराः ।
सिन्धुदेशे लामा च नगरे कुलनायिकाः ॥ १० ॥

लम्पा[का]यां सौराष्ट्रे च कुलदेवता स्थिताः ।
प्रेतपुर्यां महाकन्या डाकिनी सहरूपणि ॥ ११ ॥

हिमाद्रौ चैव काञ्च्यां च कथिता सबालिका इति ।
पञ्चालविषये गृहदेवता कलिङ्गे च व्रतधारिण्यः ॥ १२ ॥

पिशिताशना कोशले तु प्रेतपुर्यां वज्रडाकिन्यः ।
स्थूलेश्वरे त्रिशकुनौ खण्डरोहाकुलोद्भवाः ॥ १३ ॥

पुल्लीरमलये कनकाद्रौ च चण्डालकुलजाः स्त्रियः ।
सहस्राण्येकविंशतिः ॥ १४ ॥

बहिर्देशेषु या विचरन्ति तज्जातीयास्ताः प्रतिपाद्यन्त इत्याह— **षड्योगिन्य** इत्यादि। शरीरस्थेषु मण्डलस्थेषु वा पुल्लीरमलयादिषु प्रचण्डादयः क्रमेण ज्ञेयाः। बहिर्देशेषु तु तज्जातीया यथा तथा वा । वज्रवाराही यामिन्यादयः **षड्मातरा** इति। सप्तमातृरूपाः **मरुदेशे। लामा**जातीयाः **कुलनायिका** इति। श्रीहेरुककुलोद्भूताः। **लम्पा[का]यां सौराष्ट्रे च कुलदेवता** इति। कुलदेवतारूपाः पूज्या इत्यर्थः। **प्रेतपुर्यां महाकन्या डाकिनी सहरूपिणी**ति। कन्यारूपा डाकिनी रूपिणीजातीयाः। **हिमाद्रौ काञ्च्यां च सबालिका** इति। सबालिकाजातीयाः। **पञ्चालविषये गृहदेवता** गृहदेवतायाम्, **कलिङ्गे च व्रतधारिण्यः। कोशले पिशिताशना** महामांसाशनाः। **प्रेतपुर्यां वज्रडाकिन्य** इति। प्रेतपुरीसंभूता योगिन्योऽद्वयज्ञानाः। **स्थूलेश्वरा**दिषु **खण्डरोहाकुलोद्भूताः। पुल्लीरमलये कनकगिरा**विति। इहान्त्यजाः **स्त्रियःसहस्राण्येकविंशतिरि**ति बाहुल्यसूचनार्थम्॥ १०-१४॥

शेषान्येषु हि यावन्त्यः श्रीहेरुकस्य योगिनी ।
श्रीहेरुकमहायोगः तस्य मण्डलनायिकाः ॥ १५ ॥

शेषान्येषु हि यावन्त्य इति। अन्येष्वपि देशेषु तादृश इत्यर्थः। यावन्त्यो यावत्यः। **श्रीहेरुकस्य योगिनी**ति प्रथमाबहुवचनलोपे। षट्त्रिंशद् योगिन्यः श्रीहेरुकस्य

माण्डलेयाः। महामन्थानं प्रज्ञोपायस्वरूपत्वम्। उपायो वा तेनान्वितः। **श्रीहेरुकः** प्रज्ञारूपः **तस्य** संबन्धिनीनां तासां मध्ये **मण्डलनायिका** वज्रवाराही समापन्नेति भावः। महामन्थानं निर्माणं निर्विभक्तिम्। तासां निर्माणं श्रीहेरुकेण सम्पाद्यं यतः **श्रीहेरुकमहामुद्रामण्डलनायिके**ति **केचित्**॥ १५॥

चतुर्विंशति डाकिन्या व्याप्तं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
समयो ह्येष डाकिनीनां निर्मितो भावितः स च ॥ १६॥

चतुर्विंशतीति। **चतुर्विंशत्या व्याप्तं सचराचरं** कायवाक्चित्तस्वरूपम्। कुत एवमित्याह— **समयो ह्येष डाकिनीना**मिति। समय उपदेशः। कियानेष इत्याह— **निर्मित** इति। निर्गतं मितं मानं परिमाणं यतः स तथा। किमासामेष साक्षात्फल इत्याह— **भावितः स चे**ति। संजातविभूतिक इत्यर्थः॥ १६॥

ध्यानादि यद् भवेत् किञ्चित् पूर्णायां च महीतले ।
वामाचारश्च नग्नश्च सदा रात्रौ समाहितः ॥ १७॥

ध्यानादि यद् भवेत्किञ्चित् पूर्णायां च महीतल इति। ध्यानादि यानि कानिचिन्मन्त्रमुद्रादिसम्बद्धानि तानि डाकिनीनामेव। **मही**ति मह्यां **पूर्णायां** सकलायां **तले** स्वरूपे सति। **नग्न** इति निरावरणः। **रात्रा**विति समतायाम्॥ १७॥

तुष्यन्ति वीरयोगिन्य वीराश्च(सर्वे च ?) वीरसम्भवाः।
मुद्रानृत्योपहारेण पूजा कार्या स्वयंभुवाः ।
निःशेषाऽशेषकार्याणि सिद्ध्यन्ति वामपूजया ॥ १८॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने चतुर्विंशत्यक्षरमण्डलन्यासविधि-पटल एकचालीशतिमः॥

तेन किमित्याह— **सर्व** इत्यादि। **वीराच्छ्री**हेरुकात् सम्भवन्तीति **वीरसम्भवाः** खण्डकपालादयो **वीराः**। **योगिन्यश्च** प्रचण्डादय**स्तुष्यन्ति**। **मुद्रा** देवतायोगस्तेन **नृत्योपहारः**। न पुनः प्राकृतत्वेन। तेन नित्यं **पूजा कार्या स्वयंभुवा** च रजोन्वितेन बोधिचित्तेन। इति पूजाविशुद्धिरुक्ता **वामपूजायाः** श्रेष्ठत्वात्॥ १८॥

चतुर्विंशति गोप्यान्य**क्षराणि** पुकारादीनि **मण्डलं** तावत्संख्यानां योगिनीनां समूहस्तस्य **न्यास**श्च तानि **विधीयन्ते** येनासौ **पटल**श्चेति स तथा। एकचालीशतिम एकचत्वारिंशत्तमः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतावेकचत्वारिंशत्तमः पटलः ॥ ४१ ॥

*

हासमन्त्रयोगिनीरूपमायाविधिपटलः द्वाचालीशतिमः

ततो वीरः कुसुमोदकं पीत्वा इमं मन्त्रमनुस्मरेत् ।
कुर्या[1]न्नृत्यं तथैवात्र साधको मुद्रया सह ॥ १ ॥

मन्त्रेण त्रिम(य)न्त्रितं कुर्याद् रात्रौ पिशितभोजनम् ।
अनेन पीत्वा तथा दत्त्वा इद[2]मस्तु सुखावहम् ॥ २ ॥

स्पृष्ट्वा हसते महाकुली सत्येन ब्रह्मचारिणी ।
[3]साध्यमन्ते हासमुद्राभिर्दृष्टिगर्वा भवेत्तदा ॥ ३ ॥

ऊनचत्वारिंशत्तमे पटले उद्दिष्टं हासं निर्दिशन् तन्मन्त्रादिपटलमाह— **तत** इत्यादि। यतो मन्त्रादिना विना नैतद्धसेत्[त]तो **वीरो** वीररसान्वित इति। **इमं मन्त्रमष्टपदं** सप्ताक्षरं वाऽ**नुस्मरेत्** पठेत्। किंकृत्वा। **कुसुमोदकं** रजोन्वितं बोधिचित्तं **पीत्वा**। ततो **नृत्यं** वज्रपदेन **कुर्यात्**। **मुद्रया** प्रज्ञया **सह**। **रात्रौ पिशितभोजनं कुर्यादि**ति सम्बन्धः। किंभूतम्? **त्रियन्त्रितम्**। त्रिभिः कायादिभिर्यन्त्रितम्। तथापि केनेत्याह— **अनेने**ति। **इदमा**मन्त्रः परामृष्टः। मन्त्रमाह— **अस्तु सुखावहमि**ति। ॐ अस्तु सुखावहं हूँ इति मन्त्रोऽयम्। ॐ सुखावह हूँ इति **क्वचित्**। पञ्चामृतादिकं चानेनैवाभिमन्त्र्य प्रयोक्तव्यम्। अन्यस्यापि दद्यादित्याह— **पीत्वा तथा दत्त्वे**ति। समयिभ्यः स्पृष्ट्वा सुखी भूत्वा **तथा** मन्त्रपूर्वकं **दत्त्वा** हसेत्।

अत आह— **हसत** इति। पृष्ट्वेति पाठे सुखिताः स्थेति पृष्ट्वा हसेदिति योज्यम्। **महाकुली** महाव्रती चर्यायोगीत्यर्थः। **सत्येन ब्रह्मचारिणी**ति। सत्यं ब्रह्म तपो ब्रह्मेति ज्ञेयम्। तपश्चेहोक्तम्। एवंभूता तु बहिर्मुद्रा हासं कुर्यात्। किं कृत्वेत्याह— **साध्यमि**त्यादि। साधयतीति साध्यः साधकः। तत्पञ्चामृतास्वादान्ते **हासमुद्रा**लक्षितं दृष्ट्वा हास्यं कुर्यात्। किंभूता। **दृष्टिगर्वा**। तस्या दृष्ट्या दर्शनेन गर्वो यस्याः सा तथा। एवंभूता या संविती भवति। **अनेने**ति। किलि किलीत्यादिना हाहेत्यादिना च। हसनं

---

1. नित्यं- भो०
2. आशु- भो०
3. आद्यन्ते- भो०

हास्यं ण्यता सिद्धिः। पञ्चामृतास्वादेन पूर्वसाधको हास्यं कुर्यादिति सम्बन्धः। सा च तस्य बहिर्मुद्रेति तथैव योज्यमिति प्रज्ञोपाययोरपि हास इति सिद्धम्। **सत्येने**त्यादिना काचिदन्यैव योगिनी तथाभूतं साधकं दृष्ट्वा हसेदिति **केचित्**॥ १-३॥

रात्रावहनि वाऽनेन हासं कुर्यात् तथैव हि ।
रूपकर्म च यच्छुण्डं शृणु वीरयथास्थितम् ॥ ४॥

[1]नृत्यं ततोऽश्रुभव भक्त्या आत्मोद्यमस्तथा ।
वज्रस्य [2]लंघनं चैव तथा नग्नाश्च पूजनम् ॥ ५॥

[3]वामेश्वरीणां तु सर्वेषामेष मुद्रागणक्रमः ।
रेचकं प्रेरणं हासं शृङ्गारनृत्यमद्भुतम् ॥ ६॥

यद् विश्वपुरतः कुर्यात् मुद्रामन्त्रमनुस्मरेत् ।
हा हा हे हेऽष्टविधं हासं विश्वेश्वर्याः परं प्रियाः ॥ ७॥

रात्राविति बहिर्विषयविकल्परसास्तङ्गमस्वरूपे विरमानन्दे। अहनि स्वसंविन्मात्रतास्वरूपे सहजे वा आनन्दपरमानन्दयोः समुच्चयार्थः। **तथा** तथतार्थं सूचयति तच्च सर्वधर्मपरिज्ञानम्। सहजावबोधे यत्क्रियते तदेव तत्त्वदशामापद्यत इति भावः। बहिरर्थः स्पष्ट एव। तं योगिनं दृष्ट्वा पीठादिस्था योगिन्योऽपूर्वां रूपक्रियां दर्शयन्तीत्याह— **रूपे**त्यादि। रूपस्य स्वरूपस्य **कर्म** क्रिया **यत्तच्छुण्डं** गुह्यं तथाभूतमेव प्रकाश्यत्वात् **वीरै**स्तथागतै**र्यथा**[4]**स्थितम्**।

तदेवाह— **नृत्यमि**त्यादि। प्रथमं नृत्यं **ततो** नेत्रयोर**श्रु**पातै**र्भव**तीति निर्विभक्तिकं **भक्त्या**भिनयः। **आत्मोद्यम** आत्मनाभ्युत्थानम्। **तथा**शब्दादर्घादि। **भक्त्या रोमोद्गमस्तथे**ति **पाठे** स्नेहेन रोमाञ्चः। तदन्तर्भूतां साधकक्रियामाह— **वज्रस्ये**त्यादि। **लङ्घनम**तिशयः। वज्रोत्थानमित्यर्थः। **अलङ्घनमि**ति पाठे अशेषेण अहं पूर्वो वा लंघ्यतिरतिशयार्थ एव। **आलम्बनमि**ति **पाठे** प्रापणं तत्क्रिया, योगिन्या च वज्रप्रापणम्। अत

1. नित्यं- भो०
2. अलंघनं- भो०
3. कामे- भो०
4. यथापरिस्थितम्- टी०

आह— **तथा नग्नाश्च पूजनमि**ति। तथा निरवग्रहत्वेन। **वामेश्वरीणां** योगिनीनां **सर्वेषां** योगिनामत एव। तुर्विशेषे। **एष मुद्रागणक्रमो** नृत्यादिवज्रलङ्घनादिश्च। **रेचका**दिभि-र्विशेषेण स्वयं दर्शनं पुरतः पूर्वक्रियाकारिणीनां योगिनीनामग्रतः कुर्यात्। **मुद्रामन्त्रो** हासमुद्रामन्त्रः। तमेवाह— **हा हा हे हे** इत्यादि। हा हा हे हे इत्यष्टविधं हास्यम्। **हासमुद्रामनुस्मरे**दिति सम्बन्धः। हो हो हूँ हूँ इत्यपरेषामितिशब्देन ग्रहणम्। इत्यादि बहुवचनान्ता गणस्य संसूचका भवन्तीति वचनात्। अस्य मन्त्रस्यापरार्द्धम्। किलि किलीत्यादि च गृह्यते। **विश्वेश्वर्याः परं प्रिया** इति। एते वर्णा योगिन्या अतिशयेन प्रियाः। **विशेषचर्याः परं प्रिया** इति **पाठे** नृत्यादिक्रियाविशेषचर्याः॥ ४-७॥

हाहाकारो ह्यत्र सन्निधौ [1]रोदनाश्रु प्रपद्यते ।
तेनैव प्रियो भवेत्तासां ध्यानमन्त्रसुयोजिता ॥ ८॥

भवेद् योगिन्य वीराणां रोमाञ्चादि सुखं सह ।
वज्रस्य लङ्घनं कुर्याद् या वामा परिकल्पिताः ॥ ९॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने हासमन्त्रयोगिनीरूपमाया-विधिपटलः द्वाचालीशतिमः॥

ततो हाहाकारान्ताः कुर्वन्ति। अत आह— **हाहाकारो ह्यत्र सन्निधावि**ति। नित्यं रोदनाश्रु प्रवर्तयन्ति वेत्याह—**रोदनाश्रु प्रपद्यत** इति। **तेनैवा**श्रुपातेन सह हाहाकारोऽपि **प्रियो भवेत्तासाम्**। कुत एवमित्याह— **ध्यानमन्त्रसुयोजिता** इति। ध्यानेन मन्त्रेण च सुष्ठुयोजिता यन्त्रितास्ता योगिन्यः सजातीयमालोक्य प्रीतिमत्यो भवेयुरिति भावः। योगिनीनां योगिनां चोभयप्रीत्योभय**रोमाञ्चादिः**। कासामग्रतो वज्रलङ्घनमित्याह— **वज्रस्ये**त्यादि। **या वामा** योगिन्यः **परिकल्पिताः**। संकेतादिदर्शनाल्लक्षितास्तासामग्रत इत्यादि बोद्धव्यम्॥ ८-९॥

हासमन्त्रश्च योगिनीरूपमाया च ते **विधीयेते** येनासौ **पटल**श्चेति स तथा। द्वा-चालीशतिमो द्वाचत्वारिंशत्तमः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ द्वाचत्वारिंशत्तमः पटलः॥ ४२॥

*

1. नित्यमश्रु- भो०

उपहृदयकर्मसिद्धिविधिपटलः त्रिचालीशतिमः

अथावलोकनं वक्ष्ये वीराद्वयनरस्य च ।
स्थानभेदविधिज्ञस्य भावना सदा अभिप्रिया ॥ १ ॥

इदानीं योगिन्यवलोकननग्नपूजाः सप्ताक्षरकर्मविधिपटलमाह— **अथे**त्यादि। अथेति हासादिकथनानन्तरम्, **अवलोकना**दि **वक्ष्य** इति सम्बन्धः। **नर** इति नरोत्त-मत्वात्। ज्ञात्वा विनेयानामाशयम्। आधारनिष्ठत्वादाधेयस्थितेः॥ १ ॥

चतुष्पथे गृहे वाऽथ वीरस्थाने च पर्वते ।
डाकिन्यः समय[1]स्थानं दूरेऽप्यवलोकयन्ति ॥ २ ॥

चतुष्पथेत्यादिना स्थानभेदमाह— इहैव भावना कार्येतिभावः। **गृहे वे**ति। गृह एव तावदित्यर्थः। अवलोकनमाह— **अवलोकयन्ती**त्यादि । **समयार्थं** समयाद्यर्थ-स्थिताः॥ २ ॥

नग्नपूजनमुद्रायाः कर्मतः परमुच्यते ।
प्रक्षिप्यान्यदम्बरं मुद्रां कामयेत्तेन संस्पृशेत् ॥ ३ ॥

नग्नपूजनमुद्रायाः कर्मतः परमुच्यते इति नग्नपूजानिर्देशः। कर्माह— **प्रक्षिप्ये**-त्यादि। नग्नो**ऽन्यदम्बरं** वा चर्मादि **प्रक्षिप्य** परिधाय **कामयेत्** मुद्राम्। **तेन संस्पृ-शे**दिति। तेन कर्मणा सुखी स्यादित्यर्थः॥ ३ ॥

[2]एवमेव मुख्यभूतो सर्वकर्माणि कारयेत् ।
मूलमन्त्रैस्तथा चान्यैर्दिग्बन्धाश्चतुर्भिस्तथा कुरु ॥ ४ ॥

एवमिति। नग्नता चर्माम्बरता चाकृष्यते। **सर्वकर्म** भोजनादि। **मूलमन्त्रो**ऽष्ट-पदः। [क्रूरकर्मिण आक्रम्य हननेऽन्यः] चतुष्पदः सुम्भमन्त्रः। एतौ योगिन्या दर्शना-ज्जपेदिति निर्देशः। आक्षेपेण दिग्बन्धादि कार्यो भावनादिकाले। अत आह— **दिग्बन्धाश्चतुर्भिस्तथे**ति। **दिग्बन्धावर्तयंस्तथे**ति **पाठान्तरम्**। दिग्बन्धावर्तनानि।

---

1. समयार्थं- टी०
2. एवं मुक्तकेशो- भो०

दिग्बन्धावर्तयंस्तथात्मनैव मन्त्रेणेति व्याख्येयम्। **कुर्व्विति**। पूजादि सर्वं कर्म। **मूलमन्त्रैस्तथा चान्यैर्दिग्बन्धाश्चतुर्भिस्तथा कुर्व्विति पाठान्तरे** मूलमन्त्रैः सर्वकर्म कुरु, अन्यैश्चतुर्भिश्चतुष्पदैर्दिग्बन्धं कुर्व्विति योज्यम्। दिग्बन्धेति द्वितीयालोपे। तथाशब्दद्वयम्। तथा तथा प्रकारभेदेनेत्यर्थ इति व्याख्येयम्॥ ४॥

पूजने [नैव] दृश्येत दिवि दैवगणैरपि ।
कुसुमाञ्जलिमुत्क्षिप्यात् संपूर्णामूर्ध्वं खेचरी ॥ ५॥

न तत्र दृश्यते चोक्तपतितं कुसुमं भुवि ।
वशीकुर्यात्तु तत्रस्थं खेचरीणां सहस्रकम् ॥ ६॥

गोप्येत्याह— **पूजने [नैव] दृश्येत दिवि देवगणैरपी**ति। सप्ताक्षरस्य सामर्थ्यमाह— **कुसुमाञ्जलिं सम्पूर्णामूर्ध्वमुत्क्षिप्यात् खेचरी**ति। कुसुमाञ्जलिं सप्ताक्षरजप्तं सम्पूर्णमुत्क्षिप्यादुत्क्षिपेदित्यर्थः। स च खेचरी खेचरोऽन्तरीक्षस्थः स्यात्। अञ्जलेः स्त्रीत्वमार्षत्वात्। अत आह— **न तत्रे**त्यादि। तत्रैव **दृश्यते न पतति** यतः **कुसुमं भुवि**। **सहस्रमि**त्यादि सुबोधम्॥ ५-६॥

वागीशं मातरं चाप्याकृष्य जानाति च यथाक्रमम्।
दिव्यं दिव्यकथां चैव सञ्चारं ज्योतिषां तथा ॥ ७॥

पातालग्रामारण्येषु नगरेषु च चतुष्पथे ।
एकवृक्षे वीरगृहे शिखरे व्योम्नि वा तथा ॥ ८॥

वागीशं बृहस्पतिं तस्य **मातरं** वाणीं **दिव्यं** दिविभवं वृत्तान्तं **जानाति**। दिव्यानां योगिनीनां कथा **दिव्यकथा**। **ज्योतिषां** ग्रहाणां **सञ्चारं** जानाति। **पाताल** इति। सप्तसु पातालेषु यद् वृत्तं तज्जानाति। **ग्राम** इत्यादि। नन्दिग्रामादौ। **अरण्ये** महारण्ये। **नगरेषु** वर्द्धमानादिषु। **वीरगृहे** क्षेत्रपालाद्यधिष्ठाने। **व्योम्न्या**काशे। **शिखरे** पर्वतशिखरे ॥ ७-८॥

स्मरन्ति हृदयोपहृदयं न दृश्यन्ते देवमानुषैः ।
तस्मादेषु प्रदेशेषु नित्यं तिष्ठन्ति साधकाः ॥ ९॥

एषु स्थानेषु **हृदयोपहृदयं** सप्ताक्षरं ये **स्मरन्ति** जपन्ति। ते **न दृश्यन्ते देवमानुषैः**।

एषु स्थानेषु तज्जापाददृश्यसिद्धिरिति भावः। **तस्मादेषु प्रदेशेषु नित्यं तिष्ठन्ति साधका** इत्युपसंहारः। एष्वेव स्थानेषु जपितव्योऽयं मन्त्र इति भावः॥ ९ ॥

रक्तवर्णं तु वृक्षाग्रे ध्यात्वा सप्तात्मकाक्षरम् ।
[1]नामयेदाश्वभग्नभूधरानिति चान्यथा ॥ १० ॥

आत्मकाये तु विन्यस्य भूमौ दर्भासने शयेत् ।
सप्तात्मकाक्षरं मन्त्रं जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ ११ ॥

स्वप्ने प्रदर्शयेत् सर्वं कार्यं यच्च मनेप्सितम् ।
अपमृत्युहतं नष्टं अन्यत्कार्यं च यद् भवेत् ॥ १२ ॥

मन्त्रजापेन खड्गेऽङ्गुष्ठे जले दीपेऽथ दर्पणे ।
मन्त्री सदाऽऽत्मयोगेन प्रसेनमवतारयेत् ॥ १३ ॥

सप्तात्मकाक्षरमिति। सप्तसंख्यात्मकान्यक्षराणि यस्य स तथा। तं **वृक्षाग्रे ध्यात्वा** वृक्षं नामयेत्। **अभग्नम**भिन्नम्। **इति** इच्छाप्रतिबद्धता दर्शिता। **भूधरान्** शिला-शैलान्। **आत्मकाय** इति आत्मकायार्थम्। **आत्मकाम** इति **पाठः** सुबोधः। **आत्म-काये त्वि**ति। चक्षुःश्रोत्रघ्राणजिह्वाकायमनस्सु षडक्षराणि मनसि [च] फट्कारं **विन्यस्य दर्भासने शयेत्** शयीत। शेषं सुबोधम्। आयुरियद्वर्षावधीति कथयति मन्त्रः। श्रीहेरुको वा। **मृत्युहतो**। मृत्युहतो मृत्युसकाशाद् गत इत्यर्थः। **नष्टम**दर्शनीभूतं देशा-न्तरस्थं **अन्यान्यपि कार्याणि** सर्वमित्युपसंहारः। **तामि**ति देवता कथयति। **खड्गादौ** चाष्टोत्तरशतं जप्त्वा **प्रसेनं** ज्योतिष**मवतारयेत्**॥ १०-१३ ॥

विभाव्य समधा जप्त्वा दर्शयेच्च शुभाशुभम् ।
अथ वीरः सप्ताक्षरं मन्त्रं विन्यस्य भेदतः ॥ १४ ॥

विचिन्त्य व्याधितं सूर्यमध्ये जपेत् सहस्त्रकम् ।
[2][क्षणादङ्गुष्ठमात्रं तु विज्ञानं च विभावयेत्] ।
स्फटिकाकारसदृशं दर्शयेद् व्याधिपीडितम् ॥ १५ ॥

---

1. पातयेत्- भो०
2. [ ] पाठो नास्ति- भो०, गृहीतस्तु टीकानुरोधात्।

भवेद् दर्शनमात्रेण व्याधिभङ्गो न संशयः ।
रोगी रोगविनिर्मुक्तो भवेच्च शरदिन्दुवत् ॥ १६ ॥

दारिके दारिकायां वा खड्गादि **दर्शयेत्**। तौ **शुभमशुभं** वा कथयतः। **अथे**त्यादिना व्याधिशान्तिमाह— **सूर्यमध्ये सप्ताक्षरं मन्त्रं** साक्षाद् गोरोचनादिना **विन्यस्य** लिखित्वा ध्यात्वा वा तस्य मध्ये **व्याधितं विचिन्त्य** सहस्रं वारान् **जपेत्**। **भेदतो** विदर्भणतः। **स्फटिकाकारसदृशं** निर्मलत्वात्। तं **व्याधिपीडितं दर्शयेत्**। पश्येद् ध्यायेदिति यावत्। स्फटिकाक्षरसदृशमिति **पाठान्तरे** स्फटिकवच्छुक्लान्यक्षराणि सदृशानि शोभनानि यस्य स तथा मन्त्रः। विभावयेत् तादृशं मन्त्रं करं व्याधिपीडिताय दर्शयेत्। चतुर्थ्यर्थे द्वितीया इति व्याख्येयम्। **क्षणादङ्गुष्ठमात्रमि**ति। तस्य हृदि चाङ्गुष्ठपरिमाणं विमलस्फटिकसमं **विज्ञानं** ध्यायात्। किम्भूतं सर्वस्मिन्नाना व्याधयो यतस्तत्सर्वव्याधिनिर्मुक्तं कायं विज्ञानं चास्य भावयेन्मन्त्रं जपेदिति समुदायार्थः॥ १४-१६ ॥

शशिमध्ये वामहस्ते विन्यस्यैवं हि चक्रकम् ।
स्फटिकाक्षरसंकाशं विन्यस्तः सर्वव्याधितः ॥ १७ ॥

योगान्तरमाह— **शशी**त्यादि। वामो हस्तो यस्य तद् **वामहस्तं चक्रकम्**। वामहस्ते शशिबिम्बं विचिन्त्य तत्र नवकोष्ठं चक्रं तस्य मध्ये ॐ। पूर्वे ह्रीः। दक्षिणे ह। पश्चिमे ह। उत्तरे [1]ह्लँ। पुनर्मध्ये हूँ। कोणचतुष्टये फट्। इति सप्ताक्षरो मन्त्रः। टकारं विहाय सप्ताक्षरत्वम्। **ॐकारमिति केचित्**। अत आह— **स्फटिकाक्षरसंकाशमि**ति। स्फटिकवच्छुक्लत्वादक्षराणां सप्तानां संविभागेन काशः प्रकाशो यत्र तत्तथा चक्रम्। पुनः कीदृशं **विन्यस्तः सर्वव्याधितो** यत्र तत्तथा। मध्यस्थसाध्यचक्रवामहस्तं भावयेदित्युपदेशतः॥ १७ ॥

ज्वरो ग्रहाद्यपस्मारं शूलं कुष्टं तथैव च ।
विषजन्या व्याधयश्च सर्वा एव न संशयः ॥ १८ ॥

ज्वरेत्यादि। सहार्थे तृतीया। दष्टविषादीनां रोगो भङ्गो यतः। चक्रान्तर्दष्टविषादि-

1. हुँ- भो०

रोगम्। आदिशब्दात् स्थावरादिविषम्। तुरवधारणे। सर्वे विगता आधयो यत-स्तत्सर्वव्याधिः॥ १८॥

शशिबिम्बाक्षरं ध्यात्वा विद्रवन्ति दिशो दशम् ।
रात्रौ गुह्ये च गोमांसं पिष्ट्वा त्रिमधुरेण हि ।॥ १९॥

ज्ञात्वा सप्ताक्षरं मन्त्रमष्टसहस्रेण होमयेत् ।
अपरेऽह्नि लभेन्मन्त्री स्वर्णं पलसहस्रकम् ॥ २०॥

दशसहस्रहोमेन लभेच्चापि सुराष्ट्रकम् ।
अथवा मन्त्रराजं तु यत्र कुत्रापि चिन्तयेत् ॥ २१॥

स तु तत्रैव च तदा जायते नात्र संशयः ।
शुक्लेन जायते शान्तिः कृष्णेन मारयेत् क्षणात्॥ २२॥

रक्तेन च वशीभूय सद्य आकर्षणं भवेद् ।
पीतेन सर्वाभिभवनमिति शास्त्रस्य निश्चयः ॥ २३॥

पीतेनैव तु नौयन्त्रगजसैन्यपराक्रमम् ।
शुक्लचिन्तनमात्रेण मृत्योर्मोचयते ध्रुवम् ॥ २४॥

महाव्यालशतग्रस्तोऽप्याशु दंष्ट्रात् प्रबुध्यते ।
विषेण मूर्च्छितो दृष्ट्वा तथैव प्रतिबुध्यते ॥ २५॥

ज्वरग्रहापस्मारगृहीतस्तु करं दृष्ट्वा बिभेष्यति ।
मुष्टिं बद्ध्वा जनो युद्धे मनसा च जपेत् सदा ॥ २६॥

यावन्न मुच्यते मुष्टिस्तावत्सर्वं हि सिद्ध्यति ।
उदायुधोऽपि वै शत्रुर्यावन्मुष्टिर्हि बन्धिता ॥ २७॥

इच्छन्नप्यायुधं तावत् प्रक्षेप्तुं नैव शक्यते ।
अथवा सर्वकार्येष्वेवमेव हि सिद्ध्यति ॥ २८॥

शशिबिम्बाक्षरमिति। पूर्ववच्छ**शिबिम्ब**विन्यस्तसप्ताक्षरं वामहस्तं दृष्ट्वा **ध्यात्वा** व्याधिपीडिताय दर्शयेत् तेन वाऽपमार्जयेत्। **विद्रवन्ति दिशो दश**मिति। तेषामक्षराणां

रश्मयः। क्षरदमृतस्वभावा दिशः पूर्वादिदिशो दश। विद्रवन्ति व्याप्नुवन्ति। ईदृशस्वरूपाक्षरं वामं हस्तं दर्शयेत्तेनापमार्जयेदिति भावः।

होममाह— **गोमांसमि**त्यादि। **त्रिमधुरं** गुडमधुशर्कराः। अथवा **मन्त्रराजमि**ति। यत्र शान्त्याद्यर्थं चिन्तयेत्तत्र शान्त्यादि जायते इत्याह— **तदा** तस्मिन् **जायते नात्र संशय** इति। जापमानमाह— **शुक्लेने**त्यादि **सद्य आकर्षयेदि**ति **रक्तवर्णमेव दृष्ट्वे**ति वामं करं सप्ताक्षरम्। **अथवे**त्यादिना। मन्त्रजापिन एवमेव **सर्वं सिद्ध्यती**ति सिद्धिलिङ्गं दर्शयति॥ १९-२८॥

पत्रैः पुष्पैः फलैश्चैव ताम्बूलैर्भोजनैस्तथा ।
शरीरयोगः प्रथमः द्वितीयः शक्तिकस्तथा ॥ २९ ॥

तृतीयं वाक्यतश्चैव चतुर्थं नोपलभ्यते ।
समुद्रमेखलायां च वृक्षाच्छादिते भुवि ॥ ३० ॥

अनेन मन्त्रराजेनात्र सिद्धिर्न संशयः ।
चराचरे त्रैधातुके शक्यमेव हिताहितम् ॥ ३१ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने उपहृदयकर्मसिद्धिविधि-पटलः त्रिचालीशतिमः॥ ४३ ॥

[1]**पत्रै**रित्युपयोगिभिः **ताम्बूलै**र्विचित्रैः **शरीरयोगः** शरीरसन्धारणम्। **द्वितीयः शक्तिकः** शक्तिमान्। अमनुष्या अपि तस्य किङ्करा भवन्तीति भावः। **तृतीयं वाक्यतश्चैवे**ति। वाक्सिद्धिरिति भावः। **मन्त्रराजं** चिन्तितमित्यर्थः। ''मन्त्रं मन्त्रमिति प्रोक्तं तत्त्वचोदनभाषणम्'' इति। वाचा कायेन चित्तेन शापानुग्रहकर्ता योगी॥ २९-३१॥

हृदयो**पहृदयस्य कर्म**क्रिया तत्**साध्यं** कुसुमपातनादिकार्यं तद् **विधीयते** येनासौ **पटल**श्चेति स तथा। **त्रिचालीशतिम**स्त्रयश्चत्वारिंशत्तमः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ त्रिचत्वारिंशत्तमः पटलः॥ ४३॥

*

1. पात्रैः- भो०

षड्योगिनीनां सप्ताक्षरकर्मविधिपटलः चतुश्चालीशतिमः

अथ दूतीं [1]समासाध्य सप्ताक्षरसंयुतैः ।
यत्र कर्म समारभ्य तत्क्षणादाशु सिद्ध्यति ॥ १ ॥

सप्ताक्षरविधानेन विन्यस्य षड्योगिनीम् ।
[करे] षट्संस्थितं चक्रं प्रकुर्यात् तादृशं विधिम् ॥ २ ॥

येन रूपधरं ध्यात्वा वामेन चोदनान्वितम् ।
दर्शयते करं यस्य मुखेनोच्चार्य मन्त्रराट् ॥ ३ ॥

अथेति। षड्योगिनीमन्त्रकर्मप्रसरः प्रस्तूयते। यत्र दूती सिध्यति साक्षाद् भवति स कर्मप्रसरः। किंकृत्वा प्रस्तूयत इत्याह— **कर्म समारभ्ये**ति। आकर्षणकर्मादि कृत्वा कर्मप्रसरः प्रस्तूयत इति योज्यम्। कैरित्याह— **समासाध्य सप्ताक्षरसंयुतै**रिति। संविभज्यात्मना साध्यः साधनीयः षड्योगिनीमन्त्रः। तस्य संयुतानि संयोगध्यानानि। कर्माह— **करे**त्यादि। ॐ हाँ ह्रीँ हैँ हुँ हूँ फट् इति सप्ताक्षरो मन्त्रः। षड्योगिन्यः ताः सप्ताक्षरषड्योगिनीः करमध्ये विन्यस्य साध्यमाकर्षयेदिति सम्बन्धः। विन्यासं वक्तुमाह— **षडि**त्यादि। षण्णामाराणां संस्थानेन स्थितं चक्रं यत्राकर्षणे तत् **षट्-संस्थितं चक्रं** क्रियाविशेषणम्। अतस्तु विशेषे। **वाम** इति करमध्यविशेषणम्। षट्-संस्थितं चक्रं यथा भवति तथा तमाकर्षेत् करं यस्मै दर्शयति। अत आह— **दर्शयते करं यस्ये**ति। किंकृत्वा करं कस्मै दर्शयतीत्याह— यस्याक्रष्टव्यस्य **रूपं धरती**ति चक्रं **ध्यात्वा**। पुनः किंकृत्वेत्याह— **मुखेनोच्चार्य मन्त्रराडि**ति द्वितीयालोपे। षड्-योगिनी सम्बन्धिनं सप्ताक्षरमुच्चार्य मुखेनेति विशेषितं भावनीयत्वात्। किंभूतं मन्त्र-राजमित्याह— **चोदनान्वितम्**। षडारचक्रं वामकरे विचिन्त्य तत्र मध्ये ॐ। [2]पञ्चारेषु हाँ ह्रीँ हैँ हूँ फडिति षडक्षराणि विन्यसेत्। तत्किरणजालेनाङ्कुशाकारेण नीयमानं विभाव्य साध्यं तस्मै करं चक्रान्वितम्। [3]ॐ हाँ ह्रीँ हैँ हूँ फट्

---

1. समाश्रित्य- भो०
2. षडारेषु----हुँ हूँ- भो०
3. ॐ ह्रीः ह ह हुँ हूँ फट्- भो०

देवदत्तमाकर्षयेति चोदनान्वितं मन्त्रमावर्तयन् साक्षात्करं दर्शयँस्तमाकर्षयतीति समुदायार्थः॥ १-३॥

ध्रुवमाकर्षयेत् तस्य रक्तचन्दनराजिका ।
साध्यपादस्य धूलिं च लवणं हि तथैव च ॥ ४॥

एकीकृत्य परीक्ष्याथ मन्थयेच्च करद्वये ।
योगिन्यै जुहुयाद् रात्रौ चण्डालाग्नौ यथाविधि॥ ५॥

चिताग्नौ वा हुनेच्चूर्ण साध्यस्याभिमुखी भवेत्।
एतत्प्रयोगमारभ्य शतं यावज्जपेत्तथा ॥ ६॥

ध्रुवमाकृष्यते तेन साध्यात्मक एव हि ।
एतत्प्रयोगे सिद्धे तु वशीकुर्याद्धनं नरम् ॥ ७॥

नान्यथा वच्म्यहं तस्य गृहीत्वा पादधूलिकाम् ।
लोहचूर्णेन संमिश्र्य वेष्ट्यं श्मशानकर्पटे ॥ ८॥

चतुष्पथे सप्तजप्त्वा खनेदष्टाङ्गुलां क्षितिम् ।
तच्चूर्णं गोपयेत्तत्र रिपुनामसमन्वितम् ॥ ९॥

भविष्यति पराभूतः गोक्षीरेण जपेद्यदि ।
तदेव चूर्णं यत्नेन पुनः प्रत्यानयनं भवेत् ॥ १०॥

तच्चूर्णग्रहणाच्चापि सिद्धिरेव न संशयः ।
पञ्चोन्मत्तकं संयोज्य वेष्ट्यं श्मशानकर्पटे ॥ ११॥

रिपुनाम लिखेत्तत्र शतोच्चारेण जापयेत् ।
श्मशाने तद्गोपनेन साध्य उन्मत्तको भवेत् ॥ १२।

उत्खन्य गोक्षीरेण स्नापयित्वा प्रयत्नतः ।
मुक्तश्च प्रत्यानयनं याति सिद्धिं न संशयः ॥ १३॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने षड्योगिनीनां सप्ताक्षरकर्मविधिपटलः][1]* श्चतुश्चालीशतिमः॥ ४४॥

1. *इतः परं मातृका पुनः प्रारभ्यते।

रक्तचन्दनादि योगिना मन्त्रेण करद्वयेन निर्मथ्य चित्यग्नौ चण्डालाग्नौ वा तथैव चोदनान्वितं जुहुयात्। **यथाविधी**ति। रक्तचन्दनादिसंविधानादिकरणं विधिः। प्रकृष्टो योगो यत्र तत्**प्रयोगं** हवनमिदम्, श्रीहेरुकाश्रयात्। तान्येव रक्तचन्दनादीनि धूलिं साध्य पादसंबन्धिनीं च। **रिपुनामसमन्वितमि**ति चोदनान्वितम्। शुचिक्षीरेण **गव्येन क्षीरेण प्रत्यानयनमि**ति भावः। शेषं सुबोधम्॥ ४-१३॥

सप्ताक्षरस्वरूपाः षड्योगिन्यस्तासां **कर्मा**कर्षणादि **विधीयन्ते** येनासौ **पटल**श्चेति स तथा। **चतुश्चालीशतिम**श्चतुश्चत्वारिंशत्तमः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ चतुश्चत्वारिंशत्तमः पटलः॥ ४४॥

*

षड्योगिनीकर्मवाक्सिद्ध्याकर्षणविधिपटलः पञ्चचालीशतिमः

अथ कर्मवरं श्रेष्ठं वाक्सिद्धिप्रसाध॰ प ।
करवीररक्तपुष्पाणि शतमष्टोत्तराणि च ।
संगृह्य गावीक्षीरेण शतजप्तं तु कारयेत् ॥ १ ॥

इदानीं षड्योगिनीकवचमन्त्रेण शेषाक्षरषट्क।त्मकमन्त्रकर्मप्रसरपटलमाह— **अथे**त्यादि। [1]**अथे**ति षड्योगिनीकवचमन्त्राक्षरसप्तकात्मकमन्त्रकर्मप्रसरकथनानन्तरम्, **कर्मवरं** [2]षडक्षरमन्त्रसम्बन्धि भवतीति ज्ञेयम्। [3]ॐ वँ यौँ मौँ ह्रौँ हूँ हूँ फडिति मन्त्रस्तस्य कर्म त**त्सिद्धिप्रसाधकम्। वाचा** साध्यस्य सिद्धिः साक्षात्क्रिया। एतदेवाह— **करवीरे**त्यादि। **अष्टोत्तरं शतं रक्तकरवीरकुसुमानि। गव्यक्षीरेण** यत्नतः संस्कारतः सेकात् अष्टोत्तर**शतजप्तानि** कुर्यात्॥ १ ॥

सकृज्जप्तेन पुष्पेण लिङ्गमूर्ध्नि तु ताडयेत् ।
एवं दिने दिने कुर्यात् सप्ताहं सुसमाहितः ॥ २ ॥

ततस्त्वेकादशे दिवसे [4]गृह्यतां कुसुमानि तु ।
महानद्यां तु वै गत्वा एकैकं तु प्रवाहयेत् ॥ ३ ॥

ततः **सकृज्जप्तेन** एकैकेन **पुष्पेण लिङ्गमूर्ध्नि ताडयेत्**। एवं **सप्तदिनानि** कुर्यात्। **सुसमाहितो** देवतायोगी। **ततस्त्वेकादशे दिवसे त्वि**ति। सप्ताहानन्तरम्। **तु**रेवार्थे। यावदेकादशं दिवसं स्यात् तावत् चत्वारि दिनानि न तानि संगृहीतव्यानि। किन्तु तावत्सु दिनेषु तत्र मन्त्रोऽपि त्रिसन्ध्यं जपितव्यः। अत एव **तु**र्विशेषे। **एकादशे दिवसे सद्गृह्यतां** सम्यगविपरीतमालोक्य गृह्यताम्। ग्रन्थतामिति सामान्यकर्मणि। ग्रन्थनसूत्रञ्च करवीरवल्कलस्येत्युपदेशः। विशेषमाह— **कुसुमानि त्वि**ति। **तु**रेवार्थे।

1. नास्ति- क.
2. सप्त- भो०
3. ॐ वँ हँ यौँ ह्रौँ मौँ हँ ह्रौँ हुँ हूँ फट् फट्- भो०
4. सद्गृह्यतां- टी०

तान्येव कुसुमानीत्यर्थः। **महानदी** शोषरहिता। **तुः** समुच्चये **वैस्तदात्वार्थे** तुरवधारणे। न कदाचिद् वै॥ २-३॥

सर्वांस्ताननुपूर्वेण सकृज्जप्तं प्रयोजयेत् ।
नद्यां पश्चिमपुष्पं तु प्रतिस्त्रोतं प्रवाहितम् ॥ ४॥

तं गृह्योदकेन संयुक्तं दन्तैर्न संस्पृशेत् पिबेत् ।
वाचासिद्धि(द्ध)स्तु साधको गुह्यतन्त्रे[1] विनिर्गतम् ॥ ५॥

कथं प्रवाहणमित्याह— **सर्वांस्ताननुपूर्वेणे**ति। ताडनकाले पंक्तिशः प्रथमादि-कुसुमस्थापनं ज्ञात्वा कुर्यात्। तथैव ग्रन्थनं तदानुपूर्व्या प्रवाहणम्। ग्रन्थनकालानुपूर्वी चेति **केचित्**। **पश्चिमपुष्पं** ताडनकालस्य पश्चिमपुष्पं ग्रन्थनकालस्येति **केचित्**। **प्रतिस्त्रोतं प्रपाति(वाहि)तम्**। स्रोतोवेगमतिक्रम्य मन्त्रसामर्थ्येन प्रतीपं याति तत्। शेषं सुबोधम्। **वाचासिद्धि**र्यस्य स तथा **साधकः**। **गुह्यतन्त्रविनिर्गतं** प्रकरणमिति भावः॥ ४-५॥

[2]योगिनीयोगमुद्रां बद्ध्वा शतमष्टोत्तरं जपेत् ।
साध्यस्याभिमुखो मन्त्री साध्यस्यैवोदरे स्थितम् ॥ ६॥

कनिष्ठिकां चालयेद्धीमान् त्रिसन्ध्यं तन्मनःस्थितः ।
ब्रह्मघ्नोऽपि सप्ताहात् शक्रादिवशमा[3]नयेत् ॥ ७॥

साध्यप्रतिकृतिं कृत्वा रक्तचन्दनधूलिना ।
त्रिकटुकेन लिप्ताङ्गं सिक्थकेन प्रलेपितम् ॥ ८॥

ताम्रसूच्या तु तां बिद्ध्वा गुह्यस्थाने तु साधकः ।
निर्धूमैर्खदिराङ्गारैस्तापयेत् सप्ताहाद् बुधः ॥ ९॥

---

1. तत्त्वे- ख
2. योनिमुद्रां ततो- क. भो०, गृहीतं तु टीकानुसारेण।
3. मानयति- क. ख.

जप्तेन शतान्तेभिः नृपतिः [1]सामन्तः सपुरोहितः ।
अन्तःपुरं सपरिवारं [2]द्रुतमाकर्षयेत्ततः ॥ १० ॥

नृपतेः सपरिवारं भूर्जपत्रे तु लेखयेत् ।
प्रेतालक्तकरोचनया लिखेन्नाम विदर्भितम् ॥ ११ ॥

यस्याभिमुखो [3]जपेत् खदिरानलेन [प्रतापयेत्]।
प्रेतालये प्रसिद्ध्यर्थं तापयेद् यावत् सिक्थकं न लीयेत ॥ १२ ॥

ताप्यमानं तु राजानं स चक्रवर्तिनमाकर्षयति ।
पादधूलिं तु साध्यस्य रक्तचन्दनमेव च ॥ १३ ॥

योगिनीयोगमुद्रां पर्यङ्कं **बद्ध्वा** वज्रबन्धं कृत्वा मध्यमाद्वयमुखेनाङ्गुष्ठद्वयमुखे योजयित्वा तर्जनीद्वयमुत्थाप्य परस्पराग्राभ्यां योजयेदिति **योगिनीयोगमुद्रेति केचित्**। **योनिमुद्रामि**ति क्वचित्पाठेऽपीयमेव सा मुद्रा। अनन्तरं **जप** इति च ज्ञेयम्। कथं जपेदित्याह— **साध्यस्येत्**यादि। कनिष्ठां षड्योगिनीषड्क्षरमालां सविदर्भां [4]यन्त्रगतां कृत्वा साध्यपादधूल्यादिकृतायाः **साध्य**प्रतिकृते**रुदरे** निक्षिप्ताम्। **चालयेज्ज**पेत्। किंभूतो जपेदित्याह— **साध्यस्य** प्रतिकृतिगतस्या**भिमुखः**। **त्रिसन्ध्यं तन्मनःस्थितः शक्रादिवशमानयेत्**। **अष्टोत्तर**ाष्टोत्तरशतसप्ताहजापात्। षट्पञ्चाशदुत्तरसप्तशतान्ताः। तैः **शतान्तेभिः** शतान्तैरा**कर्षेत्**। **तत** इति सामग्र्याः। शेषं सुबोधम्॥ ६-१३ ॥

श्मशानोत्सृष्टं भस्म एकीकृत्य तु साधकः ।
[5][निर्धूमैः खदिराङ्गारैः तापयेच्च प्रयत्नतः ॥ १४॥

करद्वयेन तां धूलिं निर्मथ्य होमयेत् ।
सिद्धिं यावद् होमित्वं गृहीत्वा धूलिमेव हि ॥ १५॥

---

1. सामन्तः - नास्ति भो०
2. ध्रुवं- भो०
3. शतं जपेत्- भो०
4. पत्रगतां- भो०
5. 'निर्धूमैः -----ध्रुवम्' इति पाठो नास्ति- क., गृहीतं तु भोटानुसारि।

श्वासं निरुध्य वि(नि)क्षिप्तां तां तत्र निखनेद् ध्रुवम् ।]
मूर्च्छिता चेतनरहिता क्लीना(क्लिष्टा) चैव विमोहिता ॥ १६ ॥

ताप्यमानं प्रतिकृतिं श्मशानोत्सृष्टं भस्म वा शोपितम्। निखनेत् तस्य धूलिमिति। होमधूलिम्। शेषं सुबोधम्॥ १४-१६ ॥

आगच्छति वायुवेगेन निपतति साधकोपरि ।
पशुं वा यदि वा दूतीं कारयेद् [विभजेद् बुधः] ॥ १७ ॥

ततो वै कारयेत् कर्म दूतीग्रहणमेव च ।
करवीरलतां गृह्य सार्द्रां बाहुप्रमाणतः ॥ १८ ॥

[1]यस्य मन्त्राभिसंलिख्य [2]कर्मकस्य तु साधकः ।
ज्वलमानेऽपि चित्यग्नौ क्षिपेत् [चैव लतां पुनः] ॥ १९ ॥

स त्वरि[तं त]तो गृह्य यावत्सा न दह्यते ।
विद्यया सप्तजप्तं तु यमनुस्मृत्य भ्रामयेत् ॥ २० ॥

पशुमित्यादिना प्रयोगान्तरमाह— पुरुषं स्त्रियं वा **कारयेत्** स्वाभिमतं **कर्म**। **ततः** कारणादेव **दूतीग्रहणम्**। दूतीनिग्रहः। **सार्द्रां बाहुप्रमाणत** इति। आर्द्रां बाहुप्रमाणाम्। **करवीरलतां गृहीत्वा यस्य मन्त्राभिसंलिख्ये**ति। यस्य नामविदर्भणेन मन्त्रं तमेवाभिलिख्येत्यर्थः। **कर्मकस्य त्वि**ति। पुरुषस्य स्त्रियो वा विपर्यये षड्योगिनीकवचापराक्षरमन्त्रेण। **स** इति पुरुषः। **सा** वा स्त्री॥ १७-२० ॥

तत्क्षणात् वायुवेगेनागच्छति वरस्त्रियां स्वरूपिणी ।
करवीररक्तपुष्पं तु शतजप्तं पुष्पयोगेन साधकः ॥ २१ ॥

गोरोचनया विलिप्तं पुष्पं उदकेन संस्थितम् ।
अवतीर्य महानद्यां नाभिमात्रजले स्थितम् ॥ २२ ॥

---

1. नास्ति- भो०
2. यस्य कस्य - क., गृहीतस्तु टीकानुसारी।

करसम्पुटमध्यस्थं सहस्त्रजप्तं च विद्यया ।
करद्वयेन सम्पूर्णजलेन सहितं पिबेत् ॥ २३॥

अत आह— **वरस्त्रियां वा स्वरूपिणी**ति। वरस्त्रियामिति वरस्त्रियम्। वाक्-सिद्धिप्रयोगान्तरमाह— **करवीररक्तपुष्पमित्यादि। पुष्य**नक्षत्रेणाष्टोत्तर**शतजप्तं** कृत्वा ग्रहीतव्यम्। ततो **गोरोचनया विलिप्तं तमिति** तत्पुष्पं **उदकेन** मदनेन **संस्थितम्**। तत्राष्टोत्तरशतजप्तं कुर्वीत। ततो **महानद्यां नाभिमात्रे जलेऽवतीर्य** सहस्त्रं जपेत्। **करद्वयेने**ति। **सहस्त्रजापा**नन्तरमुत्तरसाधकेन साधकस्याञ्जलौ निक्षिप्तं **सम्पूर्णम**-भग्नकेशरादि। **जलेने**ति। यत्र तत्पुष्पमुत्तरसाधक**करसंपुटस्थं** भूतं **करद्वयेन** स्व-कीयेन॥ २१-२३॥

ततस्तस्य भवेत्सिद्धिर्वाचासिद्धिस्तु साधकः ।
राजानं राजपत्नीं वा मनसाकर्षयेद् ध्रुवम् ॥ २४॥

वशं च कुरुते क्षिप्रं स देवासुरमानुषान् ।
वाचया मारयेत् क्रुद्धो [1]अस्योच्चाटनमेव च ॥ २५॥

निग्रहं कुरुते वाचा एवमेवेति साधकः ।
स्तम्भयेन्नदीं शकटं यन्त्रं वाचामात्रेण सागरम् ॥ २६॥

गजवाजितथामेघान् पुरुषं वाथ पक्षिणम् ।
वाचया कुरुते सर्वा मनसा यन्मनेप्सितम् ॥ २७॥

वाक्सिद्धेः प्रयोजनमाह— **राजानमित्यादि। वाचया मारयेत् क्रुद्धो[2]ऽस्योच्चाट-नमेव चे**ति। असमानस्योच्चाटनमस्योच्चाटनम्। गजश्च वाजी च तथाभूतो मेघस्तथा-मेघः **गजवाजितथामेघाः** तान्। **यन्मने[3]च्छत** इति। यत्र मनस इच्छा तत्कर्षणादि **कुरुते**॥ २४-२७॥

आकर्षणप्रयोगं तु सर्वस्त्रीमोहकारकाम् ।
रक्तकुसुमं तु संगृह्य करवीरस्य संहरेत् ॥ २८॥

1. विद्वेषो- भो०, वशो- क. गृहीतं तु टीका०
2. विद्वेषो- भो०
3. ०प्सितम्- क. भो०

विद्यया [1]सप्तजप्तस्य योनिमध्ये निधापयेत् ।
सम्पुटीकृत्य तं पुष्पं गुह्यस्थाने नियोजयेत् ॥ २९ ॥

शतमेकं जपेन्मन्त्री अद्वयज्ञानयोगवान् ।
तैः पुष्पैर्योनिमध्यस्थैर्गृह्यमेकं तु साधकः ॥ ३० ॥

यं ताडयति पुष्पेण तत्क्षणात् स वशी भवेत् ।
विह्वलाचेतनरहिता परवशा सर्वाङ्गसन्धिषु ॥ ३१ ॥

वशं च कुरुते क्षिप्रं प्रत्ययश्चेन्निवर्तते ।
एतत्प्रत्ययसिद्धिस्तु अमोघवशकारकः ॥ ३२ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने षड्योगिनीनां कर्मवाक्सिद्ध्याकर्षण-विधिपटलः पञ्चालीशतिमः ॥ ४५ ॥

आकर्षणेत्यादिना प्रयोगान्तरमाह— तच्च सुबोधम्। **प्रत्ययश्चेत् निवर्तत** इति। चेतनावति प्रत्ययो न तु काष्ठपाषाणादौ ॥ २८-३२ ॥

षड्योगिनीकवचमन्त्रापरषडक्षरात्मको मन्त्रः, तस्य **कर्म षड्योगिनीकर्म,** तच्च **वाक्सिद्ध्या** वाङ्निष्पत्त्या **आकर्षणं** तद् **विधीयते** येनासौ **पटल**श्चेति स तथा। **पञ्चालीशतिमः** पञ्चचत्वारिंशत्तमः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ पञ्चचत्वारिंशत्तमः पटलः ॥ ४५ ॥

*

1. शत- भो०

पञ्चहकारकर्मविधिपटलः षट्चालीशतिमः

अथ हकारपञ्चकस्य सर्वकर्मप्रसाधकः ।
येन विज्ञातमात्रेणाशुसिद्धिः प्रवर्तते ॥ १ ॥

इदानीं हकारपञ्चकस्य कर्माह— **अथे**त्यादि। अथ हकारपञ्चककर्म प्रक्रियते। **हकारपञ्चकस्ये**ति। हकारपञ्चकस्य **कर्म** कार्यं तत्**प्रसाधको** योगी हकारविस्तरस्येति वा॥ १ ॥

हा ही है हौ हः पञ्चहकारहस्तौ तु संमर्दयेत्। चोदनान्वितस्य मुखेनापि रुधिरं [1]वहति तत्क्षणादेव मारयेद्रिपुम्॥ २ ॥

स्व(श्व)शोणितं कपालस्थमनामिकारुधिरेण मर्दयेत् ।
यावत् शोषमायाति ततः साध्यो विनश्यति ॥ ३ ॥

यदि क्रुद्धो दीप्तेन जपेत्संरक्तलोचनः ।
राजानं मारयत्याशु ससैन्यबलवाहनम् ॥ ४ ॥

हकारपञ्चकमाह— **हा ही [2]है हौ हः** इति हकारपञ्चकम्। षष्ठं स्वरं विना षड्वीरकवचमन्त्रोद्धारशेषपञ्चस्वरविशेषितो हकारः। पञ्चहकारेण पञ्चबाणयुक्तौ हस्तौ सम्मर्दयेदिति सम्बन्धः। अत आह— पञ्चहकारा(रौ) यौ [ह]स्तौ चेति **पञ्चहकारहस्तौ**। पञ्चारं चक्रं हस्तयोर्विचिन्त्य साक्षाद्वा विलिख्य तत्र पञ्चाक्षराणि विचिन्त्य विलिख्य वा तौ मृद्नीयादिति समुदायार्थः। पञ्चशब्दस्य व्यक्त्यर्थत्वादुकारस्यापि ग्रहणे हा ही हू [3]है हौ हः इति षड् हकार एव। **पञ्चहकारो मन्त्रश्च षडक्षरमिति केचित्**। **मुखेनापि रुधिरमि**ति। पञ्चसु शिरासु सूच्याकारेण मुखेन विद्धवा रुधिरमाकृष्यमाणं कपालस्थं चिन्तयेदिति ततस्**तत्क्षणादेव** स **रिपुं मारयति**। प्रयोगान्तरमाह— **श्वशोणितमि**त्यादि। **अनामिका** अनपत्या। तस्या **रुधिरं**

---

1. नास्ति- क. गृहीतं तु भोटानुसारि।
2. है हौ हं-भो०
3. है हौ हं-भो०

रजः। **शोषमायाति**। ऊष्मायत इत्यर्थः। पञ्चहकारजपादेवं कार्यम्। **यदि क्रुद्ध** इत्यादिना जपमानसिद्धिमाह— विषराजिकादिना हस्ततलद्वयं विलिप्य तदुपरि हरितालस्फटिकादिना काकपक्षलेखनीगृहीतेन पञ्चहकारान् पूर्ववद् विलिख्य ध्यानेनापि तथा दृष्ट्वा खदिराङ्गारवह्नौ वा साध्यपादधूलीः करद्वयेन संमर्द्य जुहुयान्नामप्रकरणपूर्वकम्। **तेनैव मन्त्रेण ततो मुखेन रुधिरमुद्वम्य म्रियते रिपुरिति केचित्**॥ २-४॥

मार्जार[1]नकुलेभ्यश्वानकाकवकजम्बुकडाकिनीबलि [2]होमयेत् ।
आशुसिद्धिकरा ह्येते अस्मिन् तन्त्रे न संशयः ॥ ५ ॥

होमप्रयोगमाह— **मार्जारित्यादि**। **इभ्य** ईश्वरः। **जम्बुक** आर्षत्वात्। एतेषां मांसेन डाकिनीनां बलिपूर्वको होमः। तं डाकिनीबलिहोममाचरितव्य इति। **डाकिनीबलिहोमयेत्**। तन्मांसमनेन मन्त्रेण विदर्भणपूर्वकं जुहुयादिति भावः। [3]**आशुसिद्धिकरा** राज्यादिसिद्धिकराः। **एत** इति मार्जारादयः॥ ५॥

शशकादीनां रोमाणि रज्जुं कृत्वा सहस्त्राभिमन्त्र्य ।
यस्य गले बध्नाति स तादृशो भवति ॥ ६ ॥

हस्तं सहस्त्राभिमन्त्रितं कृत्वा करवीरकुसुमैरे[4]कैकाक्षरं संयोज्य गुर्विणीं संस्पृशेत्। गर्भः संक्रामयति मुक्ते मोक्षः। यं तर्जयति तं मारयति पुनर्जीवापयति ॥ ७ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने पञ्चहकारकर्मविधिपटलः षट्चालीशतिमः ॥ ४६ ॥

शशकादीनामिति। आदिशब्दाच्छृगालादेर्ग्रहणम्। **सहस्त्रेति** निर्विभक्तिकम्। **हस्तं च सहस्त्राभिमन्त्रितं कृत्वा** गर्भवतीं **करवीरकुसुमैः** सह तेन संस्पृशेत्। तेन किमित्याह— **गर्भमित्यादि**। **एकैकाक्षरं संयोज्येति**। पञ्चलक्षजापादनन्तरं ततः कर्मयोग इति भावः। **मुक्ते मोक्ष** इति। करेण तस्याः शरीरे मुक्ते गर्भ[स्त्रावो] मोक्षः॥ ६-७॥

1. नकुलकाकवक-भो०
2. योजयेत्- भो०
3. भोटटीकायां संस्कृतटीकायां च अश्वसिद्धिकरा इतिपाठः।
4. रेवाक्षरं- क.

षड्योगिनीकवचमन्त्रप्रयोगेषु वज्रवाराहीयोगः। अन्यत्र श्रीहेरुकयोगः। **हकार-पञ्चककर्म**हस्तसम्मर्द्दनादिसिद्धि**र्विधीयते** येनासौ **पटलश्**चेति स तथा। **षट्चाली-शतिमः** षट्चत्वारिंशत्तमः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ षट्चत्वारिंशत्तमः पटलः॥ ४६ ॥

*

सर्वबुद्धडाकिनीमन्त्रस्य सर्वकर्मविधिपटलः सप्तचालीशतिमः

अथातः संप्रवक्ष्यामि सर्वडाकिनी तद्धृदि ।
अनेनोच्चारितेनापि सर्वसिद्धिफलोदयम् ॥ १ ॥

इदानीं वज्रवाराह्युपहृदय[1]मन्त्रकर्मप्रसरमाह— **अथात** इत्यादि। **अथे**ति हकार-पञ्चककर्मप्रसरकथनानन्तरम्। **सर्वडाकिनी तद्धृदि सम्प्रवक्ष्यामी**ति सम्बन्धः। सर्व-डाकिनीवज्रवाराहीहृदयमन्त्रः, तस्य हृदि हृदयम्। वज्रवाराह्या उपहृदयमन्त्र इत्यर्थः। ॐ वज्रवैरोचनीये स्वाहेति। अतः सम्प्रवक्ष्यामि। यतः सर्वसिद्धिफलोदयो भवति। अत आह— **अनेने**त्यादि। जप्तेनानेन **सर्वसिद्धिफलोदयं** च संप्रवक्ष्यामि। तस्या उपहृदयस्य कथयिष्यमाणत्वात्। कथं सर्वडाकिनी तद्धृदिमिति चेत्, तत्कर्मप्रसरस्य नियतभावितत्वात्॥ १ ॥

ततो डाकिनीमहाविद्याजप्यमानया सर्ववर्णानां वशमानयति। सततजप्तेन महतीं श्रीमुत्पादयति। नरास्थिमयं कीलकं षडङ्गुलाष्टशताभिमन्त्रितं कृत्वा यस्य द्वारे निखनेत् तस्य गोत्रोच्छादो भवति। क्षेत्रे गोष्ठे महिषहस्त्यश्वस्थाने निखनेत् तस्य विनाशो भवति॥ २ ॥

तत इति फलहेतोः। **डाकिनीमहाविद्या** चासौ **जप्यमाना** चेति सा तथा तया। षडङ्गुलेति निर्विभक्तिकम्। **गोत्रोच्छाद** इति तस्य जातयोऽपि समुच्छिन्ना भवन्तीति भावः॥ २ ॥

अथ राजानं राजमन्त्रिणं वा वशीकर्तुकामो राजद्वारे मृण्मयेन प्रतिकृतिं कृत्वा अष्टाङ्गुलं स्थापयेद् बुधः। प्रथमे दिने त्रीणि मातुलुङ्ग[2]फलानि कुसुममिश्राणि [3]शतसहस्रं जुहुयात् वश्यो भवति। अनेनैव मन्त्रेणा[4]कर्षणस्तम्भन[5]शोषणमोहन-

---

1. मन्त्र - नास्ति भो०
2. पुष्पाणि- क., गृहीतं तु भो०
3. शत- नास्ति क., गृहीतं तु भो०
4. आवाहन- क.
5. द्वेषण- क.

[1]जम्भनवाचापहारीकरणा[2]न्धत्वमूकत्वं विसर्जनं च करोति॥ ३॥

मृण्मयीं प्रतिकृतिमिति। तस्य हृदि भूर्जादिगतं तन्नाम तन्मन्त्रविदर्भितम्। **राज-द्वारे** गोपयेत्। **अष्टाङ्गुलमि**ति। तन्मानमधः खात्वा गोपयेदित्यर्थः। ततोऽन्यत्र **मातुलुङ्गकुसुमानि** त्रीणि होतव्यानि। ततोऽन्यद् द्विरष्टसहस्राणि तान्येव **जुहुयात्**॥ ३॥

अथ पुरुषं स्त्रीकर्तुकामेन मृतनरपुष्पाणि काकाण्डीफलानि बुभुक्षितस्य पादौ चर्मनखादिसंगृह्य समभागानि कारयेत्। शशकरुधिरेण पिंषयेत्। एकादश-गुडिकां छायाशुष्कां कारयेत्। एवं सुदिवसे हस्ते बद्ध्वा द्वादशमे दिवसे यस्य शिरसि चूर्णं ददाति स स्त्री भवति॥ ४॥

अथ पुरुषं श्वानं कर्तुकामः [3]पुष्पलोहो नकुलमस्तके स्थाप्य सप्तरात्र्याष्टसहस्त्रं जपेत्। [4]अष्टमे दिवसे कुङ्कुमेन समं कृत्वा अष्टशताभिमन्त्र्य चूर्णं जुहुयात्। तद् भस्म यस्य शिरसि ददाति स श्वानो भवति। प्रत्यानयने रात्रौ सन्ध्या[यां वा] डाकिनीं महतीं पूजां कृत्वा बलिं दद्यात्ततः स्वाभाविको भवति॥ ५॥

द्रव्यमद्रव्यं कर्तुकामः कनकफलानि अष्टशतं जुहुयाद् द्रव्यमद्रव्यं भवति। हरीतकीं जुहुयात् स्वाभाविको भवति। अथोन्मादं कर्तुकामः महाशकुनिवासं जुहुयात् सप्तमे दिवसे उन्मादं भवति। प्रत्यानयने तुषान् जुहुयात् प्रशमयति। विडालिरोमाणि सोमग्रहे संगृह्य यस्य नाम्ना मन्त्रेण जुहोति स भस्म गृह्य यस्य शिरसि दापयति स विडालो भवति। पुनर्जपेत् स्वाभाविको भवति॥ ६॥

काकस्नायुरज्जुं गृह्याभिमन्त्र्य यस्य गले बध्नाति स काको भवति। एवं काककपोतकमयूरवकोलूकश(श्ये)नकगृध्ररूपधारी भवति। गोवालं रज्जुं कृत्वा अष्टशताभिमन्त्र्य यस्य गले बध्नाति स गो भवति। यस्य यस्य सत्त्वस्य स्नायुरज्जुं गृह्याभिमन्त्र्य गले बध्नाति स तादृशो भवति। यस्य कस्य चतुष्पदः रज्जुं

---

1. नास्ति- क. गृहीतं तु भो०
2. नास्ति- क. गृहीतं तु भो०
3. पुष्यलोहो- भो०
4. सप्तमे- क.

कृत्वााभिमन्त्र्य गले बध्नाति तद्रूपधारी भवति। मुक्ते मोक्षः। धान्यमभिमन्त्र्य [1]महाधनपतिगृहे क्षिपेत्। [2]शेषेणात्मानमभिषिञ्च्य सप्तरात्रौ सर्वधनान्याकर्षयति॥ ७॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने सर्वबुद्धडाकिनीमन्त्रस्य सर्वकर्मविधिपटलः सप्तचालीशतिमः॥ ४७॥

काकाण्डीफलानि महाकालफलानि। बुभुक्षितः काकः। [3]**पुष्पलोहो** लोहकीटः। **कनको** धुत्तूरकः। **महाशकुनिः**। पेचकः। **काकस्नायुः** काकशिरा। **शेषेणे**ति पश्चात्। एतदुक्तं स्यात्। धान्यप्रक्षेपानन्तरं तन्मन्त्राभिमन्त्रितेन जले**नात्माभिषेकात् सप्तरात्र**जापी **धनान्याकर्षति**॥ ४-७॥

सर्वबुद्धडाकिनीमन्त्रकर्माणि विधीयन्ते येनासौ **पटल**श्चेति स तथा। **सप्तचालीशतिमः** सप्तचत्वारिंशत्तमः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ सप्तचत्वारिंशत्तमः पटलः॥ ४७॥

*

---

1. महा- नास्ति क. गृहीतं तु भोटानुसारि।
2. शेषाणाम- क.
3. पुष्यलोहो- भो०

सर्ववीरडाकिन्यालयगोप्यमण्डलविधिपटलोऽष्टचालीशतिमः

अथान्यत्संप्रवक्ष्यामि सर्वडाकिनी यच्छुभम् ।
हृदयं सर्वयोगिन्यः सर्वकामार्थसाधकम् ॥ १ ॥

अथेत्युपहृदयमन्त्रकर्मप्रसरकथनानन्तरम्। **अन्यमन्त्रं सम्प्रवक्ष्यामि** तच्च हृदयम्। अत आह— **सर्वडाकिनी**ति। सर्वडाकिन्यो यत्र तत्तथा **हृदयम्**। **यच्छुभमि**ति। यस्मादर्थे यतः शुभं यतश्च डाकिन्यो जायन्ते यज्जापात्साक्षाद् भवन्ति। अशेषाणां सत्त्वानां सर्वकामार्थसाधकत्वात् **सर्वकामार्थसाधको** योगी यतो भवति॥ १ ॥

यस्य स्मरणमात्रेण त्रैलोक्यमपि [1]कम्पते ।
अनुस्मरणमात्रेण सम्यक्सिद्धिः क्रमेण तु ॥ २ ॥

यस्य स्मरणमात्रेण त्रैलोक्यमपि कम्पते। [2]यस्याश्च स्मरणमात्रेण त्रैलोक्यमपि कम्पते यतश्च **सम्यक्सिद्धिः** संबोधिरिति। **क्रमेण** भवति। तद्धृदयं मन्त्रं संप्रवक्ष्यामीति योज्यम्॥ २ ॥

हास्वा ट्फ [3]हूँ हूँ येनीर्णवज्रव येनीकिडाद्धबुर्वस ॐ॥ ३ ॥

तं हृदयमन्त्रमाह— **हास्वे**त्यादि। गोपितो मन्त्रः। ॐ सर्वबुद्धडाकिनीये वज्रवर्णनीये हूँ हूँ फट् स्वाहेति पाठनीयम्॥ ३ ॥

अयं मन्त्रः पठितसिद्धः सर्वकर्मकराः शुभाः ।
डाकिनीनां योगिनीनां तु खण्डरोहा लामयस्तथा ॥ ४ ॥

अयं मन्त्रः पठितसिद्ध इति। लिखनादिरहितः। ततश्च सर्वकर्माणि प्रागुक्तानि कर्तुं शीलं येषां ते **सर्वकर्मकरा** योगिनः। **शुभा** विशुद्धाः। **सर्वकर्माकरः शुभ** इति **पाठे** मन्त्रविशेषणम्। कस्यायं मन्त्र इत्याह— **डाकिनीनामि**ति डाकिन्याः। **योगि-**

---

1. कम्पयति- क. भो०
2. 'यस्याश्च-----कम्पते' नास्ति- भो०
3. हूँ हुँ- भो०

नीनामिति रूपिण्या:। **तु:** समुच्चये। **खण्डरोहा लामयस्तथे**ति। खण्डरोहा लामयो-रपीति भाव:॥ ४॥

योगिनीनां तु सर्वेषामेवम्मन्त्रः प्रकीर्तितः ।
पाताले यदि वा स्वर्गे मर्त्ये वापि तथा पुनः ॥ ५॥

यत्किञ्चित् वर्तते कर्म [सर्वसिद्धिकरः शुभः] ।
तत्सर्वं साधयेन्मन्त्रः सर्वसिद्धिप्रसाधकः ॥ ६॥

नातः परतरं किञ्चित् त्रिषु लोकेषु विद्यते ।
अनुत्तरमिदं यस्माद् [1]दिव्योपायप्रदेशकम् ॥ ७॥

तथा **सर्वेषामिति**। सर्वासामेव वज्रवाराह्यादीनाम्। **एवम्मन्त्र** ईदृशो मन्त्र:। सर्वकर्मकरत्वमुद्दिष्टं निर्दिशति— **पातालेत्**यादि। **वर्तत** इति। लोकत्रये ज्ञायते। **सर्व-सिद्धिप्रसाधक:**। **नात: परं** किमपि साधनमस्तीत्यर्थ:। कुतो मन्त्रोऽयं सर्वसाधक इत्याह— **अनुत्तरमि**त्यादि। **इदमिति** हृदयम्। दिव्यानुपायान् प्रदिशतीति **दिव्योपाय-प्रदेशकम्**॥ ५-७॥

सर्वडाकिन्यालयं वक्ष्ये समासान्न तु विस्तरात् ।
लिखित्वा पर्वतं दिव्यं नानापुष्पफलोदयम् ॥ ८॥

तस्योपरि भावयेन्नित्यं डाकिन्यो लामयस्तथा ।
योगिन्यः खण्डरोहा वै वीराणां वीरमेव च ॥ ९॥

उद्दिष्टं योगिनीन्यासं निर्दिशन्नाह— **सर्वे**त्यादि। भावयित्वेति वक्तव्ये **लिखित्वे**ति यदुक्तं तल्लिखनेऽप्येवमपि साधनाय। **पर्वतमिति** सुमेरुम्। **तस्योपरि भावयेन्नित्य-मिति**। प्रबन्धनित्यं कूटागारमित्यर्थ:। **तथे**ति कूटागारोपरि डाकिन्यादयो भाव्या साध-नक्रमेण। अत आह— **डाकिन्य** इत्यादि। **वीराणामिति**। वीरै: खण्डकपाल्यादिभि: सह चतुर्विंशतियोगिन्य: प्रचण्डादयो भाव्या इति ज्ञेयम्। डाकिन्य इत्यादिषु बहुत्वात् काकास्यादयोऽपि। **वीरमेव** च श्रीहेरुकमेवापि भावयेदिति योज्यम्॥ ८-९॥

1. सर्वकर्मसाधक:- भो०

हा हा हे हेति चतुर्विंशतिवीराणां डाकिनीजालसंवरम्।
वज्रसत्त्वं वैरोचनं पद्मनर्तेश्वरं तथा ॥ १० ॥

श्रीवज्रहेरुकं चैव आकाशगर्भं हयग्रीवमेव च ।
रत्नवज्रं महाबलं विरूपाक्षं भैरवं तथा ॥ ११ ॥

वज्रभद्रं सुभद्रं वै वज्रहूँकारमेव च ।
महावीरं वज्रजटिलं तु अङ्कुरिं वज्रदेहकम् ॥ १२ ॥

वज्रप्रभममिताभं सुरावैरिणं विकटदंष्ट्रिणमेव च ।
कङ्कालं महाकङ्कालं खण्डकपालिनमादि तु ॥ १३ ॥

चतुर्विंशतिवीराणां सर्वं व्याप्तमखिलं जगत् ।
वीराणां डाकिनीश्चैव योगिन्यः प्रचण्डादयस्तथा ॥ १४ ॥

चक्रस्थास्तु द्रष्टव्याः सर्वकार्येषु च साधकः ।
चक्रात्मं भावयेन्नित्यं सिद्धिकामः सुसमाहितः ॥ १५ ॥

कीदृशाः कियन्तस्ते वीरा इत्याह— **हा हा हे हे** इत्यादि। हासोपलक्षितांश्चतु**र्विंशतिवीराणां** वीरानित्यर्थः। **डाकिनीजालसंवरं** विभावयेदिति पूर्वोद्देशनिर्देशः। वीराणां व्यतिक्रमेण प्रतिनिर्देशमाह— **वज्रसत्त्वमि**त्यादि। भावयेदितिसम्बन्धे सर्वत्र द्वितीया। **खण्डकपालिना(नमादि) त्वि**ति। आदीत्यादौ। आदौ स्थितेन खण्डकपालिना सह महाकङ्कालादीन् भावयेदित्यर्थः। संख्याद्वारेणोपसंहारमाह— **चतुर्विंशतिवीराणामि**ति। चतुर्विंशत्या वीरैः [1]सर्वमाण्डलं शरीरं च। अत आह— **जगदि**ति। अस्य शरीरवाचकत्वात्। **खण्डकपाली महाकङ्कालः कङ्कालो विकटदंष्ट्री सुरावैरी अमिताभो वज्रप्रभो वज्रदेहः। अङ्कुरिको वज्रजटिलः महावीरो वज्रहूँकारः सुभद्रो वज्रभद्रो भैरवो विरूपाक्षः। महाबलो रत्नवज्रो हयग्रीव आकाशगर्भः श्रीहेरुकः पद्मनर्तेश्वरो वैरोचनो वज्रसत्त्वः।** इत्येभिरष्टभिः खण्डकपालादिभिर्वज्रदेहान्तैः कृष्णश्चित्तचक्रं कृष्णम्। अङ्कुरादिभिर्विरूपाक्षान्तै रक्तै रक्तं वाक्चक्रम्। महाबलादिभिर्वज्रसत्त्वान्तैः श्वेतैः श्वेतं कायचक्रम्। एतेषां द्विभुजत्वं

1. 'सर्व' नास्ति- भो०

चतुर्भुजत्वं वा **आचार्यमतेन**। शिर: शिखा दक्षिणकर्णशिर:पृष्ठवामकर्णभ्रूमध्यनेत्र-द्वयबाहुमूलद्वयकक्षद्वयस्तनयुगलनाभिनासिकामुखकण्ठहृदयमेढ्रलिङ्गगुदोरुजङ्घाम-ङ्गुलिपादपृष्ठतदङ्गुष्ठजानुद्वयेषु खण्डकपालादय: प्रचण्डायुक्ता भाव्या:। इत्थमेभि: शरीरव्याप्ति:।

पिण्डार्थमाह— **वीराणां** वीरा: **डाकिनी** डाकिन्य:। ता **एव योगिन्य:**। ताश्च **प्रचण्डादय:**। **चक्रस्थास्तु द्रष्टव्या** इति। चक्रव्याप्तिरनेन सूचिता। सर्वकार्येषु शान्त्यादिषु केनेत्याह— **साधक** इति। यदि साधको भवति तदानेनेत्याहतम्। एतदु-पसंहरन्नाह— **चक्रात्मं भावयेन्नित्यमि**ति। वीरवीरिणीजातं चक्रात्मकं भावये-दित्यर्थ:॥ १०-१५॥

पूर्वोक्तेन विधानेन जपेद् डाकिनीजालसंवरम् ।
महाचक्रं सर्वसिद्धिस्थानं सर्वसिद्ध्यालयं तथा ॥ १६॥

पूजोपसंहारमाह— **पूर्वोक्तेने**त्यादि। बाह्यगुह्यमनोमयतत्स्वरूपाभि: पूजाभिरित्यर्थ:। पूज्यमाह— **डाकिनीजालसंवर**मिति। **महाचक्रं महासिद्ध्यालयं तथे**ति पर्याय-कथा॥ १६॥

सुभाषितं बुद्धकोटीनां वीराणां कोटिमेव च ।
एकैकस्य तु योगिन्य: कोटिसंख्या तु परिवृता: ॥ १७॥

अतीतादीनां तथागतानामित्थं मतमाह— **सुभाषितमि**त्यादि । **बुद्धकोटीनां सुभाषितं** तन्त्रमिदम्। कर्तरि षष्ठी। **वीराणां कोटिमेव चे**ति। कोट्यैव योगिनीनां बहुत्वमाह— **एकैकस्य तु योगिन्य: कोटिसंख्या तु परिवृता** इति। एकैका योगिन्य: कोटिसंख्याभिर्योगिनीभि: परिवृता:॥ १७॥

योगिनीनां डाकिनीश्चैव खण्डरोहा च रूपिणी ।
लामादयस्तथा [चापि] सर्वसिद्धिकरा: शुभा: ॥ १८॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने सर्ववीरडाकिन्यालयगोप्यमण्डल-विधिपटल: अष्टचालीशतिम:॥ ४८॥

ता डाकिन्यादयो द्वादश प्रचण्डादयश्चतुर्विंशति वज्रवाराही च। ता एवाह—**योगिनी**त्यादि । **तथा**शब्देन सर्वासामेव ग्रहणम्। एताः कुतः पूज्या इत्याह—**सर्वसिद्धिकराः शुभाः** इति॥ १८॥

सर्वडाकिन्यालयो वज्रवाराहीहृदयमन्त्रः। **गोप्यञ्च तन्मण्डलं** चेति द्वे **विधीयेते** येनासौ **पटल**श्चेति स तथा। **अष्टचालीशतिमो**ऽष्टचत्वारिंशत्तमः ।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतावष्टचत्वारिंशत्तमः पटलः॥ ४८॥

*

सप्तजन्मसाध्यरूपपरिवर्तनविधिपटल ऊनपञ्चाशतिमः

अथान्यतमं वक्ष्ये पशुकर्म यथाविधि ।
येन विज्ञातमात्रेणाशुसिद्धिः प्रवर्तते ॥ १ ॥

शालिपिष्टकमयं मन्त्री पशुं कृत्वा यथाक्रमम् ।
खरमानुषकूर्मोष्ट्रशृगालहयादिभिः ॥ २ ॥

तत्र विश्ववराहश्च एते वै पशवः स्मृताः ।
एभ्यः कर्म प्रवक्ष्यामि लक्षणं यथा भवेत् ॥ ३ ॥

इदानीं श्रीहेरुकीकरणं स्पष्टयन्नाह— **अथे**त्यादि। **अथे**ति वज्रवाराहीहृदय-मन्त्रादिकथनानन्तरमाह— **पशुकर्मे**ति। पशुभिः कर्म पशुकर्म सप्तजन्मोपलम्भ-लक्षणम्। **शालिपिष्टकमयमि**ति। शालिर्हैमन्तजो व्रीहिविशेषः। तत्तण्डुलपिष्टकं विकारो यस्य स तथा **पशुः**।

पशुमाह— **खरे**त्यादि। **तत्रे**ति सप्तजन्म। **विश्ववराहो** नानावर्णो मृगविशेषः। स संस्कार्यः खरादिभिः सह। एषां मध्ये कश्चिदेक इत्यर्थः। एभिश्च कर्म प्रागेव विशदीकृतम्। खरादिर्मनुष्योष्ट्रकजन्मादिर्यावत् सप्तजन्म लक्ष्यते। तच्चैभिरेव। **एभ्य** इत्यादि। **एभ्यः** सप्तमनुष्यजन्मभ्यः **कर्म** तल्ल**क्षणं** च **यथा भवति** तद् वक्ष्यामीति योज्यम्॥ १–३॥

एकजन्मद्विजन्मश्च त्रिचतुःपञ्चमेव च ।
षट्सप्तजन्म[त]श्चापि पशवस्ते न संशयः ॥ ४ ॥

यस्य [1]सुस्वनी वाणी अनिमिषं चापि वीक्ष्यते ।
सत्यवाक् प्रियदर्शी च सद्धर्मरतः सदा भवेत् ॥ ५ ॥

विन्दते ह्यात्मनो जन्म सुगन्धिततनुः सदा ।
एभिस्तु लक्षणैर्युक्तं सप्तजन्मभवोद्भवः ॥ ६ ॥

---

1. सुगन्धिमुखं- भो०

तेन प्राशितमात्रेण दिव्यरूपधरो भवेत् ।
आघ्रातं स्पृष्टमात्रं वा तिलकं यः करिष्यति ॥ ७॥

सिद्धो भवत्यसौ सद्यः स्वेच्छा[1]रूपधरो भवेत् ।
रोचना हृदये त[2][स्य गृहीत्वा तु बुधेन [वाम्] ॥ ८॥

एतदेव स्पष्टयन्नाह— **एकजन्मद्विजन्मश्च त्रिचतुःपञ्चमेव च। षट् सप्त जन्मतश्चापि पशवस्ते न संशयः** इति आर्षत्वात् पशुसाधर्म्यात् पशवः। लक्षणमाह— **सुगन्धी**त्यादि। कर्माह— **तेने**त्यादि। **आघ्राते स्पृष्टमात्रे वा दिव्यरूपधरो भवेदि**त्यर्थः। **तिलकं यः करिष्यति सिद्धो भवत्यसौ सद्यः। स्वेच्छारूपं** धरत्यसौ। **स्वेच्छारूपधरो ह्यसाविति पाठान्तरम्**। केन तिलकः कार्य इत्याह— **रोचने**त्यादि। **गृहीत्वेति वामि**ति विभक्तिविपरिणामात्॥ ४-८ ॥

जप्त्वा हृदयमन्त्रेण तिलकं तस्य कारयेत् ।
यस्य यस्य च सत्त्वस्य धर्तुकामः स्वरूपकम् ॥ ९॥

तत्तद्रूपो तिलकेन भवति नात्र संशयः ।
वृक्षपर्णीरसं गृह्य रोचनया बुधेन च ॥ १०॥

ललाटे तिलकं कृत्वा तद्रूपः स्यान्न संशयः ।
पशोरेव हि रोमाणां करमूर्ध्नि च बन्धयेत् ॥ ११॥

पञ्चाङ्गं वा तरोर्मिश्र्य तस्य रोम्णा युतं तथा ।
करमूर्ध्नि बन्धयेच्चेत् तद्रूपः स्यान्न संशयः ॥ १२॥

योगाभ्यासितजापी च नासमर्थः नरोऽथ हि ।
कष्टक्लेशप्रसादादिसिद्धिमार्गं निरोधयेत् ॥ १३॥

हृदयमन्त्रेणेति। श्रीहेरुकवज्रवाराह्याः कीदृशः स्वेच्छारूपत्वमित्याह— **यस्ये**त्यादि। **करमूर्ध्नि** बाहुमूले। करशब्देन बाहुसमेतः करः। **तत्पञ्चाङ्गे**ति। यस्य पशो-

---

1. रूपो भवत्यसौ- ख.
2. इतः परं मातृकायां पत्रमेकं नोपलभ्यते, गृहीतस्तु पाठो भोटानुवादानुसारेण।

वृक्षस्य च रूपमिच्छति तस्य वैरोचनादीनि पञ्चाङ्गानि पत्रपुष्पादीनि च **योगाभ्यासितजापी** भावीजापीत्यर्थः। [1]**नासमर्थः** समर्थ एव। मुक्ते मोक्ष इति। प्रयोजनमिहापि पश्वादिरूपेणैव कुतो न स्थीयत इत्याह— **कष्टे**त्यादि। तिर्यग्गतिरित्यर्थः॥ ९-१३॥

हस्त्यश्वखरकूर्मोष्ट्रवराहजम्बूकेन वा।
काकोलूकादिगृध्रश्च क्रौञ्चः श्येनश्च सारसः[2] **॥ १४॥**

अभिरूपो विरूपश्च दिव्यरूपो भवेद्धि सः।
कामरूपो महावीरयोगी स्यान्नात्र संशयः॥ १५॥

नातः परतरा सिद्धिस्त्रिषु लोकेषु विद्यते॥ १६॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने सप्तजन्मसाध्यरूपपरिवर्तनविधिपटल ऊनपञ्चाशतिमः ४९॥

केषां रूपधारीत्याह— **हस्त्यश्वे**त्यादि। षष्ट्यर्थे तृतीया। एषां रूपधारीत्यर्थः, **अभिरूपादि** च धारीत्यर्थः। [तेषामपि निर्देशः।] एतत्क्रियायां हस्त्यादिभिर्बलिभोगश्च कार्यः। ततोऽभिरूपत्वादि लभते। इहाप्युभयहृदयव्यापारः। **नातः परमि**ति। सप्तजन्मनः सिद्धं प्रकृतिसिद्धं सामर्थ्यम्॥ १४-१६॥

सप्तजन्मना साध्यं रूपपरिवर्तनं पश्वादिरूपत्वं **विधीयते** येनासौ **पटल**श्चेति स तथा। **ऊनपञ्चाशतिम** ऊनपञ्चाशत्तमः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतावूनपञ्चाशत्तमः पटलः॥ ४९॥

*

1. ना----एव- नास्ति भो०
2. सरलः- भो०

वश्यहोमपीठादिभूमिनिर्देशविधिपटलः पञ्चाशतिमः

अथ होमविधिं वक्ष्ये ध्रुवं वश्यस्य जायते ।
येन सम्यग्विधानेनाशुसिद्धिः प्रवर्तते ॥ १ ॥

अथेति। सप्तजन्मसाध्यरूपपरिवर्तनकथनानन्तरम्। हा हा हे हे इत्याद्यष्टविधस्य हासमन्त्रस्य **होमविधिं वक्ष्ये**। **येन** गोमांसहोमेन **विधानस्य वश्यस्य** कर्मण **आशुसिद्धिः प्रवर्तते** [1]तमित्यर्थः॥ १ ॥

[2]गोमांसं सुरयाऽऽलोड्य वामकरेण होमयेत् ।
बुद्धोऽपि वशमायाति किं पुनः क्षुद्रमानुषाः ॥ २ ॥

निष्ठीवनं दन्तकाष्ठं स्वदेहोद्वर्तनं तथा ।
सनामसुरया होमात् त्रैलोक्यं वशमानयेत् ॥ ३ ॥

रजोरक्तं भुक्तोद्गीर्णं [3]श्वकेशसंयुतम् ।
एतेन कृतहोमेन सद्यमाकर्षणं भवेत् ॥ ४ ॥

[4]श्वकायोद्गीर्णकेशेन यदि वा होमयेत् सुधीः ।
निम्बवृक्षप्रयोगे तु सद्यो विद्वेषमाप्नुयात् ॥ ५ ॥

समाहितो धुतूराग्नौ यन्नाम्ना कटुतैलकम् ।
होमयेत् काकपक्षैस्तु सद्योच्चाटनमारणम् ॥ ६ ॥

होममाह— **गवित्यादि**। **निष्ठीवनं** गलनिर्गतः श्लेष्मा। शुनः केशाः **श्वकेशाः**। **सद्यमाकर्षणमि**ति। सीदति गच्छत्यागच्छतीति सत् [5]यँकारबीजम्। तदेवाकर्षयति येन **तदाकर्षणम्**। यँकारजवायुमण्डलस्थसाध्यमागच्छन्तं पश्यन् रजस्वलारक्तादि-

---

1. तम् नास्ति- भो०
2. द्र०- संपुटतन्त्र ७.२
3. नरकेश- भो०, गृहीतस्तु टीकानुरोधेन।
4. स्वकायो- भो०, गृहीतस्तु टीकानुरोधेन।
5. यकार- क., गृहीतस्तु भोटानुसारी

भिर्होमं कुर्यादिति संक्षेपः। शुनः कायः **श्वकायः**। सद्यातीति **सद्यो** जीवन् तस्यो-**च्चाटनमारणम्**॥ २-६॥

जाग्रतसुप्तकृतोत्तिष्ठभुञ्जानो मिथुनोऽपि वा ।
सदा काले जपेन्मन्त्री तस्य [1]मारं न जायते ॥ ७॥

सम्यग्जम्बूकमांसेन जुहुयादाहुतीशतम् ।
तस्य मासत्रयेणैव कुलदारिद्र्यनाशनम् ॥ ८॥

[यदि] कश्चित् समदनमहामांसेन होमयेत् ।
अष्टोत्तरशतावृत्त्या साधकः प्रहरत्रयम् ॥ ९॥

अशेषभूमिचर्यावान् षण्मासेन वशीकृता ।
तुष्टा च डाकिनी तस्मै राज्यं दद्यान्न संशयः ॥ १०॥

ध्यायेच्च देवताः सर्वा होमयेत् प्रहरद्वयम् ।
तेनैव च स्वकायेन खेचरत्वमवाप्नुयात् ॥ ११॥

गोमायुमद्यमांसेन होतव्योऽध्यात्मबाह्यतः ।
भवेदाशु करे तस्य सर्वसिद्धिप्रवर्तकम् ॥ १२॥

सततजापिनः फलमाह— **जाग्रतो** जागरितः। **सुप्ते**ति सुप्तः शयनगतः। **कृते**ति कार्यं कुर्वन्। **उत्तिष्ठे**ति सुप्तोपविश्य चोत्थितः। मैथुनमस्यास्तीति **मिथुनः**। **मारमि**ति स्कन्धादयो माराः सन्त्यस्येति मारं चित्तम्। "चित्तमेव महामारम्" इति **वचनात्**। **महाकालो जपेन्मन्त्री सम्यग्वेला न विद्यते** इति **पाठान्तरम्**। तत्र जपाय सम्यक् कालनिरीक्षणं न कार्यमिति भावः। हासमन्त्रश्च— ॐ हा हा हे हे हो हो हं हं फट् स्वाहेति। ॐ किलि किलि सिलि सिलि चिलि चिलि धिलि धिलि फट् स्वाहेति च। **आहुतीशतमि**ति। अर्कत्वगादिषु(भिः) नित्यं शतमाहुतीर्वारत्रयं दद्यात्। **ध्याये-च्च देवताः सर्वा होमयेत् प्रहरद्वयमि**ति। तदा देवताध्यानं सर्वगोमांसमद्यसंयुतम्। **गोमायुमद्यमांसेने**ति। शृगालस्य शीर्णं मांसम्। **होतव्ये**ति देवता। **आध्यात्मबाह्यत** इति। उपयोगात्। कुण्डाग्नौ होमार्थी। **सर्वसिद्धिप्रवर्तकमि**ति॥ ७-१२॥

---

1. विघ्नं- भो०, गृहीतस्तु टीकानुरोधेन।

रात्रौ मन्त्रजपं कुर्यात् [1]राष्ट्रकानि निपातयेत् ।
एवं प्रतिदिनं कृत्वा स्वयं राजा भविष्यति ॥ १३ ॥

नातः परतरं किञ्चित् त्रिषु लोकेषु विद्यते ।
नानारूपधरो योगी म्रियते स्वेच्छया तथा ॥ १४ ॥

बिल्वस्य च पलाशस्य तथैवो][2]दुम्बरस्य च ।
लक्षं होमयत्याशु महाधनपतिर्भवति ॥ १५ ॥

गोमांसं सुरयालोड्य होतव्यं राजकांक्षिणा ।
योगेश्वरीं समासाद्य को हि नाम दरिद्रता ॥ १६ ॥

मन्त्रजपम्। जपो ध्यानं मन्त्रकृतं मन्त्रसेवा नेह। **रात्रौ** एकत इत्याह— **राष्ट्रकानि निपातयेत्**। युक्तिमाह— **योगीश्वरीं समासाद्य को हि नाम द्ररिद्रते**ति। योगीश्वर्यो देवता ईशा यत्र स तथा हासमन्त्रः। दरिद्र एव दरिद्रता॥ १३-१६ ॥

यथासुखेन सिद्ध्यन्ति गोमायुहोमकारणात् ।
गोमायुहोमयत्याशु धनदेन समो भवति ॥ १७ ॥

अव्रताचारशौचोऽपि [3]आविष्टां सिद्धिमाप्नुयात् ।
अधिकायुकूष्माण्डं मुद्गमाषचणकम् ॥ १८ ॥

मधुच्छर्दिराजिकागृहतमालपत्रैर्मुखबन्धनम् ।
स्वेच्छाकारी भवेद्योगी यत्र तत्र व्यवस्थितः ॥ १९ ॥

यथासुखेनेति नियमाभावात्। **अव्रताचारे**त्यादिना यथासुखत्वमेव निर्दिशति। **आविष्टां** देवतानुज्ञाताम्। स्वप्नेन निमित्तदर्शनात्। **अधिकायु**र्दूर्वा**मधुच्छर्दि**र्मधूत्सिष्टम्। **गृहतमालपत्रम**वलम्बो धूमः। तत्सर्वं यस्य **गृहै**कदेशे। जप्तमन्त्रं गोपयेत् तस्य यथोक्तं भवति॥ १७-१९ ॥

---

1. राष्ट्रमाकर्षयेदपि- भो०
2. इतः परं मातृकापाठः पुनः प्रारभ्यते।
3. अधिष्ठानसिद्धिं- क०, भो०, गृहीतपाठस्तु टीकानुरोधात्।

[1]अथापरं प्रवक्ष्यामि भूमिपीठादियोगिनी ।
श्रीहेरुकस्याङ्गाङ्गं स्थिरचलात्मकम् ॥ २० ॥

पीठं [प्र]मुदिताभूमौ पपीठं विमला तथा ।
क्षेत्रं प्रभाकरी ज्ञेया अर्चिष्मत्युपक्षेत्रकम् ॥ २१ ॥

छन्दोहमभिमुखं(खी) चैव उपच्छन्दोहं सुदुर्जया।
दूरङ्गमेति मेलायां अचलस्योपमेलकम् ॥ २२ ॥

श्मशानं साधुमतिश्चैव धर्ममेघोपश्मशानकम् ।
श्रीहेरुकमभिश्चार्य एषा अध्यात्मभूमयः ॥ २३ ॥

अथेति। सर्वप्रयोगकथनानन्तरम्। **अपरं प्रवक्ष्यामि**। किं तदित्याह— **भूमिपीठादियोगिनी**ति। पीठमादिर्येषां तानि पीठादीन्युपपीठादीनि स्थानानि। भूमय एव पीठादीनि। द्वितीयालोपात्। **योगिनी**ति योगिनीनाम्। **अङ्गाङ्ग**मिति। अङ्गं करादि तस्याङ्गं पर्वादि। शिरो रूपस्कन्धः। बला वेदनादयः। भूमिपीठादिस्कन्धाद्यात्मकं **श्रीहेरुकस्याङ्गाङ्गम्**। सर्वाङ्गमुपायभूतं प्रवक्ष्यामीति सम्बन्धः। उपपीठमेव पपीठमुकारलोपात्। **श्रीहेरुकमवधार्य** निश्चित्य। भूमय एता तदङ्गे न्यसनीया इत्याह— **एषा अध्यात्मभूमय** इति। एता अध्यात्मभूमय इत्यर्थः॥ २०-२३ ॥

दशपारमिता भूमौ [2]म्लेच्छा भाषन्तु योगिनी ।
स्वर्गे मर्त्त्येषु पाताले वीराङ्गस्थिरचलात्मकः ॥ २४ ॥

पुल्लीरादिषु यथोद्दिष्टं बाह्याध्यात्मे संस्थितम् ।
श्रीहेरुक[3]महायोगं सर्वकामेश्वरं प्रभुम् ॥ २५ ॥

सर्वतः पाणिपादान्तं सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।
सर्वत्र श्रूयते लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥ २६ ॥

---

1. इतः पूर्वं ''ॐ वज्रवैरोचनीये हुँ हूँ फट् स्वाहा''- इत्यधिकम् भो० (पे० सं०)
2. छोम्मा- भो०
3. महाराजं- भो०

ततस्तु साधयेत् सिद्धिं ध्यानयुक्तेन चेतसा ।
साधकानां हितार्थाय गुह्यतत्त्वमुदाहृतम् ॥ २७॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने वश्यहोमपीठादिभूमिनिर्देश-विधिपटलः पञ्चाशतिमः ॥ ५०॥

दशपारमिता भूमाविति। प्रमुदितादयो दशभूमयो दानशीलक्षान्तिवीर्यध्यानप्रज्ञा-प्रणिधिबलोपायज्ञानानि दशपारमिताः। [1]**म्लेच्छा भाषन्त्विति**। योगिनीनां [2]म्लेच्छ-भाषया। **स्वर्गे**त्यादिना चक्रत्रयम्। **श्रीहेरुकमहायोगम**वधार्य सिद्धिं साधयेदिति योज्यम्। **सर्वत** इत्यादिविशेषणमस्यैवानेन सिंहविक्रीडितामुद्रेति **केचित्**। तत्र **पाणि-**र्वज्रं **पादः** पायुः॥ २४-२७॥

वश्यहोमः पीठादिभूमयश्च निर्दिश्यन्ते येन ग्रन्थेन स **वश्यहोमपीठादिभूमिनिर्देशः**। स एव विविधेन प्रकारेणार्थतत्त्वं विधीयतेऽनेनेति **विधिः**। तदात्मकः **पटलः**। **पञ्चाशतिमः** पञ्चाशत्तमः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ पञ्चाशत्तमः पटलः॥ ५०॥

*

1. छोम्मा- भो०
2. छोम्मा- भो०

[भावनापिण्डार्थादि] एकपञ्चाशतिमः पटलः

अथातः संप्रवक्ष्यामि आम्नायं सुदुर्लभम् ।
गोपनीयं मया तन्त्रे वीरसङ्केतभाषितः ॥ १ ॥

इदानीं भावनापिण्डार्थादिपटलमाह— **अथे**त्यादि। अथेति देशनोपसंहारे। **अत** इति। यतो देवतानिष्पत्तिं विना किञ्चिन्न सिद्ध्यति, **अत आम्नायं प्रवक्ष्यामी**ति सम्बन्धः। आम्नाय आप्तोपदेशनापरम्परा। **सुदुर्लभमि**ति शोभनाः परिज्ञातारो दुर्लभा यत्र स तथा आम्नायः। **गोपनीयं** विहेठकावद्यनिरासार्थम्। **मया** मयैव। कुत इत्याह— **तन्त्र** इति। तन्त्र्यन्ते संस्क्रियन्ते येन तत्तथा, श्रीचक्रसंवराख्यम्। सङ्केतेन भाषितः सङ्केतभाषितः। वीरैस्तथागतैः सङ्केतभाषितः। अपूर्व एवात्र सङ्केत इति भावः। अतश्च शब्दापशब्दौ नाशङ्कनीयौ, न हि शब्दश्च केवलोऽर्थप्रतिपादकः। किं तर्हि सङ्केतसहायः। स च वीरैरपि कृत इति **वीरसङ्केतभाषितमि**ति सूक्तः॥ १ ॥

निवसनं पञ्चमुद्रादि प्रज्ञाङ्गं कीलपञ्जरम् ।
आलिकालीति [स]मुच्चार्य हेत्वादिशून्यपूर्वकम् ॥ २ ॥

ततः सङ्केतेनापि शब्देन किमित्याकूतम्? **निवसनं** व्याघ्रचर्म गजचर्म च। **पञ्चमुद्रादी**ति। कण्ठिकाचूडकेयूरकुण्डलब्रह्मसूत्राणीति पञ्चमुद्रा आदिभूता यस्य तत्कण्ठालङ्कृतशिरोमालामेखलादि। [**प्रज्ञाङ्गं**] वज्रवज्रघण्टाभ्यामालिङ्गनम्। **कीले**ति। कीलनम्। **पञ्जरं** वज्रमयम्। अस्योपलक्षणत्वाद् वज्रप्राकारादि॥ २ ॥

प्रवृत्तिनादमादीनि यावत्संहारयोगतः ।
अमृताप्यायननिर्वृतिं तु [1]हस्ताभिषेचनम् ॥ ३ ॥

महाकवचेन संरक्ष्यो सर्वमन्त्रेणार्च्चनम् ।
एतच्चतुर्दशं तत्त्वं संक्षेपेण तु भाषितम् ॥ ४ ॥

प्रवृत्तिनादमादीनीति। प्रवृत्ती रूपस्कन्धादिविशुद्धिः। नादो बिन्दुय(र्यः) पूर्व-रेखाकारः। हूँकारमूर्ध्नि मकारोऽ[2]जहितोऽत्र ग्राह्यः। स च बिन्दुरूप एव बोद्धव्यः।

---

1. हस्तपूजाभि०- टी०
2. अल्पप्राण इत्यर्थः।

नादश्च मकारश्च नादमौ। तावादी येषामर्द्धचन्द्रादीनां तानि नादमादीनि। प्रवृत्तिश्च नादमादीनि च प्रवृत्तिनादमादीनि। **यावत्संहारयोगत** इति। स्फरणपूर्वकः संहारः, अस्य तन्निष्ठत्वात्। **अमृताप्यायननिर्वृतिः**। पञ्चामृताप्यायननिष्पत्तिः। निवसनं पञ्च-मुद्राादिकीलं पञ्जरम् आलिकाल्युच्चारणहेत्वादिशून्यताप्रवृत्तिर्नादो बिन्दुः संहार-योगोऽमृताप्यायननिर्वृतिः। **हस्तपूजाऽभिषेचनं महाकवचरक्षापूर्वकं मन्त्रार्चनमिति** चतुर्दशतत्त्वानि प्राधान्येनोक्तानि। अत आह— **एतच्चतुर्दशं तत्त्वमिति**। चत्वारो दश चावयवा यस्य स तत्तथा। तन्त्राभिधेयं संक्षिप्तम्। अत आह— **संक्षेपेणे**ति॥ ३-४॥

यः समाचरति नरश्रेष्ठः सर्वपापविशुद्धात्मा ।
ताथागतीं च लभते भूमिं जन्मनि जन्मनि ॥ ५॥

तथागतकुलोत्पद्य राजा भवति धार्मिकः ।
यथापूर्वादि [1]पापस्य हीनो [हि] सर्वलक्षणः ॥ ६ ॥

एतेन **यः समाचरति** व्यवहरति। एतदेव शिक्षत इति यावत्। स **सर्वपाप-विशुद्धात्मा** भवतीति यत्तदोर्नित्यमभिसम्बन्धात्। सर्वाणि पञ्चानन्तर्यादीनि पापानि विशुद्धानि यस्य स तथा आत्मा चित्तं यस्य निष्ठान्तपरनिपातात् स तथा योगी।

न कर्माणि प्रणश्यन्ति कल्पकोटिशतैरपि ।
सामग्रीं प्राप्य कालं नो(च) फलन्ति खलु देहिनाम् ॥ इति।

कर्मणः फलं विना विनाशाभाव उपायेनापि विशुद्धिरेव। न तद्विनाशे कश्चि-दुपायः। ''नाफलित्वा विनश्यन्ति'' इति **वचनात्**। खलुशब्दस्य निश्चितार्थत्वात्, फलमेव हि तद्विनाशोपायः। किं च कर्मस्वभावमेवोपायान्तरमपि तेन पूर्वस्य कर्मणो विनाशलक्षणे फले जनिते फलान्तरजननशक्त्यभावादुच्छेद एव स्यात्। अथेदृशो यद्युपायविशेषस्तद्विनाशं जनयन् परमानास्रवमहासुखस्वभावं समकालं जनयति यथा प्रदीपस्तिमिरमपनयन् प्रकाशं जनयतीति चेत्, न हि स तिमिरमपहरति किंतर्हि प्रकाशत एव केवलम्। तत्र प्रकाशमाने स्वयं तिमिरमपगच्छति। उपाय-मा[हा]त्म्यमपि कुतो नाङ्गीकार्यं येन तद्विफलमपि स्यात्। अनुपायज्ञं प्रति न कर्माणीत्यादि न विरुध्यते। **ताथागतीं च लभते भूमिमि**ति। सर्वास्रवक्षयरूपां

1. संचितपापस्य- भो०

ताथागतीं ज्ञानभूमिं लभते। भावनाप्रकर्षपर्यन्तगमनाभावाद्यदीदं न स्यात्तदा किमित्याह— **जन्मनि जन्मनि तथागतकुलोत्पद्य** इति। तथागतः कुले यस्य स तथा जनकस्तस्माज्जायते। इतश्च पञ्चमीलोपः। जन्मनि जन्मनि देवजन्मनि मनुष्यजन्मनि। **राजा भवति धार्मिक** इति सुमतिकोशलादिवत्। यद्यत्यन्तपापिष्ठोऽपि कथमपि चतुर्दशतत्त्वाभ्यासी स्यात्तदा किं स्यादित्याह— **यथे**त्यादि। यथावत्कायवाङ्मनोव्यापारात् कृतमुपचितं पूर्वमध्यान्तप्रतिबद्धं पापकर्म यस्य स यथापूर्वादिपापः, स **यथापूर्वादिपापस्ये**ति प्रथमार्थे षष्ठी। **सर्वैश्च** पुरुष**लक्षणैर्हीनो** यः॥ ५-६॥

य इमं ध्यायते नित्यं सर्वकामेश्वरः क्षितौ ।
घृतपूर्णं यथा भाण्डं स्थापितमग्निमध्यके ॥ ७॥

द्रवन्तं द्रवते सर्पिः [1]कालं नश्यति भाण्डयोः ।
तथा पापं च नश्यति श्रीहेरुकेति नामतः ॥ ८॥

अथ **चेमं** चतुर्दशतत्त्वरूपं श्रीहेरुकं **ध्यायते** स **सर्वकामेश्वरः क्षितौ**। तस्य पापराशेरकिञ्चित्करत्वे कृते ध्यानजमेव कर्म फलति। अथवा यथापूर्वादिपापस्य ध्यानेन क्षितौ क्षये कृतायां सत्यां सर्वकामेश्वरो भवति। कथं भुजमुखाद्याकारवता श्रीहेरुकेण भाव्यमानेन प्राक्तनं पापकर्म क्षीयत इत्याह— **घृते**त्यादि। **यथा घृतपूर्णं भाण्डं स्थापितमग्निमध्यके।** एवं किं स्यादित्याह— **द्रवन्तं द्रवते सर्पिरि**ति। तद्यदि भाण्डे सर्पिर्द्रवन्तं जललक्षणं पदार्थं द्रवते द्रवति(त्वं) प्राप्नोति जलमिश्रीभूतं भवतीत्यर्थः। तदा किमित्याह— **कालं नश्यती**ति। कालं चिरका[लं] प्राप्य जलं नश्यति। यावज्जलं न नश्यति तावन्न सर्पिर्नश्यति वस्तुशक्तिरेषेति भावः। **भाण्डयो**रपि भाण्डाधारत्वादग्निरपि भाण्डमुच्यते। तथा कर्म क्षीयत इत्येतदेवाह— **तथा पापं विनश्यती**ति। पातयति संसारसागरे सत्त्वानभिनिविष्टानिति पापं सामान्यं कर्म। शून्यताज्ञानवह्नौ श्रीहेरुकाकृतिभाण्डे च भाव्यमाने स्कन्धादेर्निवेशितस्य ग्राह्याद्यभिनिवेशलक्षितस्य कर्मणश्च [2]क्षयात् स्कन्धादिकं निर्द्वे(र्दो)षी भवति। अथ च शून्यताभिनिवेशात्तदेव सदोषं यथावदर्थक्रियाविरहात्। तथा **चाह**—

1.-2. मलं- भो०
3. यावत्- क. गृहीतस्तु भोटानुसारी।

भावेनैव विमुच्यन्ते वज्रगर्भ महाकृप ।
वध्यन्ते [चैव] भावेन मुच्यन्ते तत्परिज्ञया ॥ इति।

न बोधिं निष्क्लेशः क्षतगतिरवाप्नोति परमा-
मुदीर्णक्लेशस्तु स्वहितमपि कर्तुं न लभते ।
इति प्राप्तुं बोधिं स्थिरविहितवीर्येण भवता
न निर्दग्धाः क्लेशास्तृणलवलघुत्वं तु गमिताः ॥ इति च।

श्रीहेरुकेति—
श्रीकारमद्वयं ज्ञानं हेति हेत्वादिशून्यता ।
रुकारापगतं व्यूहं क इति न क्वचित्स्थितम् ॥

इति प्रज्ञोपायात्मकः। तस्य **नामतो** नामात्। अत एव इतिशब्दः षष्ठ्यर्थे। नमनं नामः प्रभुत्वमायत्तीभावः॥ ७-८॥

[1]ध्याने चिन्तितमात्रं वा पाठः स्वाध्यायलेखनात् ।
स्वर्गभोगमवाप्नोति अथवा चक्रवर्तिनम् ॥ ९॥

च्युतिकाले तु योगी ना श्रीहेरुकादिवीरयोगिनी ।
नानापुष्पकरव्यग्रा नानाध्वजपताकिनम् ॥ १०॥

नानातूर्यनिर्घोषैर्नानागीतोपहारतः ।
मृत्युर्नाम विकल्पस्य नीयते खेचरीपदे ॥ ११॥

कस्मिन्सतीत्याह— **ध्यान** इति। **ध्यानं** चिन्ता। **पाठः** सामान्यः **स्वाध्याय** एकाग्रचिन्ता **लिखनम्**। स्वयं **चक्रवर्तिनं** चक्रवर्तित्वम्। श्रीहेरुकयोगिन्याः योगेऽप्यसिद्धे पाठादिकरणे वाऽसमग्रीभूते यदि मृत्युः स्यात्तदा किमित्याह— **च्युती**त्यादि। **योगी ना** योगीपुरुषः। **श्रीहेरुकादिवीरयोगिनी**ति। तृतीयाबहुवचनलोपात्। [2]**नाना** इति। **तूर्यादि**ष्वधिष्ठानाच्छ्रीहेरुकादिक्रिया लेशतो लक्ष्यते॥ ९-११॥

---

1. [९-१५ श्लोकपर्यन्तं] द्र०- योगिनीसंचारतन्त्रे सप्तदशपटले ११-१४, २१-२३
2. नास्ति- क. गृहीतस्तु भोटानुसारी।

एवं देवमहावीरयोगिन्यो भुवि दुर्लभम् ।
[1]श्रीचक्रसंवरमहातन्त्रं यो ज्ञात्वा[प्य]भक्तितः ॥ १२ ॥

दारिद्र्यं दुःखसन्तापं तस्य नित्यं सदा भवेत् ।
कण्ठिकाचूडकेयूरं कुण्डलं ब्रह्मसूत्रकम् ॥ १३ ॥

कण्ठालङ्कृतशिरोमालामेखलाघुर्घुराखैः ।
गिरिमस्तककिञ्जल्के विश्वपद्मालिकाल्यं च ॥ १४ ॥

एतदेवाह— **एवमित्यादि**। **देवः** श्रीहेरुकः। **महावीराः** खण्डकपाल्यादयः। **योगिन्यो** वज्रवाराह्यादयः। मांसचक्षुभिर्दुर्दर्शाः। **श्रीचक्रसंवरं महातन्त्रं यो ज्ञात्वा** बुध्वाऽपि **अभक्तितो**ऽभक्तिर्भवति पुरुषः। तस्य **दारिद्र्यं** जायते **दुःखैः संतापो** यतस्तत्तथा। **कण्ठिके**त्यादि देशनोपसंहारे दर्शयति। **कण्ठिकाचूडकेयूर**मिति समाहारादेकत्वम्। **कण्ठे**त्यादि पूर्ववदिति भूषणोपसंहारः। **गिरिमस्तककिञ्जल्के विश्वपद्मे**ति स्थानोपसंहारः। **आलिकाल्यं चे**ति पञ्चाकारोपसंहारः। आलिकालीत्यर्थः। **च**कारः शेषाकारसमुच्चये ॥ १२-१४ ॥

गौर्यापतिं समाक्रम्य वज्रघण्टाङ्गलिङ्गितम् ।
चतुर्विंशार्धसंयुक्तं वीरयोगिनिवृन्दकैः ॥ १५ ॥

गौर्येति सहार्थे तृतीया। आसनोपसंहारः। **वज्रघण्टाङ्गलिङ्गितमि**ति चिह्नालिङ्गनोपसंहारः। अन्यचिह्नोपलक्षणमिदं चिह्नद्वयम्। **चतुर्विंशार्धे**ति काकास्यादयो द्वादशचतुर्विंशतेरर्द्धम्। वीरयुक्ता योगिन्यो वीरयोगिन्यश्चतुर्विंशति। तासां वृन्दानि **वीरयोगिनिवृन्दानि**। ह्रस्वत्वमार्षत्वात्। **संयुक्तमि**ति षट्त्रिंशयोगिन्युपसंहारः॥ १५ ॥

श्रीहेरुकमहाराजं भावयेत् परमं पदम् ।
सर्ववीरस्य योगिन्यः सपर्षन्म[2]ध्ययोगवान् ॥ १६ ॥

सर्वे तुष्टाद्वयीभूता सृष्टिसंहारकारकाः ।
नानाधिमुक्तिकाः सत्त्वा नानाचर्याविबोधिताः ॥ १७ ॥

---

1. श्रीहेरुकमहातन्त्रं- यो० सं०, भो०
2. मध्य- क. भो० गृहीतस्तु टीकानुसारी।

श्रीहेरुको महाराजो यत्र तच्छ्रीहेरुकमहाराजमिति नायकोपसंहारः। **पदमिति** विशेष्यम्। एतच्चाधाराधेयरूपसमग्रमण्डलोपसंहरणम्। संक्षेपमुक्त्वा पुनरतिसंक्षेप-माह— **सर्वे**त्यादि। **सर्वे वीरा** इत्यर्थे षष्ठ्येकवचनम्। **योगिन्यः**। इत्थं सपर्षत् सह पर्षदा वर्तत इति **सपर्षत्। मथ्या** वज्रवाराही तया **योगवान्।** ह्रस्वत्वमार्षत्वात्। **मध्ययोगवानिति पाठे** मध्यमनास्रवं सुखम्। "अथातो रहस्यम्" (१.१) इत्यादि "मथ्ययोगवान्" (५१.१६) इत्यन्तं धर्मं श्रुत्वा प्रागुक्ताः **सर्वे** वीरवीरेश्वर्यश्च **तुष्टा** लब्धधर्मसारत्वात्। **द्वयीभूता**स्तोषेण द्विगुणीभूताः। **सृष्टिः** स्फरणं **संहारः** स्फारितानां संक्षिप्तीकरणम्। वीरा योगिन्यश्च परार्थार्थं धर्मं शृण्वन्ति। श्रीहेरुकविनेयानामर्थाय भगवानपि वज्रवाराह्याध्येषितस्तादृशीं परार्थां धर्मश्रवणप्रवृत्तां गोष्ठीमभिनिर्माय धर्मं [दि]देश। श्रीहेरुका**धिमुक्तिरेव** कुत इत्याह—**नाने**त्यादि। नानार्थावधारकाः। चर्या-श्चरित्राणि नानारूपा गृहस्थत्वादिलक्षणाः। **नानाचर्याभिर्विबोधिता** बोधं नीता इदं कुरुतेति स्थिरीकृताः॥ १६-१७॥

नानानयविनेयानां नानोपायेन [1]देशिता ।
गम्भीरधर्मनिर्देशेनाधिमुक्तिर्भवेद्यदि ॥ १८॥

[2]अधिक्षेपो न कर्तव्यः स्मर्तव्याऽचिन्त्यधर्मता ।
नात्र मे विषयो ह्येष [3]नाहं जानामि धर्मताम् ॥ १९॥

कुत एवमित्याह— **नानानयविनेयानां नानोपायेन देशिता। गम्भीरधर्मनिर्देशेना-धिमुक्तिर्भवेद्यदी**ति। श्रावकादिनयविनेयानामधिमुक्तिर्यदि या काचिद् भवेत्तदा नानो-पायेन नानाविधेन मार्गेण देशिताऽधिमुक्तिः। किमभिसन्धायाधिमुक्तिस्तादृशीत्याह— **गम्भीरधर्मनिर्देशेने**ति। गम्भीरधर्मस्य प्रज्ञोपायाद्वयरूपस्य निर्देशो देशना तेन हेतुना नानानयैरधिमुक्तिर्देशिता येन। या धर्माधिमुक्तिः सा तस्मै देशिता इत्यर्थः। नानाधि-मुक्तिता किमर्थमिति **अधिक्षेपो न कर्तव्यः**। यतः **स्मर्तव्याऽचिन्त्यधर्मता** अथवा नानोपायेन नानादेवतारूपेण देशिताः सत्त्वा एव देवतारूपेण देश्यीकृता इति भावः। प्रज्ञोपायात्मके मन्त्रमहायाने यथारुचितचेष्टितत्वादधिमोक्षो युज्यते तावत् तथापि न

1. दर्शिताः- क.
2. प्रतिक्षेपो- क.
3. येन- टी०, भो० (दे० सं०)

स्याच्चेत् किं स्यादित्याह— **गम्भीरे**त्यादि। गम्भीरशून्यतास्वभाव: प्रज्ञाङ्ग:। धर्मो भुजमुखाकाराद्या उपायाङ्ग:। गम्भीरश्चासौ धर्मश्चेति गम्भीरधर्म:। स निर्दिश्यते येनानुत्तरेण **श्रीचक्रसंवरा**ख्येन तन्त्रेण तद् गम्भीरधर्मनिर्देश:। इह यद्यधिमुक्तिर्न भवेत् विनेयानां तदा प्रतिक्षेपो न कार्य: तेषु। किन्नाम कार्यमित्याह— **स्मर्तव्याऽचिन्त्यधर्मते**ति। अचिन्त्यानां धर्माणां भावनानां प्रकृति: स्मर्तव्या देशितव्या। भावनानामचिन्त्यरूपतैव सर्वदेति भाव:। **नात्र** धर्मेषु स्कन्धादिषु **मम विषयो** ग्राह्यादिरूपोऽस्ति।

केन कारणेनेत्याह— **येने**त्यादि। धर्मतातथताशून्यतानां **न जानामि** धर्मतारूपत्वेन स्वात्मनि क्रियाविरोधात्। तथा **चाह**– ''न हि चित्तं चित्तं जानाति'' इति। ग्राह्यादिविविक्तज्ञानं चित्तमात्रं शून्यता। तदुक्त**म्**—

> विज्ञानाच्छून्यतानाम काचिदन्या न विद्यते ।
> व्यतिरिक्ता व्यतिरेकित्वं विवेकस्य यतो मतम् ॥ इति॥ १८-१९ ॥

> **जानन्ति ते महात्मान: संबुद्धा तत्सुता अपि ।**
> **उत्पाददपि बुद्धानामनुत्पादेऽपि वा स्थित: ॥ २० ॥**
>
> **धर्मता सर्वदाऽचिन्त्या हानिवृद्धिविवर्जिता ।**
> **इत्येवं तुलयित्वा तु न निन्द्या: सर्वलौकिका: ॥ २१ ॥**

के तर्हि जानन्तीत्याह— **जानन्ती**त्यादि। **ते सम्यग्बुद्धा:** सम्यग्बुद्धिवन्त:। **महात्मानो** विस्तीर्णबुद्धय:। ते बुद्धा: सुता येषां ते **तत्सुता** बोधिसत्त्वा:। यतो बोधिसत्त्वीभूय बुद्धीभवन्ति। तेषां बुद्धानां वा सुतास्तत्सुतास्तदात्मजत्वात्। बुद्धानामात्मा धर्म:। धर्मताबोधाद् बुद्धास्तामभिसम्भोत्स्यन्त इति। बोधिसत्त्वा **अपि** बुध्यन्त इति व्यपदेशो नियुताभावितो बोधात् **धर्मतां** जानन्ति। धर्मता कदा संभवेदित्याह— **उत्पादादि**त्यादि। **बुद्धाना**मुत्पादमागम्य स्थिता अनुबध्यावस्थिता। **अनुत्पादेऽपि** वा प्राकृतावस्थायामपीति भाव:। **सर्वदे**ति। प्रकृतिप्रवाहप्रबन्धरूपेण सदावस्थापयित्वात्। **अचिन्त्या** किमेवंभूते विचिन्तयितुमशक्या। इयन्तं कालं च वर्द्धत इति **हानिवृद्धि**भ्यां **वर्जिता इत्येवं तुलयित्वा** बुद्धाबुद्धौ समीकृत्य **न निन्द्या: सर्वलौकिका:**॥ २०-२१ ॥

अचिन्त्या [हि] गतिस्तेषामचिन्त्यं बुद्धनाटकम् ।
सूत्रक्रियाभिचर्याणां योगगुह्यं तु भेदतः ।
सत्त्वावतारशीलं तु तत्र तत्र रता इव ॥ २२॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने महातन्त्रराजं लक्षान्तःपाति चोत्तरोत्तरं राजा सर्व[1]शास्त्राणां श्रीहेरुकमहावीरपठितसिद्धसर्वज्ञापराजित-आदिसिद्धि चोत्तरतन्त्रं श्रीचक्रसंवरं नाम महायोगिनीतन्त्रराज एकपञ्चाशतिमः पटलः समाप्तः ॥ ५१ ॥

ये धर्मा हेतुप्रभवा हेतुस्तेषां तथागतो ह्यवदत् ।
तेषां च यो निरोध एवंवादी महाश्रमणः ॥
देयधर्मोऽयं प्रवरमहा[या]नयायिनः[2] ॥

तेषां लौकिकानामपि गतिव्यवस्थितिरचिन्त्या कुत इत्याह— **अचिन्त्यं बुद्धनाटकमि**ति। बुद्धा एव नानारूपा व्यवस्थिता इति नाटकम्, एतदेवाह— **सूत्रे**त्यादि। **सूत्रं** सूत्रान्तम्। **क्रिये**ति क्रियातन्त्रम्। **अभी**त्यभिधर्मः। प्रथमार्थे षष्ठी। **चर्ये**ति चर्यातन्त्रम्। **योगतन्त्रं** गुह्यतन्त्रम्। **तुः** समुच्चये। **सत्त्वावतारे**ति चतुर्थीलोपे। मुक्तिः क्लेशबन्धनापगमः। **तु**रित्यर्थे इति सर्वभेदभिन्नमचिन्त्यसत्त्वावतारार्थम्। सत्त्वावतारं चाचिन्त्यम्। संबुद्धा जानन्तीति पूर्वेण सम्बन्धः। **तत्र तत्र** च लौकिकादौ **रता इव** रतवत्संबुद्धाः। रतसमता चाचिन्त्येति भावः। अथ **सूत्रं** सूत्रान्ताः। **क्रिया** विभाषा। **अभि**धर्मो मध्यमा। **योगगुह्यं** योगाचारः। "**अथातो रहस्यं वक्ष्ये**" (१.१) इत्यादिना रहस्यं प्रतिज्ञातम्। "**मध्यमोत्तमश्वासेन**" (१.६) इत्यादिना ग्रन्थेन भगवान् देशितवान्। सर्वेति कर्त्री तु "**सर्वे तुष्टा**" (५१.१७) इत्यादिना "**तत्र तत्र रता**" (५१.२२) इत्यन्तेन विनेयसन्तोषादिकं प्रतिपादितवतीति भगवतैव दर्शितं यन्महातन्त्रराजमित्यादिविशेषणविशिष्टं तत्रैकपञ्चाशतिम एकपञ्चाशत्तमः पटलः समाप्तः इति सम्बन्धः ॥ २२ ॥

---

1. मन्त्राणां- क.
2. इतः परं— श्रेयोऽस्तु ने० संवत् १०५० कार्तिकमासे शुक्लपक्षे प्रतिपदायां तिथौ आदित्यवासरे एतद् दिने नेपालदेशीय वज्राचार्यधर्महर्षेण इदं पुस्तकं प्राचीनताडपत्रपुस्तके दृष्ट्वा लिखितमिति। यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया। यदि शुद्धमशुद्धं वा शोधनीयं बुधैर्जनैः। – अधिकोऽयं बडौदासंस्करणस्य द्वितीयमातृकायाम् (सं० 13285)।

तत्र किम्भूते **श्रीहेरुकाभिधाने** तत्र शब्दस्याध्याहृततच्छब्दविशिष्टानि प्रथमान्तविशेषपदानि दर्शयन्नाह— **महे**त्यादि। महच्च तन्त्रयति पुष्णाति बुद्धधर्माननेनेति तत्तन्त्रं चेति परमानास्रवं महासुखं तद्राजते यत्र त**न्महातन्त्रराजमि**त्यादिविशेषणविशिष्टं स्यात्। लक्षात्मकं खसमं तन्मध्यान्तःपातो निर्गमनं सोऽस्यास्तीति **लक्षान्तःपाति**। **च**कारात्तन्त्रान्तरार्थसमुच्चायकम्। **उत्तरोत्तरं** व्याख्यातम्। राजेव **राजा सर्वशास्त्राणां** सर्वतन्त्राणामुपरिभूतत्वात् प्रकाशकत्वाच्च। अत एव भगवतश्चन्द्रधारित्वम्। इतश्च चन्द्रोऽभिधेय[मेकांश] उक्तः। वाराह्या सह श्रीहेरुकः महतीति महायोगिन्यो डाकिन्यादयः षट्त्रिंशद्। वीराः खण्डकपालादयश्चतुर्विंशति। पठितसिद्धा मन्त्राः। सर्वज्ञं योगिनीनां लक्षणादिज्ञानं प्रत्यक्षादिज्ञानं च। अपराजितो दुर्गासहितः शङ्करः आदिभूताः सिद्धयश्चादिसिद्धयः। **श्रीहेरुकमहावीरपठितसिद्धसर्वज्ञापराजितासिद्ध्य**भिधायकत्वात्तथोक्ततन्त्रम्। **चकारा**द्भूम्यादिविशुद्ध्याद्यभिधायि। उत्तरन्ति भवोदधिमनेने**त्युत्तरम्।** पचाद्यच्। **तन्त्रं** सूत्रम्। श्रीपुण्यज्ञानसंभारः। चक्रं धर्मचक्रम्। श्रीमच्चक्रं श्रीचक्रं तेन [1]कापथात् सत्त्वानां मनः संवृणोतीति **श्रीचक्रसंवर।** : श्रीहेरुकः तदभिधायित्वात्तन्त्रमपि तथोच्यते। **नाम** प्रकाश्ये महच्च तद् योगिनीतन्त्रराजं चेति **महायोगिनीतन्त्रराजे**ति निर्विभक्तिकं पदम्। योगिन्युपदेशबहुत्वात्। श्रीहेरुकाभिधाने महातन्त्रराजे लक्षान्तःपातिनि चोत्तरोत्तरे राज्ञि सर्वशास्त्राणाम्। श्रीहेरुकमहावीरपठितसिद्धसर्वज्ञापराजितमिति चोत्तम(र)तन्त्रे श्रीचक्रसंवरनाम्नि महायोगिनीतन्त्रराजे तत्रै**कपञ्चाशतिम** एकपञ्चाशत्तमः सम्यगाप्तः **समाप्त** इत्यर्थः। महातन्त्रराज इत्यादिर्महायोगिनीतन्त्रराज इत्यन्तः सुप्ति[ङन्तः] पदसमुच्चयः। समाप्त इति पदमेकपञ्चाशतपटलेषु श्रीहेरुकाभिधान इत्यन्ते योज्य इति।

यथा स्मरणतोऽलेखि गुरोर्व्याख्यापदं मया ।
अर्थग्रहणतो वाक्यमेति तद्वाक्यतो मम ॥
हेयोपादेयभागेऽस्मिन्निश्चितेऽपि प्रमाणतः ।
न संकुचति सन्देह उपदेशं विना गुरोः ॥
मालामिव गुरोराज्ञां नानावाङ्मनोहरीम् ।
[2]तत्सम्बन्धिनीं मूर्ध्ना दधामि भ्रमनोदनीम् ॥

---

1. कायस्थ- भो०
2. तन्त्र- भो०

स्वचित्तविस्पन्दितसंज्ञया जगत्-
स्वचित्तमेवावधृतं विभाव्यताम् ।
स्वचित्ततो नान्यदिहास्ति मण्ड-
ग्रहं विना [भाव]यताशु मण्डलम् ॥

श्रियः पदं भावय देवतापदं
पदं यतो यास्यसि निर्मलं स्थितम् ।
भवं विना नास्ति शमः शमं विना
भवो विशुद्धावनयोरभिन्नता ॥

श्रीचक्रसंवरसरोरुहसंभवेषु
गूढोपदेशमकरन्दरसाकरेषु ।
तत्त्वेष्वभूद्गदयिता इव सांप्रतेषु
श्रद्धां वहन्त्यमलपुण्यमनोमनीषाः ॥

वीक्ष्यापरान् कविवरान् हि वृहन्तिकारान्
बुद्धिर्ममापि रमति स्म तदर्थसिद्धौ ।
पर्वक्षणे नटति गायति यत्र योग्य
औत्सुक्यतो न किमु तत्र जनोऽप्ययोग्यः॥

विशदपदार्थं रविरिव भुवनं श्रीचक्रसंवरं कृत्वा ।
अध्यगमं यत्सुकृतं तेन जनास्तद्गुणान्वहन्तु ॥

इति श्रीचक्रसंवरविवृतावे[1]कपञ्चाशत्तमः पटलः समाप्तः[2] ॥ ५१ ॥

पण्डिताचार्य भव[3]भट्टकृता श्रीचक्रसंवरपञ्जिका समाप्तेति।

*

---

1. एकपञ्चाशत्तमः पटलः- नास्ति भो०
2. कृतिरियं पण्डिताचार्य भवभट्टपादानाम्। ग्रन्थप्रमाणमस्या सार्द्धत्रिसहस्राणि। अङ्केनापि सहस्र ३ शत ५।
3. भवभट्ट- भो० (पे०, से०), भवभद्र- भो० (दे०, चो०)

यथा दीपो घटान्तःस्थो बाह्ये नैवावभासते ।
भिन्ने तु तद्घटे पश्चाद् दीपज्वालाभिभासते ॥

स्वकाय एव हि घटो दीप एव हि तत्त्वकम् ।
गुरुवक्त्रेण संभिन्ने बुद्धज्ञानं स्फुटं भवेत् ॥

गगनं गगनोद्भूतमाकाशाकाशं स पश्यति ।
तथैव हि गुरोर्वक्त्रात्प्रयोगोऽयं प्रदर्शितः ॥

༄༅། །རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་དཔལ་བདེ་མཆོག་ཉུང་ངུ་
ཞེས་བྱ་བ་དང་།
དེའི་དཀའ་འགྲེལ་སློབ་དཔོན་བྷབྷདྲས་མཛད་པ་
བཞུགས་སོ།།

(भोट-खण्ड)

རང་ལུས་ཉིད་ལ་སངས་རྒྱས་གནས། །
གཞན་ནི་གང་ཡང་ཡོད་མ་ཡིན། །
ལུས་ལས་གཞན་དུ་སངས་རྒྱས་ཉིད། །
མི་ཤེས་པ་ཡིས་གཡོགས་པའི་ལུས། །

(དཔྱིད་ཀྱི་ཐིག་ལེ། ༨ · ༡༠)

སློབ་མ་ཡོངས་སུ་བརྟག་པ་དང་སྦྱོམ་པའི་ཚོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནས་གཞན་ཡང་འཇིག་རྟེན་ནི། །
གསུམ་པོ་དག་ན་ཡོད་མིན་པའི། །
ཤྲཱི་ཧེ་རུ་ཀའི་སྔགས་ཤེས་ན། །
གསང་སྔགས་ཐམས་ཅད་ཡོངས་དོར་[1]བའོ། ༡ །

ད་ནི་སྔགས་ཀྱི་ཕན་ཡོན་སྟོན་ཏེ། དེ་ནས་དེ་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དེའི་ཕྱིར་ནི་རྩ་བའི་སྔགས་ལས་གཙོ་བོར་གྱུར་པའི་སྔགས་ཀྱི་ཚིག་གོ །ཡོད་པ་ཞེས་པ་ནི་དོ་རྗེ་ཕག་མོ་སྟེ། དེ་ཡང་དག་པར་རྟོགས་ཤིང་རིག་པའམ་མེད་དོ་ཞེས་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། །སྔགས་ནི་རྩ་བའི་སྔགས་ལ་སོགས་པའོ། །དེ་ཤེས་ནས་སྔགས་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་དོར་བའོ། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་སྔགས་ཀྱང་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་སྟེ་དེ་གཉིས་དབྱེར་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། ༡ །

ལུགས་འབྱུང་ལུགས་ལས་བཟློག་པ་ཡིས། །
ཕོ་ཉ་རྣམས་ནི་ཡང་དག་གནས། །
འོག་དང་སྟེང་གི་དངོས་གྲུབ་སྟེར། །
བདག་གི་ཕོ་ཉ་མོ་[2]ཀུན་འགྲོ། ༣ །

1. ཡོངས་འདོར་ པེ།
2. ཕོ་ཉ་མ་ སྡེ། སྣ། པེ།

ལེའུ་བཞི་པ་ལས་བསྟན་པའི་བརྩོན་ཆེན་མོ་[1]ལ་སོགས་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་གོ་རིམ་[2]བཞིན་དུ་བཀོད་པ་སྟོན་ཏེ། རིམ་དང་རིམ་མིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། རིམ་བཞིན་ནི་གོ་རིམ་བཞིན་དུའོ། །གཞན་གྱི་མིང་ཉིད་ནི་རིམ་མིན་ཏེ། གོ་རིམ་མ་ཡིན་པའོ། །དེ་ལ་སྤར་གྱི་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཡང་དག་པར་ཉེ་བར་གནས་པར་སྟོན་པའོ། །ད་ནི་གོ་རིམ་བཞིན་དུ་དགོད་པར་བྱའོ་ཞེས་བསྟན་པའི་ཕྱིར། འོག་དང་སྟེང་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །འོག་ཉིད་སྟེང་དུ་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །རབ་ཏུ་གཏུམ་མོ་ལ་སོགས་པར་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་སྟེང་དུ་ཐུགས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ལ་སོགས་པ་དགོད་དོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །དེས་ཅིར་གྱུར་[3]ཞེས་པ་ལ་གྲུབ་རྟག་[4]སྟེར་ཞེས་གསུངས་ཏེ། དེ་ལྟར་བསྒོམ་བཞིན་པས་འགྲུབ་པར་འགྱུར་ཞེས་དགོངས་སོ། །དེའི་ཕྱིར། བདག་གི་ཡོ་ཉ་མོ་ཀུན་འགྲོ །ཞེས་གསུངས་སོ། །བདག་ནི་སེམས་སོ། །ཐུགས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་བདག་གིས་བརྩམ་པར་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཀུན་འགྲོ་ནི་འཁོར་ལོ་གསུམ་འགྲོ་བ་ཡིན་ནོ། །བརྩམ་པ་ཞེས་པ་འདི་ཕྱིས་པའོ། ༡ །

ཡོ་ཉ་མོ་དེ་དོན་ཀུན་སྟེར[5]། །
མཐོང་དང་དེ་བཞིན་རེག་པ་དང་། །

---

1. བརྩོན་ཆེན་པོ་ ཅོ།
2. གོ་རིམས་ སྣེ། ཅོ། དེ་བཞིན་འོག་ཏུའང་འདི་ལྟར་གསལ།
3. ཅི་འགྱུར་ པེ།
4. གྲུབ་རྟགས་ སྣེ། ཅོ།
5. དོན་ཀུན་སྟེང་ ལྷ།

ཚུམ་བ་ན་[1]དང་རྟག་པར་འཁྱུད། །
རྣལ་འབྱོར་གནས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཉིད། ༢།

ཕོ་ཉ་ཞེས་པ་ནི་དང་པོའི་མང་པོའི་ཚིག་ལ་གཉིས་པའི་གཅིག་གི་ཚིག་གོ །ནི་ནི་ཉེ་བར་བཟུང་བའོ[2]། །ཕོ་ཉ་མོ་དེས་གྲུབ་ཀུན་སྟེར། །ཞེས་པ་ནི་ཕོ་ཉ་[3]ནི་ཕོ་ཉ་མོའོ། ། ཅེ་ཞེས་པ་ལ། མཐོང་བ་དང་ནི་རེག་པ་དང་། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། མཐོང་བ་ནི་ཉེ་བར་དམིགས་པ་སྟེ། དངོས་སུ་མངོན་དུ་བྱེད་ཅེས་པའི་དོན་ཏོ། །རེག་པ་ནི་སེམས་ཀྱིས་བསྒོམ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །གང་གི་ཚེ་གཉིས་སུ་གྱུར་པའི་ཚེ་དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་སྟེར་རོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཚུམྦན་ཞེས་པ་ནི་འོ་བྱེད་པའོ། །འཁྱུད་པ་ཞེས་པ་ནི་འཁྱུད་པའོ། །ལས་ལ་ལྷུཏའི་རྐྱེན་[4]བྱིན་པའོ། །རྣལ་འབྱོར་གནས་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་གནས་སོ། །ཁྱད་པར་ཉིད་ཅེས་པ་ནི་འདོད་པའི་བསྟན་བཅོས་ལས་གསུངས་པའི་འཆིང་བ་ལ་སོགས་པའི་ཁྱད་པར་རོ། ༢ །

ཇི་སྐད་རྣལ་འབྱོར་ཚོགས་རྣམས་ནི། །
ཐམས་ཅད་དངོས་གྲུབ་བྱེད་པར་བཤད། །
བདེན་དངོས་ཐམས་ཅད་སྦྱིན་བྱ་སྟེ། །
གཞན་དུ་ནམ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། ༤ །

1. ཚུཾ་པ་ན་ སྣ། ཚུམ་པ་ན་ པེ།
2. གཟུང་བའོ་ གསེར། པེ།
3. ཕོ་ཉིད་ པེ།
4. ལས་ལུཏའི་ སྣེ། ཅོ།

ཇི་སྲིད་ཅེས་པ་ནི་གནས་ལ་སོགས་པ་ལྷག་མ་མ་ལུས་པར་རྟོགས་པའོ། །ཇི་ཙམ་ཞེས་པ་ལ་[1]རྣལ་འབྱོར་ཚོགས་རྣམས་ཞེས་གསུངས་ཏེ། རྣལ་འབྱོར་མའི་ཚོགས་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཅི་བྱེད་ཅེས་པ་ལ། ཐམས་ཅད་དངོས་གྲུབ་བྱེད་པར་དྲན། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་བྱེད་པར་དྲན་པ་ནི་མ་ནིང་གི་རྟགས་ཉིད་ཀྱི་གཅིག་གི་ཚིག་གི་མཐའ་ཉིད་དུ་སྨྲད་པ་ཉིད་དེ། བདེ་བར་གཤེགས་པའི་ལུང་ནི་ཚིག་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་ན་དང་པོའི་མང་པོའི་ཚིག་ཉིད་ཀྱང་ཨའི་ཐིག་ལེ་གཅིག་དང་ཐུང་བ་ཉིད་ཕྱིས་པ་ནི་ངེས་པའི་ཚིག་བྱས་པའོ། །བདེན་པ་ཅན་དུ་ཀུན་ལ་བྱེན། །ཞེས་པ་ནི་ཐམས་ཅད་དུ་བདེན་པར་གྱུར་པ་[2]ཡིན་པ་འདིས་དེ་ནི་དེ་བཞིན་དུ་ཙཱ་རུ་(ཙ་རུ)བཟའ་བ་ལ་སོགས་པའོ། །དེ་དེ་བཞིན་དུ་མཚོན་པ་དེ་ལ་སྦྱིན་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་དེས་གྲུབ་པོ་ཞེས་སྟོན་ཏེ། གཞན་དུ་ནམ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་གསུངས་སོ། །ནི་ནི་ཉི་བར་གཟུང་བའོ། ༩ །

མ་དང་སྲིང་མོ་བུ་མོ་དང་། །
ཆུང་མ་ཡོ་ཉ་མོ་གནས་[3]ལ། །
གང་ལ་རྟག་ཏུ་སྟགས་སྦྱིན་པ། །
དེ་ཡི་[4]དེ་ཉིད་ཚོ་ག་བཤད། ༥ །

---

1. ཞེས་བྱ་ལ་ ཕེ། གསེར།
2. གྱུར་པའི་ གསེར། ཕེ།
3. ཡོ་ཉ་མོ་རྣམས་ ཕེ།
4. དེའི་ ཕེ།

འདིས་མ་ལ་སོགས་པ་གཞན་གྱི་རྣལ་འབྱོར་མ་བསྟེན་ཞིང་རྩེ་བ་ཉིད་དུ་གསལ་བ་ཉིད་དུ་ཉེ་བར་སྟོན་ཏེ། མ་དང་སྲིང་མོ་བུ་མོ་དང་། །ཆུང་མ་ཡོ་ཞ་མ་རུ་གནས། ། ཞེས་གསུངས་ཏེ། ཆུང་མ་ཞེས་པ་ནི་བག་མ་གཅིག་པུའོ། །གང་ཞིག་རྟག་ཏུ་ཕྱོགས་བྱིན་པ། །དེ་ཉིད་དེ་བཞིན་རྟག་ཏུ་དྲན། །ཞེས་པ་ནི་གང་ལ་རྣལ་འབྱོར་པས་རྣལ་འབྱོར་མ་ལ་ཕྱོགས་ཀྱི་བདག་ཉིད་བྱིན་ལ་དེ་ཁྱེར་ཏེ། དངོས་གྲུབ་གྲུབ་པར་བྱ་ཞེས་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་བྱིན་པར་བྱ་བ་སྟེ། །ཕྱོགས་ཀྱི་ལུགས་ཀྱི་ཚོ་ག་དྲན་པས་དེ་དེའི་དོན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཕྱོགས་ཞེས་པ་ནི་གསོང་པོར་སྨྲ་བ་ཡང་ཡིན་ནོ། ༥ །

དེ་ནས་རྣལ་འབྱོར་རྒྱུད་དུ་ནི། །
རྙེད་དཀའི་དམ་ཚིག་ང་ཡིས་བཤད[2]། །
སྐྱེས་པ་བུད་མེད་གཡོན་ནས་འགྲོ། །
འདོད་པའི་དངོས་གྲུབ་སྟེར་བར་བྱེད། ༦ །

གཞན་ཡང་དམ་ཚིག་ཡང་དག་བཤད། །ཅེས་པ་ནི་དམ་ཚིག་ཅེས་པ་ནི་གཉིས་པའི་མང་པོའི་ཚིག་ཕྱིས་པའོ། །གཞན་ཉིད་ནི་བདུད་རྩི་རྣམ་པ་ལྔ་ལ་སོགས་པའོ། ། མང་པོ་ཉིད་ལས་གཅིག་གི་ཚིག་གོ །དམ་ཚིག་གཞན་ཡང་བདག་གིས་བཤད། །ཅེས་པ་ནི་གཞུང་གཞན་ཡང་དེ་བཞིན་ནོ། །དམ་ཚིག་གཞན་ཡང་ནི་རྐྱེན་ཕྱིས་པའོ། །དེ་ནས་ཀྱི་སྒྲ་ལ་ཨའི་རྐྱེན་གྱིས་ཕྱིས་པའོ། །དམ་ཚིག་ཅེས་པ་ནི་མ་ནིང་གི་རྟགས་སུ་

1. བརྩེ་བ་ གསེར། པེ།

2. ང་ཡི་བཤད་ སྣ།

བསྟན་པའམ་དམ་ཚིག་ནི་གཡོན་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། སྐྱེས་པ་ནི་སྐྱེས་བུ་སྟེ། གཡོན་དུ་སྐྱེས་པའམ་བུད་མེད་བཞག་ནས་གཞན་སྐྱེས་པའམ་བུད་མེད་འགྲོ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་རྣལ་འབྱོར་མའམ་རྣལ་འབྱོར་པར་ཤེས་པར་བྱའོ། །དེའི་ཕྱིར་ཡང་འདོད་པའི་དངོས་གྲུབ་ཏུ་འགྱུར་རོ་ཞེས་ངེས་པ་ཡིན་ནོ། ༦ །

ཁྲིམ་དང་ཞིང་དུ་རྣམ་གནས་པ། །
ཤིན་ཏུ་རིང་ཡང་ཤེས་པར་འགྱུར། །
ཧེ་རུ་ཀ་དཔལ་རྣལ་འབྱོར་མཆོག །
སློབ་དཔོན་རྣལ་འབྱོར་མ་ཉིད་ཡིན། ༧ །

དེ་བས་ན། ཤིན་ཏུ་རིང་ཡང་ཤེས་པར་འགྱུར། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། སྔོན་དུ་བསྟན་པའི་མཚན་ཉིད་མ་མཐོང་ཡང་གཡོན་ནས་བསྐོར་ཞིང་[1]འགྲོ་བས་མཚོན་པ་ནི་ཕོ་ཉའམ་[2]ཕོ་ཉ་མོའོ། །ཕོ་ཉ་དེ་གང་ནས་ཞེས་པ་[3]ལ་ཕོ་ཉ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་ཁྲིམ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ལས་སྤྱིར་གཞན་མེད། །ཅེས་བྱ་བ་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་[4]མཆོག་ནི་གཙོ་བོ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་མཆོག་ནི་རྣལ་འབྱོར་མེད་པ་དེ་ནི་དེ་ལྟར་མི་འགྱུར་ཏེ། དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ཉིད་ཀྱི་རྣལ་

1. སྐོར་ཞིང་ པེ།
2. 'ཕོ་ཉའམ་' གསེར་པེ་གཉིས་སུ་མེད།
3. ཤེས་པ་ གསེར། པེ།
4. ཧེ་རུ་ཀའི་ སྡེ། ཅོ།

འབྲོར་ནི་མཆོག་གི་རྣལ་འབྱོར་རོ[1]་ཞེས་དགོངས་སོ། །རྣལ་འབྱོར་འདིས་ནི་སློབ་དཔོན་ནོ། །རྣལ་འབྱོར་མ་ནི་རྣལ་འབྱོར་ཏེ། །གཙོ་བོ་ཞེས་པར་སྦྱར་རོ། ༧ །

རྒྱུད་འདི་རུ་ནི་སྒྲུབ་པ་པོ། །
ལེགས་པར་གྱུར་པ་ཉིད་ཡིན་ཏེ། །
བརྙས་མི་བྱ་ཞིང་སྤང་མི་བྱ། །
གུས་པ་ཡིས[2]་ནི་མཆོད་པར་བྱ། ༨ །

ཅི་ཞེས་པ་ལ་རྒྱུད་འདི་རུ་ནི་སྒྲུབ་པ་པོ་ལེགས་པར་གྱུར་པ་ཉིད་ཡིན་ཏེ་ཞེས་གསུངས་སོ། །འདིར་ཞེས་པ་ནི་རང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་གནས་སྐབས་སོ། །ལེགས་པའི་སྒྲ་ནི་དང་པོའི་མང་པོའི་ཚིག་སྒྲོག་མེད་ཀྱི་མ་བྲིས་པའོ། །དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་རྒྱུད་ལ་ཤིན་ཏུ་སྒྲུབ་པ་པོ་ནི་ལེགས་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེའི་ཕྱིར་བརྙས་པ་མི་བྱ་བ་ནི[3]་ཆུང་ངུར་བགྱི་བར་མི་བྱའོ། །སྤང་བར་མི་བྱ་བ་ནི་སྨད་པར་མི་བྱའོ། །དེ་བས་ན་གུས་པས་མཆོད་པར་བྱའོ། །བདག་པ་ཧེ་ལྷ་བུས་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ[4]། ༨ །

ཀླུ་ཀའི་གདོང་སོགས་བརྒྱད་པོ་ནི། །
གུས་དང་[5]དད་པ་འཕེལ་བྱེད་པ། །

1. རྣལ་འབྱོར་ པེ། གསེར།

2. ནུས་པ་ཡི་ པེ། ནུས་པ་ཡིས་ སྡེ། སྣ། ལྷ། གོང་དུ་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།

3. མི་བྱ་བ་ན་ གསེར།

4. དོན་ཏེ་ གསེར།

5. བོད་འགྱུར་དུ་‘གྲོལ་དང་’ཞེས་སྣང་ཡང་གོང་དུ་འགྲེལ་པ་དང་མཐུན་པར་བཞག་ཡོད།

རྟག་པར་དངོས་གྲུབ་རྣམས་ཀྱི་རྒྱུ། །
དམ་ཚིག་རྣམས་ཀྱང་སྐྱོང་བར་བྱེད། ༨།

གུས་པ་ཉིད་སྟོན་ཏེ། སྐྱེ་འགྲོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་ཁྲ་གདོང་མ་ལ་སོགས་ཞེས་གསུངས་ཏེ་ཁྲ་གདོང་མ་ལ་སོགས་པ་ལྷ་མོ་བརྒྱད་པ་འདི་གུས་པ་དང་དད་པ་འཕེལ་བར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ཡང་དངོས་གྲུབ་རྣམས་ཀྱི་རྒྱུ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལ་ཁྲ་གདོང་མ་ལ་སོགས་པའི་གཟུགས་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་རྒྱུ་བརྒྱད་པོ་དེ་གང་ཡིན་ཞེས་པ་ལ། དམ་ཚིག་རྣམས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཀྱང་ནི་ཉེ་བར་གཟུང་བའོ། །དམ་ཚིག་སྐྱོང་བ་ནི་དང་པོའོ། ༩ །

ལྷ་མོ་གཞན་ཡང་ཀུན་སྦྱོར་བ། །
རྣམ་པར་རྨོངས་པས་འདོད་པ་མིན། །
གཉིས་སུ་མེད་དང་ཐོགས་མེད་མིན། །
དམ་ཚིག་སྤྱོད་པ་[1] སྤྱད་བྱ་བ། ༡༠ །

གཞན་ཉིད་དང་ཡང་དག་པར་སྦྱོར་བ་ལས་ལོག་སྟེ་ཅི་ལྟ་བུར་གྱུར་པ་ལ་ཡོད་ཅེས་པ་ལ། འདོད་ལ་ཆགས་པར་གྱུར་པ་དང་། །ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །འདོད་པ་ནི་ཡུལ་ཏེ་དེ་ལ་རྨོངས་པ་ནི་དང་པོར་ཞུགས་ནས་ཕྱིས་ལོག་གོ །ཞེས་དགོངས་སོ། །དེ་ལས་ལོག་པ་ནི་གཉིས་པའོ། །གང་ལ་གཉིས་ཀྱི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་མེད་པ་དེ་ནི་གཉིས་མེད་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་ཉིད་དེ་གསུམ་པའོ། །དང་པོ་ནི་བསྡུ་

1. དམ་ཚིག་སྤྱད་པ་ ཅེ།

བའོ། །གནོན་པ་ནི་གནོན་པར་བྱེད་པ་སྟེ་ཁས་བླངས་པ་ནི་གྲུབ་པའི་མཐར་གནས་པ་ལ་གནོན་པ་མེད་དེ། ལྷག་པར་མོས་པ་བརྟན་པ་[1]ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །བཞི་པའོ། །དམ་ཚིག་རྣམས་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་སོ། །སྤྱོད་པ་ནི་འདོད་པ་བསྟེན་པ་ལ་སོགས་པའོ། །དེ་ལ་སྤྱད་པ་ནི་བྱ་བ་སྟེ་ལྔ་པའོ། ༡༠ །

བུད་མེད་དབང་ཕྱུག་ལེགས་པར་སྦྱོར[2]། །
ཚངས་སྤྱོད་དེ་བཞིན་བསམ་གཏན་ཏེ[3]། །
ཁྲོ་མེད་སྦྲུབས་སུ་ཀུན་ཏུ་སྤྱོད། །
འདི་བརྒྱད་[4]དམ་ཚིག་ཀུན་སྤྱོད་ཡིན། ༡༡ །

བུད་མེད་དབང་ཕྱུག་མི་སྲུབ་མིན། །ཞེས་པ་ནི་དབང་ཕྱུག་ཉིད་ནི་དབང་ཕྱུག་སྟེ། འཕེལ་བའི་སྒྲ་ནི་མི་རྟག་སྟེ། དབང་ཕྱུག་མ་ཡིན་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། མིན་ནི་མ་ཡིན་པའོ། །དབང་ཕྱུག་མ་ཡིན་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་སྒྲའི་རྒྱན་མེད་པའོ། །ཅིའི་ཕྱིར་ཞེས་པ་ལ་བུད་མེད་བསྲུབས་པ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། རྣལ་འབྱོར་མ་དང་རྡོ་རྗེ་པདྨ་བསྐྱོད་པའོ། །དེ་ལ་དབང་ཕྱུག་ཉིད་ནི་དྲུག་པའོ། །ཚངས་པར་སྤྱོད་པ་ཆགས་པ་མེད་པ་ལ་ཅི་ཞེས་པ་ཚངས་པར་སྤྱོད་པ་དེ་བཞིན་བླངས་[5]ཞེས་གསུངས་ཏེ་དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་

1. བསྟན་པ་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
2. བུད་མེད་དབང་ཕྱུག་མི་སྲུབ་མིན། འགྲེལ་པ།
3. བསམ་གཏན་དེ་ སྣ། ལྷ།
4. འདི་བརྒྱུད་ སྣ། ལྷ།
5. དེ་བཞིན་བླང་ གསེར། པེ། ཅོ་བར་"དེ་བཞིན་བསམ་གཏན" ཞེས་གསལ།

བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བླང་བ་ནི་དེ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་མེད་པས་བླང་བ་སྟེ་བདུན་པའོ།། ཁྲོ་བོ་མེད་པ་ནི་མི་ཁྲོ་བ་སྟེ། །ཁྲོ་བ་དེ་ལས་ཁ་ཕྱིར་བལྟས་པ་ཉིད་དོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །རྒྱུད་ཀྱི་ནི་[1]དབང་པོ་རྣམས་ཏེ། འདིར་ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པས་ན་ཀུན་སྤྱོད་པའི་ནི་[2]ཡུལ་གྱི་གྲོང་ཁྱེར་ལའོ། །དང་ནི་ཉེ་བར་གཟུང་བའོ། །ཡུལ་གྱི་གྲོང་མི་ཆགས་པ་ཁ་ཕྱིར་བལྟས་པ་ནི་རྒྱུ་སྟེ་བརྒྱད་པའོ་ཞེས་པ་ནི་རྒྱུ་རྫོགས་པའོ། །དངོས་གྲུབ་ཀྱི་རྒྱུ་བརྒྱད་པོ་འདི་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་[3]རྣམས་གུས་པས་རབ་ཏུ་གནས་ནི་དེ་ཉིད་ལ་མཆོད་དོ། །ཅིའི་ཕྱིར་ཞེས་པ་ལ་དམ་ཚིག་སྤྱོད་པ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། རྣལ་འབྱོར་མའི་ཐ་སྙད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། ༡༡ །

བསྒྲུབ་པ་[4]ལ་ནི་གནས་པ་ཡི། །
སྒྲུབ་པ་པོས་ནི་རྟག་ཤེས་བྱ། །
རྒྱུད་རྣམས་ཐམས་ཅད་ཐུན་མོང་སྟེ། །
རྒྱུ་མེད་པར་ནི་གཞོམ་མི་བྱ། ༡༣ །

དམ་ཚིག་ཡོངས་སུ་བསྐྱང་བ་ལ་སོགས་པའི་དམ་ཚིག་བརྒྱད་པོ་ནི། དངོས་གྲུབ་རྒྱུའོ་ཞེས་ཤེས་པར་བྱའོ། །སྒྲུབ་པ་པོ་སྒྲུབ་པ་ལ་གནས་པའི་དངོས་གྲུབ་ངེས་པར་བྱའོ། །རྒྱུད་ཀུན་གྱི་ནི་ཐུན་མོང་སྟེ། ཇི་ལྟར་འདི་རྣམས་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་རྒྱུ་ཡིན་ཞེས་

---

1. ཅ་བར་ 'སྐབས་སུ་ནི་' ཞེས་གསལ།
2. ཀུན་སྤྱོད་པའི་ནི་ གསེར། པེ།
3. དེ་ནི་ པེ། གསེར།
4. སྒྲུབ་པ་ སྣ། པེ། སྣར།

པ་ལ། ཉམས་ཤིང་སྨད་པར་མི་བྱའོ། །ཞེས་གསུངས་སོ། །གང་གིས་གནོད་པར་མི་བྱ་ཞེས་པ་ལ་རྒྱུ་མེད་པར་ནི་ངེས་པའི་རྒྱུ་མཚན་སུམ་ལ་སོགས་པ་ཚད་མས་སོ། ༡༢ །

དད་པ་ཉིད་ཀྱིས་བླང་བྱ་ཡི། །
མིག་དང་ལག་པས་མ་ཡིན་ནོ། །
གསང་བ་འདི་ནི་མི་བསྟན་ཅིང་། །
རབ་ཏུ་འབད་དེ་བསྟན་པར་བྱ། ༡༣།

གང་ཡང་དད་པ་ཙམ་གྱིས་[1]བླང་བར་བྱ་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་མིག་དང་ལག་པས་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་གསུངས་སོ། །དེའི་ཕྱིར་ཡང་སྦྲ་བ་ཉིད་དོ། །ཞེས་པས་ཕྱིར་གསང་བ་འདི་ནི་མི་བསྟན་ཅིང་ཞེས་བྱ་བ་དམ་ཚིག་བརྒྱད་དོ། ༡༣ །

བློ་ལྡན་མཐེའུ་ཆུང་བསྐྱོད་པར་[2]ནི། །
ཕོ་ཉ་མོ་རྣམས་ཡང་དག་གནས། །
དག་དང་མ་དག་འདྲེས་པ་[3]སྟེ། །
སྒྲུབ་པ་པོ་ནི་གསུམ་དུ་གནས། ༡༤ །

ཕོ་ཉ་ལ་རྗེས་སུ་ཆགས་པའི་ཚོ་ག་ནི་མཐེའུ་ཆུང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། བྱ་རོག་གི་གདོང་མའི་རྩ་བརྒྱ་གའི་མེ་ཏོག་ལྷ་བུར་གུར་གུམ་[4]གྱི་མེ་ཏོག་དང་འདྲ་བས་

1. ཐ་དད་པ་ཙམ་གྱིས་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྩ་བ་དང་མཐུན་པར་བཀོད་ཡོད།
2. བསྐྱོད་པ་ སྣ། ཞྭ།
3. འབྲེས་པ་ པེ།
4. གུར་ཀུམ་ གསེར། པེ།

ས་བོན་གང་ཡིན་པ་སྨིན་ལག་དང་གུང་མོ་གཉིས་ཀྱི་རྩེ་མོ་ཁ་སྦྱར་ཞིང་བསྐྱོད་དེ། བསྐྱོད་པ་ནི་བསྐུལ་བའོ། །ཅིའི་དོན་དུ་ཞེས་པ་ལ། ཕོ་ཉ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཕོ་ཉ་མོ་ལ་ཡང་དག་པར་གནས་པའི་རྨོས་བྱེད་འཛག་པའོ། །སློབ་མ་ཡོངས་སུ་བརྟག་པ་ནི་དག་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དག་པ་ནི་རྣམ་པར་དག་པའི་བསམ་པ་ཅན་ནོ། །མ་དག་པ་ནི་ཕྱིན་ཅི་ལོག་གི་རྣམ་པར་འདྲེས་པ་དང་སྒྲུབ་པ་རྣམ་པ་གསུམ་མོ། ༡༩ །

མཉེས་བྱེད་རྣམ་པར་དག་པ་དང་། །
གསལ་བྱེད་ཡོན་ཏན་ལྡན་པའི་མི། ༡༥ །

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་སློབ་མ་ཡོངས་སུ་བརྟག་པ་[1]དང་སྡོམ་པའི་ཆོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་ཉི་ཤུ་རྩ་དྲུག་པའོ།། ||

མཉེས་བྱེད་[2]ཅེས་པ་ནི་ཡོན་ཏན་དང་ཡོན་ཏན་ཅན་དུ་ལས་དང་འབྲས་བུའི་[3]འབྲེལ་པ་ལ་ཡིད་ཆེས་དང་ལྡན་པའོ། །རྣམ་པར་དག་པ་ནི་བསྟན་བཅོས་ལས་གསུངས་པ་རྗེས་སུ་ཁྱབ་པར་བྱེད་[4]པའོ། །གསལ་བྱེད་ནི་བློ་དང་ལྡན་པ་སྟེ། འདོད་ཆགས་དང་ཞེ་སྡང་དང་གཏི་མུག་མེད་པའི་ཡོན་ཏན་དང་དེ་ལྡན་ན་ཡང་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་མི་དེས་ནི་ལུགས་[5]ཤེས་པའོ། ༡༥ །

1. རྟག་ པ།
2. མཉས་བྱེད་ སྡེ།
3. རྒྱུ་འབྲས་བུའི་ སྡེ། ཅོ།
4. རྗེས་སུ་ཁྱད་པར་བྱེད་ པ།
5. ལུས་ སྡེ། ཅོ།

སློབ་མ་ནི་རང་གིས་བསྟན་པ་ལ་ངེས་པར་སྦྱོར་བས་ཞེས་པ་ནི་སློབ་མ་ནི་དེ་རྣམས་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་བརྟག་པ་[1]ནི་ཡོངས་སུ་བརྟག་པ་སྟེ། ཡོན་ཏན་སྐྱོན་བལྟ་བ་སྟེ། སློབ་མ་ཡོངས་སུ་བརྟག་པའོ། །སྡོམ་པ་དང་དམ་ཚིག་དག་སྟོན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ལེའུ་ཡང་དེ་ཡིན་པས་དེ་བཞིན་ནོ། །ཉི་ཤུ་རྩ་དྲུག་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་ཉི་ཤུ་རྩ་དྲུག་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། །།

*

1. ཡོངས་སུ་རྟག་པ་ ཅོ།

སྤྱོད་པ་དང་བརྟུལ་ཞུགས་དང་མཆོད་པ་དང་གཏོར་མའི་ཆོ་ག་འི་ལེའུ།

དེ་ནས་དཔའ་བོའི་སྤྱོད་བརྟུལ་ཞུགས་[1]། །
རྣལ་འབྱོར་མ་ཀུན་རབ་སྒྲུབ་པ། །
མཚན་ཉིད་དབྱེ་བ་ཤེས་བྱས་ནས། །
དངོས་གྲུབ་[2]མྱུར་དུ་འདུག་བྱེད་ནི། ༧ །

དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་དམ་ཚིག་དངོས་སུ་བསྐྱང་བ་ལ་སོགས་པ་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་མཚན་མ་དང་རྣལ་འབྱོར་མའི་མཚན་ཉིད་རྟགས་ཀྱི་ནུས་པའི་རྗེས་སུ་སྤྱོད་པའི་བརྟུལ་ཞུགས་ཡིན་ཞེས་ཤེས་པར་བྱའོ། །སྤྱོད་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མའི་སྤྱོད་པ་སྟེ། དེའི་བརྟུལ་ཞུགས་ལ་གཅིག་ཏུ་རབ་ཏུ་འདུག་པའོ། །དེ་ཡང་ཅི་བྱས་ནས་སམ་གང་གིས་སྤྱད་པར་བྱ་ཞེས་པ་ལ་དེ་ཡང་དཔའ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་ཏེ། ནི་ནི་ཉེ་བར་གཟུང་བའོ། །རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་བྱེ་བྲག་ཏུ་ཤེས་པ་ཉིད་རྣལ་འབྱོར་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲུབ་པ་པོ་དཔའ་བོ་ཡིན་ནོ། །ཅིའི་ཕྱིར་གང་ཞེས་པ་ལ། མྱུར་དུ་དངོས་གྲུབ་འདུག་པར་འགྱུར། ༧ །

གྲོང་དང་གྲོང་དུ་དེ་སོང་ནས། །
ཕོ་ཉའི་གཟུགས་ནི་མཚོན་པར་བྱ[3]། །

1. བརྟུལ་བཞུགས་ པེ།
2. དངོས་སྒྲུབ་ སྣ། ཅོ།
3. མཚོན་པ་བྱ་ སྣ།

ཡོ་ཉ་རལ་གྲིའི་སོ་འདྲ་ཞིང་། །
དག་བྱེད་བསོད་ནམས་འཕེལ་བྱེད་ཡིན། ༡།

གྲོང་དང་གྲོང་དུ་དེ་རབ་སོང་། །ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། སྐྱེ་འགྲོ་རྣམས་ཚོང་པ་ལ་རྣལ་འབྱོར་པ་དེ་ཚོགས་ཀྱི་ནང་དུ་འགྲོ་བ་སྙེ་སོང་བའོ། །དེ་ན་ཡོ་ཉ་རབ་གནས་སོ། །ཞེས་བསྒྲ་བར་བྱ་སྟེ། མངོན་དུ་འགྱུར་ཞེས་དགོངས་སོ། །དེ་ཅི་[1]ལྟར་ཤེས་པར་བྱ་ཞེས་པ་ལ་གཟུགས་ཉིད་ཀྱིས་མཚོན་པ་ཡིན་ཞེས་གསུངས་ཏེ། གཟུགས་ཉིད་ཀྱིས་མཚོན་པ་ནི་རྟོགས་པའི་རྒྱུའོ། །དེ་ཡང་སྔར་བསྟན་པའོ། །ཡོ་ཉ་དག་དང་རལ་གྲིའི་སོའི་བརྟུལ་ཞུགས་འདི་གཉིས་ནི་དག་བྱེད་དོ། །དེའི་ཕྱིར་བསོད་ནམས་འཕེལ་[2]བྱེད་དོ། །གང་གིས་འདོད་པས་རལ་གྲིའི་སོའི་བརྟུལ་ཞུགས་དེ་ཉིད་དག་པར་བྱེད་དོ། །དེའི་བསམ་པ་ཁས་བླངས་ནས་བརྗོད་པའོ། །དེ་ལ་དག་བྱེད་ཅེས་པ་ནི་གཉིས་ཀྱི་བར་དུ་སོ་ཕྱུང་མ་ཐག་གི་རལ་གྲི་བཞག་ནས་འདོད་པ་ལ་ཡིད་སྨྲོ་བའི་འདོད་མའི་ལམ་དུ་ཉལ་བ་ནི་རལ་གྲིའི་བརྟུལ་ཞུགས་སོ། །ཡང་ན་ཡོ་ཉ་དང་རལ་གྲིའི་སོ་བཞིན་འདྲ་བ་སྟེ། གོམས་པར་དཀའ་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །འོན་ཀྱང་ཡོ་ཉ་རྣམས་མཐོང་བ་ནི་ཤིན་ཏུ་ཡང་དག་པར་བྱེད་དོ། །བསོད་ནམས་འཕེལ་བས་རལ་གྲིའི་སོ་ཡང་ཡིན་ཏེ། དོན་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ། །དང་པོ་ནི་བསྡུ་བའོ། ༡ །

དེ་བཞིན་ཡོ་ཉ་ལེགས་འགྲོགས་པས། །
སྒྲུབ་པ་པོ་ཡིས་དངོས་གྲུབ་འཐོབ། །

1. དེ་ཅིའི་ ཅོ།
2. བསོད་ནམས་ལ་ གསེར།

བཟླས་བརྗོད་བསམ་གཏན་མཆོད་མེད་པར།།
སྦྱར་བ་ཉིད་དུ་འགྲུབ་པར་འགྱུར། ༡ །

དེའི་ཕྱིར་ལེགས་པར་འདྲེས་པས་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ཅེས་པ་ནི་ཡོ་ཎ་མཐོང་བ་ལ་སོགས་པས་ལེགས་པར་འདྲེས་ན་སྒྲུབ་པ་པོ་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པའོ། །གང་ཞེས་པ་ལ་ཡོ་ཎ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དེ་ལྟ་བུར་གྱུར་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་མཐོང་བ་ལ་སོགས་པས་ཡོ་ཎ་ཡང་གྲུབ་པ་ནི་ཕྱི་རོལ་གྱི་བཟླས་པ་དང་བསྒོམ་པ་དང་མཆོད་པ་མེད་པར་ཡང་གང་ཡིན་པ་མངོན་དུ་འགྱུར་པའོ། །སྦྱར་བ་ཉིད་ནི་བསྐལ་པ་བྱེ་བ་[1] གྲངས་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་དགག་པའོ། །ཡང་ན་སྔགས་ཀྱི་བཟླས་པ་དང་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་སྒོམ་པ་[2]དང་མཆོད་པ་རྣམ་པ་ལྔས་ལྷ་ལ་མཆོད་པ་མེད་པར་ཡང་ཡོ་ཎས་འགྲུབ་པ་ཞེས་པ་ནི་དེ་ལྟ་བུར་གྱུར་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་དེ་ནི་ཤིན་ཏུ་ཡང་ཕྲལ་དུ་བྱུང་ཞེས་བརྗོད་པའོ། །ཡོ་ཎ་ནི་ཡོ་ཎ་མོ་རྣམས་སོ། །ལེགས་འདྲེས་ནི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པའོ་ཞེས་པ་ནི་བཟླས་པ་ལ་སོགས་པ་མེད་པར་ཡང་མི་བྱེད་པར་དེ་ཉིད་ཀྱིས་སྒྲུབ་པ་པོ་སྒྲུབ་པ་ཞེས་བྱའོ། །ཡོ་ཎ་དང་ལེགས་པར་འདྲེས་པ་བདག་ཉིད་ཀྱི་ཚེ་བ་[3]བརྗོད་དོ་ཞེས་ཁ་ཅིག་ཟེར་རོ། ༡ །

སྔགས་དང་ཕྱག་རྒྱས་སྒྲུབ་པ་པོ། །
མཆོད་པ་ཉིད་ལ་རབ་ཏུ་འཇུག །

---

1. སྦྱར་བ་ཉིད་ན་བསྐལ་པ་བྱེ་བྲག་ གསེར།
2. དཀྱིལ་འཁོར་སྒོམ་པ་ སྡེ། ཅོ།
3. བདག་ཉིད་ཀྱི་ཚེ་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་ཡོད།

འདི་ལས་གཞན་པའི་མཆོད་མེད་དེ། |
དེ་ལྟར་བསྟན་བཅོས་ངེས་པ་ཡིན[1]། ༤ |

ཕོ་ཉ་མཐོང་བ་ཉིད་མཆོད་པ་ལ་སོགས་པ་རབ་ཏུ་འཇུག་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བསྟན་པའི་ཕྱིར་མཆོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །སྔགས་ཀྱང་ཡིན་ལ་ཕྱག་རྒྱ་ཡང་ཡིན་པས་སྔགས་དང་ཕྱག་རྒྱའོ། །འདི་ལ་ཞེས་པ་ནི་ཕོ་ཉ་མཐོང་བ་ལ་སོགས་པའོ། །དེ་ལྟར་བསྟན་བཅོས་ཞེས་པ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་བརྗོད་པའི་རྣལ་འབྱོར་མའི་རྒྱུད་ལས་སོ། ༤ |

ཕོ་ཉའི་ལམ་ལ་དགའ་རྣམས་ཀྱི། |
སྒྲུབ་པ་པོ་ནི་དངོས་གྲུབ་བརྙེན། |
རིག་སྔགས་ཕྱག་རྒྱར་ཡང་དག་ལྡན། |
ཙ་རུ་རྟག་ཏུ་བཟའ་བར་བྱ། |
སྒྲུབ་པོ་ཤིན་ཏུ་མཉམ་བཞག་པས། ༥ |

དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཕོ་ཉ་ལམ་ལ་དགའ་བའི་རྣལ་འབྱོར་པ་གདམས་ངག་ལ་ཉེ་བར་གནས་པའི་སྒྲུབ་པ་པོ་ཡིན་ནོ། །རྟག་ཏུ་ནི་ཐམས་ཅད་དུའོ། །དངོས་གྲུབ་ཆེད་དུ་བྱེད་པ་ནི[2]་དེ་ལ་གཏོལ་བའོ། །ཕོ་ཉའི་ལམ་ལ་དགའ་བའི་སྒྲུབ་པ་པོ་དངོས་གྲུབ་ཆེད་དུ་བྱེད་ཅེས་པའི་གཞུང་གཞན་ནོ། །ནི་ནི་གང་གི་ཕྱིར་རོ། །དམིགས་ཀྱིས་དགར་བའི་དུག་པའོ། །ཕོ་ཉའི་ལམ་ལ་དགའ་བའི་ནང་ནས་ཁ་ཅིག་དངོས་གྲུབ་ཆེད་དུ་བྱེད་

1. ངེས་པ་ཡིས་ སྣེ།
2. ‘ནི་’ ཞེ་ཀྱང་དུ་མེད།

པ་དེ་ནི་སྒྲུབ་པ་པོ་ཡིན་ནོ། །མཉེས་པར་བྱེད་པའི་ཁྱད་པར་སྟོན་ཏེ། ཟས་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དང་ནི་མཉེས་པར་བྱེད་པར་བསྡུ་བའོ། །ཟས་ནི་གཅིག་ཏུ་བཟའ་བའོ། །རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ལ་གསོལ་བར་བྱའོ། །རྟག་ཏུ་ནི་རྒྱུན་དུ[1]བར་མ་ཆད་པ་དུས་རིང་པོར་རོ། །སྔགས་དང་ཕྱག་རྒྱ[2]ཡང་དག་ལྡན། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྔགས་ཀྱི་བཟླས་པ་ལ་སོགས་པ་དང་ལྡན་ནོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །འདིའི་དོན་དུ། སྒྲུབ་པ་པོ་ནི་ལེགས་མཉམ་གཞག །ཅེས་པ་ནི་ལེགས་མཉམ་གཞག་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་བྱས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །རྣལ་འབྱོར་ཀུན་ལ་རབ་ཏུ་འདུག །ཅེས་པ་ནི་གཞུང་གཞན་ཏེ། དང་པོའི་དོན་ལ་དྲུག་པའོ། །བརྟན་པ་དང་གཡོ་བ་ལ་སོགས་པའི་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་ལ་རབ་ཏུ་འདུག་པའོ། །བག་མེད་རྣམས་ལ་དབང་མེད་ཕྱིར། །ཞེས་ལེགས་པར་མཉམ་པར་གཞག[3]པས་ཞེས་པ་ནི་དོན་གཞན་ནོ། ༥ །

རིགས་རྣམས་ཀུན་ལ་སྤྱོད་པར་བྱ། །
བཟའ་མིན་པར་ནི་མི་བརྟག་གོ །
དེ་ཉིད་དབྱེར་མེད་དེ་ཡིས་ནི། །
པོ་ཉ་མོ་ནི་གཉིས་བསྒྲུབ་བྱ། ༦ །

རིགས་རྣམས་ཀུན་ལ་སྤྱོད་བྱས་ཤིང་། །ཞེས་པ་ནི་རིགས་ཐམས་ཅད་དང་ལྷན་

1. རྒྱུན་ཏུ་ ཅོ།
2. རིགས་སྔགས་ཕྱག་རྒྱ་ རྒྱ་བར་གསལ།
3. མཉམ་པར་བཞག་ གསེར། པེ།

ཅིག་ཏུ་བཟའ་བའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །འདི་ནི་བཟའ་བའོ་འདི་ནི་མི་བཟའ་བའོ་ཞེས་བྱེ་བྲག་ཏུ་མི་བྱའོ། །དེ་ལྟར་ཅིའི་ཕྱིར་མ་ལུས་པ་བྱེད་ཅེས་པ་ལ་ནི། དེ་ཉིད་དུ་ནི་དབྱེར་མེད་དེ། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། མ་ལུས་པ་དབྱེར་མེད་པར་དེ་སྤྱོད་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་གཅིག་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་ནོ། །ཡོ་ཉ་དག་ཀྱང་དབྱེར་མེད་པ་སྟེ་ཐམས་ཅད་དབྱེར་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་ཡོ་ཉ་མའི་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་སོ།། གྲུབ་པ་གཉིས་ཞེས་པ་ནི་གྲུབ་པ་གཉིས་མི་རྟོག་པ་དང་ཡོ་ཉ་ཡང་ངོ་། ༦ །

དངོས་གྲུབ་ཚོ་ག་ལ་སྤྱོད་ཚེ[1]། །
ཡོ་ཉ་གཅིག་པུ་ཁོ་ན་ཡིན། །
རབ་བསྒྲུལ་ཉིད་[2]དང་དངོས་གྲུབ་ནི། །
སྒྲུབ་པ་དག་དང་ཉེ་བ་སྟེ། ༧ །

སྒྲུབ་པ་གཉིས་[3]ཞེས་པ་ནི་རྣམ་པ་གཉིས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་[4]སྟེ། དེ་ཉིད་འཇིག་རྟེན་པའི་བདེ་བ་ཉོན་མོངས་པ་དང་བཅས་པ་དང་། ཉོན་མོངས་པ་མེད་པ་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པ་གཅིག་པོ་ཁོ་ན་ནི་སྒྲུབ་བྱེད་ཀྱི་ཚའོ། །ཁོ་ན་ནི་ཤིན་ཏུ་ཡང་ངེས་པར་བྱས་པའོ། །དེ་གང་ཡིན་ཞེས་པ་ལ་ཡོ་ཉ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། གཉིས་ཀའི་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་དོན་དུ་ཡོ་ཉ་ཉིད། །འབའ་ཞིག་ཡིན་གྱི་གཞན་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །གང་གི་

1. སྤྱོད་ཚེ་ སྣ། པེ། ལྷ།
2. རང་དགའ་ཉིད་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
3. སྒྲུབ་གཉིས་ གསེར། པེ།
4. སྒྲུབ་པར་བྱ་ པེ། གསེར།

ཕྱིར་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་[1]དེའི་དྲིན་གྱིས་འགྲུབ་ཅེས་བྱའོ། །དེའི་དྲིན་ཅི་ཞེས་པ་ལ་རབ་བསྐུལ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། དྲིན་གང་གིས་བསྐུལ་བས་དེའི་བསམ་པ་འགྲུབ་སྟེ། སྟོན་དུ་བྱེད་པའོ། །གཉིས་དངོས་གྲུབ་བསྒྲུབ་པ་ལས་ཉེ་བར་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །དེ་ལ་དེ་ཉིད་དུ་དབྱེར་མེད་ཅེས་པ་ནི་དེ་ཉིད་དུ་རང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་དབྱེར་མེད་དོ། །དེ་ལ་ཕོ་ཉ་ཡང་སྒྲུབ་པ་[2]རྣམ་པ་གཉིས་ཞེས་པ་ནི་སྒྲུབ་པ་གཉིས་ནི་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚོགས་དང་རྣལ་འབྱོར་མའོ། །སྤྱོད་བཞིན་པས་དངོས་གྲུབ་གཉིས་གྲུབ་པའོ། །འོན་ཀྱང་ཕོ་ཉ་གཅིག་པུ་ཁོ་ན་ཡིན་ཞེས་པ་ནི་གཅིག་སྒྲུབ་པའི་ཆ་ནི་ཕོ་ཉའོ། །དེའི་དངོས་གྲུབ་ཉེ་བའི་ཕྱིར་ཞེས་པ་ནི་གཞན་གྱི་བཤད་པའོ། །འདིར་ཡང་གཞུང་ལྷག་པ་ཡོད་དེ། ཞིང་དང་གྲུབ་གནས་ན་ནི།

མཁའ་འགྲོ་མ་ནི་འདི་རུ་འཚོག །དེ་རུ་གནས་ལ་བརླས་པ་བྱ། །
ཟས་ལ་གཅིག་ཏུ་སྤྱོད་པ་ནི། །དེ་དང་དེ་རུ་རོལ་པ་གནས། །

ཞེས་གསུངས་ཏེ། གཞུང་འདི་ཉིད་ལ་འདུག་པར་བྱ་སྟེ། སྙིང་པོར་བྱས་ཏེ་ཞེས་པ་[3]ཞིང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། བཟའ་བ་དག་ལ་བཟའ་བར་བྱའོ། ༧ །

བླ་མ་རྒྱུད་རིམ་[4]གྱིས་ཐོབ་པའི། །
དབང་བསྐུར་བས་ནི་སྔགས་ལེགས་ལྡན། །

---

1. རྣམ་པར་མི་རྟོག་ སྡེ། ཅོ།
2. བསྒྲུབ་པ་ ཅོ།
3. ཞེས་པ་ནི་ གསེར། པེ།
4. བླ་མ་བརྒྱུད་རིམ་ ལྷ། སྣ། པེ།

ཡོ་ཆ་རྣམས་སུ་ཡང་དག་བཤད། །
ཕྱག་རྒྱར་ལེགས་སྦྱོར་དང་ཚུལ་ཅན། ༡ །

དབང་བསྐུར་ཉིད་ཐོབ་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་ནི་རྩེ་བའི་ཞེས་པ་ལ་བླ་མ་[1]ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། །བླ་མའི་བརྒྱུད་རིམ་[2]ནི་བླ་མ་གཞན་དང་གཞན་ནས་བརྒྱུད་དེ་འོངས་པའི་རིམ་པའོ། །ཚུ་ལ་སོགས་པ་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་ཁྱད་པར་རོ། །དེ་ཡིས་དབང་བསྐུར་བ་ཐོབ་པའོ། །དབང་བསྐུར་བ་ནི་དབང་བསྐུར་བ་སྟེ། ལྡན་པར་འོས་པའི་སློབ་དཔོན་ལ་སོགས་པའི་དབང་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །སློབ་མ་ཞེས་གོ་བར་བྱའོ། །ལེགས་པའི་སྡོམ་ནི་[3]སྡོམ་པ་ལེགས་པའོ། །ལེགས་སྡུགས་ཞེས་པའི་གཞུང་ལ་ནི་བཟླས་པའི་སྡུགས་སོ། །ཡང་དག་ལྡན་ཞེས་པ་ལ་གཞུང་གཞན་[4]ནོ། །བརྒྱུད་པ་[5]ཐོབ་པས་ཡོ་ཆ་མོ་རུ་ཡང་དག་བཤད་ཅེས་པ་ནི་ཡོ་ཆ་ནི་མཛེས་པར་བརྗོད་པའོ། །སློབ་མ་ནི་ཆོས་ཀྱི་སློབ་མ་སྟེ་ཆོས་ཀྱི་ཁྱད་པར་དུ་བྱས་པའོ། །འདི་དག་དབྱེར་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ནས་དེ་ལྟ་བུར་གྱུར་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་ལ་རྣལ་འབྱོར་མ་དགའ་བར་འགྱུར་རོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །ཅི་ཞིག་གི་ཕྱིར་ཞེས་པ་ལ་ཕྱག་རྒྱ་ལེགས་སྦྱོར་དང་ཚུལ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། ཕྱག་རྒྱ་དང་ཡང་དག་པར་སྦྱོར་བ་ལས་སྐྱེད་པའི་

1. ‘ཞེས་པ་ལ་བླ་མ་’ སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེའི་པར་མ་གཉིས་པོའི་ནང་མ་གསལ།
2. བརྒྱུད་རིམས་ པེ། རྒྱུད་རིམས་ གསེར།
3. སྡོམ་པ་ནི་ གསེར། པེ།
4. གཞུང་བཞིན་ སྡེ། ཅོ།
5. བརྒྱུད་པ་ གསེར། པེ།

ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་དགའ་བའི་ཡང་ཡེ་ཤེས་ཞེས་པ་[1]དེ་ནི་བཟའ་བའོ། །དེའི་ཕྱིར་དང་ནི་གང་གི་ཕྱིར་གྱི་དོན་ཏོ།

ལེགས་རྫོགས་ཡེ་ཤེས་ལྷན་སྐྱེས་པའོ།
ནང་པར་སྦྱར་ལངས་སེམས་བདག་ཉིད།
ལུས་ལ་ཐམས་ཅད་བྱས་ནས་ནི།

ཡང་དག་པར་གང་བའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཡུལ་ནི་[2]འདིར་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ཤེས་པ་ཡིན་ནོ། །ཡེ་ཤེས་ལྷན་སྐྱེས་ཡང་དག་རྫོགས་ཞེས་པ་ནི་རྐྱེན་མེད་པ་དེ་ཤིན་ཏུ་རིང་པོར་བརྗོད་པའོ། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ཉིད་ཀྱི་སྒོམ་[3]པའི་རིམ་པ་ནི་ནང་པར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ་ནང་པར་ནི་སྐྱ་བར་རོ། །ལངས་པ་ནི་མལ་ནས་ལངས་པའོ། །སེམས་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཡིན་ནོ། །སེམས་ཙམ་ཉིད་ཀྱི་བདག་ཉིད་རང་བཞིན་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ་དེ་ལྟར་ཅི་བྱས་ནས་ཞེས་པ་ལ་ལུས་ཀྱི་བྱ་བ་ཀུན་བྱས་ཏེ་ཞེས་གསུངས་སོ། །ཤེས་རབ་ཀྱི་མཚོན་གྱིས་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་ལུས་ཀྱང་དུམ་བུར་བྱེ་བྲག་ཏུ་ཕྱེ་ནས་སྟོང་པ་ཉིད་བསྒོམ་མོ་ཞེས་དགོངས་སོ།

ཡན་ལག་ལས་འདས་བསྟན་བཅོས་[4]རྣམས།།
ལུས་ལ་གནས་པ་[5]ཀུན་ཏུ་སྤྱད།

---

1. ཡེ་ཤེས་པ་ སྡེ། ཅོ།
2. ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ལུས་ནི་ རྒྱ་དཔེ།
3. བསྒོམ་ གསེར། པེ།
4. མཆོན་ཆ་ རྩ་བ། གོང་དུ་འགྲེལ་པ་དང་མཐུན་པར་བཀོད་ཡོད
5. གནས་པར་ སྡེ།

ལུས་ནི་དགེ་བྱེད་བྱས་ནས་སུ། །
རྟག་ཏུ་སྔགས་ནི་བརྗོད་ནས་སུ། ༡༠ །

སྔོན་ཉིད་དུ་ཇི་ལྟ་བར་སོང་ནས་ཞེས་པ་ལ། ཡན་ལག་ཤིན་ཏུའང་བསྟན་བཅོས་ནི། །ལུས་ལ་གནས་པ་ཀུན་ཏུ་སྤྱད། །ཅེས་གསུངས་སོ། །སེམས་ཅན་ལ་སློབ་པར་བྱེད་པས་ན་བསྟན་བཅོས་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གསུང་ལ་བརྟེན་[1]པའི་རྣམ་པ་དེ་རྣམས་ལུས་ལ་གནས་པ་ནི་མིག་ལ་སོགས་པ་ལ་དགོད་པར་བྱའོ། །ཡན་ལག་ཤིན་ཏུ་ནི་དོན་དམ་པར་རང་བཞིན་མེད་པའོ། །ཡང་ན་སློབ་མའི་རྟོག་པ་དང་[2]། སྒྲ་དང་ངེས་པའི་ཚིག་དང་། སྡེབ་སྦྱོར་དང་། བརྩམས་པ་[3]དང་རྩིས་ཞེས་བྱ་བ་དང་དྲུག་ནི་རིག་བྱེད་[4]ཀྱི་ཡན་ལག་གོ །དེ་རྣམས་གནས་པ་[5]ན་ཤིན་ཏུ་ཡན་ལག་ནི་དེས་རྟོགས་པ་མ་ཡིན་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དགེ་བྱེད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་དག་པའི་རྗེས་སུ་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་བྱས་པས་ནི་དགེ་བྱེད་ཉིད་དོ། །ཨོཾ་སྭབྷཱབ་ཤུདྡྷཿ སརྦདྷརྨཱཿ སྭབྷཱབ་ཤུདྡྷོ྅ཧཾ་ཞེས་བྱ་བའི་སྔགས་བརྗོད་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་རྟག་ཏུ་རྣལ་འབྱོར་པས་བརྗོད་པར་བྱའོ། །དེ་རྒྱས་པར་རྒྱུད་སྣ་ཚོགས་ནས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། ༡༠ །

---

1. གསུང་ལ་བསྟན་ སྡེ། ཅོ།
2. བསླབ་པ་དང་རྟོག་པ་དང་ རྒྱ་དཔེ།
3. བསགས་པ་ པེ། གསེར།
4. ཞེས་བྱ་བ་དྲུག་ནི་རིགས་བྱེད་ གསེར། ཞེས་བྱ་བ་དྲུག་ནི་རིག་བྱེད་ པེ།
5. གནས་པས་ གསེར། གནན་པ་ རྒྱ་དཔེ།

རྣལ་འབྱོར་གནས་རྣམས་ངེས་བསྟན་ཅིང་། །
བསྟན་བཅོས་རྣམས་ནི་བགོམ་མི་བྱ[1]། །
དམ་ཚིག་ཅན་ལ་ཁྲོ་མི་བྱ། །
མངོན་པར་བརྗོད་ལས་འདས་མི་བྱ། ༡༡ །

དེ་དང་ལྡན་ཅིག་བདེ་བར་བྱ། །
གྲོལ་བའི་དོན་དང་བདེ་དོན་དུ། །
དམ་ཚིག་སྤྱོད་པ་ཉིད་དུ་བྱ། །
རྣམ་འཕྲུལ་[2]སེམས་པ་ལས་གྲོལ་ཞིང་། ༡༢ །

རྣལ་འབྱོར་གནས་ནི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་གནས་ཏེ་གོ་ཆ་གཉིས་ཀྱི་གནས་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །ངེས་བསྟན་[3]ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེའི་སྔགས་སམ་དེ་ལས་སྐྱེས་པའི་ལྷ་ར་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པར་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །འདིས་ཀྱང་བསྒོམ་པའི་ཕྱོགས་ཙམ་ཞིག་བསྟན་[4]ཏོ། བསྟན་བཅོས་རྣམས་ནི་བགོམ་མི་བྱ། །ཞེས་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ལ་བགོམ་[5]པར་མི་བྱའོ། །ཡང་ན་ལྷ་རྣམས་ཀྱི་མཚན་མ་དང་རིག་བྱེད་ཀྱི་ཚིག་ཡིན་ཞེས་ཁ་ཅིག་ཟེར་ཏོ། སྤྱོད་པ་བྱེད་པའི་རྣལ་འབྱོར་པས་རོལ་པའི་དོན་དུ་[6]ཁ་ཅིག་ཏུ་

1. སྒོམ་མི་བྱ་ པེ། འགོམ་མི་བྱ་ སྡེ། མཆོད་ཆ་རྣམས་ནི་བསྒོམ་མི་བྱ་ སྣ། ལྷ།
2. རྣམ་འཕྲུལ་ སྣ། ལྷ།
3. བསྟན་ནས་ ཅོ།
4. བསྟོན་ ཅོ།
5. བསྟན་བཅོས……བསྒོམ་མི་བྱ། །ཞེས……………རྣམས་ལ་བསྒོམ་ སྡེ། པེ།
6. རྣལ་འབྱོར་པས་ཕྱི་རོལ་པའི་དོན་དུ་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་ཡོད།

བཤད་པར་བྱ་བའི་ཆེད་དུ་རིག་བྱེད་ཀྱི་ཚིག་གི་དོན་ཀུང་སྐྱོང་བར་བྱེད་དོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །དམ་ཚིག་བསྟན་པ་ཁྲོ་མི་བྱ། །ཞེས་པ་ནི་དམ་ཚིག་ཅན་སྐྱོད་པ་བྱེད་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་ལ་ཁྲོ་བོའི་སེམས་བསྐྱེད་པར་མི་འོས་ཞེས་[1]དགོངས་སོ། །མངོན་པར་བརྙོན་ལས་འདའ་མི་བྱ། །ཞེས་པ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པ་ལ་མངོན་པར་བརྙོན་པ་ཞེས་པ་ནི་དེ་མངོན་པར་བསགས་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་སོ། །བདེ་བ་ནི་ཤིན་ཏུ་དགའ་བ་ལ་སོགས་པའི་བདེ་བའོ། །གྲོལ་བའི་དོན་དང་དེ་དོན་དུ་ཞེས་པ་ནི་གྲོལ་བའི་དོན་ནི་བདེ་བའི་དོན་དུ་ཡང་བྱས་པ་སྟེ། འདོད་པའི་བསྟན་བཅོས་ནས་འབྱུང་བ་བཞིན་བྱས་ལ་དེ་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་ཉལ་ལོ་ཞེས་སྨྲར་རོ། །རྣམ་འཁྲུལ་[2]བ་ནི་རྣམ་པར་རོལ་པ་ཡང་དག་པར་འབྱུང་བ་སྨྲར་བར་བྱ་ཞེས་སྨྲར་རོ། །གལ་ཏེ་བྱ་བར་འོས་པ་ཡིན་ན་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །གལ་ཏེ་འདོད་པ་ལ་དགའ་ན་དེ་བྱའོ་ཞེས་པའི་བར་རོ། ༡༡–༡༣ །

མཚན་མོ་ཏག་པར་གཅེར་བུ་[3]སྟེ། །
གནག་དང་དམར་བར་ཏག་ཏུ་འགྱུར། །
སྲོག་ཆགས་ཡན་ལག་ན་བཟར་གྱོན། །
མགུལ་རྒྱན་གདུ་བུ་དཔུང་རྒྱན་དང་། ༡༣ །

1. མི་འོས་ཤེས་ གསེར། པེ།
2. འགྲེལ་པར་‘རྣམ་འཁྲུ་’ཞེས་ཡོད་ཀྱང་གོང་དུ་རྩ་བ་དང་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་ཡོད།
3. མཚན་མར་བཏག་པར་གཅེར་བུ། པེ། མཚན་མོ་ཏག་པར་གཅེར་བུར། སྣ།

དེ་ལ་མཚན་མོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་གནག་[1]ལ་ཆགས་པ་ནི་ནག་པའི་ཕྱོགས་ལ་ཆགས་པའོ། །མགུལ་རྒྱན་ལ་སོགས་པ་ནི་[2]མིའི་མགོས་སྤྲས་པའོ། །གདུ་བུ་[3]ཞེས་པ་ནི་གདུ་བུའོ། ༡༣ །

རྣ་ཆ་ཚངས་པའི་སྐུད་པ་དང་། །
མགོ་བོའི་ཕྲེང་བས་མགུལ་དུ་བརྒྱན། །
སྐེ་རགས་སིལ་སིལ་སྒྲ་སྒྲོགས་ཤིང་[4]། ༡༤ །

ཚངས་སྐུད་དང་སྐེ་རགས་སྒྲ་ཡིས་སྤྲས་པ་དང་། དྲིལ་བུ་གཡེར་ཀ་[5]དང་ལྡན་པའི་རྐང་རྒྱན་དེའི་སྒྲ་དང་ལྡན་ཅིག་ཏུ་མགུལ་རྒྱན་ལ་སོགས་པ་འཆང་། ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༡༤ །

རལ་པའི་ཅོད་པན་དར་གྱིས་དཔྱངས[6]། །
བཅོས་མའི་སྒྲ་ལ་སོགས་པས་བརྒྱན། །
རྡོ་རྗེ་ཐོད་པ་ཁ་ཊྭཱཾ་བཅས། །
ཌཱ་མ་རུ་རྡུང་ཧཱུྃ་སྒྲ་སྒྲོགས[7]། ༡༥ །

1. གནས་ སྡེ། ཅོ།
2. ‘ནི་’ གསེར་པེ་གཉིས་སུ་མེད།
3. གདུ་བ་ གསེར། གདུབ་ པེ།
4. སྐེ་རག་སིལ་སིལ་སྒྲ་སྒྲོག་ཅིང་། ལྷ།
5. གཡེར་ཁ་ གསེར། པེ།
6. དར་གྱིས་བཅིངས། ལྷ།
7. སྒྲོག ལྷ།

རལ་པའི་ཅོད་པན་ཞེས་པ་ནི་རལ་པའི་དབུ་རྒྱན་[1]ནོ། །དར་དཔྱངས་ཀྱི་མཚན་མ་ཞེས་པ་ནི་དཔའ་བོའི་དར་དཔྱངས་སོ། །བཅོས་མའི་སྒྲ་ལ་སོགས་པས་བརྒྱན་ཞེས་པ་ནི་གཞན་སྒྲ་དང་། ཛ་མ་ལ་སོགས་པས་མཛེས་པར་བྱས་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །རྡོ་རྗེས་མཚན་པ་ནི་རྡོ་རྗེས་མཚན་པའི་པདྨ་སྟེ། ཐོད་པ་རྡོ་རྗེ་པདྨ་དང་ལྡན་ཅིག་ཏུ་རྡོ་རྗེ་ཁ་ཊྭཱཾ་ག་དང་ཌ་མ་རུའི་སྒྲ་ཧཱུྃ་གི་རྣམ་པར་གནས་པ་ཞེས་པ་ནི་དེ་དེ་བཞིན་ནོ། ༡༥ །

དཔའ་བོ་དཔའ་མོ་ཐམས་ཅད་ནི། །
གོ་ཆ་གསུམ་གྱིས་བརྒྱན་པ་ཡིན[2]། །
སྦྲོག་ཆགས་ཡན་ལག་ན་བཟར་གྱོན[3]། །
བདེ་བ་འདོད་པས་[4]བདེ་བསྐྱོད་བྱ། ༡༦ །

དཔའ་བོ་ཐམས་ཅད་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཐམས་ཅད་དཔའ་བོའི་སྙེ་འཁོར་ལོ་གསུམ་སྟེ། དེའི་རྣལ་འབྱོར་མ་ནི་རབ་ཏུ་གཏུམ་མོ་ལ་སོགས་པའི་རྣལ་འབྱོར་མའོ། །འདི་རྣལ་འབྱོར་པ་དེས་བསྒོམ་པར་བྱའོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་གོ་ཆ་གསུམ་གྱིས་རྣམ་པར་བརྒྱན་ཏེ། འཁོར་ལོ་གསུམ་ལ་གནས་པའི་གོ་ཆ་གསུམ་གྱིས་[5]

---

1. དབུ་བརྒྱན་ སྡེ། ཅོ།
2. 'མགུལ་རྒྱན་གདུ་བུ་དཔུང་རྒྱན་དང་།'ཞེས་པ་ནས་'གོ་ཆ་གསུམ་གྱིས་བརྒྱན་པ་ཡིན།'ཞེས་པའི་བར་གྱི་ཚིག་རྐང་བཅུ་པོ་རྣམས་པེ་ཀིང་དང་སྣར་ཐང་པར་མ་གཉིས་སུ་ཆད་པར་སྣང་།
3. ཚིག་རྐང་འདི་བོད་དཔེར་མེད་ཀྱང་རྒྱ་དཔེའི་འགྲེལ་པ་ལྟར་གོང་དུ་བཀོད་པ་ཡིན།
4. འདོད་པའི་ པེ།
5. གོ་ཆ་གསུམ་གྱི་ སྡེ། ཅོ།

བདུད་ཀྱི་མཚོན་ཆ་བཟློག་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཏེ། ཧཱུ་སུམ་ཙུ་རྩ་དྲུག[1]སྒོམ་པ་དང་ལྡན་པའོ་ཞེས་བསམ་པའོ། །སྲོག་ཆགས་ལས་བྱུང་གྱོན་ཞེས་པ་ནི་པགས་པའི་གོས་གྱོན་པར་བྱའོ་ཞེས་སེམས་པར་བྱའོ། །གྱོན་པ་ནི་མནབས་པ་སྟེ་གོས་[2]གཡོགས་སོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ངོ་བོ་ཉིད་ལ་སྐུའི་རྒྱན་བྱིན་པའོ། །དེ་དང་ལྡན་ཅིག་བདེ་བ་བྱ་ཞེས་པ་འདི་རྒྱས་པར་སྟོན་ཏེ། །བདེ་དོན་བསྒྲོད་པས་བདེ་ཐོབ་འགྱུར། །ཞེས་གསུངས་སོ། ༡༦ |

མཆོད་ཕྱིར་ཐོགས་ནི་ཡོངས་སྤྲངས་ལ། |
གཙང་སྦྲ་ཤྲཱི་ཧེ་རུ་ཀར་གནས། |
ཕྱག་རྒྱ་ལྔ་དང་ཡང་དག་ལྡན། |
སྒྲུབ་པ་པོ་ཡིས་དངོས་གྲུབ་བརྩོན། ༡༧ |

མགུལ་རྒྱན་གདུ་བུ་རྣ་རྒྱན་དང་། |
སྤྱི་བོར་ནོར་བུས་རྣམ་པར་བརྒྱན[3]། |
མཆོད་ཕྱིར་ཐོགས་དང་ཐལ་བ་དང་། |
དུས་ཀུན་ཏུ་ནི་རྣམ་པར་གནས། ༡༨ |

མཚན་མོ་རྟག་པར་གསལ་བྱ་ཞིང་། |
ཉིན་པར་གསང་བ་ཉིད་དུ་བྱ། |

---

1. རྒྱ་དཔེར་ནི་'ཧཱུ་སུམ་ཙུ་རྩ་དྲུག' ཅེས་འཁོད་འདུག
2. 'གོས' གསེར་བྲིས་དང་པེ་ཅིང་གི་པར་མ་གཉིས་པོའི་ནང་མ་གསལ།
3. རྣམ་པར་རྒྱན་ སྣ།

བྱ་བའི་ཡེ་ཤེས་ཤིན་ཏུ་སྤྲས[1]། །
རབ་ཏུ་ཞི་ཞིང་ངལ་བ་སྤྱངས[2]། ༡༩ །

གཙང་སྦྲ་གསུམ་དུ་ཤེས་བྱ་ཞིང་། །
རང་གི་རྒྱུན་བཞིན་རྣམ་པར་གནས[3]། །
རིགས་དང་རིགས་མིན་ངོར་མི་བལྟ། །
སྤྱི་གཙུག་ལ་སོགས་བཅིང་བ[4]སྤྱངས། ༢༠ །

མཆོད་ཕྱིར་ཐོགས་ཀྱང་ཡང་དག་སྤྲངས[5]། །གཙང་སྦྲ་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་གནས་ཞེས་པ་ནི་ཀྱང་ནི་མ་གསུངས་པ་ཡོངས་སུ་བསྡུ་བའོ། །ཐོས་པ་དང་དྲན་པ་ལ་སོགས་པ་བྱས་པའི་མཆོད་ཕྱིར་ཐོགས་པ་ལ་སོགས་པ་བསྐྱེད་པའི་གཙང་སྦྲ་སྤྲངས་ནས་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་རྣལ་འབྱོར་ལ་གནས་པ་ནི་གཙང་སྦྲ་ཞེས་བསམ་པའོ། །

ཕྱག་རྒྱ་ལྔ་ནི་རབ་བཅིངས་ནས[6]། །
དུས་རྣམས་ཀུན་དུ་རྣམ་པར་གནས། །
མཚན་མོ་རྟག་ཏུ་གསལ་བར་བྱ། །
ཉིན་མོ་ཡང་ནི་ལེགས་སྦྲ་བྱ། །ཞེས་པ་ནི།

---

1. དབྱེ་བའི་ཡེ་ཤེས་ཤིན་ཏུ་སྨྲས། ལྷ། དབྱེ་བའི་ཡེ་ཤེས་ཤིན་ཏུ་སྤྲས། སྡེ། པེ། སྣ།
2. ངལ་བ་བྲལ་ ཅ་བ།
3. ནམ་པར་གནས་ པེ།
4. བཅིངས་པ་ སྣ། ལྷ།
5. མཆོད་ཕྱིར་ཐོགས་ནི་ཡོངས་སྤྱངས་ལ། ཅ་བ།
6. རབ་བཅིངས་ན་ པེ།

བྱ་བའི་ཡེ་ཤེས་ལེགས་པར་སྦྲ། །
རབ་ཏུ་ཞི་བ་ངལ་བ་[1]སྤངས། །
གཙང་སྦྲ་རྣམ་པ་གསུམ་དུ་ཤེས། །
རང་གི་རྒྱུན་གྱིས་རྣམ་པར་གནས། །

ཞེས་པ་ནི་གཞུང་ལྷག་པ་[2]སྟེ། དེ་ལ་ནི་དེའི་དོན་ནི་རྡོ་རྗེ་དང་རིན་པོ་ཆེ་དང་། པདྨ་དང་ལས་དང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་རིགས་དང་སོ་སོར་འབྲེལ་བ་དང་ཞེས་བསམ་པའོ། །མཚན་མོ་རིགས་ལྷ་དང་སོ་སོར་འབྲེལ་པ་ནི་གསལ་བའོ། །རྟེན་མ་བཅུག་པའོ། །ཞི་ནི་ཤིན་ཏུ་བའི་དོན་ཏོ། །དེ་ཉིན་མོ་ལེགས་པར་སྦྲ་བར་[3]བྱའོ། ། ཡང་ནི་[4]ངེས་པའི་དོན་ཏོ། །སློད་ཅིང་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་ཁ་ན་མ་ཐོ་[5]བར་གྱུར་ཅིང་ཞེས་པའོ། །བྱ་བས་བསྙེན་[6]པའི་ཡེ་ཤེས་ནི་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱང་ངོ་། ། ལེགས་པར་སྦྲ་[7]བ་ནི་རབ་ཏུ་ཞི་ཞིང་སྙིང་རྗེ་དང་ལྡན་པས་ངལ་བ་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའོ། །གཙང་སྦྲ་དེ་ཡང་རྣམ་པ་གསུམ་ནི་དེ་ཡང་ཞེན་པ་མེད་པས་འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པ་ལ་རབ་ཏུ་འཇུག་པའོ། །ཡང་ན་ཕོ་ཉ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་འོག་

---

1. རལ་པ་ ཅོ།
2. ལྷགས་པ་ སྡེ། ཅོ།
3. སྦྲ་བར་ གསེར།
4. ཡང་ན་ པེ།
5. ཁ་ན་མ་ཐོབ་ གསེར།
6. བསྙན་ སྡེ། ཅོ།
7. ལེགས་པར་སྦྲ་ གསེར།

ནས་[1]འཆད་པའི་ཕྱིར་རོ། །རང་གི་རྒྱུན་དུ་ནི་[2]རང་གི་སེམས་རྣམ་པར་གནས་པ་ཞེས་པའི་བྱ་བའོ། །མི་རིགས་ནི་བྲམ་ཟེ་ལ་སོགས་པའོ། །རིགས་མ་ཡིན་[3]པ་ནི་མཐར་སྐྱེས་སོ། །ངོར་མི་ལྟ་ཞེས་པ་ནི་གཙོ་བོར་བྱས་པའོ། །མི་ལྟ་བ་ནི་སྨོད་པ་བྱེད་པས་ན་སྨད་དེ་གཙོ་བོ་མ་ཡིན་ནོ། །སྤྱི་གཙུག་ཏུ་གཙུག་ཕུད་དོ། །སོགས་ཀྱི་སྒྲས་ནི་ཅོད་པན་དང་ཐལ་བ་དང་རལ་པ་ལ་སོགས་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་རྣམས་བཅིང་པ་ནི་འཆང་བ་སྟེ། དེ་སྤངས་[4]པའོ། ༡༧-༣༠ །

ཡོ་ཉ་གཙང་སྦྲ་དང་པོ་[5]ཡིན། །
གཉིས་པ་ཞི་བ་ཡིན་པར་[6]འདོད། །
ཟས་གཅིག་ཏུ་ནི་ཟ་བ་ཉིད[7]། །
གཙང་སྦྲ་གསུམ་པ་ཡིན་པར་བཤད། ༣༡ །
རྣལ་འབྱོར་པ་ཡིས་རྟག་པ་རུ[8]། །
གཙང་སྦྲ་འདི་དག་རྟག་ཏུ་བསྲུང་[9]། །

1. སོགས་པའོ་གནས་ གསེར། པེ།
2. རྒྱུན་ནི་ གསེར། པེ།
3. རིམས་མ་ཡིན་ སྡེ། ཅོ།
4. དེ་སྤང་ གསེར། པེ།
5. གཙང་སྲ་དྲང་པོ་ སྣ། གཙང་སྦྲ་དྲང་པོ་ ལྷ།
6. ཞི་བ་ལན་པར་ ལྷ།
7. ཟ་བ་དང་ ལྷ། སྣ།
8. རྟག་པར་རུ་ སྣ། ལྷ།
9. རྟག་ཏུ་སྲུང་ པེ།

གཙང་མ་དག་པའི་རིམ་ཐོབ་ན[1]། །
དངོས་གྲུབ་གང་ལས་འབྱུང་མི་འགྱུར[2]།༢༢།

གཙང་སྦྲ་གཞན་ནི་[3]ཕོ་ཉ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཕོ་ཉ་ནི་ཕོ་ཉ་སྟེ། ཐིག་ལེ་གཅིག་ཕྱིས་པའོ། །ཟླ་བ་ཞེས་པ་ནི་ཟླ་བ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་སོ། །ཟས་གཅིག་ནི་གང་དེ་བཟའ་བའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཟ་བ་ཉིད་ཅེས་པ་[4]ནི་ཐིག་ལེ་གཅིག་ཕྱིས་པའོ། །དེ་ཡང་གཙང་སྦྲ་གསུམ་པའོ། །གཙང་སྦྲ་དེ་ཡང་རབ་ཏུ་སྦྱོང་བ་ནི་གཙང་སྦྲ་དག་པ་སྟེ། རིམ་གྱིས་ཐོབ་ནས་ཅིའི་ཕྱིར་དངོས་གྲུབ་ཏུ་མི་འགྱུར་ཞེས་དགོངས་སོ། །གཙང་སྦྲ་དེ་རྣམས་ཡོངས་སུ་བསྐྱང་པ་ལས་གཙང་སྦྲ་དག་པ་ཐོབ་པས། ཅིའི་ཕྱིར་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཏུ་མི་འགྱུར། ༢༡-༢༢ །

དེ་ཉིད་བསྡུས་ལས་གང་གསུངས་དང་། །
དེ་བཞིན་བདེ་མཆོག་ལས་གང་གསུངས། །
གསང་བའི་རྒྱུད་ལས་ཡང་དག་བཤད། །
དེ་བཞིན་དཔལ་མཆོག་དང་པོ་དང་། ༢༣ །

རྡོ་རྗེ་[5]འཇིགས་བྱེད་རྒྱུད་དུ་ནི། །
བཟླས་དང་བརྟུལ་ཞུགས་སོགས་འགྲུབ་སྟེ། །

1. རིམ་ཐོབ་ནི་ པེ།
2. དངོས་གྲུབ་གང་ལ་འབྱུང་བར་འགྱུར། སྣ། པེ། ལྷ།
3. གཞན་ནོ་ གསེར། པེ།
4. ཞེས་པ་ གསེར། པེ།
5. རྡོ་རྗེའི་ སྣ།

དེ་འདིར་བསམ་གཏན་ཅམ་གྱིས་ནི། །
སྡུཏ་པས་སྐད་ཅིག་གིས་འགྲུབ་འགྱུར། ༣༩ །

བདེ་མཆོག་ཅེས་པ་ནི་བདེ་མཆོག་བླ་མའོ། །གསང་བའི་རྒྱུད་ཅེས་པ་ནི་གསང་བ་མཛོད་ལ་སོགས་པའོ། །དེ་བཞིན་ཞེས་པ་ནི་འཛིན་པ་མེད་པའོ། །ཉིད་ནི་ཉེ་བར་གཟུང་བའོ། །དང་ནི་[1]སྤྱོད་པ་བསྡུ་བའོ། །བརྟུལ་ཞུགས་དང་བཟླས་པ་དང་ངེས་པ་ནི་སོགས་ཀྱི་སྒྲས་དབང་པོའི་ཚར་བཅད་[2]པ་ལ་སོགས་པ་དེ་དངོས་གྲུབ་སྟེར་བ་ཞེས་པ་ནི་བཟླས་པ་དང་བརྟུལ་ཞུགས་ལ་སོགས་པས་དངོས་གྲུབ་སྟེར་བ་ནི་ལྷའོ། །དེ་ཉིད་བསྡུས་པ་ལ་སོགས་པ་བཟླས་པ་ལ་སོགས་པས་འགྲུབ་བོ་[3]ཞེས་པ་ནི་བསྡུས་པའི་དོན་ཏོ། །འདིར་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའོ། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་བསམ་གཏན་ཉིད་འབའ་ཞིག་གིས་སྒྲུབ་པ་པོས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་བསྒྲུབ་བོ་[4]ཞེས་བསམས་པའོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་[5]ཕྱིར་སྡུགས་པས་སྐད་ཅིག་ཉིད་ལ་འགྲུབ་འགྱུར་ཞེས་བྱའོ། ༣༣-༣༩ །

རྣལ་འབྱོར་ལམ་ལ་དགའ་རྣམས་ཀྱིས[6]། །
འདི་ནི་གཙང་སྦྲའི་སྤྱོད་པར་བཤད[7]། །

---

1. བཟུང་བའོ། །དང་པོ་ནི་ སྡེ། ཅོ།
2. ཚར་གཅད་ གསེར། ཚར་གཅོད་ པེ།
3. འགྲུབ་པ་ སྡེ།
4. བསྒྲུབ་པ་པོ་ གསེར། པེ།
5. དེ་ཉིད་ཀྱིས་ གསེར། པེ།
6. དགའ་རྣམས་ཀྱི་ པེ།
7. སྤྱོད་པར་བྱའོ་ འགྲེལ་པ།

གཙང་སྦྲའི་བསོད་ནམས་གང་འགྱུར་བ[1]། །
སྨྲ་བར་ནུས་པར་འོས་མ་ཡིན། ༣༥ །
སྐྱབ་པོའི་ཡོན་ཏན་རྒྱ་ཆེན་པོ། །
ཁ་ཅིག་གིས་ནི་སྨྲ་བའམ། །
གདོང་གཅིག་གཅིག་གིས་བརྗོད་དེ་ཅི། །
སྟོང་ཕྲག་བརྒྱ་ཡི[2]་གདོང་གྱུར་མིན། །
དེ་རུ་ཀ་དཔལ་ཡེ་ཤེས་ཆེ། །
རྣམ་པར་དག་པའི་མཚན་ཉིད་ཀུན། ༣༦ །

གཙང་སྦྲ་ཉིད་ཀྱི་ཕན་ཡོན་ནི་རྣལ་འབྱོར་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་སོ། །སེམས་ཙམ་དུ་སློམས་པར་ཞུགས་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་རོ། །དེ་ཉིད་ཡང་དག་གི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ལམ་དེ་ལ་དགའ་བ[3]་རྣམས་ཀྱི་ནང་ནས་འདི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་རྣལ་འབྱོར་པས་གཙང་སྦྲ་གོང་དུ་བསྟན་པ་ལ་སྤྱད་པར་བྱའོ། །གཙང་སྦྲའི་དགོས་པ་ནི་གཙང་སྦྲ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཕོ་ཉ་ནི་གཙང་སྦྲའི་རྒྱུ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་གཙང་སྦྲའོ། །དེ་རྣམས་གང་ཡིན་པ[4]་བསོད་ནམས་དེ་ཁ་ཅིག་གིས་བརྗོད་པར་མི་ནུས་ཏེ། ཅི་ཞེས་པ་ལ་སྐྱབ་པས་ཡོན་ཏན་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། སྐྱབ་པ་པོ་གང་གིས[5]་གཙང་སྦྲའི་ཡོན་ཏན་རྒྱས་

1. གང་གྱུར་བ་ སྣ། པེ། ཞྭ།
2. སྟོང་ཕྲག་བརྒྱའི་ པེ།
3. དེ་ལ་དགག་ ཅོ། དེ་ལ་དག་པ་ སྡེ། པེ། གསེར། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་ཡོད།
4. ཡིན་པའི་ གསེར། པེ།
5. གང་གི་ གསེར། པེ།

པར་ནུས་པ་ནི་ཁ་ནི་དུ་མ་ཞེས་བྱ་བ་[1]གསུངས་ཏེ། གང་ཡང་ཁ་མང་པོར་གྱུར་པ་དེའི་ཚེ་ནུས་སོ་[2]ཞེས་དགོངས་སོ། །རིགས་ཀྱི་གཅིག་གི་ཚིག་གོ །གཉིས་པ་ལ་སོགས་པ་ཡང་དུ་མ་ཉིད་ཅེས་པ་ལ་སྟོང་ཕྲག་གཅིག་གདོང་ཞེས་གསུངས་ཏེ། སྟོང་དུ་[3]བགྲངས་པའི་གདོང་ནི་སྟོང་གི་གདོང་སྟེ། གདོང་སྟོང་ཕྲག་ཅེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཅིའི་ཕྱིར་དེ་ལྟ་བུ་སྒྲུབ་པ་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་དཔལ་ལྡན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ཉིད་ཡེ་ཤེས་ཆེན་པོའོ། །རྣམ་དག་ནི་ཉོན་མོངས་པ་མེད་པའོ། །ཀུན་ནི་སྟོབས་བཅུ་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་གྱི་མཚན་ཉིད་གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་ཀུན་གྱི་མཚན་ཉིད་དོ། །དེ་ལྟར་རྣལ་འབྱོར་པ་ཡང་དེ་ལྟ་བུར་གྱུར་ཞེས་དགོངས་སོ། ༣༥-༣༦ །

སྒྲུབ་པ་པོ་ཡི་བདེ་བའི་རྒྱུ། །
གཉིས་མེད་གཉིས་སུ་མེད་པ་[4]ཉིད། །
གཉིས་མེད་སྦྱོར་བས་རིག་པ་ནི། །
དག་བྱེད་སྡིག་པ་འཇོམས་བྱེད་པ། ༣༧ །

སྒྲུབ་པ་པོ་ཞེས་པ་ནི་གང་གི་ཕྱིར་རོ། །སྒྲུབ་པ་པོའི་བདེ་བའི་རྒྱུ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དེ་འབྱུང་བ་ནི་བདག་ཉིད་གཉིས་མེད་ཀྱི་སྦྱོར་བས་བདེ་བའི་རྒྱུ་འབྱུང་བ་སྟེ། གཉིས་སུ་མེད་པའི་སྦྱོར་བའི་བདག་ཉིད་ནི་སྡིག་པ་ཀུན་ལས་གྲོལ་ལོ་ཞེས་སྨྲར་བར་

---

1. ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ པེ།
2. དེའི་ཚེ་ནུས་ སྡེ། ཅོ།
3. སྟོང་ཕྲག་དུ་ གསེར།
4. གཉིས་སུ་མེད་པའི་ པེ།

བྱའོ། །ཅིའི་ཕྱིར་ཞེས་པ་ལ་དག་བྱེད་སྡིག་པ་ཉམས་བྱེད་ཅེས་གསུངས་ཏེ། གང་གི་ཕྱིར་བདེ་བའི་རྒྱུ་དེ་ལྷ་བུར་གྱུར་པ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༣༧ །

རིག་པ་དང་ནི་སླ་བས་ཀྱང་། །
སྡིག་པ་ཀུན་ལས་རྣམ་གྲོལ་འགྱུར། །
ལུས་དག་པ་ལ་སྐྱོན་མེད་པའི། །
མི་མཆོག་ཀུན་ནས་སྤྱོད་[1]བྱེད་པ། ༣༨ །

རིག་པ་དང་ནི་སླ་བས་ཀྱང་། །ཞེས་པ་ནི་སྒྲུབ་པ་པོ་དང་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ། མཚམས་མེད་པ་ལྔ་ལ་སོགས་པའི་སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་ནི་ལུས་དག་སྐྱོན་ནི་མེད་པ་ཞེས་བྱའོ། །སྐྱོན་མེད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ལུས་དག་པ་ཞེས་ཤེས་པར་བྱའོ། །མཉམ་པར་སྤྱོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བདེ་བའི་རྒྱུ་ལ་མི་ཞེས་བྱ་སྟེ་གོ་སླའོ། ༣༨ །

སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་དག་སྟེ། །
དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ས་ཐོབ་པོ[2]། །
སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་དག་པ། །
དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་རིགས་སྐྱེ་ཞིང་། ༣༩ །

སྐྱེ་ཞིང་སྐྱེ་བར་ནི་སྐྱེ་བ་ནས་སྐྱེ་བར་དེ་བཞིན་གཤེཏ་པའི་རིགས་སུ་སྐྱེ་བའོ། ༣༩ །

---

1. མཉམ་པར་སྤྱོད་ འགྲེལ་པ།
2. ས་འཐོབ་པོ་ པེ།

ཆོས་དང་ལྡན་པའི་རྒྱལ་པོར་འགྱུར། །
དེ་ལྟར་རྟག་ཏུ་མཆོད་བྱས་ནས། །
གུས་པ་ཡིས་ནི་གཏོར་མ་སྦྱིན། །
རང་འདོད་ལས་ལ་རྣལ་འབྱོར་པས། ༣༠ །
ཚོ་ག་ཇི་བཞིན་སྦྱིན་པར་བྱ། །
མར་གྱི་ངོ་ཡི་[1]ཚེས་བཅུ་འམ[2]། །
ཟླ་བ་ཡར་ངོའི་གང་གྱུར་ལ། ༣༡ །

དེ་ལྟར་རྟག་ཏུ་མཆོད་ཅེས་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་མཆོད་པར་བྱ་བ་སྟེ། གཏོར་མ་སྦྱིན་པར་བྱ་[3]ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་ཡང་གང་གི་ཚེ་སྦྱིན་ཞེས་པ་ལ་སྦྱིན་གསུངས་ཏེ། གཏོར་མ་བྱའོ[4]། །ཅི་འདོད་ནི་རང་ཅི་འདོད་པའི་ཞི་བའི་ལས་ལ་སོགས་པའི་ཚོ་ག་འདི་དང་རྒྱུད་གཞན་ནས་གསུངས་པའོ། །མཆོད་པའི་དུས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ནི། ནག་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། འམ་གྱི་སྒྲས་ནི་དགུ་དང་བཅུ་བཞིའོ། །ཉི་ནི་ཁྱད་པར་གྱི་དོན་ནམ་བསྡུ་བའི་དོན་ཏོ། །ནག་པོའི་ཕྱོགས་ཀྱི་བཅུ་བཞི་དང་དཀར་པོའི་ཕྱོགས་ལ་ནི་གཞུང་གཞན་ཏེ། ནིའི་སྒྲས་ནི་བཅུ་དང་དགུ་བསྡུ་བའོ། །ལྷག་མ་གང་ཞེས་པ་ནི་གང་བཅུ་དང་དགུར་གྱུར་པའམ་བཅུ་བཞིའི་བར་དུ་མཆོད་པ་བྱ་སྟེ། བཅུ་དང་། དགུ་ལ་ཡང་ངོ་། ༣༠-༣༡ །

1. མར་གྱི་ངོའི་ པེ།
2. ཚེས་བཅུ་དང་ སྡེ། ལྷ། སྣ།
3. སྦྱིན་པར་བྱ་བ་ གསེར།
4. གཏོར་མ་བྱ་བའོ་ གསེར། པེ།

སྐུར་དུ་འབབ་པས་མཆོད་བྱ་སྟེ། །
རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་སྨྱོས་བྱེད་ཤ་རྣམས་ཀྱིས།[1] ༣༢ །
སྐྱེ་བོ་གུས་པས་དེ་རྣམས་མཆོད་བྱས་པས། །
ཧེ་རུ་ཀ་དཔལ་མངོན་དགར་གྱུར་པ་ལ།[2] །
མགུ་བའི་ཐུགས་ཀྱིས་མཆོག་ནི་སྩོལ་འགྱུར་ཏེ། །
དེ་རྣམས་ལག་གནས་མཆོག་རྣམས་སོ།[3] ༣༣ །
མཚན་མོ་བརྟུལ་ཞུགས་ཅན་གཏོར་མ། །
སྐྲ་གྲོལ་གཅེར་བུར་གྱུར་པས་སྦྱིན། །
ཀླི་ཧེ་རུ་ཀའི་བདག་ཉིད་དུ། །
སྦྱོར་ངེས་མ་མོ་རྣམས་མཉེས་འགྱུར། ༣༤ །

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་སྤྱོད་པ་དང་བརྟུལ་ཞུགས་དང་། མཆོད་པ་དང་། གཏོར་མའི་ཚོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་ཉི་ཤུ་རྩ་བདུན་པའོ།། །།

དེ་གཞན་ཅེ[4]ཞེས་པ་ལ་སྐུར་དུ་འབབ་པས་མཆོད་པ་ནི་ཆང་དང་ཤས་ཀྱང་རྡོ་རྗེ་ལྷ་མོ་ལའོ། །དེ་མཆོད་ཅིང་གུས་པ་དང་ལྡན་པའི་སྐྱེ་འགྲོ་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ལ་མངོན་

1. རྡོ་རྗེ་ལྷ་མོ་སྨྱོས་བྱེད་ཤ་རྣམས་ཀྱི། པེ། རྡོ་རྗེ་ལྷ་མོ་སྨྱོས་བྱེད་ཤ་རྣམས་ཀྱིས། འགྲེལ་པ།
2. 'གང་ཕྱིར་དེ་རྣམས་ལག་ན་མཆོག་གི་རྣམས།' ཞེས་པའི་ཚིག་རྐང་འདི་པེ་ཅིང་དང་སྣར་ཐང་པར་མ་གཉིས་ཀའི་ནང་ལྷག
3. མཆོག་གིས་བྱ་ སྣ།
4. དེ་བཞིན་ཅེ་ སྡེ། ཅོ།

པར་དགའ་བ་དེ་ཐུགས་མཉེས་ནས་མཆོག་སྩོལ་བར་འགྱུར་རོ། །དེའི་ལག་གནས་མཆོག་གང་ཡིན་པ་ནི་[1]སྒྱུར་བར་ཆོས་རྣམས་ལ་འབད་པས་མཆོད་པར་བྱའོ། །ལག་པ་ན་གནས་པའི་མཆོག་གོ །མཆོག་ནི་ཡིད་ལ་འདོད་པའོ། །ལྷག་མ་ནི་གོ་སླའོ། ༣༣-༣༩ །

སྤྱོད་པ་དང་བརྟུལ་ཞུགས་དང་མཆོད་པ་དང་གཏོར་མ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ལེའུ་ཡིན་པས་དེ་དེ་བཞིན་ནོ། །ཉི་ཤུ་རྩ་བདུན་ནི་ཉི་ཤུ་རྩ་བདུན་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་ཉི་ཤུ་རྩ་བདུན་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། །།

*

1. གང་ཡིན་ཞེས་པ་ནི་ གསེར། པེ།

ནང་གི་སྦྱིན་སྲེག་དང་རིགས་གཅིག་དང་ལྡན་པའི་ཚོ་གའི་ལེའུ།

གང་ཡང་ལེགས་མཆོད་རྣམ་དག་དངོས། །
མྱ་ངན་འདས་འབྱུང་དཔའ་བོ་སྟེ། །
བདག་ཉིད་མཆོད་པ་དེ་ཡིས་ནི། །
སངས་རྒྱས་སོགས་ཀུན་མཆོད་པ་ཡིན། ༡ །

མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱི་ལེའུ་ནི་དེ་ནས་མཆོད་པ་ཞེས་གསུངས་སོ། །དེ་ནས་ཀྱི་[1]སྒྲས་ནི་དེ་ཕྱིར་གྱི་དོན་དུ་ལྷ་བཞམ་བདེ་བར་གཤེགས་པའི་ལུང་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་གི་ཕྱིར་མཉམ་པ་ཉིད་མེད་པར་ཡང་དག་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་མི་འགྱུར་བས་དེའི་ཕྱིར་བདག་ཉིད་ཕྱི་དང་གསང་བའི་མཆོད་པ་དག་གིས་མཆོད་དོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །རྣམ་པར་དག་པའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་སེམས་འདི་ནི་དེ་རྣམ་དག་བདག་ཉིད་དོ། །ཇི་ལྟ་བུར་གྱུར་པའི་རྣམ་དག་བདག་ཉིད་ཅེས་པ་ལ་མྱ་ངན་འདས་[2]ངེས་འབྱུང་དཔའ་བོ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ནི་དཀའ་ཐུབ་ཀྱི་དཀའ་བ་སྟེ་བློའོ། །ཕྱི་རོལ་གྱི་ཡུལ་ལ་དམིགས་པའི་ཕྱིར་དེ་ནས་དེའི་རྗེས་ལ་[3]ངེས་པར་འབྱུང་ཞིང་གནས་པ་དེ་ལ་མཆོད་ཅེས་བྱ་སྟེ། སྒྲུབ་པ་པོའི་མཆོད་པའོ། །བདག་ཉིད་ཀྱི་སེམས་ལྷན་ཅིག་[4]སྐྱེས་

1. དེ་ཉིད་ཀྱི་ པེ།
2. མྱ་ངན་ལས་འདས་ གསེར།
3. རྗེས་སུ་ གསེར། པེ།
4. ལྷ་གཅིག་ ཅོ།

པར་གནས་པའོ། །ཡང་ན་དཔེ་མེད་པ་ཉིད་[1]ཀྱིས་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པར་འགྲོ་བ་ནི་འགྲོ་བ་དང་ལྡན་པ་སྟེ། རྟོགས་པ་དང་ལྡན་པའི་བདག་ཉིད་དོ། །གདམས་ངག་མེད་པར་དགའ་བྲལ་གྱི་དགའ་བ་ལ་བློ་མ་སྦྱངས་པས་དགའ་བྲལ་གྱི་དགའ་བ་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྔོན་དུ་སྟོན་ཏེ། བློ་མ་སྦྱངས་པས་བཞད་གད་ཀྱང་བྱེད་དོ། །དེས་ཀྱང་དགའ་བྲལ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ལྷུང་བ་[2]ལ་གོ་སྟེ། བདག་ཉིད་བརླག་པར་བྱེད་དོ། །དེས་འདི་ལྟར་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་དགའ་བ་ཉེ་བར་མི་རྟེད་དོ་ཞིག་ཅིག །རང་གི་སེམས་བསྲུང་བའི་དོན་དུ་མེལ་ཚེ་[3]བྱའོ། །དེས་ཅིར་འགྱུར་ཞེས་པ་ལ། ཀུན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཀུན་ནི་སངས་རྒྱས་ལ་སོགས་པའོ། །མཆོད་པ་ནི་མཆོད་པར་འགྱུར་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །སངས་རྒྱས་ཀུན་སོགས་ནི་དང་པོའི་མང་པོའི་ཚིག་ཕྱིས་པའོ། །མཆོད་པ་ཞེས་པ་ནི་ཨ་ཡིག་ཐུང་བར་བྱས་པའོ། །ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་དགའ་བའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རྟོགས་པ་དང་ལྡན་པའི་བདག་ཉིད་ནི་སངས་རྒྱས་ཏེ། སངས་རྒྱས་ཞེས་པ་འགྲུབ་བོ། །སངས་རྒྱས་ཀུན་སོགས་མཆོད་པར་བྱ། །ཞེས་པ་ནི་གཞུང་གཞན་ནོ། །སངས་རྒྱས་ཀུན་ལ་སོགས་པར་སྐྱེ་བ་ནི་མཆོད་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱའོ། །འོན་ཀྱང་ཐམས་ཅད་ཉིད་སངས་རྒྱས་ཞེས་པ་ལ་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། ༡ །

དཔའ་བོ་ཀུན་དང་རྣལ་འབྱོར་མ། །
བརྟན་པ་སྔོན་འགྲོའི་གཡོ་བ་སྟེ། །

---

1. དཔེ་མེད་པ་གཉིས་ གསེར།
2. ལྷུང་བ་ ཅོ།
3. མེལ་ཚེ་ སྣེ། ཅོ།

ཞི་བའི་འདུས་པས་ལེགས་གནས་པའི། །
སྤྱན་དང་དཔའ་བོ་[1]མཆོད་པར་བྱ། ༢།

དཔའ་བོ་ཐམས་ཅད་ཅེས་པ་ནི་སྒྲ་དང་པོའི་མང་པོའི་ཚིག་གོ །བརྟན་པ་ནི་ཤིང་གི་སྡོང་པོ་ལ་སོགས་པའོ། །གཡོ་བ་ནི་མི་ལ་སོགས་པའོ། །འདི་ནི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་མཆོད་པའོ། །སྤྱན་དང་སྤྱོད་ནི་མཆོད་པར་བྱ། །ཞེས་པ་ནི། ནི་ནི་བསྡུས་པའོ། །ཆོས་ལྡན་ཅིག་ཏུ་ཐོས་པ་ནི་སྤྱན་ནོ། །སྤྱོད་པ་ནི་འདིར་རང་གི་ལུང་ལ་གནས་པ་ཉིད་སྤྱོད་པའོ། །ཞི་བ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་སོ། །འདུས་པ་ནི་སྦྱོར་བ་སྟེ་དེ་མཉམ་པ་ཉིད་ལ་གནས་པའོ། །ཞི་བའི་འདུས་པ་ཡང་དག་གནས་ནི་སྒྲ་གཉིས་ཀྱི་དང་པོའོ། །དེས་ཀྱང་མཆོད་པར་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༢ །

སྤྱན་དང་བུ་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ། །
བདེ་དང་སྡུག་བསྔལ་ཀུན་འབྱུང་བྱ། །
རྟགས་དང་ཕྱག་རྒྱ་ཉིད་དག་དང་། །
ཡེ་ཤེས་དེ་ནི་བསྟན་མི་བྱ། ༣ །

སྤྱན་དང་བུ་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ། །བདེ་དང་སྡུག་བསྔལ་ཡང་དག་འབྱུང་། །ཡེ་ཤེས་དེ་ལ་བསྟན་མི་བྱ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྤྱན་དེ་རྣམས་ལ་ཡེ་ཤེས་བསྟན་པར་མི་བྱའོ། །ཞེས་སྦྱར་རོ། །སྤྱན་དང་བུ་རྣམས་ནི་གཅིག་ཏུ་ཡིད་ལ་འདོད་པར་ཤེས་པ་མཉམ་པས་ལྷན་ཅིག་པའོ། །འོན་ཀྱང་དེས་འདིར་བདེ་བ་དང་སྡུག་བསྔལ་ཡང་དག་པར་འབྱུང་བ་

1. སྤྱན་དང་སྤྱོད་ནི་ འགྲེལ་པ།

གང་ཡིན་པ་[1]ཤེས་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །དེ་ལྟ་ན་ཡང་དེ་དག་གིས་མི་གོས་ཏེ། བདེ་བའི་གནས་སྐབས་ནི་སྡུག་བསྔལ་གྱི་ཡན་ལག་ཏུ་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །ཐུན་མོང་ཡིན་ཡང་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པར་མཁས་པ་ཉིད་ཀྱིས་རྟོགས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དོན་དམ་པར་བསྟན་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་ཏེ་དེ་ནི་བསྟན་པར་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་རོ། །བདག་ཉིད་ཀྱི་གཞུང་ལུགས་ལས་འདུག་པ་ནི་ལྷུད་འདུག་པའོ། །ལས་དང་འབྲས་བུ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་སུན་འབྱིན་པ་ནི་ཐམས་ཅད་སུན་འབྱིན་པའོ། །དེ་དག་ལ་ཡང་བསྟན་པར་མི་བྱའོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །གང་གི་ཕྱིར་དེ་དང་ཤིན་ཏུ་ལྷན་ཅིག་[2]གནས་པ་ནི་རང་བཞིན་མི་མཐུན་[3]པའི་ཕྱིར་སྨོད་པར་བྱེད་པས་དམྱལ་བར་འགྲོ་བའོ། །དེ་ནི་སློབ་མ་བྱེད་པ་ཡིན་ཡང་འོས་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཤེས་པར་བྱའོ། །

དོན་གཞན་བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ། ཐུན་ནི་[4]དགའ་བ་ཡིན་ཏེ། ཆོས་ཀྱི་བདར་བྱས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །བུ་ནི་མཆོག་ཏུ་དགའ་བའོ། །ལྷན་ཅིག་ནི་དགའ་བྲལ་གྱི་དགའ་བའོ། །བདེ་བ་དང་སྡུག་བསྔལ་ལས་ཡང་དག་པར་བྱུང་བར་གནས་པ་དེ་ནི་[5]དེ་བཞིན་ཏེ། འདི་ནི་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་[6]དགའ་བའོ། །དེ་ལ་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་ཡེ་

1. གང་ཡིན་པས་ གསེར།
2. ལྷན་ཅིག་ཏུ་ པེ།
3. བོད་འགྱུར་པར་མ་རྣམས་སུ་‘མཐུན་’ཞེས་སྣང་ཡང་གོང་འཕོད་ནི་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་པའོ།།
4. ཡུན་ནི་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
5. ‘དེ་ནི་’ སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེ་གཉིས་སུ་མེད།
6. ‘པའི་’ སྡེ་ཅོ་གཉིས་སུ་མེད།

ཤེས་ནི་བྱེད་པ་པོ་སྟེ། བསྟན་པར་མི་བྱ་བ་ནི་བསྟན་པར་བྱ་བ་མི་བྱེད་པ་[1]ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །བདག་ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་མི་སྟོན་ཏེ་རང་ཉིད་ལ་བྱེད་པ་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། ། འདི་ནི་དགོས་པ་ཡིན་འདི་ནི་དགོས་པ་མིན་ཞེས་བྱེ་བྲག་ཏུ་བྱེད་པ་ནི་ལྷད་འཇུད་པའོ།། ཐམས་ཅད་སུན་འབྱིན་པ་ནི་འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པའི་ཉོན་མོངས་པའི་ཚོགས་སོ། །ལུས་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་དེ་ལ་མ་ཡིན་པ་ཞེས་པ་ནི་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ལ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །འདི་ཉིད་ཡང་དང་ཡང་དུ་རྣམ་པར་བཤད་པ་སྟེ། འདི་ཉིད་སྐྱེས་བུའི་དོན་མཆོག་ཏུ་སྒྲུབ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། ༣ །

དག་བྱེད་ཟས་ལ་བཟའ་བར་བྱ།
རྟག་ཏུ་དམ་ཚིག་སྤྱོད་བྱས་ནས[2]།
གསང་སྔགས་སུ་ལའང་སྦྱིན་མི་བྱ[3]།
མན་ངག་ཉམས་པར་སྦྱིན་མི་བྱ[4]། ༤
དམ་ཚིག་གནས་ལ་དོན་ཅི་བཞིན[5]།
མན་ངག་རྣམས་ཀྱང་[6]སྦྱིན་པར་བྱ།
ཡོ་ཉ་མ་གཏོགས་གཞན་དག་ལ།
འདོད་ལ་སྨོངས་པས་འགྲོ་མི་བྱེད། ༥

1. བྱ་བ་བྱེད་པ་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་ཡོད།
2. སྤྱོད་བྱས་པ་ སྣ། ཅོ།
3. སྦྱིམ་ནི་བྱ་ སྣ།
4. སྦྱིན་མི་བྱའོ་ སྣ།
5. དོན་ཇི་བཞིན་ ཅོ། པེ།
6. མན་ངག་གནས་ཀྱང་ ཅོ།

ཟས་ཞེས་པ་ལ་དག་བྱེད་ནི་བདུད་རྩི་རྣམ་པ་ལྔའོ། །སྤྱོད་པ་ཞེས་པ་ལ། རྟག་ཏུ་དམ་ཚིག་སྤྱོད་བྱས་འགྱུར། །ཞེས་པ་ནི། དམ་ཚིག་ནི་གོ་ཀུདྲཏྣ་ནི་མཚན་ཉིད་དོ། །རྒྱུ་གང་གིས་ཞེས་པ་ལ་རྟག་ཏུ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། རྟག་ཏུ་ནི་རྟག་པར་དེ་[1]རྣམ་པར་རྟོག་པ་སྤངས་པའོ། །རྒྱུའི་སྟོབས་ཀྱིས་[2]སྤྲའི་གསུམ་པའོ། །གང་གི་ཕྱིར་སྡིགས་དང་ནོར་བུ་དང་སྨན་གྱི་མཐུ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའོ། །སྡིགས་ནི་སྡིགས་ལ་སོགས་པ་གང་ཅི་ཡང་རུང་བ་སའི་བདག་པོ་ལ་སོགས་པའོ། །མན་ངག་རྣམ་པར་ཉམས་མི་བྱ།། ཞེས་པ་ནི་ལན་ཅིག་ཙམ་གསོལ་བ་བཏབ་པ་ལ་སྲིད་པའི་དབང་གིས་དབང་བསྐུར་བ་ལ་སོགས་པ་མི་བྱ་བའོ[3]། །དོན་ཇི་ལྟ་བའི་གདམས་ངག་དམ་ཚིག་དང་ལྡན་པ་ལ་སྦྱིན་པར་བྱའོ། །དེའི་ཕྱིར་ན་སྒྲ་ནི་ཁྱད་པར་རོ། །ཕོ་ཉ་མོ་ནི་དམ་ཚིག་དང་ལྡན་པའོ། །དང་ནི་བསྡུས་པའོ། །ཉི་ནི་ཉེ་བར་བཟུང་བའོ[4]། །འདིར་འདོད་པ་ལ་ལྷོངས་པས་འདོད་པའི་ཁྱད་པར་འགྲོ་བར་མི་བྱའོ། ༩-༥ །

ཕོ་ཉ་ལ་རྟག་བསྲུང་[5]ཐར་པ། |
འདའ་བ་ཡིས་ཀྱང་ལོངས་སྤྱོད་བྱ། |
སྐྱེས་གནས་དམན་དང་ཅིག་ཤོས་[6]ལའང་། |
བསྙེན་བཀུར་ཉིད་ནི་བྱ་བ་མིན། ༦ |

---

1. རྟག་པར་ཏེ་ གསེར། པེ།
2. སྟོབས་ཀྱི་ སྡེ། ཅོ།
3. མི་བྱའོ་ པེ།
4. གཟུང་བའོ་ གསེར། པེ།
5. ཞེན་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་དང་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཀོད་པའོ།།
6. སྐྱེ་གནས་སྨན་དང་གཅིག་ཤོས་ པེ།

ཕོ་ཉ་མོ་བསྲུང་[1]ཧྲག་ཐར་པ། །ཞེས་པ་ནི་ཕོ་ཉ་ནི་ཕྱི་རོལ་གྱི་ཡན་ལག་ཅན་ནོ། ། བསྲུང་བ་[2]ནི་གོ་ཆ་བྱའོ། །དེ་ཡིས་ཐམས་ཅད་མངོན་པར་ཞེན་པ་ཞི་བར་བྱ་བའོ། ། ཡང་ན་ཕོ་ཉ་དབང་དུ་བྱ་སྟེ། གཞན་ལ་མི་འགྲོ་བར་བྱའོ་ཞེས་པ་ནི་ཕོ་ཉ་སྲུང་བའོ། ། དེ་ནས་ཐར་པའོ་[3]ཧྲག་ཏུ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་རྗེས་སུ་འབྲང་བའི་ཕྱིར་རོ། །གཞན་གྱི་ལྷག་མ་བཟའ་མི་བྱ། །ཞེས་པའི་ཚིག་ལ་སོགས་པ་ཁ་ཅིག་ཟེར་རོ། །དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་རིགས་སུ་སྐྱེས་པའི་ཕོ་ཉ་མོ་རྣམས་ལ་གསལ་པོར་བསྟན་པ་སྲུང་བ་ཡིན་ནོ་ཞེས་གཞན་[4]ཟེར་རོ། །འདའ་བ་[5]ཡིས་ཀྱང་ལོངས་སྤྱོད་བྱ། །ཞེས་པ་ནི་ཕོ་ཉ་གུས་པས་བཟུང་[6]སྟེ། དེ་དང་ལྷན་ཅིག་བདེ་བ་བྱེད་པའི་དུས་སུ་གུས་པ་མ་ཡིན་བྱ་བའོ་ཞེས་[7]སོ། །ནུ་མ་བཟུང་བ་[8]ལ་སོགས་པས་ཀྱང་དེ་དགའ་བའི་བདེ་[9]བ་ལ་ལོངས་སྤྱད་པར་བྱའོ། །དེའི་ཕྱིར། བསྙེན་བཀུར་ཉིད་ནི་བྱ་བ་མིན། །ཞེས་གསུངས་སོ། །སྟོབས་ཀྱིས་མནན་ལ་ལོངས་སྤྱད་[10]དེ། །དེ་ནི་བསྙེན་བཀུར་སྟོད་མ་ཡིན། །ཞེས་པའི་ཚིག་

---

1. བསྲུངས་ གསེར། པེ།
2. སྲུང་བ་ གསེར། པེ།
3. ཐར་པའི་ སྣེ། ཅོ།
4. བསྲུང་བ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ སྣེ། ཅོ།
5. འབད་པ་ སྣེ། ཅོ།
6. གཟུང་ གསེར། པེ།
7. དུས་གུས་པ་མ་ཡིན་བྱ་བར་ཤེས་ སྣེ། ཅོ།
8. གཟུང་བ་ གསེར། པེ།
9. 'བའི་བདེ་' གསེར་བྲིས་སུ་མེད།
10. ལོངས་སྤྱོད་ གསེར། པེ།

གིས་སོ། །སྐྱེ་དམན་བདེ་ལ་[1]ལོངས་སྤྱོད་བྱ། །ཞེས་བྱའོ། ༦ །

མ་དང་སྲིང་མོ་བུ་མོ་དང་། །
ཆུང་མ་ཕོ་ཉ་མོ་ཉིད་གནས། །
དགའ་ཐུབ་ངེས་པར་ཟད་པར་འགྱུར། །
འཁོར་ལོའམ་དེ་བཞིན་གྲུབ་པ་ལ། ༧ །

དངོས་གྲུབ་གང་ལས་ཞེས་པ་ལ་མ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། གང་གི་ཚེ་མ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་བརྩེ་བར་གྱུར་པ་ནི་དེའི་ཚེ་གྲུབ་པོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །གང་གི་ཚེ་ཡང་འཁྲུག་པར་གྱུར་ན་དེའི་དངོས་གྲུབ་ཀྱང་འཁྲུག་པོར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བསྟན་པའི་ཕྱིར་དགའ་ཐུབ་ཅེས་བྱ་བ་[2]ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཐོག་མ་[3]མེད་པའི་དུས་ནས་བྱས་པའི་དགའ་ཐུབ་དེ་ཡིས་ཟད་པར་བྱེད་དོ། །ཅིའི་ཕྱིར་ཞེས་པ་ལ་འཁྲུག་པའམ་ཞེས་གསུངས་ཏེ་འམ་ནི་གང་གི་ཕྱིར་རོ། །གང་གི་ཕྱིར་ཕོ་ཉ་མོའི་སྙིང་འཁྲུག་ན་དེ་བཞིན་དུ་དངོས་གྲུབ་ཀྱང་འཁྲུག་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་པ་ནི་ཁ་ཕྱིར་བལྟས་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༧ །

མཆོག་ལ་[4]ལྷན་ཅིག་དགུག་པར་བྱ། །
དེ་ལྟར་རྫས་ནི་རྣམ་ངེས་ཡིན། །

1. བདེ་བ་ གསེར། པེ།
2. ཞེས་བྱ་བ་ སྣེ། ཅོ།
3. ཐོགས་མ་ གསེར། པེ།
4. མཆོད་ལ་ ལྷ།

འཇིག་རྟེན་ལ་རྟག་གཡོན་ནས་སྤྱོད། །
རྐང་པ་གཡོན་པ་སྔོན་དུ་[1]འདོར། ༨ །

དེ་ལྟ་བུར་གྱུར་པའི་ཕོ་ཉ་མོ་ཅི་ཞེས་པ་ལ་འགུགས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། མཆོག་གི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དང་རྟུལ་གང་ཡིན་ལྡན་པའོ[2]། །དེའི་ཕྱིར་ལྷན་ཅིག་ཏུ་ནི་ལྷག་པར་རོ། །དེ་ལྟ་བུའི་[3]རྗེས་ནི་ངེས་པ་ཡིན་ཞེས་པ་ནི་རྗེས་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དེ་ཁ་ན་མ་ཐོ་བ་མེད་པར་བླང་པ་ནི་ངེས་པའོ། །འཇིག་རྟེན་ལ་རྟག་གཡོན་ནས་སྤྱོད། །རྐང་པ་གཡོན་པ་སྟུན་[4]ནས་འདོར། །ཞེས་པ་ནི་གོ་སླའོ། ༨ །

ལག་པ་གཡོན་པ་ཡོངས་སུ་བསྒྱུར། །
གཡོན་གྱི་[5]སྤྱོད་པས་རབ་མཆོད་བྱེད། །
གཡོན་པས་འཁྱུད་པ་ཙམ་དང་ནི། །
གཡོན་པ་ཡིས་ནི་མཆོད་ཅིང་ཟ། ༩ །
ལག་པ་གཡོན་པ་ཡོངས་སུ་བསྒྱུར། །
གཡོན་གྱི་ལག་པ་[6]བརྟན་འགྱུར་ཏེ། །

---

1. སྟུན་ནས་ འགྲེལ་པ།
2. མཆོག་གི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བརྟུལ་ཞུགས་གང་ཡིན་པའོ་ སྔེ། ཅོ།
3. དེ་ལྟའི་ གསེར། པེ།
4. བསྟུན་ པེ།
5. གཡོན་གྱིས་ པེ།
6. ལམ་པ་ གསེར།

ལུས་ཀྱི་རྣམ་པ་ཡོངས་སུ་བསྒྱུར། །
གཡོན་པས་སྙིང་དུ་རབ་མཆོད་བྱ། །

ཞེས་པ་ནི་སྙིང་གི་སྒྲ་ནི་དོ་རྗེའོ། །དེས་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱི་བསམ་པ་ཞེས་པ་[1]ནི་མཆོད་པར་བྱེད་པའི་རྣལ་འབྱོར་པས་སོ། །གཡོན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་གོ་སླའོ། ༨ །

བརྟུལ་ཞུགས་མ་ཉམས་བརྟུལ་ཞུགས་རྫོགས། །
སྒྲུབ་པ་པོ་ནི་བྱ་བ་བརྩོན། །
དམ་ཚིག་རིགས་ལ་སྤྱོད་པ་དང་། །
གཅིག་ཏུ་ཟས་ལ་སྤྱོད་པར་བྱེད། ༡༠ །

བརྟུལ་ཞུགས་མེད་འཛེམས་བརྟུལ་ཞུགས་རྫོགས་པ་ནི་བྲམ་ཟེ་ལ་སོགས་པའི་བརྟུལ་ཞུགས་ནི་བརྟུལ་ཞུགས་མེད་པའོ། །དམ་ཚིག་ལ་སོགས་པ་སྤྱོད་པ་ངེས་པར་བྱས་ཤིང་ལྷ་བསྒོམ་པ་ལ་སོགས་པ་འབད་[2]དེ་བྱས་པས་འཛེམས་པའོ། །དམ་ཚིག་ནི་རྣལ་འབྱོར་མའོ། །རིགས་ཀྱི་སྤྱོད་པ་ནི་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་སྤྱོད་པའོ། །ཡུལ་གྱི་ཕྱོགས་ཁ་ཅིག་ཏུ་བཟའ་བ་ལ་ཡོངས་སྤྱད་པའོ། ༡༠ །

རིགས་ལྔ་ལ་ནི་ཀུན་སྤྱོད་པ། །
རིགས་བཞིར་རབ་ཏུ་བརྟག་པར་བྱ[3]། །

---

1. ཤེས་པ་ གསེར། ཕེ།
2. འབད་པ་ གསེར།
3. འགྲེལ་པར་‘ རིགས་ནི་རྣམ་པ་བཞིར་གྲགས་མིན། ’ ཞེས་གསལ།

རིགས་གཅིག་ལ་ནི་ཀུན་སྤྱོད་པ། །
རྣལ་འབྱོར་གྲུབ་པ་རབ་ཏུ་མཆོད། ༡༡ །

རིགས་ལྔ་ལ་[1]ནི་ཀུན་སྤྱོད་སྤྱད། །ཅེས་པ་ནི་རིགས་ལྔ་ལ་མཉམ་པར་སྤྱད་པའོ། །ཅི་གང་གི་ཕྱིར། རིགས་ནི་རྣམ་པ་བཞིར་གྲགས་མིན། །ཞེས་པ་ནི་རིགས་བཞི་ཡོད་པ་མ་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་གང་ཡིན་པ་[2]དེ་བཞིན་དུ་རྣལ་འབྱོར་ཡིན་ཏེ། འཇིག་རྟེན་པས་བརྟགས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟར་གྱུར་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱི་ནང་དུ་གྲགས་པ་ནི་རྟགས་པའོ། །ཡང་ན་རིགས་བཞི་པོ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ཏེ། རིགས་བཞི་ནི་ཞལ་བཞི་སྟེ་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ཉིད་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ལུང་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཨུར་བྱས་པའོ། །གང་གི་ཕྱིར་རིགས་བཞི་པོ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་ཅེས་པ་ལ་གསུངས་པ་རིགས་རྣམས་གཅིག་ཏུ་སྟེ་མཉམ་པར་སྤྱོད་པ་ངེས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་རིགས་གཅིག་ལ་མཉམ་པར་སྤྱོད་པ་སྟེ། དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་རྣལ་འབྱོར་པས་ཀྱང་རིགས་གཅིག་མཉམ་པར་སྤྱོད་པ་རྣམ་པར་དག་[3]པ་ནི་ཞལ་བཞིའི་ཁ་དོག་གོ་ཞེས་དགོངས་སོ། ༡༡ །

བ་ལང་ཤ་དང་རྟ་ཤ་དང་། །
ཁྱི་ཤ་དག་དང་བྱ་དག་གིས། །
དཀྱིལ་འཁོར་གྲུ་གསུམ་བྱས་ནས་ནི། །
སངས་རྒྱས་དག་ཀྱང་ངེས་པར་འཇིག ༡༢ །

1. རིགས་ལ་ལ་ གསེར། པེ།
2. ‘དེ་ཉིད་གང་ཡིན་པ’ སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེ་གཉིས་སུ་མ་གསལ།
3. རྣམ་དག་ པེ།

དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་སོགས་པ་ལ་གནོད་པ་བྱེད་པ་ཉམས་པ་ལ་འཇིགས་པའི་ཆེད་དུ་ལས་རབ་ཏུ་རྒྱས་པ་ནི། བ་ལང་ཤ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །སྦྱིན་སྲེག་གི་ཆོ་གར་གསུངས་པའི་ཚོགས་ཐབ་ཁུང་ལ་སོགས་པ་རྗེས་སུ་གནས་ལ་མངོན་སྤྱོད་ལ་སོགས་པ་ལ་ཉེ་བར་མཁོ་བའི་ཚ་བའི་མར་ནག་ལ་སོགས་པས་མེ་རབ་ཏུ་སྦར་སྟེ། དུམ་སྐྱེས་མ་གཡས་པའི་སྣ་བུག་ནས་ནང་དུ་རབ་ཏུ་ཞུགས་ཏེ། བཤང་བའི་ལམ་ནས་ཕྱིར་ཕྱུང་བ་ལ་[1]རྡོ་རྗེ་ལྕགས་ཀྱུ་དང་གྲི་གུག་གི་མཚན་མ་འཛིན་པར་བསམ་མོ། །བསྒྲུབ་བྱ་གཅེར་བུ་སྨྱོས་པར་གྱུར་པ་བཀུག་ལ་དེ་ཉིད་ཀྱིས་དེ་དུམ་བུར་བྱས་པར་རྣམ་པར་བསམས་ལ། ཕྱུགས་ཀྱི་ཤ་ལ་སོགས་པ་དེའི་ཤའོ་ཞེས་བློས་བརྟན་པོར་བྱའོ། །ཁྲོ་བོ་ཆེན་པོའི་ང་རྒྱལ་དང་ལྡན་པས་བྱས་ན་བཀྲོལ་ནས་གསོད་པར་བྱེད་དོ། །ཚ་བའི་སྔགས་ཀྱིས་སྦྱིན་སྲེག་བྱའོ། །སྣ་ཚོགས་པ་ལ་ཁྲིམ་བྱ་ལ་སོགས་པའོ། ༡༣ །

ཕྱག་རྒྱ་སྔགས་དང་ཡང་དག་ལྡན། །
དཔའ་བོ་རྣམས་ཀྱི་ཟས་དེ་བཞིན། །
ཤྲཱི་ཧེ་རུ་ཀའི་སྤྲུལ་པ་སྟེ[2]། །
ཉེར་སྤྱོད་བསྟན་བཅོས་རྣམ་ཀུན་སྤྱངས[3]།༡༤།

སྔགས་དང་ཕྱག་རྒྱའི་རང་བཞིན་ཅན་གྱི་ཕྱི་རོལ་གྱི་ཡན་ལག་ཅན་དེ་དང་ལྡན་

1. ཕྱུང་ལ་ གསེར། པེ།
2. སྤྲུལ་པ་བྱ་ སྣ། པེ།
3. ཉེས་སྤྱོད་བསྟན་བཅོས་ཀུན་རྣམས་སྤྱངས། ཞྭ། པེ། ཉེས་སྤྱོད་བསྟན་ཆོས་ཀུན་རྣམས་སྤྱངས། སྣ།

ཅིག་ཏུ་ལོངས་སྤྱོད་ན་དཔའ་བོ་དེ་རབ་ཏུ་བརྟགས་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་པ་ལ་བརྟགས་ཞེས་བྱ་བ་[1]ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །བརྟགས་དང་ཡང་དག་པར་ལྡན་པ་ནི་བརྟགས་ཀྱི་མཉམ་པ་ཉིད་དང་ཡང་དག་པར་ལྡན་པའོ། །དེ་ལ་ལོངས་སྤྱོད་པ་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་སྤྲུལ་པ་བདག་ཉིད་ཀྱིས་ལྷ་མོ་རྣམས་ལ་ཡང་ཉེ་བར་སྤྱོད་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ལ་བྱའོ། །དེ་ཡང་རྣལ་འབྱོར་མའི་རྒྱུད་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འདོད་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བརྗོད་པའི་ཕྱིར། དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། ༡༣ །

རྟག་པ་ཉིད་དུ་འཛིན་པ་ནི། །
ལས་རྣམས་ཀུན་ལ་བསྲུང་བ་[2]དང་། །
རྣལ་འབྱོར་གཉིས་མེད་ཡེ་ཤེས་དང་། །
སེམས་ཀྱིས་ཀྱང་སྐེ་ཚིག་གཅིག་གནས[3]། ༡༤།

གཞན་དུ་ཡང་རྟག་ཏུ་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་རྣལ་འབྱོར་གཟུང་བ་ནི་དགོས་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་གཟུངས་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །རྣལ་འབྱོར་ཞེས་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་སྦྱོར་བ་གང་ལ་ཡོད་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་གཟུངས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཏེ། གཉིས་སུ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་སོ། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་གཉིས་མེད་ཅེས་པ་དེ་ཉིད་དོ། །དེ་བཞིན་དུ་སེམས་ཀྱིས་ཀྱང་སྐེ་ཚིག་གཅིག་ཉིད་དོ། ༡༥ །

---

1. ཤེས་བྱ་བ་ གསེར། ཡེ།
2. སྲུང་བ་ སྣ། ཡེ།
3. རྣལ་འབྱོར་གཉིས་མེད་ཡེ་ཤེས་དང་། །སེམས་ཀྱིས་ཀྱང་སྐེ་ཚིག་གཅིག་གནས། །ཞེས་པའི་ཚིག་རྐང་གཉིས་པོ་བོད་འགྱུར་རྒྱ་བར་མེད་ཀྱང་གོང་དེར་འགྲེལ་པ་གཞིར་བཟུང་བཀོད་པ་ཡིན།

བགེགས་མེད་ཇི་བཞིན་དེ་གྲུབ་པ[1]། །
འདིར་ནི་འགར་ཡང་འགྲུབ་མ་ཡིན། །
དེ་ཡི་ཡོ་ཉ་མ་མཆོག་བཟང་། །
ལྷན་ཅིག་བསྟེན་པར[2]ལྡན་པ་ཡིན། ༡༥ །

འདི་རྣམས་ཅི་ལྟ་བས་བགེགས་མེད་པར་འགྲུབ་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་ལྟར་གཞན་གྱི་ཐབས་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་གོ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་བགེགས་མེད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དེ་ཡང་ཡོ་ཉ་མོའི་མཆོག་ནི་གཙོ་བོས་དེ་ལྟ་བུར་གྱུར་པའི་རྗེས་ལྷ་རྗེས་ཀྱི་དངོས་གྲུབ་ཏུ་རུང་བ་ཡིན་ནོ། །ལྷན་ཅིག་བཟོད་པ་དེ་ལྡན་པ། ༡༥ །

མ་ཆགས་དགའ་བས་ཡང་དག་སྦྱོར[3]། །
རྣལ་འབྱོར་རྗེས་ཀྱི་རྣམ་འབྱེད་ཉིད། །
བླ་མའི་མན་ངག་ལ་ཆགས་པ། །
དེ་ནི་དོན་ཆེར་སྦྱིན་དང་མཚུངས། ༡༦ །

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་ནང་གི་སྦྱིན་སྲེག་དང་། རིགས་གཅིག་དང་ལྡན་པའི་ཚོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་ཉི་ཤུ་རྩ་བརྒྱད་པའོ།། །།

1. དེ་སྒྲུབ་པ་ སྣ།
2. བཟོད་པར་ འགྲེལ་པ།
3. ཀུན་ནས་ཆགས་དགའི་ལེགས་སྦྱོར་བས། རྩ་བ། གོང་དུ་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།

མ་ཆགས་དགའ་བས་ཡང་དག་སྦྱོར། །ཞེས་པ་ནི་ཕྱི་རོལ་གྱི་དགའ་བའི་ཡང་དག་པར་གང་སྦྱོར་བ་རྙེད་ནས་[1]མ་ཆཏ་པ་ནི་རྟག་ཏུ་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམ་པར་ཆགས་པར་མི་འགྱུར་པའོ། །རྣལ་འབྱོར་ནི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏོ། །རྫས་ནི་བཟའ་བར་བྱ་བའོ།། དེ་གཉིས་གཞན་དག་གི་རྣལ་འབྱོར་དང་བཟའ་བ་དག་རྣམ་པའི་ཆ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །དེའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་གྱུར་པའི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྫས་རྣམ་པའི་ཆར་བྱ་བའོ།། ཡང་ན་རྣལ་འབྱོར་ལས་སྐྱེས་པའི་རྫས་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཏེ། རྣམ་པར་ཕྱེ་བ་ནི་རྣམ་པའི་ཆ་ཤས་སུ་བྱས་ལ་[2]ཤེས་རབ་ཏུ་ལྷན་ཅིག་ཏུ་ཡོངས་སྤྱད་པ་ནི་ཆ་ཤས་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཁྱད་པར་ཅན་གྱི་ཆ་འདི་ནི་རྣམ་པའི་ཆ་སྟེ། དེའི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་རྣམ་པའི་ཚའོ། །རྣལ་འབྱོར་པས་བླ་མའི་མན་ངག་ལ་དགའ་བར་གྱུར་ཅིག་ཅེས་པའི་ཕྱིར། བླ་མའི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་མན་ངག་བླ་མས་བྱིན་པ་ལ་ཡང་དག་པར་དགའོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །དེའི་ཕྱིར་དེའི་དོན་ནི་དེའི་དོན་དུ་གཉེར་བའོ་ཞེས་པ་ནི་དེའི་དོན་ཏོ། །འདིར་ཡང་ནོར་ནི་དད་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དེ་ལྟར་ཡང་''དད་པའི་ནོར་དང་། ཤེས་རབ་ཀྱི་ནོར་དང་། ཐོས་པའི་ནོར་དང་། བརྩོན་འགྲུས་ཀྱི་ནོར་དང་། དགའ་བའི་ནོར་དང་། ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ནོར་དང་། དྲན་པའི་ནོར་དང་''ཞེས་གསུངས་སོ། །དེའི་སྟེར་བ་ནི། འདོད་པའི་དོན་ནི་རྫོགས་བྱ་གང་། །ཞེས་པ་ནི་ནོར་སྟེར་བ་ནི་[3]དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་དང་དེ་མཉམ་པའོ། ༡༨ །

1. སྟེད་ནས་ སྡེ། ཅོ།

2. བྱས་པ་ ཅོ།

3. སྟེར་བ་ སྡེ། ཅོ།

ནང་གི་བདག་ཉིད་ཀྱི་སྨིན་སྨྲིག་དང་འཇིག་རྟེན་པའི་སྨིན་སྨྲིག་ནི་ཕྱི་རོལ་དུ་[1] གྱུར་པའི་ཕྱིར་རིགས་གཅིག་ཏུ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ལེའུ་ཞེས་ཀྱང་བྱ་སྟེ། དེ་ནང་གི་བདག་ཉིད་ཀྱི་སྨིན་སྨྲིག་དང་རིགས་གཅིག་གི་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་ཉི་ཤུ་རྩ་བརྒྱད་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལས་ལེའུ་ཉི་ཤུ་རྩ་བརྒྱད་པའོ།། །།

✶

1. ཕྱི་རོལ་ཏུ་ གསེར། པེ།

ཕོ་ཉའི་མཚན་ཉིད་དང་ནུས་པའི་གནས་སྐབས་ཀྱི་ཚོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནས་གཞན་ཡང་བསྟན་པ་ནི། །
ཕོ་ཉའི་མཚན་ཉིད་ཤེས་བྱ་བ། །
གང་གིས་ཡང་དག་ཤེས་གྱུར་པ། །
མཁའ་འགྲོའི་དམ་ཚིག་ལ་གནས་པའོ། ༡ །

ཧྲོད་ཀྱི་བྱ་བ་མེད་པར་ནི་སྦྱོད་པ་མེད་དེ་དེའི་ཕྱིར་དེ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་ལེའུ་ནི་དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་སོ། །དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ནང་གི་བདག་ཉིད་ཀྱི་སྦྱིན་སྲེག་ལ་སོགས་པ་བསྟན་པའི་རྗེས་སུའོ། །གཞན་ཞེས་པ་ནི་གཞན་ནོ། །ཅི་ཞེས་པ་བསྟན་པ་ནི་ཞེས་གསུངས་ཏེ་གཞན་ཡང་བསྟན་པའོ། །ཅིའི་ཕྱིར་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །གང་གི་དོན་དུ་ཞེས་པ་ལ། ཕོ་ཉའི་མཚན་ཉིད་ཤེས་པར་བྱ། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། དེའི་མཚན་ཉིད་ཤེས་པའོ། །གང་གིས་ཡང་དག་ཤེས་འགྱུར་པ[1]། །མཁའ་འགྲོ་མ་ཡི་དམ་ཚིག་གནས། །ཞེས་པ་ནི་སྔའི་གཉིས་པའི་དོན་གྱི་དང་པོའོ། ༡ །

མིང་པོ་དང་ནི་ཕ་དང་ཡང་། །
བདག་པོ་ཉིད་དུ་སྐད་ཅིག་མཐོང་[2]། །
ལྕེ་སྦྲོམ་མིག་ནི་དམར་སེར་ལ། །
རྩུབ་ཅིང་སྤྱུ་ནི་དམར་སེར་ཡིན། ༢ །

---

1. འབྱུང་བ་ གསེར། གྱུར་པ་ རྩ་བ།
2. སྐད་ཅིག་བཤད་ སྣ། ཕྣ།

སྤྲུན་ནི་དཔའ་བོའོ། །ཕ་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའོ། །བདག་པོ་ཉིད་དུ་མཐོང་བ་ཉིད་བདག་པོ་ཉིད་དོ། །ཐུགས་ཀྱི་མཐུས་སྐད་ཅིག་གིས་སོ། །ལྷེ་སྒོམ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་དམར་སེར་གྱི་མིག་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །རེག་ན་རྫུབ་ཅིང་དམར་སེར་གྱི་བཙ་[1]དང་སྒྲ་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། ༢ །

ཐུན་མོང་དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་དང་། །
བཟླས་དང་[2]བརྟུལ་ཞུགས་ལ་རྟག་དགའ། །
དྲན་པ་དང་ནི་ཡང་དག་ལྡན། །
ཡོ་ཉ་མོ་སོགས་གོ་འཕང་བཅས། ༣ །

དངོས་གྲུབ་ཀུན་གྱི་ཐུན་མོང་དུ་བསྟན་པའི་ཕྱིར། དངོས་གྲུབ་ཀུན་གྱི་ཐུན་མོང་སྟེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དྲན་པ་དང་སེམས་དང་ཡང་དག་པར་ལྡན་པ་ནི་ཡང་དག་པར་རྗེས་སུ་སྤྱོར་བའོ། །ཅི་བསམ་[3]ཞེས་པ་ལ་ཡོ་ཉ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། གོ་འཕང་བཅས་ཞེས་གསུངས་ཏེ་[4]སོགས་པའི་སྒྲ་ནི་དམ་ཚིག་བསྲུང་བའོ། །གོ་འཕང་ནི་ཡེ་ཤེས་དེ་དང་བཅས་པ་ནི་དྲན་པ་དང་མཉམ་པར་ལྡན་པའོ། །འདིས་ནི་འདི་ལྟར་སྟོན་ཏེ། དམ་ཚིག་ཅན་གྱིས་འབད་པས་ཡོ་ཉ་མོ་བསྒོམ་པར་བྱ་ཞེས་སོ། ༣ །

---

1. དམར་སེར་གྱི་བླ་ སྡེ། ཅོ།
2. བླས་དང་ པེ།
3. ཅི་བསམས་ གསེར། པེ།
4. གསུངས་སྟེ་ གསེར། པེ།

མཁའ་འགྲོ་མ་མཆོག་ཉི་ཤུ་བཞི།
སྦྱོད་དང་གྲོལ་བའི་འབྲས་རབ་སྟེར[1]།
རྩ་བའི་སྔགས་ནི་རྟག་ཏུ་བཟློས།
འདོད་པའི་དོན་ཀུན་སྒྲུབ་བྱེད་པ། ༤

བདུད་ཀུན་རབ་ཏུ་ཞི་བར་བྱེད།
རྒྱུ་དང་མི་རྒྱུའི་འཇིག་རྟེན་གསུམ།
རྣལ་འབྱོར་རོལ་པའི་འབྲས་རབ་སྟེར།
གསང་སྔགས་འདི་ལས་འབྱུང་བ་ཡིན། ༥

ཕོ་ཉ་མོ་ཙི་ཙམ་ཞེས་པ་ལ། མཁའ་འགྲོ་མ་མཆོག་ཉི་ཤུ་བཞི། །སྦྱོད་དང་གྲོལ་བའི་འབྲས་རབ་སྟེར། །ཞེས་གསུངས་སོ། །རབ་ཏུ་གཏུམ་མོ་ལ་སོགས་པའི་མཁའ་འགྲོ་མ་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་ཉེ་བར་མཚོན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བཅུ་གཉིས་པོ་ཡང་འདིར་ཤེས་པར་བྱའོ། །དེ་ཅིའི་དོན་དུ་དེ་བསྒོམ་ཞེས་གསུངས་ཏེ་[2]སྦྱོད་པ་ནི་མཐོ་རིས་ལ་སོགས་པའོ། །གྲོལ་བ་ནི་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་གྱི་འཆིང་བ་སྤངས་པའོ། །དེའི་འབྲས་བུ་ཕུལ་དུ་ཕྱུང་བ་སྟེར་བ་ཞེས་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །དེ་རྣམས་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་གཙོ་བོ་བྱས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་པར་བསྒོམས་ལ་རྩ་བའི་སྔགས་བཟླས་པའི་ཕྱིར་རྩ་བའི་སྔགས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། གོ་སླའོ། །འཇིག་རྟེན་གསུམ་ལ་དབང་བར་

1. འབྲས་རབ་སྟེ་ སྣ།
2. གསུངས་སོ་ པེ།

སྐྱེ་བ་ནི་ཡང་དག་པར་འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དེ་ནས་སྤྱོད་དང་གྲོལ་བའི་འབྲས་བུ་སྟེར། ཅིའི་ཕྱིར་[1]དེ་ལྟར་ཞེས་པ་ལ་སྔཏ་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་སོ། ༤-༥ །

སྔགས་དང་ཕྱག་རྒྱར་ཡང་དག་ལྡན། །
སྒྲུབ་པ་པོ་ནི་དངོས་གྲུབ་བརྩོན། །
ཕྱག་རྒྱ་དང་བྲལ་གསང་སྔགས་ཏེ། །
ལུས་ཅན་རྣམས་ལ་འགྲུབ་མི་འགྱུར། ༦ །

སྔགས་ནི་དེ་ཉིད་བསྐུལ་ཞིང་ཟློས་པའོ། །ཕྱག་རྒྱ་ནི་ལྷའོ། །དེ་དག་དང་སྒྲུབ་པ་པོ་དང་ལྡན་པའོ། །དངོས་གྲུབ་ལ་ཆེད་དུ་བྱེད་པར་ཡོད་པའི་སྒྲུབ་པ་པོ་ཡིན་ནོ། །སྔགས་འབའ་ཞིག་ཁོ་ན་ཅིའི་ཕྱིར་བཟླས་ཞེས་པ་ལ་ཕྱག་རྒྱ་[2]ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ལྷ་མོ་བསྒོམ་པ་[3]དང་བྲལ་ན་ཉེ་བར་མངོན་དུ་བྱེད་པའི་བྱེད་པ་པོ་སྔགས་ཀྱི་ལས་མ་ཡིན་པར་ཐོབ་པར་མི་འགྱུར་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ལུས་ནི་རྣལ་འབྱོར་པ་སྟེ་ཁྱད་པར་ཅན་གྱི་ལུས་སུ་སྦྱོར་བའི་ཕྱིར་རོ། ༦ །

ཧེ་སྲིད་དོ་བའི་བྱ་བ་དག[4] །
མངོན་པར་བརྩོན་པས་[5]རྟོགས་པར་བྱ། །

1. འབྲས་བུ་སྟར། ཅིའི་ཕྱིར་ སྡེ། འབྲས་བུ་སྟེར། ཅི་ཕྱིར་ གསེར། པེ།
2. བཟླས་ཤེས་པ་ལ་སྔགས་ གསེར། པེ། བཟླས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་དང་ སྡེ། ཅོ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་དང་མཐུན་པར་བཀོད་ཡོད།
3. ལྷ་བསྒོམ་པ་ གསེར། པེ།
4. ཧེ་ལྟར་དོ་བའི་བྱ་བའི་བདག །འགྲེལ་པ།
5. བརྩོན་པར་ ལྷ། སྣ།

འདོད་པའི་དོན་ཀུན་སྒྲུབ་བྱེད་པའི། །
རྣལ་འབྱོར་ཆེ་ལ་གང་ཞིག་སྣང་། ༴ །

དེ་ཡང་སྔགས་ལ་ཉེ་བར་མངོན་དུ་སྦྱོར་ཞིང་གུས་པས་རྒྱུན་དུ་[1]ཡུན་རིང་པོའི་དུས་སུ་གོམས་པར་གོ་བར་བྱ་བ་ནི་རྟོགས་པར་བྱ་བའོ། །དེ་ཉིད་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེས་པ་ལ་ཇི་ལྟར་དྲོ་བའི་བྱ་བའི་བདག་ཉིད་ཅེས་པ་གསུངས་ཏེ། སེམས་ཅན་གཞུག་པར་བྱ་བའི་དོན་དུ་ཞི་བ་དང་རྒྱས་པ་དང་མངོན་སྤྱོད་ལ་སོགས་པ་ནི་དྲོ་བའི་བྱ་བ་བསྐྱེད་པའོ། ། དེ་ཇི་ལྟར་བདག་ཡིན་པ་ནི་དེ་བཞིན་དུ་ནུས་པའོ། །དེ་ཉིད་ནུས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་བར་རོ། །གང་དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་གནོད་པ་བྱེད་པ་དེ་རྣམས་ལ་ཆེ་འདི་ཉིད་ལ་སྡུག་བསྔལ་ལ་[2]སོགས་པར་བྱེད་པའི་ནུས་པ་བསྟན་པར་བྱའོ། །འོན་ཀྱང་འཇིག་རྟེན་ཕ་རོལ་ཏུ་ཡང་སྔགས་ཀྱི་ནུས་པ་བསྟན་པའི་ཕྱིར་གང་ཞིག་སྣང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོ་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་རྣལ་འབྱོར་རོ། །ལྷག་མ་ནི་གོ་སླའོ། །རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོ་ལས་གཞན་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྒྲུབ་བྱེད་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བསྟན་པའི་ཕྱིར། ༴ །

ཁྲི་ཡི་སྐྱེ་གནས་བརྒྱར་[3]སྐྱེས་ཏེ། །
སྨེ་ཤ་ཅན་[4]དུ་སྐྱེ་བར་འགྱུར། །

1. རྒྱུན་ཏུ་ ཅོ།
2. གསེར་བྲིས་དང་པེ་ཀིང་པར་མ་གཉིས་ཀྱི་ནང་'ལ་'མ་གསལ།
3. ཁྲིའི་སྐྱེ་གནས་བརྒྱར་ པེ། ཁྲི་ཡི་སྐྱེ་གནས་རྒྱར་ སྣ།
4. སྨེ་ཤ་ཅན་ སྣ། པེ། ལྷ།

དཔེར་ན་ལ་ལ་མར་འདོད་པས།
འབད་པས་[1]ཚུ་ནི་བསྲུབས་གྱུར་ཀྱང་། ༨
མར་སར་[2]འབྱུང་བར་མི་འགྱུར་གྱི།
ལུས་ཉོན་མོངས་པ་ཁོ་ནར་ཟད།

འཛིན་ཅིང་མཆོད་པར་བྱེད་པ་ནི།
འཚོ་བའི་ཐབས་ཀྱི་རྒྱུར་གྱུར་པའི། ༩
རྣལ་འབྱོར་གཞན་ལ་བརྟེན་པ་[3]ནི།
གཞན་དུ་དེ་བཞིན་དོན་མེད་འགྱུར།

རྣལ་འབྱོར་ཆེ་མཆོག་[4]དཔའ་བོ་ནི།
ཡུལ་ཕྱོགས་གང་ན་གནས་གྱུར་པ[5]། ༡༠

བསྲུབས་གྱུར་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དད་པས་མངོན་པར་ཡིད་ཆེས་པ་གང་སྲུབ་པ་ཉིད་བཞིན་[6]དུ་རྣལ་འབྱོར་པ་གཞན་ལ་གོ་བར་བྱེད་ན་འབྲས་བུ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །རྣལ་འབྱོར་གཞན་ནི་བཟང་བའི་རྒྱུ་ཉིད་དུ་གཟུང་བའོ། །མཆོད་པར་བྱེད་ཅེས་པ་ནི་མཆོད་པར་བྱེད་པའམ། འདི་ལྟ་སྟེ་རྣལ་

---

1. དད་པས་ འགྲེལ་པ།
2. མར་གསར་ ལྷ།
3. བསྟེན་པ་ ལྷ། སྣ། པེ།
4. རྣལ་འབྱོར་ཆེ་འཛིན་ འགྲེལ་པ།
5. གནས་གྱུར་པའི་ པེ།
6. སྲུབ་པ་ཉིད་འཛིན་ ཅོ།

འཁོར་གཞན་འཆང་བས་འཇིག་རྟེན་ཕ་རོལ་གྱི་དོན་དུ་མི་འགྱུར་བར་བསྟན་པའི་ཕྱིར་རྣལ་འབྱོར་གཞན་ལ་བརྟེན་པ་[1]་ནི་ཞེས་གསུངས་སོ། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་རྣལ་འབྱོར་པ་བཞུགས་པའི་གནས་ཀུང་བསོད་ནམས་སྐྱེད་བྱེད་དུ་བསྟན་པའི་ཕྱིར་རྣལ་འབྱོར་ཆེ་འཛིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། ༨-༡༠

རིགས་ངན་ཀླ་ཀློ་ཡིན་ན་ཡང་[2]།
ཡུལ་དེ་ཡོངས་སུ་བརྟགས་པ་སྟེ།
སེམས་ཅན་ཡོངས་སུ་གཟུང་བའི་རྒྱུར།
དེ་རུ་ང་ནི་རྟག་པར་གནས། ༡༡

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་ཕོ་ཉའི་མཚན་ཉིད་དང་། ནུས་པའི་གནས་སྐབས་ཀྱི་ཚོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་ཉི་ཤུ་རྩ་དགུ་པའོ།། །།

རིགས་ངན་གདུམ་མོ་ལ་སོཏ་པའི་ཡུལ་ཡང་དཔའ་བོས་ཡོངས་སུ་བརྟགས་པ་སྟེ། དེ་གང་ཡིན་པའི་ཡུལ་དེ་ཉིད་བདེན་པའི་[3]ཡུལ་ཉིད་དུ་ཡོངས་སུ་བརྟག་པར་བྱའོ། དེ་རུ་ཞེས་པ་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའི་ཡུལ་དང་འབྲེལ་པ་གང་ཡིན་པའི་སེམས་ཅན་དེ་རྣམས་ཡོངས་སུ་བཟུང་[4]བའི་དོན་དུ་རྟག་ཏུ་གནས་པའོ། ༡༡

1. བསྟན་པ་ སྡེ། ཅོ།
2. ཡིན་ནའང་ པེ།
3. ‘ཡུལ་དེ་ཉིད་བདེན་པའི་’ སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེ་གཉིས་སུ་མ་གསལ།
4. གཟུང་ གསེར། པེ།

ཉུས་པ་ནི་སྔགས་ཀྱི་ཉུས་པའོ། །གནས་སྐབས་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་རྣལ་འབྱོར་པ་བཞུགས་པའི་ཡུལ་གྱི་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་དུ་ཉེ་བར་གནས་པའོ། །ཕོ་ཉའི་མཚན་ཉིད་དང་ཉུས་པའི་གནས་སྐབས་ཤེས་པར་བྱ་བའི་དོན་དུ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཡིན་ལ་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་དེ་དེ་བཞིན་ནོ། །ཉི་ཤུ་རྩ་དགུ་ནི་ཉི་ཤུ་རྩ་དགུ་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་ཉི་ཤུ་རྩ་དགུ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ[1]།། །།

*

1. དཀའ་འགྲེལ་པའོ་ པེ།

ཛ྄་ཛ་བཅིང་བའི་སྡུགས་བཏུ་བ།

དེ་ནས་གཞན་ཡང་བཤད་བྱ་བ། །
ཤིན་ཏུ་རྙེད་དཀའི་དགོད་པ་སྟེ། །
གང་གིས་ཤེས་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། །
མྱུར་དུ་དངོས་གྲུབ་སྒྲུབ་བྱེད་པའོ། ༡ །

དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་རྩ་བའི་སྡུགས་བཏུ་བ་བཀོད་པའི་རྗེས་སུ་གཞན་བཀོད་པ་བཤད་པའོ། །དེ་དགོད་པར་བྱ་སྟེ། འདིར་ཡི་གེ་དང་གུག་སྐྱེད་[1]དགོད་པའོ། །རི་མིག་བཞི་བཅུ་རྩ་དགུའི་རྒྱུད་ཀྱི་རི་མོའོ། །ཇི་ལྟ་བུར་གྱུར་པ་ཞེས་པ་ལ་ཤིན་ཏུ་རྙེད་དཀའ་ཞེས་གསུངས་སོ། །གང་གི་ཕྱིར་འདི་ལས་བཞི་པའི་སྡུགས་བཏུ་བ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །སྡུགས་ཉིད་བཏུ་བའི་ཁྱད་པར་ཅི་ཡིན་ཞེས་པ་ལ། གང་ཞིག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །གང་ཞིག་ནི་སྡུགས་ཀྱིས་སོ། །མྱུར་དུ་དངོས་གྲུབ་རབ་བསྒྲུབ་པ། །ཞེས་པ་ནི་དེས་བགེགས་རབ་ཏུ་ཞི་བའོ། ༡ །

ས་ཡི་ཆ་ནི་[2]མཉམ་ཡོད་འོང་། །
ཙནྡན་[3]གྱིས་ནི་ཉེ་བར་བྱུག །

---

1. གུག་ཀྱེད་ གསེར། པེ།
2. སའི་ཆ་ནི་ པེ།
3. ཙན་དན་ སྣ། པེ།

དྲི་བཟང་དྲི་ལྡན་ས་ལ་ནི།
མེ་ཏོག་སིལ་མ་གཅལ་དཀྲམ་[1]ཞིང་། ༢

མར་མེའི་ཕྲེང་བ་ཡང་དག་དཀྲིགས།
སྤྲོས་ཀྱི་དྲི་ཡིས་ཉམས་དགའ་བར[2]།
བདག་གིས་ཐམས་ཅད་བྱས་ནས་ནི།
ཕྱོགས་བཅིང་པ་ནི་བྱས་ནས་སུ། ༣

དེ་ནས་རྫ་ཛ་བཅིང་བྱ་སྟེ།
རི་མོ་དགུ་པ་[3]ཡོངས་སུ་བླུམ[4]།
ཡི་གེ་ཕྱི་མོ་མཉམ་བྲིས་ལ།
ཤིན་ཏུ་མཉམ་བཞག་[5]དགོད་པར་བྱ། ༤

གང་ལ་དགོད་ཅེས་པ་ལ་སའི་ཆ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཙནྡན་ནི་[6] བདུད་རྩི་ལྔར་མངོན་པར་འདོད་པའོ། །དེའི་[7]རང་གི་ངོ་བོ་ཤེས་པ་དགའ་བ་བསྐྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དྲི་ཞིམ་དྲི་ནི་ཙནྡན་ལ་སོགས་པའོ། །བདུད་རྩི་ལྔ་དང་བསྲེས་ལ་དྲི་

---

1. གཅལ་བཀྲམ་ ལྷ།
2. ཚིག་རྐང་འདི་སྣར་ཐང་པར་མའི་ནང་མ་གསལ།
3. རི་མོ་དུག་པ་ སྡེ།
4. 'བླུམ་པོའི་རི་མོ་དགུ་བྱ་སྟེ།' ཞེས་པའི་ཚིག་རྐང་འདི་པེ་ཅིང་དང་སྣར་ཐང་གཉིས་སུ་ལྷག
5. མཉམ་གཞག་ སྣ། ལྷ།
6. ཙན་དན་ནི་ གསེར། པེ།
7. ངའི་ སྡེ།

ཞིམ་པའི་དྲིས་སའི་ཆ་[1]བྱུག་པར་བྱའོ། །མི་ཧྲོག་དྲི་ཞིམ་ནི་ཙམ་པ་ཀ་[2]ལ་སོགས་པའོ། །བདུག་སྤོས་ནི་སྤྲུར་བ་ལ་སོགས་པའི་བདུག་སྤོས་སོ། །དེ་ལྟར་གྱུར་པའི་གནས་སུ་ཕྱོགས་བཅིང་པ་སྔོན་དུ་སོང་བས་སྟོང་བ་ཉིད་དུ་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །ཡི་གེ་ཙམ་སོ་སོར་དགྲམ་པ་ནི་རབ་ཏུ་དགོད་པའོ། །ཡི་གེ་ནི་ཨ་ལ་སོགས་པ་དང་ཀ་ལ་སོགས་པའི་ཡི་གེ་ཉིད་ཡི་གེ་ཙམ་མོ། །ཅི་བྱས་ན་ཞེས་པ་ལ་མཉམ་པར་བྲི་ཞེས་གསུངས་ཏེ། མཉམ་པར་ཨ་ལ་སོགས་པ་དང་ཀ་ལ་སོགས་པ་རིམ་པ་བཞིན་དུ་བྲིས་ཤིང་བཞག་པ་ཉིད་དོ། །ཅི་སྔོན་དུ་སོང་བས་ཞེས་པ་ལ་[3]རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། རྡོ་རྗེ་བཅིངས་པ་ཉིད་ཀྱི་དབྱེབས་གང་ཡིན་པ་དེ་བཞིན་དུ་དགོད་པའོ། །
ལུགས་ལས་བྱུང་བ་དང་ལུགས་བཟློག་པ་ཉིད་དུ་དེ་དབྱངས་དང་གསལ་བྱེད་བཟུང་[4]
བས་ཁ་ཕྱིར་བལྟས་པ་ཉིད་ཀྱི་རྡོ་རྗེ་དང་འདྲའོ། ༣-༤ |

དེར་གནས་པ་ལས་དཔའ་བོ་ནི། |
འདོད་པའི་དོན་ཀུན་སྒྲུབ་བྱེད་བདུ། |
ལུགས་སུ་འབྱུང་དང་ཟློག་པ་ཡིས[5]། |
དབྱངས་དང་ཡི་གེ་སྒྲུབ་པ་པོས། ༥ |

---

1. དྲིས་སའི་ཆུ་ གསེར།
2. ཙམ་པ་ གསེར། པེ།
3. ཤེས་པ་ལ་ གསེར། པེ།
4. གཟུང་ གསེར། པེ།
5. ཟློག་པ་ཡི་ ལྷ།

དཔའ་བོ་ནི་སྟོགས་སོ། །འདོད་པའི་དོན་ཀུན་སྒྲུབ་བྱེད་པ། །ཞེས་པ་ནི་སྟོགས་ཀྱི་ཁྱད་པར་རོ། །ཅིའི་ཕྱིར་དེ་ལ་དཔའ་བོ་བདུ་ཞེས་པ་ལ། རིམ་བཞིན་འབྱུང་དང་རིམ་མིན་པས། །དབྱངས་དང་ཡི་གེ་སྒྲུབ་པ་པོས། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། དབྱངས་ནི་ཨ་ལ་སོགས་པའོ། །ཡི་གེ་ནི་ཀ་ལ་སོགས་པ་སྒྲའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཏེ། གང་ཡིན་པ་དེ་བདུ་བར་བྱའོ། ༥ །

གྲངས་དེ་དག་གི་[1]ནང་ཚུད་པར། །
དགེ་བ་ཐུབ་པས་བྱས་ནས་ནི། །
རེ་མིག་སུམ་ཅུ་གཉིས་པ་བླང་། །
ལྷ་པ་ཡིས་ནི་ཁྱད་པར་བྱ། ༦ །

དེ་ལྟའི་གྲངས་ཀྱི་ནང་གཏོགས་པ། །ཞེས་པ་ནི་རེ་མིག་གི་གྲངས་ཀྱི་ནང་དུ་གཏོགས་པ་ཇི་ལྟར་ཡིན་པ་[2]དེ་ལྟར་ཡང་དག་པར་བདུའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་ཚིག་གང་གིས་ཞེས་དོགས་པ་ལ་ཐུབ་པ་[3]ཞེས་གསུངས་སོ། །རེ་མིག་སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་བླང་། །ཞེས་པ་ནི་རེ་མིག་ཅེས་པ་ནི་སྒྲའི་རྐྱེན་མེད་པའོ། །ཀ་ཡོད་པའི་རེ་མིག་ནས་བརྩམས་ཏེ། རེ་མིག་སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་པ་ན་ཡོད་པའི་ས་བཟུང་བའོ། །ཀ་ནས་བཟུང་[4]ཞིང་བགྲངས་པའི་ས་ཉིད་གཟུང་ངོ་། །ཐམས་ཅད་དུ་རེ་མིག་བཟུང་བས་[5]རེ་མིག་ལ་

1. དེ་དག་ནི་ ལྷ། སྣ།
2. ཇི་ལྟར་ཡིན་པ་དེ་ལྟར་ཡིན་པ་ གསེར། པེ།
3. ཐུག་པ་ སྡེ། ཅོ།
4. ས་གཟུང་བའོ། །ཀ་ནས་གཟུང་ གསེར། ས་བཟུང་བའོ། །ཀ་ནས་གཟུང་ པེ།
5. གཟུང་བས་ གསེར། པེ།

གནས་པའི་ཡི་གེ་གཟུང་ངོ་། །འདི་ཉིད་ཉེ་བར་མཁོ་བར་[1]གཟུང་ངོ་། །རེ་མིག་གསུམ་པ་ཞེས་བྱ་བའི་གཞུང་ལ་ནི་ལྟེའུ་ཚུང་[2]ཅན་གྱི་ཤ་ཡོད་པ་ནས་བཟུང་བའི་གསུམ་པ་ན་སོ་ལས་བྱུང་བའི་ས་ཡོད་དེ་བཟུང་བའོ[3]། །ལྔ་པ་ཡིས་ནི་དབྱེ་བ་བྱ། ། ཞེས་པ་ནི་ཨུས་ཁྱད་པར་དུ་བྱས་པའོ། ༦ །

བརྒྱ་ཕྱེད་ཕྱེད་པ་ཡང་དག་བླང་། །
ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་པ་ཡིས་ཕྱེ། །
རེ་མིག་སུམ་ཅུ་དྲུག་པ་བླང་། །
གསུམ་པ་ཡིས་ནི་ཁྱད་པར་དབྱེ། ༧ །

བརྒྱ་ཡི་ཕྱེད་ཕྱེད[4]ཡང་དག་བླང་། །ཞེས་པ་ནི་ཀ་ཡོད་པའི་རེ་མིག་ནས་བཟུང་ནས[5]བརྩིས་པའི་མདོ། །དེ་བཞིན་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་དབྱེ། །ཞེས་པ་ནི་དེ་བཞིན་ཀ་ཡོད་པ་ནས་བཟུང་སྟེ[6]ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཉི་ཤུ་རྩ་བཞིའི་དབྱེ་བ་ནི་ཐ་འོ། །དེས་བརྒྱའི་ཕྱེད་ཕྱེད་ཀྱི་འོག་གི་ཆར་དབྱེ་བའོ། །རེ་མིག་སུམ་ཅུ་དྲུག་པ་ལ། །རེ་མིག་གསུམ་པས་དབྱེ་བར་བྱ། །ཞེས་པ་ནི་ཨ་ཡོད་པ་ནས་བཟུང་[7]སྟེ། ན་ཡོད་པ་ནི་སུམ་ཅུ་རྩ་

1. ཉེ་བར་འཁོར་བར་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་ཡོད།
2. ལེའུ་ཚུང་ གསེར། པེ།
3. གཟུང་བའི་གསུམ་པ་ན་སོ་ལས་བྱུང་བའི་ས་ཡོད་དེ་གཟུང་བའོ་ གསེར། པེ།
4. བརྒྱའི་ཕྱེད་ཕྱེད་ གསེར། པེ། བརྒྱ་ཕྱེད་ཕྱེད་པ་ རྩ་བ།
5. གཟུང་ནས་ གསེར། པེ།
6. གཟུང་སྟེ་ གསེར། པེ།
7. གཟུང་ གསེར། པེ།

ཧྲུག་པ་སྟེ། རི་མིག་གསུམ་པ་ནི་ཨ་ཡོད་པ་ནས་བཟུང་[1]སྟེ་རི་མིག་གསུམ་པའི་ཨིའོ་ དེས་དབྱེ་བར་བྱའོ། ༧ །

དེ་ནས་སུམ་ཅུ་གཉིས་པ་ བླང་། །
ལྔ་པ་ཡིས་ནི་ཁྱད་པར་བྱ། །
དེ་ནས་ཉི་ཤུ་ལྔ་པ་གཟུང་། །
ཉི་ཤུ་བཞི་པ་དག་དང་སྦྱར། ༡ །

དེ་ནས་སུམ་ཅུ་གཉིས་པ་བླང་། །རི་མིག་ལྔས་ནི་དབྱེ་བར་བྱ། །ཞེས་པ་ནི་དེ་ནས་ནི་ཀ་ཡོད་པ་ནས་བཟུང་བའོ། །ཞི་ནི་ཉིད་ཀྱི་དོན་ནམ་བསྡུ་བའི་དོན་ཏོ། །དེ་ལྟར་སྔ་མ་[2]ལ་ཡང་ངོ་། །དེ་ནས་ཉི་ཤུ་ལྔ་པ་བཟུང་། །ཉི་ཤུ་བཞི་དང་སྦྱར་བར་བྱ།། ཞེས་པ་ནི། ཉི་ཤུ་ལྔ་ནི་ཉི་ཤུ་རྩ་ལྔ་པ་སྟེ་མ་ཡིན་པའོ[3]། །དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་ཀ་ཡོད་པ་ནས་སོ། །ཉི་ཤུ་བཞི་ནི་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་པ་སྟེ་ཧ་ཡོད་པའོ། །དེ་ཡང་གསུམ་པ་ནི་མཐའ་སྟེ། མའི་འོག་ཏུ་ཧ་སྦྱར་བར་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༡ །

སུམ་ཅུ་གསུམ་པ་ཡང་དག་བླང་[4]། །
རེའུ་མིག་བཅོ་ལྔ་པ་ཡིས་ལྡན[5]། །

---

1. གསེར་ཕྲེས་དང་པེ་ཀིང་པར་མའི་ནང་བཟུང་ཞེས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་‘གཟུང་’ ཉིད་འཁོད་འདུག
2. དེ་ལྟར་ལྔ་པ་ སྣེ། ཅོ།
3. མ་ཡི་བའོ་ གསེར། པེ།
4. ཡང་དག་བླངས་ སྣ།
5. རི་མིག་བཅོ་ལྔ་པ་ཡིར་ལྡན། ཞ། སྣ། རིག་མིག་བཅྭ་ལྔ་པ་ཡིར་ལྡན། པེ།

ལྔ་པ་དག་དང་ཡང་དག་བཅས། །
མཛེས་པའི་མཆོག་ནི་ཡིན་པར་འདོད། ༩ །

སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་ཡང་དག་བླང་། །རེ་མིག་བཅོ་ལྔ་པ་ཡིས་མཆོད། །ཅེས་པ་ནི་དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་རབ་ཏུ་འཇུག་གོ །ཀ་ཡོད་པ་ནས་གཟུང་སྟེ། སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་པ་ན་ཧ་ཡོད་པའོ། །བཅོ་ལྔ་ནི་ཐིག་ལེ་ཡོད་པའོ། །ཨ་ཡོད་པ་ནས་བཟུང་སྟེ། ལྔ་པ་ཡིས་ནི་ཡང་དག་ལྡན། །མཛེས་པའི་མཆོག་ནི་ཡིན་པར་འདོད། །ཅེས་པ་ནི་ཨ་ཡོད་པ་ནས་གཟུང་སྟེ་ལྔ་པ་ཉིད་ནི་ལྔ་པ་སྟེ། ཨུས་ས་བོན་འདིས་མཛེས་པར་བྱས་ན་དོན་ཐམས་ཅད་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། ༩ །

ཉི་ཤུ་རྩ་གཉིས་པ་དང་ལྡན། །
དེ་བཞིན་ཉི་ཤུ་བདུན་དང་ལྡན[1]། །
འདི་དག་ཐམས་ཅད་བླངས་པས་ནི[2]། །
ཚིག་གི་དང་པོ་ཡིན་པར་འདོད[3]། ༡༠ །

ཉི་ཤུ་རྩ་གཉིས་ཡང་དག་ལྡན། །དེ་བཞིན་ཉི་ཤུ་བདུན་དང་ལྡན། །ཞེས་པ་ནི་ཉི་ཤུ་གཉིས་ནི་ཉི་ཤུ་རྩ་གཉིས་ཏེ་ཕ་ཡོད་པའོ། །ཨ་ཡོད་པ་ནས་ཉི་ཤུ་རྩ་བདུན་པ་ན་ཊ་

1. བོད་འགྱུར་རྩ་བར་‘ བཅུ་གཅིག་པ་ཡི་མཚན་པའོ། ’ ཞེས་པ་ཀ་ནས་གཟུང་བའི་ཡི་གེ་ཊ་དང་། འགྲེལ་པར་‘ ཉི་ཤུ་རྩ་བདུན་ ’ཞེས་པས་ཀྱང་ཨ་ཡིག་ནས་གཟུང་བའི་ཊ་ཡིག་ཡིན་པ་མཚུངས་ཀྱང་། གོང་དུ་ལེགས་སྦྱར་དང་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཞག་པའོ།།
2. ཚིག་རྐང་འདི་རྒྱ་དཔེ་དང་འགྲེལ་པར་གསལ་བ་ལྟར་གོང་དུ་བསྣན་པ་ཡིན།
3. ‘ཉི་ཤུ་རྩ་གཉིས་པ་……འདོད། ’བར་གྱི་ཚིག་རྐང་རྣམས་སྣར་པེའི་པར་མ་གཉིས་ཀའི་ནང་མེད།

ཡོད་པའོ། །འདི་ཐམས་ཅད་བླངས་པས་དང་པོའི་ཚིག་རྐང་ངོ་། །དང་པོའི་སྡུགས་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་བརྗོད། །ཅེས་པ་ནི་དང་པོའི་ཚིག་གོ ༡༠ །

རེ་མིག་བཅུ་དགུ་པ་གཟུང་བྱ[1]། །
མེ་ཡི་བུ་དང་ཡང་དག་ལྡན། །
རེ་མིག་གསུམ་པས་ཕྱེ་བའོ། །
ཡ་ཚོགས་བརྒྱད་པའི་ས་བོན་ལ། ༡༡ །

རེ་མིག་སུམ་ཅུ་དྲུག་པ་དང་། །
ཡང་དག་ལྡན་པའི་ཡི་གེར་གྱུར། །
སྔར་ཡང་ཚིག་ནི་དེ་དག་ཉིད། །
འདོད་པའི་དོན་ཀུན་སྒྲུབ་བྱེད་ཡིན། ༡༢ །

རེའུ་མིག་ནི་བཅུ་དགུ་པ། །མེ་ཡི་བུ་དང་ཡང་དག་ལྡན། །རེའུ་མིག་གསུམ་པས་དབྱེ་བར་བྱ། །ཞེས་པ་ནི་ཨ་ཡོད་པའི་རེའུ་མིག་[2]བཅུ་དགུ་པ་ནི་བཅུ་དགུ་པ་སྟེ་གའོ། །མེའི་བུ་གང་ཡིན་པ་ནི་[3]རའོ། །ཨ་ཡོད་པ་ནས་རེ་མིག་གསུམ་པའི་དབྱེ་བ་ནི་ཨི་ཡོད་པའོ། །ཡ་ཚན་[4]བརྒྱད་པའི་ས་བོན་ལ། །སུམ་ཅུ་དྲུག་པ་ཡང་དག་ལྡན། །སྔར་ཡང་ཚིག་ནི་དེ་ཉིད་ནི། །ཞེས་པ་ནི་ཡ་ཡང་ཡིན་ལ་སྟེ་ཚན་ཡང་དེ་ཡིན་པ་ནི་ཡའོ། །དེའི་

1. བཟུང་བྱ་ སྣ།
2. རེའུ་མིག་ནས་རེ་མིག་ གསེར། ཕེ།
3. གང་ཡིན་ནི་ གསེར། ཕེ།
4. ཡ་མཚན་ གསེར། ཕེ།

བརྒྱད་པའི་ས་བོན་ནི་དའོ། །རི་མིག་སུམ་ཅུ་རྩ་དྲུག་པ། །ཞེས་པ་ནི་ཨ་ཡོད་པ་ནས་རི་མིག་སུམ་ཅུ་རྩ་དྲུག་ན་ན་ཡོད་པའོ། །ཡང་དེ་ལྟ་བུར་གྱུར་པའི་ཚིག་གོ །དང་དང་ཉིད་ནི་[1]བསྡུས་པ་[2]དང་ཉེ་བར་གཟུང་བ་དག་གོ ༡༡-༡༣ །

དེ་ནས་རང་བྱུང་[3]བླངས་ནས་ནི། །
རི་མིག་ལས་ནི་ལྔ་པར་སྦྱར[4]། །
སྤྲི་བོར་ནད་ཐིག་ལེར་སྦྱར། ༡༣ །

དེ་ནས་རང་བྱུང་བླངས་ནས་ནི། །ཞེས་པ་ནི་རང་བྱུང་ནི་དའོ། །དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་ཀྲིཥྞཀྲིཥྞའི་[5]ཚིག་ལས། རི་མིག་ལྔ་པ་ཡང་དག་སྦྱར། །ཞེས་པ་ནི་ཨ་ཡོད་པ་ནས་ལྔ་པ་ན་ཨུ་ཡོད་པའོ། །སྤྲི་བོར་ཐིག་ལེས་བརྒྱན་པར་བྱ། །ཞེས་པ་ནི། འདིར་ཐམས་ཅད་དུ་ཟླ་ཕྱེད་ནི་མེད་དེ་ཐིག་ལེ་ཙམ་གྱིས་བརྒྱན་པའི་ཕྱིར་རོ། ༡༣ །

དོན་ཀུན་སྒྲུབ་ཅེས་བྱ་བ་ཡི། །
ཚིག་ནི་གཉིས་པ་ཡིན་པར་བཤད། །
རི་མིག་བཅུ་དགུ་པ་ཉིད་ལ། །
ཉེ་ཤུ་རྩ་བདུན་པ་ཡིས་ཕྱེ། ༡༤ །

---

1. ཙ་ནེའི་པར་མའི་ནང་“ནི་”མ་གསལ།
2. སྡུས་པ་ པེ། གསེར།
3. རང་འབྱུང་ སྣ།
4. ལྔ་པར་སྦྱད་ པེ།
5. ཤེས་པ་ནི་ཀྲིཥྞཀྲིཥྞའི་ གསེར། ཤེས་པ་ནི་ཀྲིཥྞཀྲིཥྞའི་ པེ།

གསུམ་པ་དག་དང་ཡང་དག་ལྡན། །
སུམ་ཅུ་གསུམ་པ་ལེགས་བླངས་ཏེ། །
རེ་མིག་གི་ནི་གཉིས་པར་སྦྱར། །
ཉི་ཤུ་པ་དང་ཡང་དག་ལྡན། །
མཛེས་པའི་མཆོག་ནི་ཡིན་པར་འདོད། ༡༥།

འདོད་པའི་དོན་ཀུན་སྒྲུབ་བྱེད་པ། །ཞེས་པ་ནི་འདིའི་མིང་དུ་གྲགས་སོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཕཊ་ནི་སྔར་བཞིན་དུ་རྗེས་སུ་འཇུག་པའོ། །ཐིག་ལེ་སྦྱོར་སྦྱར་བར་བྱ། །ཞེས་བྱའོ། །དེའི་ཕྱིར། དེ་ནས་ཉི་ཤུ་གཉིས་པ་གཟུང་[1]། །དེ་བཞིན་བཅུ་གཅིག་པ་ཉིད་དང་། །ཞེས་པ་ནི་གཞུང་ཁ་ཅིག་ན་ཡོད་དོ། །ཀ་ཡོད་པ་ནས་ཉི་ཤུ་རྩ་གཉིས་པ་ན་ཕ་ཡོད་པའོ། །བཅུ་གཅིག་པ་ནི་ཊ་ཡོད་པའོ། །འདི་ནི་ཕཊ་གོ་སླའོ་ཞེས་པ་ནི་ཚིག་ཀྵང་གཉིས་སོ[2]། །རེའུ་མིག་བཅུ་དགུ་པ་ལ་ནི། །ཉི་ཤུ་རྩ་བདུན་པ་ཡིས་དབྱེ། །གསུམ་པ་ཡིས་ནི་ཡང་དག་ལྡན། །ཞེས་པ་ནི་ཨ་ཡོད་པ་ནས་བཅུ་དགུ་ནི་བཅུ་དགུ་པའི་རེ་མིག་སྟེ་གའོ[3]། །ནི་ནི་བསྟུ་བའོ། །ཉི་ཤུ་རྩ་བདུན་པ་ན་ར་ཡོད་པའོ། །

སུམ་ཅུ་གསུམ་པ་བླངས་བྱས་ལ། །རེ་མིག་གི་ནི་གཉིས་པ་ཡིས། །
ཉི་ཤུ་ཡང་དག་མཉམ་པར་ལྡན། །མཛེས་པ་མཆོག་གི་ཕན་པའོ། །

ཞེས་བྱ་བ་ནི་སུམ་ཅུ་གསུམ་ནི་སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་པ་སྟེ། ཀ་ཡོད་པ་ནས་སོ། །ཨ་ཡོད་

1. བཟུང་ ཅོ།
2. ཞེས་པ་ནི་གཉིས་ཀྵང་ཚིག་གོ་ སྡེ། ཅོ།
3. བཅུ་དགུ་ནི་བཅུ་དགུ་པའི་རེ་མིག་སྟེའོ་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

པ་ནས་གཉིས་པ་ན་ཨཱ་ཡོད་པའོ། །ཀ་ཡོད་པ་ནས་ཉི་ཤུ་པ་ན་ན་ཡོད་པའོ། ༡༤-༡༥ །

དེ་བཞིན་ཉི་ཤུ་གཅིག་པ་ཉིད། །
དེ་བཞིན་ཉི་ཤུ་དྲུག་པ་ཡིན། །
ལན་གཉིས་བཟླས་པའི་ཚིག་ཏུ་ནི། །
ཤིན་ཏུ་མཉམ་པར་བཞག་སྟེ་བཏུ། ༡༦ །

ཉི་ཤུ་གཅིག་པའི་རེའུ་མིག་ནི། །དེབཞིན་ཉི་ཤུ་དྲུག་པར་ལྡན། །ཞེས་པ་ནི་ཉི་ཤུ་གཅིག་པ་ནི་ཀ་ཡོད་པ་ནས་གཟུང་ངོ་ཞེས་པའི་(ཞེས་པ་ནི་པ་ཡི་)དོན་ཏོ། །ནི་ནི་བསྡུ་བའོ། །དེ་བཞིན་ཞེས་པ་ནི་ཀ་ཡོད་པ་ནས་ཉི་ཤུ་དྲུག་པ་ན་ཡ་ཡོད་པའོ། །ལན་གཉིས་གོམས་པའི་ཚིག་ཉིད་ཀྱང་། །ཞེས་པ་ནི་གཉིས་པ་ནི་ཉེ་བར་དེ་འདྲ་བའི་ཚིག་ངེས་པར་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༡༦ །

དེ་ནས་གོ་རིམ་བཟློག་པས་གཟུང་།[1] །
རེ་མིག་ལས་ནི་དང་པོ་ཉིད། །
བཞི་པའི་མཐའ་དང་ཡང་དག་ལྡན། །
དེ་བཞིན་བཅོ་ལྔ་པ་[2]དང་བཅས། ༡༧ །

དེ་ནས་གོ་རིམ་[3]བཟློག་པ་གཟུང་།[4] །རེའུ་མིག་ལས་ནི་དང་པོ་ཉིད། །

1. གོ་རིམ་ལྡོག་པས་གཟུང་ ལྷ། གོ་རིམས·····བཟུང་ སྣ། གོ་རིམས·······གཟུང་ སྡེ། པེ།
2. བཅྭ་ལྔ་པ་ སྡེ། པེ།
3. གོ་རིམས་ སྡེ། ཅོ།
4. བཟུང་ ཅོ།

བཞི་པའི་མཐའ་དང་ཡང་དག་ལྡན། །དེ་བཞིན་བཅོ་ལྔ་པ་ཡིས་མཚོད།།

ཅེས་པ་ནི་གོ་རིམ་[1]བཟློག་པ་ཉིད་ཀྱིས་དེ་བཀོད་པའི་ལས་དང་པོ་ནི་དང་པོ་ན་ཏ་ཡོད་པའོ། །ཏ་དེ་ཉིད་དང་པོ་སྟེ་བླང་པའོ། །ཚིག་ནི་གསུམ་པར་བརྗོད་ཅེས་སྦྱར་རོ། །ཤ་ཡོད་པ་ནས་བཞི་པ་ནི་[2]ཨྠི་སྟེ། དེའི་མཐའ་ཨུ་ཡོད་པའོ། །གཞན་ནི་གོ་སློའོ། ༡༧ །

ཆོས་དོན་འདོད་དང་ཐར་པ་ཡི། །
ཚིག་ནི་གསུམ་པ་ཡིན་པར་བཤད། །
རི་མིག་གཉིས་པའི་ས་བོན་དང་། །
རི་མིག་སུམ་ཅུ་དྲུག་པ་ཉིད། ༡༨ །
དེ་བཞིན་ཉི་ཤུ་དྲུག་པ་ཡང་། །
སུམ་ཅུ་གསུམ་པ་ཡང་དག་བླང་། །
རི་མིག་བཅུ་གསུམ་པ་ཡིར་ལྡན། ༡༩ །

ཚིག་གསུམ་པོ་ནི་ཆོས་སོགས་ཀྱི། ཚིག་ཅེས་པ་ནི་མཆོག་གི་ཚིག་གོ་བར་བྱའོ། །འདིར་ཡང་ཕན་ནི་རྗེས་སུ་གཞུག་པ་སྟེ། ཚིག་ཕང་གསུམ་པའོ། །རི་མིག་གཉིས་པའི་ས་བོན་ཞེས་པ་ནི་ཨ་ཡོད་པ་ནས་ཨཱུ་ཡོད་པའོ། །གཉིས་པའི་ས་བོན་ནི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིའོ་ནི་ངེས་པར་གཟུང་བའོ། །རི་མིག་སུམ་ཅུ་རྩ་དྲུག་ཅེས་པ་ནི་སུམ་ཅུ་རྩ་དྲུག་པའི་རི་མིག་ནི་ཨ་ཡོད་པའི་རི་མིག་ནས་བཟུང་སྟེ་ན་ཡོད་པ་ཉིད་བླང་ངོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །

---

1. གོ་རིམས་ སྡེ། ཅོ།

2. བཞི་པ་ནི་ཁ་ཅིག་ སྡེ། ཅོ།

ན་བླངས་ལ་ཚིག་རྐང་བཞི་པར་བརྗོད་དོ་ཞེས་པར་བྱའོ། །ལྷག་མ་གོ་སླའོ། །རེ་མིག་སུམ་ཅུ་གསུམ་པ་ཞེས་པ་ནི་ཏཱའི[1]། །རེ་མིག་བཅུ་གསུམ་ཞེས་པ་ནི་ཨ་ཡོད་པ་ནས་སོ། ༡༨-༡༩ །

རེ་མིག་ལས་ནི་བཅུ་པ་ཉིད། །
གོ་རིམ་བཟློག་[2]པས་སྦྱུབ་པོས་བླང་། །
རེ་མིག་ལས་ནི་བཅུ་དགུ་པ། ༣༠ །

རེ་མིག་ལས་ནི་བཅུ་ཉིད་དང་། །གོ་རིམ་[3]བཟློག་ནི་སྦྱུབ་པ་པོས། །ཞེས་པ་ནི་ཏ་ཡོད་པ་ནས་བཅུ་པ་ན་ཧྨ་ཡོད་པའོ། །རེའུ་མིག་[4]ལས་ནི་བཅུ་དགུ་པ། །ཞེས་པ་ནི་ཨ་ཡོད་པ་ནས་བཅུ་དགུ་པ་ན་ག་ཡོད་པའོ། ༣༠ །

རེ་མིག་ཉི་ཤུ་གསུམ་པ་(དགུ་)ལ། །
རེ་མིག་གཉིས་པར་ཡང་དག་ལྡན། །
སྟེང་དུ་ཐིག་ལེས་རྣམ་པར་བརྒྱན[5]། ༣༡ །
དེ་ནས་ས་བདག་གཟུང་བྱས་ལ[6]། །
བརྒྱད་པ་ཡང་ནི་དེ་བཞིན་ཏེ། །

1. ཏཱའི་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་པ་ཡིན།
2. གོ་རིམ་ལྡོག་ ལྷ། གོ་རིམས་བཟློག་ སྡེ།
3. གོ་རིམས་ སྡེ། ཅོ།
4. རེ་མིག་ གསེར།
5. སྒྲ་དང་ཐིག་ལེས་རྣམ་པར་བརྒྱན། པེ། སྟེང་དུ་ཐིག་ལེས་རྣམ་པར་རྒྱན། སྣ།
6. དེ་ནས་མཆུ་ཡིས་ས་བོན་གཟུང་། ལྷ། སྣ།

མི་ཡི་བུ་ཡིས་ཁྱད་པར་དབྱེ། །
ཡི་གེ་ཧཱུྃ་གིས་མཐའ་རུ་སྦྱར། ༡༡ །

རེའུ་མིག་ཉི་ཤུ་རྩ་གསུམ་པ། །ཞེས་པ་ནི་ཀ་ཡོད་པ་ནས་ཉི་ཤུ་རྩ་གསུམ་པའི་རེའུ་མིག་[1]ན་བ་ཡོད་པའོ། །དེ་ཉིད་བ་བླང་པའོ། །དེའི་ཕྱིར་བ་ཉིད་གཟུང་ངོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཨ་ཡོད་པ་ནས་གཉིས་པ་ན་ཨཱ་ཡོད་པའོ[2]། །སྙིང་དུ་ཐིག་ལེས་བརྒྱན་པར་བྱ། །ཞེས་པ་ནི་ཐིག་ལེ་ཙམ་ནི་ཐིག་ལེ་སྟེ། སའི་ས་བོན་བའོ། །དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་བཀོད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །བརྒྱད་པས་མཚན་ཅིང་བྱིན་གྱིས་བརླབས། །མིའི་བུ་ཡིས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་གོ་སླའོ། །འདིར་ཡང་ཕཊ་ནི་རྗེས་སུ་འདུག་པར་བྱའོ། །ཧཱུྃ་ཕཊ་མཐའ་རུ་སྦྱར་བར་བྱ། །ཞེས་བྱའོ། །ཧཱུྃ་ཕཊ་མཐའ་རུ་སྦྱར་བ་ཞེས་པ་ནི་ཧཱུྃ་ཕཊ་མཐའ་ན་སྦྱར་[3]བ་ངེས་པར་མཐའ་རུ་མཆོག་ཏུ་ངེས་པར་བྱས་ཏེ། སྔའི་རྒྱན་མེད་པའི་ཚིག་ནི་ཤིན་ཏུ་རིང་བར་བརྗོད་པའོ། ༡༧-༡༡ །

འདི་ནི་ཁམས་གསུམ་རྒྱལ་ཞེས་བྱའི། །
སྔགས་ཚིག་བཞི་ཡིས་རྣམ་བརྒྱན་པའི། །
ཨོཾ་ནི་ཀུན་ལ་གསལ་བྱེད་ཡིན། །
ཧཱུྃ་དང་[4]ཕཊ་ནི་མཐའ་རུ་སྦྱར། ༡༢ །

---

1. རེ་མིག་ གསེར། པེ།
2. ཨ་ཡོད་པའོ་ སྣེ། ཅོ།
3. མཐའ་རུ་སྦྱར་ པེ། ཅོ།
4. ཧཱུ་དང་ པེ།

འདི་ནི་ཞེས་པ་ནི་སྔགས་ཀྱི་ཚིག་གི་ཚོགས་སོ། །འཇིག་རྟེན་གསུམ་ནི་སེང་གེ་[1] དང་། །འཕྲོག་བྱེད་དབྱིག་གི་སྙིང་པོ་སྟེ། །མ་ལུས་པ་[2]ལས་རྒྱལ་བའོ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་འཇིག་རྟེན་གསུམ་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའོ། །ལྷག་མ་ནི་གོ་སླའོ། །ཨོཾ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་སྔགས་ཀྱི་ཚིག་བཞི་པོའི་ཨོཾ་ནི་གསལ་བྱེད་དེ། དེའི་ཕྱིར་ཨོཾ་གྱི་རང་བཞིན་བརྗོད་པས་ཧཱུྃ་དང་[3]ཕཊ་དང་སྔོན་དུ་སོང་བའི་ཧཱུྃ་ཕཊ་དག་མཐའ་རུ་སྦྱར་བའི་སྔགས་རྣམས་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །དེ་ནས་སྔགས་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ།

ཨོཾ་སུམྦྷ ནིསུམྦྷ ཧུྃ་ཧཱུྃ ཕཊ[4]། ཨོཾ་གྲྀཧྞགྲྀཧྞ ཧུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ། ཨོཾ་གྲྀཧྞཱཔཡ[5] གྲྀཧྞཱཔཡ ཧུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ། ཨོཾ་ཨཱནཡཧོཿ[6]། བྷགཝཱན[7]བཛྲ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ་[8]ཅེས་བྱའོ། ༡༣ །

རིག་རྒྱལ་འཁོར་ལོས་སྒྱུར་[9]བའི་སྔགས། །
འདི་ནི་མ་བྱུང་འབྱུང་མི་འགྱུར། །

---

1. སེངྒེ་ པེ།
2. དེ་མ་ལུས་པ་ གསེར། པེ།
3. པེ་ཀིང་པར་མའི་ནང་'དང་'མ་གསལ།
4. ཨོཾསུཾབྷནིསུམབྷཧུྃཧཱུྃཕཊ གསེར། ཨོཾསུཾབྷནིསུམྦྷཧུྃཧཱུྃཕཊ པེ། ཨོཾ .... ཧཱུྃཧཱུྃཕཊཕཊ་ རྒྱ་དཔེ།
5. གྲྀཧྞཔཡ སྡེ། ཅོ།
6. ཨཱནཡཧོ སྡེ། ཅོ།
7. བྷགཝན གསེར། པེ།
8. རྒྱ་དཔེར་གསལ་བའི་སྔགས་འདིར་'ཕཊ་ཕཊ་'ཞེས་ཐམས་ཅད་དུ་བསྐྱུར་བཟླས་བྱས་པ་གསལ།
9. འཁོར་ལོས་བསྒྱུར་ པེ། སྣ།

དེ་ཉིད་བསྡུས་དང་དཔལ་མཆོག་དང་། །
བདེ་མཆོག་རྡོ་རྗེ་འཛིགས་བྱེད་དུ[1]། ༣༤ །
ཁྲོ་བོ་བཞི་དང་ཡང་དག་ལྡན། །
སྐུ་བརྒྱད་དང་ནི་བཅས་པ་རུ། །
དཀྱིལ་འཁོར་བསྲུང་བའི་དོན་དུ་ཡང་[2]། །
གདུག་པ་ཐམས་ཅད་ཁྲོད་པར་གྱིས། ༣༥ །
འདི་ནི་རྣེད་པ་ཙམ་གྱིས་ཀྱང་། །
བརྟག་[3]མི་དགོས་པར་འཆི་བར་འགྱུར། །
འཁོར་ལོའི་སྦྱོར་བདག་ཉིད་ཀྱིས་བཟླ། །
དངོས་གྲུབ་ཀུན་གྱི་འབྲས་བསྐྱེད་[4]པའོ། ༣༦ །

རིག་རྒྱལ་འཁོར་ལོས་སྒྱུར་པ་ཡི[5]། །ཞེས་པ་ནི་རིག་པ་ནི་ལྷ་རྣམས་ཏེ། དེ་རྣམས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་པ་ནི་རིག་པའི་སྔགས་སོ། །རིག་པའི་[6]རྒྱལ་མོའི་མིང་ཅན་

1. རྡོ་རྗེ་འཛིགས་བྱེད་པ་ ལྷ། སྣ།
2. གོང་གསལ་‘སྐུ་བརྒྱད”””དོན་དུ་ཡང་། ’བར་གྱི་ཚིགས་རྐང་པ་གཉིས་པོ་ནི་རྒྱ་དཔེའི་རྩ་བ་དང་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཀོད་པ་ཡིན། བོད་འགྱུར་རྩ་བའི་ནང་དུ་ནི་ ‘སྐད་ཅིག་གིས་ནི་སྐུ་བརྒྱད་འགྱུར། །བདེ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་བསྲུང་དོན་དུ།’ །ཞེས་གསལ།
3. རྟག་ པེ།
4. འབྲས་སྐྱེད་ སྡེ། ལྷ།
5. འཁོར་ལོ་སྒྱུར་བ་ གསེར། འཁོར་ལོ་སྒྱུར་པ་ཡི་ པེ།
6. རིགས་པའི་ གསེར།

འདི་རྣམས་ཀྱི་ནང་ནས་འཁོར་ལོས་སྒྱུར་པ་[1]སྟེ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བསྡུས་པ་ལ་སོགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེའི་དཀྱིལ་འཁོར་བསྒྲུབ་པའི་ཐབས་འདི་ཡིན་ནོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར།

དེ་ཉིད་བསྡུས་དང་དཔལ་མཆོག་དང་། །
བདེ་མཆོག་རྡོ་རྗེ་འཇིགས་བྱེད་དུ། །
ཁྲོ་བོ་བཞི་དང་ཡང་དག་ལྡན། །
སྒྲུ་བརྒྱད་དང་ནི་བཅས་པ་རུ། །
དཀྱིལ་འཁོར་བསྒྲུབ་པའི་དོན་དུ་ཡང་། །
གདུག་པ་ཀུན་ལས་ཁྱད་པར་དུ། །ཞེས་གསུངས་སོ། །

སྒྲུ་བརྒྱད་ནི་འཇིག་རྟེན་སྐྱོང་བ་བརྒྱད་དོ། །གདུག་པ་ཅན་ཀུན་ཞེས་པ་ནི་གདུག་པ་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་དཀྱིལ་འཁོར་བསྒྲུབ་པའི་དོན་དུའོ། །འདི་ནི་ཞེས་པ་ནི་ཐབས་ཀྱིས་སོ། །འཆི་བར་འགྱུར་ཞེས་པ་ནི་གདུག་པ་ཅན་གང་ཡང་རུང་བའོ། །འཁོར་ལོའི་སྒྱུར་བས་[2]བརྗོད་པ་ཞེས་པ་ནི་རང་ཉིད་ལས་སེམས་རབ་ལ་དེ་ནས་བདག་རབ་ཏུ་ཞུགས་པར་བྱ་ཞིང་བཟླས་ན་དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འབྲས་བུ་བསྐྱེད་དོ། ༣༤-༣༦ །

ཨོཾ་སུམྦྷ་ནི་སུམྦྷ[3] ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ[4]། ཨོཾ་གྲྀཧྞ་གྲྀཧྞ[5] ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ། ཨོཾ་གྲྀཧྞཱ་པ་ཡ་གྲྀཧྞཱ་པ་ཡ

---

1. འཁོར་ལོ་སྒྱུར་བ་ གསེར། པེ།
2. སྒྱུར་བར་ ཅོ།
3. ཨོཾ་སུཾབྷ་ནི་སུཾབྷ སྡེ། སྣ། པེ།
4. ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ ལྷ། པེ། སྡེ། གོང་གསལ་གཟུངས་ཐབས་ཀྱི་མཐར་སྦྱར་བའི་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ་རྣམས་སྣར་ཐང་པར་མར་འཕོད་པ་བཞིན་བཞག་ཡོད།
5. ཨོཾ་གྲྀཧྞ་གྲྀཧྞ པེ། སྣ།

ཧཱུྃཧཱུྃཕཊ[1]། ཨོཾཨཱ་ནཡཧོཿ ཛྷགཊཾ[2]། བཛྲཧཱུྃཧཱུྃཕཊ[3]། ༡༧ །

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་ཛ་ཛ་བཅིང་བའི་སྔགས་བཏུ་བའི་ལེའུ་སྟེ་སུམ་ཅུ་པའོ།། །།

སྔགས་ཀྱི་ཚིག་རྐང་བཞི་པོ་ཞེས་པ་ནི་སྔགས་བསྡུས་པ་སྟེ། ཨོཾ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་པའོ། །དེ་ལ་འདིར་གཞན་ཡང་ཧཱུྃ་དང་ཕཊ་སྦྱར་བའོ། ༡༧ །

ཛ་ཛ་བཅིངས་པས་སྔགས་བཏུ་བ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཡིན་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །སུམ་ཅུ་ནི་སུམ་ཅུ་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་སུམ་ཅུ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། །།

✶

1. ཨོཾཁྲིཛྙཱཔཱཡཁྲིཛྙཱཔཱཡཧཱུྃཧཱུྃཕཊ པེ། ཨོཾཁྲིཛྙཔཡཁྲིཛྙཔཡཧཱུྃཧཱུྃཕཊ ལྷ། ཁྲིཾཁྲིཛྙཔཡ སྣ།
2. ཨོཾཨཱ་ནཡཧོ སྣ། ཨོཾཨཱ་ནཡཧོཿཛྷགསྟྭན ལྷ།
3. བཛྲཛྙཧཱུྃཧཱུྃཕཊ སྡེ། པེ། ལྷ། བཛྲཛྙཧཱུྃཧཱུྃཕཊ སྣ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་དང་འགྲེལ་པར་གསལ་བ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།

བཟའ་བ་དང་སྦྱིན་སྲེག་དང་གཏོར་མའི་བྱ་བ་ལ་ལག་པའི་ བརྡའི་ཚོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནས་ཤ་ཆེན་ཐམས་ཅད་ཀྱི། |
འཇིགས་བྱེད་རྡོ་རྗེ་སྐྱེས་ཡིན་[1]བཤད། |
འདི་ནི་གདུག་པ་[2]ཐམས་ཅད་ཀྱི། |
འཇིགས་བྱེད་[3]མི་བཟད་པར་བཤད་དོ། ༡ |

ཉི་ཤུ་རྩ་བདུན་པར་མཆོད་པ་དང་གཏོར་མའི་བྱ་བ་མདོར་བསྟན་པ་དང་། ཉི་ཤུ་རྩ་བརྒྱད་པར་སྦྱིན་སྲེག་མདོར་བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བཤད་པའི་དོན་དུ་ལེའུ་འདི་སྟེ[4]། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དེ་ནས་སྦྱིན་སྲེག་གོ །དེ་དག་ཀུན་ཞེས་པ་ནི་བླ་མ་དང་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ལ་གནོད་པ་བྱེད་པའོ། །རྡོ་རྗེ་སྐྱེས་ནི་སྐུ་རྡོ་རྗེ་ལ་སོགས་སྐྱེས་པའོ། །དཔལ་གསང་བ་འདུས་པ་ལས[5]། ཤ་ཆེན་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །འཇིགས་བྱེད་རྡོ་རྗེ་སྐྱེས་བུ་དྲན། །ཞེས་གསུངས་སོ། །ཡང་ན་དབྱེར་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ལས་སྐྱེས་པས[6]་ན་རྡོ་རྗེ་སྐྱེས་སོ། །ཅིའི་ཕྱིར་དེ་ལྟར་ཡིན་

---

1. འཇོན་བྱེད་རྡོ་རྗེ་སྐྱེས་ཡིན་ ཞྭ། འཇོན་བྱེད་རྡོ་རྗེ་བསྐྱེད་ཤིན་ སྣ། འཇོན་བྱེད་རྡོ་རྗེ་བསྐྱེད་ཡིན་ པེ། འཇིགས་བྱེད་རྡོ་རྗེ་སྐྱེས་བུ་དྲན་ འགྲེལ་པ། འཇིག་བྱེད་·····ཡིན་ རྒྱ་དཔེ།
2. འདི་ནི་སྡུག་པ་ པེ།
3. འཇིག་བྱེད་ རྒྱ་དཔེ།
4. འདི་ལྟ་སྟེ་ པེ། གསེར།
5. ལེའུ་༡༥ ཚིགས་བཅད་༢༢།
6. སྐྱེས་པ་ པེ། གསེར།

ཞེས་པ་ལ་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དེ་ནི་དེ་རྣམས་ཀྱི་དོན་ནོ། །དེ་ཡང་གང་གི་ཕྱིར་ཤ་ཆེན་པོས་གདུག་པ་ཅན་ཐམས་ཅད་འཇིགས་བྱེད་ཆེན་པོ་ཡིན་པས་དེ་ལྟར་ན་ཤ་ཆེན་པོ་དེས་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །འདིས་ནི་སྦྱིན་སྲེག་གཞན་ལས་ལྷག་པར་བརྗོད་པའོ། །ཤིན་ཏུ་གདུག་ཅིང་དྲག་པོ་ལ། །ཞི་བ་དག་ནི་རིགས་མ་ཡིན། །ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར། དེ་རྣམས་ངན་སོང་དུ་འགྲོ་བ་དགག་པའི་དོན་དུ་དེ་ལྟར་དེ་ལ་ངེས་པར་[1]བཟློག་པར་བྱའོ། ༧ །

འདི་ལྟར་ཁྲི་དང་ཕག་གི་ཤ། །
ཟངས་ཀྱི་གཙུག་ཕུད་ཅན་དེ་བཞིན། །
མངོན་སྤྱོད་ཀྱི་ནི་བྱ་བ་ལ[2]། །
བཟའ་དང་[3]སྦྱིན་སྲེག་གཏོར་མ་བྱ། །
བྱ་བ་རྣམ་དཔྱོད་[4]མེད་པར་བྱ། ༢ །

དེ་ལྟར་ཞེས་པ་ནི་གདུག་པ་ཅན་ཉམས་པར་བྱེད་པ་ནི་ཁྲི་ལ་སོགས་པའི་ཤས་ཀྱང་སྦྱིན་སྲེག་བྱེད་པའོ། །བཟའ་ཞེས་པ་ནི་མཆོད་པའི་དོན་དུ་བཟའ་བའོ། །ཤ་དེ་རྣམས་ཉིད་ཀྱིས་མཆོད་པ་ལ་སོགས་པའི་བྱ་བ་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཅི་འདིས་མངོན་པར་འདོད་པར་འགྱུར་རམ་མི་འགྱུར་ཞེས་པའི་རྣམ་རྟོག་གིས་དཔྱོད་པའོ། །

1. ངེས་པའི་ སྡེ། ཅོ།
2. ‘མངོན་སྤྱོད་ཀྱི་ནི་བྱ་བ་ལ།’ རྒྱ་དཔེར་མེད།
3. གཟའ་དང་ སྣ།
4. བོད་འགྱུར་རྒྱ་བར་‘རྣམ་སྤྱོད་’ཅེས་གསལ། གོང་དུ་འགྲེལ་པར་གསལ་བ་བཞིན་བཞག་ཡོད།

དེ་ལས་ཕྱིན་ཅི་ལོག་ནི་མ་དཔྱད་པའོ། ༣ །

མ་ལུས་ལུས་པ་མེད་གྲུབ་ཅིང་། །
རྒྱལ་སྲིད་ཐམས་ཅད་རབ་འགྲུབ་[1]འགྱུར། །
ཉུང་དང་ཉ་ཕྱིས་མུ་ཏིག་གི །
རྒྱ་མཚན་གསུམ་པོ་འབྱུང་བ་ཡིན[2]། ༣ །

དེ་ཅི་ཞེས་པ་འགྲུབ་ཅིང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །མ་ལུས་པ་ནི་ལྷག་མ་མེད་པ་སྟེ། རལ་གྲི་ལ་སོགས་ཕུལ་དུ་བྱུང་བ་མ་ལུས་པ་གྲུབ་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་མ་ལུས་པ་སྟེ་སངས་རྒྱས་ཉིད་དོ། །རྒྱལ་སྲིད་ཐམས་ཅད་ནི་འཁོར་ལོས་སྒྱུར་བའོ[3]། །དེ་དག་རང་ཉིད་ཀྱིས་སྲོག་བཅད་པ་[4]མ་ཡིན་པར་གཟུང་བའོ། །སྦྲོད་པར་[5] བྱེད་པའི་རྣལ་འབྱོར་པས་སྟོད་ནི་ཐོད་པ་ལ་བྱའོ་ཞེས་བསྟན་པའི་ཕྱིར་ཉུང་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །མུ་ཏིག་ནི་མུ་ཏིག་བསྐྱེད་པའི་སྲོག་ཆགས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཏེ། དེའི་རུས་པའི་ཁྱད་པར་[6]ཡང་མུ་ཏིག་གི་སྒྲས་བརྗོད་དོ། །ཇི་ལྟར་ཉུང་ལ་སོགས་[7]རིག་བྱེད་པ་རྣམས་ཀྱི་དག་བྱེད་ཡིན་པ་དེ་བཞིན་དུ་[8]ཐོད་པ་ཡང་ཡིན་ནོ། །

1. རབ་གྲུབ་ སྣ། ཀྭ།
2. འབྱུང་བ་ཡིས་ སྡེ། སྣ། ཀྭ།
3. འཁོར་ལོ་སྒྱུར་བའོ་ གསེར། པེ།
4. སྲོག་གཅད་པ་ པེ།
5. སྦྲོད་པ་ གསེར། པེ།
6. ཁྱད་པ་ལ་ སྡེ། ཅོ།
7. སོགས་པ་ གསེར། པེ།
8. ‘བཞིན་དུ་’ སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེ་གཉིས་སུ་མ་གསལ།

སྒྲིག་ཆགས་ཀྱི་ཡན་ལག་ཏུ་ཁྲིད་པར་མེད་པར་བསྟན་པའི་ཕྱིར་གསུམ་ཆར་རྒྱུ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན་ནོ་ཞེས་གསུངས་སོ། །རྒྱུ་ནི་ལས་དང་ཉོན་མོངས་པ་དང་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པའོ། །དེས་དུང་ལ་སོགས་པ་གསུམ་པོའི་རྒྱུ་དེ་ལས་བྱུང་བའོ། ༢ །

ཆོས་ཀྱི་སྐུ་ཡི་[1]ལུས་ཅན་གྱི། །
ཐོད་པ་ལ་ནི་སུ་ཞིག་སྨོད། །
དཔའ་བོ་ཐོད་པའི་ཕྲེང་བ་ཅན། །
བླ་བ་ཕྱེད་པས་རྒྱན་དུ་བྱས། ༤ །

དེ་བཞིན་མི་ཡང་ཡིན་ནོ། །དེ་བས་ན་རིག་བྱེད་སྨྲ་བ་རྣམས་ཐོད་པ་ལ་ཅིའི་ཕྱིར་སྨོད་པར་བྱེད། འོན་ཏེ་སྨན་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ཉེ་བར་མཁོ་བ་ཡིན་པས་དུང་ལ་སོགས་པ་ནི་དག་བྱེད་ཉིད་དུ་བྱ་བ་སྟེ། དེས་ན་དགོས་པ་མཐོང་བ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། ཅི་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་ཐོད་པ་ལ་དགོས་པ་མཐོང་བ་མ་ཡིན་ནམ། གང་གི་ཕྱིར་རིན་པོ་ཆེ་སྐྱེ་འགྲོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐུན་མོང་རང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཤེས་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །སུ་ཞིག་སྨོད་ཅེས་པ་ལ་ཆོས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ལུས་ཅན་ཞེས་གསུངས་སོ། །ཆོས་རྣམས་ནི་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཏེ་སྟོང་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པར་[2]རྟོགས་པ་ནི་ཡེ་ཤེས་སོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱི་ལུས་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ཏེ་རྣལ་འབྱོར་པའོ། །དེ་རྣམས་ཏེ་སྐྲའི་བདུན་པའི་དོན་ལ་དྲུག་པའོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ཡང་དེ་

1. ཆོས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ འགྲེལ་པ།

2. སོགས་པ་ པེ། གསེར།

འཛིན་པས་སུ་ཞིག་སྨོད་ཅེས་བསྟན་པའི་ཕྱིར། ཐོད་པ་ཞེས་པ་ལ་[1]སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཐོད་པའི་ཕྲེང་བའི་ངང་ཚུལ་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ནི་ཐོད་པའི་ཕྲེང་བ་ཅན་ཏེ། སྐྱེ་བོ་ལ་སོགས་པ་ཉིད་དམ་ཐོད་པའི་ཕྲེང་བ་གང་ལ་ཡོད་པ་ནི་སྒྲའི་མཊ་ཟེར་ཊའི་[2]དོན་དུ་ཨིཡའི་རྐྱེན་བྱིན་པ་སྟེ། དེ་བས་ན་དབུ་ལ་ཐོད་པ་ལྔའི་[3]ཕྲེང་བ་འཆང་བའོ། །དཔའ་བོ་ནི་གྲོགས་མེད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཟླ་ཕྱེད་ཉིད་དུ་བྱས་པ་ནི་འདུས་ནས་[4]བརྒྱན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཟླ་བ་ཕྱེད་པས་རྒྱན་དུ་[5]བྱས་པའོ། | ནག་ཆོག་མེད་པའི་རྣམ་པར་དག་པའི་སྤྲུལ་པར་གཟུང་བའི་ཕྱིར་ཟླ་བ་ཕྱེད་པ་འཆང་བའོ། ༤ |

རྣམ་པ་དེ་ལྟར་གྱུར་པ་ཉིད། |
དཔའ་བོའི་དབང་ཕྱུག་ཡིན་པར་བཤད། |
བཛ་ནི་ལྔ་པོ་བསྟན་པ་དག[6] |
སྒྲུབ་པ་པོ་ཡི་[7]ལག་གཡོན་གྱིས། ༥ |

དཔའ་བོ་རྣམས་ཀྱི་ནང་ནས་ཀྱང་གང་ཡིན་དེ་ལ་དཔའ་བོ་སྟེ། སེང་གེ་དང་

1. ཞེས་བྱ་བ་ལ་ གསེར། པེ།
2. སྒྲའི་མུ་ཏིག་གི་ སྡེ། ཅོ།
3. ཐོད་པ་ལྔ་པའི་ ཅོ།
4. འདུས་བྱས་ནས་ གསེར། པེ།
5. བརྒྱན་དུ་ གསེར། པེ།
6. བཛའ་ནི་……དང་། པེ།
7. བསྒྲུབ་པ་པོའི་ པེ།

འཕྲོག་བྱེད་ལ་སོགས་པ་ལས་དེ་རྒྱལ་བ་[1]གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དྲན་པ་སྟེ་རབ་ཏུ་གྲགས་པ་ན་ཅིའི་ཕྱིར་སྨད་པར་བྱེད། བདུད་ནི་ལྷ་པོ་བསྟན་[2]དང་ཞེས་པ་ནི་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་ལ་སོགས་པ་ལྷ་མོ་ལྷ་བརྗོད་པའོ། །རལ་པའི་ཅོད་པན་གྱི་ཐོད་པ་ལྷ་ལ་[3]དེ་བསྟན་པ་ནི་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །སྒྲུབ་པ་པོའི་ལག་གཡོན་ནི། །ཞེས་པ་ནི་བསྟན་པར་བྱའོ་ཞེས་སྒྱུར་རོ། །ནི་ནི་ཁྱད་པར་རོ། །གཡོན་པའི་ལག་པ་ལ་གནས་པས་དམ་ཚིག་ལ་སོགས་པ་སྦྱིན་ནོ་ཞེས་དགོངས་སོ། ༥ །

འདི་ནི་དཔའ་བོའི་གནས་ཡིན་ཏེ། །
བདུད་རྣམས་[4]ཀྱི་ནི་རབ་འདུག་པའོ། །
ཁམས་གསུམ་རྒྱུ་དང་མི་རྒྱུ་དང་། །
འགྲོ་ཀུན་གཡོན་ལས་བྱུང་བ་ཡིན། ༦ །

ཅིའི་ཕྱིར་ཞེས་པ་ལ་དཔའ་བོ་རྣམས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། ། དཔའ་བོ་རྣམས་ནི་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ལ་སོགས་ཏེ། དེ་རྣམས་ཀྱི་གནས་ནི་ལག་པ་གཡོན་པའོ། །འདི་ནི་གང་གི་ཕྱིར་རོ། །གང་གི་ཕྱིར་གཡོན་པའི་ལག་པ་ནི་བདུད་སྟེ། དཔའ་བོ་དང་དཔའ་མོའི་དབང་ཕྱུག་མ་རྣམས་རབ་ཏུ་འདུག་པ་ལ་བདར་བྱས་པའོ། ། དེ་རྣམ་པར་དག་པ་ནི་འདི་སྟེ། གཡོན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །

---

1. དོ་རྒྱལ་བ་ གསེར།
2. བརྟན་ གསེར། པེ།
3. ‘ལ་’ སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེ་གཉིས་སུ་མེད།
4. བདའ་རྣམས་ པེ།

གཡོན་པ་ནི་སྟོང་པ་ཉིད་དོ། །“སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ཆོས་རྣམས་ལས་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ཆོས་རབ་ཏུ་སྐྱེའོ་”ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། །གཡོན་པ་ནི་ཤེས་རབ་བོ། །དེ་ལས་བྱུང་བ་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པའོ། །གང་གི་ཕྱིར་ཐམས་ཅད་སྡིག་པ་མེད་པ་ཙམ་གྱིས་ནི་དོན་གྱི་བྱ་བ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མི་བྱེད་དོ། །ཁམས་གསུམ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཕྱི་རོལ་དུ་[1]ཡང་དེ་བཞིན་དུ་ཞེས་སྒྲུབ་པ་ཡིན་ནོ། ༦ །

རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་མཐེ་བོར་བཞུགས། །
ལྕུག་མར་[2]དེ་བཞིན་རྣམ་སྣང་མཛད། །
གོ་ཆའི་རྣམ་པ་དེ་ལྷ་བུར[3]། །
གཙོ་བོར་པདྨ་གར་མཛད་དེ། ༧ །

བརྟན་པར་[4]དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་ནི། །
རབ་སྩོལ་བ་ཡི་[5]དཔའ་བོ་བཞུགས། །
མཐེའུ་ཆུང་ལ་ནི་མཁའ་སྙིང་པོ། །
མི་ཟད་སྐུ་དང་ལྡན་པ་ཉིད། ༨ །

ལག་པའི་མཆོད་པ་བསྟན་པའི་ཕྱིར་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། རྡོ་རྗེ་

---

1. ཕྱི་རོལ་ཏུ་ གསེར། པེ།
2. འགྲེལ་པར་‘མཛུབ་མོ་’ཞེས་གསལ།
3. ‘གོ་ཆའི་རྣམ་པ་དེ་ལྷ་བུར།’ རྒྱ་དཔེར་མེད།
4. བསྟན་པར་ སྡེ། མིང་མེད་ རྒྱ་དཔེ། འཆང་བ་ འགྲེལ་པ།
5. རབ་སྩལ་པ་ ལྷ། རབ་གསོལ་པའི་ པེ། རང་གསོལ་བ་ཡི་ སྣ།

སེམས་དཔའ་ནི་སྟོང་པོ་སྟེ་[1]མཐེ་བོང་ལ་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །ཡལ་ག་སྟེ་མཛུབ་མོ་ལ་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དོ། །གཙོ་བོ་སྟེ་གུང་མོ་ལ་པདྨའི་གར་ཏེ་པདྨ་གར་[2]གྱི་དབང་ཕྱུག་གོ །འཆང་བ་ནི་སྲིན་ལག་སྟེ་དཔའ་བོ་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའོ། །མཐེ་ཆུང་ལ་ནི་ནམ་མཁའི་སྙིང་པོ་ཞེས་པ་ནི་སྒྲའི་རྒྱེན་མེད་པའོ། །དེ་ཡང་ཆུང་ལ་ནི་ཕྲ་བ་སྟེ། རྟོགས་པར་དཀའ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །མི་ཟད་པ་[3]ཞེས་པ་ནི་ཟད་པ་མེད་པའོ། །ནམ་མཁའི་སྙིང་པོ་ནི་རྡོ་རྗེ་ཉི་མའོ[4]།

སེན་མོའི་ངོས་ནི་ཧ་མགྲིན་[5]གྱི། །
གནས་སུ་གྱུར་པར་བཤད་པ་ཡིན། །
འདི་དག་ཐམས་ཅད་དཔའ་བོ་ནི། །
གཡོན་པ་ལས་བྱུང་[6]རྒྱུ་ཡིན་ནོ། །

སོར་མོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སེན་མོ་ལ་ཧ་མགྲིན་ནོ། །དང་ནི་བསྡུས་པའོ། །དེ་དག་ནི་གཡོན་པ་ལས་བྱུང་བར་བསྟན་པའི་ཕྱིར་གནས་སུ་ཞེས་གསུངས་སོ། །བདག་ཏུ་འཛིན་པ་ལ་སོགས་པའི་རང་བཞིན་རྣམ་པར་དཔྱད་པས་ཉམས་ཞིང་མི་མཐོང་བས་ན།

1. སྟོ་བསངས་དེ་ སྡེ། ཅོ།
2. པདྨའི་གར་ པེ།
3. མ་ཟད་པ་ གསེར། པེ།
4. རྡོ་རྗེ་སྟོང་པའོ་ ཀྲུ་དཔེ།
5. ཧ་འགྲིན་ སྡེ། སྣ།
6. ལས་ཟུང་ སྣ།

རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ལ་སོགས་པ་ལྟར་[1]བྱུང་བ་དེ་བཞིན་ནོ། །འདི་ཞེས་པ་ནི་སྒྲའི་དྲུག་པའི་དོན་གྱི་དང་པོའོ། །དེ་དག་ལ་དཔའ་བོ་ཐམས་ཅད་གཡོན་པ་ལས་ཡང་དག་པར་བྱུང་བའོ། །ལག་པ་ནི་རྒྱུའོ། ༩ །

ལག་མཐིལ་ཤྲཱི་ཧེ་རུ་ཀ་ཡི[2]། |
ཕག་མོའི་འདུས་པ་[3]དགའ་བྱེད་ཡིན། |
རྒྱབ་ཏུ་ཤིན་ཏུ་ངེས་བྱས་ནས[4]། |
བདག་ཉིད་ལྷ་པོ་བསྟན་པར་བྱ། ༡༠ |

ལག་པའི་མཐིལ་ཞེས་པ་ནི་ལག་པའི་དབུས་སུའོ[5]། །ཧེ་རུ་ཀ་དཔལ་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོའོ། །ཞེས་པ་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་དང་སྙོམས་པར་འཇུག་པའི་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེའི་ཕྱིར་ཕག་མོ་ཀུན་འདུས་དགའ། །རྒྱབ་ཏུ་མཁའ་འགྲོ་མ་ཀུན་ནི། ། ཞེས་པ་ནི་ལོགས་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ལ་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་སོ། །ནིའི་སྒྲས་ནི་རྒྱབ་ཉེ་བར་མཚོན་པར་བརྗོད་པའི་ཕྱིར་རོ[6]། །འདིར་བརྗོད་པ་ལག་པའི་དབུས་སུ་འདབ་

1. སོགས་པ་ལར་ གསེར།
2. ཤྲཱིཧེརུཀའི་ པེ།
3. འདས་པ་ ལྷ།
4. རྒྱབ་ཏུ་མཁའ་འགྲོ་མ་ཀུན་ནི། འགྲེལ་པ།
5. དབུས་སོ་ གསེར། པེ།
6. 'ཞེས་པ་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་དང་སྙོམས་པར་འཇུག་པའི་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་ .... བརྗོད་པའི་ཕྱིར་རོ་' བར་གྱི་ཡིག་ཕྲེང་གསུམ་དང་ཕྱེད་རྣམས་སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེ་གཉིས་སུ་མི་སྣང་།

མ་བརྒྱད་དང་བཅས་པའི་པདྨའོ། །དེའི་ཟེ་འབྲུ་ལ་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་དང་སྙོམས་པར་འཇུག་པའི་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོའོ། །ཤར་གྱི་འདབ་མ་ལ་མཁའ་འགྲོ་མའོ། །བྱང་དུ་ལཱ་མའོ། །ནུབ་ཏུ་དུམ་སྐྱེས་མའོ། །ལྷོར་གཟུགས་ཅན་མའོ། །དབང་ལྡན་དུ་གཤིན་རྗེ་མའོ། །མེར་རྨོངས་བྱེད་མའོ། །བདེན་བྲལ་དུ་སྐྱོད་བྱེད་མའོ། །རླུང་དུ་སྐྲག་བྱེད་[1]མ་བསྒོམ་པར་བྱའོ། ༡༠ །

འདི་དག་ལག་ཏུ་དགོད་པ་སྟེ། །
མཛའ་བ་[2]ཐམས་ཅད་འདུས་པ་ཡིན། །
རྣམ་པ་དེ་ལྟའི་ཚིག་ཡིས། །
དཔའ་བོ་དམ་པ་མཆོད་པར་བྱ། ༡༡ །

ས་ནི་སྤྱན་ཞེས་བྱ་བར་བཤད། །
ཆུ་ཁམས་མཱ་མ་ཀཱི་རུ་བརྗོད། །
མེ་ནི་གོས་དཀར་མོར་བཤད་དེ། །
རླུང་ནི་སྒྲོལ་མར་རབ་ཏུ་བརྗོད། ༡༢ །

འདི་ནི་ལག་པར་དགོད་པ་སྟེ། །མཛའ་བ་ཐམས་ཅད་འདུས་པ་ཡིན། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལག་པ་ལ་ལྷ་དགོད་པ་གང་ཡིན་པའི་ཚིག་བརྗོད་པ་ནི་དེ་ལག་པར་དགོད་པའོ། །ཡིད་དུ་འོང་བ་ཐམས་ཅད་འདུས་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །དེ་ལྟར་རིམ་པ་འདིས་དཔའ་

1. སྒྲག་བྱེད་ པེ།
2. བཟའ་པ་ པེ།

པོ་མཆོད་པར་བྱའོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པའི་མིང་གཞན་སྟོན་ཏེ། ས་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། ༡༡-༡༢ །

ཙུམ་བི་ཀ་[1] ཉི་སྟོང་པ་སྟེ། །
དེ་བཞིན་ཕ་རོལ་ཕྱིན་པ་ཡིན། །
དབུས་སུ་དཔའ་བོ་ཀུན་གྱི་གནས། །
མཁས་པས་རྒྱབ་ཏུ་གཟིགས་སུ་གསོལ། ༡༣ །

འོ་བྱེད་མ་ནི་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོའི་མིང་གི་བྱེ་བྲག་གོ །དེ་ཉིད་སྟོང་པ་ཉིད་དེ་སྟོང་པ་ཉིད་ལ་སྟོང་པ་ཉིད་རྣམ་པར་དག་པ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེའི་ཕྱིར་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཞེས་བྱའོ། །གང་སྦྱིན་པ་དང་། ཚུལ་ཁྲིམས་དང་། བཟོད་པ་དང་། བརྩོན་འགྲུས་དང་། བསམ་གཏན་གྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་ནས་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོའི་བར་དུ་རིམ་པ་བཞིན་ཤེས་པར་བྱའོ། །དེ་བཞིན་ཞེས་པའི་སྒྲས་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ནི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལྔ་རུ་སོན་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། ། དབུས་སུ་དཔའ་བོ་ཀུན་གྱི་གནས། །ཞེས་པ་ནི་དབུས་སུ་དཔའ་བོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྡོ་རྗེའི་ཞབས་ཀྱིས་གནས་ལ་རོལ་པ་ལྷ་བུའོ་ཞེས་ཤེས་པར་བྱའོ། །དཔའ་བོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རོལ་པར་གནས་པ་[2]རྣམ་པར་དག་པ་ལག་པའི་དབུས་སུ་ཞེས་དགོངས་སོ། །
མཁས་པས་རྒྱབ་ཏུ་གཟིགས་སུ་གསོལ། ཞེས་པ་ནི་ལག་པའི་རྒྱབ་ཏུ་ལྷ་ཐམས་ཅད་

1. ཙུཾཔིཀ་ སྣ། ཙུམཔིཀ་ པེ། ཞྭ།
2. རོལ་པའི་གནས་ གསེར། པེ།

མེ་ལོང་གི་གཟུགས་བརྙན་བཞིན་དུ་བལྟའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེས་[1]ལག་པའི་སྙིང་དང་རྒྱབ་ཏུ་བསྒོམ་པར་བྱ་བ་ནི་ཁྱད་པར་ཅན་གྱི་དོན་དུ་ནིའི་སྒྲས་བསྟན་པའོ། །དེའི་ཕྱིར་གང་དེ་ལྟར་མཐོང་བ་དེ་ནི་མཁས་པའོ། ༡༧ །

གསང་བ་འདི་ནི་མི་བཤད་ཅིང་། །
རབ་ཏུ་འབད་དེ་སྦ་བར་བྱ། །
དེ་ལྟར་བདར་བྱ་དཔའ་བོ་རྣམས། །
གཅིག་ཏུ་ཟས་ལ་བརྩམ་པར་[2]བྱ། །
དཔའ་བོ་ཐམས་ཅད་མཉམ་སྦྱོར་བ། །
མཁའ་འགྲོ་དྲ་བའི་བདེ་མཆོག་ཡིན། ༡༨ །

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་བཟའ་བ་དང་སྦྱིན་སྲེག་དང་གཏོར་མའི་བྱ་བ་ལ་ལག་པའི་བརྡའི་ཆོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་སུམ་ཅུ་རྩ་གཅིག་པའོ[3]།། །།

ལྔ་པོ་ཡང་ནི་བརྡས་བསྟན་བྱ། །ཞེས་པ་ནི་བདུད་རྩི་ལྔ་ཡང་བརྡས་བརྗོད་པར་ཤེས་པར་བྱའོ། །དེ་ཡང་ལག་པ་ལ་དགོད་པའི་ཡུལ་དེ་ཉིད་ལ་བསྟན་པའི་ཡུལ་ལ་དེ་ཉིད་བདུད་རྩི་རྣམ་པ་ལྔ་ལ་ཧཱུྃཨཱོཾཧྲཱིཾཁཾཧཱུྃ[4]གི་ས་བོན་ལས་བསྐྱེད་པའི་[5]རྣམ་པར་སྣང་མཛད་

1. དེའི་ སྡེ། ཅོ།
2. རྩོམ་པར་ པེ།
3. ལག་པའི་ཆོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་སུམ་བཅུ་རྩ་གཅིག་པའོ་ པེ།
4. ཧཱུྃཨཱོཾཧྲཱིཾཁཾཧཱུྃ ཅོ། ཧཱུྃཨོཾཧྲཱིཾཁཾཧཱུ གསེར། པེ།
5. སྐྱེས་པའི་ གསེར། པེ།

ལ་སོགས་པའི་བདག་ཉིད་ཡི་གེ་གསུམ་གྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པར་ཡང་དག་པར་བསྒྲུབས་ལ་[1]རབ་ཏུ་གཏུམ་མོ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ལ་ཨོཾ་ པྲཙཎྜེ་ ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ ཕཊ྄[2]། ཨོཾ་ ཁཎྜ་ཀཔཱལི་ ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ ཕཊ྄་ ཕཊ྄་ཅེས་བྱ་བས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མིང་གཟུང་བ་སྔོན་དུ་སོང་བས་མཐེ་བོང་དང་སྲིན་ལག་གི་ཁས་ལན་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞིར་ཚིམ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་སྦྱིན་པར་བྱའོ། །ལྕེ་ལ་ཡང་ལན་གཅིག་[3]གཞག་པ་ནི་བདུད་རྩི་ལྔ་ཉེ་བར་ལོངས་སྤྱོད་པའི་དོན་གཞན་དུ་ཤེས་པར་བྱའོ། །དེས་ནི་[4]མཆོད་པར་འགྱུར་རོ། །བཛ་ཡང་ལག་པ་ལ་བཀོད་པ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བར་བྱའོ་[5]ཞེས་ཤེས་པར་བྱའོ། །ཐོད་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་[6]དེ་ལྟར་བདུད་རྩི་རྣམ་པ་ལྔ་བྱས་ལ་ལག་པ་ལ་དགོད་པ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་མྱང་བར་བྱའོ་ཞེས་རྟོགས་པར་བྱའོ། །རྒྱུད་ཀྱི་དོན་ནི་མང་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དཔའ་བོས་བཛ་བྱ་བ་ནི་མཆོད་པར་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་ལྟར་འདིར་ནི་ཞེས་པ་ནི་འདིས་བདུད་རྩི་ལྔ་ལ་སོགས་པའི་ཚོགས་ཟས་ནི་མ་བགོས་པར་སྣོད་གཅིག་ཏུ་གཏོགས་པར་[7]བཟའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཟས་ལ་ལོངས་སྤྱད་པའི་འབྲས་བུ་ནི། དཔའ་བོ་ཐམས་ཅད་མཉམ་

---

1. ‘ལ་’ གསེར་བྲིས་སུ་མེད།
2. ཕཊཕཊ་ རྒྱ་དཔེ།
3. ལན་ཅིག་ གསེར། པེ།
4. དེ་ནས་ རྒྱ་དཔེ།
5. སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་བྱའོ་ གསེར། པེ།
6. ‘སོགས་པ་ལ་’ གསེར་པེ་གཉིས་སུ་མེད།
7. མ་གོས་པར་སྣོད་གཅིག་ཏུ་གཏོགས་པ་ གསེར། པེ།

སྒྲོར་བ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ཡི་དྲ་བ་སྡོམ། །ཞེས་གསུངས་སོ། །ཧེ་རུ་ཀ་ཉིད་ཡིན་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༡༩ །

བཟའ་བ་དང་། སྦྱིན་སྲེག་དང་། གཏོར་མའི་བྱ་བ་དང་། གཞན་བརྡའི་ཚིག་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་དེ་དེ་བཞིན་ནོ། །སུམ་ཅུ་རྩ་གཅིག་ནི་སུམ་ཅུ་རྩ་གཅིག་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་སུམ་ཅུ་རྩ་གཅིག་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། ||

✱

དུད་འགྲོ་ཕྱུགས་དང་རི་ལངས་སྐྱབ་པ་དང་། བསྐྱེད་པའི་རིམ་པའི་ཚོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནས་གཞན་ཡང་བཤད་བྱ་བ། |
བཟའ་དང་སྔོན་མོ་འདུས་པ་སྟེ། |
ཡང་དག་ཚིག་གང་གིས་ནི། |
དངོས་གྲུབ་མྱུར་དུ་རབ་འཇུག་པའོ། ༧ |

ད་ནི་མཆོད་པ་ལ་སོགས་པ་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་ཀྱིས་[1]ཚིག་གི་དོན་གྱི་ལེའུ་ནི་དེ་ནས་གཞན་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དེ་ནས་ནི་མཆོད་པ་ལ་སོགས་པ་བསྟན་པ་ལས་གཞན་ཡང་དག་པར་བརྗོད་པ་སྟེ། ངེས་པར་ཡང་དག་པར་བརྗོད་བཞིན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དེ་གང་ཡིན་ཞེས་པ་ལ། བཟའ་དང་སྔོན་མོ་འདུས་པ་སྟེ། །ཞེས་གསུངས་སོ། །བཟའ་བ་ནི་ཕྱུགས་ལ་སོགས་པའོ། །སྔོན་མོ་ནི་ལོངས་སྤྱོད་པར་[2]བྱ་བ་བསགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ཏེ། ཐུགས་ཀྱི་ནུས་པས་སོ། །གང་གིས་བཟའ་བ་དང་སྔོན་མོ་ལ་འདུས་པ་ཡང་དག་པར་མཛེས་པར་བྱས་པའི་ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་ལ་སོཏ་པ་གང་ཡིན་པས་བཟའ་བ་དང་སྔོན་མོ་ལ་འདུས་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །དངོས་གྲུབ་ནི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་བོ། །མྱུར་བ་ནི་ཚེ་འདི་ལའོ། ༧ |

---

1. ཀྱི་ གསེར། པེ།
2. ལོངས་སྤྱོད་པར་ གསེར། པེ།

ཕྱུགས་རྣམས་ཀྱི་ནི་དགུག་པ་ཉིད། །
སྒྲུབ་པོས་སྔར་བསྟན་རིམ་པ་འདིས། །
ཕྱུགས་རྣམས་དང་ནི་དེ་བཞིན་ལྷ་། །
བོང་བུ་རུས་སྦལ་མི་ཛ་མོ[1]། །
ཅེ་སྤྱང་[2]ཏྲ་ལ་སོགས་རྣམས་ཀྱིས། ༡ །

མཆོད་པ་ལ་སོགས་པའི་རྫས་ནི་ཕྱུགས་རྣམས་ཀྱི་[3]ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དགུག་པ་ནི་ཐུན་མོང་དུའོ། །དངོས་གྲུབ་རྣམས་ཀྱི་ནང་ནས་གཙོ་བོ་ཕྱལ་དུ་བྱུང་བ་ལོགས་ཤིག་ཏུ་བྱས་པའོ། །ཉིད་ཅེས་པ་ནི་[4]གང་ཕྱུགས་རྣམས་ཀྱི་[5]གཙོ་བོ་ཉིད་གཟུང་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་སྒྲུབ་པ་པོ་ཧེ་ཧྲ་བུར་ཞེས་པ་ལ་སྔོན་ཏེ། སྔོན་དུ་བསྟན་པའི་རིམ་པའི་ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་གྱིས་ཕྱུགས་ཀྱིས་[6]མཆོད་པར་བསྒྲུབ་པར་བྱ་ཞེས་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་དུ་བརྗོད་དོ། །སྒྲུབ་པོ་སྔར་བསྟན་རིམ་པ་ཡིས། ། ཕྱུགས་རྣམས་ཀྱིས་ནི་དགུག་པ་ཉིད། །ཅེས་[7]གསུངས་ཏེ། ཕྱུགས་ཞེས་བྱ་བ་[8]ལ་

1. རུ་སྦལ་མི་ཛ་མོ་ སྡེ། སྣ། རུ་སྦལ་མི་ཇ་མོ་ པེ།
2. ཅྱེ་སྤྱང་ ཅོ། པེ། ལེ་སྤྱང་ སྣ།
3. ཕྱུགས་རྣམས་ཀྱིས་ སྡེ།
4. ཉིད་ཅེས་ཅེས་པ་ནི་ གསེར།
5. ཀྱིས་ སྡེ། ཅོ།
6. སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེའི་པར་མ་གཉིས་ཀྱི་ནང་‘ཕྱུགས་ཀྱིས་’མེད།
7. ཕྱུགས་རྣམས་ཀྱི་ནི་དགུ་པ་ཉིད་ཅེས་ གསེར། པེ། ཕྱུགས་རྣམས་ཀྱི་ནི་དགུག་པ་ཉིད་ཅེས་ ཅོ། དེ་དག་གང་གིས་དགུག་ཅེ་ན། །ཕྱུགས་ཞེས་སོགས་ རྒྱ་དཔེ།
8. ཤེས་བྱ་བ་ གསེར། པེ།

སོགས་པ་ལ། དང་ནི་ཡང་གི་སྒྲའི་དོན་ཏོ། །དེ་བཞིན་ཞེས་པ་ནི་ཇི་ལྟར་ཕྱུགས་ཡིན་པ་དེ་ལྟར་རབ་ཏུ་བསྒྲུབ་བོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །བོང་བུ་ནི་བོང་བུའོ། །མི་ནི་རབ་ཏུ་གྲགས་པའོ། །ཁ་ཅིག་ན་རེ་ནགས་ཀྱི་མི་ཡིན་ཞེས་ཟེར་རོ། །རུས་སྦལ་ནི་རུས་སྦལ་ལོ། །ཛ་མོ་ནི་མཁྲིན་རིངས་སོ། །ཅེ་སྤྱང་[1]ནི་རབ་ཏུ་གྲགས་པའོ། །བོང་བུ་མི་རུས་སྦལ་ཛ་མོ་[2]ཅེ་སྤྱང་ཞེས་པ་ནི་དང་པོའི་མང་པོའི་ཚིག་ཕྱིས་པས་རེ་ཞིག་ལྔ་པོ་ནི་གཙོ་བོའོ། །ཏ་ལ་སོགས་པ་ཞེས་པ་ནི་ལྷན་ཅིག་པའི་དོན་ལ་སྒྲའི་གསུམ་པའོ། །སོགས་ཀྱི་སྒྲས་ཁྱི་དང་བ་ལང་ཡང་ངོ་། ༡ །

དངོས་གྲུབ་སྒྲུབ་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ། །
ཕྱུགས་འདི་དག་ནི་སྒྲུབ་ཡན་ལག །
རིགས་རྣམས་ལས་ནི་རི་ཏ་མཆོག་ཕྱུ་ཏ། །
ཀང་བཞི་རྣམས་ལས་གླང་པོར་བརྗོད། ༢ །

ཕྱུགས་འདི་དག་ནི་བསྒྲུབ་ཡན་ལག །ཅེས་པ་ནི་ཕྱུལ་དུ་བྱུང་བའི་དངོས་གྲུབ་ཉིད་ཀྱི་ཡན་ལག་གི་རང་བཞིན་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །ཐུན་མོང་གི་དངོས་གྲུབ་ཀྱང་དེ་རྣམས་ཀྱིས་འཐོབ་པ་ནི། དངོས་གྲུབ་སྒྲུབ་པ་ཉིད་དུ་ཡང་། །ཞེས་གསུངས་སོ། །དཀྱུག་པ་དང་རོ་ལངས་ལ་སོགས་པའི་དངོས་གྲུབ་ཀྱང་སྒྲུབ་ཅིང་རྟོགས་པར་བྱེད་དོ། །ཉིད་ནི་ངེས་པའི་དོན་ཏོ། །དང་ནི་དངོས་གྲུབ་བསྡུ་བའོ། །

---

1. ཚེ་སྲུང་ གསེར། པེ།
2. ཛ་མོང་ སྡེ། ཅོ།

ཡང་ཕྱུགས་དགུག་པ་ནི་རིགས་རྣམས་ལ་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། ། དངོས་གྲུབ་ཀྱི་བདག་པོར་བྱེད་པས་ན་རིགས་ཏེ་མིའོ། །མིའི་རིགས་རྣམས་ཀྱི་ནང་ནས་བྲམ་ཟེའི་རིགས་ནི་ཕྱུགས་སོ། །ཀང་བཞི་པ་བོང་བུ་ལ་སོགས་པ་ལས་གླང་པོ་ཆེའོ། །དེའི་ཕྱིར། ཀང་བཞི་རྣམས་ལ་གླང་པོ་དང་། ཞེས་གསུངས་སོ། །གླང་པོ་ཆེའི་སྣ་ནི་ཨིའི་མཐའ་ཅན་དུ་ཡོད་དོ། ༣ །

འདབ་ཆགས་རྣམས་ལས་ངང་པ་ཉིད། །
དུད་འགྲོ་རྣམས་ལས་དུད་འགྲོ་ཕྱུགས[1]། །
ལྷ་རྣམས་ལས་ནི་མཆུ་གཡོ་བ། །
རྣམ་པ་དེ་ལྟར་བརྗོད་པ་སྟེ། ༤ །

འདབ་ཆགས་རྣམས་ལ་ངང་པ་དང་[2]ཞེས་པ་ནི་དགུག་པའི་སྐབས་སུ་ཕྱིན་པས་འདབ་ཆགས་དགུག་པ་[3]ཡང་སྟོན་ཏེ། ཁྭ་ལ་སོགས་པའི་ནང་ནས་ངང་པ་ཉིད་ནི་གཙོ་བོའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་ཡང་ངང་གིས་ནི་ངང་པའི་རྒྱལ་པོ་གཟུང་ངོ་། །དུད་འགྲོ་རྣམས་ལས་རུས་སྦལ་རྒྱལ[4]། །ཞེས་པ་ནི། ཆུ་ལས་སྐྱེས་པའི་དུད་འགྲོ་རྣམས་ལས་རུས་སྦལ་རྒྱལ་བ་དེ་རུས་སྦལ་ནི་[5]གཙོ་བོའོ། །དེ་ཡང་གང་བསད་པ་[6]མ་ཡིན་པར་

1. དུད་འགྲོ་ཕྱུག་ ཕྱི།
2. འདབ་ཆགས་རྣམས་ལ་དང་ སྡེ། ཅོ།
3. འདབ་ཆགས་དགུ་པ་ གསེར། པེ།
4. རུ་སྦལ་ གསེར། པེ།
5. རུ་སྦལ་རྒྱལ་བ་དེ་རུ་སྦལ་ནི་ གསེར། པེ།
6. དེ་ཡང་གསད་པ་ གསེར། དེ་ཡང་བསད་པ་ པེ།

རབ་ཏུ་གྲགས་པའོ། །ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་ནི་[1]ཁ་གཡོ་བ། །ཞེས་པ་ནི་ར་དང་མདེ་ཤ་[2]དང་ཁྲིམ་བྱའོ། །ཁ་གཡོ་བར་བྱེད་པས་ན་ཁ་གཡོ་བ་ནི་ར་ལ་སོ་ཏ་པའོ། །ཅི་དེ་རྣམས་ཀྱི་ཁ་གཡོ་ཞེས་པ་ལ་སྟོན་ཏེ[3]། །སྣ་ཚོགས་ཀྱི་གཟུགས་ཀྱིས་[4]རོལ་བས་ན་ལྷ་སྟེ། ལྷ་མ་ཡིན་ལ་སོགས་པའོ། ༤ །

དངོས་གྲུབ་སྒྲུབ་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ། །
ཕྱུགས་དེ་དག་ནི་རྣམ་པར་བཤད། །
ཁྭ་དང་ཆུ་སྐྱར་ཅེ་སྤྱང་[5]དང་། །
གཉིས་སྐྱེས་[6]གླིན་པོ་ཆེན་པོ་དང་། །
ཁྲུང་ཁྲུང་བཞད་དང་ཀདམྦ[7]། ༥ །

དངོས་གྲུབ་བསྒྲུབ་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ། །ཕྱུགས་འདི་དག་ནི་ཡང་དག་བརྗོད། །ཅེས་པ་ནི་ཕྱུགས་འདི་དག་དང་འདབ་ཆགས་འདི་ནི་མཉམ་པར་སངས་རྒྱས་ཀྱིས་བརྗོད་པའོ། །དངོས་གྲུབ་བསྒྲུབ་པ་ཡང་ཡིན་ལ་དེ་དཀྱིལ་འཁོར་ཡང་ཡིན་པས་དེ་དེ་བཞིན་ནོ། །དེ་ལ་མཆོད་པའི་དོན་དུ་[8]འདབ་ཆགས་དགུག་པ་ནི་ཁྭ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་

1. ཀྱི་ནི་ པེ། གསེར།
2. མ་དེ་ཤ་ གསེར། པེ།
3. རྣམས་ཀྱིས་ཁ་གཡོ་ཞེས་པ་ལ་སྟོན་ཏེ་ གསེར། པེ།
4. གཟུགས་ཀྱི་ སྡེ། ཅོ།
5. ལྕེ་སྤྱང་ ལྷ། པེ། ལྕེ་སྤྲང་ སྣ།
6. རྩ་བར་‘སྐྱེ་གཉིས་’ཞེས་གསལ་ཡང་དེར་འགྲེལ་པར་གསལ་བ་ལྟར་བཀོད་ཡོད།
7. ཀདམ་པ་ སྣ། པེ།
8. དོན་དེ་ སྡེ། ཅོ།

སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཆུ་སྐྱར་དང་བཞད་ནི་རབ་ཏུ་གྲགས་པར་ཟད་དོ། །གཉིས་སྐྱེས་[1]སྤགས་ཆེན་ནི་ནེ་ཚོའོ། །ཁྲུང་ཁྲུང་ནི་ཆུ་བྱའི་བྱེ་བྲག་གོ །

ཁྭ་དང་ཆུ་སྐྱར་ངང་བཞད་དང་། །གཉིས་སྐྱེས་སྤགས་ཆེན་ཁྲུང་ཁྲུང་དང་།།

སྭ་ར་ས་དང་ཀ་དམ་པ། །འདི་རྣམས་གཙོ་བོ་ངང་པ་[2]ཡིན། །

ཞེས་དགོངས་སོ། །འདི་རྣམས་ཀུང་གཙོ་བོ་ནི་ངང་པ་[3]ཡིན་ནོ་ཞེས་གོང་དུ་བསྟན་ཏོ།། དེ་གལ་ཏེ་ངང་པའི་སྔས་རྒྱལ་རིགས་སམ་[4]རྣལ་འབྱོར་པའི་ཁྱད་པར་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཁ་ཅིག་འདོད་དོ། །དེའི་ཚེ་ནི་འདི་ལྟར་བཤད་པར་མི་བྱའོ། ༥ །

བཟའ་དང་སྦྱིན་སྲེག་[5]གཏོར་བྱ་བས། །
འདོད་པ་དག་ནི་འགྲུབ་པར་འགྱུར། །
ཁྲི་ནག་མོ་[6]ཡི་འོ་ཐུག་ནི། །
མ་ཤའི་འབྲས་ནི་ནག་པོར་ལྡན། ༦ །
འདོད་པས་[7]དོགས་པ་མེད་པ་རུ། །
ཛེ་སྲིད་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་ཀྱི་བར། །

1. གཉིས་སྐྱེ་ གསེར། པེ།
2. ངང་པོ་ སྡེ། ཅོ།
3. འདི་རྣམས་ཀུང་གཙོ་བོ་ནི་དང་པ་ སྡེ། འདི་རྣམས་པས་ཀུང་གཙོ་བོ་ནི་ངང་པ་ གསེར། པེ།
4. དེ་ལ་གལ་ཏེ་ངང་པའི་སྔས་རྒྱལ་རིགས་མ་ གསེར། པེ།
5. སྦྱིན་བསྲེག་ པེ།
6. ཁྲི་ནག་པོ་ ལྷ། སྣ།
7. སྤགས་པས་ རྒྱ་དཔེ།

རོ་ཡི་ཁར་ནི་སྦྱིན་སྲེག[1]བྱ། །

འདི་རྣམས་ཀྱི་ཅི་ཞེས་པ་ལ། བཟའ་དང་གཏོར་མ་[2]སྦྱིན་སྲེག་བྱ། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། བཟའ་བ་ནི་བཟའ་བའོ། །འདིས་ཅི་ཞེས་པ་ལ། འདོད་པ་ཀུན་ནི་[3]གྲུབ་པར་འགྱུར། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། ཁྭ་ལ་སོགས་པ་ནས་ཀ་དམ་པའི་བར་དུ་བཟའ་བ་དང་སྦྱིན་སྲེག་དང་གཏོར་མ་བྱ་བ་ཞེས་འགྱུབ་བོ། །

ཁྭ་དང་ཆུ་སྐྱར་དང་བཞད་དང་། །
གཉིས་སྐྱེ་[4]སྟག་ཆེན་ཁྲུང་ཁྲུང་དང་། །
སཱ་ར་ས་དང་ཀ་དམ་པ། །
བཟའ་བ་དང་ནི་སྦྱིན་སྲེག་དང་། །
གཏོར་མའི་བྱ་བས་འགྲུབ་པ་ལ[5]། །

ཞེས་པ་ནི་བསགས་པའི་ཚིག་གོ །ཡི་དྭགས་ཆེན་པོའི་སྒྲུབ་ཐབས་ནི། གྲྀཀྵ་[6]ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །གནོད་མཛེས་ཀྱི་སྟགས་སམ་རྩ་བའི་སྟགས་ཀྱིས་སྔོན་དུ་བསྙེན་པར་བྱས་ཤིང་མཚན་མ་ཐོབ་པས་རྨ་མེད་ཅིང་མ་རུལ་བའི་རོ་བླངས་[7]ལ་

1. རོའི་ཁར་ནི་སྦྱིན་བསྲེག་ པེ། རོ་ཡི་ཁར་ནི་སྦྱིན་བསྲེག་ སྣ།
2. གཏོར་མ་དང་ གསེར། པེ།
3. ཀུན་གྱི་ སྡེ། ཅོ།
4. ལེའུ་འདིའི་ཚིགས་བཅད་ལྔ་པའི་རྩ་བ་དང་འགྲེལ་པར་'གཉིས་སྐྱེས་' ཞེས་གསལ།
5. 'ལ་' གསེར་པེ་གཉིས་སུ་མེད།
6. གྲྀཀྵ་ པེ། གྲྀཀྵ་ སྡེ། ཅོ།
7. རོ་ལངས་ གསེར། པེ།

དུར་ཁྲོད་དུ་མཚན་ཕྱེད་ན་ཁྲི་ནག་མོའི་འོ་མ་ལ་འབྲས་མ་གོང་པ་དང་མ་ཤ་ནག་པོ་བསྲེ་ཞིང་དེའི་ཁ་ཉིད་དུ་རྟགས་ཀྱིས་སྦྱིན་སྲེག་བྱའོ། །དེ་ནི་ནག་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཁྲི་ནག་མོའི་འོ་མས་སྒྲུབ་པ་པོས་སྦྱིན་སྲེག་བྱའོ། ༦-༧ །

དེ་ནས་ཡི་དྭགས་[1]ལངས་ནས་ནི། །
སྒྲུབ་པོ་དེ་ལ་འདྲི་[2]བྱེད་དེ། །
ཅི་བགྱི་ཞེས་ནི་སྨྲ་འགྱུར་ཞིང་། །
ས་འོག་ལས་སམ་རལ་གྲི་འམ[3]། །
ཚར་གཅོད་[4]ཕན་འདོགས་ཉིད་དག་དང་། ༨ །

མཆོག་ཏུ་གྱུར་པ་ཉིད་དེ་[5]སྟོན་དུ་བསྙེན་པ་བྱས་པ་ཉིད་བསྟན་ཏོ། །ས་འོག་ནི་ས་འོག་གི་དངོས་གྲུབ་སྟེ་ཞུག་པར་[6]འཛུག་པའི་དངོས་གྲུབ་ཅེས་པའི་བར་རོ། །འགྲོ་བ་ནི་བར་སྣང་ལ་འགྲོ་བའོ། །རལ་གྲི་ནི་རལ་གྲིའི་དངོས་གྲུབ་བོ། །འམ་གྱི་སྒྲས་ནི་འཁོར་ལོ་ལ་སོགས་པའི་དངོས་གྲུབ་བོ། །ཕན་འདོགས་པ་ནི་རྗེས་སུ་གཟུང་བའོ། །ཚར་བཅད་པ་ནི་གདུག་པ་ཅན་གཞོམ་པའོ། ༨ །

---

1. ཡི་དགས་ སྡེ། པེ། སྣ།
2. དེ་ལ་འདི་ སྣ།
3. 'ས་འོག་འགྲོ་དང་རལ་འགྲི་འམ།' རྒྱ་དཔེའི་རྩ་བ་དང་འགྲེལ་པ།
4. ཆེར་གཅོད་ པེ།
5. ཉིད་དུ་ པེ།
6. བྱུག་པར་ གསེར། པེ།

རི་ལ་བུ་[1]མིག་སྨན་གཏེར་རྣམས་སམ། །
ཀང་མགྲོགས་དག་གམ་བཅུད་ཀྱིས་ལེན། །
དངོས་[2]འདི་དེ་བཞིན་གཅིག་བྱིན་ནས། །
འགྲོ་བར་འགྱུར་གྱི་གཞན་དུ་མིན། ༩ །

རི་ལུ་མིག་སྨན་གཏེར་རྣམས་སམ། །ཀང་མགྲོགས་དག་གམ་བཅུད་ཀྱིས་ལེན། །ཞེས་པ་ནི་འམ་ནི་བསྡུས་པའོ། །གཞན་ནི་གོ་སླའོ། །དངོས་གྲུབ་ནི་འདི་རྣམས་ནང་ནས་གང་ཅུང་ཟད་དངོས་གྲུབ་བྱིན་ནས་འགྲོའོ། །གཞན་དུ་ངེས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། ༩ །

སྙིང་དང་[3]འོག་ཏུ་ཕོ་ཉ་འགྲུབ། །
རྒྱུད་འདིར་ཐེ་ཚོམ་མེད་པ་ཡིན། །
བ་ལང་གནས་དང་ལྡིང་བ་[4]ཉིད། །
ལྷག་མ་སྐམ་པོ་རྩ་དེ་ནས། ༡༠ །

སྙིང་དང་འོག་ཏུ་ཕོ་ཉས་འགྲུབ། །རྒྱུད་འདིར་ཐེ་ཚོམ་མེད་པ་ཡིན། །ཞེས་པ་ནི་འོག་མའི་[5]རྣལ་འབྱོར་མ་ནི་ས་གཞི་ལ་གཏོགས་པའོ། །སྙིང་གི་རྣལ་འབྱོར་མ་ནི་བར་

1. རི་ལུ་ པེ།
2. དངོས་གྲུབ་ འགྲེལ་པ།
3. སྙིང་དུ་ ལྷ།
4. ལྡིང་པ་ ལྷ།
5. འོག་མིན་ གསེར། པེ།

སྣང་ལ་གཏོགས་པའོ། །དེའི་དངོས་གྲུབ་ནི་དངོས་གྲུབ་ཏུ་འགྱུར་རོ་ཞེས་དགོངས་སོ།། ལྟེ་བའི་ཐལ་བ་ཉིད་དང་ཞེས་པ་ནི་ལྟེ་བ་ནི་ལྟེ་བ་སྐམ་པོའོ། །དེ་བཞིན་ལྷག་མ་མགོ་སྐམ་ཞེས་པ་ནི་ལྷག་མ་ནི་སྦྲིན་བུའོ། །མགོ་སྐམ་ནི་ཧརིཐའོ[1]། །དེ་ཞེས་པ་ནི་ཕྲེང་བ་དེའི་དོན་དུའོ། ༡༠ །

བདེ་བ་ཆེན་པོའི་[2]ངོ་བོར་བྱ། །
ཡང་ན་རུས་སྦལ་དག་གིའོ། །
འདི་དེ་དངོས་གྲུབ་སྦྱིན་འགྱུར་ཞིང་། ༡༡ །

རུས་སྦལ་ཞེས་པ་ནི་རུས་སྦལ་[3]གྱི་རུས་པ་ལ་ཕྲེང་བ་བྱའོ། །རོ་ལངས་ཀྱི་བསྒྲུབ་པ་ལ་ངེས་པར་འདི་དག་ཏུ་ཡིན་ནོ[4]། །ཞི་བ་དང་། རྒྱས་པ་དང་། དབང་དང་། མངོན་སྤྱོད་ལ། པོ་དེ་ཙེ་ནི་[5]ལས་ཀུན་བྱེད། །ཅེས་བྱའོ། །གདན་བཞི་ནས་གསུངས་པ་བཞིན་དུ། ལས་གཞན་རྣམས་རི་ལུ་བལྟ་བར་བྱའོ། ༡༡ །

ཕྲུག་བཞི་པ་དང་ཞལ་བཞི་པ། །
ཇི་སྲིད་ཕྲུག་ནི་འབུམ་གྱི་བར། །

---

1. ཧརིཐ་ རྒྱ་དཔེ།
2. ངང་ཆེན་པོ་ཡི་ རྒྱ་དཔེ།
3. རུ་སྦལ་ཞེས་པ་ནི་རུ་སྦལ་ པེ།
4. འདི་དག་ངག་ཡིན་ནོ་ གསེར། པེ།
5. པོཏྲེཙེ་ནི་ པེ། གསེར། པུཏྲཛཱིཝསྱ རྒྱ་དཔེ།

སྐུ་ནི་དཀར་བའི་ཁྲོ་བོ་ཆེ། |
དེ་ནས་དྲག་ཤུལ་གཟུགས་འཆང་བ། ༡༣ |

ཕྱག་བཞི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་རོ་ལངས་བསྒྲུབ་པ་[1]ལ་དོ་རྗེ་དང་མདུང་དང་། ཐོད་པ་དང་། ཁཊྭཱཾ་ཕྱག་བཞི་འཆང་བ་བསྒོམ་པར་བྱའོ་ཞེས་སྦྱར་རོ། | དཀར་པོ་དང་། ལྗང་གུ་དང་། དམར་པོ་དང་། སེར་པོ་ནི་ཤར་དང་བྱང་ལ་སོགས་པའི་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་ཞལ་བཞིའོ། །ཇི་སྲིད་ཕྱག་ནི་འབུམ་གྱི་བར། །ཞེས་པ་ནི་ཞལ་དང་ཕྱག་ལ་ངེས་པ་མེད་པར་དགོངས་པའོ། །འོན་ཀྱང་གདམས་ངག་ལ་བལྟོས་སོ[2]། །ཡང་ན་ཞལ་བཞི་ནི་དཀར་པོ་ཉིད་དོ། །མཚན་མ་ནི་མན་ངག་ལས་སོ། | དེའི་ཕྱིར་གཞན་དུ་ཡང་དེ་ལྟར་གདམས་ངག་ལས་ཤེས་པར་བྱའོ། །དེ་བཞིན་ཞེས་པ་ནི། གདམས་ངག་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ[3]། ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༡༣ |

དོ་རྗེ་ཕག་མོ་ལ་གཟིགས་པ། |
དེ་ཡི་སྐུ་མདོག་མཚོན་ཆ་འཆང་[4]། |
དཔའ་བོ་ཐོད་པའི་ཕྲེང་བ་ཅན། |
སྐུ་ལ་ཐལ་བས་ཉེ་བར་བྱུགས། ༡༣ |

དོ་རྗེ་ཕག་མོ་དེ་ལ་གཟིགས། །དེ་ཡི་[5]མདོག་དང་མཚོན་ཆ་འཆང་། །ཞེས་པ་ནི་

1. སོགས་ལ་རོ་ལངས་བསྒྲུབ་པ་ གསེར། སོགས་·········སྒྲུབ་པ་ ཅོ།
2. བལྟས་སོ་ སྡེ། ཅོ།
3. ཇི་བཞིན་དུ་ གསེར། པེ།
4. མཚོན་ཆ་འཕྱང་ པེ།
5. དེའི་ གསེར། པེ།

རྡོ་རྗེ་དང་ཐོད་པ་འཆང་བའོ། །འདི་ཡང་ཞལ་བཞི་ཉིད་དོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་དཀར་བས་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་དཀར་བའོ། ༡༣ །

རལ་པའི་ཅོད་པན་མདུང་[1]དང་ལྡན། །
ཕྱག་རྒྱ་ཡིས་ནི་སྐུ་ལ་བརྒྱན། །
ཞལ་གྱི་མཆེ་བ་ཅུང་ཟད་གཙིགས། །
ཡི་དྭགས་ཆེན་པོ་གདན་དུ་བྱས[2]། ༡༤ །
སྒྲུབ་པ་པོ་ཡིས་དུས་རྟག་ཏུ། །
སྔགས་དེ་ཤེས་ནས་བསྒོམ་པར་བྱ། །
དེ་ལྟའི་ཡོན་ཏན་ཁྱད་འཕགས་པས། །
འདོད་པ་ཡི་ནི་དངོས་གྲུབ་འགྱུར། ༡༥ །

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་དུད་འགྲོ་ཕྱུགས་དང་རོ་ལངས་[3] སྒྲུབ་པ་དང་། བསྐྱེད་པའི་རིམ་པའི་ཚོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་པའོ།། །།

འདིར་བསྒོམ་པའི་རིམ་པ་ཤེས་པས་ལྷ་སུམ་ཅུ་རྩ་དྲུག་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གྲངས་ཀྱང་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །རྟག་ཏུ་དུས་[4]གསུམ་དུ་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །ཕྱག་དང་ཞལ་འབྱམ་

1. ཅོད་ཅན་མདུད་ སྡེ། གཅོད་ཅན་མདུད་ པེ།
2. ཡི་དགས་ཆེན་པོའི་གདན་དུ་བྱས། པེ། ཡི་དྭགས་ཆེན་པོ་གདན་དུ་བྱ། སྣ། ལྷ།
3. རོ་ལྷ་ སྣ།
4. ‘དུས་’ ཅོ་ནེ་མེད།

ལ་སོགས་པ་ལ་ནི་གཡས་ཐམས་ཅད་དུ་རྡོ་རྗེ་དང་གཡོན་མདུང་ངམ་ཡང་ན་ནི་ཁཊྭཱཾག་དང་ཐོད་པ་དང་། ཞལ་ཐམས་ཅད་ནི་དཀར་པོའོ། །གཞན་ཐམས་ཅད་ནི་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་རིམ་པ་ལས་ཤེས་པར་བྱའོ། ༡༩-༡༥ །

དུར་ཁྲོད་འདབ་ཆགས་དང་། ཕྱུགས་པོང་བུ་ལ་སོགས་པ་དང་། རོ་ལངས་ཡི་དྭགས་དང་། དེ་རྣམས་བསྒྲུབ་པའི་བསྐྱེད་པའི་རིམ་པ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེའི་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་སུམ་ཅུ་གཉིས་པ་སྟེ་སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། །།

✶

གསང་བ་དང་བསྙེན་བཀུར་གྱི་མཆོད་པའི་ལེའུ།

དེ་ནས་སྒྲུབ་པོའི་མཆོག་ཀུན་ནི། །
སྦྱོར་བ་ཀུན་ལ་མེད་པའོ། །
བཟའ་དང་བཅའ་དང་ཉ་ཤ་སོགས། །
ཉུས་པ་ཇི་བཞིན་བྱ་བ་སྟེ། ༧ །

ད་ཉི་[1]བསྙེན་བཀུར་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་མཆོད་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་རྗེས་སུ་གནས་སོ་ཞེས་བསྟན་པའི་ཕྱིར། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དེ་ནས་ནི་མཆོད་པ་ལ་སོགས་པ་རྗེས་སུ་གནས་པ་གཞན་ལ་ཡང་གཞན་གྱིས་ཇི་ལྟར་འགྱུར་པ་དེ་ལྟ་དེ་ལྟར་སྒྲུབ་པ་པོས་བྱའོ་ཞེས་སྦྱར་རོ། །ཐམས་ཅད་ཀྱི་བསྒྲུབ་བྱ་རྣམས་རྣལ་འབྱོར་གྱིས་འཐོབ་པས་གང་དེ་རྣམས་ལ་སྔའི་རྟགས་ཀྱི་བདུན་པའོ། །བསྙེན་བཀུར་བསྟན་པའི་ཕྱིར། བཟའ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །བཟའ་བ་ནི་གོ་ཀུདྡན་ལ་སོགས་པའོ། །སྔོན་མོ་ནི་ཞོ་དང་མར་[2]དང་བྲེ་མ་ཀ་ར་[3]དང་ལ་དུ་ལ་སོགས་པའོ། །བཟའ་བ་མང་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་སྔོན་མོ་ནི་ཞོ་ལ་སོགས་པ་ཉིད་དོ། །ཉ་ནི་རོ་ཧིཏ་[4]ལ་སོགས་པའོ། །ཤ་ནི་ར་ལ་སོགས་པའི་ཤའོ། །སོགས་ཀྱི་སྒྲས་ནི་གཞན་

---

1. དེ་ཉི་ ཅོ།
2. དམར་ གསེར།
3. ཁྲེ་མར་ཀ་ར་ སྣེ། ཅོ།
4. རོ་ཧིཾཏ་ པེ།

ཡང་ཇི་ལྟར་ཊཱིཀ་པའི་བཟའ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཁྱད་པར་རོ། །འདིས་བྱ་བ་ནི་བྱ་སྟེ་སྒྲུབ་པ་པོས་མཆོད་དོ་ཞེས་ཤེས་པར་བྱའོ། །རང་བཞིན་གྱི་ཕྱིར་དེ་ལྟར་མཆོད་པར་བྱེད་པའི་སྒྲུབ་པ་པོ་ནི་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །ཅི་ནུས་པ་དང་ཞེས་པ་[1]ནི་ནུས་པ་ཇི་ལྟ་བུར་གྱུར་པས་དེས་དེ་ལ་བྱ་བ་བྱའོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །དེ་དག་ནུས་པས་འདའ་བར་མི་བྱའོ། ༡ །

མེད་པར་གྱུར་ཀྱང་བཟའ་བ་ནི། །
ལྷ་པོ་ཉིད་དུ་བྱ་བ་ཡིན། །
བཟའ་དང་བཅའ་བ་རྒྱ་ཆེ་བ། །
རྟག་ཏུ་མཆན་མོ་ཉིད་དུ་བྱ། ༢ །

བདུད་རྩི་རྣམ་པ་ལྔ་བསྐྱེད་པར་མི་ནུས་ཤིང་ལྷ་པོ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ན་བཟའ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡང་བདུད་རྩི་རྣམ་པ་[2]ལྟར་བསྒོམ་པར་བྱ་ཞིང་བསྟེན་པར་བྱའོ། །འབད་པས་ངེས་པར་རོ། །ནུབ་མོ་རྟག་ཏུ་བྱ་བ་ནི། །ཞེས་པ་ནི་རེ་ཞིག་ཉིན་མོ་ཡང་བཟའ་བ་ལ་སོགས་པ་བྱ་ཞིང་བསྟེན་པར་བྱའོ། །ནུབ་མོ་ནི་ངེས་པར་བྱའོ། །ཉིའི་སྐབས་ནི་དེའི་དོན་གྱི་ཕྱིར་རོ། ༢ །

དེ་ནས་ཕོ་ཉ་རབ་སྦྱིན་ཞིང་། །
ཁྱད་པར་དུ་ནི་སྒྲུབ་པ་པོ། །

1. ‘དང་ཞེས་པ་’ སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེ་གཉིས་སུ་ལྷག

2. ‘རྣམ་པ་’ གསེར་པེ་གཉིས་སུ་མེད།

རང་གི་པང་དུ་[1]མགོ་བཞག་ལ། །
དཔའ་བོ་གཉིས་མེད་རབ་ཏུ་མཆོད། ༡ །

དེ་ནས་ཕོ་ཉ་བཟའ་བ་སྦྱིན། །ཞེས་པ་ནི་བཟའ་བ་ནི་བཟའ་བ་ལ་སོགས་པ་བཟའ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སྤྱོད་པའོ། །རང་གི་ཡན་ལག་མགོར་བྱས་ལ། །ཞེས་པ་ནི་རང་གི་ལག་པར་ཐོད་པ་བླངས་ལ་དེ་ནས་བཟའ་བ་ལ་སོགས་པ་བཟའ་ཞིང་ཕོ་ཉ་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་མཆོད་པར་བྱའོ་ཞེས་པ་ནི་བསྡུས་པའི་དོན་ཏོ། །དཔའ་བོ་གཉིས་སུ་མེད་པ་མཆོད། །ཅེས་པ་[2]ནི་སྙོམས་པར་འཇུག་པའི་མཆོད་པ་ཡང་དཔའ་བོ་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །རང་དང་ལྷན་ཅིག་ཅེས་པའི་གཞུང་ལ་ནི་དེ་ལ་དཔའ་བོ་དང་ལྷན་ཅིག་པདྨ་ལ་ཆོས་འབྱུང་དུ་བྱས་ནས་དཔའ་བོ་དང་གཉིས་སུ་མེད་པར་མཆོད་པ་[3]བསྒྲུབ་པར་བྱའོ་ཞེས་བཤད་དོ། ༡ །

མ་འམ་ཡང་ན་སྲིང་མོ་འམ། །
བུ་མོ་འམ་[4]ཡང་ན་ཆུང་མ་གཉེན། །
རྣམ་པ་འདི་ལྟའི་ཚོ་ག་ཡིས[5]། །
བཅིངས་པ་ལས་ནི་རབ་གྲོལ་བྱ། ༤ །

མ་འམ་ཡང་ན་སྲིང་མོ་འམ། །བུ་མོ་འམ་ཡང་ན་ཆུང་མར་ནི། །ཞེས་པ་ལ་

1. སྤང་དུ་ པེ། སྣ།
2. མཆོད་པ་ཞེས་པ་ པེ། གསེར།
3. 'ཡང་དཔའ་བོ་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་' སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེ་གཉིས་སུ་ལྷག་པ་འཁོད་འདུག
4. ནུ་མོ་འམ་ པེ། ཨ། སྣ།
5. ཚོ་ག་ཡིན་ པེ།

མཁའ་འགྲོ་མ་ལྷ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་བརྗེ་བར་འགྱུར་ན་དེ་དང་ལྷན་ཅིག་པས་
བཅིངས་པ་ལས་ཤིན་ཏུ་གྲོལ་ཏེ་ཐར་བར་བྱེད་དོ། ༩ །

དེ་ནས་སྔགས་འདི་འགྲུབ་འགྱུར་[1]ཏེ། །
ཇི་སྲིད་འབྱུང་བ་ཡོད་བར་དུའོ། །
སློབ་དཔོན་ལུས་སུ་ལེགས་གནས་ཏེ། །
སྒྲུབ་པ་པོ་ལས་མཆོད་པ་ལེན། ༥ །

དེ་ནས་སྔགས་ནི་གྲུབ་འགྱུར་ཏེ། །ཞེས་བྱའོ། །ཛ་དུས་ཇི་ཙམ་དུ་ཞེས་པ་ལ། ཇི་སྲིད་འབྱུང་བ་ཡོད་བར་དུ། །ཞེས་གསུངས་སོ། །ཇི་སྲིད་འབྱུང་བ་ནི་ཉོན་མོངས་པ་རྣམས་ཀྱི་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པའོ། །དེ་གཞན་དུ་གྱུར་པའོ། །དེ་ཧ་བུའི་རྣལ་འབྱོར་མ་ལ་བསྙེན་བཀུར་བྱ་བའི་ཕྱིར་སློབ་དཔོན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། "སློབ་དཔོན་དེ་ཧ་བུའི་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་ལུས་བླངས་ནས་མཆོད་པ་ལེན་ཅིང་སྒྲུབ་པ་པོ་དངོས་གྲུབ་ལ་ཉེ་བར་ནི་[2]བཅོམ་ལྡན་འདས་སོ། །དེ་ཧ་བུའི་སློབ་དཔོན་ལ་མཆོད་ན་རྡོ་རྗེ་འཆང་ལ་མཆོད་པར་འགྱུར་པས་དེ་ལ་མཆོད་པས། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་མཆོད་པར་འགྱུར།" ཞེས་དགོངས་སོ། ༥ །

དཔའ་བོ་རྣམས་ཀྱི་སྟན་དག་[3]དང་། །
ཕྱག་རྒྱ་ཉིད་དུ་ཐེ་ཚོམ་མེད། །

---

1. གྲུབ་འགྱུར་ པེ།
2. ཉེ་བ་ན་ གསེར། པེ།
3. བསྟན་དག་ པེ།

སྒྲུབ་པོ་ཤིན་ཏུ་མཉམ་བཞག་[1]པས། །
གླུ་དང་གར་ལ་སོགས་པ་བྱ། ༦ །
དཔའ་བོ་རྣམས་ཀྱི་གདན་དང་གནས།།
ཕྱག་རྒྱ་མཚན་མ་བསྣམས་པ་དང་། །
རྡོ་རྗེ་ཞབས་ལྡན་གླུ་དང་ནི། །
གར་ནི་གཡས་བརྐྱང་པ་ཡི་ཞབས[2]། །

དེ་ལྟར་སྒྲུབ་པ་པོས་མཉམ་པར་བཞག་[3]པས་ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་བདག་ཉིད་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ཆེ་བ་ཇི་སྲིད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། ༦ །

ཇི་སྲིད་ལུས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱང་། །
རྣལ་འབྱོར་ཡེ་ཤེས་ཞེན་མ་གྱུར། །
དེ་སྲིད་འཁོར་བར་འཁོར་འགྱུར་ཞིང་། །
སྡུག་བསྔལ་མྱ་ངན་གྱིས་གཡེངས་འགྱུར། ༧ །

ཇི་སྲིད་འཁོར་བར་འཁོར་བ་དེ་སྲིད་དུ་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་[4]རྣལ་འབྱོར་གྱི་ཡེ་ཤེས་མ་ཡིན་ནོ། །དང་ནི་དེ་སྲིད་ཀྱི་དོན་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །མི་དགའ་བ་[5]ཡང་ཇི་ཙམ་

1. མཉམ་གཞག་ སྣ།
2. གཞུང་གི་ཚ་བ་དང་འགྲེལ་པར་གསལ་བའི་ཚ་བ་གཉིས་པོའི་བར་མི་མཐུན་པ་སྣང་།
3. མཉམ་པར་གཞག་ སྡེ། ཅོ། པེ།
4. ཧེ་རུ་ཀ་ གསེར། པེ།
5. མི་ཆ་བ་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་(ན་རཏྣ) ལྟར་བཀོད་པ་ཡིན།

ཞེས་པ་ལ། ལུས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཇི་སྲིད་དུ། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། ཇི་སྲིད་ལུས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཉིད། །ཅེས་པའི་དོན་ཏོ། ༧ །

དངོས་པོ་ཀུན་གྱིས་སྒྲུབ་པ་པོས། །
དེ་ནས་ཕྱག་རྒྱ་མཆོད་པར་བྱ། །
མཆོད་པས་མཆོད་པར་འདོད་པ་སྟེ། །
བརྟས་པ་ཡིས་ནི་ངེས་པར་སྦྱིག[1] ༨ །

ཕྱག་རྒྱ་དང་ལྷ་རྣམས་ལ་མཆོད་པར་བྱའོ། །དེས་ཅི་ཞེས་པ་ལས་མཆོད་པར་བྱ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། མཆོད་པ་ཞེས་པ་ནི་མཆོད་པ་སྟེ་མཆོད་པ་པོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༨ །

རྣལ་འབྱོར་རྒྱུད་དུ་མི་རྣམས་ཀྱི། །
ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་དང་པོ་འགྲུབ། །
རབ་ཏུ་འབད་པས་མཆོད་པར་བྱ། །
ཕྱི་ནས་དཔའ་བོ་རྣམས་ཀྱིས[2]་ནི། །
དཔའ་བོ་ཉིད་ལ་སྤྱོད་པར་བྱ། ༩ །

དང་པོ་ནས་བསྒྲུབ་པ་རང་བཞིན་གྱིས་གྲུབ་པའི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ནི་ལྷའོ། །དེ་ཅི་ལྟར་གྱུར་པ་དེ་འཇིག་རྟེན་པས་མི་ཤེས་པར་བསྟན་པའི་ཕྱིར། ང་རྒྱལ་ཅན་ཞེས་བྱ་བ་ཞེས་གསུངས་སོ། །ང་རྒྱལ་ལ་སོགས་པའི་ཉོན་མོངས་པ་ལྷན་ཅིག་ཐོབ་པ་ནི་ང་

---

1. ངེས་པར་བསྲིག་ ཡེ།
2. དཔའ་བོ་རྣམས་ཀྱི་ ཡེ།

རྒྱལ་ཅན་ནོ། །ང་རྒྱལ་གྱིས་བཅིངས་པས་དེ་མི་ཤེས་སོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །དེ་བཞིན་དུ། ཐར་གྱི་ཚོགས་བསྐྱེན་བཀུར་བྱའོ། །ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཕྱི་ནས་དཔའ་བོའི་དཔའ་བ་ཀུན་དུ་སྤྱད་པ་ཞེས་པ་ནི་ཐར་གྱི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་[1]སྤངས་ཏེ། དཔའ་བོའི་སེམས་མི་རྟོག་པ་ཉིད་ལ་སྤྱད་པར་བྱའོ། ༩ །

དེ་ལྟར་མཆོད་བྱས་དེ་ནས་ནི། |
ས་འོག་སྒྲུབ་པོ་ལངས་པ་དང་། |
ཞི་བ་ཉིད་དང་རྒྱས་པ་དང་། |
དབང་དང་དགུག་པ་[2]དག་དང་ནི། |
གསད་དང་བསྐྲད་པ་[3]ལ་སོགས་དང་། ༡༠ |
རྒྱུགས་དང་རེངས་པ་དེ་བཞིན་ཏེ། |
དབྱེ་བ་ཉིད་དང་ཆར་གཅོད་[4]དང་། |
ལས་ཀྱི་དངོས་གྲུབ་[5]མཆོད་པར་བྱ། |
གང་ཅིའང་རུང་བའི་ལས་གྱུར་པ། |
ཉོན་[6]མི་མྱོངས་པར་འགྲུབ་འགྱུར་ཏེ། ༡༡ |

1. རྣམ་པར་རྟོགས་པ་ གསེར། པེ།
2. གུག་པ་ པེ།
3. གསད་དང་སྐྲད་པ་ པེ། བསད་དང་བསྐྲད་པ་ སྣ།
4. ཆད་བཅད་ སྣ། ཆད་གཅད་ ཞོ།
5. དངོས་སྒྲུབ་ སྣ། ཞོ།
6. སྙོན་ པེ།

ཐེ་ཚོམ་མེད་[1]པར་སྒྲུབ་པ་པོའི། །
དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་འགྲུབ་པར་འགྱུར། ༡༣།

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་གསང་བའི་མཆོད་པ་དང་བསྙེན་བཀུར་གྱི་མཆོད་པའི་ལེའུ་སྟེ་སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་པའོ།། །།

རེ་ཞིག་མཆོད་པ་ནི་དེ་ལྟར་ཡིན་ནོ། །དེ་ནས་དེ་ཡིས་ས་འོག་ལ་སོགས་པའི་དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་[2]སྒྲུབ་པ་པོར་འགྱུར་རོ། །ཞི་བ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་གོ་སླའོ། ༡༠–༡༣ །

གསང་བའི་མཆོད་པ་དང་བཟའ་བ་ལ་སོགས་པ་བྱས་པ་དང་། བསྙེན་བཀུར་དང་བླ་མར་བྱས་པ་དང་ཕྱག་འཚལ་བ་ལ་སོགས་པ་དེ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་དེ་དེ་བཞིན་ནོ། །སུམ་ཅུ་གསུམ་ནི་སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་པའོ་ཞེས་པ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། །།

✵

1. ཐེ་ཚོམ་མེད་ པེ།
2. ཀྱིས་ གསེར། པེ།

ཕོ་ཉ་མོའི་སྤྲིན་སྤྲིག་དང་ལས་ཀྱི་ཚོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནས་མཁའ་འགྲོ་མ་དྲ་བའི། །
འཁོར་ལོ་ཞེས་པའི་ཚོ་ག་རྒྱས། །
ལས་གང་ཅི་ཡང་དེ་སྒྱུར་བར། །
སྒྲུབ་པ་པོ་ནི་ཐེ་ཚོམ་མེད། ༡ །

དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་མཆོད་པ་དང་བསྙེན་བཀུར་བསྟན་པའི་རྗེས་སུའོ། །མཁའ་འགྲོ་མའི་དྲ་བའི་འཁོར་ལོ་བརྗོད་པའི་ཚོ་ག་རྒྱས་པར་བཤད་དོ་ཞེས་བལྟ་བར་བྱའོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་མཁའ་འགྲོ་མའོ། །དེ་ཉིད་དྲ་བ་དང་འདྲ་བས་ན་དྲ་བ་ཡིན་ཏེ། ཉོན་མོངས་པའི་ཆུ་སྲིན་ལ་སོགས་པ་འཆིང་བ་[1]ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་འཁོར་ལོ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་ཏེ་མངོན་དུ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཚོ་ག་རྒྱས་པ་ཡིན་ནོ། །ལས་གང་ལས་དེ་དེ་བཞིན་དུ་ཚོ་ག་རྒྱས་པ་ཡི་ནི་[2]མཁའ་འགྲོ་མ་དགོད་པ་ལ་སོགས་པའོ། །དེ་གང་ཞེས་པ་ལས་གང་གིས། ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དེ་ཞེས་པ་ནི་དུམ་སྐྱེས་མས་འགྲུབ་པོ་ཞེས་ཤེས་[3]པར་བྱའོ། ༡ །

དཔའ་བོ་ཀུན་དང་རྣལ་འབྱོར་མ། །
པདྨའི་ལྟེ་བར་ངེས་པར་སྦྱར[4]། །

---

1. འཆང་བ་ སྡེ། ཅོ།
2. རྒྱས་པ་ཡིན་ནི་ གསེར། པེ།
3. 'ཤེས་'སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེ་གཉིས་སུ་མ་གསལ།
4. པད་མའི་ལྟེ་བར་ངེས་པར་བྱ། པེ། པདྨའི་ལྟེ་བར་ངེས་པར་བྱ། སྡེ།

སྨིན་མའི་དབུས་སུ་གཞུག་པར་བྱ། །
ཨབདྷཱུཏཱིའི་གནས་དེ་བཞིན། ༢ །

དཔའ་བོ་ཀུན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་པདྨའི་ལྟེ་བར་ཉི་ཤུ་བཞི་ནི་དཔའ་བོ་དང་ལྡན་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་ཉི་ཤུ་བཞི་དགོད་པར་བྱའོ། །དེའི་ཕྱིར་ངེས་པར་སྦྱར་ཏེ་ཞེས་གསུངས་སོ། །དེ་ལ་ངེས་པར་སྦྱར་ཞེས་པ་ནི་ངེས་པར་སྦྱར་བར་བྱའོ་ཞེས་པའི་གཞུང་ཡང་དེ་ལྟར་ཉིད་དོ། །པདྨའི་ལྟེ་བའི་སྒྲ་ནི་འདབ་མར་བརྗོད་པ་ཡིན་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་[1]སྒྲའི་མང་པོའི་ཚིག་[2]གོ །སྨིན་མའི་བར་དུ་ངེས་པར་འདུག །ཨཝདྷཱུཏཱི་[3]གནས་དེ་བཞིན། །ཞེས་པ་ནི། གཙོ་བོ་ལ་སོགས་པ་ལྷ་ཐམས་ཅད་[4]ཀྱི་སྤྱན་གསུམ་པ་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། །གང་གི་ཕྱིར་སྨིན་མའི་དབུས་ནི་སྣ་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་དཔྲལ་བར་ཐིག་པ་འཇོམས་པས་ཨཝདྷཱུཏཱི་སེམས་ཙམ་མོ། །དེའི་གནས་ནི་དེའི་མཚན་མ་[5]སྟེ་སྤྱན་གསུམ་པའོ། །དཔྲལ་བ་ཡང་གཙོ་བོའི་གནས་སོ། །འདིས་ནི་ལྷ་དགོད་པར་བསྟན་པའོ། །དེ་ལྟ་བུར་གྱུར་པའི་རྣལ་འབྱོར་པས་སྦྱིན་སྲེག་བྱའོ། ༢ །

དཔའ་བོའི་འཚོལ་བར་བྱས་ཆད་པར།།
བཟའ་བ་ཡང་ནི་དེ་ནས་བསྲེག[6] །

1. དེའི་ཕྱི་ སྣེ། ཅོ།
2. མང་པོའི་དམ་ཚིག་ གསེར། ཕེ།
3. ཨབདྷཱུཏཱི་ ཕེ། ཨབདྷཱུཏཱི་ གསེར།
4. ལྷ་ཐམས་ཅད་རྣམས་ གསེར། ཕེ།
5. མཚན་པ་ གསེར། ཕེ།
6. དེ་ནས་སྲེག་ སྣ། དཔའ་བོ་འཚོལ་བར་ཞལ་གྱིས་ནི། །དེ་ནས་མེ་རུ་གཞན་མི་སྲེག འགྲེལ་པ།

གོ་སྨྣང་ས་[1]དང་རུ་རྟི་ར། །
འབད་པས་བསྲིག་བྱ་ལྡེ་དག་བྱ། ༣ །
དེ་ནས་འབར་བའི་བྲིན་ཟ་[2]ལ། །
སྲིག་བླུགས་[3]དགུ་ནི་སྦྲིན་པར་བྱ། །
འབར་ཕྲེང་རྒྱ་མཚོ་བལྟ་བར་བྱ། །
ཀུན་ནས་སྔོ་ཡི་[4]འཁོར་ལོ་ཉིད། ༤ །

དཔའ་བོ་འཆོལ་[5]བའི་ཞལ་གྱིས་ནི། །དེ་ནས་མེ་རུ་གཞན་མི་སྲིག[6] །ཅེས་པ་ནི། དཔའ་བོ་འཆོལ་པའི་ཞལ་ནི་[7]ཁྲོ་བ་དང་བཅས་པའི་ཞལ་ལོ། །དེས་མཚན་ཅིང་ཡོད་པའི་སྦྲིན་སྲིག་བྱའོ། །རྫས་གཞན་གྱིས་ནི་མི་བྱ་སྟེ་ཕྱུགས་ཀྱི་ཤ་ཉིད་དོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །ཕྱུགས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གོ་སླའོ། །

དང་པོ་བསྲིག་བྱ་[8]ལྡེ་སྦྲིན་ཞིང་། །
དེ་ནས་འབར་བའི་མེ་ལ་ནི། །
བསྲིག་བྱ་དགུ་ནི་སྦྲིན་པར་བྱ། །ཞེས་པ་ནི་གོ་སླའོ། །

---

1. གོ་སྨྣཾ་ས་ ལྷ། གོ་མང་ས་ པེ།
2. བྲིན་ས་ ལྷ།
3. བསྲིག་བླུགས་ སྣ། པེ།
4. ཀུན་ནས་སྔོའི་ པེ།
5. འཆོལ་ གསེར། པེ།
6. མི་བསྲིག་ གསེར། པེ།
7. དཔའ་བོ་འཆོལ་པའི་ཞལ་ན་ སྡེ། ཅོ། དཔའ་བོ་འཆོལ་པའི་ཞལ་ནི་ གསེར། པེ།
8. སྲིག་བྱ་ གསེར། པེ།

མིའི་ཞལ་དུ་སྲེག་རྫས་བྱིན་ལ་དེ་ནས་ལྷའི་ཞལ་དུ་སྲེག་རྫས་སྦྱིན་པ་ནི་འབར་ཕྲེང་[1] ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཧོམ་[2]ཁྱུང་གི་དབུས་སུ་འཁོར་ལོ་བལྟའོ། | ཀུན་ནས་ཀྱི་སྔོ་ནི་སྔོ་བཞི་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། ༣-༤ |

དཔའ་བོའི་དབང་པོ་ཞལ་བཞི་པ། |
དཔའ་བོ་དཔའ་མོའི་གནས་དེ་བཞིན། |
འདབ་ལ་ཕོ་ཉ་མོ་བཞི་ཡིན། |
དཔའ་བོ་ཀུན་དང་[3]གཉིས་མེད་བདེ། ༥ |

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ཞལ་བཞིའོ། །དཔའ་བོ་ནི་མཚོན་པ་སྟེ་དཔའ་བོའི་གནས་འཁོར་ལོ། །དཔའ་བོ་དང་ལྡན་པའི་[4]རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་དང་བཅས་པར་བལྟའོ། | ཞེས་དགོངས་སོ། །འདབ་མར་ཕོ་ཉ་བཞི་པོ་དང་། །ཞེས་པ་ནི་འདབ་མ་ཞེས་པའི་རིགས་ཙམ་སྟེ། ཤར་ལ་སོགས་པའི་འདབ་མ་ལ་མཁའ་འགྲོ་མ་བཞི་ཡང་ངོ་། | མཁའ་འགྲོ་དེ་བཞིན་ལཱ་མ་དང་། །དུམ་སྐྱེས་མ་དང་། གཟུགས་ཅན་མ་ཞེས་བྱའོ། | དཔའ་བོའི་འཁོར་ལོ་ཞེས་པ་ནི། འཁོར་ལོ་གསུམ་དུ་གཏོགས་པའི་དཔའ་བོ་དང་གཉིས་སུ་མེད་པ་དམ་པའི་བདེ་བ་ཉམས་སུ་མྱོང་བས་གནས་སོ་ཞེས་དགོངས་སོ། |

---

1. འབར་འཕྲེང་ གསེར། པེ།
2. ཧཱུྃ་ གསེར། པེ།
3. དཔའ་བོའི་འཁོར་ལོ་ འགྲེལ་པ།
4. དཔའ་བོ་དང་ལྡན་པའི་ སྣེ། ཅོ།

འཁོར་ལོ་གསུམ་དུ་གཏོགས་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་དཔའ་བོ་དང་གཉིས་སུ་མེད་པའི་སྙོམས་པར་འཇུག་པ་ཡོད་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །གཉིས་སུ་མེད་པའི་བདེ་བ་ཞེས་སྦྱར་རོ། ༥ །

ཚོ་ག་ཇི་བཞིན་རྣམ་པ་ཡིས། །
ཁཊྭཱ་རོ་དྷཱ་[1]ཕྱི་རོལ་ནི[2]། །
རང་གི་གཟུགས་སུ་རྣམ་ཞུགས་པ། །
འཁོར་ལོའི་དབུས་སུ་བལྟ་བར་བྱ། ༦ །

དུམ་སྐྱེས་མ་ཡི་[3]ཕྱི་རོལ་སྤྱིན། །ཞེས་པ་ནི་རྒྱབ་ཀྱི་འདབ་མ་ལ་དུམ་སྐྱེས་མ་གནས་པར་བྱའོ། །རང་གི་གཟུགས་ནི་མངོན་ཞེས་པས། །འཁོར་ལོ་དབུས་ནི་བསྟན་པར་བྱ། །ཞེས་པ་ནི། ནེའི་སྒྲ་[4]གཅིག་ནི་ཁྱད་པར་གྱི་དོན་ཏོ། །ནིའི་སྒྲ་གཉིས་པ་ནི་ཉིད་ཀྱི་དོན་ཏོ། །རང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ལས་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པར་ཞི་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་དཀར་པོ་ལ་སོགས་པའི་གཟུགས་སུ་བསྟན་ཅིང་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །དུམ་སྐྱེས་མ་ནི་ཕྱི་རོལ་སྤྱིན། །ཞེས་དགོད་པ་[5]གང་གསུངས་པའི་ཚོ་ག་དེ་འདིར་ཐམས་ཅད་ལས་གཙོ་བོ་ཉིད་དུ་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། །དགུག་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་དེ་རབ་ཏུ་སྦྱར་བར་བྱའོ་ཞེས་ཤེས་པར་བྱའོ། ༦ །

---

1. ཁཊྭཱརོདྷེ་ སྣ། ཁཊྭཱརོདྷེ་ ལྷ།
2. ཕྱི་རོལ་སྤྱིན་ འགྲེལ་པ།
3. དུམ་སྐྱེས་མའི་ གསེར། པེ།
4. ནེའི་ སྣེ། ཅོ།
5. དགོད་པར་ གསེར། པེ།

འདོད་པའི་འཁོར་ལོ་བསྟན་པ་ནི།
དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་རབ་སྦྱིན་བྱེད[1]།
འཁོར་ལོ་འདི་དག་གསལ་བར་ནི།
རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་བྱ།

འདོད་པའི་འཁོར་ལོ་བསྟན་པ་ནི། །དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་རབ་སྦྱིན་བྱེད། ཅེས་པ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོར་བསྟན་པའི་ལྷ་ཚོགས་ནི་དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་རབ་ཏུ་སྟེར་བར་བྱེད་པ་ལ་འདོད་ཅིང་འདུན་པ་ནི་བསྒྲུབ་པའོ། །ལས་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པར་ཞེས་པ་ཇི་སྐད[2]་གསུངས་པ་བཞིན་དུ་ཤེས་པར་བྱ་སྟེ། ལས་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་གཟུགས་ཀྱིས་ཁ་དོག་བཞིན་དུ་བསྒོམས[3]་ལ་ལྷའི་ཞལ་དུ་དགང་བླུགས་སྦྱིན་པར་བྱའོ་ཞེས་པའོ། །སྦྱིན་སྲེག་གི་དབང་དུ་བྱས་པ་ཉིད་ཀྱིས་ལས་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་གཟུགས་དང་མདོག་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། འོན་ཀྱང་གཞན་དུ་ཡང་ངོ་། །དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་རབ་སྒྲུབ་བྱེད། །ཅེས་པའི་གཞུང་ལ་སྒྲུབ་པའི[4]་ཁྱད་པར་བྱས་པའོ།

རིག་པའི་རྒྱ་མཚོའི[5]་ལས་དེ་བཞིན།
མདོར་བསྡུས་ནས་ནི་གསུངས་པ་ཡིན།

---

1. ‘འདོད་པའི་·······རབ་སྦྱིན་བྱེད།’ ཞེས་པའི་ཚིག་རྐང་གཉིས་པོ་འགྲེལ་པར་གསལ་བ་བཞིན་འདིར་བཀོད་པ་ལས་གཞུང་རྩ་བར་ནི་དེ་དག་མ་གསལ།
2. ཞེས་པ་ནི་དེ་སྐད་ གསེར། པེ།
3. བསྒོམ་ གསེར། པེ།
4. བསྒྲུབ་པའི་ གསེར། པེ།
5. རྒྱ་མཚོ་ པེ།

ཡོ་ཉ་གཉིས་མེད་སྦྱོར་བའི་བདག །

འགྲུབ་འགྱུར་འདི་ལ་ཐེ་ཚོམ་མེད། ༨ །

དཔལ་དེ་ཀོ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་ཡོ་ཉ་མོའི་སྦྱིན་སྲེག་དང་ལས་ཀྱི་[1] ཚོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་སུམ་ཅུ་ཙ་བཞི་པའོ།། །།

འཁོར་ལོར་བསྟན་པའི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་[2]ཚོགས་གང་ལས་ཞེས་པ་ལ། རིག་པའི་རྒྱ་མཚོ་[3]ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དཔའ་བོ་ཞེས་པ་ནི་དཔའ་བོ་ནི་རྡོ་རྗེ་འཆང་ངོ་། །ཡོ་ཉ་དང་སྙོམས་པར་ཞུགས་པ་ལ་སྦྱིན་སྲེག་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༨ །

ཡོ་ཉ་དང་གཉིས་སུ་མེད་པར་ངེས་པར་མཆོད་པའི་སྦྱིན་སྲེག་དང་དགུག་པ་དེ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པའི་ལེའུ་ནི་དེ་དེ་བཞིན་[4]ནོ། །སུམ་ཅུ་བཞི་ནི་སུམ་ཅུ་ཙ་བཞིའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་སུམ་ཅུ་ཙ་བཞི་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། །།

*

1. ཡོ་ཉ་དང་གཉིས་མེད་ངེས་པར་མཆོད་པའི་སྦྱིན་སྲེག་དང་གུག་པའི་ འགྲེལ་པ།
2. རྣམས་ཀྱི་ གསེར། པེ།
3. ཤེས་པ་ལ། རིགས་པའི་རྒྱ་མཚོ་ གསེར། པེ།
4. ལེའུ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ གསེར།

གཉིས་མེད་ཀྱི་ལས་དང་དུས་མིན་འཆི་བསླུའི་ཆོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནས་ལས་ཀྱི་རབ་མཆོག་ནི། །
ཇི་བཞིན་རིམ་གྱིས་མཚོན་པ་སྟེ། །
མཆོད་པ་གཉིས་མེད་སྦྱོར་བའི་བདག །
ལས་ནི་སོ་སོར་སྦྱར་བར་བྱ། ༡ །

དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་ལྷའི་བཀོད་པ་བརྗོད་པའི་རྗེས་སུ་ལམ་གྱི་མཆོག་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཤེས་པར་བྱའོ། །དེ་ཡང་ཞི་བ་ལ་སོགས་པའི་ཆོ་གའི་སྔགས་ཀྱིས་བཟླས་པའི་མཚན་ཉིད་འདོད་པའི་དོན་གཙོ་བོར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཇི་བཞིན་རིམ་གྱིས་མཚོན་པ་སྟེ། །ཞེས་པ་ནི་དྲག་པོ་ལ་སོགས་པའི་ལས་ཀྱིས་རིམ་པར་མཚོན་ཅིང་རྟོགས་པའོ། །ཇི་ལྟར་སྔགས་བཟླས་པར་བྱ་བ་[1]ཞེས་པ་མཆོད་པའི་བྱ་བ་ཇི་ལྟ་བུར་གྱུར་པ་ནི་གཉིས་སུ་མེད་ཅིང་དབྱེར་མེད་པའི་རྣལ་འབྱོར་ལས་སྙོམས་པར་ཞུགས་པའི་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་དང་འཁྱུད་པ་དེའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་རང་བཞིན་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་དུ་སོ་སོར་མཆོད་པའི་ལས་སུ་ལེགས་པར་སྦྱར་རོ། ༡ །

གང་དག་རབ་གྲུབ་བྱེད་པའི་སྔགས། །
དེ་ཡི་[2]དབྱེ་བ་རིམ་བཞིན་བཤད། །

---

1. བཟླས་པར་བྱ་ གསེར། པེ།
2. དེའི་ པེ།

ཁ་དོག་ཕོ་ཉ་སོགས་སྔགས་གང་། |
མདའ་ཡི་ཤུགས་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་འཁོར། ༢ |

ཕན་ཚུན་མདུད་རྒྱུད་དཔའ་བོ་ནི། |
ཡུལ་ཉིད་ཀྱིས་ནི་ཕྱེ་བའོ[1]། |
ས་བོན་ཕྲེང་བས་དེ་ནས་གཟུང་[2]། |
ཧཱུྃ་ནི་མཐའ་རུ་གནས་པ་ཡིན། ༣ |

བསྒྲུབ་བྱ་[3]འགོག་པར་གྱུར་པ་ནི། |
གོམ་པ་གཅིག་ཀྱང་མི་འགྲོའོ། |
ཁ་སྒྱུར་སྒྱུར་བར་གྱུར་པ་དང་། |
དོ་རྗེ་ལུ་གུ་[4]རྒྱུད་བཅིངས་པས། ༤ |

རབ་ཏུ་གྲགས་པའི་སྔགས་ནི་གང་། །གོ་རིམ་[5]ཇི་བཞིན་ཐ་དད་དེ། །ཞེས་པ་ནི་སོ་སོ་སོ་སོར་དངོས་གྲུབ་ནུས་པའི་ངང་ཚུལ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ཏེ་རྩ་བའི་སྔགས་ལ་སོགས་པའོ། །སོ་སོ་སོ་སོར་ནི་ཞི་བ་ལ་སོགས་པའི་ལས་ལ་ལེཏ་པར་སྒྱུར་བ་དེ་ནི་ཐ་དད་དུ་བཟླ་བར་བྱའོ། །རིམ་པ་དང་ནི་རིམ་པ་མ་ཡིན་པ་ནི་ཐ་དད་པ་སྟེ།

1. འཇུག་པ་ཡིས་ནི་ཕྱེ་བ་ཉིད། འགྲེལ་པ་དང་རྒྱ་དཔེའི་རྩ་བ།
2. དེ་ནས་བཟུང་ སྣ། ཞྭ།
3. སྒྲུབ་བྱ་ པེ།
4. དོ་རྗེའི་ལུ་གུ་ སྣ། ཞྭ།
5. གོ་རིམས་ སྡེ། ཅོ།

ཡི་གེའི་ རྟགས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཕོ་ཉ་དང་པོར་གྱུར་པ་གང་ཡིན་པའི་དཔའ་བོ་རྣམས་ཏེ། དེ་ནི་ཕོ་ཉ་ལ་སོགས་པ་བརྟགས་ཤིང་བཀུར་བ་སྟེ། ཐོད་པའི་དུམ་བུ་ལ་སོགས་པའི་རྟགས་དང་ཕོ་ཉ་ལ་སོགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ཏེ། དེའི་རྟགས་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ཁྲང་པ་བརྒྱད་པ་ལ་སོགས་པའི་རྟགས་སོ། །དེས་རྟགས་དེ་བརླས་པར་བྱའོ་ཞེས་ཤེས་པར་བྱའོ། །ཇི་ལྟར་ཞེས་པ་ལ། མདའི་ཤུགས་བཞིན་ཡོངས་སུ་འཁོར། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། མདའི་ཤུགས་ནི་སྦྲའི་གསུམ་པ་ཕྱིས་པའོ། །མདའི་ཤུགས་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་འཁོར་བའི་རྟགས་དེ་ཉིད་ཕན་ཚུན་སྦྱར་བ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ནི་ནི་ཁྱད་པར་རོ། །ཞི་བའི་ཚིག་ལས་ལྡོད་པ་སྟེ་ལག་པའི་མཐིལ་དུ་བསྐྲིམས་བཞིན་པ་ཐག་པ་བཞིན་དུ་ཕན་ཚུན་གྱི་གནས་སུ་བྱས་ཤིང་ཡང་དང་ཡང་དུ་གཏོགས་པའི་ཡི་གེ་གཞན་གང་ཡིན་པ་དེ་ཕན་ཚན་དུ་བྱས་པ་ནི་རྟགས་ཏེ་ཞེས་བྱ་སྟེ་མདོར་བསྟུས་པའི་དོན་ཏོ། །འཇུག་པ་ཡིས་ནི་ཕྱེ་བ་ཉིད། །ཅེས་པ་ནི་རང་གི་ཁའི་ནང་ནས་རབ་ཏུ་ཞུགས་ཏེ་ཡང་རྡོ་རྗེའི་ལམ་ནས་ཕྱིར་ཕྱུང་སྟེ། པདྨའི་ལམ་ནས་ལྷ་མོའི་སྙིང་གར་རབ་ཏུ་ཞུགས་ཏེ། དེ་དེའི་ཞལ་ནས་བྱུང་སྟེ་དེ་ནས་ཡང་རང་གི་ཞལ་དུ་རབ་ཏུ་ཞུགས་པ་ཞེས་བྱའོ། །ཞུགས་པའི་སྦྱོར་བའི་དོན་ནི། ངག་པོའི་ལས་[1]རང་གི་ཁ་ནས་ལྷ་མོའི་ཁར་ཞུགས་ཏེ། དེ་ནས་ཡང་པདྨའི་ནང་ནས་ཕྱིར་ཕྱུང་སྟེ། རྡོ་རྗེར་[2]ཞུགས་ནས་རང་གི་ཁ་ནས་ལྷ་མོའི་ཁ་རུ་ཞེས་པ་ནི་རིམ་པའོ།། དེ་ལྟ་བུའི་ཚིག་རྒྱས་པར་བྱ་བ་ནི། ས་བོན་ཕྲེང་བ་དེ་ནས་འཛིན། །ཞེས་གསུངས་ཏེ།

---

1. ལས་ལ་ གསེར། པེ།
2. རྡོ་རྗེ་ སྣེ། ཅོ།

ཕན་ཚུན་དུ་ཡི་གེ་དམར་པོར་སྔགས་ཀྱི་ཕྲེང་བར་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །ཞེས་ཤེས་པར་བྱའོ། །ཧཱུྃ་ནི་མཐའ་རུ་གནས་པར་བྱ། །ཞེས་པ་ནི་ཧཱུྃ་བསྒྲུབ་བྱའི་མཐའ་རུ་རབ་ཏུ་གནས་པ་གང་ཡིན་པ་[1]དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །ཧཱུྃ་ལྷ་སྦྱིན་[2]སོད་ཅིག་ཧཱུྃ་ཞེས་པ་ནི་བཟླས་པའི་སྔགས་ཀྱི་མཐར་[3]ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ྄ཕཊ྄་དང་སྔར་གྱི་གནས་སུ་ཡང་སྦྱིལ་བར་བྱའོ། ། དེའི་ཕྱིར་བསྒྲུབ་བྱ་འགོག་པར་གྱུར་ན་ནི། གོམ་པ་གཅིག་ཀྱང་མི་འདའོ། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། ནི་ནི་ཉེ་བར་གཟུང་བའོ། །ཧཱུྃ་ཡིག་དག་ནི་འགོག་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ། །ཁ་སྦྱར་སྦྱར་བར་[4]གྱུར་པ་དང་། །ཞེས་པ་ནི་ཞི་བའི་ཚིག་ལ་ནི་ཨོཾ་ལྷ་སྦྱིན་[5]སྭཱ་ཧཱ། ཨོཾ་ཞེས་སྔོན་བཞིན་དུ་སྦྱིལ་བའོ། །ཁ་སྦྱོར་ནི་སྦྱིལ་བ་སྟེ་ཁ་སྦྱོར་གྱི་ངོ་བོ་ཉིད་དོ། །སྔོན་དང་ཕྱི་མ་དག་ལ་ཨོཾ་གྱིས་དགག་པའོ། །རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ། ཧཱུྃ་ནི་མཐའ་རུ་གནས་པ་ཡིན། །ཞེས་པས་རྒྱས་པར་བསྟན་ཏོ། ༣-༩ །

རྡོ་རྗེ་དབྱེ་བ་ཉིད་དང་ནི། །
རྡོ་རྗེ་སྒྲོ་ཚུན་བཞིན་བསྐོར་ཏེ[6]། །
ལྕགས་ཀྱུ་ཉིད་ཀྱིས་དགུག་པ་དང་། །
གདུན་ཤིང་གིས་བསྐྱོད་དེ་བཞིན་ཏེ། ༥ །

---

1. གང་ཡིན་ གསེར། པེ།
2. ཧཱུྃ་ལྷས་བྱིན་ གསེར། པེ།
3. མཐའ་ པེ། གསེར།
4. ཁ་སྦྱར་སྦྱར་བ་ གསེར།
5. ལྷས་བྱིན་ གསེར། པེ།
6. དེ་བཞིན་བུང་བ་ལྟར་འཁོར་བྱ། བོད་དཔེའི་རྩ་བ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་དང་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

དྲག་པོའི་ལས་ལ་རྡོ་རྗེ་ནི་ཧཱུྃ་གི་མིང་སྟེ། དེས་དབྱེ་བར་བྱའོ། །བསྒྲུབ་བྱའི་ཐོག་མ་དང་ཐ་མ་དག་ནི་ཧཱུྃ་ཕྱིན་པ་ན་དབྱེ་བའོ། །ཇི་ལྟ་བུར་གྱུར་པ་ཞེས་པ་ལ། རྡོ་རྗེ་ལུ་ཀུ་རྒྱུད་བཅིངས་པས། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། རྡོ་རྗེའི་ལྕགས་སྒྲོག་[1]བཅིངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །རྡོ་རྗེ་སྒྲོ་ཆུན་བཞིན་བསྐོར་ཏེ། །ཞེས་པ་ནི་བསྐོར་བ་ནི་སྔགས་ཞེས་ཤེས་པར་བྱའོ། །ཤེས་རབ་དང་ཐབས་ཀྱི་ཁ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་སུ་སྔགས་རབ་ཏུ་ཞུགས་ཤིང་ཕྱིར་བྱུང་བ་དག་ནི་སྦྱར་བར་བསྟན་པའོ། །དྲག་པོའི་ཚིག་ལ་རྡོ་རྗེ་ནག་པོའི་ཕྱག་ཅན་[2]གྱི་དུམ་སྐྱེས་མའོ། །ཞི་བ་ལ་དཀར་པོ་གཡོན་པ་ན་ཁཊྭཱ་ག་བསྣམས་པའོ། །འགུགས་པ་ལ་ནི་ལྕགས་ཀྱུ་ཉིད། །ཅེས་པ་ནི་གང་གི་ཚེ་འགུགས་པ་དེའི་ཚེ་ཛཿ། ལྷ་སྦྱིན་ཁུགས་ཤིག་[3]ཛཿ། ཞེས་སྤེལ་བ་ནི་སྔ་མ་བཞིན་དུ་ལྕགས་ཀྱུའི་སྒྲ་ནི་ཛཿའོ། །རྩ་བའི་སྔགས་བཟླས་པས་[4]ལྕགས་ཀྱུའི་ཕྱག་ཅན་[5]གྱི་དུམ་སྐྱེས་མ་དམར་མོས་བསྒྲུབ་བྱའི་སྙིང་ཁུག་སྟེ་འགུགས་སོ། །བསྐྱོད་པ་[6]ལ་དེ་བཞིན་དུ་གདུན་ཤིང་ངོ་ཞེས་པ་ནི་དཔུང་ལ་སོགས་པ་བསྐྱོད་པ་ན་ཧཱུྃ་ལྷ་སྦྱིན་[7]ལ་སོགས་པ་བསྐྱོད་ཅིག་ཧཱུྃ་ཞེས་སྤེལ་ལོ། །དུམ་སྐྱེས་མ་ཡང་རང་གི་མདོག་དང་ལྡན་པ་གདུན་ཤིང་ཕྱག་ན་བསྣམས་པ་ཞེས་པ་ནི་དེ་བཞིན་གྱི་སྒྲའི་དོན་ཏོ། ༥ །

---

1. ལྕགས་སྒྲོགས་ གསེར།
2. ཕྱག་རྒྱ་ཅན་ སྡེ། ཅོ། ཕག་ཅན་ གསེར།
3. ལྷས་བྱིན་ཁུག་ཅིག་ གསེར། པེ།
4. སྔགས་ཀྱི་ལེགས་པའི་འོད་ཀྱི་（མནྟྲཔྲསནྣཏཡཱ） རྒྱ་དཔེར་ལྷག
5. ཕྱག་རྒྱ་ཅན་ སྡེ། ཅོ།
6. སྒྲོད་པ་ སྡེ། ཅོ།
7. ལྷས་བྱིན་ གསེར། པེ།

རྡོ་རྗེ་ཉིད་ཀྱིས་འདེབས་པར་བཤད། །
དབུག་ལ་མདས་ནི་སྦྱར་བྱ་སྟེ། །
དུས་མིན་འཆི་བར་བསླུ་བ་[1]ལ། །
ཡན་ལག་ཁཊྭཱཾག་དང་[2]སྦྱར། ༦ །
ཐོད་པའི་མཚོད་ཡོན་སྣོད་དུ་ནི། །
ཞལ་དུ་མཚོན་ཆ་ངེས་པར་སྦྱར། ༧ །

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་གཉིས་སུ་མེད་པའི་ལས་དང་དུས་མ་ཡིན་པར་འཆི་བ་བསླུ་བའི་ཚོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་སུམ་ཅུ་རྩ་ལྔ་[3]པའོ།། །།

བཟའ་བ་བཟའ་བ་ལ་རྡོ་རྗེ་ཉིད་ནི་[4]དུམ་སྐྱེས་མ་རང་གི་གཟུགས་འཆང་བའོ། །ཕཊ྄་ལྷ་སྦྱིན་[5]ཟླ་ཤིག་ཕཊ྄་ཅེས་པ་ནི་སྦྱིལ་བའོ། །དབུག་པར་བྱ་བ་ལ་འབིགས་པ་ནི་མདའི་ཕྱུག་ཅན་[6]གྱི་དུམ་སྐྱེས་མའོ། །ཕཊ྄་ལྷ་སྦྱིན་[7]ཕྱུག་ཅིག་ཕཊ྄་ཅེས་སྦྱིལ་ལོ། །དུས་མིན་འཆི་ལས་རྒྱལ་ཉིད་ཡང་། །ཡན་ལག་ཁཊྭཱཾག་དང་སྦྱར། །ཞེས་པ་ནི། དུས་

1. འཆི་བ་བླུ་བ་ སྡེ། སྣ། ལྷ།
2. ཁཊྭཱཾག་དང་ པེ། ཁཊྭཱཾ་དག་དང་ སྣ།
3. འཆི་བ་བླུ་བའི་.........སུམ་ཅུ་རྩ་ལྔ་ སྡེ། ལྷ། འཆི་བ་བསླུ་བའི་.........སུམ་བཅུ་རྩ་ལྔ་ པེ།
4. རྡོ་རྗེ་ཉིད་དུ་ གསེར།
5. ལྷ་བྱིན་ གསེར། པེ།
6. འདིའི་ཕྱུག་ཅན་ གསེར། པེ། མདའི་ཕྱུག་རྒྱུ་ཅན་ སྡེ། ཅོ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་བཞིན་བཀོད་ཡོད།
7. ལྷས་བྱིན་ གསེར། པེ།

མ་ཡིན་པར་འཆི་བ་ལས་[1]གཡོན་དུ་ཁ་ཊྭཾ་ག་བསྣམས་པ་ནི་[2]དུམ་སྐྱེས་མའོ། །ཧཱུྃ་དཀར་པོ་ལས་བདུད་རྩིའི་རྒྱུན་སྟོང་འཛག་པའོ། །ཧཱུྃ་ལྷ་སྦྱིན་[3]སོས་ཅིག་[4]ཧཱུྃ་ཞེས་པ་ནི་སྤྲུལ་པའོ། །ཐམས་ཅད་དུ་ལས་ལ་ལེགས་པའི་འོད་དང་བཅས་པའོ། །དུམ་སྐྱེས་མའི་ཞལ་དུ་ཐོད་པའི་མཆོད་ཡོན་སྦྱིན་པ་ནི། ཐོད་པའི་མཆོད་ཡོན་ཞལ་དུ་ནི། །ཞེས་གསུངས་སོ། །མཚོན་ཆ་ངེས་པར་སྦྱར་ཞེས་པ་ནི་མཆོད་ཡོན་སྦྱིན་པའི་རྗེས་ལ་ལྕགས་ཀྱུ་ལ་སོགས་པའི་མཚོན་ཆས་བསྒྲུབ་བྱའི་ཡན་ལག་ལ་ངེས་པར་སྦྱར་བར་བྱ་ཞིང་དུམ་སྐྱེས་མ་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །ཞེས་དགོངས་སོ། ༦_༧ །

གཉིས་མེད་ཀྱི་ལས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྙོམས་པར་འཇུག་པའོ། །ཞི་བ་ལ་སོགས་དང་དུས་སུ་འཆི་བ་[5]ཡང་བཟློག་པ་[6]བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཡིན་ལ་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་[7]དེ་དེ་བཞིན་ནོ། །སུམ་ཅུ་ལྔ་ནི་སུམ་ཅུ་རྩ་ལྔའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་སུམ་ཅུ་རྩ་ལྔ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། །།

*

---

1. འཆི་བ་ལ་ པེ།
2. བསྣམས་པའི་ གསེར། པེ།
3. ཧཱུྃ་ལ་སྦྱིན་ གསེར། པེ།
4. སོད་ཅིག་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་བཞིན་བཀོད་ཡོད།
5. དུས་སུ་འཚོ་བ་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་པ་ཡིན།
6. བཟློག་པར་ གསེར།
7. དེ་ཡང་ཡིན་ལ་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པ་ གསེར། དེ་ཡང་ཡིན་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་ སྣར། ཅོ།

དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་མཆོད་པ་དང་ལས་ཀྱི་ཚོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནས་ཕྱག་རྒྱའི་མཆོད་ཆེན་དང་། །
སྔགས་ཀྱི་དགོད་པ་རབ་ཏུ་གྲགས། །
སྒྱུར་དུ་དངོས་གྲུབ་བྱེད་པར་ནི། །
ཕྱག་རྒྱའི་མཆོད་འདི་ཐེ་ཚོམ་མེད། ༡ །

དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་གཉིས་སུ་མེད་པའི་ལས་ཀྱི་རྗེས་སུའོ། །ཕྱག་རྒྱ་ནི་ཕྱི་རོལ་གྱི་ཕྱག་རྒྱ་ལ་མཆོད་པ་ཡིན་ནོ། །ཛེ་ལྷ་བུར་[1]ཞེས་པ་ལ་སྔགས་ཀྱི་ཡི་གེ་གསུམ་དགོད་པར་རབ་ཏུ་གྲགས་སོ། །སྔགས་ཀྱི་དགོད་པ་རབ་ཏུ་གྲགས་ནས་ཕྱག་རྒྱ་དེ་མཆོད་པའོ། །ཡི་གེ་གསུམ་པོའི་སྔགས་ཀྱང་ནི། །སྒྱུར་དུ་དངོས་གྲུབ་བྱེད་པའི་ཕྱིར། །ཞེས་པ་ནི་ཕྱིར་ནི་གང་གི་ཕྱིར་རོ། ༡ །

མཚན་མ་གཉིས་ལ་སྔགས་སྦྱར་ཏེ། །
མཁའ་འགྲོ་དཔའ་བོ་གཉིས་མེད་པ། །
སྙིང་པོ་རྣམས་ཀྱིས་དེ་བཞིན་དུ། །
སྔགས་པས་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སྦྱར། ༢ །

བློ་ལྡན་མཁའ་འགྲོ་མ་བསྒྲུབ་བྱ། །
དག་པའི་ལུས་ནི་རང་འདོད་པ[2]། །

1. ཛེ་ལྷ་བུ་ གསེར། པེ།
2. རབ་འདོད་པ་ པེ། ཅི་འདོད་པ་ འགྲེལ་པ།

དཔའ་བོ་མཆོད་པ་རྣམས་བྱས་ནས། །
ལས་ནི་འབད་པ་ཉིད་ཀྱིས་བྱ། ༣ །

ཐུགས་ཀྱི་སྦྱོར་བ་ནི་ཐུགས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཐུགས་[1]ཀྱི་ཡི་གེ་གསུམ་གྱི་ཐུགས་སྔར་ནས་རྣལ་འབྱོར་མ་ལ་བསྒྲུབ་པོ་ཞེས་སྔར་རོ། །རྟགས་གཉིས་ལ་ཞེས་པ་ནི་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་གཉིས་ཀྱི་མཚན་མའོ། །དེ་ནི། མཁའ་འགྲོ་དཔའ་བོ་གཉིས་སུ་མེད། །ཅེས་གསུངས་ཏེ། མཁའ་འགྲོ་མ་ཉིད་མཁའ་འགྲོ་སྟེ། དཔའ་བོ་དང་ཡོད་པ་གང་ཡིན་པ་ནི་གཉིས་སུ་མེད་པ་སྟེ། དེའི་ཧེ་ཏ་ཞེས་དགོངས་སོ། །ཧཱུྃ་ལས་རྡོ་རྗེ་ཨོཾ་ལས་པདྨ་རྡོ་རྗེའི་ནོར་བུ་དང་པདྨའི་གེ་སར་དག་ཨཱཿལས་བསྐྱེད་ལ་སྐུ་ལ་སོགས་པ་ལ་ཡི་གེ་གསུམ་[2]བཀོད་དེ་རྣལ་འབྱོར་མ་ལ་བསྒྲུབ་པའོ། །དག་པའི་ལུས་ནི་ཅི་འདོད་པ། །ཞེས་པ་ནི་འདིར་དག་པའི་ལུས་ནི་འདིར་གཉིས་སུ་མེད་པའི་སྙོམས་འཇུག་གི་མཆོད་པར་བརྗོད་དོ། །དཔའ་བོ་མཆོད་པ་ནི་[3]ཤ་དང་ཤ་ལ་སོགས་པ་ལ་བྱ་ཞིང་གཉིས་སུ་མེད་པར་ཤེས་པར་བྱ་ལ[4]། ཞི་བ་ལ་སོགས་པའི་ལས་བྱ་བ་ནི་འབད་པས་ཡི་དམ་དུ་བྱའོ། ༢-༣ །

རྣམ་དབྱེ་རང་དགས་ཐུགས་པ་ནི། །
ཕྱིན་ཅི་ལོག་ཏུ་ངེས་པར་སྦྱར། །

---

1. ཐུགས་ནི་ཐུགས་ གསེར། པེ།
2. ཡི་ཤེས་གསུམ་ སྣེ། ཅོ།
3. མཆོད་པ་ན་ སྣེ། ཅོ།
4. གཉིས་སུ་མེད་པར་ཤེས་པར་བྱས་ལ་ པེ། གཉིས་ཀར་ཤེས་པར་བྱ་ལ་ རྒྱ་དཔེ།

ཚར་གཅོད་ཕན་འདོགས་དོན་རྣམས་ལ། |
ལས་ཀྱི་དངོས་པོར་རྣམ་པར་སྒོམ། ༤ |

བྱེ་བྲག་ཏུ་ཕྱེ་ཞིང་སོ་སོར་བྱས་ན་ཞི་བ་ལ་སོགས་པའི་ལས་ནི་ཕྱིན་ཅི་ལོག་ཏུ་ཕན་ཚུན་ཐ་དད་པར་སྒྱུར་བར་བྱའོ། །བསྒྲུབ་བྱ་དེ་ཉིད་ཀྱི་དོན་ནི། ཚར་གཅོད་པ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཚར་གཅོད་པ་དང་རྗེས་སུ་བཟུང་[1]བའི་དོན་གྱི་དགོས་པ་དེ་ལ་གནས་པ་ནི་སྒྲའི་རྟགས་ཀྱི་བདུན་པའོ། ༤ |

དེ་ཉིད་དབྱེ་བར་ཕྱེ་ནས་ནི། |
རྩ་ཡི་ལམ་[2]དུ་སྒྱུར་བར་བྱ། |
རབ་ཏུ་སྒྲུབ་པའི་སྦྱོར་དོན་[3]ལ། |
ཕྱི་རོལ་དེ་བཞིན་ནང་དེ་བཞིན། ༥ |

འདི་ཡིས་སྒྱུར་དུ་ལྷ་དང་ནི། |
ལྷ་མིན་མིར་བཅས་བསྒྲུབ་པར་བྱ[4]། ༦ |

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་མཆོད་པ་དང་ལས་ཀྱི་ཚོ་གའི་[5]ལེའུ་སྟེ་སུམ་ཅུ་རྩ་དྲུག་[6]པའོ།། ||

1. རྗེས་སུ་གཟུང་ གསེར། པེ།
2. རྩའི་ལམ་ པེ།
3. སྦྱར་དོན་ པེ།
4. སྒྲུབ་པར་བྱ་ པེ།
5. རྒྱ་དཔེའི་རྩ་བ་དང་འགྲེལ་པར་‘ དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་མཆོད་པ་དང་དགུག་པའི་ཚོ་གའི་’ཞེས་གསལ།
6. སུམ་བཅུ་རྩ་དྲུག་ པེ།

ཕན་ཚུན་སྦྱར་ཞེས་མདོར་བསྟན་པ་སྟེ། རྒྱས་པར་བཤད་པ་ནི། རྣམ་དབྱེ་ཞེས་[1]བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། རྩའི་ལམ་རྣམས་ནས་པདྨའི་ལམ་རྣམས་སུ་སྤྱར་བསྟན་པའི་རིམ་པས་སྦྱར་བའི་སྤྱགས་ཡིན་ཏེ། དེ་དག་གི་གནས་སྐབས་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཉིད་དབྱེ་བས་ལས་ཀྱི་ནི། །ཚིག་གི་དབྱེ་བ་རབ་བསྒྲུབ་བྱ། །སྦྱོར་བའི་དོན་རྣམས་ལ་ཞེས་པ་ནི་བརྗོད་པའི་དོན་ཞི་བ་ལ་སོགས་པ་རབ་ཏུ་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ། །འདིས་འགྲུབ་པས་གཞན་དུ་དངོས་གྲུབ་བརྩམས་པ་ཐམས་ཅད་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ[2]། ༥-༦ །

དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་ལས་ཀྱི་ཚོགས་རྣམས་གྲུབ་པར་བྱ་བའི་དོན་དུ་མཆོད་པ་དང་། དེ་ཡིས་དགུག་པ་ངེས་པར་བརྗོད་པ་[3]གང་ཡིན་པ་དེ་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་[4]དེ་དེ་བཞིན་ནོ།། སུམ་ཅུ་དྲུག་པ་ནི་སུམ་ཅུ་རྩ་དྲུག་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་སུམ་ཅུ་རྩ་དྲུག་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། །།

✱

1. རྣམ་དབྱེ་མེད་ཅེས་ སྡེ། ཅོ།
2. བསྒྲུབ་པར་མི་བྱའོ་ རྒྱ་དཔེ།
3. ངེས་པར་དེས་བརྗོད་པ་ པེ། གསེར།
4. ཡིན་པ་ སྡེ། ཅོ།

ནང་གི་བདག་ཉིད་ཀྱི་དབང་དུ་བྱ་བའི་ཚོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནས་གཞན་ཡང་བཤད་བྱ་བ། །
གཟུགས་ནི་གནོན་པའི་ཚིག་སྟེ། །
ཕན་ཚུན་སྦྱར་བའི་གསང་སྔགས་ནི། །
མཁའ་འགྲོ་མ་དང་གཅིག་ཏུ་སྦྱར། ༡ །

ད་ནི་དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ནི་དབང་དུ་བྱེད་པ་བརྗོད་པ་[1]རབ་ཏུ་རྟོགས་སྟེ། བཟླས་པ་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་ལས་ཀྱི་རྗེས་ཡིན་པས་ན་དེ་ནས་ཀྱི་སྒྲའོ། །གཞན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐབས་སོ། །ཡང་དག་པ་ནི་སོ་སོ་སོ་སོར་བྱེ་བྲག་ཏུ་བྱའོ། །བཤད་པ་ནི་ཡང་དག་པར་རབ་ཏུ་བཤད་པའོ། །གཟུགས་ནི་ལུས་ཏེ། དེ་བཞིན་གནོན་པ་ནི་སེམས་ཅན་ཏེ། དེའི་སྒྲུབ་ཐབས་ཞེས་པ་ནི་[2]གཟུགས་གནོན་པའི་སྒྲུབ་ཐབས་ཏེ་ཐབས་ཤེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་ནི། ཕན་ཚུན་བསྒྲིལ་པའི་གསང་སྔགས་ནི། །མཁའ་འགྲོ་མ་དང་གཅིག་ཏུ་སྦྱར། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། རྩ་བའི་སྔགས་དང་རིག་པའི་[3]རྒྱལ་པོ་དང་མཁའ་འགྲོ་མའི་སྔགས་གསུམ་གཅིག་ཏུ་བྱས་པ་སྔོན་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། ༡ །

བཟའ་བ་ཟློས་མེད་དེ་ནས་ནི། །
བཟླས་པའི་མཐར་ནི་སྐྱུག་པར་བྱ། །

---

1. བརྗོད་པར་ གསེར།
2. ཤེས་པ་ནི་ སྡེ། ཅོ།
3. རིགས་པའི་ གསེར།

མཚན་མོ་བདུན་ནི་རྫོགས་པ་དང་། །
བཟའ་དང་བཏུང་བ་དག་ལ་སྦྱར། ༢ །

དེ་ཉིད་ནི་ཟློས་ན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །བཟླས་པའི་མཐར་ནི་སྐྱུག་པར་བྱ། །ཞེས་པ་ནི་ཟློས་ནས་སྐྱུགས་པ་དེ་བཀུས་ལ་ཡང་དེ་ཟློས་ན་སྐྱུག་པར་བྱའོ། །ག་པུར་རྫེན་པ་[1]དང་བསྲེས་ནས་སྤགས་གསུམ་པོ་ཉུབ་མོ་བདུན་དུ་ཐུན་མཚམས་གསུམ་དུ་བཟླས་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་བཟའ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་བཏབ་སྟེ་བྱིན་ན་ཇི་ལྟར་གསུངས་པ་བཞིན་དུ་འགྱུར་རོ། ༢ །

འདི་ཡིས་ཇི་སྲིད་འཚོ་ཡི་[2]བར། །
དབང་དུ་འགྲོ་བར་ཐེ་ཚོམ་[3]མེད། །
སེར་སྐྱའི་མར་ནི་འབྱུངས་ནས་སུ། །
བཟླས་པའི་མཐར་ནི་སྐྱུག་པར་བྱ། ༣ །
དེ་ཡིས་རང་གི་གདོང་བསྐུས་ན[4]། །
གལ་ཏེ་ཧག་ཏུ་ཁྲིས་གྱུར་པ། །
མཐོང་བ་ཙམ་གྱིས་དབང་དུ་འགྱུར། ༤ །

བ་སེར་སྐྱའི་མར་ནི་སེར་སྐྱའི་མར་ཏེ། ལན་བདུན་བཟླས་ནས་འབྱུངས་ནས་

1. བརྫེན་པ་ གསེར། པེ།
2. ཇི་སྲིད་འཚོའི་ པེ། སྣ།
3. ཐེ་ཙོམ་ པེ།
4. གདོང་སྐུས་ན་ པེ། གདོང་བསྐུས་ནས་ སྣ། ཞོ།

སྐྱུགས་[1]པར་བྱའོ། །དེ་བདག་ཉིད་ཀྱི་གདོང་ལ་བྲུག་པར་བྱའོ། །དེ་ཞེས་པ་ནི་བྲུག་པའི་རྗེས་སུའོ། ༣-༤ །

ཏིལ་མར་སྣ་ལྔ་[2]བཏགས་པ་དང་། |
ལྷན་པས་ལུས་ནི་བསྐུས་གྱུར་ཅིང་། |
སྐུམ་ཁྲུར་སྡིགས་པས་བྱས་ནས་ནི། |
བཟའ་བ་ལ་ནི་རབ་ཏུ་སྦྱར། ༥ |

བསྐུས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་བསྐུས་པའི་ཡན་ལག་མར་དེ་དེ་ཡིས་བླང་བའོ།། ནི་ནི་སྦྱོར་བ་བསྡུ་བའོ། །སྣ་ལྔ་ཁྲུར་བ་ཡང་དག་ལྡན། །ཞེས་པ་ནི་སྣ་ལྔའི་ཁྲུར་བའི་རང་བཞིན་གྱི་སྦྱོང་བུ་བྱས་ལ་མར་དེ་ཡིས་བཙོས་ཏེ། དེ་བཟའ་བ་ཉིད་དུ་སྦྱིན་པར་བྱའོ། །ཉི་ནི་ཉིད་ཀྱི་དོན་ཏོ། །ཐམས་ཅད་ཉིད་དུ་སྡིགས་ཀྱི་བཟླས་པ་གོ་བར་བྱའོ། ༥ |

གལ་ཏེ་ལས་འདི་མ་བཏང་ན། |
ཇི་སྲིད་འཚོ་བར་རྟག་དབང་འགྱུར། |
ཏིལ་ནག་དག་ནི་ཟོས་ནས་སུ། |
སྐྱི་ཚེར་བཅས་པ་སྐྱུགས་པ་དང་། ༦ |

རུ་ཏྲ་བཤང་བ་དང་ལྡན་པ། |
ལག་སྐྱེས་[3]ལྟོ་བའི་སྲིན་བུ་ནི། |

1. སྐྱུག་ གསེར། པེ།
2. ས་ལུ་ པེ། སྣ།
3. བོད་འགྱུར་རྩ་བར་'ལས་སྐྱེས་'ཞེས་གསལ་ཡང་འགྲེལ་པར་གསལ་བ་ལྟར་གོང་དུ་བཀོད་པ་ཡིན།

རང་གི་ཁྲག་དང་བཏགས་ནས་ནི།
རང་གི་ཁུ་བ་ཉིད་དང་སྦྱར། ༥
བཟའ་བཏུང་མིག་སྨན་གོས་ལ་ནི།
བྱུག་པ་ཉིད་དུ་རབ་ཏུ་སྦྱར།
འདི་ཡིས་ཇི་སྲིད་འཚོ་ཡི་བར།
དབང་དུ་འགྱུར་བར་གདོན་མི་ཟ། ༨

གལ་ཏེ་ལས་ནི་མ་བཏང་ན། །ཞེས་པ་ནི་གལ་ཏེ་གྲོལ་བར་མི་འགྱུར་རོ།

ཏིལ་ནག་དག་ནི་ཟློས་ནས་སུ།
སྐྱེ་ཚེར་བཅས་པ་སྐྱུགས་པ་དང་།
རུ་ཧྲ་དང་ནི་བཤང་ལམ་བྱུང་།
ལག་སྐྱེས་ལྟོ་བའི་སྲིན་བུ་དང་།

ཞེས་པ་ནི་དང་ནི་རབ་ཏུ་སྦྱོར་བ་བསྟུ་བའོ། །ནི་ནི་ཁྱད་པར་རོ། །ཏིལ་ནག་པོ་སྐྱེ་ཚེ་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་ཟློས་ནས་སྐྱུག་པར་བྱ་བ་དང་། །རུ་ཧྲ་ལན་བདུན་དུ་བཤང་བའི་ལམ་ནས་ཕྱིར་དབྱུང་བར་བྱའོ། །ལག་སྐྱེས་ནི་སེན་མོའོ། །ལྟོ་བའི་སྲིན་བུ་ནི་ལྟོ་བ་[1]ནས་ཕྱིར་བྱུང་བའི་འབུའོ། །བཟའ་བ་ནི་ཟ་བར་བྱའོ། །བྱུག་པ་ནི་ལུས་ལའོ། ༧-༨

བ་ལང་ཤ་སྲེག་སྤྲིན་སྲེག་[2]ནི།
ཁྲག་གིས་བསྐུས་ན་[3]ལྷ་རྣམས་ནི།

1. ལྟེ་བའི་སྲིན་བུ་ནི་ལྟེ་བ་ པེ། ལྟོ་བའི་སྲིན་བུ་ནི་ལྟེ་བ་ ཅོ།
2. ཤ་བསྲེག་སྤྲིན་བསྲེག་ པེ།
3. སྐུས་ན་ པེ།

དེ་མོད་དབང་དུ་འགྱུར་བའམ། |
གལ་ཏེ་མ་འོངས་འཆི་བར་འགྱུར། (|

བ་ལང་གི་ཤའི་སྦྱིན་སྲེག་ནི་ཁྲག་གིས་[1]བསྐུས་ཞེས་པ་ནི། བ་ལང་གི་ཤའི་སྦྱིན་སྲེག་ནི། སྦྱིན་སྲེག་གི་དོན་དུ་དེའི་ཁྲག་གིས་བསྐུས་པ་སྟེ། ཕྱུགས་ཀྱི་ཁྲག་གིས་བསྐུས་པའི་ཕྱུགས་ཀྱི་ཤས་སྦྱིན་སྲེག་བྱས་ན་བསྒྲུབ་བྱ་ལྷའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དབང་དུ་འགྱུར་རོ། (|

བདག་ཉིད་དེ་ཡི་[2]མདུན་དུ་ནི། |
བསྒོམས་ནས་མཁས་པས་སྦྱིན་སྲེག་[3]བྱ། |
སྦྱིན་སྲེག་[4]མཐར་ནི་གཏོར་མ་བྱ། |
ཁམས་གསུམ་སྐད་ཅིག་གིས་འགུགས་པ། |
མཚན་བདུན་གྱིས་ནི་འགྲུབ་པར་འགྱུར།༡༠།

ཡང་ན་[5]ལྷ་ནི་འཇིག་རྟེན་པའི་ལྷ་སྟེ་ཤ་ནི་ཕྱུགས་ཉིད་ཀྱིའོ། །དེའི་ཕྱིར་དེའི་ཞེས་གསུངས་ཏེ། མདུན་ཞེས་པ་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་[6]ཐང་ཀའམ་ལུགས་སྐུ་དེའི་ཞལ་ལམ་

---

1. ཁྲག་གི་ ཅོ།
2. བདག་ཉིད་དེའི་ པེ། ཤ་ཉིད་དེ་ཡི་ རྒྱ་དཔེ།
3. མཁས་པ་སྦྱིན་བསྲེག་ སྣ། མཁས་པས་སྦྱིན་བསྲེག་ པེ།
4. སྦྱིན་བསྲེག་ པེ།
5. ཡང་ སྡེ། ཅོ།
6. ཧེ་རུ་ཀ་ སྡེ། ཅོ།

མདུན་ནམ་རྒྱབ་ཏུའོ། །ལས་ཐམས་ཅད་པའི་ཐབ་ཁུང་དུའོ། །མཆན་བདུན་གྱིས་ནི་འགྲུབ་པར་འགྱུར། །ཞེས་པ་ནི་མཆན་མོ་བདུན་ལ་དུས་གསུམ་དུ་སྦྱིན་སྲེག་བྱས་པས་འགྲུབ་པའོ། ༡༠ །

འཇིག་རྟེན་གསུམ་ན་རྙེད་དཀའ་བའི། །
དམ་ཚིག་སྤྱོད་པའི་མཚན་ཉིད་ནི། །
རྟག་ཏུ་རང་སྔགས་བཟླས་པ་ཡིས། །
རབ་ཏུ་འབད་དེ་གསང་བར་བྱ། ༡༡ །

བཟླས་དོན་རྙེད་པར་མི་འགྱུར་ཞིང་། །
སྐལ་པ་དམན་པས་འགྲུབ་མི་འགྱུར། །
བསོད་ནམས་ཆུང་བའི་སློབ་པོས་ཀྱང་། །
ང་མཉེས་བྱས་པས་རྙེད་པར་འགྱུར། ༡༢ །

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་ནང་གི་བདག་ཉིད་ཀྱི་དབང་དུ་བྱ་བའི་ཚོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་སུམ་ཅུ་རྩ་བདུན་[1]པའོ།། །།

རྙེད་དཀའ་ཞེས་པ་ནི་དབང་དུ་བྱ་བའི་ཚོ་གའོ། །དམ་ཚིག་སྤྱོད་པའི་རྣལ་འབྱོར་མཆོན། །ཞེས་པ་ནི་དམ་ཚིག་སྤྱོད་པའི་མཚན་ཉིད་དབང་དུ་བྱ་བའི་ཚོ་གའོ། །སྐལ་བ་དམན་པ་ནི་དེ་སྟོན་བསོད་ནམས་ཆུང་བའོ། །བསོད་ནམས་ཆུང་བའི་ཞེས་

1. སུམ་བཅུ་རྩ་བདུན་ པེ།

པ་ཞི་ད་ལྟར་ཡང་བསོད་ནམས་ཆུང་བའི་སྒྲུབ་པ་པོས་མི་འཐོབ་སྟེ་ང་མཉེས་[1]པས་ཞི་འཐོབ་པོ། ༡༡-༡༣ །

དབང་དུ་བྱ་བ་གཙོ་བོར་བྱས་ནས་དབང་གི་[2]ལས་དང་བྱ་བ་གང་ཡིན་པ་དབང་གི་[3]ལས་གཙོ་བོར་སྣན་ལ་སོགས་པ་སྦྱིན་སྲེག་གི་རྣམ་པ་དེ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལེའུ་ཡང་དེ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱའོ། །སུམ་ཅུ་བདུན་པ་ནི་སུམ་ཅུ་རྩ་བདུན་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་སུམ་ཅུ་རྩ་བདུན་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། །།

*

1. བརྙེས་པས་ སྡེ། ཅོ།
2. དབང་གིས་ པེ། གསེར།
3. དབང་གིས་ པེ།

རྣལ་འབྱོར་མའི་སྒྲུབ་པའི་ས་དང་གསང་བའི་དཔའ་བོའི་གནས་ཀྱི་ཚོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནས་བརྡ་[1]ནི་མཁའ་འགྲོ་མའི། །
ལུས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་གང་ཡིན་དང་། །
དཔའ་བོའི་ཡན་ལག་[2]དབྱེ་བ་ནི། །
གྲུབ་པར་གྱུར་པ་དེ་འགྲུབ་[3]འགྱུར། ༡ །

འདི་ནི་རྒྱུད་དུ་གསུངས་པའི་སྔས་པ་ཐམས་ཅད་བསྟན་པའི་ཕྱིར། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། བརྡ་ནི་ཀྵ་ཞེས་པ་ནི་སྐྱེས་བུའི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་གཞུང་སྟར་བསྟན་པའི་བརྡའོ། །ཉི་ནི་ཁྱད་པར་རོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ནི་རབ་ཏུ་གཏུམ་མོ་[4]ལ་སོགས་པའོ། །ལུས་ནི་ལག་པ་ལ་སོགས་པའི་བརྡའི་དོན་ཏེ་དེའི་མཚན་ཉིད་དོ། །མཁའ་འགྲོ་མའི་རིགས་ཀྱི་མཚན་མ་དང་མདོག་དང་དྲི་ལ་སོགས་པའོ། །དཔའ་བོའི་ཡན་ལག་དབྱེ་བ་ནི་མདོག་དང་ཞལ་དང་། ཕྱག་ལ་སོགས་པའོ། །དེ་ལྟར་ཉིད་ཅེས་པ་ནི་སྨྲ་བར་བྱའོ། ༡ །

དཔའ་བོའི་དབང་ཕྱུག་མི་བྲི་[5]ཞིང་། །
རྣམ་པ་ཀུན་དུ་སྨྲ་བར་བྱ། །

---

1. བརྡའ་ སྣ།
2. དབང་པོའི་ཡན་ལག་ ལྷ།
3. དེ་གྲུབ་ སྣ། ལྷ། པེ།
4. གཏུ་མོ་ པེ།
5. མི་འདྲི་ སྡེ། ལྷ། མིང་བྲི་ པེ།

གང་གི་ཐད་དུ་འང་མི་གནོན་ཏེ། |
གཡོན་པའི་ཀུན་སྤྱོད་སྒྲུབ་པ་པོས། ༢ |

བཏ་[1]ལ་སོགས་པ་དང་དབང་གི་ཡན་ལག་གི་དབྱེ་བ་ནི་དཔའ་བོའི་དབང་ཕྱུག་རྣལ་འབྱོར་པས་མི་བྲི་བ་དང་། བརྗོད་པར་མི་བྱ་བ་ཞེས་བྱ་བ་[2]བལྟ་བར་བྱའོ། | ཅུང་ཟད་གང་གིས་མདུན་མི་གནོན། །ཞེས་པ་ནི་རྒྱུད་གཞན་ལ་སོགས་པ་ལ་བརྟེན་པའི་མདུན་དུ་རྒྱུད་འདི་བསྒྲག་པར་མི་བྱ་བའོ་ཞེས་བྱ་བའོ། །གཡོན་པའི་ཀུན་སྤྱོད་ལེགས་སྒྲས་པ། །ཞེས་པ་ནི་གཡོན་པའི་ཀུན་སྤྱོད་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་[3]རྣལ་འབྱོར་པས་ལེགས་པར་སྒྲ་བ་སྟེ་བཏ་[4]ལ་སོགས་པའོ། ༢ |

གསང་བའི་མཚན་ཉིད་མཁའ་འགྲོ་ཡི། |
སྔགས་རྣམས་བག་མེད་པས་འདོན་[5]ན། |
དེ་ལ་ང་ནི་མི་བལྟ་[6]སྟེ། |
མཁའ་འགྲོ་སྟོང་ཕྲག་དུ་མ་ཡིས། |
ངན་པའི་བདག་ཉིད་ཅན་དེ་ཟ། ༣ |

གསང་བའི་མཚན་ཉིད་མཁའ་འགྲོ་མའི་[7]། །སྔགས་ནི་བག་མེད་པས་འདོན་ན། |

1. བཏའ་ གསེར། པེ།
2. 'བྱ་བ་' པེ་ཅིང་དུ་མི་སྣང་།
3. སྡོམ་པ་ གསེར། པེ།
4. བཏའ་ པེ།
5. འདོད་ ལྷ།
6. མི་ལྟ་ སྣེ། པེ།
7. མཁའ་འགྲོ་མས་ སྣེ། ཅོ།

ཞེས་པ་ནི་གླིགས་བམ་དུ་གདོགས་པའི་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་བག་མེད་པས་རང་
གི་བྱ་བ་ལ་ལྟོས་པ་[1]མེད་པར་འདོན་པ་དང་། འབྲི་བ་དང་། ཀློག་པ་ལ་ང་དེ་ལ་མི་
བལྟ་བའི་དངོས་གྲུབ་ལ་སོགས་པ་མི་མཐོང་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །འོན་ཀྱང་གཞན་ཡང་
གསུངས་ཏེ། མཁའ་འགྲོ་མ་སྟོང་ཕྲག་དུ་མ་ཡིས་བཟའ་སྟེ། དེ་བཟའ་བར་བྱ་བར་
འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །དེའི་སྒྲས་ནི་མགོ་གཡོ་བར་རོ། །ཅིའི་ཕྱིར་ཞེས་པ་
ལ་ངན་པའི་བདག་ཉིད་ཅན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ངན་པའི་བདག་
ཉིད་ཅེས་པ་ནི་རང་གི་དོན་ལ་ཨཙའི་སྒྲའི་རྐྱེན་བྱིན་པའོ། །ཤིན་ཏུ་ངན་པའི་བདག་
ཉིད་ཅེས་པའི་དོན་ཏེ་བདག་ཉིད་ཁྱད་པར་དུ་བྱས་པའི་སེམས་སོ། ༣ |

དམ་ཚིག་འཇོམས་ཤིང་ངན་སྤྱོད་དེ། |
བྲམ་ཟེ་གསོད་པར་ཐེ་ཚོམ་མེད། |
སྡིག་སྤྱོད་རྨོངས་པའི་བདག་ཉིད་ཅན། |
བསླུས་གྱུར་[2]ངན་པའི་བདག་ཉིད་དེ། ༤ |

མཁའ་འགྲོ་མ་ཡིས་ཟོས་གྱུར་ཀྱང་། |
དེ་ལ་ང་ནི་སྐྱོབ་མི་བྱེད། |
གསང་བ་པ་ཡི་ནང་ན་ནི། |
སྐྲུབ་པོ་དེ་ནི་ཕྱུགས་དང་འདྲ། ༥ |

---

1. བལྟོས་པ་ གསེར། པེ།
2. ལུས་གྱུར་ སྣ། ལྷ།

དམ་ཚིག་ནི་སྔགས་དང་ཕྱག་རྒྱ་དང་གྲུབ་མཐའོ། །བྲམ་ཟེ་ནི་སངས་རྒྱས་སོ། ། སྡིག་པ་ཉིད་སྤྱོད་པས་ནི་སྡིག་སྤྱོད་དོ། །དེའི་ཕྱིར་གདུག་པ་ཅན་གྱི་སྤྱོད་པ་སྟེ། ཆོས་དང་མི་ལྡན་པའི་གནས་སྐབས་དེ་ནི་སྡིག་སྤྱོད་དོ། །སྨོངས་པ་ཞེས་པ་ནི་ཤིན་ཏུ་གཏི་མུག་པ་སྟེ། མངོན་པར་འདོད་པ་ལ་མི་སྦྱོར་ཞིང་བསླུས་པའོ། །དེ་ཞེས་པ་ནི་གང་ཀློག་པ་ལ་སོགས་པ་བྱེད་པ་པོ་དེ་ཡང་བདག་གིས་མི་སྐྱོབ་སྟེ་ངན་པའི་བདག་ཉིད་གདུག་པ་ཅན་གྱི་རང་བཞིན་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱིས་བཟའ་བར་བྱའོ། །འདི་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེས་པ་ལ་སྨྲེད་ཅིང་ཡང་དག་པར་སྡོམ་ཞིང་བསྲུང་བའི་གསང་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མའོ། །ཉི་ནི་ཡང་གི་དོན་ཏོ། །སྲུང་བ་པོ་རྣམས་ཀྱི་ནང་ན་དེ་ཕྱུགས་ཉིད་[1]དེ། རང་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་[2]གསད་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟ་བུའི་སྒྲུབ་པ་པོས་ནི་ཉེས་པ་ཆེན་པོ་བྱས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་བས་ན་ནི་སྒྲ་ནི་ཁྱད་པར་རོ། ༩-༥ །

བླ་མ་དམ་ཚིག་ལ་འཁྲུ་བ། །
སངས་རྒྱས་འཇིག་རྟེན་དེ་ལས་ལྷུང་། །
ཧེ་རུ་ཀ་དཔལ་ལྷ་དགའི་རྒྱུད། །
གང་ཞིག་སྲུང་བར་[3]བྱེད་པ་ནི། ༦ །

ལྷུང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་སངས་རྒྱས་ཀྱིས་གཟིགས་པའི་འཇིག་རྟེན་ནི་སངས་རྒྱས་འཇིག་རྟེན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་ཡང་ལྷུང་བར་འགྱུར་རོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །

1. ཕྱུགས་ཉིད་ ཅོ།
2. རང་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ བོད་འགྱུར། རྒྱ་དཔེར་(ཆགལེཞ)གསལ་བ་ལྟར་གོང་དུ་བཞག་པ་ཡིན།
3. བསྲུང་བར་ པེ།

དེ་ཡང་བླ་མ་གསོད་ཅིང་དམ་ཚིག་བཤིག་པར་བྱེད་པའོ། །གང་གི་ཕྱིར་གང་ཡང་སྐྱོང་ཞིང་སྲུང་བའི་རྒྱུད་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་བརྗོས་འཇིགས་ཏེ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མ་གཏོགས་པ་རྣམས་འཇིགས་པ་སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །

མཁའ་འགྲོ་མར་བཅས་དགེ་གདོང་[1]ཞེས། །
དེ་ལ་ང་ནི་རྗེས་སུ་འཛིན། །
བླ་མ་ལ་ནི་བསྙེན་བཀུར་བྱེད། །
གསོང་པོར་བྱེད་པའི་སྒྲུབ་པ་པོ། །

དེ་ནི་བདག་གི་རྗེས་སུ་འཛིན་ནོ། །རྗེས་འཛིན་པ་ནི་བརྩེ་བའི་ཁྱད་པར་རོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ཞེས་པ་ནི་སྒྲའི་གསུམ་པའི་ཕྱི་[2]བའོ། །དགེ་ཞིང་དགེ་བའི་གདོང་གིས་གང་ལ་དེ་ནི་ཇི་ལྟ་བ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟར་རྗེས་སུ་འཛིན་པ་ནི་རྗེས་སུ་མཐུན་[3]པར་འདོད་པའོ། །བླ་མས་ཀྱང་དགོངས་པའོ། །གསོང་པོར་བྱེད་པ་[4]ནི་སྒྲིད་པར་བྱེད་པ་སྟེ། དེ་མཐོང་ན་གཞན་སྒྲུབ་པ་པོས་[5]དེ་ལ་འཁྲུད་པའམ། འདི་ནི་བདག་གི་ཕྱོགས་སུ་ཞུགས་པའོ་ཞེས་འཇིག་རྟེན་པ་རྣམས་ལ་ལེགས་སོ་ཞེས་བསྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་རམ་སྒྲིད་དོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །

---

1. དགེ་སྡོང་ བོད་འགྱུར་རྩ་བ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་དང་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།
2. ཕྱིར་ ཅོ།
3. རྗེས་སུ་འཐུན་ གསེར། པེ།
4. འགྲེལ་པར་‘གསང་བར་བྱེད་པ་’ ཞེས་གསལ་ནའང་གོང་དེར་རྩ་བ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
5. སྒྲུབ་པོས་ གསེར། པེ།

མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་རྟག་དགའ་བ། །
དེ་ལ་དངོས་གྲུབ་འབྱུང་བར་འགྱུར། །
སྒྲུབ་པ་པོ་ནི་དཔའ་ཉིད་འགྱུར། །
ཁམས་གསུམ་མཁའ་ལ་རྒྱུ་བའི་བདག ༨ །
སྒྲུབ་པོ་དཔའ་བོ་ཉིད་འདོད་པ། །
ཐམས་ཅད་དུ་ནི་མཆོད་པར་འགྱུར། །
དེ་ནི་རྣལ་འབྱོར་ལ་རབ་འདུག །
ཡང་དག་སྦྱིན་པའང་རིག་པར་འགྱུར། ༩ །

དཔའ་བོ་འདོད་ཅེས་པ་ནི་དཔའ་བོ་ཉིད་འདོད་པ་སྟེ། དེ་ནི་རྣལ་འབྱོར་ལ་རབ་འདུག[1] །རྒྱུན་གྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་འདུག་ཅིང་སྦྱོར་བའོ། །ཡང་དག་རབ་སྦྱིན་ནི་[2] སློབ་མ་ཕྱུན་སུམ་ཚོགས་པ་དང་ལྡན་པའི་ཤེས་པའི་[3] རྣམ་པར་འདོད་པའོ། །རིག་པར་གྱུར་ན་[4] བླ་མ་ལས་ཐོབ་པའོ། ༨-༩ །

དེ་རུ་ཀ་ཡི་བརྟུལ་ཞུགས་[5] འཛིན། །
སློབ་དཔོན་དཔའ་བོ་མཐོང་གྱུར་ན[6]། །

1. ‘དེ་ནི·········འདུག’ ཚིག་རྐང་འདི་བོད་དཔེར་མེད་ཀྱང་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་དེར་བསྣན་པ་ཡིན།
2. རབ་སྦྱིན་ནི་མ་ གསེར།
3. ཞེས་པའི་ སྡེ། ཅོ།
4. རིགས་པར་འགྱུར་ན་ གསེར། རིག་པར་འགྱུར་ན་ པེ།
5. བརྟུལ་བཞུགས་ པེ།
6. མཐོང་གྱུར་པ་ སྣ།

མཐོང་ཞིང་མཐོང་ཞིང་ཀུན་ཏུ་དགའ། །
སྒྲུབ་པ་པོས་ནི་རྟགས་འདི་ཡིས། ༡༠ །

དཔའ་བོ་ཉིད་མཐོང་བ་[1]ནི། འཇིག་རྟེན་པའི་ཐ་སྙད་ལ་འཇིགས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཧེ་རུ་ཀ་དཔལ་བརྟུལ་ཞུགས་འཛིན། །ཞེས་པ་ནི་རང་གི་བསྟན་བཅོས་བྱས་པ་ཡོངས་སུ་སྐྱོང་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་སྒྲུབ་པ་པོས་དཔའ་བོ་ཉིད་མཐོང་[2]དགའ་ཞེས་པར་སྦྱར་རོ། །མཐོང་ཞིང་མཐོང་ཞིང་རྟགས་[3]འདི་ཉིད་ཅེས་པ་ནི། དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་རྣལ་འབྱོར་དུ་མཆོན་ཅིང་མཆོན་པ་ལ་སྒྲུབ་པ་པོ་དག་གཞན་གྱི་དེ་ལྟ་བུ་ལ་མཐོང་ཞིང་མཐོང་ཞིང་[4]དགའ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༡༠ །

དཔའ་བོའི་རྒྱ་བའི་[5]གསང་རྟགས་མཆོག །
ལན་བདུན་དུ་ནི་བཟློད་པར་བྱ། །
རབ་རྟགས་ཧཱུྃ་ལ་སོགས་པས་ཕྱེ། ༡༡ །
དེ་རྣམས་འབད་དེ་ཕྱག་བྱས་ན། །
སངས་རྒྱས་ལ་སོགས་ཐམས་ཅད་མཆོད། །
རྟག་པ་ཉིད་དུ་དཔའ་ཆེན་དང་། །
རོལ་པར་ལྡན་པར་ཐེ་ཚོམ་མེད[6]། ༡༢ །

---

1. དཔའ་བོ་ཉིད་ཐོབ་པ་ བོད་འགྱུར། གོང་དུ་རྒྱ་བ་ལྟར་བཀོད་ཡོད།
2. དཔའ་བོ་ཉིད་མ་མཐོང་ གསེར།
3. མཐོང་ཞིང་ཞེས་རྟགས་ སྡེ། ཅོ།
4. 'མཐོང་ཞིང་' སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེའི་པར་མ་གཉིས་སུ་བསྐྱར་བཟླས་བྱས་པ་མ་གསལ།
5. རྒྱ་བའི་ པེ།
6. ལྡན་པ་ཐེ་ཚོམ་མེད་ སྣ། ཕུ། ལྡན་པར་ཐེ་ཚོམ་མེད་ པེ།

ཇི་ལྟར་གསུངས་པའི་རྩ་བའི་སྔགས་བརྗོད་ཅིང་དེ་དག་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་བརྟུལ་ཞུགས་འཛིན་པ་ལ་འབད་པས་ཕྱག་བྱེད་ཅིང་དགའ་ཞེས་པར་སྨྲ་རོ། །དེ་ཅི་ཞེ་ན་[1] གསུངས་པ། སངས་རྒྱས་ཀུན་ལ་སོགས་པ་མཆོད[2]། །ཅེས་པ་ནི་རྡོ་རྗེ་འཆང་ལ་སོགས་པ་མཆོད་པར་འགྱུར་[3]རོ། །དེ་ལ་ཕྱག་འཚལ་བ། ཇི་ལྟར་ཉིད་ཅེས་པ་ལ་གང་གི་[4]ཕྱིར་རྣལ་འབྱོར་པ་དེ་དཔའ་ཆེན་[5]དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་རོལ་པ་དང་ལྡན་པའོ། །
དེ་ལྟར་རྣལ་འབྱོར་པས་རྣམ་པར་བལྟ་བའི་གདན་[6]ཉིད་དུ་དེ་འགྱུར་རོ། ༡༡-༡༣ །

དེ་ཡི་[7]ཐུགས་ཀར་གནས་ཕག་མོ། །
ང་དང་དཔའ་བོ་རྣལ་འབྱོར་མ། །
ཕོ་ཉ་རྣམས་དང་ལྷན་ཅིག་བཅས[8]། །
དེ་དང་[9]གང་ཞིག་ལེགས་སྐྱེས་པ། །
སྒྲོག་ཆཏ་བསོད་ནམས་མཐོང་བ་ཡིན[10]། ༡༣།

---

1. ཞེས་ན་ གསེར།
2. མཆོག་ སྡེ། ཅོ།
3. མཆོད་འགྱུར་ གསེར། པེ།
4. གང་གིས་ གསེར། པེ།
5. དཔལ་ཆེན་ སྡེ། ཅོ།
6. གདན་ གསེར། པེ།
7. དེའི་ པེ།
8. ང་དང་………ལྷན་ཅིག་བཅས། ཞེས་ཚིག་རྐང་གཉིས་ཡོད་པ་རྒྱ་དཔེའི་རྩ་བར་ནི་'དཔའ་བོ་གཉིས་མེད་རྣལ་འབྱོར་མ།' ཞེས་ཚིག་རྐང་གཅིག་ཉིད་དུ་གསལ།
9. དེ་དག་ པེ།
10. རྩ་བའི་ཚིགས་བཅད་དང་འགྲེལ་པར་གསལ་བའི་ཚིག་རྐང་དེ་དག་གི་དབར་མི་མཐུན་པའི་ཁྱད་པར་ཅུང་ཟད་སྣང་།

ངྲན་པ་ནི་ཅི་ཞེས་པ་ལ་དེ་དག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཐུགས་ལ་གནས་པའི་དཔའ་བོ་ནི། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་བརྟུལ་ཞུགས་འཛིན་པ་དེ་དག་ནི་ཐུགས་ཀར་གནས་པའི་དཔའ་བོ་སྟེ། ངང་པོའི་མང་པོའི་ཚིག་གི་དོན་ལ་དྲུག་པའི་གཅིག་གི་ཚིག་གོ །རྣལ་འབྱོར་མ་དང་གཉིས་མེད་གནས། །ཞེས་པ་ནི་སྔྲའི་མང་པོའི་ཚིག་ལ་ཨོཾ་[1]བྲིས་པ་ནི་ངེས་པའི་ཚིག་གི་ཚ་གའོ། །དེའི་ཕྱིར་འདིའི་དོན་ནི་གང་གི་ཕྱིར་འདི་ལྟ་བུ་ཞེས་པ་ལ་གང་གི་ཕྱིར་དེ་དག་རྣལ་འབྱོར་མ་སྟེ། ལྟ་མོ་གཉིས་མེད་གཟུགས་ཀྱིས་[2]གནས། །ཞེས་བྱའོ[3]། །གང་ཕྱིར་[4]དེ་ཡིས་ལེགས་སྐྱེས་པ། །སྲོག་ཆགས་བསོད་ནམས་མཐོང་བ་ཡིན། །ཞེས་པ་ནི་དེ་ཇི་ལྟར་ཞེས་པ་ལ་གང་གི་ཕྱིར་[5]དེ་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་བརྟུལ་ཞུགས་འཛིན་པ་ནི་བསོད་ནམས་མཐོང་བས་སྲོག་ཆགས་ལ་དགེ་བ་བསྐྱེད་པར་འགྱུར་རོ། ༡༣ །

འབབ་ཆུའི་འགྲམ་དང་རྒྱ་མཚོ་དང་། །
རི་བོ་དང་ནི་བཞི་མདོ་དང་། །
ལྡིང་ཀ་དང་ནི་ཁྲིན་པ་མཆེའུ[6]། །
ཁང་སྟོང་དང་ནི་ལམ་སྲང་དག ༡༤ །

1. ཨམ་ གསེར། པེ།
2. ཀྱི་ གསེར། པེ།
3. ཞེས་བྱའོ་ གསེར། པེ།
4. གང་གི་ཕྱིར་ གསེར། པེ།
5. གང་ཕྱིར་ ཅོ།
6. ལྡིང་ཀ་ཁྲིན་པ་མཆེའུ་དང་། པེ།

ཐམས་ཅད་དུ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མ། |
ཀུན་ཏུ་ཞེན་པར་ལྷ་ལ་གནས། |
འཇིགས་པ་ཆེན་པོ་དུར་ཁྲོད་དུ། |
མཁའ་སྤྱོད་དེ་བཞིན་ས་འོག་དང་། ༡༥ |
རོ་ལངས་ཀུང་ནི་དུ་མ་ཞིག |
འཇིགས་པའི་གཟུགས་དང་སྟོབས་ཆེན་པོས། |
དེ་དང་[1]ལྷན་ཅིག་དཔའ་བོ་ཆེ། |
ཅི་བདེ་བར་ནི་རོལ་བར་མཛད། ༡༦ |

རོལ་པའི་གནས་ནི་ཆུ་བོ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཡང་དག་པར་ཞེན་པའི་སྤྱན་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་བརྟུལ་ཞུགས་འཛིན་པ་མཐོང་བ་ན་[2]རྗེས་སུ་ཆགས་པ་ཞེས་བྱའོ། །འདིར་ནི་སྐབས་ནི་དགའ་བའོ། ༡༤-༡༦ |

རི་སུལ་ཚང་ཚིང་གསང་བ་དང་། |
རྣལ་འབྱོར་མ་དང་གསང་བའི་མི། |
ཕྱོགས་ནི་དེ་དང་དེ་དག་ཏུ། |
སྐྲུབ་པ་པོ་དང་ས་སྙིང་རོལ། ༡༧ |

---

1. དེ་དག་ སྣ། ཟླ།
2. ‘ན་’ གསེར་བྲིས་སུ་མེད།

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་རྣལ་འབྱོར་མའི་སྒྲུབ་པའི་ས་[1]དང་གསང་བའི་དཔའ་བོའི་གནས་ཀྱི་ཚོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་སུམ་ཅུ་རྩ་བརྒྱད་པའོ།། །།

རི་སུལ་ནི་ཁྲུང་ངོ་། །ཚང་ཚིང་ནི་རིའི་ནང་གི་ནགས་ཚལ་ཐིབས་པོའོ། །གསང་བའི་མི་མོ་[2]རྣལ་འབྱོར་མ། །གང་དེ་གསང་བའི་རྣལ་འབྱོར་མའི་གནས་སོ། །རྒྱུ་བོ་ལ་སོགས་དེ་དག་ཐམས་ཅད་དང་ཁྱད་པར་དུ་ནི་འདིའོ། ༡༧ །

རྣལ་འབྱོར་མ་ཡི་གནས་གཞན་ཉིད། །གསང་བའི་རྣལ་འབྱོར་མ་ཡི་གཞི། །བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་དེ་དེ་བཞིན་ནོ། །སུམ་ཅུ་བརྒྱད་ནི་སུམ་ཅུ་རྩ་བརྒྱད་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་སུམ་ཅུ་རྩ་བརྒྱད་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། །།

*

1. བསྒྲུབ་པའི་ས་ པེ།
2. གསང་བའི་མི་ ཙ་བ།

བརྡ་བ་དང་ཧ་ཧར་དགོད་པའི་ཆོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནས་གྲུབ་པའི་[1]རྣལ་འབྱོར་ཆེ། །
སྔགས་ནི་རྣམ་པ་བརྒྱད་ཀྱིས་དགོད[2]། །
དེ་ནས་འདི་ལ་ཡང་དག་མཐོང་། །
གསོལ་བར་འགྱུར་བ་[3]གདོན་མི་ཟ། ༑ །

དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མའི་གནས་ཀྱི་རྗེས་སུའོ། །རིམ་པས་དགོད་[4]པས་ན་རྣམ་པ་བརྒྱད་ནི་རྣམ་པ་བརྒྱད་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་ནོ། །དེ་བཞིན་དུ་རྣལ་འབྱོར་པས་དངོས་གྲུབ་ཆེན་པོ་ནི[5]། ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་རྣལ་འབྱོར་པས་སོ། །སྔགས་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། ཀིལིཀིལི། ཙིལིཙིལི། སིལིསིལི། ཧྲིལིཧྲིལི་ཞེས་བྱའོ། །རིག་པའི་རྒྱལ་པོའི་སྔགས་ཀྱི་ལྷག་མ་དང་དེས་ན་རྣམ་པ་བརྒྱད་དགོད་པའོ[6]། །ཧཧ ཧེཧེ ཧོཧོ ཧཱུྃཧཱུྃ་[7]ཞེས་བྱའོ། །ལྷ་མོའི་སྔགས་ཀྱིས་ཀྱང་རྣམ་པ་བརྒྱད་དུ་དགོད་པའོ། །དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གོ་སླའོ། ༑ །

---

1. དེ་ནས་སྒྲུབ་པའི་ པེ། ལྷ། དེ་སྒྲུབ་པའི་ སྣ།
2. སྔགས་ཀྱི་རྣམ་པ……དགོད། ལྷ། སྣ། སྔགས་ནི……ཀོད། སྡེ།
3. འགྱུར་བར་ ལྷ།
4. རིམ་པས་ཀོད་ གསེར། པེ།
5. དེ་བཞིན་དུ་དངོས་གྲུབ་ཆེན་པོ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པས་དངོས་གྲུབ་ཆེན་པོ་ནི་ གསེར། པེ།
6. ཀོད་པའོ་ གསེར། པེ།
7. ཧཧཱ ཧེཧེ ཧོཧོ ཧཱུྃཧཱུྃ སྡེ། ཅོ། ཧཧཱ………ཧུཧཱུ གསེར། པེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

འཇིགས་པའི་སྒྲ་ནི་རྣམ་མང་པོ། །
མི་བཟད་མཁའ་འགྲོ་འཇིགས་བྱེད་པ། །
དཔའ་བོ་འཇིགས་པར་གྱུར་ན་ནི། །
སྒྲག་ཅིང་རྣམ་པར་འཇིགས་བར་[1]བྱེད། ༡ །

རྣལ་འབྱོར་མ་རོལ་བས་འཇིགས་པ་འབྱུང་ཡང་འཛིན་པ་[2]མི་བྱའོ་ཞེས་པ་ནི་དེ་ལ་དཔའ་བོ་འཇིགས་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། ཀྱང་ནི་གང་གི་ཕྱིར་རོ། ༡ །

གལ་ཏེ་དཔའ་བོ་མི་འཇིགས་ན། །
ལག་པ་གཡོན་པས་བཟུང་ནས་ནི། །
རང་གི་གནས་སུ་ཁྱེར་ནས་སུ། །
མཁའ་འགྲོ་མ་ནི་དེ་དག་དང་། ༣ །

དེ་ལ་ཞེས་པ་ནི་རོལ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དཔའ་བོ་མི་འཇིགས་ཞེས་པ་ནི་གང་གི་ཚེ་དཔའ་བོ་མི་འཇིགས་ན་དེའི་ཚེ་ལག་པ་གཡོན་ནས་བཟུང་ནས་རང་གི་ཁྱིམ་དུ་ཁྱེར་[3]རོ། །དཔའ་བོ་དང་བཅས་པ་ནི་གཉིས་ཀའི་དགོས་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བསྟན་པའི་ཕྱིར། ལག་པ་གཡོན་ནས་བཟུང་[4]ནས་ནི། །དེ་ནི་རང་གི་གནས་སུ་ཁྱེར་ནས་གསུངས་སོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ། །ཞེས་པ་ནི་སྒྲའི་གསུམ་པའི་ཕྱི་བའོ། ༣ །

---

1. རྣམ་པར་འཇིགས་པར་ པེ། ལྷ། སྣ།
2. འཛིགས་བྱ་ ཅོ།
3. འཁྱེར་ གསེར། པེ།
4. གཟུང་ གསེར། པེ།

རྟག་ཏུ་མངོན་པར་རྩེ་བྱེད་དེ། །
བདེ་བ་ཅན་གྱི་གནས་འགྲོ་འགྱུར། །
ཧེ་རུ་ཀ་དཔལ་གུས་འདོད་པས། །
མཁའ་ལ་འགྲོ་བའི་གནས་སུ་ཁྲིར། ༤ །

ཧེ་རུ་ཀ་དཔལ་ཆགས་འདོད་པས། །ཞེས་པ་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་སྒྲོར་བར་འདོད་པའོ།། མཁའ་སྤྱོད་ཀྱི་གོ་འཕང་ནི་བདེ་བ་ཅན་ནོ། །དེ་ཉིད་རང་གི་གྲོང་ཞེས་པའི་བཤད་པའོ། ༤ །

སྒྲུབ་པ་པོ་ནི་སྔགས་ལུས་ཅན། །
འཁོར་བར་འཆི་དང་ན་བ་མེད། ༥ །

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་བཟླ་བ་དང་ཧ་ཧར་དགོད་པའི་[1]ཚོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་སུམ་ཅུ་རྩ་དགུ་པའོ།། །།

ན་དང་འཆི་བ་ཐམས་ཅད་མེད[2]། །ཅེས་པ་ནི། དེ་དག་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ལས་སྐྱེ་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དེ་བཅོམ་པས་ན་དེ་སྤངས་ཞེས་པ་དགོངས་སོ། །རྣམ་པར་རྟོག་པ་བཅོམ་པ་ཉིད་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེས་པ་ལ། སྒྲུབ་པ་པོ་སྔགས་ལུས་ཅན་ཞེས་གསུངས་ཏེ་སྔགས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་དངོས་སུ་བྱེད་པ་སྟེ། དེའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཞེས་དགོངས་སོ། ༥ །

1. ཐོད་པའི་ སྡེ། པེ།
2. རྩ་བར་ʻའཁོར་བར་འཆི་དང་ན་བ་མེད།ʼ ཞེས་གསལ།

མཐོང་བ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མ་ཉེ་བར་དམིགས་པ་སྟེ། ད་དུར་དགོད་པ་[1]བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཡིན་ལ་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་དེ་དེ་བཞིན་[2]ནོ། །སུམ་ཅུ་རྩ་དགུ་ནི། སུམ་ཅུ་རྩ་དགུའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་སུམ་ཅུ་རྩ་དགུ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། ||

✵

---

1. རྗོད་པ་ གསེར། པེ།
2. དེ་བཞིན་ སྣེ། ཅོ།

རིགས་ལྡེ་དབང་དུ་བྱ་བ་དང་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་བསྟེན་པའི་ཚོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནི་[1]རབ་ཏུ་བཤད་བྱ་བ། །
གང་གིས་ས་སྟེངས་[2]དབང་དུ་འགྱུར། །
དཔའ་བོའི་སྔགས་ཀྱི་ཟླ་བ་ཡིས[3]། །
རྣལ་འབྱོར་ཚོགར་[4]གནས་པས་འགྲུབ། ༑།

དེ་ནི་དབང་དུ་བྱ་བ་འབབ་ཞིག་གིས་སྦྱིན་སྲེག་གི་ལེའུ་ནི། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །གང་གི་ཕྱིར་དབང་དུ་བྱས་པས་སེམས་ཅན་གང་གི་བསྟན་པ་ལ་སྦྱོར་[5]བར་ནུས་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ཡང་དག་པར་བཤད་པར་བྱའོ། །དེ་གང་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ། །གང་གིས་མི་རྣམས་དབང་དུ་འགྱུར། །ཞེས་གསུངས་སོ། །སྦྱིན་སྲེག་གང་གིས་ངེས་པར་སེམས་ཅན་དབང་དུ་བྱེད་ཅེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་ཡང་དུས་ཇི་ཙམ་ན་འགྲུབ་ཅེས་པ་ལ། ཟླ་བས་འགྲུབ་པར་འགྱུར་ཞེས་གསུངས་སོ། །ཇི་ལྟ་བུར་གྱུར་པའི་དཔའ་བོས་སོ། །རྣལ་འབྱོར་སྔགས་ཀྱི་ཚོགར་གནས། །ཞེས་པ་ནི་སྔགས་ལ་སོགས་པ་སྔོན་དུ་འགྲོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༑ །

---

1. དེ་ནི་ པེ། དེ་ནས་ འགྲེལ་པ།
2. ས་སྟེང་ ལྷ།
3. བཟླ་བ་ཡིན་ པེ། ཟླ་བ་ཡིན་ སྣ། ༼ལྷ་ས?༽ སྣུམ་ཐང་?
4. རྣལ་འབྱོར་ཚོག་ ལྷ། སྣ།
5. རང་གི་བསྟན་པ་ལ་སྦྱར་ རྒྱ་དཔེ།

སྒྲོན་མ་[1]སྨྱོས་བྱེད་བཅས་པ་དང་། །
ཉ་ཡི་ཤ་དང་ལྡན་པར་ནི། །
དཔའ་དབང་གནས་སྐབས་ཐམས་ཅད་དུ། །
ཉི་མ་བདུན་གྱིས་སྒྲུབ་པ་པོའི། ༢ །
མཚན་མོའི་སྲིན་སྲེག་[2]བྱེད་ལ་གཞོལ། །
དངོས་གྲུབ་རྒྱ་ཆེན་སྨོལ་པར་[3]འགྱུར། །
བརྒྱ་དང་རྩ་བརྒྱད་ལྡན་ཉིད་ཀྱིས། །
ཐུན་གསུམ་དུ་ནི་སྒྲུབ་བྱེད་ན། ༣ །
རྒྱལ་པོ་དཔུང་དང་བཅས་པར་ནི། །
ཉིན་བདུན་གྱིས་ནི་དབང་དུ་འགྱུར། །
ཕྱེད་ཀྱིས་[4]དཔའ་བོ་བློན་པོ་སྟེ། །
དེ་ཡི་ཕྱེད་ཀྱིས་བློན་པོ་ཡི[5]། ༤ །

རྣལ་འབྱོར་པ་གང་གིས་འགྲུབ་ཅེས་པ་ལ། སྒྲོན་མ་[6]ཉ་དང་བཅས་པ་ཡིས། །
ཞེས་གསུངས་ཏེ། ཤ་ནི་སྔོན་དུ་གསུངས་པའོ། །ཉ་ཡང་ངོ་། །ཤས་ནི་ཕྱིའི་སྲིན་

1. སྒྲོན་མ་ སྣ།
2. སྲིན་བསྲེག་ པེ།
3. རྒྱ་ཆེན་གསོལ་བར་ པེ། ལྷ། སྣ།
4. བྱེད་ཀྱིས་ ལྷ།
5. དེའི་ཕྱེད་ཀྱིས་བློན་པོའི། པེ།
6. སྔོན་མ་ ཅོ།

སྲེག་བྱ་བས་ནང་གི་བྱ་བའོ་[1]ཞེས་ཤེས་པར་བྱའོ། །གནས་སྐབས་ཐམས་ཅད་དུ་ཡང་ཕྱུག་བཞི་པ་ལ་སོགས་པར་ཡང་དཔའ་བོ་དབང་ཕྱུག་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ཡིས་སོ། །ཞག་བདུན་གྱིས་སོ་ཞེས་བྱའོ། །ཟླ་བ་གསུམ་དུ་ཐུན་མཚམས་གསུམ་དུ་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་ཀྱིས་[2]སྦྱིན་སྲེག་སྦྱིན་པར་བྱས་ལ། དེ་ནས་ཞག་བདུན་དུ་སྦྱིན་སྲེག་བྱས་ན་[3]བསྒྲུབ་བྱ་འགྲུབ་པར་སྒྲུབ་པ་པོ་ལ་སྟེར་རོ། །མཚན་མོ་སྦྱིན་སྲེག་བྱེད་ལ་གནོད་ལ། །ཞེས་པ་ནི་མཚན་མོ་ནི་ཤེས་རབ་སྟེ་བདར་བྱས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཤེས་རབ་དང་ལྡན་པས་སྦྱིན་སྲེག་བྱའོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །དེ་ཉིད་ནི་བརྒྱ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཐམས་ཅད་དུ་ནི་བསྡུ་བའོ། །ཕྱེད་ཀྱི་ཞེས་པ་ནི་ལྔ་བཅུ་རྩ་བཞིའོ། །དེའི་ཕྱེད་ཅེས་པ་ནི་ཉི་ཤུ་རྩ་བདུན་ནོ། །བློན་པོ་ནི་མི་འཐབ་འདུམ་པ་[4]ལ་སོགས་པ་དབང་དུ་བྱེད་དོ་ཞེས་སྨྲར་རོ། ༣-༩ །

རྒྱལ་ཕྲན་ལ་ནི་སུམ་ཅུ་གཉིས[5]། །
བསྒྲིག་པའི་རིམ་གྱིས་སྦྱིན་སྲེག་[6]བྱ། །
ཉི་ཤུས་བྲམ་ཟེ་ཉིད་ལ་ནི། །
ཉི་མ་བདུན་གྱིས་སྦྱིན་སྲེག་[7]བྱ། ༥ །

1. བྱ་བ་ཡིས་ནང་གི་བྱའོ་ གསེར། པེ། ཙ་ཡིས་ནང་གི་སྦྱིན་སྲེག་བྱའོ་ རྒྱ་དཔེ།
2. ཀྱི་ གསེར། པེ།
3. ཞག་བདུན་སྦྱིན་སྲེག་བྱས་ན་ གསེར།
4. བློན་པོ་ནི་མ་ཡིན་པའི་འཐབ་བསྡུམས་བྱེད་པ་ གསེར། པེ།
5. སུམ་བཅུ་གཉིས་ པེ།
6. སྲེག་པའི······སྦྱིན་བསྲེག་ སྣ། སྲེག་པའི······སྦྱིན་སྲེག་ ཀྱ།
7. སྦྱིན་བསྲེག་ པེ།

དེ་བཞིན་རྒྱལ་རིགས་དག་ལ་བདུན། |
སྦྱིན་སྲེག་ལྷ་པོ་རྫེ་རིགས་ལ། |
དམངས་རིགས་ལ་ནི་སྦྱིན་སྲེག་[1]གསུམ། |
ཐ་མ་ལ་ནི་སྦྱིན་སྲེག་གཅིག ༦ |

ཡུལ་དཔོན་ལ་སོགས་པ་ནི་ཡུལ་དཔོན་དང་གྲོང་དཔོན་ལ་སོགས་པའི་དོན་ཏོ། | སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་སྦྱིན་སྲེག་བྱའོ། །སྦྱིན་སྲེག་རིམ་གྱིས་སྦྱིན་སྲེག་བྱ། །ཞེས་པ་ནི། རིགས་ཀྱི་རིམ་པས་སྦྱིན་སྲེག་བྱ། །ཞེས་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ཉིད་ནི་ཉི་ཤུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། བྲམ་ཟེ་ལ་ནི་སྦྱིན་སྲེག་ཉི་ཤུ་སྦྱིན་པར་བྱའོ། །དམངས་རིགས་ཉིད་ལ་ཞེས་པ་ནི་སྦྱིན་སྲེག་གསུམ་མོ། །མཐར་སྐྱེས་པ་ནི་སྦྱིན་སྲེག་གཅིག་ཅེས་པ་ནི་ལན་རེ་རེ་སྦྱིན་སྲེག་བྱ་སྟེ། སྦྱིན་སྲེག་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །གདུམ་མོ་ལ་སོགས་པའི་དོན་ཏོ། ༥–༦ |

དེ་ལྟར་དཔའ་བོས་རིགས་རིམ་གྱིས། |
ཟླ་བ་གཅིག་ནི་ཡང་དག་སྤྱད[2]། |
སྔགས་ཀྱི་ནུས་པ་སྒྲུབ་པ་པོས། |
འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་དགུག་པར་བྱ། ༧ |

སྟན་ཅིག་[3]ལ་ནི་མཉམ་བརྟེན་ནས། །ཞེས་པ་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ལ་མཉམ་པར་བརྟེན་ནས་སོ། ༧ |

1. རྨང་རིགས་ལ་ནི་སྦྱིན་བསྲེག་ པེ། སྣ།
2. སྟན་ཅིག་ལ་ནི་མཉམ་བརྟེན་ནས། འགྲེལ་པ་དང་རྒྱ་དཔེའི་རྩ་བ།
3. བོད་འགྱུར་དུ་'ལྷན་ཅིག་' ཞེས་འདུག་ཀྱང་གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་པ་ཡིན།

དཔའ་བོས་ཚིག་སྨྲ་མ་ཡིས། །
འདོད་པས་བསྙེན་ན་[1]ཐོབ་པར་འགྱུར། །
ས་སྙིང་[2]འདོད་པའི་དབང་ཕྱུག་བཞིན། །
དཔལ་ལྡན་སྐལ་པ་བཟང་པོར་འགྱུར། ༨ །

སྒྲུབ་པོ་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ཀྱི། །
ཡིད་འོང་འགྱུར་བར་གདོན་མི་ཟ། ༩ །

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་རིགས་ལྔ་པོ་དབང་དུ་བྱ་བ་དང་། ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་བསྙེན་པའི་ཆོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་བཞི་བཅུ་པའོ།། །།

སྦྱིན་སྲེག་ལ་ངེས་པ་དང་བརྟུལ་ཞུགས་ལ་སོགས་པ་ནི་ངེས་པ་མེད་དོ་ཞེས་བསྟན་པ་ནི། འདོད་པ་བསྙེན་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། གཟུགས་དང་སྒྲ་ལ་སོགས་པའི་འདོད་པ་ལ་ཚིག་སྔོན་དུ་སོང་བ་སྟེ། ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་ཚིག་སྔོན་དུ་སོང་བས་བསྙེན་པར་བྱའོ། །འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་ལྔ་ལ་གོམས་[3]ཤིང་སྦྱིན་སྲེག་བྱའོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །དེ་ནས་ཅི་ཞེས་པ་ལ་འགྲུབ་པར་འགྱུར་ཞེས་གསུངས་ཏེ། དབང་དུ་བྱེད་པ་འགྲུབ་བོ[4]ཞེས་པ་ནི་ལྷག་མའོ། ༨-༩ །

1. སྟན་ན་ པེ།
2. ས་སྙིངས་ པེ། སྣ།
3. ལྔ་ལ་སོགས་ གསེར།
4. འགྲུབ་པོ་ སྡེ། པེ། ཅོ།

རིགས་ལྔ་དབང་དུ་བྱེད་པ་དེ་སྟོན་དུ་སོང་བའི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་སྒྲུབ་ཐབས་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཡིན་ལ་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་དེ་དེ་བཞིན་ནོ། །བཞི་བཅུ་ནི་བཞི་བཅུ་ཐམ་པའོ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་བཞི་བཅུ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། །།

✱

ཡི་གེ་ཉེར་བཞིའི་དཀྱིལ་འཁོར་དགོད་པའི་ཚོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནས་ལས་ཀྱི་མཆོག་རབ་ནི། །
གང་གིས་ཤེས་ན་སྒྲུབ་པ་པོས། །
དབང་དང་དགུག་དང་དབྱེ་བ་དང་། །
གསད་[1]དང་བསྐྲད་པ་ལ་སོགས་དང་། ༡ །

རྨུགས་དང་རེངས་པར་བྱེ་བ་དང་། །
རྨོངས་དང་དེ་བཞིན་ཞུར་བུས་གདབ། །
ཚིག་འཁྲུག་ལྐུགས་པར་འགྱུར་བ་དང་། །
འོན་དང་དེ་བཞིན་ལོང་བ་དང་། ༢ །

མ་ནིང་ཉིད་དུ་བྱེ་བ་དང་། །
གཟུགས་ནི་ཡོངས་སུ་འགྱུར་བ་སྟེ། །
ལས་ཆེན་བཅུ་གཉིས་འདི་དག་ནི། །
རྟག་ཏུ་སྒྲུབ་པ་པོ་ཡིས་བསྒྲུབ[2]། ༣ །

དངོས་གྲུབ་སྒྲུབ་པ་པོ་ལ་ནི། །
དྲན་པ་འགྲུབ་འགྱུར་གདོན་མི་ཟ། །

རྣལ་འབྱོར་པས་ནུས་པ་བསྐྱེད་པས་ཇི་ལྟ་བུའི་ལས་གྲུབ་ཅེས་དྲི་བ་ལ་དེ་ནས་ཀྱི་

---

1. བསད་ སྣ།
2. བསྒྲུབས་ སྣ། ཅོ། སྒྲུབས་ པེ།

སྒྲོའོ། །དེ་ཡང་[1]བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། ལས་ཀྱི་རབ་མཆོག་ནི་ཞེས་པ་ནི་ཤིན་ཏུ་མངོན་པར་འདོད་པའི་དོན་འབྱུང་བ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཤེས་པར་བྱའོ། །གང་ཅེས་ཞེས་པ་ལ[2]། གང་གིས་ཤེས་ན་སྒྲུབ་པ་པོས[3]། །ཞེས་གསུངས་སོ། །ཇི་ལྟར་སྒྲུབ་པ་པོའི་ཡེ་ཤེས་དེ་བཞིན་དུ་གཙོ་བོའི་དེ་ཅི་ཞེས་པ་ལ། དབང་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དེ་ནས་ལས་ཀྱི་མཆོག་རབ་བཤད། །ཅེས་པའི་གཞུང་ནི་གོ་སླའོ། །དབང་དུ་(དང་)དགུག་པ་གཉིས་གཅིག་གསོད་པ་དང་བསྐྲད་པ[4]གཉིས་གཅིག་ཉིད་དེ་ལས་ཀྱི་ཚོཏ་བཅུ་གཉིས་སོ། །དེ་དག་གི་ལས་ཆེན་པོ་རྣམས་དྲན་པ་ནི་བསམས་པ་ཙམ་གྱིས་དེ་དག་འགྲུབ་པར་འགྱུར་ཏེ། སྒྲུབ་པ་པོ་དང་སྦྱར་བར་བྱའོ། ༡-༤ །

ཐམས་ཅད་བླ་མའི་གནས་ལ་སོགས། །
མཁའ་འགྲོ་མས་ནི་ཐམས་ཅད་ཁྱབ། ༤ །

ཡེ་ཤེས་ལྡན་པའི་རང་སྐྱེ་གནས། །
ཡུལ་དང་ཡུལ་དུ་མངོན་པར་སྐྱེ། །
རྡོ་རྗེ་དཀྱིལ་འཁོར་གཙོ་མོ་ཡིན། །
དེ་རྣམས་མཁའ་འགྲོ་མ་རུ་བཤད། ༥ །

---

1. ‘ཡང་’ སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེ་གཉིས་སུ་མ་གསལ།
2. ཞེས་ལ་ལ་ པེ།
3. བསྒྲུབ་པ་པོས་ གསེར།
4. བསྒྲོད་པ་ གསེར། པེ།

རྣལ་འབྱོར་མ་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞིའི་གནས་ནི་ཐམས་ཅད་བླ་མའི་[1]ཞེས་གསུངས་སོ། ། ཐམས་ཅད་ནི་གཙོ་བོའི་གནས་ལ་སོགས་པའོ། །གནས་སོགས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྒྲའི་བདུན་པ་ཕྱི་བའོ། །ཐམས་ཅད་ཁྱབ་ཅེས་པ་ནི་དང་པོའི་མང་པོའི་ཚིག་ཕྱི་བའོ། ། ཡུལ་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་ཉིད་གནས་ལ་སོགས་པའི་མཁའ་འགྲོ་མ་ནི་ནིའི་སྒྲས་ཁྱད་པར་དུ་བྱེད་པའོ། །རང་སྐྱེས་ནི་[2]རང་གི་རིགས་སོ། །རྡོ་རྗེ་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་གཙོ་མོ་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་གཙོ་མོའོ། ༤-༥ །

ཀུ་ལུ་ཏ་དང་དགོན་པ་དང་། །
སིནྡྷུ་ཡུལ་[3]དང་གྲོལ་ཁྱེར་དབང་། །
གསེར་གྱི་གླིང་དང་སཽ་རཱཥྚ་[4]། །
དེ་བཞིན་ལྷ་ཡི་ཁྱིམ་[5]དང་ནི། ༦ །

ཀུལཏྟཡ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་གནས་སྟོན་ཏེ། གནས་ལ་སོགས་པའི་སྒྲས་མདོར་བསྟན་པ་ཀུལཏྟཡ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་རྒྱས་པར་བྱ་བཞིན་པའི་དུར་ཁྲོད་ལ་སོགས་པ་ཉིད་གནས་ཀྱི་ཐོག་མ་ཅན་དུ་གོ་བར་བྱའོ། །འདིའི་ཡང་གདམས་ངག་གི་

1. ཤར་དང་བྱང་གི་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྩ་བ་དང་རྒྱ་དཔེ་(སརྦཧཱརེཀྲ)ལྟར་བཀོད་པ་ཡིན།
2. སྐྱེ་གནས་(ཡོནིཿ) རྒྱ་དཔེ། རྩ་བ།
3. སིནདུའི་ཡུལ་ པེ། སིནྡྷུའི་ཡུལ་ སྣ།
4. སོའུ་རཥྚ་ པེ། སཽ་རཥྚ་ སྣ། ལྷ།
5. ལྷའི་ཁྱིམ་ པེ།

དོན་ནི་པུལླི་རམལཡ་ལ་སོགས་པའི་སྐྲས་གནས་ལ་སོགས་པ་གོ་བར་བྱའོ། །ཁྲིམ་གྱི་
ལྷ་ཞེས་པ་ནི་སྐྲའི་བདུན་པ་ཕྱི་བའོ། ༦ །

ཡི་དྭགས་གྲོང་དང་ཁ་བའི་གནས། །
ཀཱུཏྟིའརམ་ལམྦཱཀ་ཡི་ཡུལ[1]། །
ཀ་ལིངྒ་[2]དང་ཀོ་ས་ལ། །
ཏྲི་ཤ་ཀུ་ནི་ཨོ་ཏྲི་དང་། ༧ །
ཀཱ་མ་རཱུ་པ་མཱ་ལ་ཝ[3]། །
ལྷ་མོའི་མཁར་དང་རཱ་མའི་དབང་[4]། །
གོ་ད་བ་ནི་ཨརྦུ་ད[5]། །
ཨོཌྜཱན་ཛཱ་ལནྡྷ་ར་[6]དང་། ༨ །
པུལླི་ར་མ་ལ་ཡ་[7]སོགས། །
ཡུལ་འདི་དག་གི་བུ་མོ་གང་། །
དཔའ་བོ་གཉིས་མེད་རྣལ་འབྱོར་མ[8]། །

---

1. ཀནྟིའརམ་ལམ་པཀའི་ཡུལ། པེ། ཀཱུཏྟིའརམ་ལྤཱུ་པ་ཡུལ། སྣ། ལྷ།
2. ཀལིངྒ ལྷ། ཀལིངཀ པེ། སྣ།
3. ཀམརུཔ་མལཝ། པེ། ཀཱམརུཔ་མཱལཝ། སྣ།
4. ར་མིའི་དབང་ པེ།
5. ཨརབུདར སྣ། པེ། ཨརྦུད འགྲེལ་པ།
6. ཨུཌྜནཛཱལནྡྷར པེ། ཨུཌྜནཛཱལནྡྷར སྣ།
7. བུལིརམ་ལ་ཡ་ པེ། པུལའི་རམ་ལ་ཡ་ སྣ། པུལིརམ་ལ་ཡ་ ལྷ།
8. དཔའ་བོ་གཉིས་མེད་ཁྱབ་པའོ། འགྲེལ་པ། རྒྱ་དཔེའི་རྒྱ་བ།

དེ་ཀུན་འདོད་པའི་གཟུགས་ཅན་ཏེ།

ཡིད་ཀྱི་ཤུགས་ཀྱིས་འཇུག་པ་ཡིན[1]།

ཏྲི་ཤཀུ་ནི་ཞེས་པ་ནི་བདུན་པའི་དོན་ལ་དང་པོ་སྟེ་དེ་བཞིན་གྱི་སྒྲའི་དོན་ཏོ། །དོ་ཧེ་དཀྱིལ་འཁོར་གཙོ་མོ་ཡང་ཕྱོགས་གང་དང་གང་ན་དེ་ཡོད་ཅེས་འདྲི་བ་ལ་ཀུ་ལུ་ཏཱ་ཡ་[2] ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་བརྗོད་དོ། །དེ་རྣམས་སུ་ཨཙྪུད་ལ་སོགས་པ་ཡུལ་དེར་གནས་པར་གསུངས་ཏེ། ཨུཌྜི་ཡཱ་ན་[3]དང་འབར་བ་འཛིན་པ་དང་། །པུ་ལླི་ར་མ་ལ་ཡ་[4]དང་པོར་གྱུར་པ་གང་དག་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཨུཌྜི་ཡཱ་ན་[5]དང་། འབར་བ་འཛིན་པ་དང་། པུ་ལླི་ར་མ་ལ་ཡ་ལ་སོགས་པ་དང་[6]ཨཙྪུད་ལ་སོགས་པ་ཀུ་ལུ་ཏཱའི་མཐའ་ཅན་ནོ། །དགོངས་པས་ཀྱང་འདིར་པུ་ལླི་ར་མ་ལ་ཡ་དང་པོར་བྱས་པའི་འབར་བ་འཛིན་པ་དང་ཨུཌྜི་ཡཱ་ན་[7]དང་། ཨཙྪུད་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ན་ཡོད་པའི་གདམས་ངག་གི་དོན་དུ་གོ་རིམ་[8]མ་ཡིན་པར་བསྟན་པའོ། །འདིས་དཀྱིལ་འཁོར་དང་ལུས་ལ་པུ་ལླི་ར་མ་ལ་ཡ་ལ་སོགས་པར་རྣལ་འབྱོར་མ་

---

1. འཇུག་པ་ཡིས་ སྡེ། ལྡོག་པ་ཡིན་(ཞིཕཧཡེ) རྒྱ་དཔེ། འགྲེལ་པ།
2. ཀུ་ལ་ཏཱ་ཡ་ གསེར། པེ།
3. ཨོ་ཊི་ཡཱ་ན་ གསེར། པེ།
4. པུ་ལླི་ར་མ་ཡ་ ཅོ།
5. ཨོ་ཊི་ཡཱ་ན་ གསེར། པེ།
6. 'དང་' གསེར་བྲིས་དང་པེ་ཅིང་པར་མའི་ནང་མེད།
7. ཨོ་ཊི་ཡཱ་ན་ གསེར། པེ།
8. གོ་རིམས་ སྡེ། ཅོ།

དགོད་པར་བརྗོད་པའོ[1]། །བུ་མོ་གང་། དཔའ་བོ་གཉིས་མེད་ཁྱབ་པའོ། །ཞེས་པ་ནི་བུ་མོ་ཐམས་ཅད་དུ་དེ་ལྟ་བུ་ཉིད་ལ་ནི་བར་གནས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དཔའ་བོ་ཐོད་པའི་དུམ་བུ་ལ་སོགས་པ་དང་གཉིས་སུ་མེད་པར་ཁྱབ་པའི་ངང་ཚུལ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ཏེ་སྔའི་རྒྱན་ཕྱི་བ་ཡང་ངོ་། །པུཾ་ཛཾ་ཨོཾ་ཨཾ་གོཾ་རྣཾ་དེཾ་སྨྣཾ་ཀྣཾ་ཨོཾ་ཏྲཾ་ཀོཾ་ཀྣཾ་ལཾ་ཀྣཾ་དེཾ[2]། པྲཾ་གྲཾ་སོཾ་སུཾ་ནཾ་སེཾ་མཾ་ཀུཾ[3]། ཞེས་པའི་ཡི་གེ་ནི་ཤུ་རྩ་བཞིར་གྱུར་པའི་སྔགས་ནི་སྔས་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་རྣམས་ལ་ཟླ་ཚེས་དང་ཐིག་ལེར་བཅས་པ་ལས་གོ་རིམ[4]ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་སྐྱེས་པའི་ལུས་ཀྱི་གནས་སུ་པུལླི་རམལཡ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་སུ་རབ་ཏུ་གཏུམ་མོ་ལ་སོགས་པའོ། །ཨོཾ་ཀརཀར་པྲཙཎྜ་ཧཱུྃཧཱུྃ་ཕཊཕཊ། ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་སྔགས་ལས་སྐྱེས་པ་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །འདོད་པའི་གཟུགས་ཅན་ཞེས་པ་ནི་འདོད་པ་ཙམ་དང་འབྲེལ་པའི་གཟུགས་སོ། །དོན་གང་གིས་ཞེས་པ་ལ། ཡིད་ཀྱི་ཤུགས་ཀྱིས་ལྡོག་པ་དང་། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། དགོས་པ་གང་ལ་ཡིད་རབ་ཏུ་ཞུགས་ནས་དེ་གྲུབ་པ་དང་དེ་ནས་ཡིད་ཀྱི་ཤུགས་ཀྱིས་ལྡོག་པའོ། ༢_༡ །

རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་ཀུ་ལུ་ཏར། །
སྒྲ་ངམ་ཡུལ[5]ན་མ་མོ་རྣམས། །

1. བརྗོད་པར་ གསེར། པེ།
2. པུཾཛཾཨོཾཨཾགོཾརྣཾདཾསྨྣཾཀྣཾཨོཾཏྲཾགོཾཀྣཾལཾཀཾདེཾ གསེར། པེ། པུཾཛཾཨོཾཨཾགོཾརྣཾདེཾསྨྣཾཀྣཾཨོཾཏྲཾཀོཾཀྣཾལཾཀཾདེཾ སྣར།
3. པྲཾགྲཾསོཾསུཾནཾསེཾམཾཀུཾ པེ། པྲཾགྲཱིམནཾསེཾམཾཀུཾ གསེར།
4. གོ་རིམས་ སྣར། ཅོ།
5. སྒྲ་ངན་ཡུལ་ ལྷ། པེ།

སིནྡྷུའི་ཡུལ་[1]ན་ལཱ་མ་སྟེ། །
རིགས་ཀྱི་གཙོ་མོ་ན་ག་རར[2]། ༡༠ །

ལམྤཱ་ཀ་དང་སཽ་རཱཥྚར[3]། །
རིགས་ཀྱི་ལྷ་མོ་རྣམས་ཡིན་ནོ། །
ཡི་དྭགས་གྲོང་དུ་བུ་མོ་ཆེ[4]། །
མཁའ་འགྲོ་རུདྲ་པི་ཀ་རུ་[5]བཅས། ༡༡ །

ཕྱི་རོལ་གྱི་ཡུལ་དུ་རྣམ་པར་དཔྱོད་པའི་དེའི་རིགས་གང་ཡིན་པ་དེ་རབ་ཏུ་བསྟན་པའི་ཕྱིར། རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ལུས་ལ་གནས་པའམ་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་པའི་པུལླི་རམ་ལཡ་ལ་སོགས་པའི་རབ་ཏུ་གཏུམ་མོ་ལ་སོགས་པ་རིམ་པ་བཞིན་དུ་ཤེས་པར་བྱའོ། །ཕྱི་རོལ་གྱི་ཡུལ་རྣམས་སུ་དེའི་རིགས་སུ་སྐྱེས་པ་ཇི་ལྟ་བའམ་དེ་བཞིན་དུའོ། །རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་དང་གཤིན་རྗེ་མ་ལ་སོགས་པའི་མ་མོ་དྲུག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་མ་མོ་བདུན་གྱི་གཟུགས་སོ། །སྦྱ་ངམ་ཡུལ་དུ་ལཱ་མའི་རིགས་ཀྱི་གཙོ་མོ་ཞེས་བྱའོ། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་རིགས་ལས་བྱུང་བ་ལམྤཱ་ཀ་སཽ་རཱཥྚར་[6]རིགས་ཀྱི་

1. སིན་དུའི་ཡུལ་ པེ།
2. ནཱག་རར་ པེ།
3. ལམ་པ་ཀ་དང་སོ་འུ་རཥྚར་ པེ། ལཾ་པ་ཀ་དང་སོ་རཥྚར་ སྣ། ལམྤཱ་ཀ་དང་སོ་རཥྚར་ ལྷ།
4. གྲོང་དང་ནགས་ཆེན་པོར་ སྡེ། པེ། ལྷ། གྲོང་དང་ནག་ཆེན་པོར་ སྣ། གོང་དུ་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཀོད་པ་ཡིན།
5. རུ་པི་ཀ་རུ་ སྣ། ལྷ། རུ་པི་ཀ་རུ་ པེ།
6. ལམྤཱ་ཀ་སོ་སོ་རཱཥྚར་ གསེར། ལཾ་པ་ཀ་སོ་རཱཥྚར་ པེ། སྡེ། ཅོ།

ལྷ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རིགས་ཀྱི་ལྷའི་གཟུགས་ལ་མཆོད་པ་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཡི་དྭགས་གྲོང་དུ་བུ་མོ་ཆེ། །མཁའ་འགྲོ་མ་དང་བཅས་པའི་གཟུགས། །ཞེས་པ་ནི་བུ་མོའི་གཟུགས་ནི་མཁའ་འགྲོ་མ་སྟེ་གཟུགས་ཅན་མའི་རིགས་སོ། ༡༠-༡༡ །

ཁ་བའི་རི་དང་ཀཱཉྩིར་ནི[1]། །
བྲིས་བཅས་མ་རུ་བཤད་པ་སྟེ། །
པཱཉྩལ་ཡི་ཡུལ་[2]དག་ན། །
ཁྲིམ་གྱི་ལྷ་མོ་ཀ་ལིངྐར[3]། །
བརྟུལ་ཞུགས་[4]འཛིན་པ་རྣམས་ཡིན་ནོ། ༡༢ །

ཁ་བའི་རི་དང་ཀཱཉྩི་རུ་བཱ་ལིག་དང་བཅས་པ་ཞེས་པ་ནི་སབ་ལིག་འི་[5]རིགས་སོ། །དེ་ཉིད་པཉྩལའི་ཡུལ་ལོ། །ཁྲིམ་གྱི་ལྷ་ནི་ཁྲིམ་གྱི་ལྷ་ལའོ། །གཡོག་ནི་བརྟུལ་ཞུགས་འཆང་བའོ། ༡༢ །

ཀོ་ས་ལར་ནི་ཤ་ཟ་བ། །
ཡི་དྭགས་གྲོང་དུ་དེ་བཞིན་དུ[6]། །

---

1. ཁ་བ་རི་དང་ཀན་ཙིར་ནི། པེ། ཁ་བ་རི་དང་ཀཱཉྩིར་ནི། ལྷ།
2. པནཙལའི་ཡུལ་ པེ།
3. ལྷ་མོ་ཀ་ལིང་ཀར་ སྣ། ལྷ་མོཾ་ཀ་ལིང་ཀར་ པེ། ལྷ་མོ་ཀ་ལིངྐར་ ལྷ།
4. བརྟུལ་བཞུགས་ སྣ།
5. སལིགའི སྡེ། ཅོ།
6. དེ་བཞིན་ཏེ་ པེ།

རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་སྒྲོམ་དབང་ཕྱུག[1] །
ཧྲི་ཤ་ཀུ་ཉེར་དུམ་སྐྱེས་མ། ༡༣ །

ཀོསལལར་ནི་ཤ་ཟན་མ་སྟེ་ཤ་ཆེན་ཟ་བའོ། །ཡི་དྭགས་གྲོང་དུ་རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ། ཞེས་[2]པ་ནི་ཡི་དྭགས་གྲོང་དུ་ཡང་དག་པར་བྱུང་བའི་རྣལ་འབྱོར་ནི་གཉིས་སུ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་སོ། །སྒྲོམ་པའི་དབང་ཕྱུགས་ལ་སོགས་པ་ནི་དུམ་སྐྱེས་མའི་རིགས་སུ་གྱུར་པའོ། ༡༣ །

པུལླི་ར་[3]མ་ལ་ཡ་དེ་བཞིན། །
གསེར་རིར་སླེ་ཤ་ཅན་རིགས་སྐྱེས། །
བུད་མེད་སྟོང་ཕྲག་ཉི་ཤུ་གཅིག[4] །
ལྷག་མ་གཞན་དག་ཛི་སྐྱེད་པ[5]། ༡༤ །

པུལླིརམལཡ་དང་། གསེར་གྱི་རི་ཞེས་པ་ནི་འདིར་མཐར་སྐྱེས་པའི་བུད་མེད་སྟོང་ཕྲག་ཉི་ཤུ་རྩ་གཅིག་ཅེས་པ་ནི་མང་པོར་བསྟན་པའི་དོན་ཏོ། །ལྷག་མ་གཞན་ནི་ཙེ་སྐྱེད་པ། །ཞེས་པ་ནི་ཡུལ་གཞན་རྣམས་སུ་ཡང་དེ་ལྟ་བུ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཛི་སྐྱེད་པ་ནི་ཛི་སྐྱེད་པའོ། ༡༤ །

---

1. སྒྲོ་དབང་ཕྱུག་ པེ།
2. ཞེས་པ་ནི་ཡི་དྭགས་གྲོང་མ་ཞེས་ སྡེ། ཅོ།
3. པུལིར་ སྣ། ལྷ། པེ།
4. ཉེ་ཤུ་ཅིག་ སྣ།
5. ཛེ་སྲིད་པ་ སྣ། ལྷ།

དཔལ་ལྡན་ཧེ་རུ་ཀ་ཡི་ནི། |
འཁོར་ལོའི་རྣལ་འབྱོར་མ་ཡིན་ནོ། |
ཧེ་རུ་ཀ་དཔལ་སྦྱོར་བ་ཆེ། |
དེ་ཡི་[1]དཀྱིལ་འཁོར་གཙོ་མོ་ཡིན། ༡༥ |

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་རྣལ་འབྱོར་ཞེས་པ་ནི་དང་པོ་མང་པོའི་ཚིག་ཕྱི་བའོ། །ལྷ་མོ་སུམ་ཅུ་རྩ་དྲུག་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་སྦུབ་པ་[2]ཆེན་པོ་ནི་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཉིད་དམ་ཐབས་དང་ལྡན་པའོ། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་དེ་དང་འབྲེལ་པ་རྣམས་ཏེ། དེ་རྣམས་ཀྱི་ནང་ནས་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་གཙོ་མོ་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་དང་སྙོམས་པར་ཞུགས་སོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །སྦུབ་པ་ཆེན་པོའི་སྤྲུལ་པ་ནི་སྤྲའི་རྐྱེན་མེད་པའོ། །གང་གི་ཕྱིར་དེའི་སྤྲུལ་པ་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀར་ཡང་དག་པར་བྱས་ནས་སོ། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་གཙོ་མོ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཁ་ཅིག་ཟེར་རོ། ༡༥ |

མཁའ་འགྲོ་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་འདིས། |
རྒྱུ་དང་མི་རྒྱུའི་[3]འཇིག་རྟེན་གསུམ། |
འགྲོ་བ་ཀུན་ནི་འདི་ཡིས་ཁྱབ། |
མཁའ་འགྲོ་མ་ཡི་[4]དམ་ཚིག་འདི། |
སྤྲུལ་པ་སྒོམ་པ་ཉིད་ཡིན་ཏེ། ༡༦ |

1. དེའི་ ཡེ།
2. བསྦུབ་པ་ གསེར། ཡེ།
3. རྒྱུ་དང་མི་རྒྱུ་ སྣ། ལྷ།
4. མཁའ་འགྲོ་མའི་ ཡེ།

ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་ནི་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞིས་རྒྱུ་བ་དང་མི་རྒྱུ་བ་ཐམས་ཅད་ཁྱབ་པ་སྟེ། སྐུ་དང་གསུང་དང་ཐུགས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནོ། །ཅིའི་ཕྱིར་དེ་ལྟར་ཞེས་པ་ལ། དམ་ཚིག་དེ་དག་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ཞེས་པ་ནི་དམ་ཚིག་ནི་གདམས་ངག་[1]གོ །དེ་དག་ཅི་ཙམ་ཞེས་པ་ལ་སྨྲུལ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། ངེས་པར་བྱུང་ཞིང་གཞལ་ཅིང་བཅད་པ་ནི། ཡོངས་སུ་གཞལ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །དེ་དག་རྣམས་ཀྱི་དངོས་ཀྱི་འབྲས་བུ་ཅི་ཞེས་པ་ལ། དེ་ཡང་བསྒོམས་པས་ཞེས་གསུངས་ཏེ། འཁོར་པ་ཆེན་པོའི་རྣམ་པ་[2]ཡང་དག་པར་སྐྱེས་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༡༦ །

བསམ་གཏན་ལ་སོགས་གང་ཅིའང་རུང་[3]། །
ས་སྟེང་[4]ན་ནི་རྫོགས་འགྱུར་བའོ། །
གཡོན་གྱི་སྦྱོད་པ་གཅེར་བུ་ཡིས[5]། །
མཚན་མོ་རྟག་ཏུ་མཉམ་བཞག་པས། ༡༧ །

བསམ་གཏན་ལ་སོགས་གང་ཅིའང་རུང་། །ས་སྟེང་ན་ནི་རྫོགས་འགྱུར་བའོ[6]། །ཞེས་པ་ནི་བསམ་གཏན་གང་ཅི་ཡང་རུང་བ་ཐུགས་དང་ཕྱག་རྒྱ་སོགས་པ་དེ་དང་

---

1. དམ་ཚིག་ནི་གདགས་ངག་ ཅོ།
2. རྣམ་པར་ ཅོ།
3. གང་ཅི་རུང་ པེ།
4. ས་སྟེངས་ སྣ། པེ།
5. གཅེར་བུ་ཡིན་ སྣ།
6. བོད་དཔེར་"ས་སྟེང་ན་ནི་སྦྱོད་པ་རྫོགྟ་"ཞེས་ཡོད་ཀྱང་དེར་རྩ་བ་དང་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་པ་ཡིན།

འབྲེལ་པ་དེ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ཉིད་དོ། །ས་ནི་ས་གཞི་ལ་རྒྱས་པར་ནི་མ་ལུས་པས་སོ། །སྙིང་ནི་རང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་གཅེར་བུ་སྐྲ་གྲོལ་མེད་པར་བྱའོ། །ཐུབ་མོ་ཞེས་པ་ནི་མཉམ་པ་ཉིད་ལའོ། ༡༧ །

སྐྱེས་པའམ་གལ་ཏེ་གཡོན་པ་ཀུན། །
རྣལ་འབྱོར་མ་ཀུན་དཔའ་བོ་འགྲོ། །
ཕྱག་རྒྱ་གར་གྱི་མཆོད་པ་ཡིས། །
རང་བྱུང་[1]རྟག་ཏུ་མཆོད་ན་ནི། །
མ་ལུས་ལུས་པ་མེད་གྲུབ་ཅིང་། །
གཡོན་པའི་མཆོད་པ་ལ་རབ་འདུག ༡༨ །

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་ཡི་གེ་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞིའི་དཀྱིལ་འཁོར་དགོད་པའི་ཚོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་བཞི་བཅུ་རྩ་གཅིག་པའོ[2]།། །།

དེས་ཅི་ཞེས་པ་ལ་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དཔའ་བོས་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ཡང་དག་པར་བྱུང་བ་ནི་དཔའ་བོར་འབྱུང་བ་སྟེ། ཐོད་པའི་དུམ་བུ་ལ་སོགས་པའི་དཔའ་བོའོ། །རྣལ་འབྱོར་མ་རབ་ཏུ་གཏུམ་མོ་ལ་སོཏ་པ་མཉེས་པས་སོ།། ཕྱག་རྒྱ་དང་ལྷའི་སྦྱོར་བས་གར་ལ་སོགས་པ་ལ་ཉེ་བར་སྤྱོད་པའོ། །དེ་ཡང་ཐ་མལ་

1. རང་འབྱུང་ པེ།
2. བཞི་བཅུ་རྩ་གཅིག་གོ་ སྣ།

པས་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེས་ཧག་ཏུ་མཆོད་པར་བྱའོ། །རང་འབྱུང་གི་ཧུལ་དང་ལྡན་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱིས་སོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མཆོད་པ་རྣམ་པར་དག་པར་བརྗོད་པ་ནི་གཡོན་པའི་[1]མཆོད་པ་གཙོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། ༡༨ །

ཉི་ཤུ་རྩ་བཞིར་སྤྲས་པའི་ཡི་གེ་པུ་ལ་སོགས་པ་དེ་སྙིང་གི་གྲངས་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་གྲངས་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱི་ཚོགས་དེ་དགོད་པ་ཡང་ངོ་། །དེ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཡིན་ལ་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་དེ་དེ་བཞིན་ནོ། །བཞི་བཅུ་གཅིག་ནི་བཞི་བཅུ་རྩ་གཅིག་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་བཞི་བཅུ་རྩ་གཅིག་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། །།

✶

1. གཡོན་པ་ གསེར།

བཞད་པའི་སྟོགས་དང་མཁའ་འགྲོ་མའི་གཟུགས་ཀྱི་ སྒྲུ་མའི་ཚོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནས་དཔའ་བོ་མེ་ཏོག་ཆུ།
འཐུངས་ནས་སྟོགས་འདི་རྗེས་དྲན་བྱ།
གར་ནི་[1]འདི་ལྟར་བྱ་བ་ཉིད།
ཕྱག་རྒྱ་ལྡན་ཅིག་སྒྲུབ་པ་པོས། ༡

མཚན་མོ་ནག་ཏུ་ཤ་བཟའ་བ།
སྟོགས་འདི་ཉིད་ཀྱིས་ལན་གསུམ་བསྟོགས།།
མྱུར་དུ་བདེ་བ་འཐོབ་པར་[2]འགྱུར།
འཐུངས་དང་དེ་བཞིན་བྱིན་པ་དང་[3]། ༢

རིག་ནས་བཞག་ན་གཙོ་མོ་ཆེ།
བདེན་པས་ཚངས་པར་སྤྱོད་པ་དང་།
ཐོག་མཐར་[4]བཞད་པའི་ཕྱག་རྒྱ་ཡིས།
བལྟ་བའི་བསྐེམས་པ་གྲགས་[5]ལྡན་པ། ༣

---

1. ནག་ཏུ་ ཙ་བ། གོང་དུ་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཀོད་པ་ཡིན།
2. ཐོབ་པར་ པེ།
3. མཐུངས་དང་དེ་བཞིན་བྱིན་པ་དང་། པེ། འཐུངས་དང་དེ་བཞིན་སྦྱིན་པ་དང་། འགྲེལ་པ།
4. ཐོག་མར་ སྣ། ལྷ།
5. དྲགས་ སྡེ། དྲེགས་ པེ།

ལེའུ་སུམ་ཅུ་རྩ་དགུ་པ་དགོད་པ་མདོར་བསྟན་པ་དེ་རྒྱས་པར་སྟོན་པའི་སྔགས་ལ་སོགས་པའི་ལེའུ་ནི་དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །གང་གི་ཕྱིར་སྔགས་ལ་སོགས་པ་མེད་པར་དགོད་པར་མི་བྱ་སྟེ། དེའི་ཕྱིར་དཔའ་བོ་ནི་དཔའ་བོའི་རོ་དང་ལྡན་པའོ། །འདི་ནི་སྔགས་འདི་སྐེ་རྐང་པ་བརྒྱད་པའམ་ཡི་གེ་བདུན་པའོ། །རྗེས་སུ་དྲན་པ་ནི་བསྒྲག་པའོ། །ཅི་བྱས་ནས་ཞེས་པ་ལ་མེ་ཏོག་ཆུ་དང་དྲུལ་དང་ལྡན་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བཏུང་བའོ། །དེ་ནས་རྡོ་རྗེའི་འགྲོས་ཀྱི་གར་བྱའོ། །ཕྱག་རྒྱ་ཤེས་རབ་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་མཚན་མོ་ཤའི་བཟའ་བ་བྱའོ་ཞེས་སྦྱར་རོ། །ཅི་ལྟ་བུར་གྱུར་པ་ནི་གསུམ་གྱིས་བཅིར་པའོ། །གསུམ་གྱི་སྐྱུ་ལ་སོགས་པ་གསུམ་གྱིས་བཅིར་བའོ། །དེ་ལྟ་ན་ཡང་ཅིས་ཞེས་པ་ལ། དེས་ནི་ཞེས་གསུངས་ཏེ། སྔགས་འདི་མཆོག་ཏུ་བྱས་པའོ། །སྔགས་གསུངས་ཏེ་བདེ་བ་ཐོབ་པར་འགྱུར་ཞེས་གསུངས་ཏེ། ཨོཾ་ཨསྟུ་ སུཁ་བཧྲཾ ཧཱུྃ་[1]ཞེས་པའི་སྔགས་འདིའོ། །ཁ་ཅིག་ན་རེ་ཨོཾ་ སུ་ ཁ་ བཧ་ ཧཱུྃ་[2]ཞེས་ཟེར་རོ། ། བདུད་རྩི་རྣམ་པ་ལྔ་ལ་སོགས་པ་འདིས་སྔགས་ལ་ཉེ་བར་དགོད་[3]པར་བྱའོ། །གཞན་རྣམས་ལ་ཡང་སྦྱིན་ནོ་ཞེས་པ་ནི། འབྱུངས་[4]དང་དེ་བཞིན་སྦྱིན་པ་དང་། །ཞེས་གསུངས་སོ། །དམ་ཚིག་ཅན་ལ་རེག་ནས་བདེ་བར་གྱུར་པ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་སྔགས་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་སྦྱིན་ཞིང་བགད་དོ། །དེའི་ཕྱིར་བཞད་དང་ཞེས་གསུངས་སོ། །རིག་

---

1. ཨོཾཨསྟུསུཁབཧྲཾཧཱུྃ གསེར། པེ། ཨོཾཨསྟུསུཁབཧྲཾཧཱུྃ སྡེ། ཅོ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
2. ཨོཾསུཁབཧྲཾཧཱུྃ སྡེ། ཅོ།
3. ཉེ་བར་བགོས་ གསེར། པེ།
4. འབྱུང་ སྡེ། པེ། སྣ། ཅོ། གོང་དེར་རྩ་བ་ལྟར་བཀོད་ཡོད།

ཅེས་པའི་གཞུང་ལ་ནི་བདེ་བར་གནས་པ་ལ་རེག་པ་བཞེད་དོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །
རིགས་ཆེན་མོ་ནི་བརྟུལ་ཞུགས་ཆེན་པོས་སྤྱོད་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །
བདེན་པས་ཚངས་པར་སྤྱོད་པ་དང་། །ཞེས་པ་ནི་བདེན་པ་ནི་ཚངས་པ་དེས་ཚངས་པར་སྤྱོད་དོ་ཞེས་[1]བྱ་བ་ནི་དཀའ་ཐུབ་ཅེས་འདིར་བརྗོད་དོ། །དེ་ལྟ་བུར་གྱུར་པ་ཕྱི་རོལ་མ་ཡིན་པར་ཕྱག་རྒྱ་ལ་དགོད་[2]པར་བྱའོ། །ཅི་བྱས་ནས་ཞེས་པ་ལ་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ[3]ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །བསྒྲུབ་པར་བྱ་བས་ན་བསྒྲུབ་བྱ་སྟེ། སྒྲུབ་པ་པོས་དེས་བདུད་རྩི་རྣམ་པ་ལྔར་སྦྱང་བའི་མཐར་དགོད་[4]པའི་ཕྱག་རྒྱས་མཚན་པར་མཐོང་ནས་བཀག་པར་བྱའོ། །ཇི་ལྟ་བུར་གྱུར་པ་ཞེས་པ་ལ་ལྟ་བའི་བསྙེམས་པ་སྟེ་དེ་བལྟས་པས་མཐོང་བའི་བསྙེམས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །དེ་ལྟ་བུར་གྱུར་པ་དེ་ནི་སྐལ་གྲགས་ཡིན་ནོ། །འདིས་ཞེས་པ་[5]ནི་ཀིལིཀིལི་ལ་སོགས་པ་དང་། ཧེཧེ་ལ་སོགས་པ་ཡང་ངོ་། །བཞད་པ་ནི་བགད་པ་[6]སྟེ། སྒྲའི་ནཱདའི་རྒྱན་གྱིས་གྲུབ་པའོ། །བདུད་རྩི་རྣམ་པ་ལྔ་སྦྱང་བ་[7]སྔོན་དུ་སོང་བས་སྒྲུབ་པ་པོས་བཞད་པར་བྱའོ་ཞེས་སྒྲུར་རོ། །དེ་ཡང་ཕྱི་རོལ་ཕྱག་རྒྱ་དེ་ཞེས་པ་ནི་[8]དེ་ལྟ་བུ་ཉིད་དུ་སྒྲུར་རོ་ཞེས་བྱ་སྟེ།

1. ཞེས་པར་ གསེར། པེ།
2. གོད་ གསེར། པེ།
3. བསྒྲུབ་བྱའོ་ གསེར། པེ།
4. སྦྱངས་པའི་མཐར་གོད་ གསེར། པེ།
5. ཤེས་པ་ གསེར། པེ།
6. གོད་པ་ གསེར། པེ།
7. སྦྱངས་པ་ གསེར།
8. ཞེས་པ་ན་ སྣེ།

ཤེས་རབ་དང་ཐབས་དག་ཀྱང་བཤད་དོ་ཞེས་དེས་གྲུབ་བོ། །བདེན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་གཞན་ཁ་ཅིག་གིས་[1]དེ་ལྟ་བུར་གྱུར་པའི་སྒྲུབ་པ་པོ་མཐོང་ནས་བཤད་དོ་ཞེས་ཁ་ཅིག་ཟེར་རོ། ༡-༣ །

མཚན་མོའང་དེ་བཞིན་ཉིན་མོ་ནི། །
འདིས་ནི་བཤད་པ་རྟག་ཏུ་[2]བྱ། །
གཟུགས་དང་ལས་ཀྱི་གསང་བ་གང་། །
ཇི་ལྟར་གནས་པ་དཔའ་བོ་ཉིད། ༤ །

མཚན་མོ་ཞེས་པ་ནི་ཕྱི་རོལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་རོ་ནུབ་པའི་[3]རང་བཞིན་ནི་དགའ་བྲལ་གྱི་དགའ་བའོ། །ཉིན་མོ་ནི་རང་རིག་པ་ཙམ་དེའི་རང་བཞིན་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའོ། །འམ་ནི་དགའ་བ་དང་མཆོག་ཏུ་དགའ་བ་ཉིད་བསྡུ་བའི་དོན་ཏོ། །དེ་བཞིན་ནི་དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་དོན་བསྟན་པའོ། །དེ་ཡང་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་ཤེས་པའི་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་རྟོགས་པས་[4]བྱས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་གནས་སྐབས་འཐོབ་པོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་ནི་གསལ་པོ་ཉིད་དོ། །
རྣལ་འབྱོར་པ་དེ་མཐོང་ནས་གནས་ལ་སོགས་པ་ན་གནས་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་

---

1. ཁ་ཅིག་གི་ ཅོ།
2. དག་ཏུ་ སྡེ། སྣ། ལྷ།
3. ནུས་པའི་ སྡེ། ཅོ།
4. རྟོགས་པར་ གསེར།

སྡོན་མ་བྱུང་བའི་གཟུགས་ཀྱིས་[1]བྱ་བ་སྟོན་པ་ནི་གཟུགས་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །གཟུགས་ཀྱི་རང་བཞིན་དང་ལས་ཀྱི་བྱ་བ་[2]གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་གཅིག་པ་སྟེ། གསང་བ་དེ་ལྟ་བུར་གྱུར་བ་གསང་བར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དཔའ་བོ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའོ། །ཇི་ལྟར་གནས་པ་ནི་ཇི་ལྟར་ཡོངས་སུ་གནས་པའོ། ༩ །

ཧག་ཏུ་དེ་ཡི་[3]མཆི་མ་འབྱུང་། །
དད་པས་དེ་ཡི་[4]སྤྱི་ཡང་ལྡང་། །
རྡོ་རྗེ་ལ་ནི་འགོམ་མི་བྱེད། །
དེ་བཞིན་གཅེར་བུར་[5]མཆོད་པ་སྟེ། ༥ །

གཡོན་པའི་དབང་ཕྱུག་[6]ཐམས་ཅད་ཀྱི། །
ཕྱག་རྒྱའི་ཚོགས་ཀྱི་རིམ་པ་ཉིད། །
དབུགས་འབྱིན་སྐྱུལ་དངདགོད་པ་[7]དང་། །
སྙིག་པའི་[8]གར་ནི་ངོ་མཚར་བས། ༦ །

---

1. གཟུགས་ཀྱི་ གསེར། པེ།
2. ལུས་ཀྱི་བྱ་བ་ སྡེ། ཅོ།
3. ཧག་ཏུ་དེའི་ པེ། གར་བྱེད་དེ་ནས་ འགྲེལ་པ།
4. དེའི་ པེ།
5. གཅེར་བུས་ སྣ།
6. འདོད་པའི་དབང་ཕྱུག་ བོད་འགྱུར་རྩ་བ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་དང་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཀོད་པ་ཡིན།
7. བསྐྱུལ་དང་དགོད་པ་ སྣ། སྐྱུལ་དང་རྐོད་པ་ སྡེ། པེ།
8. སྙིག་པར་ སྣ།

སྣ་ཚོགས་གང་དག་མདུན་བྱེད་ཅིང་། །
ཕྱག་རྒྱ་ སྤྱགས་ནི་རྗེས་དྲན་བྱ། །
ཧ་ཧ་ཧེ་ཧེ་རྣམ་བརྒྱད་བཞད། །
སྣ་ཚོགས་དབང་ཕྱུག་མཆོག་ཏུ་དགའ། ༧ །

དེ་ཉིད་ནི་གར་དང་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དང་པོར་གར་བྱེད་དོ། །དེ་ནས་མིག་དག་ལ་མཆི་མ་བྱུང་ཞིང་དད་པའི་[1]སྦྲའི་རྐྱེན་མེད་པ་སྟེ། གུས་པའི་ཚུལ་བྱེད་པའོ། །བདག་ཉིད་སྒྲོ་བ་ནི་བདག་ཉིད་བསྟེན་པར་སྒྲོ་བའོ། །དེ་བཞིན་གྱི་སྒྲས་ནི་མཆོད་ཡོན་ལ་སོགས་པའོ། །དད་པས་སྤྱི་ལྡང་དེ་བཞིན་ནོ། །ཞེས་པའི་གཞུང་ལ་ནི་བརྩེ་བས་བ་སྤྱི་ལྡང་བ་ཡང་ངོ་། །དེ་ལ་ནང་དུ་གྱུར་པའི་སྒྲུབ་པ་པོའི་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། བགོམ་པ་ནི་ཤིན་ཏུ་རྡོ་རྗེ་བསྒྲང་བར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །བགོམ་མི་བྱ་ཞེས་པ་ནི་གཞུང་ནི་ལུས་པ་བདག་གིས་སྤྱར་བགོམ་པ་ནི་ཤིན་ཏུ་བའི་དོན་ཉིད་དོ། །དམིགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་གཞུང་ལ་དེ་ལྟ་བུ་བྱས་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་རྙེད་ནས་དེས་ཀྱང་རྡོ་རྗེ་ཐོབ་པའོ། །དེའི་ཕྱིར། དེ་བཞིན་ཕྱོགས་ཀྱི་གོས་དང་མཆོད། །ཅེས་གསུངས་ཏེ། དེ་བཞིན་དུ་སྒྲིན་པ་མེད་པའི་གཡོན་པའི་རྣལ་འབྱོར་དབང་ཕྱུག་མ་རྣམས་དེ་དག་ཀུན་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱིས་སོ། །དེའི་ཕྱིར་དེ་ཉིད་ནི་ཁྱད་པར་རོ། །དེ་འདི་ནི་ཕྱག་རྒྱའི་ཚོགས་ཀྱི་རིམ་པ་གར་ལ་སོགས་པ་དང་རྡོ་རྗེ་འགོམ་པ་ལ་སོགས་པས་ཀྱང་ངོ་། །དབུགས་འབྱིན་པ་ལ་སོགས་པའི་ཁྱད་པར་

---

1. དང་པའི་ པེ།

གྲིས་རང་ཉིད་ཀྱི་མདུན་དུ་སྟོན་ཏེ། སྟོན་གྱི་བྱ་བ་བྱེད་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱི་མདུན་དུ་བྱའོ། །སྔགས་དང་ཕྱག་རྒྱ་ནི་དགོད་པའི་[1]ཕྱག་རྒྱའོ། །སྔགས་ནི་དེ་ཉིད་ཧཧཧེཧེ་[2]ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཧཧཧེཧེ་ཞེས་པ་ནི་དགོད་པ་[3]རྣམ་པ་བརྒྱད་དོ། །དགོད་པའི་སྔགས་ནི་རྗེས་དྲན་[4]ཞེས་པར་སྦྱར་ཏེ། ཧོཧོཧཱུྃཧཱུྃ་ཞེས་པའི་ཕྱི་མ་ནི་དེ་དག་ཅེས་པའི་[5]སྒྲས་བསྡུ་བའོ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་མང་པོའི་ཚིག་གི་མཐའ་ཅན་ཚོགས་པ་ཡང་དག་པར་བསྟན་པ་[6]ཡིན་ནོ་ཞེས་པའི་ཚིག་གིས་སོ། །སྔཊ་ཕྱི་མ་ཕྱེད་པོ་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། ཀིལིཀིལི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གཟུང་བས་སོ། །སྣ་ཚོགས་དབང་ཕྱུག་མཆོག་ཏུ་བརྟེ། །ཞེས་པ་ནི་འདི་ལྷ་བུའི་ཡི་གེའི་རྣལ་འབྱོར་མ་ནི་ཤིན་ཏུ་ཡང་བརྟེ་བའོ། །ཁྱད་པར་སྤྱོད་པ་མཆོག་ཏུ་བརྟེ། །ཞེས་པའི་གཞུང་ལ་ནི་གར་ལ་སོགས་པའི་ཁྱད་པར་གྱི་སྤྱོད་པ་སྟེ། དེ་ནས་ཧཱུ་ཧཱུ་རྣམ་པའི་མཐར་བྱེད་པའོ། ༥-༧ །

ཧཱུ་ཧཱུ་ཞེས་བྱ་འདི་[7]ཉི་བར། །
ཧག་ཏུ་མཆི་མ་འབྱུང་བ་དང་[8]། །

1. གོད་པའི་ གསེར། པེ།
2. ཧཧཧེ གསེར།
3. གོད་པ་ གསེར། པེ།
4. གོད……རྗེས་སུ་དྲན་ གསེར། གོད……རྗེས་དྲན་ པེ།
5. ཞེས་པའི་ གསེར། པེ།
6. བསྟེན་པ་ སྡེ། ཅོ།
7. འདིར་ འགྲེལ་པ།
8. ཧག་ཏུ་ངུ་དང་མཆི་མ་འབྱུང་། འགྲེལ་པ།

དེ་ཉིད་ཀྱིས་དེ་དགར་འགྱུར་ཞིང་། །
བསམ་གཏན་གྱི་སྟཊ་ལེགས་པར་སྦྱོར། ༧ །

དེའི་ཕྱིར། ཏཏྭ་རྣམ་པ་འདིར་ཉེ་བར། །ཞེས་གསུངས་སོ། །ཧག་ཏུ་ཊུ་[1]དང་མཚེ་མ་འབྱུང་བར་རབ་ཏུ་གནས་པའི་ཊུ་ཞིང་མཚེ་མ་འབྱུང་རབ་འཐོབ། ཅེས་པ་ནི་དེ་ཉིད་མཚེ་མ་ལྷུང་བ་དང་བཅས་པས་ཏཏྭའི་རྣམ་པས་ཀྱང་དེ་རྣམས་དགའ་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ཉིད་[2]ཅེའི་ཕྱིར་ཞེས་པ་ལ། བསམ་གཏན་སྟགས་ནི་རབ་ཏུ་སྦྱོར། ། ཞེས་གསུངས་ཏེ། བསམ་གཏན་དང་སྟགས་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་སྦྱར་ཞིང་མནན་པ་དེ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མའོ། །དེའི་རིགས་ལ་བཟླས་པས་བརྩེ་བ་དང་ལྡན་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་དགོངས་སོ། ༧ །

གཙོ་མོ་རྣམས་དང་དཔའ་བོ་ནི། །
སྲུ་ལྷུང་བ་དང་ལྷན་ཅིག་བདེ། །
རྡོ་རྗེ་འགོམ་པར་མི་བྱ་བ། །
གཡོན་པས་ཡོངས་སུ་བརྟགས་པ་ཡིན། ༨ །

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་བཤད་པའི་སྟགས་དང་མཁའ་འགྲོ་མའི་གཟུགས་ཀྱི་སྒྱུ་མའི་ཚོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་བཞི་བཅུ་རྩ་གཉིས་པའོ།། །།

1. ཧག་ཏུ་ཊུ་བ་ ཕ། གསེར།
2. དེའི་ཉིད་ གསེར།

རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་དང་རྣལ་འབྱོར་པ་[1]རྣམས་གཉི་ག་ཡང་དགའ་ཞིང་གཉི་ག་ཡང་སྨྲ་ལྡང་བ་ལ་སོགས་སོ། །གང་གི་མདུན་དུ་དོ་རྗེ་བགོམ་པར་བྱ། །ཞེས་པ་ལ་དོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། གང་གཡོན་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མར་ཡོངས་སུ་བརྟགས་པ་ཡིན་ཏེ། བདར་བྱས་པ་ལ་སོགས་པས་མཚོན་པ་དེ་མདུན་དུའོ་ཞེས་པ་ནི་རྟོགས་པར་བྱའོ། ༡ །

དགོད་པའི་[2]སྟགས་དང་རྣལ་འབྱོར་མའི་གཟུགས་སྤྲུལ་པ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཡིན་ལ་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་དེ་དེ་བཞིན་ནོ། །བཞི་བཅུ་གཉིས་ནི་བཞི་བཅུ་རྩ་གཉིས་སོ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་བཞི་བཅུ་རྩ་གཉིས་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། །།

1. རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་དང་རྣལ་འབྱོར་མ་ གསེར། པེ།

2. ཀོད་པའི་ གསེར། པེ།

ཉེ་བའི་སྙིང་པོའི་ལས་སྒྲུབ་པའི་ཆོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནས་སྤྱན་རས་གཟིགས་བཤད་དེ། །
དཔའ་བོ་དང་ནི་གཉིས་མེད་མི། །
གནས་ཀྱི་དབྱེ་བ་ཆོག་ཤེས། །
སློམ་ལ་རྟག་ཏུ་མངོན་དགའ་བའོ[1]། ༡ །

ལམ་གྱི་བཞི་མདོ་འམ་ཁྱིམ་དག་[2]གམ། །
དཔའ་བོའི་གནས་དང་རི་བོར་ནི། །
མཁའ་འགྲོ་མ་ཡིས་དམ་ཚིག་གནས། །
རིང་པོ་ནས་ཀྱང་གཟིགས་པར་འགྱུར། ༢ །

ད་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་བཟླ་བ་དང་གཅེར་བུའི་མཆོད་པ་དང་ཡི་གེ་བདུན་པའི་ལས་[3] ཀྱི་ཆོ་གའི་ལེའུ་ནི་དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་ དགོད་པ་[4]ལ་སོགས་པ་བསྟན་པའི་རྗེས་སུའོ། །བཟླ་བ་ལ་སོགས་པ་བཤད་དོ་ཞེས་ སྒྲུར་རོ། །མི་ཞེས་པ་ནི་མི་མཆོག་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་གདུལ་བྱའི་བསམ་པ་ཤེས་པའོ། ། རྟེན་ངེས་པར་གནས་པ་ལ་བརྟེན་པར་གནས་ཏེ། ལམ་གྱི་བཞི་མདོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་

1. བསྒོམ་ལ་རྟག་ཏུ་མངོན་དགའ་བོ། ཡེ།
2. ཁྱིམ་བདག་ ལྷ།
3. ཡི་གེ་བརྒྱ་པའི་ལས་ རྒྱ་དཔེ།
4. བཀོད་པ་ གསེར། ཡེ།

པས་གནས་ཐ་དད་པར་སྟོན་ཏོ། །འདི་ཉིད་དུ་བསྒོམ་པར་བྱའོ་ཞེས་དགོངས་སོ། |
ཁྲིམ་དག་གམ་ཞེས་པ་ནི་རེ་ཞིག་ཁྲིམ་ཉིད་དུ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །བལྟ་བ་ལ་ནི་[1]
གཟིགས་པར་འགྱུར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དམ་ཚིག་གི་དོན་ནི་དམ་
ཚིག་ཐོབ་པར་བྱ་བའི་དོན་དུ་གནས་པའོ། ༡-༣ |

ཕྱུག་རྒྱས་གཅེར་བུ་[2]མཆོད་པ་ཡི། |
ལས་ཀྱིས་[3]གོ་འཕང་དམ་པ་སྟེ། |
གོས་ཉིད་ཀྱིས་ནི་བཀབ་པའམ་གཞན། |
འདོད་པ་རྣམས་ཀྱིས་གོས་མི་འགྱུར། ༣ |

ཕྱུག་རྒྱ་གཅེར་བུས་མཆོད་པའི་ལས་ནི་གཞན་དུ་ཡོངས་སུ་བརྗོད་དོ་ཞེས་པ་ནི་གཅེར་བུའི་མཆོད་པ་རྒྱས་པར་བསྟན་པའོ། །ལས་ནི་རབ་ཏུ་གཞུག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །གཅེར་བུའམ་བགོ་བ་གཞན་པགས་པ་ལ་སོགས་པ་རབ་ཏུ་གཞུག་པ་སྟེ་སྐད་དཀྲིས་པ་ཕྱུག་རྒྱ་ལ་འདོད་པ་སྤྱད་དོ། །དེས་ནི་ཡང་དག་རིག་འདོད་སྤྱད། །ཅེས་པ་ནི། དེ་ཡི་[4]ལས་ཀྱིས་བདེ་བར་འགྱུར། །ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༣ |

དེ་བཞིན་སྤྲ་གྲོལ་གཙོར་གྱུར་པས། |
ལས་རྣམས་ཐམས་ཅད་བརྩམ་པར་བྱ་[5]། |

1. བལྟ་བ་ནི་ གསེར། པེ།
2. གཅེར་བུར་ སྡེ།
3. བོད་འགྱུར་རྩ་བར་'ལག་པས' ཞེས་གསལ་ནའང་གོང་དུ་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཀོད་པ་ཡིན།
4. དེའི་ གསེར། པེ།
5. བརྩམས་པར་བྱ་ སྣ།

རྩ་བའི་ སྡུགས་དང་དེ་བཞིན་གཤེགས། །
ཕྱོགས་བཅིང་བར་ནི་འཇུག་པ་ཡིས[1]། ༩ །

དེ་ལྟར་ཞེས་པ་ནི་གཅེར་བུ་དང་པགས་པའི་གོས་བགོས་པར་རབ་ཏུ་དགུག་པའོ། ། ལས་ཐམས་ཅད་ནི་ཟ་བ་ལ་སོགས་པའོ། །རྩ་བའི་སྡུགས་ནི་རྐང་པ་བརྒྱད་པའོ། ། གདུག་པ་ཅན་རྣམས་གནོན་པས་ན་དམ་པར་[2]གནོན་པ་སྟེ། རྐང་པ་བཞི་པའི་སྡུགས་སོ། །འདི་དག་རྣལ་འབྱོར་མ་མཐོང་བའི་དུས་སུ་བཟླས་པའོ་ཞེས་རྒྱས་པར་བཤད་པའོ། །བསྙམ་དུས་སུ་ཕྱོགས་བཅིང་བ་ལ་སོགས་པ་བྱའོ། །དེའི་ཕྱིར། ཕྱོགས་བཞིར་བཅིང་བ་དེ་བཞིན་ནོ། །ཞེས་གསུངས་སོ[3]། །ཕྱོགས་བཅིང་གནས་པ་དེ་བཞིན་ནོ། །ཞེས་པ་ནི་གཞུང་གཞན་ནོ། །དེ་ལྟར་ཕྱོགས་བཅིང་བ་ལ་སོགས་པ་ནི། ཕྱོགས་བཅིང་བརྗོད་པ་དེ་བཞིན་ནོ། །ཞེས་པ་ནི་སྡུགས་འདི་ཉིད་ཀྱིས་ཞེས་བཤད་པར་བྱའོ། །བྱ་ཞེས་པ་ནི་མཆོད་པ་[4]ལ་སོགས་པའི་ལས་ཐམས་ཅད་དོ། །རྩ་བའི་སྡུགས་དང་དེ་བཞིན་གཤེགས། །དེ་བཞིན་བཞི་ཡིས་ཕྱོགས་བཅིང་བྱ། །ཞེས་པ་ནི་གཞུང་གཞན་ནོ། །རྩ་བའི་སྡུགས་ཀྱིས་ལས་ཐམས་ཅད་བྱེད་དོ། །གཞན་རྐང་པ་

1. འགྲེལ་པར་གཞུང་ཚིག་འདི་ལ་འགྱུར་མི་འདྲ་བ་ཁག་འགའ་སྣང་བ་ལས་‘ དེ་བཞིན་བཞི་ཡིས་ཕྱོགས་བཅིང་བྱ།’ ཞེས་པའི་ཚིག་རྐང་འདི་ཉིད་འཐད་པར་མཐོང་སྟེ་རྒྱ་དཔེར་བསྒྱུར་གསོ་བྱས་ཀྱང་གོང་དེར་རང་སོར་བཞག་ཡོད།

2. རྣམ་པར་ པེ། གསེར།

3. གསུངས་ཏེ་ གསེར། པེ།

4. ཚད་པ་ ཅོ།

བཞི་པས་ཕྱོགས་བཅིང་བར་བྱའོ་[1]ཞེས་སྨྲར་རོ། །ཕྱོགས་བཅིངས་པ་[2]ཞེས་པའི་སྒྲའི་གཉིས་པ་ཕྱི་བའོ། །དེ་བཞིན་གྱི་སྒྲ་ནི་དེ་གཉིས་ཏེ། དེ་ལྟ་དེ་ལྟར་རབ་ཏུ་བྱེད་པ་ཐ་དད་དོ་ཞེས་པའི་དོན་དུ་བཤད་དོ། ༤ །

ལྷ་དང་ལྷ་ཡི་[3]ཚོགས་ཀྱིས་ཀྱང་། །
མ་མཐོང་བར་ནི་མཆོད་པར་གྱིས[4]། །
སྒྲིམ་པ་མི་རྟོག་གིས་བཀང་སྟེ། །
མཁའ་ལ་སྤྱོད་ལ་གྱེན་དུ་འཐོར[5]། ༥ །

མཆོད་པ་ལེགས་པར་སྨྲས་པ་ཉིད་ནི། ལྷ་དང་ལྷ་ཡི་[6]ཚོགས་ཀྱིས་ཀྱང་། །མ་མཐོང་བར་ནི་མཆོད་པར་གྱིས། །ཞེས་གསུངས་སོ། །ཡི་གེ་བདུན་པའི་ནུས་པ་ནི། སྒྲིམ་པ་མི་རྟོག་གིས་བཀང་སྟེ། །མཁའ་ལ་སྤྱོད་པ་གྱེན་དུ་འཐོར[7]། །ཞེས་གསུངས་སོ། །མི་རྟོག་གིས་ཡང་དག་པར་བཀང་བ་ལ་ཡི་གེ་བདུན་པའི་ཐུགས་བརླས་ཏེ་གྱེན་དུ་འཐོར་བ་ནི་[8]གྱེན་དུ་གཏོར་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་ཡང་མཁའ་སྤྱོད་ནི་མཁའ་

1. བཅིངས་པར་བྱའོ་ གསེར། པེ།
2. བཅིང་བ་ གསེར། པེ།
3. ལྷ་དང་ལྷའི་ པེ།
4. མཆོད་པར་བགྱི་ ལྷ།
5. མཐོར་ སྣ།
6. ལྷ་ཡུལ་ལྷ་ཡིས་ གསེར། པེ། ལྷ་ཡུལ་ལྷ་ཡི་ སྟེ། ཅོ། གོང་དུ་རྩ་བ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
7. གྱེན་དུ་མཐོང་ སྟེ། ཅོ། མཁའ་འགྲོ་ལ་སྤྱོད་པ་གྱེན་དུ་འཐོར། གསེར།
8. ཐུགས་ཏེ་གྱེན་དུ་མཐོང་ སྟེ། ཅོ། ཐུགས་བརླས་ཏེ་གྱེན་དུ་མཐོང་ གསེར། པེ། གོང་དུ་རྩ་བ་དང་མཐུན་པར་བཞག་པ་ཡིན།

སྒྲིད་དེ་བར་སྣང་ལ་གནས་པར་འགྱུར་བའོ། །སྒྲིམ་པ་ལ་སྤྲའི་མོ་རྟགས་[1]ཡོད་པ་ནི་ལུང་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། ༥ །

མི་རྟོག་དེ་དག་མ་ལྷུང་ཞིང་། །
མི་རྟོག་ས་ལ་མ་མཐོང་ན། །
གནས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ལ་གནས་དང་། །
མཁའ་ལ་འགྲོ་བ་སྟོང་ཕྲག་གི །
གནས་ལ་དབང་ནི་བྱེད་པར་འགྱུར། ༦ །

དེའི་ཕྱིར། དེ་ཉིད་དུ་ནི་སྣང་མི་འགྱུར། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། དེ་ཉིད་དུ་མཐོང་ཞིང་ས་ལ་མ་ལྷུང་ནའོ། །སྟོང་ཕྲག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་གོ་སླའོ། ༦ །

ངག་གི་དབང་ཕྱུག་མ་རྣམས་དང་། །
ངག་གི་དབང་ཕྱུག་འགུགས་པར་འགྱུར། །
ལྷ་དང་ལྷ་ཡི་[2]གཏམ་ཤེས་ཤིང་། །
རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བཞིན་དུ་འོ། །
སྐར་མའི་རྒྱུ་བ་ཤེས་པར་འགྱུར། ༧ །

ངག་གི་དབང་ཕྱུག་ནི་གཟའ་ཕུར་བུའོ། །དེའི་མ་ནི་ངག་མའོ[3]། །ལྷ་ནི་ལྷར་གྱུར་པའི་ལོ་རྒྱུས་ཞེས་པའོ། །ལྷའི་གཏམ་ནི་ལྷ་རྣམས་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཏེ་ལོ་

1. མོ་རྟོགས་ སྡེ། ཅོ།
2. ལྷའི་ པེ།
3. དེ་ནི་མན་ངག་མའོ་ སྡེ། ཅོ། དེའི་མི་ནི་ངག་མའོ་ གསེར།

རྒྱས་ལ་སོགས་པའོ། །རྩིས་དང་གཟའི་ཀུན་དུ་སྤྱོད་པ་ཤེས་པའོ།

གྲོང་དང་གྲོང་རྡལ་[1]དེ་བཞིན་དགོན།
གྲོང་ཁྱེར་དང་ནི་བཞི་མདོ་དང་།
ཞིང་གཅིག་དང་ནི་དཔའ་བོའི་ཁྱིམ།
རི་རྩེ་དང་ནི་མཚན་དུང་དུ།

ས་འོག་ཅེས་པ་ནི་ས་འོག་རྣམ་པ་བདུན་གྱི་ལོ་རྒྱུས་ཤེས་པའོ[2]། །གྲོང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་དགའ་བྱེད་ཀྱི་གྲོང་ལ་སོགས་པའོ། །དགོན་པ་ནི་དགོན་པ་ཆེན་པོའོ། །གྲོང་ཁྱེར་ནི་འཕེལ་བཞིན་པ་ལ་སོགས་པའོ། །དཔའ་བོའི་ཁྱིམ་ནི་ཞིང་སྐྱོང་ལ་སོགས་པ་ལྷག་པར་གནས་པའི་སའོ། །མཁའ་ནི་ནམ་མཁའོ། །རྩེ་མོ་ནི་རིའི་རྩེ་མོའོ།

སྙིང་པོའི་ཉེ་སྙིང་[3]རྟག་དྲན་ན།
ལྷ་དང་མི་ཡིས་མཐོང་མི་འགྱུར།
དེ་བས་ཡུལ་ཕྱོགས་འདི་དག་ཏུ།
སྒྲུབ་པ་པོ་ནི་རྟག་ཏུ་གནས།

གནས་དེ་རྣམས་སུ་སྙིང་པོའི་ཉེ་བའི་སྙིང་པོ་[4]ཡི་གེ་བདུན་པ་གང་དྲན་པ་ནི་བཟླས་པ་བྱེད་པ་སྟེ། དེ་ལྷ་དང་མིས་མཐོང་བར་མི་འགྱུར་རོ། །གནས་དེ་རྣམས་སུ་

1. གྲོང་དང་གྲོང་བརྡལ་ པེ། གྲོང་དང་གྲོང་དང་ སྣ།
2. ཞེས་པའོ་ སྡེ། ཅོ།
3. སྙིང་པོའམ་ཉེ་སྙིང་ སྡེ།
4. ‘ཉེ་བའི་སྙིང་པོ་’ སྡེ་ཅོའི་པར་མ་གཉིས་སུ་མེད།

དེར་བཟླས་པ་བྱས་ན་མི་སྣང་བ་འགྲུབ་པོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །དེའི་ཕྱིར་ཕྱོགས་དེ་རྣམས་སུ་སྒྲུབ་པ་པོ་རྟག་ཏུ་གནས་སོ་ཞེས་པ་ནི་ཉེ་བར་བསྟུ་བའོ། །གནས་དེ་རྣམས་ཉིད་དུ་སྔགས་འདི་བཟླས་པར་བྱའོ་ཞེས་དགོངས་སོ། ༩ །

ཡི་གེ་བདུན་གྱི་བདག་ཉིད་ཅན། །
ཤིང་རྟེར་ཁ་དོག་དམར་བསམས་ནས། །
སྦྱར་དུ་ལྷུང་བ་[1]མི་ཕྱེད་པར། །
ས་རྣམས་ཀྱང་ནི་གཞན་དུ་མིན། ༡༠ །

ཡི་གེ་བདུན་གྱི་བདག་ཉིད་ཅན། །ཞེས་པ་ནི་གྲངས་བདུན་གྱི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ཡི་གེ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །དེ་སྟོང་པོའི་རྩེ་མོར་བསམས་ན་སྟོང་པོའི་རྩེ་མོ་འགག་པར་འགྱུར་རོ། །མི་ཕྱེད་པ་ནི་དབྱེར་མེད་པའོ། །འདིས་ནི་འདོད་པ་དང་རྗེས་སུ་འབྲེལ་བར་བསྟན་ཏོ[2]། །ས་འཛིན་ནི་རྡོ་དང་རྡོའི་[3]རི་བོའོ། ༡༠ །

བདག་གི་ལུས་ལ་རྣམ་བཀོད་དེ། །
ས་ལ་ཀུ་ཤའི་སྟན་དུ་ཉལ། །
ཡི་གེ་བདུན་གྱི་[4]བདག་ཉིད་སྔགས། །
བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་ནི་ཉིད་དུ་བཟླས[5]། ༡༡ །

1. སྦྱར་དུ་ལྷུང་བ་ ལྷ། སྣ། པེ།
2. རྗེས་སུ་འབྲེལ་པར་བསྟེན་ཏོ་ སྡེ། ཅོ།
3. རྡོ་རྗེ་དང་རྡོ་རྗེའི་ གསེར། པེ།
4. ཡི་གེ་བདུན་གྱིས་ སྡེ། པེ།
5. བཟླ་ ལྷ།

ཀླི་ལམ་དུ་ནི་བྱ་བ་ཀུན། |
ཡིད་ལ་འདོད་པ་སྟོན་པར་འགྱུར། |
དུས་མིན་འཆི་དང་བཅོམ་དང་ཉམས། |
བྱ་བ་ཀུན་ཏུ་གང་གྱུར་དང་། ༡༢ |

རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་གཞན་དག་ཀྱང་[1]། |
ཐམས་ཅད་ཀླི་ལམ་དག་ཏུ་སྟོན[2]། |
དེ་བཞིན་སྔགས་བཟླས་རལ་གྲི་རྒྱུ། |
མཐེ་བོང་[3]མར་མེ་མེ་ལོང་ལ། |
སྔགས་པ་བདག་ཉིད་རྟག་རྣལ་འབྱོར། |
བྲ་སེ་ན་ནི་འབེབས་པར་བྱེད། ༡༣ |

བདག་གི་དགོས་པ་ཞེས་པ་ནི་བདག་ནི་དགོས་པའི་དོན་དུའོ། །བདག་ཉིད་འདོད་པ་ཞེས་པ་[4]ནི་གཞུང་གཞན་ཏེ་གོ་སླའོ། །བདག་གི་ལུས་ལ་ཞེས་པ་ནི[5]། མིག་དང་། རྣ་བ་དང་། སྣ་དང་། ལྕེ་དང་། ལུས་དང་། ཡིད་རྣམས་སུ་ཡི་གེ་དྲུག་གོ །ཡིད་ལ་ནི་ཕཊ་བཀོད་ནས་ཀུ་ཤའི་སྟན་ལ་ཉལ་བ་ནི་ཉལ་བར་བྱའོ། །ལྷག་མ་ནི་གོ་

1. གཞན་དག་དང་ པེ།
2. རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་གཞན་དག……ཀླི་ལམ་དག་ཏུ་སྟོན། ཚིག་རྐང་གཉིས་པོ་རྒྱ་དཔེར་མ་གསལ།
3. མཐེ་བོ་ སྡེ།
4. ཞེས་པ་ཞེས་པ་ གསེར། པེ།
5. སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེ་གཉིས་ཀྱི་ནང་‘ ནི་’མ་གསལ།

སླའོ། །ཚེ་ལོ་ངེས་པ་གང་ སྟུག་ས་ཀྱི་[1]བརྗོད་པའམ་དཔལ་དེ་རྣ་ཀའོ། །འཆི་བས་[2] བཅོམ་པ་ནི་འཆི་བས་བཅོམ་པ་སྟེ། འཆི་བའི་གམ་དུ་སོང་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །མཐོང་བ་ཉམས་པར་གྱུར་པ་ནི་ཡུལ་གཞན་དུ་གནས་པའོ། །གཞན་དང་གཞན་གྱི་བྱ་བ་ཐམས་ཅད་འདིས་ཉེ་བར་བསྟུ་བའོ། །དེ་ཞེས་པ་ནི་ལྷས་སྦྱིན་པའོ། །རལ་གྲི་ལ་སོགས་པ་ལ་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་བཟླས་ཏེ་ཕྲེང་བའི་རྩེས་འཇུག་པར་བྱེད་དོ། ༡༡-༡༣ །

བསྒོམས་ནས་ལན་བདུན་བཟླས་བརྗོད་པས།།
དགེ་དང་མི་དགེ་སྟོན་པར་འགྱུར། |
དེ་ནས་དཔའ་བོའི་ཡི་གེ་བདུན། |
སྟུགས་དགོད་དབྱེ་བ་ཉིད་ཀྱིས་ཏེ། ༡༤ |
ཉི་མའི་དབུས་སུ་བསམས་ནས་ནི། |
སྟོང་གི་བར་དུ་བཟླ་བར་བྱ[3]། |
མཐེ་བོང་འདྲ་བར་སྐད་ཅིག་གིས། |
རྣམ་པར་ཤེས་པ་བསམ་པར་བྱ[4]། |
ཤེལ་གྱི་རྣམ་པ་ལྟ་བུར་ནི། |
ནད་ཀྱིས་གདུངས་ལ་བསྟན་པར་བྱ། ༡༥ |

1. ཀྱིས་ སྣེ། ཅོ།
2. འཆི་བ་ གསེར།
3. བཟླས་པར་བྱ་ སྣ། ཟླས་པར་བྱ་ པེ།
4. ‘མཐེ་བོང་འདྲ……བསམ་པར་བྱ།’ ཚིག་རྐང་འདི་གཉིས་གཞུང་རྩ་བར་མེད་ཀྱང་བོད་འགྱུར་འགྲེལ་པར་གསལ་བ་ལྟར་གོང་དེར་བསྣན་པ་ཡིན།

མཐོང་བ་ཙམ་གྱིས་[1]མོད་ལ་ནི། །
ནད་ཀུན་འཇིག་པར་[2]ཐེ་ཚོམ་མེད། །
ནད་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ་འགྱུར་ན[3]། །
སྟོན་ཀའི་དུས་ཀྱི་[4]ཟླ་བ་འདྲ། ༡༦ །

གཞོན་ནུའམ་གཞོན་නུ་མ་ལ་རལ་གྲི་བསྟན་པར་བྱའོ། །དེ་དག་གིས་དགེ་བའམ་མི་དགེ་བ་བརྗོད་དོ། །དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ནད་ཞི་བ་སྟོན་ཏེ། ཉི་མའི་དབུས་སུ་ཡི་གེ་བདུན་པའི་སྔགས་དངོས་སུ་གོ་རི་ཙན་ལ་སོགས་པས་དགོད་ཅིང་བྲི་བའམ། བསམས་ལ་དེའི་དབུས་སུ་ནད་པ་བསམས་ཏེ་[5]སྟོང་ཕྲག་གཅིག་བཟླས་པ་བྱའོ། །དེ་དབྱེ་བ་ཉིད་ནི་སྤྲོལ་བའོ། །ཤེལ་གྱི་རྣམ་པ་ལྟ་བུ་དྲི་མ་མེད་པའི་ཕྱིར་དེ་ནད་ཀྱིས་གདུངས་པ་ལ་བསྟན་ཞིང་བལྟས་ཏེ་བསམ་པར་བྱའོ་ཞེས་པའི་བར་རོ། །ཤེལ་ལྟ་བུའི་ཡི་གེའི་ཞེས་པ་ནི་གཞུང་གཞན་ནོ། །ཤེལ་གྱི་རྣམ་པ་ལྟ་བུར་དཀར་པོའི་རྣམ་པ་ལྟ་བུ་མཛེས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ཏེ་སྔགས་སོ། །དེ་ལྟ་བུའི་སྔགས་ལག་པ་ལ་བསྒོམས་ལ་ནད་ཀྱིས་གདུངས་པ་ལ་བསྟན་པར་བྱའོ། །བཞི་པའི་དོན་ལས་སྒྲ་གནས་ཀྱི་གཉིས་པའི་བཤད་པའོ། །མཐེ་བོང་འདྲ་བར་སྐད་ཅིག་གིས། །ཞེས་པ་

1. མཐོང་བ་ཙམ་གྱི་ སྡེ། ལྷ།
2. འཇིགས་པར་ སྣ། ལྷ།
3. གྱུར་ན་ པེ།
4. སྟོན་ཁའི་དུས་ཀྱི་ ལྷ། སྟོན་ཀའི་དུས་ནི་ པེ།
5. བསམ་སྟེ་ སྡེ། ཅོ།

ནི་དེའི་སྙིང་གར་མཐེ་བོང་གི་ཚད་ཙམ་གྱི་དྲི་མ་མེད་པ་ཤེལ་ལྟ་བུའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་བསམ་པར་བྱའོ། །ཧི་ལྷ་བུར་[1]གྱུར་པ་ཐམས་ཅད་དུ་སོང་བའི་ནད་ལ་གང་དེ་ཡིས་ནད་[2]ཐམས་ཅད་ལས་གྲོལ་བའི་ལུས་པོ་ལ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་བསྒོམ་པར་བྱ་ཞིང་སྔགས་བཟླས་པར་བྱའོ་ཞེས་པ་ནི་བསྡུས་པའི་དོན་ཏོ། ༡༥-༡༦ །

ཟླ་བའི་དབུས་སུ་རྣམ་བཀོད་ཅིང་། །
ལག་པ་གཡོན་པར་[3]འཁོར་ལོ་ཉིད། །
ཡི་གེ་ཤེལ་གྱི་མདོག་ལྟར་སྣང་། །
ནད་རྣམས་ཀུན་ལ་དགོད་པར་བྱ། ༡༧ །

སྦྱོར་བ་གཞན་ནི་ཟླ་བའི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། གཡོན་པའི་ལག་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་གཡོན་པའི་ལག་པ་སྟེ་འཁོར་ལོའོ། །གཡོན་པའི་ལག་པར་ནི་རི་བོང་ཅན་གྱི་གཟུགས་བསམས་ལ་རེ་མིག་དགུ་པའི་འཁོར་ལོ་སྟེ། དེའི་དབུས་སུ་ཨོཾ། ཤར་དུ་ཧྲིཿ། ལྷོ་རུ་ཏ། ནུབ་ཏུ་ཏ[4]། བྱང་དུ་ཧཱུཾ[5]། ཡང་དབུས་སུ་ཧཱུཾ་མཚམས་བཞིར་ཕཊའོ[6]ཞེས་པ་ནི་ཡི་གེ་བདུན་པའི་སྔགས་སོ། །ཏ་བོར་བས་ནི་ཡི་གེ་བདུན་ནོ། །ཁ་

1. དེ་ལྷ་བུར་ པེ།
2. དེ་ཡིས་ནས་ པེ།
3. ལག་པ་གཡོན་པའི་ པེ།
4. ནུབ་ཏུ་ཊྲི་ རྒྱ་དཔེ།
5. བྱང་དུ་ཀླཱུཾ་ རྒྱ་དཔེ།
6. ཕཊ་ཏོ་ སྣེ། ཅོ།

ཅིག་ནི་ཨོཾ་ཞེས་ཟེར་རོ། །དེའི་ཕྱིར། ཡི་གེ་ཤེལ་གྱི་མདོག་ལྟར་སྣང་། །ཞེས་སོ། ། ཤེལ་བཞིན་དུ་དཀར་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཡི་གེ་བདུན་པོ་རྣམས་ཡང་དག་པར་བྱེ་བྲག་ཏུ་སྣང་ཞིང་རབ་ཏུ་སྣང་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ཏེ། འཁོར་ལོའོ། །ཡང་ཇི་ལྟ་བུར་དགོད་པ་ནི་ནད་ཐམས་ཅད་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །བསྒྲུབ་བྱ་དབུས་སུ་གནས་པའི་འཁོར་ལོ་ལག་པ་གཡོན་པར་བསྒོམ་ཞེས་པ་ནི་གདམས་ངག་གོ ༡༧ །

རིམས་དང་གདོན་སོགས་བཟེད་བྱེད་[1]དང་། །
གཟེར་སོགས་ཀུན་དང་མཛེ་ཅན་དང་། །
དུག་གིས་ཟིན་སོགས་ནད་རྣམས་དང་། །
ནད་ཀུན་ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་ནི། ༡༨ །

རིམས་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་ལྷན་ཅིག་པའི་དོན་གྱི་སྒྲའི་གསུམ་པའོ། ། མཆེ་བའི་དུག་གིས་ཟིན་པ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ནད་གཞོམ་པ་གང་ཡིན་པའི་ཕྱིར་འཁོར་ལོ་དེ་ནི་དུག་གིས་ཟིན་པ་ལ་སོགས་པའི་ནད་འཇོམས་པའོ། །སོགས་ཀྱི་སྒྲས་ནི་མི་རྒྱུ་བ་ལ་སོགས་པའི་དུག་གོ །ཞི་ནི་ཉེ་བར་གཟུང་བའོ། །ནད་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ནད་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའོ། ༡༨ །

ཟླ་གཟུགས་ཡི་གེ་བསམས་ནས་ནི། །
ཕྲེཏ་བཙུར་རྣམ་པར་འབྱེར་པར་[2]འགྱུར། །

1. བཟོད་བྱེད་ སྣ།
2. རྣམ་པར་འབྱེད་པར་ སྡེ། རྣམ་པར་དབྱེ་བར་ པེ།

མཚན་མོ་གསང་བ་ལ་གནས་ཏེ།
གོ་སྣང་ས་[1]ཉི་མངར་གསུམ་བཏགས། ༡༨
ཡིག་བདུན་གསང་སྔགས་ཤེས་པ་དང་།
སྟོང་ཕྲག་བརྒྱད་དུ་སྦྱིན་སྲེག་བྱས།
སྔགས་པ་ནང་པར་དུས་སུ་ནི།
གསེར་སྲང་སྟོང་ནི་རྙེད་པར་འགྱུར། ༢༠
སྦྱིན་སྲེག་སྟོང་ཕྲག་བཅུ་ཡིས་ནི།
ཡུལ་འཁོར་དམ་པ་རྙེད་པར་འགྱུར།
ཡང་ན་གསང་སྔགས་རྒྱལ་པོ་ནི།
གནས་ནི་གང་དུ་བསམས་པ་[2]དང་། ༢༡
དེ་དང་དེར་ནི་དེ་ཡི་ཚེ[3]།
སྐྱེ་བར་འགྱུར་བར་གདོན་མི་ཟ།
དཀར་པོ་ཡིས་ནི་ཞི་བར་འགྱུར།
ནག་པོས་སྐད་ཅིག་དག་གིས་གསོད[4]། ༢༢

---

1. གོ་མང་ས་ པེ། གོ་སྣོ་ས་ ལྷ།
2. བསམ་པ་ ལྷ།
3. དེའི་ཚེ་ པེ།
4. བསོད་ སྣ།

དམར་པོས་དབང་དུ་འགྱུར་བ་སྟེ། །
འཕྲུལ་དུ་ངེས་པར་འགུགས་པར་འགྱུར། །
སེར་པོས་ཐམས་ཅད་གནོན་འགྱུར་ཏེ། །
འདི་ནི་བསྟན་བཅོས་[1]ངེས་པ་ཡིན། ༡༣ །

སེར་པོས་དཔུང་ནི་གནོན་པ་དང་། །
གྲུ་དང་འཁྲུལ་འཁོར་གླང་པོ་གནོན། །
དཀར་པོ་བསམ་པ་[2]ཙམ་གྱིས་ནི། །
འཆི་བ་ངེས་པར་གྲོལ་བར་[3]འགྱུར། ༡༤ །

སྦྲུལ་ཆེན་བརྒྱ་ཡིས་[4]ཟིན་པ་ནི། །
དེ་ཡང་མྱུར་དུ་སློང་བར་བྱེད། །
དུག་གིས་བཅྲལ་བ་[5]རྣམས་མཐོང་ནས། །
རབ་ཏུ་སད་པས་[6]སད་པར་འགྱུར། ༡༥ །

---

1. བསྟན་ཆོས་ པེ།
2. བསམས་པ་ པེ།
3. ངེས་པར་སློང་ སྣེ། ངེས་པར་གློང་ པེ།
4. སྦྲུལ་ཆེན་བརྒྱ་ཡིས་ པེ།
5. དུག་གིས་བརྒྱལ་བ་ པེ།
6. རབ་ཏུ་སད་པར་ སྣ།

རིམས་དང་གདོན་དང་བརྗེད་བྱེད་ནི།
ལག་པ་མཐོང་བས་[1]འཇིགས་པར་འགྱུར།
རྒྱན་པོ་གཡུལ་དུ་[2]ཁྲུ་ཚུར་བཅིངས།
ཡིད་ལ་རྟག་ཏུ་བློས་བྱེད་ན། ༣༦

ཁྲུ་ཚུར་མ་བཀྲོལ་[3]དེ་སྲིད་དུ།
བྱ་བ་ཐམས་ཅད་འགྲུབ་པར་འགྱུར[4]།
དགྲ་བོ་གལ་ཏེ་ལག་ན་ནི།
མཚོན་ཆ་འཕྱུར་བར་བྱེད་པ་ཡང་། ༣༧

ཇི་སྲིད་ཁྲུ་ཚུར་མ་བཀྲོལ་[5]བར།
མཚོན་ཆ་གཏོང་བར་མི་ནུས་སོ།
གཞན་ཡང་བྱ་བ་ཐམས་ཅད་ནི།
དེ་བཞིན་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་པར་བྱེད། ༣༨

ཟླ་བའི་གཟུགས་ལ་ཡི་གེ་ཞེས་པ་ནི་སྔར་བཞིན་དུ་རི་བོང་ཅན་གྱི་གཟུགས་ལ་ཡི་གེ་བདུན་པའི་གཡོན་པའི་ལག་པར་བལྟ་ཞིང་བསམས་ལ་ནད་ཀྱིས་གདུངས་པ་ལ་

---

1. ལག་པ་བཟུང་བས་ རྒྱ་དཔེ།
2. གཡུལ་གྱི་དུས་སུ་ སྣ། པེ། ཞྭ།
3. ཁྲུ་ཚུར་མ་དཀྲོལ་ པེ།
4. བསྒྲུབ་པར་འགྱུར་ སྡེ། པེ། སྒྲུབ་པར་འགྱུར་ སྣ།
5. མ་དཀྲོལ་ པེ།

བསྟན་པའམ་བྱབ་པར་བྱའོ། །ཕྱོགས་བཅུར་རྣམ་པར་འཕྱེར་བར་འགྱུར། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྔགས་ཀྱི་ཡི་གེ་དེ་དག་རྣམས་ལ་འོད་ཟེར་བདུད་རྩིའི་རང་བཞིན་འབྱུང་སྟེ། ཕྱོགས་ནི་ཤར་ལ་སོགས་པའི་ཕྱོགས་སོ། །འཕྱེར་བ་ནི་ཁྱབ་པའོ[1]། །འདི་ལྟ་བུའི་རང་བཞིན་གྱི་ཡི་གེ་གཡོན་པའི་ལག་པས་བསྟན་པའམ་བྱབ་པར་བྱའོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །སྤྲིན་སྲིག་ནི་བ་ལང་ཤ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །མངར་གསུམ་ནི་བུ་རམ་དང་སྦྲང་རྩི་དང་ཤ་ཁ་རའོ། །ཡང་ན་སྔགས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་པ་ནི་གང་ལ་ཞི་བ་ལ་སོགས་པའི་དོན་དུ་བསམས་ན་དེ་ལ་ཞི་བ་ལ་སོགས་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བསྟན་པའི་ཕྱིར། དེའི་ཚེ་བཟླས་ན་ཐེ་ཚོམ་མེད། །ཅེས་བྱའོ[2]། །བཟླས་བཞིན་པ་ནི་དཀར་པོ་ཡིས[3]། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། འཕྲུལ་དུ་ངེས་པར་འགུགས་པར་འགྱུར། །ཞེས་པ་ནི་གཡོན་པའི་ལག་པར་ཡི་གེ་བདུན་པ་མདོག་དམར་པོ་ཉིད་བལྟ་བར་བྱའོ། །ཡང་ན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ནི་དེ་ལྟར་སྔགས་བཟླས་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཐམས་ཅད་འགྲུབ་པོ་ཞེས་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་རྟགས་བསྟན་པའོ། ༡༩-༣༨ །

འབྲས་བུ་མི་རྟོག་འདབ་མ་དང་། །
སོ་རྩེ[4]དེ་བཞིན་ཟས་རྣམས་ལ། །
ལུས་ཀྱི་སྦྱོར་བ་དང་པོ་སྟེ། །
དེ་བཞིན་གཉིས་པ་ནུས་པ་ཡིན། ༣༩ །

1. ཁྱབ་པའི་ ཅོ།
2. ཅེས་བྱ་བའོ་ གསེར། པེ།
3. དཀར་པོ་ཡིས་ནི་ གསེར། པེ།
4. སོ་རྩ་ པེ།

འདབ་མ་[1]ཅེས་པ་ནི་ཉེ་བར་མཁོ་བའོ། །སོ་རྩི་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་ནི་ལུས་ཀྱི་སྦྱོར་བ་སྟེ། ལུས་ཡང་དག་པར་འཛིན་པའོ། །གཉིས་པ་ནི་ནུས་པ་དང་ལྡན་པ་སྟེ། མི་མ་ཡིན་ཡང་བཀའ་མཉན་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་དགོངས་སོ། ༢༩ །

གསུམ་པ་དག་ནི་ངག་ཉིད་དོ། །
བཞི་པ་དམིགས་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། །
སྔགས་ཀྱི་རྒྱལ་པོས་འགྲུབ་པར་འགྱུར[2]། །
ས་གཞི་ཞིང་དང་བཅས་པ་དང་། །
རྒྱ་མཚོ་སྐྱི་རགས་[3]བརྟགས་དེ་ལ། ༣༠ །
འདིར་ནི་འགྲུབ་པར་ཐེ་ཚོམ་མེད། །
ཁམས་གསུམ་རྒྱུ་དང་མི་རྒྱུའི་བར། །
དམོད་འདེབས་[4]ཕན་འདོད་ནུས་པ་ཡིན། ༣༡།

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་ཉེ་བའི་སྙིང་པོའི་ལས་སྒྲུབ་པའི་ཚོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་བཞི་བཅུ་རྩ་གསུམ་པའོ།། །།

གསུམ་པ་ངག་གི་ཉིད་ཅེས་པ་ནི་ངག་གི་དངོས་གྲུབ་པོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །སྔགས་

1. བོད་འགྱུར་འགྲེལ་པར་'སྡོང་' ཅེས་བསྒྱུར་ཡོད་ཀྱང་གོང་དུ་རྩ་བ་དང་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
2. རྒྱ་དཔེར་ཚིག་རྐང་འདི་ཚིགས་བཅད་སོ་གཅིག་པའི་ནང་འཁོད་འདུག
3. སྐྱ་རགས་ སྡེ། སྐྱ་རེགས་ པེ།
4. སྨོད་འདེབས་ པེ།

ཀྱི་རྒྱལ་པོ་བསམས་ནས་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །གསང་སྔགས་ཞེས་བརྗོད་པ་[1]ནི་དེ་ཉིད་བསྐུལ་ཞིང་ཡང་བརྗོད་པའོ་ཞེས་བྱའོ། །ངག་དང་ལུས་དང་སེམས་ཀྱིས་ངག་གྲུབ་པས་ཚར་གཅོད་པ་[2]དང་རྗེས་སུ་འཛིན་པར་བྱེད་པའི་རྣལ་འབྱོར་པའོ། ༣༠-༣༡ །

སྙིང་པོའི་ཉེ་བའི་སྙིང་པོ་ལས་ཀྱི་བྱ་བ་[3]དེ་བསྒྲུབ་བྱ་མེ་ཏོག་གཏོར་བ་ལ་སོགས་པའི་བྱ་བ་དེ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཡིན་ལ་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་དེ་དེ་བཞིན་ནོ། ། བཞི་བཅུ་རྩ་གསུམ་ནི་བཞི་བཅུ་རྩ་གསུམ་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་བཞི་བཅུ་རྩ་གསུམ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། །།

✶

---

1. ཞེས་པ་ནི་བརྗོད་པ་ གསེར། པེ། ཞེས་པ་བརྗོད་པ་ སྣེ། ཅོ།
2. དགོད་འདེབས་ རྩ་བ། སྣཔ་ རྒྱ་དཔེ།
3. ལས་ཀྱི་བྱེད་ ཅོ།

རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་གི་ཡི་གེ་བདུན་གྱི་ལས་ཀྱི་ཚོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནས་ཡོ་ཉ་ལ་བརྟེན་ཏེ[1]། །
ཡི་གེ་བདུན་པ་དང་ལྡན་པ། །
གང་དུ་ལས་ལ་ཡང་དག་བརྩམས། །
དེ་ཡི་མོད་ལ་[2]སྨྱུར་དུ་འགྲུབ། ༡ །

དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་གི་ཐུགས་ཀྱི་ལས་ཀྱི་ཚོགས་སྟོན་པར་བརྩམས་[3]ཏེ། གང་ལ་ཡོ་ཉ་དངོས་སུ་གྲུབ་པ་དེའི་ལས་ཀྱི་ཚོགས་སོ། །ཅི་བྱས་ནས་རབ་ཏུ་སྟོན་ཞེས་པ་ལ། ལས་ནི་མཉམ་པར་བརྩམ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། དགུག་པ་ལ་སོགས་པ་བྱས་ནས་ལས་ཀྱི་ཚོཏ་རབ་ཏུ་བརྩམ་[4]ཞེས་སྦྱར་རོ། །གང་གིས་ཞེས་པ་ལ་ཡང་དག་ཀུན་སྒྲུབ་པ། ཡི་གེ་བདུན་པ་ཡང་དག་ལྡན། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། ཡང་དག་པར་བྱེ་བྲག་ཏུ་བདག་གིས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་སྒྲུབ་པ་[5]གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་གི་[6]ཐུགས་སོ། །དེ་དང་ཡང་དག་པར་ལྡན་པ་ནི་[7]ཡང་དག་པའི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་

---

1. བསྟེན་ཏེ་ སྣ།
2. དེའི་མོད་ལ་ པེ།
3. རྩོམ་ པེ། གསེར།
4. རབ་ཏུ་བརྩམས་ པེ། གསེར།
5. བསྒྲུབ་བྱ་བསྒྲུབ་པ་ གསེར། པེ།
6. དྲུག་གིས་ སྡེ། ཅོ།
7. ‘ནི་’ སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེ་གཉིས་སུ་མེད།

བསམ་གཏན་ནོ། །ལས་ནི་ལག་པའི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཨོཾ ཧཱྃ ཧྲཱྃ ཧྲཱྃ[1] ཧཱུྃ ཧྲཱུྃ ཕཊ་ཅེས་པ་ནི་ཡི་གེ་བདུན་གྱི་སྔགས་སོ། ༡ །

ཡི་གེ་བདུན་པའི་ཚིག་ཡིས། །
རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་རྣམ་པར་དགོད། །
འཁོར་ལོར་ལེགས་པར་གནས་པ་དྲུག །
རྣམ་པ་དེ་ལྟའི་ཚིག་ཡིས[2]། ༢ །

གཡོན་པ་ཉིད་དུ་བསྐྱལ་དང་བཅས། །
གང་གིས་གཟུགས་འཛིན་[3]བསམས་ནས་ནི།།
ཁ་ནས་གསང་སྔགས་རྒྱལ་པོ་བཟླས། །
གང་ལ་ལག་པ་དེ་བསྟན་པ། ༣ །

རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་གི་ཡི་གེ་བདུན་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་སྟེ་ལག་པའི་དབུས་སུ་བཀོད་ན་བསྒྲུབ་བྱ་འགུགས་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་སྦྱོར་རོ[4]། །དགོད་པ་བརྗོད་པ་ནི་དྲུག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། འཁོར་ལོའི་རྩིབས་དྲུག་ལ་ཡང་དག་པར་གནས་པའི་འཁོར་ལོ་གང་ཡིན་པ་དེས་ནི་འགུགས་པ་སྟེ། དེ་དྲུག་ལ་ཡང་དག་པར་གནས་པའི་འཁོར་ལོ་བྱ་བའི་ཁྱད་པར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་ནི་ཁྱད་པར་རོ། །གཡོན་པ་

1. ཧྲཱྃ གསེར།
2. ཚིག་ཡི་ སྡེ།
3. བོད་འགྱུར་རྒྱ་བར་'གཟུང་འཛིན་'ཞེས་གསལ། གོང་དུ་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
4. འགུགས་པ་སྟེ་འགུགས་པར་གྱུར་རོ་ཞེས་སྦྱར་རོ་ གསེར། པེ།

ཞེས་པ་ནི་ལག་པའི་དབུས་ཀྱི་ཁྱད་པར་རོ། །དྲུག་ཏུ་ཡང་དག་པར་གནས་པའི་འཁོར་ལོ་ཇི་ལྟ་བ་ཡིན་པ་དེ་བཞིན་དུ་འགུགས་པའོ། །དེའི་ཕྱིར་གང་ལ་[1]ལག་པ་སྟེ་བསྟན་པ་ཞེས་གསུངས་སོ། །ཅི་བྱས་ནས་ནི་ལག་པ་དེ་གང་ལ་བསྟན་པ་ལས་སོ། །གང་གིས་དགུག་པའི་གཟུགས་འཆང་བ་སྟེ། འཁོར་ལོ་བསམ་པར་བྱའོ། །ཡང་ཅི་བྱས་ནས་ཞེས་པ་ལ། ཁ་ནས་གསང་སྔགས་རྒྱལ་པོ་ཀླཱི། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། སྒྲའི་གཉིས་པའི་ཕྱི་བའོ། །རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་དང་འབྲེལ་བའི་ཡི་གེ་བདུན་པ་ཁས་བརྗོད་པ་སྟེ། ཁྱད་པར་དུ་[2]བསྒོམ་པར་བྱ་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཇི་ལྟ་བུར་གྱུར་པ་ནི་[3]གསང་སྔགས་རྒྱལ་པོ་ཞེས་སྟོན་ཏོ[4]། །སྐུལ་བར་བྱེད་པ་དང་ལྡན་པས་སོ། །འཁོར་ལོ་རྩིབས་དྲུག་པ་གཡོན་པའི་ལག་པར་བསམས་ལ། དེ་ལ་དབུས་སུ་ཨོཾ་རྩིབས་དྲུག་ལ་ཧཱཾ ཧཱི ཧཾ ཧཱུཾ ཕཊ་[5]ཅེས་པའི་ཡི་གེ་དྲུག་དགོད་པར་བྱའོ། །དེའི་འོད་ཟེར་གྱི་དྲ་བ་ལ་ལྕགས་ཀྱུའི་[6]རྣམ་པ་ཅན་གྱིས་བསྐུལ་བྱ་བཀུག་པར་བསྒོམ་ཞིང་། དེའི་ལག་པ་འཁོར་ལོ་དང་ལྡན་པ་ལ། ཨོཾ་ཧཱིཿ ཏ ཏ ཧུཾ ཧཱུཾ ཕཊ་ལྷ་སྦྱིན་ཁུག་ཅིག་[7]ཅེས་པའི་བསྐུལ་ཚིག་དང་ལྡན་པས་

1. 'ལ་' གསེར་བྲིས་པར་མའི་ནང་མེད།
2. 'དུ་' གསེར་པེ་གཉིས་སུ་མེད།
3. 'ནི་' གསེར་པེ་གཉིས་སུ་མེད།
4. སྟོན་ཏེ་ གསེར། པེ།
5. ཧཱཾཧཱིཾཧྲཾཧུཾཧཱུཾཕཊ་ གསེར། པེ།
6. དྲ་བ་ལྕགས་ཀྱུའི་ གསེར། དྲ་བ་ལ་ལྕག་ཀྱུའི་ ཅོ།
7. ཁུགས་ཤིག་ སྡེ། ཅོ།

སྡིགས་བཟླས་ཤིང་དངོས་སུ་ལག་པ་བསྟན་ན་དེ་འགུགས་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་པ་ནི་བསྡུས་པའི་དོན་ཏོ། ༢-༣ །

དེ་ནི་ངེས་པར་འགུགས་པར་འགྱུར།
ཙཎྜན་[1]དམར་པོའི་རྡུལ་དང་ནི།
དེ་བཞིན་སྐྱེ་ཚེ་ལན་ཚྭ་དང་།
བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་རྐང་རྗེས་ལ། ༤
གཅིག་ཏུ་བྱས་ནས་བརྡག་པར་བྱ[2]།
ལག་པ་གཉིས་ཀྱིས་མཉེས་ནས་ནི།
རྣལ་འབྱོར་མ་ལ་སྦྱིན་སྲེག་[3]བྱ།
མཚན་མོ་སླེ་ཤ་ཅན་[4]མེའམ། ༥
དུར་ཁྲོད་མེ་ལ་ཕྱེ་མ་བསྲེག[5]
བསྒྲུབ་པར་བྱ་ལ་མངོན་ཕྱོགས་ཏེ།
སྦྱོར་བ་འདི་ནི་བརྩམ་པར་བྱ།
ཇི་སྲིད་བརྒྱ་ཡི་[6]བར་དུ་བཟླས། ༦

1. ཙན་དན་ པེ། སྣ།
2. རྡག་པར་བྱ་ པེ།
3. སྦྱིན་བསྲེག་ པེ། སྣ།
4. ཆླེ་ཤ་ཅན་ པེ།
5. ཕྱེ་མ་སྲེག་ སྣ།
6. ཇི་སྲིད་བརྒྱའི་ པེ།

དེས་ནི་ངེས་པར་འགུགས་པར་འགྱུར[1]།
བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་བདག་ཉིད་དང་།
ནོར་དང་སྐྱེ་བོ་དབང་དུ་འགྱུར།
སྦྱོར་བ་འདི་ནི་གྲུབ་པ་སྟེ། ༧

གཞན་དུ་ན་ནི་ང་མི་སྨྲ།
རྡུལ་དེ་ཉིད་ནི་བླངས་ནས་སུ།
ལྕགས་ཕྱེ་དང་ནི་རྣམ་པར་བསྲེས།
དུར་ཁྲོད་རས་ལ་བཏུམས་ནས་ནི། ༨

ལན་བདུན་བཟླས་ལ་བཞི་མདོ་རུ།
སོར་བརྒྱད་ཙམ་དུ་ས་བརྐོས་ནས[2]།
དགྲ་ཡི་མིང་དང་བཅས་པར་ནི།
གང་གི[3]མིང་སྨོས་སྦས་གྱུར་པ། ༩

དེ་ནི་མྱུར་དུ་གནོན་པར་འགྱུར།
ཕྱེ་མ་དེ་ཉིད་བཟླས་ནས་སུ།
འབད་དེ་བ་ཡི་འོ་མ་ཡིས།
དེ་ནི་སླར་ཡང་གསོས་གྱུར་ན། ༡༠

1. འགུགས་པར་བྱ་ པེ།
2. ས་བརྐོས་ལ་ སྣེ།
3. གང་གིས་ སྣེ།

འགྲུབ་པ་ཉིད་དུ་ཐེ་ཚོམ་མེད། |
ཕྱི་མ་དེ་ནི་བླངས་ནས་ནི། |
སྦྱོས་བྱེད་ལྷ་དང་ལྷན་པ་རུ། |
དེ་ནི་དུར་ཁྲོད་རས་ཀྱིས་བཅིང་[1]། ༡༡ |

དགྲ་ཡི་མིང་[2]ཡང་བྲི་བར་བྱ། |
བཟླས་བརྗོད་ལན་བརྒྱ་བྱས་ནས་ནི། |
དུར་ཁྲོད་དུ་ནི་དེས་སྦས་ན། |
བསྒྲུབ་བྱ་སྐྱོ་བ་ཉིད་དུ་འགྱུར། ༡༢ |

བཏོན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཐར་བར་འགྱུར། |
བཏོན་ནས་བ་ཡི་འོ་མ་ཡིས། |
འབད་པས་དེ་བཞིན་བཀྲུ་བར་བྱ། |
སླར་ཡང་གསོ་བ་དེ་དག་ནི། |
འགྲུབ་པ་ཉིད་དུ་ཐེ་ཚོམ་མེད། ༡༣ |

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་གི་ཡི་གེ་བདུན་གྱི་ལས་ཀྱི་ཚོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་བཞི་བཅུ་རྩ་བཞི་པའོ།། །།

ཙཱཧྣ་དམར་པོ་ལ་སོགས་པས་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱི་རྟགས་ཀྱིས་ལག་པ་

1. བཅིངས་ སྣ། པེ། ཞྭ།
2. དགྲའི་མིང་ པེ།

གཉིས་མཉེ་[1]ཞིང་། དུར་ཁྲོད་ཀྱི་མེའམ། གཏུམ་པོ་ལ་སོགས་པའི་མེ་ལ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བཞིན་དུ་[2]བསྲུལ་ཚིག་དང་ལྡན་པས་སྦྱིན་སྲེག་བྱའོ། །ཚོ་ག་ཇི་ལྟ་བ་[3]ཞེས་པ་ནི་ཙཀྲན་དམར་པོ་ལ་སོགས་པ་སྲེག་པར་བྱེད་པ་ལ་སོགས་པ་ནི་ཚོ་གའོ། །ཕུལ་དུ་བྱུང་བའི་སྦྱོར་བ་གང་ལ་དེ་ཡིས་སྦྱོར་བ་འདི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ལ་བརྟེན་པ་[4]སྦྱིན་སྲེག་བྱའོ། །དེ་ཉིད་ཙཀྲན་དམར་པོ་ལ་སོགས་པ་བསྒྲུབ་བྱའི་[5]རྐང་རྗེས་ཀྱི་རྡུལ་དང་འབྲེལ་ཏོ། །དགྲ་ཡི་མིང་དང་བཅས་པ་ནི། །ཞེས་པ་ནི་བསྲུལ་ཚིག་དང་བཅས་པའོ། །འོ་མ་གཙང་མ་ནི་བའི་འོ་མས་སླར་གསོ་བར་འགྱུར་རོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །ལྷག་མ་ནི་གོ་སླའོ། ༩-༡༣ །

ཡི་གེ་བདུན་པའི་རང་བཞིན་དང་། རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་པོ་དེའི་ལས་དགུག་པ་ལ་སོགས་པའི་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཡིན་ལ་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་དེ་དེ་བཞིན་ནོ། །བཞི་བཅུ་བཞི་ནི་བཞི་བཅུ་རྩ་བཞི་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་བཞི་བཅུ་རྩ་བཞི་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། །།

*

1. མཉྫ་ སྡེ།
2. ‘དུ་’ གསེར་པེ་གཉིས་སུ་མེད།
3. ཅི་ལྟ་བ་ གསེར། པེ།
4. བརྟེན་པ་ ཅོ།
5. བསྒྲུབ་པའི་ ཅོ།

རྒྱལ་འབྱོར་མ་དྲུག་དང་ཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་ལུང་
བསྟན་པའི་ཚོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནས་ལས་ཀྱི་རབ་མཆོག་ནི།
ངག་གི་དངོས་གྲུབ་བྱེད་པ་པོ།
ཀ་ར་བྷི་རའི་[1]མེ་ཏོག་དམར།
བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་ནི་བླངས་ནས་སུ། ༡

འབད་དེ་བ་ཡི་འོ་མ་དང་།
བཟླས་བརྗོད་བརྒྱ་ཡང་བྱ་བ་ཡིན། ༢

ལན་རེ་བཟླས་པའི་མེ་ཏོག་གིས[2]།
ཞིང་གའི་སྤྱི་བོར་བསྣུན་པར་བྱ།
དེ་ལྟར་ཞིན་ཏུ་མཉམ་བཞག་[3]པས།
ཉི་མ་བདུན་དུ་བྱ་བ་ཡིན། ༣

ད་ནི་རྒྱལ་འབྱོར་མ་དྲུག་གི་གོ་ཆའི་སྔགས་ཀྱི་ལྷག་མ་ཡི་གེ་དྲུག་གི་བདག་ཉིད་ཀྱི་སྔགས་ནི་ལས[4]ཀྱི་ཚོགས་ཀྱི་ལེའུ་ནི་དེ་ནས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དེ་

---

1. ཀརབིརའི་ པེ། སྣ།
2. མེ་ཏོག་གི་ པེ།
3. མཉམ་གཞག་ སྣ།
4. ལུས་ གསེར། པེ།

ནས་ཞེས་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་གི་གོ་ཆའི་སྔགས་དང་། ཡི་གེ་བདུན་པའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་སྔགས་ཀྱི་ལས་ཀྱི་ཚོགས་བསྟན་པའི་རྗེས་སུའོ། །ལས་མཆོག་ནི་ཡི་གེ་བདུན་པའི་[1]སྔགས་དང་འབྲེལ་བ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཤེས་པར་བྱའོ། །ཨོཾ པཾ དྷཾ ཡིཾ ཧྲིཾ མིཾ ཧྲིཾ ཧྲིཾ ཧཱུཾ ཧཱུཾ ཕཊ ཕཊ་[2]ཅེས་པ་ནི་སྔགས་དེ་ཡིས་ལས་ཀྱི་དངོས་གྲུབ་རབ་ཏུ་བསྒྲུབ་པའོ། །ཅིག་ཅར་གྱིས་བསྒྲུབ་བྱ་འགྲུབ་པར་དངོས་སུ་བྱེད་པ་[3]སྟེ། དེ་ཉིད་ནི་ཀརྦིར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཀརྦིར་དམར་པོའི་མེ་ཏོག་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་པའི་འོ་མ་འབབ་པ་[4]སྟེ་འདུས་བྱས་ལ་སྔངས་[5]ལ་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་བཟླས་པར་[6]བྱའོ། །དེ་ནས་ལན་རེ་རེ་བཟླ་ཞིང་ལིངྒའི་[7]སྤྱི་བོར་བསྟན་ནོ། །དེ་ལྟར་ཞག་བདུན་དུ་བྱའོ། །ཤིན་དུ་མཉམ་གཞག་ནི་ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་རོ། ༡-༣ །

དེ་ནས་ཉིན་ཞག་བཅུ་གཅིག་པར། །
མེ་ཏོག་དག་ནི་བླངས་ནས་སུ། །
ཆུ་བོ་ཆེན་པོར་སོང་ནས་ནི། །
རེ་རེ་ནས་ནི་ཆུ་ལ་དོར། ༤ །

1. ཡི་གེ་དྲུག་པའི་ རྒྱ་དཔེ།
2. ཨོཾཔཾདྷཾཡིཾཧྲིཾམིཾཧྲིཾཧྲིཾཧཱུཾཧཱུཾཕཊཕཊ ཡེ། ཨོཾཔཾཡིཾམིཾ ཧྲཱིཧཱུཾཧཱུཾཕཊ྄ རྒྱ་དཔེ།
3. ཡོངས་སུ་བྱེད་པ་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།
4. འབད་པ་ གསེར། ཡེ།
5. སྔངས་ སྟེ།
6. བཟླས་པ་ གསེར། ཡེ།
7. ལིངྒའི་ གསེར། ཡེ།

དེ་ནས་ཞག་ནི་བཅུ་གཅིག་པར། །ཞེས་པ་ནི་ཉིན་ཞག་བདུན་གྱི་རྗེས་སུའོ། །ནི་ནི་ཉིད་ཀྱི་དོན་ཏོ། །ཇི་སྲིད་[1]ཞག་བཅུ་གཅིག་ཏུ་གྱུར་པ་དེ་སྲིད་དུ་ཞག་བཞིར་ནི་དེ་ཡང་དག་པར་ལྡང་བར་མི་བྱའོ། །འོན་ཀྱང་དེ་སྲིད་ཀྱི་ཉིན་ཞག་རྣམས་སུ་དེ་ལ་རྟོགས་ཀྱང་ཐུན་མཚམས་གསུམ་དུ་བཟླས་པར་བྱའོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ནི་སྔ་ནི་ཁྱད་པར་རོ། །ཉི་མ་བཅུ་གཅིག་པར་ཡང་དག་པར་ལྡངས་ཏེ། ཡང་དག་པར་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པར་བལྟ་ཞིང་ལྡང་ངོ་། །བཀྲུའོ་[2]ཞེས་པ་ཐུན་མོང་གི་ལས་སོ། །བཀྲུ་བའི་སྐུད་པ་ཡང་ཀརྡྲིརའི་ཤིང་གི་ཤུན་པའོ་ཞེས་པ་ནི་གདམས་ངག་གོ །ཁྱད་པར་ནི་མེ་ཏོག་དག་གིས་ཞེས་[3]གསུངས་ཏེ། ནི་ནི་ཉིད་ཀྱི་དོན་ཏེ། དེ་ནི་མེ་ཏོག་གོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཆུ་བོ་ཆེན་པོར་ནི་སྐམ་པ་མེད་པའོ། །ནི་ནི་བསྙུ་བའོ། །ཕིར་ནི་དེ་ཉིད་ཀྱི་དོན་ནོ། །ནི་ནི་ཉེ་བར་གཟུང་བ་སྟེ། ཁ་ཅིག་ཏུ་ཡང་གཉིས་ནི་བཀྲུ་བར་མི་བྱའོ། ༤ །

དེ་དག་ཐམས་ཅད་རིམ་བཞིན་[4]དུ། །
ལན་རེ་བཟླས་ནས་རབ་ཏུ་བྱ། །
ཆུ་བོར་མེ་ཏོག་ཐ་མ་ནི། །
རྒྱུན་ལས་བཟློག་སྟེ་རབ་འབབ་ན། ༥ །

ཅི་ལྟར་ཆུ་སྐྱུར་ཞེས་པ་ན་[5]། དེ་དག་ཀུན་ནི་རིམ་བཞིན་དུ། །ཞེས་གསུངས་ཏེ།

1. ཅི་སྲིད་ གསེར། པེ།
2. རྒྱུའོ་ གསེར། པེ།
3. ཤེས་ གསེར། པེ།
4. རིམས་བཞིན་ པེ། སྣ།
5. ཅི་ལྟར་ཆུ་སྐྱུར་ཞེས་པ་ན་ ཅོ། ཅི་ལྟར་སྐྱུར་ཞེས་པ་ལ་ གསེར། པེ།

བསྟན་པའི་དུས་སུ་སྒྲིངས་ལ་དང་པོ་ལ་སོགས་པའི་མེ་ཏོག་ལ་ཤེས་པར་བྱས་ནས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བཞིན་དུ་བརྒྱུ་བའོ། །དེའི་གོ་རིམ་གྱིས་[1]ཆུ་ལ་དོར་རོ། །ཁ་ཅིག་ན་རེ་བརྒྱུ་བའི་དུས་སུ་གོ་རིམ་[2]ཡིན་ཟེར་རོ། །ནུབ་ཕྱོགས་ཀྱི་མེ་ཏོག་བསྟན་པའི་དུས་སུ། ནུབ་ཕྱོགས་ཀྱི་མེ་ཏོག་བརྒྱུ་བའི་དུས་ཀྱང་དེའི་ཞེས་ཟེར་རོ། །རྒྱུན་ལས་བཟློག་སྟེ་རབ་འབབ་ན་ནི་རྒྱུན་གྱི་ཤུགས་སྟགས་ཀྱི་མཐུས་ཤིན་ཏུ་མནན་ཏེ་ལོག་ནས་འོང་བའོ། །
ལྷག་མ་ནི་གོ་སླའོ། ༥ །

ཆུ་དང་བཅས་པར་བླངས་ནས་ནི། །
སོས་མ་རེག་པར་དེ་འཐུངས་ན། །
གསང་བའི་རྒྱུད་ལས་བྱུང་བ་ཡི། །
སྒྲུབ་པོའི་ཚིག་ནི་འགྲུབ་པར་འགྱུར། ༦ །

ཚིག་གྲུབ་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ཏེ་སྒྲུབ་པའོ། །གསང་བའི་རྒྱུད་ལས་བྱུང་བ་ནི་རབ་ཏུ་བྱེད་པ་ཞེས་དགོངས་སོ། ༦ །

དེ་ནས་སྐྱེ་གནས་བརྒྱ་བཅིངས་ལ། །
བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་དུ་བཟླས་ནས་ནི། །
སྟགས་པ་བསྒྲུབ་བྱར་མངོན་ཕྱོགས་ན། །
བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་སྒོ་བར་གནས། ༧ །

1. གོ་རིམས་ཀྱིས་ སྡེ། ཅོ།

2. གོ་རིམས་ སྡེ། ཅོ།

དེ་ལ་ཡིད་ཀྱི་གནས་བཞིན་དུ། །
ཀླུ་ལྡན་ཐུན་གསུམ་མཐེའུ་ཆུང་བསྐྱོད། །
ཐམ་ཟེ་གསོད་པ་དག་གིས་ཀྱང་། །
ཞག་བདུན་བརྒྱ་བྱིན་སོ་ཏ་ངེས་འགུགས། ༨།

ཙཛྷན་[1]དམར་པོའི་དྷུལ་ལས་ནི། །
བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་གཟུགས་བྱས་ལ། །
ཚ་བ་གསུམ་གྱིས་ལུས་ལ་བསྐུ། །
སྲཱ་ཚིལ་[2]གྱིས་ཀྱང་རབ་ཏུ་བྱུག ༩ །

སྒྲུབ་པ་པོ་ཡི་[3]གསང་གནས་སུ། །
ཟངས་མའི་ཁབ་ཀྱིས་ཕུག་ནས་ནི། །
སེང་ལྡེང་མདག་མེ་དུ་མེད་ལ། །
མཁས་པས་ཉི་མ་བདུན་དུ་བསྲོ། ༡༠ །

ལན་བརྒྱ་བཟླས་ཏེ་བཟླས་པའི་མཐར[4]། །
མི་ཡི་བདག་པོ་མདུན་ན་འདོན། །
བཙུན་མོའི་འཁོར་དང་བཅས་པ་ནི། །
ངེས་པར་འགུགས་པར་བྱེད་པ་ཡིན། ༡༡ །

---

1. ཙན་དན་ པེ། སྣ།
2. སྲ་ཚིལ་ པེ།
3. བསྒྲུབ་པ་པོའི་ སྣ།
4. བཟླས་པའི་མཐའ་ སྣ།།

མི་ཡི་བདག་པོ་འཁོར་བཅས་པ། |
གྲོ་གའི་[1]འདབ་མར་བྲི་བྱ་བ། |
གི་ཝང་དག་གིས་བྲིས་ནས་ནི། |
མིང་དང་སྤྲིལ་ནས་གང་ལ་ནི། ༡༢ |
མངོན་པར་ཕྱོགས་ཏེ་བརྒྱ་བཟླས་ནས། |
སེང་ལྡེང་མེ་ལ་དེ་གདུངས་ཤིང་། |
དུར་ཁྲོད་མེ་སྙིང་གྲུབ་ཕྱིར་[2]བཤད། |
ཧྲེ་སྲིད་སྤྲ་ཚིལ་མ་ཞུའི་[3]བར། ༡༣ |
བསྲོས་པར་གྱུར་ན་རྒྱལ་པོ་ནི། |
འཁོར་ལོས་བསྒྱུར་[4]དང་བཅས་པར་ཡང་།།
ངེས་པར་འགུགས་པར་འགྱུར་བ་ཡིན། |
བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་རྐང་རྗེས་ལས། |
ཙཧྲན་[5]དམར་པོ་ཉིད་དང་ནི། ༡༤ |

རྣལ་འབྱོར་མའི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་ཕྱག་རྒྱ་ནི་སྐྱིལ་ཀྲུང་[6]བཅས་ལ་རྡོ་རྗེ་བཅིངས་པར་བྱས་ནས་གུང་མོ་གཉིས་ཀྱི་ཁ་དང་མཐེ་བོང་གཉིས་ཁ་སྦྱར་ནས་མཛུབ་མོ་གཉིས་

---

1. གྲོ་བའི་ པེ།
2. སྒྲུབ་ཕྱིར་ སྣ།
3. སྤྲ་ཚིལ་མ་ཞུ་ སྣ། ལྷ།
4. འཁོར་ལོས་སྒྱུར་ སྡེ།
5. ཙན་དན་ པེ། སྣ།
6. སྐྱིལ་དཀྲུང་ པེ།

སྒྲིང་སྟེ། ཕན་ཚུན་སྦྱར་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མའི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཞེས་ཁ་ཅིག་[1]
ཟེར་རོ། །སྐྱེ་གནས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཞེས་པའི་གཞུང་ལ་ཡང་ཕྱག་རྒྱ་ནི་འདི་ཉིད་དོ། |
རྗེས་སུ་བཟླས་པའང་ཤེས་པར་བྱའོ། །ཇི་ལྟར་བཟླ་ཞེས་པ་ལ་བསྒྲུབ་བྱར་ཞེས་པ་ལ་
སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། མཐེ་ཆུང་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་གི་ཡི་གེ་དྲུག་གི་ཕྲེང་བ་སྤེལ་
བ་[2]དང་བཅས་པ་ཤོག་བུར་རྫོགས་པར་བྱས་ལ། བསྒྲུབ་བྱའི་ཀང་རྗེས་ཀྱི་རྡུལ་ལ་
སོགས་པ་ལས་[3]བྱས་པའི་གཟུགས་བརྙན་གྱི་ལྟོ་བར་བཅུག་སྟེ། བསྐྱོད་པ་ནི་བཟླས་
པར་བྱའོ། །ཅི་ལྟ་བུར་གྱུར་བས་བཟླས་ཞེས་པ་ལ་གསུངས་ཏེ། བསྒྲུབ་བྱའི་གཟུགས་
བརྙན་དུ་གཏོགས་པ་ལ་མངོན་དུ་ཕྱོགས་ཏེ། ཐུན་མཚམས་གསུམ་དུ་དེ་ཡིད་ལ་གནས་
པས་བརྒྱ་བྱིན་ལ་སོགས་པ་འགུགས་པར་བྱེད་དོ། །ཞག་བདུན་དུ་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་
བཟླས་པར་བྱའོ། །ལྔ་བཅུ་རྩ་དྲུག་དང་བཅས་པའི་བདུན་བརྒྱའི་མཐའ་ནི་བརྒྱའི་
མཐར་འགུགས་པའོ། །དེ་ཞེས་པ་ནི་མཚོན་ཆས་སོ། །ལྷག་མ་ནི་གོ་སླའོ། ༧-༡༩ |

དུར་ཁྲོད་ལྷག་མ་ཐལ་བས་སྦྱོས[4]། |
བསྒྲུབ་པ་པོ་[5]ཡིས་གཅིག་བརྫུས་ལ། |
སེང་ལྡེང་མེ་ནི་དུ་མེད་ལ། |
རབ་ཏུ་འབད་པས་བསྲོ་བར་བྱ། ༡༥ |

1. ཞེས་པ་ཅིག་ སྡེ།
2. ཕྲེང་བ་སྤེལ་བ་ སྡེ།
3. སོགས་པ་ལ་ གསེར། པེ།
4. སྦྱོད་ ལྷ།
5. བསྒྲུབ་པ་པོ་ པེ།

རྡུལ་དེ་ལག་པ་གཉིས་ཀྱིས་ནི། །
མཉེས་ནས་སྦྱིན་སྲེག་བྱས་ནས་ནི། །
ཇི་སྲིད་དུ་ནི་བསྲེགས་པས་འགྲུབ[1]། །
རྡུལ་དེ་བླངས་ནས་མ་ཡིངས་པར། ༡༦ །

དབུགས་མི་འབྱིན་པར་སྲས་ན་ནི། །
བཀྱུལ་ཞིང་[2]སེམས་དང་བྲལ་འདྲ་ལ། །
ཚོངས་ཤིང་ཉོན་མོངས་པ་[3]ཉིད་དང་། ༡༧།

གཟུགས་བརྙན་དུ་[4]གཏོར་པ་བསྒོ་བཞིན་པ་ནི་དུར་ཁྲོད་དུ་བོར་བའི་སོལ་བའམ་ཐལ་བ་ལ་གདུང་བའོ། །རྡུལ་དེ་ཉིད་ནི་སྲས་ན་ནི། །ཞེས་པ་ནི་སྦྱིན་སྲེག་རྡུལ་ལོ། །ལྷག་མ་ནི་གོ་སླའོ། ༡༥-༡༧།

རླུང་གི་ཤུགས་ཀྱིས་འོངས་ནས་ནི། །
སྒྲུབ་པ་པོ་ཡི་[5]སྙིང་དུ་ལྷུང་། །
ཕྱུགས་སམ་ཡང་ན་ཕོ་ཉ་མོ། །
མཁས་པ་ཡིས་ནི་དབྱེ་བ་ཡིན། ༡༨ །

---

1. བསྲེག་པས་འགྲུབ་ པེ།
2. བཀྱུལ་ཤིང་ སྣ།
3. སྦྱོས་ཤིང་སྦྱོན་ཚོངས་པ་ སྣ། ཞ། སྦྱོས་ཤིང་ཉོན་མོངས་པ་ པེ།
4. གཟུགས་བདུན་དུ་ ཅོ།
5. སྒྲུབ་པ་པོའི་ པེ།

དེ་ནས་ལས་ཀྱི་ཕོ་ཉ་མོར། །
བྱ་བ་འདི་ནི་འཇོན་པ་ཉིད། །
ཀ་ར་བྱི་རའི་[1]ལྷུག་མ་ནི། །
ཙན་བཅས་དཔུང་པའི་ཚད་མཉམ་བླངས། ༡༩ །
གང་ལ་སྟུགས་ནི་མངོན་པར་བྲི། །
གང་དུ་སྒྲུབ་པ་པོ་ཡིས་ནི[2]། །
འབར་འགྱུར་རོ་བསྲེག་[3]མེ་ལ་དོར། ༢༠ །
ཇི་སྲིད་དེ་ནི་མ་ཆིག་པ། །
མྱུར་དུ་སོང་སྟེ་དེ་བླངས་ལ། །
རིག་པ་ལན་བདུན་བཟླས་ནས་ནི། །
གང་ཞིག་བཟླས་ཏེ་བསྐོར་ན་ནི། ༢༡ །

ཕྱུགས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ནི་སྦྱོར་བ་གཞན་བསྟན་ཏོ[4]། །སྐྱེས་པའམ་བུད་མེད་བྱེད་པ་ནི་རང་མངོན་པར་འདོད་པའི་ལས་སོ། །དེའི་རྒྱུ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཕོ་ཉ་ཡོངས་སུ་གཟུང་བ་ནི་ཕོ་ཉ་ཚར་གཅོད་[5]པའོ། །ཙན་[6]བཅས་དཔུང་གི་ཚད་མཉམ་བླང་། །

1. ཀརཔིརའི་ པེ།
2. ‘གང་ལ་སྟུགས་ནི་མངོན་པར་བྲི། །གང་དུ་སྒྲུབ་པ་པོ་ཡིས་ནི།’ ཞེས་པའི་ཚིག་རྐང་གཉིས་པོ་བོད་འགྱུར་རྩ་བར་མ་གསལ་ནའང་རྒྱ་དཔེའི་རྩ་བ་དང་འགྲེལ་པ་ལྟར་དེར་བཀོད་པ་ཡིན།
3. རོ་བསྲེགས་ པེ། སྣ།
4. སོགས་པས་ནི······སྟོན་ཏོ་ གསེར། པེ།
5. གཅད་ གསེར། པེ།
6. བཙན་ པེ།

ཞེས་པ་ནི་ភན་དང་བཅས་པའི་དཔྱད་པའི་ཚད་ཀྱིས་ཀཱ་རབྀིར་[1]ལྷུག་མ་བླང་བའོ། །

ཞེས་པ་ནི་ལྷན་དང་བཅས་པའི་དཔྱད་པའི་ཚད་ཀྱིས་ཀཱ་རབྀིར་[1]ལྷུག་མ་བླང་བའོ། ། གང་ལ་སྟགས་ནི་མངོན་པར་བྱེ། །ཞེས་པ་ནི་གང་གི་མིང་དང་སྦྱོལ་བའི་སྟགས་དེ་ཉིད་མངོན་པར་བྱེ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །གང་གི་ལས་ཞེས་པ་ནི་སྐྱེས་པའམ་བུད་མེད་དོ། །བཟློག་སྟེ་རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་གི་གོ་ཆ་ཕྱི་མའི་ཡི་གེའི་སྟགས་སོ། །དེ་ཞེས་པ་ནི་སྐྱེས་པའོ། །དེའམ་ཞེས་པ་ནི་བུད་མེད་དོ། ༡༨-༢༡ །

དེ་ནི་དེ་ཡི་སྐད་ཅིག་ལ། །
བུད་མེད་མཆོག་གམ་རང་གཟུགས་ཅན[2]། །
རླུང་གི་ཤུགས་ཀྱིས་འོང་བར་འགྱུར[3]། །
ཀཱ་ར་བྀི་རའི་[4]མེ་ཏོག་དམར། །
བརྒྱ་བཟླས་རྒྱལ་གྱི་[5]སྦྱོར་བ་ལས། ༢༢ །

སྐྱབ་པོས་གི་ཕང་[6]གིས་བྲུགས་ལ། །
མེ་ཏོག་ཆུ་ལ་གནས་པ་ལ། །
ཆུ་བོ་ཆེན་པོར་ཞུགས་ནས་ནི། །
ཟླ་བ་མན་ཚོད་ཆུར་བཙུག་སྟེ། ༢༣ །

---

1. ཀར་བྀིརའི་ གསེར། པེ།
2. སྐྱེས་པའམ་བུད་མེད་རང་གཟུཏ་ཅན། བོད་འགྱུར་རྩ་བ། བུད་མེད་མཆོག་གམ་ལེགས་པའི་གཟུགས། བོད་འགྱུར་འགྲེལ་པ། གོང་དུ་བཀོད་པ་དེ་བཞིན་རྒྱ་དཔེའི་རྩ་འགྲེལ་ལྟར་ཡིན།
3. འོངས་པར་འགྱུར་ སྣ། ཞ།
4. ཀརཝིརའི་ པེ། སྣ།
5. རྒྱལ་གྲིས་ སྣ། ཞ།
6. གེཙ་ཕང་ སྡེ། ཞ།

ལག་པ་སྒྱུར་བའི་དབུས་གནས་ལ། །
རིག་པ་སྟོང་དུ་བཟླས་ནས་ནི། །
ལག་པ་གཉིས་ཀྱིས་ཕྱིར་བླངས་[1]ཏེ། །
ཆུ་དང་བཅས་པར་བཏུང་བར་བྱ། ༣༩ །

དེའི་ཕྱིར། བུད་མེད་མཆོག་གམ་ལེགས་པའི་གཟུགས[2]། །ཞེས་པ་ནི་བུད་མེད་མཆོག[3]ཅེས་པ་ནི་བུད་མེད་མཆོག་གོ །ངག་གི་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་སྦྱོར་བ་གཞན་ནི་ཀརྦི་རའི་མེ་ཏོག་དམར་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། སྐར་མ་རྒྱལ་ལ་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་བཟླས་པར[4]བྱས་ནས་བླང་བར་བྱའོ། །དེ་ནས་གི་ཝང[5]གིས་བྱུག་པའོ། །དེ་ཞེས་པ་ནི་མེ་ཏོག་དེའོ། །སྨྲོས་བྱེད་ཀྱི་ཆུ་ལ་ཡང་དག་པར་གནས་ཏེ་དེ་ལ་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་བཟླས་པ་བྱའོ། །དེ་ནས་ཆུ་བོ་ཆེན་པོར་ལྟེ་བ་ཙམ་ཆུར་ནུབ་པར་བྱས་ལ་སྟོང་ཕྲག་གཅིག་བཟླས་པར་བྱའོ། །ལག་པ་གཉིས་ཀྱིས་ཞེས་པ་ནི[6]སྟོང་བཟླས་པའི་རྗེས་སུ[7]སྒྲུབ་པ་པོའི་གྲོགས་ཀྱིས་སྒྲུབ་པ་པོའི་སྙིམ་པར་ཡང་དག་པར་རྒྱས་ཤིང་ཟེ་འབྲུ་ལ་སོགས་པ་ཉམས་པ[8]མེད་པར་གཞུག་པར་བྱའོ། །ཆུ་ནི་ཞེས་པ་ནི་གང་ལ་མེ་ཏོག་དེ་

1. ཕྱིར་བཏགས་ སྣེ། སྙིམ་པར་བླངས། རྒྱ་དཔེ།
2. རང་གཟུགས་ རྒྱ་དཔེ།
3. བུད་མཆོག་ གསེར།
4. བཟླས་པ་ གསེར། པེ།
5. གིའུ་ཝང་ གསེར། པེ།
6. ཞེས་པ་ན་ གསེར།
7. རྗེས་སུའོ་ པེ།
8. 'ཉམས་པ་' སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེའི་པར་མ་གཉིས་ཀྱི་ནང་མ་གསལ།

སྒྲུབ་པའི་གྲོགས་ཀྱི་ཐལ་མོ་ཁ་སྦྱར་དུ་གནས་པར་གྱུར་པ་རང་གི་ལག་པ་གཉིས་སུ་བྱའོ། ༣༣-༣༩ །

དེ་ནས་སྒྲུབ་པ་པོ་དེ་ཡིས། །
ཚིག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་འགྱུར། །
རྒྱལ་པོའམ་རྒྱལ་པོའི་ཆུང་མ་ནི། །
ཡིད་ཀྱིས་ངེས་པར་འགུཏ་པར་འགྱུར། ༣༥།
ལྷར་བཅས་ལྷ་མིན་[1]མི་རྣམས་ནི། །
མྱུར་དུ་དབང་དུ་བྱེད་པར་འགྱུར། །
ཁྲོས་པས་ཚིག་གིས་གསོད་འགྱུར་ཞིང་། །
དབྱེ་དང་བསྐྲད་པ་ཉིད་ཀྱང་བྱེད[2]། ༣༦ །
སྒྲུབ་པ་པོ་ཡི་[3]ཚིག་ཉིད་ཀྱིས། །
ཆར་གཅོད་པར་ནི་བྱེད་པར་འགྱུར། །
ཚིག་ཙམ་གྱིས་ནི་ཆུ་བོ་[4]དང་། །
ཤིང་རྟ་འཁྲུལ་འཁོར་རྒྱ་མཚོ་དང་། ༣༧ །
གླང་པོ་རྟ་དང་དེ་བཞིན་སྤྲིན། །
སྐྱེས་བུའམ་ཡང་ན་བུ་ཡང་གནོན། །

---

1. ལྷ་མི་ སྣ།
2. ཚིག་རྐང་འདི་རྒྱ་བོད་པར་མ་གཉིས་སུ་མི་མཐུན་པ་སྣང་། དབྱེ་དང་……ཀྱིས་དབྱེ། སྣ།
3. སྒྲུབ་པ་པའི་ པེ།
4. ཆུ་བོའི་ པེ། སྣ།

ཡིད་ཀྱིས་ཡིད་ལ་གང་འདོད་པ། །
ཚིག་གིས་ཐམས་ཅད་བྱེད་པར་འགྱུར། ༣༨ །

ཚིག་གྲུབ་པའི་དགོས་པ་ནི་རྒྱལ་པོའམ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཁྲོས་པས་[1]ཚིག་གིས་གསོད་འགྱུར་ཞིང་། །དབྱེ་དང་བསྐྲད་པ་གཉིས་[2]ཀྱང་བྱེད། །ཅེས་[3]གསུངས་སོ། །ཕྱུན་མོང་མ་ཡིན་པར་སྟོན་པའོ། །གླང་པོ་དང་། རྟ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་སྲིན་ནི། དེ་བཞིན་སྲིན་ཏེ། གླང་པོ་རྟ་དང་དེ་བཞིན་སྲིན་ནོ། །དེ་གང་ཡིད་ལ་འདོད་པ་ཞེས་བྱའོ། །གང་ཡིད་ལ་འདོད་པ་དེ་འགུགས་པར་བྱེད་དོ། ༣༥-༣༨ །

དགུག་པ་ཡི་ནི་[4]སྦྱོར་བ་དག །
བུད་མེད་ཐམས་ཅད་སྡོངས་བྱེད་པ། །
ཀ་ར་བི་རའི་[5]མེ་ཏོག་ནི། །
དམར་པོ་ཡང་དག་བླངས་ནས་སུ། ༣༩ །

རིག་པ་ལན་བརྒྱ་[6]བཟླས་པ་དག །
སྐྱེ་གནས་དབུས་སུ་གཞུག་པར་བྱ[7]། །

1. ཁྲོ་བས་ གསེར།
2. ཉིད་ རྒ་བ།
3. ‘ཅེས་’ གསེར་པེ་གཉིས་སུ་མེད།
4. དགུག་པ་ཡིས་ནི་ པེ།
5. ཀརབིརའི་ པེ།
6. རིག་པ་ལན་བདུན་ རྒྱ་དཔེ།
7. གཞུགས་པར་བྱ་ སྣ།

མི་རྟོག་དེ་ནི་ཁ་སྦྱོར་བྱས། |
གསང་བའི་གནས་སུ་ངེས་པར་སྦྱོར། ༡༠ |
གཉིས་མེད་ཡེ་ཤེས་རྣལ་འབྱོར་ལྡན། |
སྔགས་པས་བརྒྱ་ཕྲག་གཅིག་ཏུ་བཟླས། |
སྐྱེ་གནས་དབུས་ཀྱི་མི་རྟོག་དེ[1]། |
སྒྲུབ་པ་པོ་ཡིས་གཅིག་སླངས་ལ། ༡༡ |
མི་རྟོག་གིས་ནི་གང་བསྣུན་པ། |
དེ་ནི་མོད་ལ་དབང་དུ་འགྱུར། |
བརྒྱལ་ཞིང་སེམས་དང་བྲལ་བ་དང་[2]། |
ཡན་ལག་ཆོཏ་ཀུན་གཞན་དབང་སྟེ། ༡༢ |
མངོན་འགྱུར་སེམས་ནི་ཟློག་པ་རུ[3]། |
སྐད་ཅིག་གིས་ནི་དབང་དུ་བྱེད། |
འདི་ནི་ཡིད་ཆེས་དངོས་གྲུབ་སྟེ། |
དོན་ཡོད་དབང་དུ་བྱེད་པ་ཡིན། ༡༣ |

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་དང་ཆིག་གི་དངོས་གྲུབ་ལུང་བསྟན་པའི་ཚོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་བཞི་བཅུ་རྩ་ལྔ་པའོ།། །།

---

1. མི་རྟོག་དང་ སྣ། ཞྭ། པེ།
2. བྲལ་བ་ཡང་ སྣ། ཞྭ།
3. ཟློག་པ་རུ་ ཞྭ། བཟློག་པ་རུ་ སྣ། པེ།

འགུགས་པར་བྱེད་པ་ལ་སོགས་པའི་སྦྱོར་བ་གཞན་གསུངས་པ་ནི་དེ་ཡང་གོ་སླའོ། ། ཡིད་ཆེས་སེམས་ནི་ངེས་པར་འཇུག ། ཅེས་པ་ནི་སེམས་དང་ལྡན་པ་ལ་སྦྱོར་བ་ཡིན་གྱི་ཤིང་དང་རྡོ་ལ་སོགས་པ་ལ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། ༣༨-༣༣ །

རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་གི་གོ་ཆའི་སྔགས་ཀྱི་ཕྱི་མའི་ཡི་གེ་དྲུག་གི་བདག་ཉིད་ཀྱི་སྔགས་དེའི་ལས་དང་། རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་གི་ལས་དེ་ཡང་ངག་གི་དངོས་གྲུབ་ཚིག་གྲུབ་པས་འགུགས་པ་དེ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པའི་ལེའུ་ཡིན་པས་དེ་དེ་བཞིན་ནོ། །བཞི་བཅུ་རྩ་ལྔ་ནི་བཞི་བཅུ་རྩ་ལྔ་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་བཞི་བཅུ་རྩ་ལྔ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། །།

ཡི་གེ་ཧ་ལྷའི་ལས་ཀྱི་ཚོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནས་ཡི་གེ་ཧ་ལྷ་ནི། །
ལས་རྣམས་ཐམས་ཅད་སྒྲུབ་བྱེད་པ། །
གང་ཞིག་ཤེས་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། །
མྱུར་དུ་དངོས་གྲུབ་རབ་འཇུག་པའོ། ༡།

ད་ནི་ཡི་གེ་ཧ་ལྷའི་ལས་ནི། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དེ་ནས་ནི་ཧ་ལྷའི་ལས་ཀྱི་རབ་བྱེད་དོ། །ཧ་ལྷ་ཞེས་པ་ནི་ཧ་ལྷའི་ལས་དགོས་པའམ། དེ་རབ་ཏུ་སྒྲུབ་པ་པོའི་རྣལ་འབྱོར་པས་ཧ་ལྷ་རྒྱས་པར་བྱའོ། ༡ །

ཧྲ་ཧྲི་ཧི་ཧོཾ་ཧཾ[1]། །
ཡི་གེ་ཧ་ལྷ་ལག་པ་ཡིས[2]། །
བསྐུལ་དང་ལྡན་པས་མཉེས་ན་[3]ནི། །
ཁ་ནས་ཀྱང་ནི་ཁྲག་འཛག་ཅིང་། །
དགྲ་བོ་དེ་ཡི་[4]མོད་ལ་འཆི། ༣ །

ཧ་ལྷ་སྟོན་ཏེ་ཧྲཧྲིཧིཧོཾཧཾ། ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཧ་ལྷའོ། །དབྱངས་དྲུག་པོ་གང་ཡིན་

---

1. ཧྲཧིཧིཧོཧཿ པེ། ཧཾཧོཧཧ སྣ། ཧཾཧོཧཧིཧཿ སྡེ། ལྷ། ཧྲཧྲིཧུཧིཧོཧཿ རྒྱ་དཔེ། གོང་དུ་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།
2. སླག་པ་ཡིས་ པེ།
3. མཉེས་ནས་ ལྷ།
4. དེའི་ པེ།

པའི་[1]དཔའ་བོ་དྲུག་གི་གོ་ཆའི་སྔགས་བཏུ་བའི་ལྷག་མ་དབྱངས་ལྔ་ནི་ཏས་ཁྱད་པར་དུ་བྱས་པའོ། །ཏ་ལྔ་ནི་མདའ་ལྔ་དང་ལྡན་པའི་ལག་པས་མཉེ་བར་བྱའོ་ཞེས་སྦྱར་བར་བྱའོ། །དེའི་ཕྱིར་ཡང་སྟོན་ཏེ། ཡི་གེ་ཏ་ནི་ལྔ་པོ་དག །ཅེས་གསུངས་ཏེ། ལག་པར་ཏ་ལྔ་ནི་ལག་པར་འཁོར་ལོ་རྟེན་ས་ལྔ་པ་བསམ་པའམ[2]། དངོས་སུ་བྲིས་ལ་ཡི་གེ་ལྔ་བསམ་པའམ་[3]བྲིས་ལ་མཉེ་བར་བྱའོ་ཞེས་པ་ནི་ཉེ་བར་བསྡུ་བའི་དོན་ཏོ། །ལྔའི་སྒྲས་ནི་གསལ་པོའི་དོན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར། ༀ་ཡང་གཟུང་བས་ཧྲྀཾ་ཧྲྀཾ་ཧྲུཾ་ཧྲཻཾ་ཧྲཽཾ་ཧྲཿ། ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཧ་དྲུག་གོ །དེ་ཉིད་ཏ་ལྔའི་སྔགས་སོ། །སྔགས་དྲུག་གི་ཞེས་གཞན་ཁ་ཅིག་འདོད་དོ། །ཁ་ནས་ཀྱང་ནི་ཁྲག་འཛག་ཅིང་། །ཞེས་པ་ནི་རྩ་ལྔ་ལ་ཁབ་ཀྱི་རྣམ་པ་ཅན་གྱི་གདོང་གིས་ཕུག་སྟེ་ཁྲག་དཀྲུག་བཞིན་པ་ཐོད་པ་ལ་གནས་པར་བསམ་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་དེ་མ་ཐག་ཏུ་དགྲ་བོ་དེ་འཆིའོ། ༡ །

རང་གི་ཁྲག་ནི་ཐོད་གནས་པ། །
སྲིན་ལག་གིས་ཁྲག་མཉེ་བར་བྱ། །
ཇི་སྲིད་སྐམས་[4]ཀྱི་བར་དུ་སྟེ། །
དེས་ནི་བསྒྲུབ་བྱ་[5]རྣམ་པར་འཇིག ༢ །

---

1. དབྱངས་དྲུག་པོ་གང་མ་ཡིན་པའི་ རྒྱ་དཔེ།
2. བསམས་པའམ་ གསེར། པེ།
3. ཡི་གེ་ལྔ་བསམས་པའམ་ གསེར། པེ།
4. བསྐམས་ སྣ།
5. སྒྲུབ་བྱ་ པེ།

སྦྱོར་བ་གཞན་ནི་རང་གི་ཁྲག་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཕྲིན་ལག་ནི་བུ་མེད་པ་ཉིད་དེ་[1]དེའི་ཁྲག་ནི་ཁྲག་གོ །སྐམ་པ་ནི་བསྐམ་པར་བྱའོ་[2]ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཏ་རྣམ་པ་ལྔ་བཟླས་པ་ཉིད་ནི་དགོས་པའོ། ༣ །

གལ་ཏེ་ཁྲོ་བོ་འབར་བ་དང་། །
མིག་དམར་བ་ཡིས་བཟླས་ན་ནི། །
དཔུང་ཚོགས་བཞོན་པར་བཅས་པ་ཡི[3]། །
རྒྱལ་པོ་མྱུར་དུ་འཆི་བར་བྱེད། ༤ །

གལ་ཏེ་ཁྲོས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོཏ་པས་ནི་བཟླས་པ་ཙམ་གྱིས་འགྲུབ་པར་སྟོན་ཏོ[4]། །དྲུག་དང་སྐྱེ་ཚོས་ལག་པའི་མཐིལ་གཉིས་ལ་རྣམ་པར་བྲུགས་ལ། དེའི་སྟེང་དུ་བ་གླ་དང་ཐོད་ལེ་ཀོར་ལ་སོགས་པ་བྱ་རོག་གི་གཤོག་པའི་སྨྱུ་གུས་[5]གཟུང་སྟེ་ཏ་རྣམ་པ་ལྔ་སྔོན་བཞིན་དུ་བྲིས་ལ་བསམ་གཏན་གྱིས་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་བལྟས་ཏེ། སེང་ལྡེང་གི་འདབ་མའམ་མེ་ལ་བསྲུབ་བྱའི་རྐང་པའི་རྟུལ་ལག་པ་གཉིས་ཀྱིས་མཉེ་བ་ནི་ཡང་དག་པར་མཉེས་ནས་མིང་གཟུང་བ་སྔོན་བཞིན་དུ་འགྲོ་བས་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་སྦྱིན་སྲེག་བྱས་ན་ཁ་ནས་ཁྲག་སྐྱུགས་ཏེ་དགྲ་བོ་འཆི་བར་འགྱུར་རོ། །ཞེས་ཁ་ཅིག་ཟེར་རོ། ༤ །

1. བུ་མེད་པ་ཉིད་དོ་ གསེར། པེ།
2. བསྐམས་པར་བྱའོ་ གསེར། པེ། སྐམ་པར་བྱའོ་ ཅོ།
3. བཅས་པ་ཡིས་ སྣ། ཞ།
4. འགྲུབ་པར་སྟོན་ཏེ་ གསེར། པེ།
5. སྨྱུ་གུས་ གསེར། པེ།

བྲེ་ལ་དང་ནི་ནེའུ་ལེ་དང་།
ཁྭ་དང་ཤ་དང་ཆུ་སྐྱར་ནི[1]།
མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སྟོབས་ཅན་སྦྲུར།
འདི་དག་སྒྱུར་དུ་འགྲུབ་[2]ཡིན་པར།
རྒྱུད་འདི་ལ་ནི་ཐེ་ཚོམ་མེད[3]། ༥
རི་བོང་ལ་སོགས་སྤྱི་ལས་ནི།
སྲིད་བུ་བྱས་ཏེ་ལན་སྟོང་བཟླས།
གང་གི་[4]མགུལ་དུ་བཅིངས་གྱུར་པ།
དེ་ནི་དེ་དང་འདྲ་བར་འགྱུར། ༦

སྦྱིན་སྲེག་གི་སྦྱོར་བ་ནི་བྲེ་ལ་དང་ནི་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དབང་ནི་དབང་ཕྱུག་གོ །འཇམ་བུ་ཀ་ནི་ལྕང་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཤ་དེ་དག་གིས་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ལ་གཏོར་མ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་སྦྱིན་སྲེག་བྱའོ། །དེ་ལ་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་གཏོར་མ་དང་སྦྱིན་སྲེག་སྦྱོད་དོ་[5]ཞེས་བྱའོ། །ཤ་དེ་རྟགས་འདི་དང་སྦྲེལ་བ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་སྦྱིན་སྲེག་བྱ་ཞེས་དགོངས་སོ། །སྒྱུར་དུ་དངོས་གྲུབ་[6]བྱེད་པ་ནི་རྒྱལ་པོ་ལ་

1. བྲེ་ལ་ཁྲེ་དང་ནེའུ་ལེ་དང་། །གླང་པོ་ཆུ་སྐྱར་ཁྭ་དང་ཤ། ཞེས་རྒྱ་དཔེའི་རྩ་བར་གསལ།
2. སྒྱུར་དུ་གྲུབ་ སྣ། པེ།
3. ཐེ་ཚོམ་མེད་ པེ།
4. གང་གིས་ སྣ། ཞྭ།
5. སྦྱིན་སྲེག་སྦྱད་དོ་ གསེར། པེ།
6. ཧ་ནི་དངོས་གྲུབ་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྩ་བ་དང་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

སོགས་པ་གྲུབ་པར་བྱེད་པའོ། །འདི་དག་ཅེས་པ་ནི་བྱི་ལ་ལ་སོགས་པའོ། །རི་བོང་ལ་སོགས་ཞེས་པ་ནི་སོགས་ཀྱི་སྒྲས་ཅེ་སྤྱང་ལ་སོགས་པ་གཟུང་ངོ་། །ལན་སྟོང་བཟླས་ཞེས་པ་ནི་སྒྲའི་རྐྱེན་མེད་པའོ། ༥-༦ །

ལག་པར་བཟླས་བརྗོད་སྟོང་བྱས་ཏེ། །
ཀ་ར་བཱི་རའི་[1]མེ་ཏོག་དང་། །
ཡི་གེ་རེ་རེ་མངོན་བཟླས་ལ། །
སྨྱུམ་མ་ལ་ནི་རེག་གྱུར་ན[2]། ༧ །
མངལ་ནི་རྣམ་པར་འཕོ་འགྱུར་ཏེ། །
གདོང་ན་ཐར་བར་འགྱུར་བ་ཡིན། །
གང་ལ་སྡིགས་མཛུབ་[3]བྱས་ཏེ་འཆི། །
སླར་ཡང་འཚོ་བར་བྱེད་པ་ཡིན[4]། ༨ །

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་ཡི་གེ་ཧ་ལྷའི་ལས་ཀྱི་ཚོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་བཞི་བཅུ་རྩ་དྲུག་པའོ།། །།

ལག་པ་ལ་བཟླས་བརྗོད་སྟོང་གིས་མངོན་པར་བསྔགས་ནས་ཀརབཱིརའི་མེ་ཏོག་དང་བཅས་ནས་སྨྱུམ་མ་ལ་རེག་པར་བྱའོ། །དེས་ཅི་ཞེས་པ་མངལ་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་

---

1. ཀརབིརའི་ སྣ། པེ།
2. རེག་འགྱུར་ན་ པེ།
3. སྡིགས་འཛུབ་ པེ། བསྡིགས་མཛུབ་ སྣ།
4. རྒྱ་དཔེར་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་བདུན་པ་དང་བརྒྱད་པ་གཉིས་ཚིག་ལྷུག་ཐོག་བཞུགས།

སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཡི་གེ་རེ་རེ་[1]ཡང་དག་སྦྱར། །ཞེས་པ་ནི་འབུམ་ཕྲག་ལྔ་བཟླས་པའི་རྗེས་སུ་དེ་ནས་ལས་ལ་སྦྱར་རོ་[2]ཞེས་དགོངས་སོ། །བཏང་ན་ཐར་པ་ཞེས་པ་ཉི་ལག་པས་དེའི་ལུས་བཏང་ན་མངལ་འཕོ་བ་ལས་ཐར་པའོ། ༧-༨ །

རྣལ་འབྱོར་མ་དྲུག་གི་གོ་ཆའི་སྔགས་ཀྱི་སྦྱོར་བ་རྣམས་དང་དོ་རྗེ་ཕག་མོའི་སྦྱོར་བ་དང་གཞན་དུ་ཡང་དཔལ་ཧེརུཀའི་རྣལ་འབྱོར་པས་ཏ་ལྷའི་ལས་ལག་པ་མཉེ་བ་ལ་སོགས་པ་དེ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡིན་ལ་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་དེ་དེ་བཞིན་ནོ། ། བཞི་བཅུ་རྩ་དྲུག་ནི་བཞི་བཅུ་རྩ་དྲུག་པའོ་ཞེས་པ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་བཞི་བཅུ་རྩ་དྲུག་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། །།

---

1. ཡི་གེ་རེ་རེ་ལ་ པེ།
2. སྦྱོར་རོ་ གསེར། པེ།

སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཁའ་འགྲོ་མའི་ཐུགས་ཀྱི་ལས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཚོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་བྱ་བ། །
མཁའ་འགྲོ་ཀུན་གྱི་སྙིང་པོ་སྟེ། །
འདི་ནི་བརྗོད་པ་ཙམ་གྱིས་ཀྱང་། །
དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་སྐྱེད་བྱེད་[1]ཡིན། ༧ །

ད་ནི་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོའི་ཉེ་བའི་སྙིང་པོའི་[2]ལས་ཀྱི་ཚོགས་ནི་དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་ཧ་ལྷའི་ལས་ཀྱི་ཚོགས་ཀྱི་རྗེས་སུའོ། །མཁའ་འགྲོ་ཀུན་གྱི་སྙིང་པོ་དེ་ཡང་དག་པར་བཤད་དོ་ཞེས་སྦྱར་རོ། །མཁའ་འགྲོ་ཀུན་ནི་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོའི་སྙིང་པོའི་ཐུགས་སོ། །དེའི་སྙིང་པོའི་ཡང་སྙིང་པོ་སྟེ་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོའི་ཉེ་བའི་སྙིང་པོའི་ཐུགས་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཨོཾ བཛྲ ཝཻརོཙནཱིཡེ སྭཱཧཱ་ཞེས་བྱའོ། །དེའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པར་བཤད་པར་བྱའོ། །གང་གི་ཕྱིར་དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འབྲས་བུ་སྟེར་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་དེའི་ཕྱིར་འདི་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །འདི་བཟླས་པས་དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འབྲས་བུ་སྟེར་བར་ཡང་དག་པར་བཤད་པར་བྱའོ། །ཉེ་བའི་སྙིང་པོ་བརྗོད་བཞིན་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ། །ཇི་ལྟར་མཁའ་འགྲོ་མ་ཀུན་གྱི་སྙིང་པོ་ཡིན་ཞེ་ན། དེའི་ལས་ཀྱི་ཚོགས་ནི་ངེས་པར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། ༧ །

---

1. བསྐྱེད་བྱེད་ སྣ།
2. ཉེ་བའི་སྙིང་པོའི་ཐུགས་ རྒྱ་དཔེ།

དེ་ནས་མཁའ་འགྲོ་མའི་རིག་པ་ཆེན་པོ་བཟླས་ན་རིགས་ཐམས་ཅད་དབང་དུ་བྱེད་པར་འགྱུར་རོ། །ཧག་ཏུ་བཟླས་བརྗོད་བྱས་པས་ནི་དཔལ་ཆེན་པོ་བསྐྱེད་པར་འགྱུར་རོ། །མི་རུས་ཀྱི་རྒྱུ་ལ་ཞུར་བུ་སོར་དྲུག་པ་བྱས་ལ་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་མངོན་པར་བཟླས་ནས་གང་གི་སྒོར་སྦས་པ་དེའི་རིགས་རྒྱུད་[1]རྣམས་གཅོད་པར་འགྱུར་རོ། །ཞིང་དང་བ་ར་[2]དང་མ་ཧེ་དང་གླང་པོ་ཆེ་དང་། ཧའི་གནས་སུ་བཀོས་ཏེ་[3]སྦས་ན་ཐམས་ཅད་བརླག་པར་[4]འགྱུར་རོ། ༡ །

དེ་ལ་ཞེས་པ་ནི་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའོ། །མཁའ་འགྲོ་མའི་རིག་པ་ཆེན་མོ་ཡང་དེ་བཟླས་བཞིན་པ་ཡང་དེ་བས་དེ་བཞིན་ནོ། །དེ་ལ་སོར་དྲུག་པ་ཞེས་པ་ནི་སྲའི་ཀྲེན་མེད་པའོ། །རིགས་རྣམས་སྒྲོད་དོ་[5]ཞེས་པ་ནི་དེའི་རིགས་རྒྱུད་ཀུན་ཡང་དག་པར་སྒྲོད་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་དགོངས་སོ། ༡ །

དེ་ནས་རྒྱལ་པོའམ་རྒྱལ་པོའི་བློན་པོ་དབང་དུ་བྱ་བར་འདོད་ན་རྒྱལ་པོའི་སྒོར་ས་ལས་བྱས་པའི་གཟུགས་བརྙན་སོར་བརྒྱད་པ་བྱས་ལ་མཁས་པས་བཞག་ནས་ཉིན་ཞག་དང་པོ་ལ་མདུལུངགའི་མེ་ཏོག་[6]དང་འབྲས་བུ་རྣམས་

1. རིགས་བརྒྱུད་ སྣ།
2. བོད་འགྱུར་པར་མ་རྣམས་སུ་‘ར་བ་’ ཞེས་ཡོད་ཀྱང་གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།
3. སྐོས་ཏེ་ པེ།
4. ཐམས་ཅད་སྦས་པར་ སྣ།
5. གཅོད་དོ་ ཅ་བ།
6. མཏུལུངཀའི་མེ་ཏོག་ སྣ། ཞྭ། པེ།

དང་ཀུསུམ་བསྲེས་པས་སྤྲིན་སྲིག་བརྒྱ་སྟོང་བྱས་ན་དེ་དབང་དུ་འགྱུར་རོ། ། ཕཊ་འདི་ཉིད་ཀྱིས་དགུག་པ་དང་། གསོན་པ་དང་[1]། སྐེམས་པ་དང་། རྨོངས་པ་དང་། རྨུགས་པ་དང་[2]། ཆིག་འཕྲོག་པ་དང་[3]། ལོང་བར་བྱེད་པ་དང་། རེག་པ་ཉིད་དང་[4]། སྨར་གཏོང་བར་བྱེད་དོ། ༈ །

ས་ལས་བྱས་པའི་གཟུགས་བརྙན་ཞེས་བྱ་བ་ནི། དེའི་སྙིང་གར་[5]འགྲོ་བ་ལ་སོགས་པར་གཏོགས་པ་ལ་དེའི་སྙིང་གར་[6]དེའི་སྔགས་དང་དེའི་མིང་སྤེལ་བའོ། །རྒྱལ་པོའི་སྒོར་སྦ་བར་བྱའོ། །སོར་བརྒྱད་ཅེས་པ་ནི་དེའི་ཚད་ཀྱི་ཕྱེད་བརྐོས་ལ་སྦྲོའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་ནས་གཞན་དུ་མདུ་ལུངགའི་མེ་ཏོག་གསུམ་སྤྲིན་སྲིག་བྱའོ། །དེ་ནས་གཞན་ཡང་ཚངས་པར་སྟོང་ཕྲག་བརྒྱད་ཉིད་སྤྲིན་སྲིག་བྱའོ་ཞེས་ཟེར་རོ། ༈ །

དེ་ནས་སྐྱེས་པ་བུད་མེད་དུ་བྱ་བར་འདོད་ན་སྐྱེས་པའི་རོའི་མེ་ཏོག་དང་། ཀཱུ་ཀཱུ་ཏྲིའི་[7]འབྲས་བུ་དང་། ཁྭའི་སེན་མོ་དང་། རྐང་པའི་འོག་གི་པགས་པ་[8]ཆ་མཉམ་པར་བྱས་ལ་རི་བོང་གི་ཁྲག་དང་བཏགས་ཏེ། རིལ་བུ་བཅུ་གཅིག་བྱས་

1. ‘གསོན་པ་དང་’ སྣར་ཐང་དང་པེ་ཅིང་དུ་མེད།
2. ‘རྨུགས་པ་དང་’ སྣར་ཐང་དང་པེ་ཅིང་དུ་མེད།
3. ཆིག་འཕྲོག་པ་དང་ངག་ལྐུགས་པར་བྱེད་པ་དང་། རྒྱ་དཔེ།
4. ‘ལོང་བར་བྱེད་པ་དང་རེག་པ་ཉིད་དང་’ རྒྱ་དཔེར་མ་གསལ།
5. སྙིང་ཁར་ གསེར། པེ།
6. སྙིང་ཀར་ གསེར། པེ།
7. ཀཱུག་ཨནདི་ཀའི་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
8. ཐགས་པ་ པེ། སྣ།

ལ་གྲིབ་མ་ལ་སྐམ་མོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཞག་བཟང་པོ་ལག་པ་ལ་བཅིངས་[1]དེ་ཉི་མ་བཅུ་གཉིས་པ་ལ་[2]གང་གི་སྤྱི་བོར་ཕྱེ་མ་བཞག་པ་དེ་བུད་མེད་དུ་འགྱུར་རོ། ༤ །

དེ་ནས་སྐྱེས་པ་ཁྱིར་བྱ་བར་འདོད་ན་གནམ་ལྕགས་[3]ནེའུ་ལེའི་མགོ་བོར་བཞག་ལ་མཚན་མོ་བདུན་གྱི་བར་དུ་བརྒྱ་སྟོང་སྦྱིན་སྲེག་བྱས་ལ་ཉིན་ཞག་བརྒྱད་པ་ལ་གུར་གུམ་[4]དང་། མཉམ་པོར་སྦྱར་ཏེ་ལན་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་མངོན་པར་བཟླས་ནས་ཕྱེ་མའི་སྦྱིན་སྲེག་བྱས་ལ་དེའི་ཐལ་བ་གང་གི་སྤྱི་བོར་བཞག་པ་དེ་ཁྱིར་འགྱུར་རོ། །སླར་གསོ་བ་ནི་མཚན་མོའི་དུས་སུ་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ལ་མཆོད་པ་ཆེན་པོ་བྱས་ཏེ། གཏོར་མ་བྱིན་ན་དེའི་འོག་ཏུ་རྣལ་མར་[5] འགྱུར་རོ། ༥ །

རྫས་རྫས་མ་ཡིན་པར་བྱ་བར་འདོད་ན། གསེར་ཤིང་གི་འབྲས་བུ་སྦྱིན་སྲེག་[6]བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་བྱས་ན་རྫས་མ་ཡིན་པར་འགྱུར་རོ། །ཨརྫུརའི་སྦྱིན་སྲེག་བྱས་ན་རྣལ་མར་འགྱུར་རོ། །དེ་ནས་སྨྱོ་བར་བྱ་བར་འདོད་ན་བྱ་ཆེན་པོའི་གནས་ཀྱི་སྦྱིན་སྲེག་བྱས་ན་ཉི་མ་བདུན་པ་ལ་སྨྱོ་བར་འགྱུར་རོ། །སླར་བཟློག་

1. ལག་པས་བཅིངས་ སྣ།
2. ཉི་མ་གཉིས་པ་ལ་ སྣ། པེ། ཞྭ།
3. རྒྱལ་གྱི་ལྕགས་ སྡེ།
4. གུར་གུམ་ སྣ།
5. རྣལ་འབྱོར་མར་ པེ།
6. གསེར་གྱི་འབྲས་བུ་སྦྱིན་སྲེག་ སྣ། གསེར་ཤིང་གི་འབྲས་བུ་སྦྱིན་བསྲེག་ པེ།

པ་[1]ཉི་འབྲས་ཀྱི་ཕུབ་མའི་སྦྱིན་སྲེག་བྱས་ན་ཞི་བར་འགྱུར་རོ། །བྱི་ལའི་སྤྱི་བླ་བ་གཟས་ཟིན་པའི་ཚེ་བསྡུས་ལ་གང་གི་མིང་ནས་སྨོས་ནས་སྡིགས་ཀྱི་སྦྱིན་སྲེག་བྱས་ནས་ཐལ་བ་དེ་གང་གི་སྒྱི་བོར་བཞག་པ་དེ་བྱེ་ལར་འགྱུར་རོ། །སྐར་བཟླས་ན་རྣལ་མར་[2]འགྱུར་རོ། ༧ །

བྱ་རོག་གི་རྒྱུས་པ་ལ་སྲད་བུ་བྱས་པ་བཟུང་ལ་[3]མངོན་པར་བཟླས་ཏེ་གང་གི་མགུལ་དུ་བཅིངས་པ་དེ་བྱ་རོག་ཏུ་འགྱུར་རོ། །གང་དང་གང་གི་རྒྱུས་པས་[4]སྲད་བུ་བྱས་པ་ལ་མངོན་པར་བཟླས་ཏེ་མགུལ་དུ་བཅིངས་པ་དེ་དེ་དང་འདྲ་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཁྭ་དང་། ཐི་བ་དང་། རྨ་བྱ་དང་། ཆུ་སྐྱར་དང་། ཙུག་པ་དང་། ཁྲ་དང་བྱ་རྒོད་ཀྱི་གཟུགས་འཛིན་པར་འགྱུར་རོ། །བ་ལང་གི་སྤྱི་ལས་སྲད་བུ་བྱས་ལ་ལན་བརྒྱད་བརྒྱ་བཟླས་བཟློད་བྱས་ཏེ་མགུལ་དུ་བཅིངས་ན་དེ་བ་ལང་དུ་འགྱུར་རོ། །རྐང་བཞི་པ་ལ་སོགས་པ་གང་དང་གང་གི་སྤྱི་ལས་སྲད་བུ་བྱས་ལ་མངོན་པར་བཟླས་ཏེ་མགུལ་དུ་བཏགས་ན་དེ་དེའི་གཟུགས་འཛིན་པར་འགྱུར་རོ། །བཀྲོལ་ན་ཐར་བར་འགྱུར་རོ། །འབྲས་སོ་བ་ལ་བཟླས་ལ་ནོར་གྱི་བདག་པོ་ཆེན་པོའི་ཁྱིམ་དུ་བཅུག་ལ་ལྷག་མས་བདག་

1. སྐར་ཕྲོག་པ་ ཡོ།

2. རྣལ་འབྱོར་མར་ ཡོ། རྣམ་པར་ཞི་བར་ སྣ། ཐྭ།

3. གཟུང་ལ་ ཡོ།

4. རྒྱུས་པ་ ཡོ།

ཉིད་[1]དབང་བསྐུར་ན་མཚན་བདུན་གྱིས་[2]སོ་བ་ཐམས་ཅད་འགུགས་པར་འགྱུར་རོ། ༧ །

དཔལ་ཧེརུཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཁའ་འགྲོ་མའི་སྡོགས་ཀྱི་ལས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཚོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་བཞི་བཅུ་རྩ་བདུན་པའོ།། །།

ཀཱུ་ཀཱུ་རྩིའི་[3]འབྲས་བུ་ནི་ནག་པོ་ཆེན་པོའི་འབྲས་བུའོ། །རབ་ཏུ་ལྡོགས་པ་[4]ནི་བྱ་རོག་གོ །རྒྱལ་གྱི་ལྕགས་ནི་ལྕགས་ཀྱི་འབུའོ[5]། །གསེར་ཤིང་ནི་དདུ་རའོ[6]། །བྱ་ཆེན་པོ་ནི་སྲིན་བྱའོ། །ཁྱིའི་རྒྱུས་པ་ནི་ཁྱིའི་རྩའོ[7]། །ལྕག་མ་ནི་ཕྱི་མ་རྣམས་སོ། །འདིས་འདི་ལྟར་སྟོན་ཏེ། འབྲས་སོ་བ་[8]བཅུག་པའི་རྗེས་སུ་དེའི་སྡོགས་ཀྱིས་མདོན་པར་བསྡོགས་པའི་ཚུས་བདག་ཉིད་ལ་དབང་བསྐུར་ཞིང་ཞག་བདུན་དུ་བཟླས་པས་ནོར་རྣམས་འགུགས་སོ། ༡-༧ །

---

1. བདག་ཉིད་དང་ སྣ། ཞ།
2. མཚན་མོ་བདུན་གྱིས་ པེ།
3. ཀཱུ་ཀཱུ་ཊ་ཊིའི་ སྡེ། ཅོ། ཀཱུ་ཀཱུ་རྩིའི་ པེ། གསེར། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
4. རབ་ཏུ་གདོགས་པ་ གསེར། པེ།
5. ལྕགས་ཀྱི་དངུལ་ལོ་ གསེར། པེ།
6. དདུ་བའོ་ སྡེ། བདུ་རའོ་ པེ། ཧྣཧྲུརཀཿ རྒྱ་དཔེ།
7. ཁྱིའི་རྩེའོ་ རྒྱ་དཔེ།
8. འབྲས་སོབ་ སྡེ། ཅོ།

མཁའ་འགྲོ་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྔགས་ཀྱི་ལས་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པས་དེ་དེ་བཞིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ། བཞི་བཅུ་བདུན་ནི་བཞི་བཅུ་རྩ་བདུན་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ་[1]དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་བཞི་བཅུ་རྩ་བདུན་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། །།

✱

1. 'བཞི་བཅུ་བདུན་ནི་བཞི་བཅུ་རྩ་བདུན་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ་' སྡེ་དགེ་པེ་ཅིང་དང་གསེར་བྲིས་ཀྱི་པར་མ་གསུམ་པོའི་ནང་མ་གསལ།

དཔལ་པོ་དང་མཁའ་འགྲོ་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གནས་གསང་བའི་
དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཆོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནས་གཞན་ཡང་བཤད་བྱ་བ། |
མཁའ་འགྲོ་ཀུན་གྱི་དགེ་བ་གང་[1]། |
སྙིང་པོ་རྣལ་འབྱོར་མ་ཀུན་གྱི། |
འདོད་དོན་[2]ཐམས་ཅད་སྒྲུབ་བྱེད་པའོ། ༡ |

དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་ཉེ་བའི་སྙིང་པོའི་ལས་ཚོགས་བསྟན་པའི་རྗེས་སུའོ། །རྟགས་གཞན་ཡང་ཡང་དག་པར་བརྗོད་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་སྙིང་པོ་སྟེ་དེའི་ཕྱིར་མཁའ་འགྲོ་ཀུན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །མཁའ་འགྲོ་ཀུན་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་སྙིང་པོའོ། །གང་དགེ་བ་ཞེས་པ་ནི་གང་གི་ཕྱིར་གྱི་དོན་ཏོ། །གང་གི་ཕྱིར་དགེ་བ་གང་གིས་མཁའ་འགྲོ་མར་འགྱུར་ཞིང་དངོས་སུ་བསྐྱེད་པ་གང་ཡིན་པའོ། །སེམས་ཅན་མ་ལུས་པ་རྣམས་ཀྱི་འདོད་པའི་དོན་ཐམས་ཅད་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་པོ་ཉིད་ཡིན་པས་འདོད་པའི་དོན་ཐམས་ཅད་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་པོ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པའོ། ༡ |

གང་ཞིག་དྲན་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། |
འཇིག་རྟེན་གསུམ་པོ་གཡོ་བྱེད་ཅིང་། |

---

1. དགེ་བ་ཡི་ པེ། དགེ་གང་བའི་ ལྷ། སྣ།
2. འདོད་དོ་ སྣ།

རྗེས་སུ་དྲན་པ་ཙམ་གྱིས་ཀྱང་། །
ཡང་དག་དངོས་གྲུབ་རིམ་གྱིས་སོ། ༢ །
ཧཱསྭཱཊཕཧཱུཾཧཱུཾཡེནཱིརྞཱབཛྲབཡེནཱིཀིཌཱདྡྷབུརྦསཨོཾ[1]། ༣ །

གང་ཞིག་དྲན་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། །འཇིག་རྟེན་གསུམ་ཡང་གཡོ་བར་བྱེད། །ཅེས་བྱ་བ་[2]ནི་གང་ཡང་དག་པའི་དངོས་གྲུབ་ཡང་དག་པའི་བྱང་ཆུབ་ནི་གོ་རིམ་[3]བཞིན་དུ་ཡིན་པ་དེའི་སྙིང་པོའི་སྔགས་བཤད་དོ་བར་སྦྱར་རོ། །དེ་ལ་སྙིང་པོའི་སྔགས་ནི་སྒྲ་བ་སྟེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །སྔགས་སྨྲས་པ་ནི། ཨོཾ སརྦབུདྡྷ ཌཱཀིནཱིཡེ བཛྲབརྞཱནཱིཡེ ཧཱུཾ[4]ཧཱུཾ ཕཊ སྭཱཧཱ། ཞེས་བྱ་བ་ནི་བརྗོད་པའོ། ༢-༣ །

སྔགས་འདི་བཟླས་པས་འགྲུབ་[5]པ་སྟེ། །
ལས་རྣམས་ཀུན་བྱེད་དགེ་བ་ཡིན། །
མཁའ་འགྲོ་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་དང་། །
ཁཊྭ་རོ་ཊ་[6]ལྷ་མ་སོགས། ༤ །

---

1. ཧཱསྭཱཧཕཧཱུཾཧཱུཾཡེནཱིརྞཱབཛྲབཡེནཱིཀིཌཱདྡྷཔུརྦསཨོཾ ཞ། ཧཱསྭཱཊཕཧཱུཾཡེནཱིརྞཱབཛྲབཡེནཱིཀིཌཱབུདྡྷརྦསཨོཾ སྣ། ཧཱསྭཱཊཕཧཱུཾཧཱུཾཡེནཱིརྞཱབབཛྲཡེནཱིཀིཌཱདྷབུདརྦསཨོཾ པེ།
2. ཞེས་བྱ་བ་ གསེར། པེ།
3. གོ་རིམས་ སྡེ། ཅོ།
4. 'ཧཱུཾ' བོད་འགྱུར་འགྲེལ་པར་མེད་ཀྱང་རྩ་བ་དང་མཐུན་པར་བཀོད་པ་ཡིན།
5. བཟླགས་པས་གྲུབ་ པེ།
6. ཁཊཊརོཊེ་ པེ། ཁཊྭརོཊེ་ ཞ། ཁཊྭརོཊེ་ སྣ།

སྔགས་འདི་བསླགས་པས་འགྲུབ་པ་སྟེ། །ཞེས་པ་ནི་བྲི་བ་ལ་སོགས་པ་སྤྱངས་པའོ། །དེ་ཡང་ལས་ཐམས་ཅད་སྔོན་དུ་གསུངས་པ་བྱེད་པའི་ངང་ཚུལ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ལས་ཐམས་ཅད་བྱེད་པ་སྟེ་རྣལ་འབྱོར་པའོ། །དགེ་བ་ནི་[1]རྣམ་པར་དག་པའོ། །ལས་རྣམས་ཀུན་བྱེད་དགེ་བ་ཡིན། །ཞེས་པའི་གསུང་ལ་ནི་སྔགས་ཀྱི་ཁྱད་པར་རོ། །སྔགས་འདི་གང་གིས་ཞེས་པ་ལ། མཁའ་འགྲོ་མ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མའོ། །རྣལ་འབྱོར་མ་ནི་གཟུགས་ཅན་མའོ། །ཉེ་ནི་ཀུན་སྤྱོད་པའོ། །དེ་བཞིན་དུམ་སྐྱེས་མ་ལ་ནི་ཞེས་པ་ནི། དུམ་སྐྱེས་མ་དང་ལྷ་མ་དག་གོ་ཞེས་དགོངས་སོ། ༤

མཁའ་འགྲོ་མ་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །
སྔགས་ནི་འདི་ཉིད་ཡིན་པར་གྲགས། །
ས་འོག་ཡང་ན་མཐོ་རིས་སམ། །
དེ་བཞིན་མི་ཡུལ་དག་ཏུ་ཡང་། ༥
ལས་ནི་གང་དག་ཡོད་པ་དག །
སྔགས་ཀྱིས་དེ་དག་ཐམས་ཅད་བསྒྲུབ[2]། །
དངོས་གྲུབ་ཀུན་བྱེད་དགེ་བ་ཡིན། །
དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་རབ་སྦྱོལ་བ། ༦

དེ་བཞིན་ཐམས་ཅད་རྣམས་ཞེས་པ་ནི་ཐམས་ཅད་རྣམས་ཉིད་ནི་དོ་རྗེ་ཕག་མོ་ལ་

---

1. རང་བཞིན་ནི་ ཀྲུ་དཔེ།
2. ཐམས་ཅད་སྒྲུབ་ ལྷ། སྣ།

སོགས་པའོ། །དེ་ལྟར་རྟགས་ནི་དེ་ལྟ་བུའི་རྟགས་སོ། །ལས་ཐམས་ཅད་བྱེད་པ་ཉིད་མདོར་བསྟན་པ་དང་རྒྱས་པར་བཤད་པའོ། །ས་འོག་ལ་སོ་ཡོད་པ་ཞེས་པ་ནི་འཇིག་རྟེན་གསུམ་ཤེས་ཤིང་དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་རབ་ཏུ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པའོ། ༥-༦ །

འདི་ལས་ཤིན་ཏུ་མཆོག་གྱུར་མེད། །
འཇིག་རྟེན་གསུམ་ན་ཅི་ཡང་མེད། །
གང་ཕྱིར་འདི་ནི་བླ་ན་མེད[1]། །
ལྷ་རྫས་དང་ཐབས་རབ་སྟོན་པ[2]། །
ལས་རྣམས་ཐམས་ཅད་སྒྲུབ་བྱེད་ཡིན། ༧ །

འདི་ལས་གཞན་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་གང་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །གང་གི་ཕྱིར་རྟགས་འདི་ལས་ཐམས་ཅད་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པའོ་ཞེས་པ་ལ། བླ་མེད་དེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། འདི་ནི་ཞེས་པ་ནི་སྙིང་པོའོ། །ལྷ་རྫས་དང་ཐབས་རབ་ཏུ་སྟོན་པ་ནི་ལྷ་རྫས་ཐབས་ནི་རབ་སྟོན་པའོ། ༧ །

མཁའ་འགྲོ་མ་ནི་ཀུན་གྱི་གནས། །
མདོར་བཤད་རྒྱས་པར་མ་ཡིན་ནོ། །
མི་རྟོག་འབྲས་བུ་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས[3]། །
རི་བོ་བཟང་པོ་བྲི་བྱ་ཞིང་། ༨ །

1. བླ་མེད་དེ་ པེ། ཅོ། སྣ།
2. ཚིག་རྐང་འདི་བོད་འགྱུར་རྩ་བའི་ནང་མེད་ཀྱང་འགྲེལ་པ་དང་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།
3. སྣ་ཚོགས་ཀྱི་ པེ། ཅོ། སྣ།

མདོར་བསྟན་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱི་དགོད་པ་རྒྱས་པར་ནི། ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །བསྒོམ་མོ་ཞེས་བརྗོད་པ་ནི་བྲི་བ་ཉིད་དེ་གང་གསུངས་པ་དེ། བྲིས་པ་[1]ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་ཡང་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ། །རི་བོ་ཞེས་པ་ནི་རི་རབ་བོ། ༨ །

དེ་ཡི་[2]སྟེང་དུ་ཏག་བསྒོམ་པ། །
མཁའ་འགྲོ་དེ་བཞིན་ལྷ་མ་དང་། །
ཁཎྜ་རོ་ཧ་[3]རྣལ་འབྱོར་མ། །
དཔའ་བོ་རྣམས་ཀྱི་དཔའ་བོ་ཉིད། ༩ །

དེའི་སྟེང་དུ་ཏག་ཏུ་སྒོམ་པ་ཞེས་པ་ནི། རྒྱུན་གྱིས་ཏག་པས་[4]གཞལ་ཡས་ཁང་པ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་བཞིན་ཞེས་པ་ནི་གཞལ་ཡས་ཁང་པའི་སྟེང་དུ་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་ཀྱི་རིམ་པ་བཞིན་དུ་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །དེའི་ཕྱིར་མཁའ་འགྲོ་མ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དཔའ་བོ་རྣམས་ཞེས་པ་ནི་[5]དཔའ་བོ་ཐོད་པའི་དུམ་བུ་ལ་སོཏ་པ་དང་བཅས་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་རབ་ཏུ་གཏུམ་མོ་ལ་སོགས་པ་ནི་ཤུ་རྩ་བཞི་བསྒོམ་པར་བྱའོ་ཞེས་ཤེས་པར་བྱའོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་

---

1. ‘དེ། བྲིས་པ་’ སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེ་གཉིས་སུ་མེད།
2. དེའི་ པེ།
3. ཁཎ་ཌ་རོ་ཧེ་ པེ། ཁཎྜ་རོ་ཧེ་ ལྷ། ཁཎྚ་རོ་ཧེ་ སྣ།
4. ཏགས་པས་ གསེར།
5. ཤེས་པ་ནི་ གསེར། པེ།

སོགས་པ་ནི་མང་བའི་ཕྱིར་[1]ཁྭ་གདོང་མ་ལ་སོགས་པ་ཡང་དཔའ་བོ་བསྟེན་པ་ཡང་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་བསྟེན་པ་ཡང་སྟེ་བསྒོམ་པར་བྱའོ་ཞེས་བྱའོ། ༩

ཧཱུ་ཧཱུ་ཧེ་ཧེ་[2]ཞེས་བྱ་བ།
དཔའ་བོ་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་ཡི།
མཁའ་འགྲོ་དྲ་བའི་བདེ་མཆོག་ཡིན།
རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་རྣམ་སྣང་མཛད།
དེ་བཞིན་པདྨ་གར་དབང་[3]དང་། ༡༠

ཀླུ་ཧེ་རུ་ཀ་ཉིད་དང་ནི[4]།
མཁའ་སྙིང་དང་ནི་རྟ་མགྲིན་ཉིད[5]།
རིན་ཆེན་རྡོ་རྗེ་སྟོབས་པོ་ཆེ།
མིག་མི་བཟང་དང་འཛིཏ་བྱེད་དང་། ༡༡

རྡོ་རྗེ་བཟང་དང་རབ་བཟང་དང་།
རྡོ་རྗེ་ཧཱུྃ་མཛད་དཔའ་ཆེན་པོ།
དེ་བཞིན་རྡོ་རྗེ་རལ་པ་ཅན།
སྨྱུ་གུ་ཅན་དང་རྡོ་རྗེའི་ལུས། ༡༢

---

1. མང་པོའི་ཕྱིར་ པེ། གསེར།
2. འདིར་འགྲེལ་པར་གསལ་བ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
3. པད་མ་གར་དབང་ པེ།
4. ‘ནི་’ལྷ་ས་པར་མར་མེད།
5. རྟ་འགྲིན་ཉིད་ པེ།

རྡོ་རྗེའི་འོད་[1]ཉི་ཉིད་དག་དང་།
འོད་དཔག་མེད་དང་ལྷ་ཡི་དགྲ[2]།
དེ་བཞིན་མཆེ་བ་རྣམ་གཙིགས་དང་།
ཀང་རུས་ཀང་རུས་ཆེན་པོ་དང་། ༡༣
ཐོད་པའི་དུམ་བུ་ལ་སོགས་པ།
དཔའ་བོ་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་ཡིས།
འགྲོ་བ་འདི་དག་ཐམས་ཅད་ཁྱབ།
དཔའ་བོ་རྣམས་དང་མཁའ་འགྲོ་ཉིད།
རྣལ་འབྱོར་མ་ནི་རབ་གཏུམ་སོགས། ༡༤

ཧེ་ལྷ་བུ་ཧེ་ཙམ་གྱི་དཔའ་བོ་ཞེས་པ་ལ་གསུངས་ཏེ། ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཏེ་ཏེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་དགོད་པས[3]་ཉེ་བར་མཚོན་པའི་དཔའ་བོ་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་ནི་དཔའ་བོ་རྣམས་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །མཁའ་འགྲོ་དྲ་བའི་བདེ་མཆོག་བསྒོམ། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། སྔོན་དུ་མདོར་བསྟན་པ་རྒྱས་པར་བྱས་པའོ། །དཔའ་བོ་རྣམས་གོ་རིམ[4]་བཟློག་པས་སོ་སོར་རྒྱས་པ་ནི། རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། བསྒོམ་པར་བྱ་བ་སྦྱར་བ་ནི་ཐམས་ཅད་དུ་སྦྲའི་གཉིས་པའོ། །ཐོད་པའི་དུམ་བུ་དང་པོ[5]་ཞེས་

1. རྡོ་རྗེ་འོད་ སྣ།
2. ལྷའི་དགྲ་ པེ།
3. ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་······ཆོད་པས་ གསེར། པེ།
4. གོ་རིམས་ སྡེ། ཅོ།
5. ཐོད་པའི་དུམ་བུ་སོགས་ རྩ་བ།

པ་ནི་དང་པོ་ནི་ཐོག་མར་རོ། །དང་པོར་གནས་པའི་ཐོད་པའི་དུམ་བུ་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་ཀང་རུས་ཆེན་པོ་ལ་སོགས་པ་བསྒོམ་པར་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །གྲངས་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཉེ་བར་བསྟུ་བ་ནི། དཔའ་བོ་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་ཡིས། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། དཔའ་བོ་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་དཀྱིལ་འཁོར་དང་ལུས་ལའོ། །དེའི་ཕྱིར་འགྲོ་བ་འདི་དག་ཅེས་གསུངས་ཏེ། འདི་ནི་ལུས་སྟོན་པའི་ཚིག་གོ །ཐོད་པའི་དུམ་བུ་དང་། ཀང་རུས་ཆེན་པོ་དང་ཀང་རུས་དང་། མཆེ་བ་རྣམ་པར་གཙིགས་པ་དང་། ལྷ་དགྲ་དང་།[1] འོད་དཔག་མེད་པ་དང་། རྡོ་རྗེ་འོད་དང་། རྡོ་རྗེ་སྐུ་དང་། སྨུ་གུ་ཅན་དང་། རྡོ་རྗེ་རལ་པ་ཅན་དང་། དཔའ་བོ་ཆེན་པོ་དང་། རྡོ་རྗེ་ཧཱུྃ་མཛད་དང་། རབ་ཏུ་བཟང་དང་། རྡོ་རྗེ་བཟང་དང་། འཇིགས་བྱེད་དང་། མིག་མི་བཟང་དང་། སྟོབས་པོ་ཆེ་དང་། རིན་ཆེན་རྡོ་རྗེ་[2]དང་། རྟ་མགྲིན་དང་། ནམ་མཁའི་སྙིང་པོ་དང་། དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་དང་། པདྨ་གར་གྱི་དབང་ཕྱུག་དང་། རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དང་། རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཞེས་བྱའོ། །དེ་ལ་བརྒྱད་པོ་ཐོད་པའི་དུམ་བུ་ལ་སོགས་པ་ནས་རྡོ་རྗེ་སྐུའི་བར་ནི་སྔོན་པོ་སྟེ་ཐུགས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་སྔོན་པའོ། །སྨུ་གུ་ཅན་ལ་སོགས་པ་ནས་མིག་མི་བཟང་གི་བར་དུ་བརྒྱད་པོ་ནི་དམར་པོ་སྟེ་གསུང་གི་འཁོར་ལོ་དམར་པོའོ། །སྟོབས་པོ་ཆེ་ལ་སོགས་པ་ནས་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་བར་དུ་དཀར་པོ་སྟེ། སྐུའི་འཁོར་ལོ་ཡང་དཀར་པོའོ། །འདི་དག་ནི་ཕྱག་གཉིས་པའམ། ཕྱག་བཞི་པ་དག་ནི་སློབ་དཔོན་གྱི་འདོད་པས་སོ། །མགོ་དང་། སྤྱི་གཙུག་དང་། རྣ་བ་གཡས་པ་དང་། ལྟག་པ་དང་། རྣ་བ་གཡོན་པ་དང་། སྨིན་

1. དགྲ་ལྷ་དང་ སྡེ། ཅོ། ལྷ་ཡི་དགྲ་ རྩ་བ།
2. རྡོ་རྗེ་རིན་ཆེན་ འགྲེལ་པ། གོང་དུ་རྩ་བ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།

མའི་དབུས་དང་། མིག་གཉིས་དང་། དཔུང་པའི་རྩ་བ་གཉིས་དང་། མཆན་ཁུང་གཉིས་དང་། ནུ་མ་གཉིས་དང་། ལྟེ་བ་དང་། སྣ་དང་། ཁ་དང་། མགྲིན་པ་དང་། སྙིང་ག་དང་། མདོམས་དང་། མཚན་མ་དང་། བཤང་བའི་ལམ་དང་། བརླ་དང་། བྱིན་པ་དང་། རྐང་པའི་སོར་མོ་དང་། བོལ་དང་། མཐེབ་ཆེན་གཉིས་དང་། པུས་མོ་གཉིས་རྣམས་ལ་ཐོད་པའི་དུམ་བུ་ལ་སོགས་པ་དང་། རབ་ཏུ་གཏུམ་མོ་ལ་སོགས་པ་དང་ལྡན་པར་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །འདིར་དེ་རྣམས་ཀྱི་ལུས་ཁྱབ་པའོ། །བསྡུས་པའི་དོན་སྟོན་ཏེ་དཔའ་བོ་རྣམས་ནི་དཔའ་བོའོ[1]། །མཁའ་འགྲོ་མ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་སོ། །དེ་ཉིད་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་སྟེ། དེ་ཡང་རྣལ་འབྱོར་མ་རབ་ཏུ་གཏུམ་མོ་ལ་སོགས་པ་འཁོར་ལོར་བཞུགས་པ་བཟླ་བར་བྱ་ཞེས་པའི་འཁོར་ལ་ཁྱབ་པར་[2]འདེས་བསྟན་པའོ། ༡༠-༡༩ །

བྱ་བ་ཀུན་ལ་སྦྱུབ་པ་པོས། །
འཁོར་ལོར་བཞུགས་པར་[3]བཟླ་བར་བྱ། །
གྲུབ་འདོད་ཤིན་ཏུ་མཉམ་བཞག་[4]པས། །
འཁོར་ལོའི་བདག་ཉིད་རྟག་ཏུ་བསྒོམ[5]། ༡༥།

བྱ་བ་ཀུན་ནི་ཞི་བ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་སོ། །གང་གིས་ཞེས་པ་[6]ལ་སྒྲུབ་པ་པོ་ཞེས་

1. དཔའ་བོའ་ པེ།
2. ཞེས་པ་ནི་འཁོར་ལོ་ལ་ཁྱབ་པར་ གསེར། ཞེས་པ་ནི་འཁོར་ལོ་ལ་ཁྱད་པར་ པེ།
3. ཞུགས་ པེ།
4. མཉམ་གཞག་ སྣ།
5. རྟག་ཏུ་སྒོམ་ སྣ།
6. ཤེས་པ་ སྡེ། ཅོ།

གསུངས་ཏེ། གང་གི་ཚེ་སླུབ་པ་པོ་ཡིན་ན་དེའི་ཚེ་འདིས་ཞེས་དགོངས་སོ། །འདི་དག་ཉེ་བར་བསྡུ་བ་[1]ནི། འཁོར་ལོའི་བདག་ཉིད་རྟག་ཏུ་བསྒོམས། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། དཔའ་བོ་དང་དཔའ་མོ་ལས་སྐྱེས་པའི་འཁོར་ལོའི་བདག་ཉིད་བསྒོམ་པར་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༡༥ །

སྦྱར་བཤད་པ་ཡི་[2]ཚིག་ཡིས། །
མཁའ་འགྲོ་དྲ་བའི་བདེ་མཆོག་བརྗོད། །
འཁོར་ལོ་ཆེན་པོ་གྲུབ་ཀུན་གནས། །
དེ་བཞིན་དངོས་གྲུབ་ཀུན་གྱི་གཞི། ༡༦ །

མཚོད་པ་ཉེ་བར་བསྡུ་བ་ནི་སྦྱར་བཤད་པའི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཕྱི་རོལ་དང་གསང་བ་དང་ཡིད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །མཚོད་པ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མའི་དྲ་བ་སྡོམ་[3]ཞེས་གསུངས་ཏེ། འཁོར་ལོ་ཆེན་པོ་ནི་དངོས་གྲུབ་ཆེན་པོའི་རྟེན་ཡིན་པས་དེ་བཞིན་[4]དུ་ཞེས་པ་ནི་རྣམ་གྲངས་ཀྱི་ཚིག་ཡིན་ནོ། ༡༧ །

འདི་ནི་སངས་རྒྱས་བྱེ་བ་དང་། །
དཔའ་བོ་བྱེ་བས་ལེགས་པར་གསུངས། །

1. བསྡུས་པ་ གསེར།
2. བཤད་པའི་ ཡེ།
3. སྡོམས་ གསེར།
4. བརྟེན་ཡིན་དེ་བཞིན་ ཡེ། རྟེན་ཡིན་དེ་བཞིན་ གསེར།

མཁའ་འགྲོ་མ་ནི་རེ་རེ་ཡི། །
འཁོར་ནི་བྱེ་བ་དག་ཏུ་འགྱུར། ༡༧ །

འདས་པ་ལ་སོགས་པའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་འདི་བཞིད་པ་ནི་ལེགས་པར་གསུངས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། རྒྱུད་ནི་སངས་རྒྱས་བྱེ་བས་ཀྱང་ལེགས་པར་གསུངས་སོ། །བྱེད་པ་པོའི་དྲུག་པའི་སྒྲོའོ[1]། །དཔའ་བོ་བྱེ་བ་ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་ཞེས་གསུངས་ཏེ། བྱེ་བ་ཉིད་དོ། །རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་མང་བ་ནི། མཁའ་འགྲོ་མ་ནི་རེ་རེ་ཡང་། །བྱེ་བའི་གྲངས་[2]ཀྱི་འཁོར་གྱིས་བསྐོར། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། རྣལ་འབྱོར་མ་རེ་རེ་ལ་[3]རྣལ་འབྱོར་མ་བྱེ་བ་བྱེ་བས་བསྐོར་བའོ། ༡༧ །

རྣལ་འབྱོར་མ་ནི་མཁའ་འགྲོ་ཉིད། །
གཟུགས་ཅན་མ་དང་དུམ་སྐྱེས་མ། །
དེ་བཞིན་ལྔ་མ་ལ་སོགས་ནི། །
དངོས་གྲུབ་ཀུན་བྱེད་དགེ་བ་ཡིན། ༡༨ །

དཔལ་ཏེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་དཔའ་བོ་དང་མཁའ་འགྲོ་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གནས་གསང་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཚིགས་ལེའུ་སྟེ་བཞི་བཅུ་རྩ་བརྒྱད་པའོ།། །།

1. བྱེད་པ་པོའི་སྒྲུབ་པའི་སྒྲོའ་ གསེར། པེ།
2. བྱ་བའི་གྲངས་ གསེར།
3. 'ལ་' གསེར་ཕྲིས་སུ་མེད།

དེ་ལ་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་བཅུ་གཉིས་དང་། རབ་ཏུ་གཏུམ་མོ་ལ་སོགས་པ་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་དང་། རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་ཡང་ངོ་། །དེ་ཉིད་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དེ་བཞིན་གྱི་སྒྲས་ནི་[1]དེ་དག་ཐམས་ཅད་མཉམ་པ་ཁོ་ནར་གཟུང་བའོ། །འདི་ལ་ཅིའི་ཕྱིར་མཆོད་ཅེས་པ་ལ། མཆོད་ཅེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དངོས་གྲུབ་ཀུན་བྱེད་དགེ་བ་ཡིན། །ཞེས་གསུངས་སོ། ༡༨ །

མཁའ་འགྲོ་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྟེན་ནམ་གཞི་ནི[2]། རྡོ་རྗེ་ཕག་མོའི་སྙིང་པོའི་ཐུགས་སོ། །སྔགས་པ་དང་དེའི་དཀྱིལ་འཁོར་ཡང་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་[3]ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་དེ་དེ་བཞིན་ནོ། །བཞི་བཅུ་བརྒྱད་ནི་བཞི་བཅུ་རྩ་བརྒྱད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་བཞི་བཅུ་རྩ་བརྒྱད་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། །།

*

1. སྒྲ་ནི་ གསེར། པེ།
2. ‘ནི་’ སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེ་གཉིས་སུ་མེད།
3. གང་ཡིན་པ་ལ་ གསེར། པེ།

སྐྱེ་བ་བདུན་པའི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་གཟུགས་ཡོངས་སུ་བརྗེ་བའི་ཚོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནས་གཞན་ཡང་བཤད་བྱ་བ། །
ཇི་བཞིན་ཚོགས་ཕྱུགས་བསྒྲུབ་བྱ[1]། །
གང་གིས་ཤེས་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། །
མྱུར་དུ་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་འགྱུར་བའོ། ༡།

ད་ནི་ཧེ་རུ་ཀར་བྱེད་པར་གསལ་པོར་ནི། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོའི་སྙིང་པོའི་སྔགས་ལ་སོགས་པ་བསྟན་པའི་[2]རྗེས་སུའོ། །ཕྱུགས་ཀྱི་ལས་ཞེས་པ་ནི་ཕྱུགས་རྣམས་ཀྱི་ལས་ནི་ཕྱུགས་ཀྱི་ལས་ཏེ། སྐྱེ་བ་བདུན་པ་ཉེ་བར་དམིགས་པའི་མཚན་ཉིད་དོ། ༢ །

སྔགས་པས་འབྲས་ཀྱི་ཕྱེ་མ་ལས། །
རིམ་བཞིན་དུ་ནི་ཕྱུགས་གཟུགས་བྱ། །
མི་དང་རུས་སྦལ་[3]ཛ་མོ་དང་། །
བོང་བུ་སྤྱང་ཀི་[4]རྟ་ལ་སོགས། ༣ །

---

1. ཕྱུགས་ཀྱི་ལས་ རྒྱ་དཔེ་རྩ་འགྲེལ་དང་བོད་འགྱུར་འགྲེལ་པ།
2. བསྟེན་པའི་ གསེར།
3. རུ་སྦལ་ སེ།
4. སྤྱང་ཀུ་ སྣ།

དེ་ལྟར་སྣ་ཚོགས་ཕག་དག་སྟེ། |
ཕྱོགས་འདི་དག་ཏུ་ཤེས་པར་བྱ། |
མཚན་ཉིད་ཇི་ལྟར་གྱུར་པ་དང་། |
འདི་རྣམས་ལས་ནི་བཤད་པར་བྱ། ༣ |

སྣ་ལིའི་ཁྱུར་བའི་[1] རང་བཞིན་ཞེས་པ་ནི་སྣལི་ནི་ཁ་བའི་དུས་སུ་སྐྱེས་པའི་འབྲུའི་བྱེ་བྲག་གོ །འབྲས་ཀྱི་ཁྱུར་བར་[2]འགྱུར་པའི་རྣམ་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ཏེ་ཕྱོགས་སོ། །ཕྱོགས་ནི་བོང་བུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དེ་ལ་ཞེས་པ་ནི་སྐྱེ་བ་བདུན་པ་སྟེ། སྣ་ཚོགས་ཀྱི་ཕག་པ་ནི་མདོག་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་རི་དྭགས་ཀྱི་ཁྱད་པར་རོ། །དེ་ཡང་དག་པར་འདུས་བྱས་ཏེ། བོང་བུ་ལ་སོགས་པ་དང་བཅས་པ་དེ་དག་གི་ནང་ནས་ཁ་ཅིག་ཅེས་པའི་དོན་ཏོ། །འདིས་ཀྱང་སྔར་གྱི་ལས་ཉིད་གསལ་པོར་བྱས་པའོ། །དང་པོར་བོང་བུ་དང་མི་དང་། ཛ་མོ་ལ་སོགས་པའི་སྐྱེ་བ་ཇི་སྙེད་པ་ནི་སྐྱེ་བ་བདུན་པར་མཚོན་པའོ། །དེ་ཡང་འདི་ཉིད་དོ། །འདི་དག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་འདི་དག་ལ་སྐྱེ་བ་བདུན་པའི་མི་ནི་ལས་དང་། དེའི་མཚན་ཉིད་ཇི་ལྟར་[3]ཡིན་པ་དེ་ལྟར་རབ་ཏུ་བཤད་དོ་ཞེས་སྨྲར་རོ། ༢-༣ |

སྐྱེ་བ་གཅིག་དང་སྐྱེ་བ་གཉིས། |
གསུམ་མམ་བཞིའམ་ལྔ་ཉིད་དམ། |

---

1. ས་ལིའི་ཁུ་བའི་ པེ། སྣ་ལིའི་ཁུ་བའི་ སྡེ། ཅོ། གསེར། གོང་དུ་རྩ་བར་གསལ་བའི་འབྲས་ཀྱི་ཕྱེ་མ་ཞེས་པའི་དོན་དང་མཚུངས་པར་བཀོད་ཡོད།
2. ཁུ་བར་ སྡེ། ཅོ།
3. དེ་ལྟར་ པེ།

སྐྱེ་བ་དྲུག་དང་བདུན་གྱུར་པ། |
ཕྱུགས་རྣམས་སུ་ནི་གདོན་མི་ཟ། ༤ |

གང་གི་ཁ་ཡི་[1]དྲི་ཞིམ་ཞིང་། |
མིག་མི་འཛུམ་པར་རྣམ་པར་བལྟ། |
བདེན་པར་སྨྲ་ཞིང་མཐོང་ན་དགའ། |
རྟག་ཏུ་དམ་ཆོས་དགར་འགྱུར་ཞིང་། ༥ |

རང་གི་སྐྱེ་བ་ཤེས་པ་དང་། |
ལུས་ཀྱི་དྲི་ནི་རྟག་ཏུ་ཞིམ། |
མཚན་ཉིད་འདི་དག་ལྡན་པར་ནི། |
སྐྱེ་བ་བདུན་དུ་འབྱུང་བ་ཡིན། ༦ |

དེ་ཉིད་གསལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར། སྐྱེ་བ་གཅིག་དང་སྐྱེ་བ་གཉིས། །གསུམ་དང་བཞི་དང་ལྔ་ཉིད་དང་། །སྐྱེ་བ་དྲུག་དང་བདུན་དུ་ཡང་། །ཕྱུགས་ཉིད་དུ་ནི་གདོན་མི་ཟ། །ཞེས་བྱའོ། །ལུང་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཕྱུགས་དང་ཆོས་མཐུན་པས་ཕྱུགས་སོ། །མཚན་ཉིད་[2]ནི་དྲི་ཞིམ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། ༤_༦ |

དེ་ནི་ཟློས་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། |
ལྷ་ཡི་གཟུགས་ནི་འཛིན་པར་འགྱུར། |

གང་གིས་ཁ་ཡི་ སྣ། ལྷ། གང་གི་ཁའི་ པེ།

2. མཆོན་ཉིད་ སྡེ། ཅོ།

བསྣམས་པའམ་[1]རེག་པ་ཙམ་གྱིས་སམ།

གང་ཞིག་ཐིག་ལེ་བྱེད་པ་སྟེ[2]། ༧

མོད་ལ་འགྲུབ་པར་འགྱུར་བ་སྟེ།

འདི་ནི་རང་དགའི་གཟུགས་འཆང་འགྱུར།།

དེ་ཡི་སྙིང་གའི་རོ་ཙ་ན[3]།

མཁས་པ་ཡིས་ནི་བླངས་ནས་ནི། ༨

ལས་ནི་དེ་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །བསྣམས་སམ་རེག་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། །ལྷ་ཡི་གཟུགས་ནི་འཛིན་པར་འགྱུར། །ཞེས་གསུངས་སོ། །གང་ཞིག་ཐིག་ལེ་བྱེད་པ་སྟེ། །དེ་ཡི་མོད་ལ་གྲུབ་པ་ནི། །རང་འདོད་པའི་ནི་གཟུགས་སུ་འགྱུར། །འདི་ནི་རང་རིགས་[4]གཟུགས་ཅན་འགྱུར། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཞུང་གཞན་ནོ[5]། །གང་གིས་ཐིག་ལེ་ཞེས་པ་ལ། །གི་ཝང་[6]ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། བླང་ཞེས་པ་ནི་གཡོན་པས་ཞེས་བྱ་སྟེ་སྐྲའི་རྒྱན་ཡོངས་སུ་གྱུར་པའི་ཕྱིར་རོ། ༧-༨

སྙིང་པོའི་སྔགས་ནི་བཟླས་ནས་སུ།

དེ་ཡི་[7]ཐིག་ལེ་བྱ་བ་ཡིན།

---

1. མནམས་པའམ་ སྡེ།
2. གང་གིས་ཐིག་ལེ·······སྟེ། སྣ། ལྷ། གང་གི་ཐིག་ལེ·······སྟེ། པེ། གང་ཞིག་ཐིག་ལེ·······དེ། སྡེ།
3. སྙིང་ཀའི་རོ་ཙ་ན་ སྡེ། སྙིང་གའི་རོ་ཙ་ནའི་ པེ། སྙིང་ཀའི་རོ་ཙ་ནའི་ སྣ།
4. རང་རིག་ གསེར། པེ།
5. གཞུང་བཞིན་ནོ་ སྡེ། ཅོ།
6. གིའུ་ཝང་ པེ། གསེར།
7. དེའི་ པེ།

སེམས་ཅན་གང་དང་གང་གི་ནི།
གཟུགས་སུ་བྱེད་པར་འདོད་པ་ན། ༩

དེ་དང་དེ་ཡི་[1]གཟུགས་སུ་ནི།
ཐིག་ལེས་འགྱུར་བར་ཐེ་ཚོམ་མེད།
མཁས་པས་ཤིང་ལོ་ཁུ་བ་ནི།
རོ་ཙ་ནར་[2]བཅས་བླངས་ནས་སུ། ༡༠

དཔྲལ་བར་ཐིག་ལེ་བྱས་ན་[3]ནི།
དེ་གཟུགས་འགྱུར་བར་[4]ཐེ་ཚོམ་མེད།
ཕྱུགས་ཉིད་ཀྱི་ནི་བ་སྤྱི་ཡིས།
ལག་པ་སྤྱི་བོར་[5]བཅིང་བར་བྱ། ༡༡

དེ་ཡི་[6]ཡན་ལག་ལྷར་ལྡན་ཞིང་།
དེ་ཡི་སྤྱི་དང་རྣམ་བསྲེས་པ[7]།
ལག་པ་སྤྱི་བོར་བཅིངས་ན་[8]ནི།
དེ་ཡི་[9]གཟུགས་འགྱུར་ཐེ་ཚོམ་མེད། ༡༢

1. དེ་དང་དེའི་ པེ།
2. རོ་ཙ་དར་ ཅོ།
3. བྱས་ནས་ སྣ། པེ། ཅོ།
4. འགྱུར་བ་ ཅོ། སྣ།
5. ལག་པའི་སྤྱི་བོར་ འགྲེལ་པ།
6. དེའི་ པེ།
7. རྣམ་བསྲེས་ལ་ སྣ། ཅོ།
8. བཅིངས་ནས་ པེ། བཅིང་ན་ སྣ།
9. དེའི་ པེ།

རྣལ་འབྱོར་བ་ནི་བསྒོམས་[1]ཤིང་གློས།
མི་རྣམས་ནུས་པ་ལྡན་ཡིན་ཡང་།
དཀའ་ཞིང་ཉོན་མོངས་ལ་དགའ་བ།
དངོས་གྲུབ་ལམ་ནི་འགོག་པ་ཡིན། ༡༣

སྙིང་པོའི་སྟུགས་ཞེས་པ་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་དང་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་དག་གིའོ། །ཇི་འདྲ་བའི་འདོད་པའི་གཟུགས་ཞེས་པ་ལ། གང་དང་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ལག་པའི་སྤྱི་བོ་ནི་དཔུང་པའི་རྩ་བ་སྟེ། [2]ལག་པའི་སྒྲ་ལས་དཔུང་པ་དང་ཉེ་བའི་ལག་པའོ། །ཡན་ལག་ལྔ་ནི་ཕྱུགས་དང་ཤིང་གང་ཡིན་པའི་གཟུགས་སུ་འདོད་ན། དེའི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ལ་སོགས་པ་དང་། ཡན་ལག་ལྔ་ལོ་མ་དང་མེ་ཏོག་ལ་སོགས་པའོ། །རྣལ་འབྱོར་གོམས་པ་ནི་བཟླས་པ་སྟེ། བཟླས་པར་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །མི་ནུས་པ་མེད་པ་ནི་ནུས་པ་ཉིད་དོ[3]། །བཏང་ན་གྲོལ་བ་ཞེས་པ་ནི་འདིར་དགོས་པ་ཕྱུགས་ལ་སོགས་པའི་གཟུགས་ཉིད་དུ་ཅིའི་ཕྱིར་གནས་པར་མི་བྱེད་ཅེས་པ་ལ། སྡུག་བསྔལ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དུད་འགྲོ་ཞེས་དགོངས་པ་ཡིན་ནོ། ༨-༡༣

གླང་པོ་རྟ་དང་བོང་བུ་དང་།
རུས་སྦལ་[4]ཛ་མོ་ཕག་དང་ཕྱ།

1. སྒོམས་ པེ།
2. 'ལག་པའི་སྒྲ་ལ' སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེ་གཉིས་སུ་ལྷག་པ་འཕོད་འདུག
3. 'མི་ནུས་པ………ཉིད་དོ།' བོད་འགྱུར་ནང་མེད་ཀྱང་རྒྱ་དཔེར་གསལ་བ་ལྟར་འདིར་བསྣན་པ་ཡིན།
4. རུ་སྦལ་ སྡེ། སྣ།

ཁྭ་དང་འུག་སོགས་བྱ་རྒོད་དང་།
ཁྲུང་ཁྲུང་ཁྲ་དང་ས་ར་ས[1]། ༡༤

གཟུགས་བཟང་བ་དང་གཟུགས་ངན་དང་།
ལྷ་ཡི་[2]གཟུགས་སུ་དེ་འགྱུར་རོ།
རྣལ་འབྱོར་དཔའ་ཆེན་རང་དགའི་གཟུགས།
སྐྱེ་འགྱུར་འདི་ལ་ཐེ་ཚོམ་མེད[3]། ༡༥

འདི་བས་ཤིན་ཏུ་མཆོག་གྱུར་པ།
འཇིག་རྟེན་གསུམ་ན་ཡོད་མ་ཡིན། ༡༦

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་སྐྱེ་བ་བདུན་པའི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་གཟུགས་ཡོངས་སུ་བརྗེ་བའི་ཚོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་བཞི་བཅུ་རྩ་དགུ་པའོ།། །།

གང་གི་གཟུགས་འཛིན་ཞེས་པ་ལ[4]། གླང་པོ་རྟ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། སྒྲའི་དྲུག་པའི་དོན་གྱི་གསུམ་པའོ། །དེ་དག་གི་གཟུགས་འཛིན་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །མངོན་པར་འདོད་པའི་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་འཛིན་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་དག་ཀྱང་རྒྱས་པར་འཆད་དེ[5]། དེའི་བྱ་བ་ལ་གླང་པོ་ཆེ་ལ་སོགས་པས་གཏོར་

1. བོད་འགྱུར་པར་མའི་ནང་ 'ས་ར་ལ་' ཞེས་གསལ་ཡང་གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
2. ལྷའི་ པེ།
3. ཐེ་ཙོམ་མེད་ པེ།
4. 'ལ་' སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེར་གཉིས་སུ་མེད།
5. 'དེ་དག་ཀྱང་རྒྱས་པར་འཆད་དེ་' རྒྱ་དཔེར་མེད།

མ་དང་ཡོངས་སྤྱོད་པར་བྱས་ན་དེ་ནས་མངོན་པར་འདོད་པའི་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་འཐོབ་བོ། །འདིར་ཡང་གཉིས་གའི་སྙིང་པོའི་བྱ་བའོ། །མཆོག་ཡོད་མ་ཡིན་ཞེས་པ་ནི་སྐྱེ་བ་བདུན་པའི་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱིས་གྲུབ་པ་ནི་ནུས་པའོ། ༡༤-༡༧ །

སྐྱེ་བ་བདུན་པའི་བསྒྲུབ་བྱའི་ཐུགས་[1]ལས་ཉིད་དུ་གཟུགས་ཡོངས་སུ་བརྗེ་བ་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཡིན་ལ་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་དེ་དེ་བཞིན་ནོ། །བཞི་བཅུ་རྩ་དགུ་ནི་བཞི་བཅུ་རྩ་དགུ་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་བཞི་བཅུ་རྩ་དགུ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། །།

1. སྒྲུབ་བྱའི་ཐུགས་ པེ།

དབང་གི་སྦྱིན་སྲེག་དང་གནས་ལ་སོགས་པའི་ས་
བསྟན་པའི་ཚོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནས་སྦྱིན་སྲེག་[1]ཆོ་ག་ནི། །
ངེས་པར་དབང་དུ་བྱེད་འགྱུར་བ། །
ཡང་དག་ཆོ་ག་གང་གིས་ནི། །
མྱུར་དུ་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་འགྱུར་བཤད། ༡ །

དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི། སྐྱེ་བ་བདུན་པའི་བསྒྲུབ་བྱ་གཟུགས་ཡོངས་སུ་བརྗེ་བ་བསྟན་པའི་རྗེས་ཐོགས་སུའོ། །ཧཱུཧཱུཧེཧེ་[2]ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་དགོད་པ་[3]རྣམ་པ་བརྒྱད་ཀྱི་སྟགས་ཀྱི་སྦྱིན་སྲེག་གི་ཆོ་ག་བཤད་པར་བྱའོ། །གང་གིས་ཕྱུགས་ཀྱི་ཤའི་སྦྱིན་སྲེག་གི་ཆོ་གས་དབང་གི་ལས་བྱའོ། །མྱུར་དུ་དངོས་གྲུབ་ལ་དེར་[4]རབ་ཏུ་གནས་སོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༡ །

གོ་སྣང་ས་[5]ནི་སྲོས་བྱེད་བསྲེ། །
ལག་པ་གཡོན་པས་སྦྱིན་སྲེག་བྱས། །

---

1. པེ་ཀིང་པར་མའི་ནང་‘སྦྱིན་བསྲེག’ཅེས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་བ་སྔོན་འཇུག་ཡོད་པ་སྣང་།
2. ཧཧཧེཧེ་ བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
3. ཀོད་པ་ གསེར། པེ།
4. དེ་ གསེར། པེ།
5. གོསྣོས་ ལྷ། གོ་མང་ས་ པེ།

སངས་རྒྱས་ཀྱང་ནི་དབང་འགྱུར་ན། |
ཕྲན་ཚེགས་མི་ནི་[1]སྨྱོས་ཅི་དགོས། ༢ |

ཁ་ཆུ་སོ་ཤིང་དག་དང་ནི། |
དེ་བཞིན་རང་གི་ལུས་མཉེས་པ[2]། |
སྨྱོས་བྱེད་མིང་[3]དང་བཅས་པ་ཡིས། |
ཁམས་གསུམ་དག་ནི་[4]དབང་དུ་འགྱུར། ༣ |

ཟླ་མཚན་གྱི་ནི་ཁྲག་དང་ནི། |
ཟློས་ནས་ཟློན་པའི་ཟས་དག་དང་། |
མི་ཡི་སྐྲ་[5]དང་ལྡན་པ་ཡིས། |
མོད་ལ་འགུགས་པར་འགྱུར་བ་ཡིན། ༤ |

སྦྱིན་སྲེག་ནི་ཁ་ཆུ་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། ཁ་ཆུ་ནི་མགྲིན་པ་ནས་བྱུང་བའི་ལུད་པའོ། །ཁྱིའི་སྤྱུ་ནི་[6]ཁྱིའི་སྤྱུའོ། །འཕྲལ་དུ་འགུགས་ཞེས་པ་ནི་འགུབ་པར་འགྱུར་ཞིང་འོང་བ་ཉིད་དུ་ཡོད་པའོ། །ཡཾ་གི་ས་བོན་དེ་ཉིད་ཀྱིས་འགུགས་པའོ། །གང་གིས་དེ་འགུགས་པའོ་ནི་ཡཾ་ལས་སྐྱེས་པའི་རླུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་པའི་བསྒྲུབ་བྱ་འོང་

1. སྨྱོ་ནི་ པེ།
2. བསྙེས་པ་ པེ། བཉེས་པ་ སྣ།
3. སྨྱོས་བྱེད་མི་ སྣ། ལྷ། པེ།
4. ཁམས་གསུམ་པོ་ནི་ སྣ། ལྷ།
5. མིའི་སྐྲ་ པེ། ཁྱིའི་སྤྱུ་ འགྲེལ་པ།
6. མི་ཡི་སྐྲ་ ཅ་བ།

བར་བལྟས་ནས་དུས་ཚིགས་ཀྱི་ཁྲག་ལ་སོགས་པས་སྦྱིན་སྲེག་བྱའོ་ཞེས་པ་ནི་བསྡུས་པའི་དོན་ཏོ། ༣-༩ །

ཁྲི་འི་ལུས་[1]ལས་སྐྱུགས་པའམ།
མཁས་པས་རང་སྐྲས་སྦྱིན་སྲེག་[2]བྱ།
ནིམ་པའི་ཤིང་ལ་རབ་སྦྱར་ན[3]།
མོད་ལ་དབྱེ་བར་འགྱུར་བ་ཡིན། ༥

མཉམ་པར་བཞག་པས་ རྫ་དུར་མེ[4]།
ཡུངས་མར་མཚན་[5]དེར་བསྲེས་པ་ཡི།
བྱ་རོག་གཤོག་པས་སྦྱིན་སྲེག་[6]བྱས།
འཕྲལ་དུ་འཆི་བའམ་སྐྲོད་པར་འགྱུར། ༦

ཉལ་དང་མ་ཉལ་འདུག་པ་འམ།
ཟས་དང་སྤྱོར་བ་སོགས་རྣམས་ལའང་།
མཁས་པས་རྟག་ཏུ་བློ་བྱེད་[7]ན།
དེ་ལ་བགེགས་[8]ནི་ཡོད་མ་ཡིན། ༧

---

1. རྒྱ་བར་‘རང་གི་ལུས་’ ཞེས་འདུག་ཀྱང་གོང་དུ་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།
2. སྦྱིན་བསྲེག་ སྣ། པེ།
3. རབ་སྦྱར་ནས་ སྣ། ལྷ།
4. མཉམ་པར་བཞག་པས་ད་དུར་མེ། པེ། མཉམ་པར་གཞག་པས་རྫ་དུ་མེ། སྣ།
5. ཉུངས་མར་མཚན་ སྣ། ཉུངས་མར་ཚན་ ལྷ། ཡུངས་མར་ཚན་ སྡེ། པེ།
6. བཤོག་པར་སྦྱིན་བསྲེག་ སྣ།
7. བློས་བྱེད་ པེ།
8. བདུད་ འགྲེལ་པ།

ཁྲིའི་ལུས་པོ་ནི་ཁྲིའི་ཁོག་པའོ། །འཕྲུལ་ནི་འཚོ་བའོ། །དེའི་སྐྲོད་པ་ནི་གསོད་པའོ། །རྟག་ཏུ་བཟླས་པའི་འབྲས་བུ་ནི། སད་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། སད་པ་ནི་གཉིད་སད་པའོ། །ཉལ་བ་ཞེས་པ་ནི་མལ་སྟན་དུ་གཏོགས་པར་གཉིད་ལོག་པ་[1]པས་སོ། །བྱས་ཞེས་པ་ནི་དགོས་པ་[2]བྱས་པའོ། །ལངས་ནས་གནས་ཞེས་པ་ནི་ཉལ་ནས་འདུག་ནས་ལངས་ནས་སོ། །མི་ཐུན་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ནི་མི་ཐུན་འོ། །བདུད་ཅེས་པ་ནི་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པའི་བདུད་དོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །བདུད་[3]ནི་སེམས་ཏེ། སེམས་ཉིད་ནི་བདུད་ཆེན་པོའི་ཞེས་གསུངས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།། སྔགས་པས་རྟག་ཏུ་[4]ཟློས་བྱེད་དེ། །ཡང་དག་དུས་ནི་ཡིད་མིན་[5]ཏེ། །ཞེས་པ་ནི་གཞུང་གཞན་ནོ། །དེ་ལ་བཟླས་པ་བྱེད་པ་ལ་ཡང་དག་པའི་དུས་ལ་བལྟ་བར་མི་བྱའོ།། བཞད་པའི་[6]སྔགས་ཀྱང་། །ཨོཾ་ཧཱུཧཱུཧེཧེཧོཧོཧཾཧཾ[7]ཕཊ་སྭཱཧཱ་ཞེས་བྱའོ། །ཨོཾ་ཀིལིཀིལི། ཤིལིཤིལི། ཙིལིཙིལི། ཧྲིལིཧྲིལིཕཊ་སྭཱཧཱ་ཞེས་བྱ་བ་ཡང་ངོ་། ༥_༧ །

ཕ་ཡི་ཤ་ཡིས་བསྲེགས་སླུགས་བརྒྱས[8]། །
ཡང་དག་བསྲེགས་སླུགས་[9]བྱེད་པའི་མི། །

1. གཉིད་ལོག་ སྡེ། ཅོ། གསེར།
2. དགོད་པ་ གསེར། པེ། ཀུཾ རྒྱ་དཔེ།
3. བདུན་ གསེར།
4. མདྷཱཀྵ རྒྱ་དཔེ།
5. ཡིད་ཡིན་ སྡེ། ཅོ།
6. གཞན་པའི་ སྡེ། ཅོ།
7. ཨོཾ་ཧཧཱུཧེཧཻཧོཧཽཧཾཧཱུཾ སྡེ། ཅོ། ཨོཾ་ཧཱུཧཱུཧེཧེཧོཧོཧཾཧཱུཾ གསེར། པེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
8. བསྲེག་སླུགས་རྒྱས་ པེ། སྲེག་སླུགས་བརྒྱས་ སྣ།
9. བསྲེག་སླུགས་ པེ། ལྷ།

དེ་ནི་ཟླ་བ་གསུམ་རྗེས་ལ། །
རིགས་ཀྱི་དབུལ་བ་འཇིག་པར་[1]འགྱུར། ༨།

ཤ་ཆེན་དག་གིས་ལ་ལ་ཞིག །
སྲོས་བྱེད་ལྡན་པས་སྦྱིན་སྲེག་བྱེད། །
བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་ཀྱི་བར་དུ་ནི། །
སྒྲུབ་པ་པོ་ནི་ཐུན་གསུམ་བྱེད། ༩ །
མ་ལུས་ས་རྣམས་སྐྱོད་པ་དང་། །
ཟླ་བ་དྲུག་གིས་དབང་དུ་འགྱུར། །
ཚིམ་འགྱུར་མཁའ་འགྲོ་མ་དེ་ལ། །
རྒྱལ་སྲིད་སྟེར་བར་གདོན་མི་ཟ། ༡༠ །

སྲིག་ཕྱུགས་བརྒྱ་ཞེས་པ་ནི་ཨཪྐའི་ཤིང་[2]ལ་སོགས་པ་ལ་རྟག་ཏུ་སྲིག་ཕྱུགས་བརྒྱ་
བརྒྱ་དུས་ལན་གསུམ་དུ་འབུལ་ལོ[3]། ༨-༡༠ །

ལྷ་རྣམས་ཐམས་ཅད་བསྒོམས་[4]ནས་ནི། །
ཐུན་གཉིས་བར་དུ་སྦྱིན་སྲེག་བྱས། །
རང་གི་ལུས་ནི་དེ་ཉིད་ཀྱིས། །
མཁའ་ལ་འགྲོ་བ་ཉིད་ཐོབ་འགྱུར། ༡༡ །

---

1. འཛིགས་པར་ སྣ།
2. ཨ་ཀའི་ཤིང་ སྡེ། ཅོ།
3. དབུལ་ལོ་ པེ།
4. སྒོམས་ པེ།

གོ་སྣ་ཡུ་དང་[1]ཤ་ཚང་གིས།
ཕྱི་དང་ནང་གི་སྤྲིན་སྲིག་[2]བྱ།
སྐྱུར་དུ་དེ་ཡི་[3]ལག་ཏུ་འགྱུར།
དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་རབ་ཏུ་འདུག ༡༢
སྔགས་ཀྱི་བཟླས་བརྗོད་མཚན་མོ་[4]བཟླས།
ཡུལ་འཁོར་ཡང་ནི་འགུགས་པར་བྱེད།
དེ་ལྟར་ཉིན་རེ་བྱས་ན་[5]ནི།
རྒྱལ་པོ་ཉིད་དུ་དེ་བྱེད་འགྱུར། ༡༣
འདི་ལས་རབ་མཆོག་གཞན་དག་ནི།
འཇིག་རྟེན་གསུམ་ན་ཡོད་མ་ཡིན།
རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོ་རང་དགས་འཆི།
སྣ་ཚོགས་གཟུཊ་ནི་འཛིན་ཅིང་རོལ། ༡༤
ཕེལ་བ་དེ་བཞིན་པ་ལ་ཤ།
ཨུ་དུམ་ཕ་ར་[6]ཉིད་དག་ནི།
སྤྲིན་སྲིག་འབུམ་བྱས་སྐྱུར་དུ་ནི།
ནོར་གྱི་བདག་པོ་ཆེན་པོར་འགྱུར། ༡༥

---

1. གོ་མ་ཡུ་བའི་ པེ། གོ་ཡུ་བ་མའི་ སྣ། གོ་ཡུ་བ་ཡི་ ལྷ།
2. སྤྲིན་བསྲིག་ པེ། སྣ།
3. དེའི་ པེ།
4. མཚན་མ་ ལྷ།
5. ཉན་རེ་བྱས་ན་ ལྷ། ཉིན་རེ་བྱས་ནས་ པེ།
6. ཨུ་དུམ་བཱ་ར་ སྡེ། པེ། སྣ།

གོ་སྣང་ས་[1]དང་སྨྲོས་བྱེད་བསྲེ།
རྒྱལ་སྲིད་འདོད་པས་སྦྱིན་སྲེག་[2]བྱ།
རྣལ་འབྱོར་དབང་ཕྱུག་མཉེས་བྱས་ན།
དབུལ་པོ་ཉིད་དུ་ག་ལ་འགྱུར། ༡༦

ལྷ་རྣམས་ཐམས་ཅད་བསྒོམས་ནས་ནི། །ཐུན་གཉིས་བར་དུ་སྦྱིན་སྲེག་བྱ། ཞེས་པ་ནི་དེ་ལ་ལྷའི་བསམ་གཏན་པ་དང་། ཕྱུགས་ཀྱི་ཤ་ཐམས་ཅད་དང་ཆང་[3]དང་ཡང་དག་པར་ལྡན་པའོ། །གོ་མ་ཡུའི་[4]ཤ་ཆང་གིས། །ཞེས་པ་ནི་ཙེ་སྤྱང་གི་ཤ་རྙིང་པའོ[5]། །སྦྱིན་སྲེག་བྱ་ཞེས་པ་ནི་ལྷ་ལའོ[6]། །ཕྱི་དང་ནང་དུ་བྱ་ཞེས་པ་ནི་ཉེ་བར་མཁོ་བར་བྱའོ། །སྦྱིན་སྲེག་ཆེད་དུ་ཐབ་ཁུང་མེས[7]། །དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་རབ་བསྒྲུབ་བྱ། །ཞེས་པ་ནི་རྟགས་ཀྱི་ཚིག་བཟླས་[8]ཤིང་བསམ་གཏན་དང་རྟགས་བྱའོ། །རྟགས་མེད་པ་ནི་རྟགས་བརྟེན་པའོ། །དེ་གཉིས་ཀྱི་ནུབ་གཅིག་ཏུ་བྱས་པ་ལ་ཅི་ཞེས་པ་ལ་སྨོན་ཏོ། །ཡུལ་འཁོར་བ་ནི་ངེས་ལྡུང་བྱེད་པའོ། །རིགས་པ་གསུངས་པ་ནི།

1. གོ་སྣུ་ས་ ཀྭ། གོ་མང་ས་ པེ།
2. སྦྱིན་བསྲེག་ པེ། སྣ།
3. འཆང་ ཅོ།
4. གོ་མ་སྤྱུའི་ གསེར། པེ།
5. ཙེ་སྤྱང་གི་ཤ་སྙིང་པོའོ་ སྡེ། ཅོ། ཙེས་སྤྱང་གི་ཤ་རྙིང་པའོ་ གསེར།
6. ལ་ལའོ་ སྡེ། ཅོ།
7. ཐབ་ཁུང་མེད་ གསེར། པེ།
8. ཚིགས་བཟླས་ གསེར།

རྒྱལ་འབྱོར་དབང་ཕྱུག་མཉེས་བྱས་ནས། །དབུལ་པོ་ཉིད་དུ་ག་ལ་འགྱུར། །ཞེས་གསུངས་སོ། །རྒྱལ་འབྱོར་དབང་ཕྱུག་ནི་ལྷའི་དབང་ཕྱུག་སྟེ། གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་དུ་བཞད་པའི་[1]སྔགས་སོ། །དབུལ་པོ་ནི་དབུལ་པོ་ཉིད་དོ། ༡༡-༡༦ །

གོ་མཱ་ཡུ་[2]ནི་བསྲེག་བྱས་པས། །
ཅི་བདེ་བར་ནི་འགྲུབ་པར་འགྱུར། །
གོ་མཱ་ཡུ་ཡི་སྦྲིན་སྲེག་[3]གིས། །
མྱུར་དུ་ནོར་བདག་མཉམ་པར་འགྱུར། ༡༧ །

བརྟུལ་ཞུགས་གཙང་སྦྲ་མེད་ན་ཡང་། །
བསྟན་པའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་འགྱུར། །
ལྷག་པའི་ཚེ་དང་ཀུཥྛཾ[4]། །
མུདྒ་མཱཥ་ཙ་ན་ཀ[5]། ༡༨ །

སྦྲང་རྩི་ཚིགས་མ་[6]སྐྱེ་ཚེ་དང་། །
ཁྲིམ་གྱི་ཏ་མ་ལ་འདབ་བླངས། །

---

1. གཞད་པའི་ གསེར།
2. གོ་མ་ཡུ་ སྣ། ལྷ། པེ།
3. གོ་མ་ཡུ་ཡི་སྦྲིན་བསྲེག་ པེ། གོ་མ་ཡུ་ཡི་སྦྲིན་སྲེག་ སྣ།
4. ཀུཥྛཾ་ པེ། ཀུཥྨནྚཾ་ སྣ།
5. མུནག་མཥ་ཙནཀ་ སྣ། མུདགམཥཙནག་ པེ། མུདགམཥཙནཀ་ ལྷ།
6. གཅིགས་མ་ ཅ་བ། གོང་དུ་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།

ཁ་བཅིངས་པར་[1]ཉི་འགྱུར་བ་ཡིན། །
ཅི་རུང་སྤྱོད་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ། །
གང་དུ་དགའ་བ་དེར་གནས་སོ། ༡༨ །

ཅི་བདེ་བར་ཞེས་པ་ནི་ངེས་པ་མེད་པའོ། །བརྟུལ་ཞུགས་གཙང་སྦྲ་མེད་པ་ལ། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་ཇི་ལྟར་བདེ་བ་ཉིད་ཀྱི་རྒྱུས་བཤད་དོ། །རྗེས་གནང་ནི་ལྷས་རྗེས་སུ་གནང་བ་སྟེ། མི་ལམ་དུ་མཚན་མ་མཐོང་བ་ཉིད་ཀྱིས་སོ། །ལྷག་པའི་ཆེར་འགྱུར་པ་ནི་དྲུར་པའོ[2]། །སྲུང་རྫིའི་ཚིགས་མ་[3]ནི་སྲུང་རྫིའི་སྐྱིགས་མའོ། །ཁྲིམ་གྱི་འདབ་མ་ནི་སྙིང་ནས་འཕྱུང་པའི་དུད་པའོ[4]། །དེ་ཐམས་ཅད་གང་གི་ཁྲིམ་གྱི་ཕྱོགས་གཅིག་[5]ཏུ་སྔགས་བཟླས་ནས་སྦས་ན། དེ་ཇི་ལྟར་གསུངས་པ་བཞིན་དུ་འགྱུར་རོ། ༡༧-༡༨ །

[6]དེ་ནས་གཞན་ཡང་བཤད་བྱ་བ། །
རྣལ་འབྱོར་མ་ཡི་ས་[7]དང་གནས། །
དེ་རུ་ཀ་དཔལ་རྒྱུ་ཡན་ལག །
ཐམས་ཅད་བདན་གཡོའི་བདག་ཉིད་ཅན།༢༠།

---

1. ཁ་བཅིང་པར་ སྡེ།
2. དུཐའོ་ གསེར། པེ།
3. སྲིགས་མ་ གསེར། རྫིགས་མ་ པེ།
4. འཆང་བའི་དུས་པའོ་ པེ།
5. ཕྱོགས་ཅིག་ གསེར། པེ།
6. ‘ཨོཾབཛྲབཻཙརོཙནིཡེཧཱུྃཧཱུྃཕཊསྭཱཧཱ’ ཞེས་པའི་སྔགས་འདི་པེ་ཀིང་པར་མའི་ནང་ལྷག
7. པེ་ཀིང་པར་མའི་རྒྱ་འགྲེལ་གཉིས་ཀའི་ནང་‘རྣལ་འབྱོར་མའི་ས་’ ཞེས་གསལ།

དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་སྦྱོར་བ་ཐམས་ཅད་བསྟན་པའི་རྗེས་སུའོ། །གཞན་ཡང་བཤད་བྱ་སྟེ་དེ་ཅིའི་ཞེས་པ་ལ། རྣལ་འབྱོར་མ་ཡི་ས་དང་གནས། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། གནས་ལ་སོགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་གནས་དང་ཉེ་བའི་གནས་ལ་སོགས་པའི་གནས་སོ། ། ས་ཉིད་ནི་གནས་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ས་དང་གནས་ལ་སོགས་པ་ནི་སྐྲའི་གཉིས་པ་ཕྱི་བའོ[1]། །རྣལ་འབྱོར་མ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་སོ། །ཡན་ལག་ཉིང་ལག་ཅེས་པ་ནི་ཡན་ལག་ནི་ལག་པ་ལ་སོགས་པའོ། །ཉིང་ལག་ནི་ཚིགས་[2]ལ་སོགས་པའོ། །ཕྱི་རོར་གཟུགས་ཀྱི་ཕུང་པོའོ། །སྐོབས་ནི་ཚོར་བ་ལ་སོགས་པའོ། །ས་དང་གནས་ལ་སོགས་པ་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པའི་བདག་ཉིད་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ཡན་ལག་དང་[3]ཉིང་ལག་གོ ། ཡན་ལག་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐབས་སུ་གྱུར་པ་བཤད་པར་བྱའོ་ཞེས་སྦྱར་རོ། ༣༠ །

གནས་ནི་རབ་ཏུ་དགའ་བའི་ས། །
དེ་བཞིན་ཉེ་གནས་དྲི་མ་མེད། །
ཞིང་འདིར་འོད་བྱེད་ཤེས་པར་བྱ། །
ཉེ་བའི་ཞིང་ནི་འོད་འཕྲོ་བ། ༣༡ །

ཚནྡོ་ཧ་ནི་མངོན་འགྱུར་ཉིད[4]། །
ཉེ་བའི་ཚནྡོ་[5]སྦྱང་དཀའ་བ། །

---

1. ཕྱི་བའོ་ པེ།
2. ཚིག་ པེ། གསེར།
3. ཡན་ལག་དང་ཡང་ པེ། གསེར།
4. ཚནྡོ་ཧ………ཉིད་ པེ། ཚནྡོ་ཧ………ཞིང་ སྣ། ཚནྡོ་ཧ………ཞིང་ ཞོ།
5. མཚན་དོ་ པེ། ཚན་དོ་ སྣ།

འདུས་པ་རིང་དུ་སོང་བ་ཡིན། །
ཉེ་བར་འདུས་པ་མི་གཡོ་བ། ༣༢ །
དུར་ཁྲོད་ལེགས་པའི་བློ་གྲོས་ཉིད། །
ཉེ་བའི་དུར་ཁྲོད་ཆོས་ཀྱི་སྤྲིན། །
སྙེ་ཧེ་རུ་ཀ་གཞུང་སྤྱོད་པའི[1]། །
འདི་ནི་ནང་གི་བདག་ཉིད་ས། ༣༣ །

ཉེ་བའི་གནས་ཉིད་ནི་ཉེ་བའི་གནས་ཏེ་ཡི་གེ་ཨུ་ཕྱིས་པའོ[2]། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ངེས་པར་འཆང་ཞེས་པ་ནི་ངེས་པར་བྱས་པའོ། །ས་འདི་རྣམས་དེའི་ཡན་ལག་ལ་བཀོད་པར་བྱའོ་ཞེས་འདི་ནི་ནང་གི་བདག་ཉིད་ས་ཞེས་པ་ནི་ཞེས་གསུངས་ཏེ། །འདི་རྣམས་ནང་གི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ས་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༣༡-༣༣ །

ཕ་རོལ་ཕྱིན་བཅུ་ས་རྣམས་ནི། །
རྣལ་འབྱོར་མ་ཡི་བརྡ་ཡི་སྐད། །
མཐོ་རིས་ས་སྟེང་ས་འོག་ཏུ། །
དཔའ་བོའི་ཡན་ལག་བརྟན་གཡོའི་[3]བདག༣༤།
པུལླིར་[4]ལ་སོགས་གང་བསྟན་པ། །
ཕྱི་ནང་བདག་ཉིད་ཅན་དུ་གནས། །

1. སྤྱོད་པ་ཡི་ སྣ།
2. ཕྱི་བའོ་ སྡེ། ཅོ།
3. བསྟན་གཡོའི་ པེ།
4. པུལླིར་ སྣ། པུལིར་ པེ།

དཔལ་ལྡན་ཁྲག་འཐུང་རྒྱལ་པོ་ཆེ། །
འདོད་པ་ཀུན་གྱི་དབང་ཕྱུག་གཙོ། ༣༥ །

ཕ་རོལ་ཕྱིན་བཅུ་ས་རྣམས་ནི། །ཞེས་པ་ནི་རབ་ཏུ་དགའ་བ་ལ་སོགས་པ་ས་བཅུ་པོ་དག་ནི། སྦྱིན་པ་དང་། ཚུལ་ཁྲིམས་དང་། བཟོད་པ་དང་། བརྩོན་འགྲུས་དང་། བསམ་གཏན་དང་། ཤེས་རབ་དང་། སྨོན་ལམ་དང་། སྟོབས་དང་། ཐབས་དང་། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་སྟེ་བཅུའོ། །བདའི་སྐད་ཅེས་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱི་བདར་བྱས་པའི་སྐད་དོ། །མཐོ་རིས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་འཁོར་ལོ་གསུམ་མོ། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོ་བཏན་པར་བྱས་[1]ནས་དངོས་གྲུབ་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ་ཞེས་སྨྲར་རོ། ༣༤-༣༥ །

ཀུན་ཏུ་ཕྱུག་དང་ཞབས་ལྡན་ཞིང་། །
ཐམས་ཅད་དུ་ནི་སྤྱན་ཞལ་དབུ། །
ཀུན་ཏུ་ཐོས་ལྡན་འཛིག་རྟེན་ན། །
ཐམས་ཅད་གཡོད་ཏེ་རྣམ་པར་བཞུད[2]། ༣༦།

དེ་ནས་དངོས་གྲུབ་བསྒྲུབ་བྱ་བ། །
བསམ་གཏན་ལྡན་པའི་སེམས་ཀྱིས་ཏེ། །

1. བསྟན་པར་བྱས་ སྡེ། ཅོ།
2. རྣམ་པར་ཞུགས་ པེ།

སྒྲུབ་པ་པོ་ལ་ཕན་པའི་ཕྱིར། །
གསང་བའི་དེ་ཉིད་[1]གསུངས་པ་ཡིན། ༣༧ །

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་དབང་གི་སྦྱིན་སྲེག་དང་གནས་ལ་སོགས་པའི་ས་བསྟན་པའི་ཚིགའི་ལེའུ་སྟེ་ལྔ་བཅུ་པའོ།། ༎

ཐམས་ཅད་ཅེས་པ་ལ་སོགས་པས་[2]ནི་འདི་ཉིད་ཀྱི་ཁྱད་པར་རོ། །ཁ་ཅིག་ན་རེ་འདི་སེང་གེ་རྣམ་པར་རོལ་པའི་ཕྱག་རྒྱ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཟེར་རོ། །དེ་ལ་ལག་པ་ནི་རྡོ་རྗེའོ། །ཞབས་ནི་བཤད་པའི་སྐོར་[3]། ༣༦-༣༧ །

དབང་དུ་བྱ་བའི་སྦྱིན་སྲེག་དང་། གནས་ལ་སོགས་པའི་ས་དང་རྒྱས་[4]པར་སྟོན་པའི་ཡང་གཞུང་གང་གིས་རྒྱས་པར་སྟོན་པ་དེ་ནི་དབང་དུ་བྱ་བའི་[5]སྦྱིན་སྲེག་དང་གནས་ལ་སོགས་པའི་ས་སྟོན་པའོ། །དེ་ཉིད་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་རབ་ཏུ་བྱེད་པའི་དོན་གྱིས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བརྗོད་པ་ནི་འདིའི་ཚིག་སྟེ་དེའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ལེའུ་ནི་ལྔ་བཅུ་པའོ་[6]ཞེས་བྱ་བ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ལེའུ་ལྔ་བཅུ་ཐམ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ།། ༎

*

1. གསང་བ་འདི་ཉིད་ སྣ། པེ། གསང་བ་དེ་ཉིད་ ལྷ།
2. སོགས་པ་ པེ།
3. ཚིག་ནི་ཡུལ་ལོ་ བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་དང་རྩ་བ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།
4. སངས་ གསེར།
5. གང་དུ་བྱ་བའི་ གསེར།
6. ལེའུ་ལྔ་བཅུ་པ་ནི་ལྔ་བཅུ་པའོ་ རྒྱ་དཔེ།

བསྒོམ་པར་བྱ་བ་བསྡུས་པའི་དོན་ལ་སོགས་པའི་ལེའུ།

དེ་ནས་གཞན་ཡང་བཤད་བྱ་བ། །
མན་ངག་ཤིན་ཏུ་རྙེད་དཀའ་སྟེ། །
དཔའ་བོའི་བརྡ་ཡི་སྐད་དུ་ནི[1]། །
ང་ཡིས་རྒྱུད་དུ་སྤྲས་པ་ཡིན། ༡ །

ད་ནི་བསྒོམ་པར་བྱ་བ་བསྡུས་པའི་དོན་ལ་སོགས་པའི་ལེའུ་དེ་ནི། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་བཤད་པའི་མཇུག་བསྡུ་བའོ། །དེའི་ཕྱིར་ཞེས་པ་ནི་གང་གི་ཕྱིར་ལྷ་བསྐྱེད་པ་མེད་པར་ཙུང་ཟད་ཀྱང་མི་འགྲུབ་པོ། །དེའི་ཕྱིར་བརྒྱུད་པ་ཡང་དག་པར་བཤད་པར་བྱའོ་ཞེས་སྦྱར་རོ[2]། །བརྒྱུད་པ་ནི་དམ་པའི་སྐྱེས་བུས་གཅིག་ནས་གཅིག་ཏུ་བཤད་པའོ། །རྙེད་དཀའ་བ་ཞེས་པ་ནི་མཛེས་པར[3] ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་རྙེད་པར་དཀའ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་དེ་བརྒྱུད་པའོ[4]། །སྤྲས་པ་ནི་སྨད་བྱེད་ཀྱི་ཁ་ན་མ་ཐོ་བ་མེད་པར་བྱ་བའི་དོན་དུའོ། །ང་ནི་ང་ཉིད་དོ། །ཅི་ཞེས་པ་ལ་རྒྱུད་ཅེས་གསུངས་ཏེ། རྒྱུད་ཅི་ཡང་དག་པར་འདུས་པ་བྱེད་པ[5]གང་

1. སྐད་དུ་ན་ སྣ།
2. སྦྱོར་རོ་ སྡེ། ཅོ།
3. མཛད་པར་ སྡེ། ཅོ།
4. བརྒྱུད་པའོ་ སྡེ། ཅོ།
5. རྒྱུད་ཅེས་ཡང་དག་པར་འདུས་བྱེད་པ་པ་ གསེར།

ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ཏེ། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པར་བརྗོད་པའོ། །བད་སྐད་[1]ཀྱིས་གསུངས་པ་ནི་བདའི་སྐད་ཀྱིས་གསུངས་པའོ། །དཔའ་བོ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སྟེ་བདར་བྱས་པའི་སྐད་དོ། །སྟོན་མ་བྱུང་བ་ཉིད་ཀྱིས་འདིར་བད་བྱས་[2]སོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །དེའི་ཕྱིར་ཡང་སྒྲ་དང་སྒྲ་མ་ཡིན་པར་ཡང་དོགས་པར་མི་བྱའོ། །སྒྲ་འབའ་ཞིག་ནི་དོན་གྱི་རྟོགས་བྱེད་མ་ཡིན་གྱི་འོན་ཀྱང་བདར་བྱས་པ་དང་བཅས་པས་སོ། །དེ་ཡང་དཔའ་བོས་ཀྱང་བྱས་ཞེས་པ་ནི་དཔའ་བོས་བདར་བྱས་པའི་སྐད་ཡིན་ནོ་ཞེས་ལེགས་པར་བརྗོད་དོ། །དེ་[3]ཡང་དག་པར་འདུས་བྱས་པའི་སྒྲས་ཅི་བྱེད་ཅེས་དགོངས་སོ། ༡ །

གོས་དང་ཕྱག་རྒྱ་ལྷ་ལ་སོགས། །
ཤེས་རབ་ཡན་ལག་ཕུར་བུ་དྲ[4]། །
ཨཱ་ལི་ཀཱ་ལི་[5]ཞེས་བརྗོད་པ། །
རྒྱུ་ལ་སོགས་སྟོང་སྟོན་འགྲོ་བ། ༢ །
འཇུག་པ་སྒྲ་ལ་སོགས་པ་ནས། །
ཇི་སྲིད་བསྡུས་པའི་སྦྱོར་ལྡན་པ། །
བདུད་རྩི་ཚིམ་བྱེད་སྒྲ་ངན་འདས། །
ལག་པའི་མཆོད་པའི་དབང་བསྐུར་བ། ༣ །

1. བདར་སྐད་ པེ། གསེར།
2. བདར་བྱས་ གསེར།
3. དེས་ གསེར། པེ།
4. ཕུར་བུ་འདྲ་ པེ།
5. ཨ་ལི་ཀ་ལི་ པེ། ཨཱ་ལི་ཀ་ལི་ སྣ།

གོ་ཆ་ཆེན་པོས་ཡང་དག་སྲུང་[1]། |
ཐུགས་རྣམས་ཀུན་གྱིས་མཆོད་པར་བྱ། |
དེ་ལྟར་དེ་ཉིད་བཅུ་བཞི་ནི། |
མདོར་བསྡུས་ནས་ནི་བཤད་པ་ཡིན། ༩ |

གོས་ནི་སྟག་གི་པགས་པ་དང་གླང་པོ་ཆེའི་པགས་པའོ[2]། །ཕྱག་རྒྱ་ལྔ་ཞེས་པ་ནི་མགུལ་རྒྱན་དང་གདུ་བུ་དང་རྐང་རྒྱན་དང་། རྣ་རྒྱན་དང་ཚངས་པའི་སྐུད་པའོ། ། ཕྱག་རྒྱ་ལྔའི་དང་པོར་གྱུར་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་མགུལ་པར་བརྒྱན་པའི་མགོ་བོའི་ཕྲེང་བ་དང་སྐེ་རགས་ལ་སོགས་པའོ། །རྡོ་རྗེ་དང་རྡོ་རྗེ་དྲིལ་བུས་ནི་འཁྱུད་པའོ། །ཕུར་བུ་ནི་ཕུར་བུ་སྟེ། རྡོ་རྗེའི་རང་བཞིན་གྱི་གུར་རོ། །འདི་ནི་ཉེ་བར་མཚོན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རྡོ་རྗེའི་ར་བ་ལ་སོགས་པའོ། །འདུག་པ་སྣ་སོགས་ཞེས་པ་ནི། འདུག་པ་ནི་གཟུགས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་དག་གོ །སྣ་ནི་ཐིག་ལེའི་སྟེང་དུ་རི་མོའི་རྣམ་པའོ། །ཧཱུྃ་གི་སྒྲི་བོའི་མ་ནི་འདིར་སྲོག་མེད་པར་གཟུང་བའོ། །དེ་ཡང་ཐིག་ལེའི་གཟུགས་ཉིད་དུ་རྟོགས་པར་བྱའོ། །ནད་ཡང་དེ་མ་ཡང་དེ་ཡིན་པས་ནད་དང་མོ[3]། །དེ་ལ་སོགས་པ་གང་ཡིན་པ་ནི་ཟླ་བ་ཕྱེད་ལ་སོགས་པ་དེ་ནི་ནད་དང་མ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། འདུག་པ་སྣ་དང་མ་སོགས་ནི་འདུག་པ་སྣ་དང་མ་ལ་སོཏ་པའོ། །ཇི་སྲིད་བསྡུས་པའི་སྦྱོར་ལྡན་པ། །ཞེས་པ་ནི་སྒྲོ་བ་སྔོན་དུ་སོང་བས་སྡུད་པ་སྟེ། འདི་ཡིས་དེ་ངེས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །

---

1. ཡང་དག་བསྲུང་ པེ།
2. སྟག་གི་ལྤགས་པ་དང་གླང་པོ་ཆེའི་ལྤགས་པའོ་ གསེར།
3. དེ་བས་ནད་དང་མའོ་ གསེར། པེ། དེ་ཡིན་པས་……མའོ་ སྣེ། ཅོ། གོང་གི་དེ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་རོ།།

བདུད་རྩི་ཚིམ་བྱེད་ངེས་པར་རྫོགས། །བདུད་རྩི་ལྷས་ཚིམ་པ་རང་དུ་བསྐྱེད་པའོ། ། གོས་དང་ཕྱག་རྒྱ་ལྔ་ལ་སོགས་པ་དང་། ཕུར་བུ་དང་དྲ་བ་དང་། ཨཱ་ལི་ཀཱ་ལི་བརྗོད་པ་དང་། རྒྱུ་ལ་སོགས་པ་སྟོང་པ་ཉིད་དང་། འཇུག་པ་དང་། སྔྲ་དང་། ཐིག་ལེ་དང་། བཟླ་བའི་སྦྱོར་བ་དང་། བདུད་རྩི་ཚིམ་བྱེད་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་དང་། ལག་པའི་མཆོད་པ་དང་། དབང་བསྐུར་བ་དང་། གོ་ཆ་ཆེན་པོ་སྔོན་དུ་སོང་བས་·[1] ལྷགས་ཀྱི་མཆོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བཅུ་བཞི་འདི་ནི་གཙོ་བོ་ཉིད་དུ་བསྟན་པའོ། ། དེའི་ཕྱིར་ཡང་འདི་ནི་དེ་ཉིད་བཅུ་བཞི་ནི་ཞེས་གསུངས་ཏེ། བཅུ་དང་བཞིའི་ཡན་ལག་དང་ཉིང་ལག་ཏུ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ཏེ། རྒྱུད་ཀྱི་བརྗོད་པར་བྱ་བ་མདོར་བསྡུས་པའོ། ༣-༩ །

མི་མཆོག་གང་ཞིག་ཀུན་སྤྱོད་པ། །
སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་དག་བདག །
དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ས་འཐོབ་ཅིང་། །
སྐྱེ་དང་སྐྱེ་བར་བདེ་གཤེགས་ཀྱི། ༥ །
རིགས་སྐྱེས་རྒྱལ་པོ་ཚོས་ལྡན་འགྱུར། །
ཇི་ལྟར་སྔོན་བསགས་སྡིག་པ་ཡི། །
མཚན་ཉིད་ཐམས་ཅད་དམན་པ་སྟེ། ༦ །

དེའི་ཕྱིར་མདོར་བསྡུས་ན་ཞེས་གསུངས་ཏེ། འདིས་གང་ལ་མཉམ་པར་སྦྱོད་པའི་ཐ་སྙད་དུ་བྱེད་པའོ། །དེ་ཉིད་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་སྡིག་པ་

1. སྔོན་དུ་ཡོད་པས་ སྡེ། སྔོན་འགྲོ་བ་ ཅོ་བ།

ཐམས་ཅད་དག་པའི་བདག་ཉིད་དུ་འགྱུར་ཏེ། གང་དང་དེ་ནི་རྟག་ཏུ་འབྲེལ་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཐམས་ཅད་ནི་མཚམས་མེད་པ་ལྔ་ལ་སོགས་པའི་སྡིག་པ་རྣམ་པར་དག་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ཏེ། བདག་ཉིད་ཀྱི་སེམས་གང་ཡིན་པའོ། །གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པའོ། །དེ་དེ་བཞིན་ནི་སྒྲའི་ངེས་པ་གཞན་དུ་ལྟ་བས་[1]སོ། །

ལས་རྣམས་བསྐལ་པ་བརྒྱ་རུ་ཡང་། །
ཆུད་ནི་ཟོས་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། །
ཚོགས་ཤིང་དུས་ལ་བབ་པ་ན། །
འབྲས་བུ་ངེས་པར་སྨིན་པར་འགྱུར[2]། །ཞེས་བྱའོ། །

ལས་ལ་འབྲས་བུ་མེད་པར་ཉམས་པར་མི་འགྱུར་བ་ནི་ཐབས་ཀྱིས་ཀྱང་རྣམ་པར་དག་པ་ཉིད་དོ། །དེ་ཐབས་ནི་ཙུང་ཟད་ཀྱང་ཉམས་པ་མེད་པ་སྟེ། འབྲས་བུ་མ་བྱུང་བ་ལ་ནི་ཉམས་པར་མི་འགྱུར་རོ་ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཉིད་ཀྱི་སྒྲ་ནི་ངེས་པའི་དོན་ཡིན་པས་སོ། །གང་གི་ཕྱིར་སྡིག་པའི་འབྲས་བུ་དེ་ཉིད་ཉམས་པའི་ཐབས་སོ། །འོན་ཀྱང་ལས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཉིད་ཐབས་གཞན་གྱིས་ཀྱང་དེའི་སྔོན་གྱི་ལས་ཉམས་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་འབྲས་བུར་བསྐྱེད་དེ་[3]འབྲས་བུ་གཞན་བསྐྱེད་པར་མི་ནུས་པས་དངོས་པོ་མེད་པ་རྒྱུན་ཆད་པ་[4]ཉིད་དུ་འགྱུར་རོ། །ཡང་ན་འདི་ལྟ་བུའི་ཐབས་ཀྱི་ཁྱད་པར་གྱིས་དེ་ཉམས་པ་སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་མཆོག་ཟག་པ་མེད་པའི་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་

---

1. བལྟ་བས་ གསེར།
2. Toh. 343 མདོ་སྡེ། 'ཨཾ' གང་པོ་ལ་སོགས་པའི་རྟོགས་པ་བརྗོད་པ་བརྒྱ་པ། ༡༨བ༥།
3. སྐྱེད་དེ་ སྡེ། ཅོ།
4. རྒྱུན་ཆུད་པ་ ཅོ།

རང་བཞིན་དུས་[1]མཉམ་དུ་བསྐྱེད་དོ། །ཇི་ལྟར་སྒྲོན་མས་རབ་རིབ་བསལ་ནས་གསལ་བར་[2]སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེ་རབ་རིབ་སེལ་བར་ནི་མི་བྱེད་དེ་འོན་ཀྱང་གསལ་བ་ཉིད་འབའ་ཞིག་གོ །དེ་གསལ་བཞིན་པ་རང་གིས་རབ་རིབ་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །བདག་ཉིད་ཆེན་པོའི་ཐབས་ཀྱང་ཅིའི་ཕྱིར་ཁས་མི་ལེན། ཐབས་ཀྱི་ཁྱད་པར་གང་གིས་དེའི་འབྲས་བུར་མི་འགྱུར་རོ། །ཐབས་མི་ཤེས་པ་ལ་ནི་ལས་ཉམས་ཤིང་མེད་པར་མི་འགྱུར་པ་མི་མཐུན་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ས་ཐོབ་ཅིང་ཞེས་པ་ནི། ཟག་པ་ཐམས་ཅད་ཟད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ས་ཐོབ་པའོ། །བསྒོམ་པ་ཕུལ་དུ་བྱུང་བར་འགྲོ་བ་མེད་པ་ལ་མི་འགྱུར་ན། དེའི་ཚེ་ཅི་ཞེས་པ་ལ། སྐྱེ་དང་སྐྱེ་བར་བདེར་གཤེགས་ཀྱི། །རིགས་སུ་སྐྱེས་[3]ཞེས་གསུངས་ཏེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་རིགས་གང་ཡིན་པ་དེ་[4]ནི་དེ་བཞིན་ཏེ། བསྐྱེད་པ་དེའི་ཕྱིར་སྐྱེ་བའོ། །འདི་ཡང་སྐྲའི་ཞྭ་པ་ཕྱི་བའོ། །སྐྱེ་ཞིང་སྐྱེ་བར་ལྷའི་སྐྱེ་བ་དང་། མིའི་སྐྱེ་བ་སྣ་ཚོགས་དང་ལྡན་པའི་རྒྱལ་པོར་འགྱུར་པ་ནི། ཀོ་ས་ལ་དང་རྒྱལ་པོ་ལེགས་པའི་བློ་གྲོས་ལ་སོགས་པ་ལྟ་བུའོ། །གལ་ཏེ་ཤིན་ཏུ་སྡིག་པ་ཅན་གྱིས་ཀྱང་ཇི་ལྟར་ཡང་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བཅུ་བཞི་གོམས་པར་བྱས་ན། དེའི་ཚེ་ཅིར་འགྱུར་ཞེ་ན། ཇི་ལྟར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་ཀྱི་བྱ་

1. རང་བཞིན་ནས་ ཅོ།

2. རབ་རིབ་བསལ་ནས་བསལ་བར་ གསེར། རབ་རིབ་གསལ་ནས་བསལ་བར་ པེ།

3. རིགས་སུ་སྐྱེ་ གསེར། པེ།

4. གང་ཡིན་དེ་ གསེར། པེ།

བ་[1]བྱས་ཤིང་བསགས་པ་ཐོག་མ་དང་ཐ་མ་དང་བར་དུ་འབྲེལ་[2]བའི་སྡིག་པའི་ལས་གང་ཡིན་པ་དེ་ཇི་ལྟར་སྟོན་ལ་སོགས་པའི་སྡིག་པའོ། །དེའི་ཇི་ལྟར་[3]སྟོན་ལ་སོགས་པའི་སྡིག་པ་ཞེས་པ་ནི་སྔའི་དང་པོའི་དོན་གྱིས་དྲུག་པའོ། །གང་སྐྱེས་བུའི་མཚན་ཉིད་ཐམས་ཅད་དམན་པའོ། ༥-༦ །

གང་ཞིག་འདི་ནི་རྟག་སྒོམ་[4]པ། །
ས་ལ་འདོད་པ་ཀུན་དབང་ཕྱུག[5] །
དཔེར་ན་མར་གྱིས་[6]གང་བའི་སྣོད། །
མེ་ཡི་དབུས་སུ་བཞག་ན་ནི། ༧ །

གཞན་ཡང་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བཅུ་བཞི་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་སྒོམ་པ་དེ་ནི་ས་གཞིའི་འདོད་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དབང་ཕྱུག་གོ །དེའི་སྡིག་པའི་ཕུང་པོ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མི་ནུས་པར་བྱས་པ་ནི་བསམ་གཏན་ལས་སྐྱེས་པ་ཉིད་ཀྱི་ལས་ཀྱི་འབྲས་བུའོ། །ཡང་ན་ཇི་ལྟར་སྟོན་བསགས་ཀྱི་སྡིག་པ་བསམ་གཏན་འདིས་ཟད་ཅིང་མེད་པར་བྱས་པས་[7] རྟག་ཏུ་འདོད་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དབང་ཕྱུག་ཏུ་འགྱུར་རོ། །ཕྱུག་དང་ཞལ་ལ་སོགས་

1. ཡིད་ཀྱི་བྱ་བས་ གསེར། པེ།
2. བར་དུ་རབ་ཏུ་འབྲེལ་ གསེར། པེ།
3. དེ་ཇི་ལྟར་ པེ། གསེར།
4. བསྒོམ་ པེ།
5. འདོད་པའི་ཀུན་དབང་ཕྱུག་ པེ། འདོད་པ་ཀུན་དབྱུང་ཕྱུག་ སྣ།
6. མར་གྱི་ པེ།
7. མེད་པར་བྱས་ནས་ གསེར། པེ།

པའི་རྣམ་པ་དང་ལྡན་པའི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་[1]བསྒོམ་བཞིན་པས་སྔོན་དུ་བསྟན་པའི་སྡིག་པའི་ལས་ཇི་ལྟར་ཟད་པ་ལ། མར་གྱིས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཇི་ལྟར་མར་གྱིས་གང་བའི་སྣོད་མེའི་དབུས་སུ་བཞག་པའོ། ༧ །

མར་སར་[2]སྙིང་དུ་ཞུ་འགྱུར་ཞིང་། །
སྣོད་ཀྱི་དྲི་མ་འཇིག་པར་[3]འགྱུར། །
དེ་བཞིན་ཤྲཱི་ཧེ་རུ་ཀ་ཡི། །
མཚན་གྱིས་[4]སྡིག་པ་འཇིག་པར་འགྱུར། ༨།

དེ་ལྟར་ཅི་འགྱུར་ཞེས་པ་ལ། མར་སར་ཞུ་ཞིང་ཞུ་གྱུར་ནས། །ཞེས་གསུངས་སོ།། དེ་གལ་ཏེ་སྣོད་ཀྱི་མར་སར་ཞུ་བ་རྒྱུ་དང་འདྲ་བ་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཛྷས་སོ། །ཚིག་གི་དོན་ནོ། །ཞུ་ཞིང་ཞུ་བ་རྙེད་ནས་རྒྱུ་དང་འདྲེས་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེས་ཅི་ཞེས་པ་ལ་སྣོད་ཀྱི་དྲི་མ་འཇིག་ཅེས་གསུངས་ཏེ། དྲི་མ་ནི་དུས་རིང་པོ་རྙེད་ནས་ཞུ་བའི་རྒྱུ་ཉམས་པར་འགྱུར་རོ། །ཇི་སྲིད་དུ་རྒྱུ་ལྟ་བུ་ཉམས་པ་མེད་པ་དེ་སྲིད་དུ་མར་སར་མི་ཉམས་པ་ནི་དེ་དག་དངོས་པོའི་མཐུ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །སྣོད་ཀྱང་རྟེན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་སྣོད་དོ། །མི་ཡང་སྣོད་ཅེས་བརྗོད་དོ། །དེ་བཞིན་དུ་དེའི་ལས་ཟད་པ་ཞེས་པ་དེ་ཉིད་ནི། དེབཞིན་སྡིག་པ་འཇིག་པར་འགྱུར། །ཞེས་གསུངས་ཏེ།

1. ཧེ་རུ་ སྡེ། ཅོ།
2. མར་གསར་ ལྷ།
3. འཇིགས་པར་ སྣ།
4. མཚན་གྱི་ པེ། སྣ།

འཁོར་བའི་རྒྱ་མཚོར་སེམས་ཅན་རྣམས་མངོན་པར་ཞེན་པས་སྡིག་པའི་ལས་ཐུན་མོང་བས་ལྷུང་བ་རྣམས་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མེས་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀར་བྱས་པའི་སྟོད་བསྒོམ་[1]བཞིན་པས་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་མངོན་པར་ཞེན་པ་དེའི་གཟུང་བ་ལ་སོགས་པར་མངོན་པར་ཞེན་པའི་མཚན་ཉིད་དེའི་ལས་ཀྱང་ཟད་ནས་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་སྐྱོན་མེད་པར་འགྱུར་བའོ། །གཞན་ཡང་སྟོང་པ་ཉིད་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་དང་བཅས་པའི་སྐྱོན་ནི་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་དོན་གྱི་བྱ་བ་བྱེད་པ་དང་བྲལ་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །

དེ་ལྟར་ཡང་།

ནོ་རྗེ་སྙིང་པོ་སྙིང་རྗེ་ཆེ། །
དངོས་པོ་ཉིད་ཀྱིས་རྣམ་གྲོལ་ཞིང་། །
དངོས་པོ་ཉིད་ཀྱིས་འཆིང་འགྱུར་པས། །
དེ་ཡོངས་ཤེས་པས་གྲོལ་བར་འགྱུར། །ཞེས་གསུངས་སོ། །

"ཉོན་མོངས་པ་མེད་པ་ཟད་པར་འགྱུར་བས་མཆོག་གི་བྱང་ཆུབ་མི་འཐོབ་པས་ཉོན་མོངས་པ་ལས་གྲོལ་བར་རང་ལ་ཕན་པ་བྱེད་པ་ཡང་མི་འཐོབ་བོ། །དེས་འདིར་བྱང་ཆུབ་ཐོབ་པ་ནི་བརྩོན་འགྲུས་བརྟན་པོར་བྱས་ཤིང་མ་ལུས་པ་བསྲེག་པ་མ་ཡིན་པས་ཉོན་མོངས་པ་རྩའི་ཟློལ་པ་ལྟ་བུར་བྱས་པའོ[2]།" །ཞེས་ཀྱང་ངོ་། །

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ཞེས་པ་ནི།

ཧྲཱི་ནི་གཉིས་མེད་ཡེ་ཤེས་ཏེ། །
ཧེ་ནི་རྒྱུ་སོགས་སྟོང་པའོ། །

---

1. སྟོད་པའི་བསྒོམ་ གསེར།
2. ཟློལ་མ་ལྟ་བུར་བྱས་པའོ་ གསེར། ཟློལ་མ་ལྟ་བུར་བྱས་པ་ པེ།

རུ་ནི་ཚོགས་དང་བྲལ་བ་སྟེ།
ཀ་ནི་གང་དུའང་མི་གནས་པའོ།

ཞེས་པ་ནི་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་ཀྱི་རང་བཞིན་དེའི་མིང་ཅན་ནི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དེ་ཞེས་པའི་སྒྲ་ནི་དྲུག་པའི་དོན་ཏོ། །མིང་ནི་མཚན་ཏེ་གཙོ་བོར་བསྒྲུབ་པ་ཉིད་དུ་དགོངས་སོ། ༨

བསམ་གཏན་སེམས་པ་[1]ཙམ་གྱིས་སམ།
ཀློག་ཅིང་ཁ་ཏོན་བྱེས་པ་ཡིས།
མཐོ་རིས་ལོངས་སྤྱོད་ཐོབ་འགྱུར་བའམ[2]།
ཡང་ན་འཁོར་ལོས་སྒྱུར་པ་འཐོབ[3]། ༩

གང་ལས་ཞེས་པ་ལ། བསམ་གཏན་ཞེས་གསུངས་ཏེ། བསམ་གཏན་ནི་བསམས་པ་ཙམ་མོ། །ཀློག་པ་ནི་ཐུན་མོང་དུའོ། །རང་གིས་འདོན་པ་[4]དང་རྩེ་གཅིག་པའི་ཡིད་ཀྱིས་བྱེས་ན། རང་ཉིད་འཁོར་ལོས་སྒྱུར་བ་ནི། འཁོར་ལོས་སྒྱུར་བ་ཉིད་དོ། ༩

རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་འཛོ་བའི་ཚེ།
ཁྲག་འཐུང་དཔལ་སོགས་རྣལ་འབྱོར་མ།
ལག་ན་མེ་ཏོག་སྣ་ཚོགས་ཐོགས།
རྒྱལ་མཚན་བ་དན་སྣ་ཚོགས་དང་། ༡༠

1. སེམས་དཔའ་ སྣ།
2. ཐོབ་འགྱུར་བ་ ལྷ། སྣ།
3. འཁོར་ལོས་བསྒྱུར་བ་ཐོབ་ པེ། འཁོར་ལོས་བསྒྱུར་བ་འཐོབ་ ལྷ། སྣ།
4. རང་གིས་འདོད་པ་ གསེར། རང་གི་འདོན་པ་ པེ།

རོལ་མོའི་སྒྲ་ནི་སྣ་ཚོགས་དང་། །
སྣ་ཚོགས་གླུ་ཡི་[1]མཆོད་པ་ཡིས། །
འཆི་བ་ཞེས་བྱ་རྣམ་རྟོག་འདི། །
མཁའ་སྤྱོད་གནས་སུ་འཁྲིད་[2]པར་བྱེད། ༡༡།

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣལ་འབྱོར་གྱིས་ཀྱང་མ་གྲུབ་ན་འདོན་པ་ལ་སོགས་པ་བྱས་པས་ཀྱང་ངོ་། །གལ་ཏེ་ཚོགས་པར་མ་གྱུར་ན་འཆི་བར་གྱུར་ན་དེའི་ཚེ་ཅིར་འགྱུར་ཞེས་པ་ལ། འཕོ་བའི་ཚེ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། རྣལ་འབྱོར་པ་ནི་སྐྱེས་བུའོ། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ལ་སོགས་པའི་དཔའ་བོ་དང་དཔའ་མོ་རྣམས་ནི་གསུམ་པའི་མང་པོའི་ཚིག་ཕྱིས་པའོ། །སྒྲ་སྣ་ཚོགས་ནི་ཛ་ལ་སོགས་པ་བྱེན་གྱིས་བརླབས་པའི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ལ་སོཏ་པའོ། །བྱ་བ་བག་ཙམ་གྱིས་མཚོན་པའོ། ༡༠-༡༡ །

དེ་འདྲའི་དཔའ་ཆེན་[3]རྣལ་འབྱོར་མ། །
ས་སྟེང་[4]ན་ནི་རྙེད་པར་དཀའ། །
དཔལ་ལྡན་ཧེ་རུ་ཀའི་རྒྱུད་ཆེན། །
གང་ཞིག་ཤེས་ནས་མ་དད་པ། ༡༣ །

1. གླུའི་ སྣ།
2. གནས་སུ་ཁྲིད་ སྣ།
3. དཔལ་ཆེན་ པེ།
4. ས་སྟེངས་ སྡེ། པེ། སྣ།

དེ་ཉིད་ནི་དེ་འདྲའི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ལྷ་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའོ། །དཔའ་བོ་ཆེན་པོ་ནི་ཐོད་པའི་དུམ་བུ་ལ་སོགས་པའོ། །རྣལ་འབྱོར་མ་ནི་ཌཱ་ཀི་ཕག་མོ་ལ་སོགས་པའོ། །ཤའི་མིག་གིས་མཐོང་བར་དཀའ་བའོ། །དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་རྒྱུད་ཆེན་པོ་གང་གིས་ཤེས་པ་ནི་རྟོགས་པ་ཡང་ངོ་། །མ་དད་པ་ནི་མ་དད་པའི་སྐྱེས་བུའོ། ༡༢ །

དབུལ་པོ་སྡུག་བསྔལ་གྱིས་གདུངས་པར། །
དེ་ལ་རྟག་ཏུ་འབྱུང་བར་འགྱུར། །
མགུལ་རྒྱན་གདུ་བུ་དཔུང་རྒྱན་དང་། །
རྣ་རྒྱན་ཚངས་པའི་སྐུད་པ་དང་། ༡༣ །
ཌོ་ཤལ་མགོ་བོའི་ཕྲེང་བ་[1]དང་། །
སྐེ་རགས་སིལ་སིལ་སྒྲ་སྒྲོགས་པ[2]། །
རི་སྙེང་སྣ་ཚོགས་པདྨ་[3]ཡི། །
ལྷེ་བར་ཨཱ་ལི་ཀཱ་ལི་[4]སྐྱེས། ༡༤ །

དེ་དབུལ་བར་འགྱུར་ཏེ། སྡུག་བསྔལ་གྱིས་གདུངས་པར་འགྱུར་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །མགུལ་རྒྱན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། བཤད་པ་ཉེ་

---

1. མགོའི་ཕྲེང་བ་ པེ། མགོ་ཡི་ཕྲེང་བ་ ལྷ།
2. སྐེ་རགས་·········སྒྲ་སྒྲོག་པ། ལྷ།
3. རི་སྙེངས་སྣ་ཚོགས་པདྨ་ སྡེ། སྣ། རི་སྙེངས་སྣ་ཚོགས་པད་མ་ པེ།
4. ཨ་ལི་ཀ་ལི་ པེ།

བར་མཛུག་བསྐུ་བར་སྟོན་ཏེ། མགུལ་རྒྱན་གདུ་བུ་དཔུང་རྒྱན་དང་། །ཞེས་པ་ནི་ཡང་དག་པར་བསྐུ་བ་གཅིག་གོ །མགུལ་རྒྱན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟོན་བཞིན་དུ་རྒྱན་གྱི་མཛུག་བསྐུ་བའོ། །རི་སྟེང་སྣ་ཚོགས་པདྨ་ནི་སྣ་ཚོགས་པདྨའི་གནས་ཀྱི་མཛུག་བསྐུ་བའོ། །ཨཱ་ལི་ཀཱ་ལིས་ཞེས་པ་ནི་རྣམ་པ་ལྔའི་མཛུག་བསྐུ་བ་སྟེ། ཨཱ་ལི་ཀཱ་ལི་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དང་ནི་[1]ལྷག་མ་བསྐུ་བའོ། ༡༣-༡༩ །

དཀར་མོ་བདག་པོ་རྣམ་གནོན་ཅིང་། །
རྡོ་རྗེ་དྲིལ་བུས་སྐུ་ལ་འཁྱུད། །
ཉི་ཤུ་རྩ་བཞིའི་ཕྱེད་ལྡན་པའི། །
དཔའ་བོ་རྣལ་འབྱོར་མ་ཚོགས་དང་། ༡༥ །

ཨུ་མ་ཞེས་པ་ནི་ལྷན་ཅིག་གི་སྒྲའི་དོན་ཏེ་གསུམ་པའོ། །གདན་གྱི་མཛུག་བསྐུ་བའོ། །རྡོ་རྗེ་དྲིལ་བུ་སྐུ་ལ་འཁྱུད་ཅེས་པ་ནི་མཚན་མ་དང་འཁྱུད་པའི་མཛུག་[2]བསྐུ་བའོ། །མཚན་མ་གཉིས་པོ་[3]འདིས་ནི་མཚན་མ་གཞན་ཉེ་བར་མཚོན་པའོ། །ཉི་ཤུ་རྩ་བཞིའི་ཕྱེད་ལྡན་པ། །ཞེས་པ་ནི་ཁྭ་གདོང་མ་ལ་སོགས་པ་[4]བཅུ་གཉིས་ནི་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞིའི་ཕྱེད་དོ། །དཔའ་བོ་དང་ལྡན་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་ནི་དཔའ་བོ་དང་རྣལ་འབྱོར་མ་སྟེ་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞིའོ། །དེའི་ཚོགས་ནི་དཔའ་བོ་དང་རྣལ་འབྱོར་མའི་ཚོགས་སོ། །སྲ་

1. དཔེ་ བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།
2. འཛུག་ པེ།
3. མཚན་གཉིས་པོ་ སྡེ། ཅོ།
4. 'པ་' པེ་ཀིང་དུ་མེད།

ཐུང་བར་བྱས་པ་ནི་ལུང་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེས་བསྐོར་ཞེས་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་སུམ་ཅུ་རྩ་དྲུག་གི་མདུག་བསྡུ་བའོ། ༧༥ །

ཧེ་རུ་ཀ་དཔལ་རྒྱལ་པོ་ཆེའི། །
གོ་འཕང་མཆོག་ནི་བསྒོམ་པར་བྱ། །
དཔའ་བོ་ཀུན་དང་རྣལ་འབྱོར་མའི། །
འཁོར་བཅས་དབུས་སུ་སྦྱོར་ལྡན་པ། ༧༦ །

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་གང་[1]ཡིན་པ་དེ་ནི། ཧེ་རུ་ཀ་དཔལ་རྒྱལ་པོ་ཆེ། །ཞེས་བྱ་སྟེ། གཙོ་བོའི་མདུག་བསྡུ་བའོ། །གོ་འཕང་ཞེས་པ་ནི་ཁྱད་པར་རོ། །འདིས་ཀྱང་རྟེན་དང་བརྟེན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་མ་ལུས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་མདུག་བསྡུ་བའོ[2]། །མདོར་བསྡུས་པ་[3]བསྟན་ནས། ཡང་ཤིན་ཏུ་མདོར་བསྡུས་པ་ནི། ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དཔའ་བོ་ཐམས་ཅད་ཅེས་པའི་དྲུག་པའི་གཅིག་གི་ཚིག་གི་དོན་ནོ། །རྣལ་འབྱོར་མ་ནི་འདིར་འཁོར་ཏེ། དེའི་འཁོར་དང་བཅས་པར་གནས་པ་ནི་འཁོར་བཅས་སོ། །སྦྱོར་བ་ནི་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོའི་རྣལ་འབྱོར་དང་དེ་ལྡན་པ་སྟེ། སྒྲའི་ཐུང་བ་ནི་ལུང་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དབུས་སུ་སྦྱོར་ལྡན་པ་ཞེས་པའི་གཞུང་ལ་ནི་དབུས་ནི་ཟག་པ་མེད་པའི་བདེ་བའོ། ༧༦ །

1. ‘གང་’ གསེར་བྲིས་སུ་མེད།

2. གཙོ་བོའི་འདུག་བསྡུ་བའོ……………དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འདུག་བསྡུ་བའོ། པེ།

3. མདོར་བསྡུ་བའོ་ གསེར།

ཐམས་ཅད་དཀྲིས་ཤིང་གཉིས་མེད་འགྱུར[1]། །
འཕྲིན་དང་སྤྱོད་པར་མཛད་པ་ཡིན། །
མོས་པ་དུ་མའི་སེམས་ཅན་ལ། །
སྤྱོད་པ་སྣ་ཚོགས་སྟོན་མཛད་དེ། ༡༧ །

དེ་ནས་དེ་ཕྱིར་གསང་[2]བཤད་བྱ། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནས་སྒྲུབ་པའི་སྦྱོར་ལྡན་པ་ཞེས་པའི་བར་གྱིས་གོང་དུ་བསྟན་པའི་ཆོས་ཐོས་ནས་དཔའ་བོ་དང་། དཔའ་མོའི་དབང་ཕྱུག་མ་ཐམས་ཅད་ཆོས་ཀྱི་སྙིང་པོས་དཀྲིས་ནས་སོ། །གཉིས་སུ་གྱུར་པ་ནི་ཐུགས་དཀྲིས་པས་གཉིས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་གྱུར་པ་སྟེ། འཕྲིན་པ་ནི་སྤྲོ་བའོ། །སྤྱོད་པ་ནི་སྤྲོས་པ་སྤྱོད་པའོ། །དཔའ་བོ་དང་རྣལ་འབྱོར་མ་ནི་གཞན་གྱི་དོན་གྱི་ཆེད་དུ་ཆོས་ཉན་པའོ། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་གདུལ་བྱའི་དོན་དུ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་དོ་རྗེ་ཕག་མོས་གསོལ་བ་བཏབ་པའོ། །དེ་ལྟ་བུར་གྱུར་པ་གཞན་གྱི་དོན་གྱི་ཆེད་དུ་ཐོས་པ་ལ་རབ་ཏུ་འཇུག་སྟེ། ཚོགས་པ་མངོན་པར་སྤྲུལ་ནས་ཆོས་སྟོན་པའོ། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ལ་མོས་པ་ཉིད་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། སྣ་ཚོགས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །སྣ་ཚོགས་པའི་དོན་འཛིན་ཅིང་སྤྱོད་པ་ལ་སྤྱོད་པ་རྣམས་སྣ་ཚོགས་པའི་གཟུགས་ཁྲིམ་པ་ལ་སོགས་པའི་མཚན་ཉིད་སྣ་ཚོགས་པའི་སྤྱོད་པ་རྣམ་པར་རྟོགས་ཤིང་ཤེས་ནས་འདི་[3]

---

1. གཉིས་མེད་གྱུར་ པེ། ལྷ། སྣ། རྒྱ་དཔེའི་རྩ་བར་ཡང་གཉིས་མེད་གྱུར་ཞེས་ཡོད་ཀྱང་དེའི་ཐད་ཀྱི་འགྲེལ་པར་ནི་གཉིས་སུ་གྱུར་ཞེས་གསལ།
2. གསུང་ སྡེ། ཅོ།
3. ‘འདི་’ སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེ་གཉིས་སུ་མེད།

མཛད་དོ་ཞེས་པ་ནི་བཏན་པར་བྱས་པའོ། ༡༧ །

སྣ་ཚོགས་ཚུལ་གྱིས་གདུལ་བྱ་བ། །
ཐབས་ནི་སྣ་ཚོགས་སྟོན་པ་ཡིན། །
ཟབ་མོའི་ཆོས་ནི་སྟོན་པ་ལ། །
གལ་ཏེ་མོས་པར་མ་གྱུར་ཀྱང་། ༡༨ །

དེ་ཉིད་[1]ཅིའི་ཕྱིར་ཞེས་པ་ལ།

སྣ་ཚོགས་ཚུལ་གྱིས་གདུལ་བྱ་རྣམས། །
ཐབས་ནི་སྣ་ཚོགས་སྟོན་པ་ཡིན། །
ཟབ་མོའི་ཆོས་ནི་སྟོན་པ་ལ། །
གལ་ཏེ་མོས་པར་མ་གྱུར་ཀྱང་། །ཞེས་བྱའོ། །

ཉན་ཐོས་ལ་སོགས་པའི་ཚུལ་ལ། གལ་ཏེ་གདུལ་བྱ་ལྷག་པར་མོས་ན་གང་ཁ་ཅིག་ཏུ་གྱུར་པ་ལ། དེའི་ཚེ་སྣ་ཚོགས་པའི་ཐབས་ཀྱིས་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པའི་ལམ་ལྷག་པར་མོས་པ་ལ་སྟོན་ནོ། །དེ་ལྟ་བུ་ལ་ལྷག་པར་མོས་པའི་དགོངས་པ་[2]ཅི་ཡིན་ཞེས་པ་ལ། ཟབ་མོའི་ཆོས་ནི་སྟོན་པ་ལ། །ཞེས་གསུངས་སོ། །ཟབ་མོའི་ཆོས་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་གཉིས་སུ་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་བཤད་ཅིང་བསྟན་པ་ལ། དེའི་རྒྱུ་ཉིད་ཀྱིས་སོ། །སྣ་ཚོགས་པའི་ཚུལ་ལ་མོས་པ་སྟོན་པ་དག་གིས་ཆོས་གང་ལ་ལྷག་པར་མོས་པ་ལ་དེ་ལ་སྟོན་ནོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༡༨ །

---

1. དེ་ནི་ ཅོ།
2. དགོས་པ་ སྡེ། ཅོ།

སྨོད་པ་དག་ཏུ་མི་བྱ་སྟེ།
ཆོས་ཉིད་བསམ་མི་ཁྱབ་དྲན་བྱ།
གང་གིས་འདིར་བདག་ཡུལ་མིན་པ།
བདག་གིས་[1]ཆོས་ཉིད་མི་ཤེས་ཡིན། ༡༨

མོས་པ་སྣ་ཚོགས་པ་ཅིའི་དོན་ཞེས་པ་ལ། སྨོད་པ་དག་ཏུ་མི་བྱ་སྟེ། །གང་གི་ཕྱིར། ཆོས་ཉིད་བསམ་མི་ཁྱབ་དྲན་བྱ། །ཡང་ན་ཐབས་སྣ་ཚོགས་ནི་ལྷ་སྣ་ཚོགས་པའི་[2]གཟུགས་ཀྱིས་སྟོན་པའོ། །སེམས་ཅན་ཉིད་ལྷའི་གཟུགས་སུ་བསྟན་པར་བྱས་སོ།། ཞེས་དགོངས་སོ། །ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་བདག་ཉིད་གསང་སྔགས་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་ཇི་ལྟར་འདོད་པས་རོལ་ཅིང་རེ་ཞིག་ལྷག་པར་མོས་པ་ལ་སྦྱོར་རོ། །གལ་ཏེ་དེ་ལྟར་ཡང་མ་གྱུར་ན་ཅི་ཞེས་པ་ལ། ཟབ་མོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཟབ་མོ་ནི་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཚའོ། །ཆོས་ནི་ཕྱག་དང་ཞལ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པ་ཐབས་ཀྱི་ཚའོ། །ཟབ་མོ་ཡང་ཡིན་ལ་ཆོས་ཀྱང་ཡིན་པས་ཟབ་མོའི་ཆོས་སོ། །དེ་བླ་ན་མེད་པར་སྟོན་པ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པ་ཞེས་བརྗོད་པའི་རྒྱུད་དེ་ཟབ་མོའི་ཆོས་སྟོན་པ་ལ། གལ་ཏེ་འདི་ལ་ལྷག་པར་མོས་པར་མ་གྱུར་ན། །གདུལ་བྱ་རྣམས་ཀྱིས་དེ་ལ་སྨད་པར་མི་བྱའོ། །དེ་ལ་ཇི་ལྟར་བྱ་ཞེས་པ་ལ། ཆོས་ཉིད་བསམ་མི་ཁྱབ་དྲན་བྱ། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའི་ཆོས་རྣམས་

1. གང་གིས་ སྡེ། སྣ། ལྷ།
2. ལྷ་ཚོགས་པའི་ པེ། གསེར།

ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་རང་བཞིན་དྲན་པར་བྱས་པ་ནི་བསྟན་པར་བྱ་བའོ། །བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཐམས་ཅད་དུ་བསྒོམ་པར་བྱའོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །འདིར་ཆོས་ཀྱི་ཕུང་པོ་དང་། ཁམས་དང་། སྐྱེ་མཆེད་ལ་སོགས་པ་རྣམས་བདག་གི་ཡུལ་གཟུང་བ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཡོད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །ཀྱུ་གང་གིས་ཞེས་པ་ལ། གང་ཞེས་གསུངས་ཏེ། ཆོས་ཉིད་དེ་བཞིན་ཉིད་སྟོང་པ་ཉིད་དེ་ནི་མི་ཤེས་ཏེ། ཆོས་ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་རང་ཉིད་ལ་བྱེད་པ་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟར་ཡང་། ''སེམས་ཀྱིས་[1]སེམས་མི་ཤེས་པའོ།'' །ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། །གཟུང་བ་ལ་སོགས་པས་དབེན་པའི་ཡེ་ཤེས་སེམས་ཙམ་ནི་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་དེ་བརྗོད་དོ། །རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལས་གཞན་དུ་སྟོང་པ་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་མ་གཏོགས་པ་ཙུང་ཟད་ཀྱང་མེད་དོ། །མ་གཏོགས་པ་ཉིད་ནི་རྣམ་པར་དབེན་པ་གང་ཡིན་པ་ལ་འདོད་པའོ། ༡༩ །

རྫོགས་སངས་རྒྱས་དང་དེའི་སྲས་ནི། །
བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་རྣམས་ཀྱིས་མཁྱེན། །
སངས་རྒྱས་རྣམས་ནི་བྱུང་གྱུར་ཏམ། །
མ་བྱུང་ན་ཡང་རྣམ་ཀུན་ཏུ། ༢༠ །

ཅེ་ཞེས་པ་ལ། མཁྱེན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དེ་ཡང་དག་སངས་རྒྱས་ཏེ་ཡང་དག་པའི་རྟོགས་པ་དང་ལྡན་པའོ། །བདག་ཉིད་ཆེན་པོས་ཁྱབ་པས་ན་སངས་རྒྱས་སོ། །དེ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྲས་པོ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེའི་སྲས་ཏེ་བྱང་ཆུབ་

1. སེམས་ཀྱི་ ཅོ།

སེམས་དཔའོ། །གང་གི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔར་གྱུར་ནས་སངས་རྒྱས་སུ་འགྱུར་བའོ། །དེ་དག་སངས་རྒྱས་རྣམས་སམ་སྲས་ནི་དེའི་སྲས་ཏེ་དེའི་བདག་ཉིད་ལས་སྐྱེས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ཆོས་ནི་ཆོས་ཉིད་རྟོགས་པས་སངས་རྒྱས་ཏེ། དེ་ཡང་དག་པར་རྟོགས་པར་འགྱུར་པས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཡང་སངས་རྒྱས་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་སྙད་བྱས་ཏེ་ངེས་པར་རྟོགས་པར་འགྱུར་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཆོས་ཉིད་རྟོགས་པའི་ཆོས་ཉིད་ཇི་ཙམ་དུ་འབྱུང་བར་འགྱུར་ཞེས་པ་ལ། བྱུང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། སངས་རྒྱས་རྣམས་བྱུང་བ་ནི་འོངས་ནས་གནས་པ་རྗེས་སུ་འབྲེལ་བར་ཉེ་བར་གནས་པའམ། མ་བྱུང་བའི་རང་བཞིན་དུ་གནས་པ་ཞེས་དགོངས་སོ། །ཐམས་ཅད་ཅེས་པ་ནི་རང་བཞིན་གྱིས་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱུན་གྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་རྟག་ཏུ་གནས་པའི་ཕྱིར་རོ། ༡༠ །

བསམ་མི་ཁྱབ་པའི་ཆོས་ཉིད་ནི། །
འཕེལ་འགྲིབ་སྤངས་པས་གནས་པ་ཡིན། །
དེ་ལྟར་རྣམ་པར་བཞག་ནས་ཀྱང་། །
འཇིག་རྟེན་པ་ཀུན་ཡོང་མི་སྣང་། ༡༡ །

བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་ཇི་ལྟར་འགྱུར་ཞེས་པ་ལ། འདི་ཙམ་གྱི་[1]དུས་སུ་གནས་སོ་ཞེས་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་འཕེལ་བ་དང་འགྲིབ་པ་[2]སྤངས་པ་ཉིད་ཀྱི་

1. འདི་ཙམ་གྱིས་ ཅོ།
2. འདྲི་བ་ སྡེ། ཅོ། འབྲི་བ་ གསེར། པེ། གོང་དུ་རྩ་བ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།

ཕྱིར་དེ་ལྟར་གཞལ་བས་རྟོགས་པ་ནས་རྟོགས་པ་[1]མཉམ་པར་བྱས་པས་ན་སྨད་པར་མི་བྱ་སྟེ། འཇིག་རྟེན་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་སོ། ༣༡ །

དེ་ཡི་བསྒྲོད་པ་བསམ་ཡས་ཤིང་། །
སངས་རྒྱས་རོལ་པ་བསམ་མི་ཁྱབ། །
མདོ་སྡེ་བྱ་བ་སྤྱོད་པ་རྣམས། །
རྣལ་འབྱོར་གསང་མཐའི་དབྱེ་བ་ཉིད། ༣༢།
སེམས་ཅན་མོས་པས་[2]འཇུག་པ་རྣམས། །
དེ་དང་དེ་ལ་དགའ་བ་[3]བཞིན། ༣༣ །

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་འབུམ་པའི་ནང་ནས་ཕྱུང་བ་གྲུབ་པའི་རྟོག་པ་རྨད་དུ་བྱུང་བ་ངོ་མཚར་དང་བཅས་པར་[4]བྱེད་པ་བསྟན་བཅོས་[5]ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་དཔའ་བོ་ཆེན་པོ་བསྒྲགས་པས་འགྲུབ་པ་གཞན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་[6]མི་ཐུབ་པ་གདོད་ནས་གྲུབ་པའི་བླ་མ་ཡིན་ནོ[7]། །

---

1. ‘ནས་རྟོགས་པ་’ སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེ་གཉིས་སུ་མེད།
2. སེམས་ཅན་མོས་པ་ ལྷ།
3. དགའ་བར་ པེ།
4. བཅས་པ་ ལྷ།
5. བསྟན་ཆོས་ པེ། བསྟན་བཅས་ ལྷ།
6. བླགས་པས་གྲུབ་པ་གཞན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ པེ། བསྒྲགས་པས་གྲུབ་པ་གཞན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ སྣ།
7. གདོད་ནས་གྲུབ་པ་བླ་མ་ཡིན་ པེ།

དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་རྣལ་འབྱོར་མ་ཆེན་མོའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ལས་ལེའུ་ལྔ་བཅུ་རྩ་གཅིག་པ་[1]རྫོགས་སོ།། །།

[2]གྲགས་པའི་ཡིད་འོང་རྒྱལ་མཚན་མཐོ་[3]ལྡན་པའི། |
རིན་ཆེན་དང་མཚུངས་རིན་ཆེན་བཟང་པོ་ཡིས[4]། |
མཁས་པ་པདྨ་ཀ་རའི་[5]ཞལ་སྔར་ནི། |
རིག་པའི་འབྱུང་གནས་ཁ་ཆེའི་དཔེ་ལས་བསྒྱུར[6]། |
ལྷག་པའི་ཚུལ་ཁྲིམས་དྲི་ཡིས་བསྒོས་གྱུར་ཅིང་། |
དྲི་མེད་བཀའ་དོན་[7]འཐད་པ་དང་བཅས་པར། |
རྫོགས་པ་[8]དང་ལྡན་གྲགས་པའི་ཞལ་སྔར་ནི། |
སྒྲ་སྒྱུར་དགེ་སློང་པྲཛྙཱ་ཀཱིརྟི་[9]དང་། |
མར་པ་སྒྲ་སྒྱུར་[10]ཆོས་ཀྱི་དབང་ཕྱུག་གིས། |
མཁས་པའི་འབྱུང་གནས་ཡུལ་དབུས་དཔེ་དང་གཏུགས[11]།།

---

1. ལེའུ་ལྔ་བཅུ་གཅིག་པ་ པེ། ལྷ།
2. ‘རྒྱ་གར་པཎ་ཆེན་པདྨ་ཀ་ར་དང་’ སྣར་པར་ནང་ལྷག་པ་འཁོད་འདུག
3. རྒྱལ་མཚན་མཐོང་ པེ།
4. རིན་ཆེན་བཟང་པོ་ཡི་ སྣ།
5. མཁས་པ་པད་མ་ཀ་རའི་ པེ།
6. དཔེ་ལས་སྒྱུར་ པེ།
7. དཀའ་དོན་ སྣ།
8. རྫོག་པ་ པེ།
9. སྒྲ་བསྒྱུར་དགེ་སློང་པྲཛྙཱ་ཀཱིརྟི་ པེ།
10. མར་པ་སྒྲ་བསྒྱུར་ སྡེ། ཅོ།
11. མཁས་པའི་.........དང་བཏུགས་ པེ། མཁས་པའི་འབྱུང་གནས་ཡུལ་དབུས་ཀྱི་བླ་མ་ནཱ་རོ་པའི་ཕྱག་དཔེ་དང་གཏུགས་པའོ་ སྣ།

དེ་དག་ལ་འཇིག་རྟེན་པ་རྣམས་ཀྱིས་རྟོག་པ་རྣམ་པར་གཞག་པ་ཅིའི་ཕྱིར་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་ཅེས་པ་ལ། སངས་རྒྱས་གར་ནི་བསམ་མི་ཁྱབ[1]། །ཅེས་གསུངས་ཏེ། སངས་རྒྱས་ཉིད་གཟུགས་སྣ་ཚོགས་ཉེ་བར་གནས་པའི་ཕྱིར་གར་མཁན་ནོ། །དེ་ཉིད་ནི་མདོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། མདོ་ནི་མདོ་སྡེའོ། །བྱ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བྱ་བའི་རྒྱུད་དོ། །མངོན་ཞེས་པ་ནི་ཆོས་མངོན་པའོ། །སྒྲའི་དང་པོའི་དོན་གྱི་དྲུག་པའོ། །སྤྱོད་པ་ཞེས་པ་ནི་སྤྱོད་པའི་རྒྱུད་དོ། །རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྒྱུད་ནི་གསང་བའི་རྒྱུད་དོ། །ཞི་ནི་བཟླ་བའོ། །སེམས་ཅན་འདུག་པའི་ཞེས་པ་ནི་སྒྲའི་བཞི་པ་ཕྱིས་པའོ། །ཐར་པ་ནི་ཉོན་མོངས་པའི་འཆིང་བ་མེད་པའོ། །ཞི་ནི་འདིའི་དོན་ཏེ[2]། ཐམས་ཅད་དུ་བྱེ་བྲག་ཐ་དད་པའི་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའི་སེམས་ཅན་གཞུག་པའི་དོན་དུའོ། །བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའི་སེམས་ཅན་གཞུག་པར་བྱ་བ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱིས་མཁྱེན་ནོ། །སྔ་མ་དང་སྦྱར་རོ། །དེ་དང་དེ་ལ་འཇིག་རྟེན་པ་ལ་སོགས་པ་དགའ་བ་བཞི་ནི[3]དགའ་བ་ལྷ་བུར་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་དགའ་བ་ནི་དེ་བཞིན་ཉིད་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །ཡང་ན་མདོ་ནི་མདོ་སྡེ་པའོ། །བྱ་བ་ནི་རྣམ་པར་བཤད་པ་སྡེ་བྱེ་བྲག་སྨྲ་བའོ། །མངོན་པའི་ཆོས་ནི་དབུ་མ་པའོ། །རྣལ་འབྱོར་གསང་བ་ནི[4]རྣལ་འབྱོར་སྤྱོད་པའོ། ༣༢-༣༣།

---

1. བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་ གསེར། པེ།
2. འདིའི་དོན་ཏོ་ གསེར། པེ།
3. སོགས་རྐང་པ་བཞི་ནི་ སྣེ། ཅོ།
4. གསང་བ་བཞི་ གསེར། པེ།

དེ་ནས་དེའི་ཕྱིར་གསང་བཤད་བྱ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསང་བར་ཁས་བླངས་པའོ། །དབུགས་འབྱུང་བར་མ་མཆོག་[1]དག་གིས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་གཞུང་གིས་བཅོམ་ལྡན་འདས་སྟོན་པ་དང་ལྡན་པས་སྨྲ་པར་བྱེད་པ་པོ་དང་། ཐམས་ཅད་དགྱེས་སོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་(པ་ནས་)[2]དེ་དང་དེ་ལ་དགའ་བ་ཞེས་པའི་བར་གྱིས་[3]གདུལ་བྱ་དགའ་བར་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་དང་ལྡན་པ་ཡིན་ནོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཉིད་བསྟན་པས་གང་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཁྱད་པར་[4]གྱིས་ཁྱད་པར་ཅན་དེ་ལ་ལྔ་བཅུ་རྩ་གཅིག་ནི་ལྔ་བཅུ་གཅིག་པའི་ལེའུ་རྫོགས་སོ་ཞེས་སྨྲར་རོ།། །།

དེ་ལ་ཇི་ལྟ་བུར་གྱུར་པ་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་མངོན་པར་བརྗོད་པ་དེ་ལའི་སྒྲུས་བྱས་པའི་དེའི་སྒྲ་ཁྱད་པར་ཅན་ནི་དང་པོའི་མཐའ་ཅན་གྱི་ཁྱད་པར་གྱི་ཚིག་བསྟན་པའི་ཕྱིར། ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ཀྱིས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་འདིས་རྒྱས་པར་བྱེད་པས་ན་དེ་ཡང་རྒྱུད་ཅེས་བྱའོ། །དོན་དམ་པའི་ཟག་པ་མེད་པའི་བདེ་བ་ཆེན་པོ་གང་ཡིན་པ་དེ་རྒྱལ་པོ་སྟེ། དེ་བས་ན་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོའོ། །གཞུང་འབུམ་གྱི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་མཐའ་དང་དབུས་མ་དག་[5]

---

1. བར་མི་མཆོག་ སྣེ། ཅོ།
2. སོགས་པ་ ཅོ།
3. བར་གྱི་ གསེར། པེ།
4. སོགས་པའི་གསུང་ཁྱད་པར་ སྣེ། ཅོ།
5. དབུས་དག་ གསེར། པེ།

ནས་ཕྱུང་བ་དེ་འདི་ལ་ཡོད་པས་ཕྱུང་བའོ། །དང་ནི་རྒྱུད་གཞན་གྱི་དོན་བསྡུ་བ་སྟེ། བླ་མ་ལས་ཀྱང་བླ་མ་ཞེས་བཤད་ཟེར་ཏོ[1]། །རྒྱལ་པོ་ཉིད་ནི་རྒྱལ་པོ་སྟེ། བསྟན་བཅོས་ཐམས་ཅད་རྣམས་ནི་རྒྱུད་ཐམས་ཅད་ཀྱི་[2]གོང་དུ་གྱུར་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དང་། རབ་ཏུ་གསལ་བར་བྱེད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱང་ བླ་བ་འཆང་བའོ། །འདིས་ཀྱང་བླ་བས་ནི་བརྗོད་པར་བྱ་བའི་ཆ་གཅིག་བསྟན་པའོ། ། རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་དང་ལྡན་ཅིག་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ཆེན་པོ་ཞེས་པ་ནི་ཆེན་པོ་སྟེ། རྣལ་འབྱོར་མ་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་སུམ་ཅུ་རྩ་དྲུག་གོ །དཔའ་བོ་ནི་ཐོད་པའི་དུམ་བུ་ལ་སོགས་པ་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞིའོ། །བསྒྲགས་པས་གྲུབ་པའི་སྔགས་སོ། །ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ལ་སོགས་པའི་ཡེ་ཤེས་[3]དང་། མངོན་སུམ་ལ་སོགས་པའི་ཤེས་པ་ཡང་ངོ་། །གཞན་གྱིས་མི་ཐུབ་པ་ནི་དཀའ་ཐྱོག་[4]དང་བཅས་པའི་བདེ་བྱེད་ཀྱིས་སོ། །དངོས་གྲུབ་པ་ནི་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་ཡང་དང་པོར་གྲུབ་པའོ། ། དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་དཔའ་བོ་ཆེན་པོ་བསྒྲགས་པས་གྲུབ་པ། ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་གཞན་གྱིས་མི་ཐུབ་པ་གནོད་ནས་གྲུབ་པ། རྗོད་པར་བྱེད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རྒྱུད་ཀྱང་དེ་ལྟར་བརྗོད་དོ། །དང་ནི་ས་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་དག་པ་[5]ལ་སོགས་པ་བརྗོད་པའོ། །སྦྱོལ་

---

1. ཟེར་ཏོ་ གསེར། པེ།
2. ཀྱིས་ གསེར།
3. ཤེས་པ་ སྣེ། ཅོ། པེ།
4. དཀའ་ཐྱོག་ ཅོ།
5. སོགས་པའི་རྣམ་པ་དག་པ་ གསེར། པེ།

བ་ནི་སྲིད་པའི་རྒྱ་མཚོ་ལས་འདས་སྒྲོལ་བར་བྱེད་པ་སྟེ། པཙ་ལ་སོགས་པ་ལ་ཨཙའི་རྐྱེན་བྱེན་པའོ། །རྒྱུད་ནི་མདོའོ། །དཔལ་ནི་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་སོ། །འཁོར་ལོ་ནི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོའོ། །དཔལ་དང་ལྡན་པའི་འཁོར་ལོ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟེ། དེས་ལུས་ལ་གནས་པའི་སེམས་ཅན་གྱི་ཡིད་ཡང་དག་པར་སྡོམ་པ་ཞེས་པ་ནི་དཔལ་འཁོར་[1]ལོ་སྡོམ་པའོ། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ནི། དེ་རྗོད་པར་བྱེད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རྒྱུད་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་བརྗོད་ཅིང་། རབ་ཏུ་གསལ་བར་བྱ་ཞིང་ཆེན་པོ་ཡིན་པས་ན་རྣལ་འབྱོར་མ་ཡི་རྒྱུད་རྒྱལ་པོ། ཞེས་བྱ་སྟེ། རྣལ་འབྱོར་མའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི[2]། སྒྲའི་རྐྱེན་མེད་པའི་ཚིག་ཡིན་ཏེ། རྣལ་འབྱོར་མའི་གདམས་ངག་ནི་མང་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་མངོན་པར་བརྗོད་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་འབུམ་པའི་ནང་ནས་ཕྱུང་བ་ནི། བླ་མའི་བླ་མ་བསྟན་བཅོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྒྱལ་པོའོ། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ཆེན་པོ་བསྐུགས་པས་གྲུབ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་[3]གཞན་གྱིས་མི་ཐུབ་ཅེས་པ་ནི། མཆོག་གི་རྒྱུད་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་མིང་ཅན་རྣལ་འབྱོར་མའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ལྔ་བཅུ་རྩ་གཅིག་པ་ནི་ལེའུ་ལྔ་བཅུ་རྩ་གཅིག་པ་རྫོགས་སོ།། །།

ཡང་དག་པར་རྫོགས་པ་ནི་རྫོགས་སོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནས། རྣལ་འབྱོར་མ་ཆེན་མོའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་བར་ནི། སྒྲའི་སུའི་མཐའ་ཅན་དང་། ཏིའི་མཐའ་ཅན་གྱི་ཚིག་བསྡུ་བའོ། །རྫོགས་སོ་ཞེས་པའི་ཚིག

1. 'འཁོར་' གསེར་བྲིས་སུ་མེད།
2. ཞེས་པ་ནི་ གསེར།
3. ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་མཁྱེན་པ་ གསེར། པེ།

ནི་ལེའུ་ལྔ་བཅུ་པ་ལ་ཡང་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་མངོན་པར་བརྗོད་པ་ཞེས་སྨྲར་རོ།། །།

བླ་མས་གཞུང་གི་བཤད་པ་ནི། །
ཇི་ལྟར་བདག་གིས་དྲན་ཕྱིར་བྲི། །
དོན་ནི་སྟོན་པར་བྱེད་པའི་ཚིག །
གྱུར་པའི་ངག་དེ་བདག་གི་ཡིན། །

འདིར་ནི་བླང་དང་དོར་བའི་ཚིག །
ཚད་མས་ཀྱང་ནི་ངེས་བྱས་པ། །
བླ་མའི་གདམས་ངག་མེད་པར་ནི། །
ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་མི་འགྱུར་རོ། །

ཕྲེང་བ་བཞིན་དུ་བླ་མའི་བཀའ། །
སྣ་ཚོགས་ངག་ནི་ཡིད་འཕྲོག་པ། །
རྒྱུད་དང་འབྲེལ་བ་སྐྱེ་བོར་ནི། །
འཁྲུལ་པ་སེལ་བྱེད་བླང་བར་བྱ། །

རང་སེམས་རྣམ་པར་[1]གཡོ་བའི་མིང་ཅན་འགྲོ་བ་ནི[2]། །
རང་གི་སེམས་ཉིད་ཀྱིས་ནི་གཟུང་བར་རྣམ་པར་བསྒོམ། །
རང་གི་སེམས་ལས་འདིར་ནི་སྙིང་པོ་གཞན་ན་མེད། །
གཟུང་བ་མེད་པ་དཀྱིལ་འཁོར་སྐུར་དུ་བསྒོམ་པར་བྱ། །

---

1. རྣམ་པར་དག་པ་ སྡེ། ཅོ།
2. འགྲོ་བ་ཡིན་ གསེར།

དཔལ་གྱི་གོ་འཕང་བསྒོམ་པར་[1]ལྷ་ཡི་གོ་འཕང་སྐྱེ། །
གང་ཕྱིར་གོ་འཕང་དྲི་མ་མེད་པར་གནས་པར་འགྲོ །
སྲིད་པ་མ་གཏོགས་ཞི་བྱེད་དེ་མ་རྟོགས་པར་མེད། །
སྲིད་པ་རྣམ་དག་འདིར་ནི་དབྱེར་ནི་མེད་པ་འོ། །

དཔལ་ལྡན་[2]འཁོར་ལོ་སྡོམ་པ་མཚོ་སྐྱེས་གྱུར་པ་ལ། །
སྦས་པའི་གདམས་ངག་མག་རཛ་[3]ཪ་ཡི་གནས། །
དེ་ཉིད་དག་ལ་སྦྲང་བུ་མཆོག་སྦྱིན་བདུད་རྩི་དེ། །
དད་འབྱུང་[4]དྲི་མེད་བསོད་ནམས་ཡིད་ཀྱི་གཙོ་བོ་འོ། །

གཞན་གྱི་སྣན་ངག་འདི་ཡི་འགྲེལ་པར་[5]བྱེད་པས་བལྟས།།
བདག་གི་བློ་ཡང་དེ་དོན་གྲུབ་ཕྱིར་དགའ་བ་སྐྱེས། །
སྦྱོར་བ་ནུས་གང་དུས་ཚིཏ་དག་ཏུ་གར་དང་གླུ་ཡང་ལེན[6]།།
སྦྱོར་མི་ནུས་པས་སྐྱེ་བོས་དེ་ལ་སྦྱོ་བས་ཅི་མི་བྱེད། །

ཚིག་དོན་གསལ་པོ་ཉི་[7]ཟླ་བུ། །
ས་གཞི་དཔལ་ལྡན་འཁོར་སྡོམ་བྱས། །

---

1. སྒོམ་པར་ སྡེ། ཅོ། གསེར།
2. ‘ལྡན་’ པེ་ཀིང་དུ་མེད།
3. མ་གརནད་ གསེར། པེ།
4. རང་འབྱུང་ སྡེ། ཅོ།
5. འབྲེལ་པར་ ཅོ། སྡེ།
6. ལོན་ པེ།
7. ཉིད་ བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་དང་མཚུངས་པར་བཀོད་ཡོད།

གང་འདི་ལེགས་བྱས་དེ་ཐོབ་པའི། །
སྐྱེ་འགྲོ་ཡོན་ཏན་དེ་ཐོབ་ཤོག །

ཅེས་བྱ་བ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་[1] སློབ་དཔོན་མཁས་པ་ཆེན་པོ་ཛྙབཛྲ་[2]ཞབས་ཀྱིས་མཛད་པ་རྫོགས་སོ།། །།

གཞུང་འདིའི་ཚད་ནི་སྟོང་ཕྲག་གསུམ་དང་བརྒྱ་ཕྲག་ལྔའོ། །

རྒྱ་གར་ཤར་ཕྱོཊ་ལྷ་མོ་མཁར་ནས་བྱུང་བ་ཡི། །
པཎ་ཆེན་མཁས་པ་མི་མཉམ་རྡོ་རྗེ་དང་། །
དབྱར་མོ་[3]ཐང་གི་གྲྭ་ནས་བྱུང་བ་ཡི། །
ཁམས་པ་དགེ་སློང་བ་རི་རིན་གྲགས་ཀྱིས། །
བསྒྱུར་ཅིང་ཞུས་ཏེ་དགོངས་པ་[4]གཏན་ལ་ཕབ། །

སྐད་སློབ་གསར་ལ་ཕན་དོན་དུ། །
རྒྱ་དཔེ་ཇི་བཞིན་བསྒྱུར་བ་ཡིན། །
མཁས་པ་དོན་གྱི་ཆེད་བྱེད་རྣམས། །
འདི་ལ་མི་དཔྱ་མི་བཙོས་ཞུ[5]། །

1. དཀའ་འགྲེལ་ལས་ལེའུ་ལྔ་བཅུ་རྩ་གཅིག་ རྒྱ་དཔེ།
2. ཛྙབཛྲིའི་ གསེར། པེ།
3. དབྱེར་མོ་ གསེར། པེ།
4. སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེ་གཉིས་ཀྱི་ནང་ ‘དགོངས་པ་’ ཞེས་པ་འཁོད་མེད།
5. ཚིག་རྐང་འདི་པེ་ཅིང་པར་མའི་ནང་འཁོད་མིན་འདུག

བདག་ནི་ཚུང་ཟད་རྟོགས་ཡོད་ཀྱང་། |
དོན་འགྱུར་མ་བྱས་[1]སྒྲ་བཞིན་བསྒྱུར། |
འཇིག་རྟེན་ཕ་རོལ་དོན་གྱི་ཕྱིར། |
རྒྱུད་འགྲེལ་ཡིན་པས་འཇིགས་ཕྱིར་རོ། |

བལ་ཡུལ་གྲོང་ཁྱེར་ཡམ་བུ་རུ། |
པན་ཏུ་བ་རོའི་[2]ལྷ་ཁང་དུ། |
ནེང་དང་བ་རིས་[3]ཡོན་བདག་བྱས། |
ལོ་པཎ་གཉིས་ཀྱིས་རྒྱུད་འགྲེལ་བསྒྱུར། |

སློབ་གཉེར་མཛད་རྣམས་མཉེས་པར་ཞུ། |
འདི་བྲིས་དགེ་བའི་རྩ་བ་ཡིས། |
འགྲོ་ཀུན་བླ་མེད་སངས་རྒྱས་ཤོག[4]། ||

✶

---

1. དོན་འགྱུར་ན་བྱས་ གསེར།
2. པཎ་འབའ་རོའི་ གསེར། པེ།
3. ནད་དང་པ་རིས་ ཅོ། ནེང་དང་པ་རིས་ སྡེ།
4. ཚིག་རྐང་ཐ་མ་གསུམ་པོ་སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེའི་པར་མའི་ནང་མ་གསལ།

परिशिष्टानि

[क]- चक्रसंवरतन्त्र-श्लोकार्धानुक्रमणी

अकस्माद्विनिवर्तन्ते	२३.५
अकाराधिष्ठितात् कोष्ठाद्	३०.२०
अक्रोधश्च शुचिर्दक्षो	२.४
अक्रोध: श्रोत्रसञ्चार	२६.११
अक्षरान्तरितं कृत्वा	६.२
अक्षिणी उन्मीलयेद् या तु	२०.१३
अग्निना भेदयेद् धीमान्	३०.२२
अङ्गं विधूनते या तु	२०.९
अङ्गुलिं दर्शयेद् या तु	२१.८
अङ्गुल्यग्रं स्पृशते या तु	२०.५
अचिन्त्या [हि] गतिस्तेषाम्	५१.२२
अचिरादेव सिद्ध्यन्ति	२७.३
अजिनं कमण्डलुं चैव	१९.४
अत: परं द्वाविंशत्यक्षरं	६.१
अत: परं नास्ति सर्व:	३३.१
अत: परं प्रवक्ष्यामि	२२.१
अत: परं मन्त्रपदं	२६.१
अत: परं समाख्यातं	३२.१
अथ कर्मवरं श्रेष्ठं	३५.१, ४१.१ ४५.१
अथ कवचस्य कर्मेदं	१३.१
अथ कायत्रयं वक्ष्ये	१०.१
अथ गुह्यमहासिद्धिं	१६.१
अथ डाकिन्यजालस्य	३४.१
अथ [तत्] साधनं वक्ष्ये	१४.१
अथ दर्शनमहागुह्यं	२१.१
अथ दूतीं समासाध्य	४४.१
अथ महासिद्धियोगी	३९.१
अथ मुद्रा महापूजा	३६.१
अथवा मन्त्रराजं तु	४३.२१
अथवा सर्वकार्येषु	४३.२८
अथ वीरचर्याव्रतं	२७.१
अथ वीर: सप्ताक्षरं	४३.१४
अथ सर्वार्थकामानाम्	२५.१
अथ हकारपञ्चकस्य	४६.१
अथ होमविधिं वक्ष्ये	५०.१
अथात: सर्वसंवरेषु	१५.१
अथात: संप्रवक्ष्यामि	२३.१,४७.१,५१.१
अथातो मूलमन्त्रस्य	९.१
अथातो रहस्यं वक्ष्ये	१.१
अथान्यतमं प्रवक्ष्यामि	३७.१
अथान्यतमं वक्ष्ये	११.१, २०.१, ३०.१, ४९.१,
अथान्यत्संप्रवक्ष्यामि	४८.१
अथान्यभाषया च	२४.१
अथापरं प्रवक्ष्यामि	१८.१, ५०.२०
अथापरं समुद्दिष्टं	२९.१
अथापरं संप्रवक्ष्यामि	१९.१
अथावलोकनं वक्ष्ये	४३.१

अथोपहृदयमन्त्रं वक्ष्ये १२.१
अदृष्टमण्डलो योगी ३.२०
अद्य प्रभृति दासोऽहं ३.१४
अद्वैतमप्रतिहतं समय २६.१०
अधिकायुकूष्माण्डं ५०.१८
अधिक्षेपो न कर्तव्यः ५१.१९
अधोभागेन साधकः ७.१५
अधोर्ध्वदूतयः सिद्धा ३२.१०
अधोर्ध्वं सिद्धिदा नित्यम् २६.२
अनामाङ्गुष्ठवक्राभ्यां १.१२
अनामिकां दर्शयेद् या तु २०.२
अनामिकां प्रदर्शयेद् या तु २२.६
अनिर्वृत्तिका ऐहिकी देवी १७.३
अनिवर्ती विजानीयाद् १७.१०
अनुत्तरमिदं यस्माद् ४८.७
अनुरक्ता समयिनी यस्य २३.२
अनुरक्ते हसते स्पष्टं १७.९
अनुलोमविलोमेन २६.२, ३०.५
अनुस्मरणमात्रेण ४८.२
अनेन कल्पोपचारेण ९.२
अनेन पीत्वा तथा दत्त्वा ४२.२
अनेन बीजाक्षरेण ७.२९
अनेन मन्त्रराजेन ४३.३१
अनेन लब्धमात्रेण ३०.२६
अनेन वशमायान्ति ३७.३
अनेन साधयेत् क्षिप्रं ३६.६
अनेनोच्चारितेनापि ४७.१
अन्तर्गतेन मनसा काम १.७
अन्तर्धानबिलोत्तिष्ठखेचरत्वं ३.१८
अन्तःपुरं सपरिवारं ४५.१०
अन्तःस्थानां चतुर्थं तु ५.२३
अन्तःस्थानां तृतीयं चैव ५.७
अन्तःस्थानां प्रथमं चैव ५.१५
अन्तःस्थानां यद्द्वितीयं ५.१६
अन्तःस्थानां यश्चतुर्थं ५.५
अन्तःस्थानां यो द्वितीयं ५.१९
अन्यथा च वृथा भद्र २९.९
अन्यथा निःश्वासभैरवस्तु १७.७
अन्यदैवतसंयोगान्न २६.१०
अन्योन्यघटिता मन्त्राः ३५.३
अन्योन्यवलिता मन्त्रा ३७.१
अपमृत्युहतं नष्टं ४३.१२
अपराकृतिस्तु खड्ग २३.७
अपरेऽह्नि लभेन्मन्त्री ४३.२०
अप्रकाश्यमिदं गुह्यं २६.१३, ३१.१४
अभिभूय गमिष्यत्यत्र ३.२२
अभियोगेन बोद्धव्यं २९.७
अभिरूपो विरूपश्च ४९.१५
अभिषिक्तो भवेत्तत्र ३.२३
अभेद्यं तत्त्वतस्तस्य २७.६
अभ्यङ्गानि च शास्त्राणि २७.१०
अभ्यङ्ग्य तिलतैलस्तु ३७.५
अमृताप्यायननिर्वृतिं ५१.३
अयं मण्डलराजा न ३.२४
अयं मन्त्रः पठितसिद्धः ४८.४
अरक्तो रतिसंयोगाद् २८.१६

अवतीर्य महानद्यां	४५.२२	आकाशे डाकिन्यः सर्वा	२.२६
अविदित्वा इदं मन्त्रं	९.५	आकुञ्चितवामपादं तु	१९.९
अविद्यमानेऽपि कर्तव्यं	३३.२	आगच्छति वायुवेगेन	४५.१७
अविरक्तां निरीक्षेत	१७.४	आघ्रातं स्पृष्टमात्रं वा	४९.७
अव्रतघ्नो व्रतपूर्णः	२८.१०	आचरेत् सर्ववर्णेभ्यो	२७.६
अव्रताचारशौचोऽपि	५०.१८	आचार्यमूर्तिमाधाय	३३.५
अशने वज्रमेवोक्तं	३५.६	आचार्यं तु वीरं दृष्ट्वा	३८.१०
अशेषभूमिचर्यावान्	५०.१०	आचार्यं तोषयेत् पूर्वं	३.१
अष्टत्रिंशतिमं चैव	७.१४	आढ्या सुभगा धन्या	१९.६
अष्टषष्टि पुनश्चैव	७.२८	आत्मकाये तु विन्यस्य	४३.११
अष्टसप्ततिं चैव	७.३४	आत्मनः खेचरं पञ्जरं कृत्वा	२.९
अष्टाविंशतिमं चैव	७.९	आत्मानं श्रीहेरुकं ध्यात्वा	२.६
अष्टाविंशतिमं पुनः	५.११	आत्मानं सर्वभावेन	३.१४
अष्टोत्तरशतावृत्त्या	५०.९	आदिसिद्धा महामुद्रा	३३.९
अष्टोत्तरशतेनैव	४०.३	आदिसिद्धिकरं ह्येतत्	७.३६
अष्टौ(ष्ट)द्वारेषु विनि(न्य)स्य	२.२२	आदिसिद्धिदं तथागत	७.३१
असौ हि स्वयम्भूर्भगवान्	१.३	आदिसिद्धे श्मशाने च	१.१६
अस्थिमलास्थिसंस्थिश्च	२.५	आननस्य विरूपत्वं	२३.३
अस्थिमालावलम्बी च	२.६	आधारं तु मेदिनीं कृत्वा	२३.२
अस्माच्च जयते मन्त्रः	२९.५	आरक्तवर्णा च या नारी	१६.९
अस्मिन् तन्त्रे साधकाः	२६.८	आराधको विशुद्धश्च	२६.१५
अस्य मन्त्रस्य हृदयं	१०.६	आलयं सर्वसिद्धीनां	७.३७
आकर्षणप्रयोगं तु	४५.२८	आलिकालिसमां कृत्वा	५.२
आकर्षयेच्चोत्तमसार्धम्	२८.८	आलिकालीति [स]मुच्चार्य	५१.२
आकर्षयेत् सर्वसत्त्वान्	४०.७	आलिखेद् विधिवन्मन्त्री	५.१
आकर्षयेदङ्कुशेनेव	३५.५	आलिखेन्मण्डलं घोरं	२.१०
आकारस्वरसंयुक्तम्	७.७	आलिखेन्मण्डलं दिव्यम्	२.३
आकाशं दर्शयेद् या तु	२१.९	आवर्तविकृता ज्ञेया	२३.४

आशुसिद्धिकरा ह्येते ३६.१, ४६.५
आसु प्रयत्ना[त् परि]पूजनीया २७.३२
इच्छन्नप्यायुधं तावत् ४३.२८
इत्येवं तुलयित्वा तु ५१.२१
इदं बीजं परं दिव्यं ७.२६
इमं तु परमं दिव्यं ७.३७
इष्टं वा यदि वानिष्टा(ष्टं) १७.५
ईदृशीं प्रमदां दृष्ट्वा १९.९,१५,१८,२२
ईषद्दंष्ट्राकरालास्यं ३२.१४
उक्तानुक्तं च यत् किञ्चित् ३.२५
उत्तरादपि चोत्तरं १.२
उत्खन्य गोक्षीरेण ४४.१३
उत्पद्यते तथा जन्मैः २७.२९
उत्पाददपि बुद्धानाम् ५१.२०
उदरं ताडयेद् या तु २०.३
उदरं दर्शयेद् या तु २१.५
उदायुधोऽपि वै शत्रुः ४३.२७
उपलिप्य ततो भूमिं २.२
ऊरुं दर्शयेद् या तु २१.६
ऊष्माणां तु यः प्रथमम् ५.१७
ऊष्माणां तृतीयं चैव ५..१५
ऊष्माणां द्वितीयं चैव ५.२३
ॐकारदीपिकाः सर्व ४.६
ॐकारदीपकाः सर्वे ३०.२३
ॐ नमः स्वाहा वौषट् हूँ हूँ ६.३
एकजन्मद्विजन्मश्च ४९.४
एकत्रप्राशनं चैव २७.२१
एकत्रिंशत्तममक्षरं ७.११
एकमासनमाश्रित्यैवं ४०.७
एकवर्णसमाचारो २८.११
एकविंशतिकोष्ठं तु ३०.१६
एकविंशत्ततो गृह्य ७.४
एकवृक्षे वीरगृहे ४३.८
एकषष्टिमाक्षरसंयुक्तं ७.२३
एकसप्तत्यक्षरं चैव ७.२९
एकहस्तं चतुरष्टं २.१२
एकाङ्गुलिं दर्शयेद् या तु २२.२
एकादशस्वरसंयुक्तं ७.१,७.२
एकादशी पर्वणी तस्या १९.२४
एकाशीत्यक्षरं चैव ७.३५
एकीकृत्य परीक्ष्याथ ४४.५
एकैकस्य तु योगिन्यः ४८.१७
एकोनत्रिंशत्तथैव च ५.४
एकोनविंशतिकोष्ठं तु ३०.१४
एतच्चतुर्दशं तत्त्वं ५१.४
एतच्चैवाक्षसूत्रं तु ३२.११
एतच्छौचप्रपालनात् २७.२२
एतत्त्रैलोक्यविजयं नाम ३०.२३
एतत्पूजां परं नास्ति २७.४
एतत्प्रत्ययसिद्धिस्तु ४५.३२
एतत्प्रयोगमारभ्य ४४.६
एतत्प्रयोगे सिद्धे तु ४४.७
एतत्सर्वक्रूराणां ३१.१
एतत्सर्वं समादाय ३०.१०
एतत्सर्वं समुद्धृत्य ५.६
एतत्संख्यान्तर्गतं ३०.६

एतद् डाकिनीगणस्य १८.२०
एतद् बीजं परं दिव्यं ७.३५
एता अङ्गमुद्रा डाकिनीनां २१.१०
एतानि ज्ञेयचिह्नानि २३.८
एताः सर्वयोगिन्यः २२.१०
एताः सर्वयोगिन्यो २२.३
एते एकैकाक्षरा छोम्मका १५.८
एतेन कृतहोमेन ५०.४
एते पशुप्रसिद्ध्यङ्गा ३२.३
एते पशुसमाख्याताः ३२.५
एते सर्ववीराणां ३१.९
एतैर्विचरेज्जगत्सर्वं ३.१६
एतैः सार्धं महावीरः ३८.१६
एभिस्तु दर्शयेत् सम्यग् २२.१०
एभिस्तु दर्शयेन्नित्यं २१.१०
एभिस्तु लक्षणैर्युक्तं ४९.६
एभिस्तु लक्षणैर्युक्ता २३.९
एभ्यः कर्म प्रवक्ष्यामि ४९.३
एवमेव भवेत्तत्र ३१.७
एवमेव मुख्यभूतो ४३.४
एवमेव विदुर्वरा ७.२३
एवमेव हि वीराणां ३१.५
एवं कुर्वन् मर्त्यवीरः ४०.८
एवं क्षत्रियं तु सप्त ४०.६
एवंगुणविशिष्टानां ३२.१५
एवं छोम्मयेद् वीरं ३१.१४
एवं दिने दिने कुर्यात् ४५.२
एवं देव महावीर ५१.१२
एवं पूजां ततः कृत्वा ३३.१०
एवं पूजां सदा कृत्वा २७.३०
एवं प्रतिदिनं कृत्वा ५०.१३
एवं प्रदर्श्य समयं २.७
एवं विधिवत् संपूज्य ३.३
एवं विधिविधानेन ३१.११,३३.४
एवं विधिं ततः कृत्वा ३.१५
एवं श्वानशूकरमांसानां ३१.२
एवं सन्नह्यमात्मानमधो २.८
एवं सन्नह्यमात्मानं प्राकारं २.७
एवं सन्नह्य सकवचम् २.९
एवं संरक्तनयना ३८.१५
एवं सुरक्षमात्मानं २.१०
एवं सुविचारवतां १०.२
एष ते चक्रनिर्दिष्टं ३४.७
एष ते हेरुको वीरो १४.५
एष मन्त्रवरो योगः १४.३
एष योगवरः श्रेष्ठः ३.२१,७.३२
एषां हि डाकिनीनां तु २३.३
ऐरावती द्रुमच्छाया ४.३
ऐहिका सा स्मृता देवी १७.११
ओष्ठौ दर्शयेद् या तु २१.३
ककाराधिष्ठितात् कोष्ठात् ३०.२१
कङ्कालं महाकङ्कालं ४८.१३
कण्ठालङ्कृतशिरोमाला ५१.१४
कण्ठिकाचूडकेयूरं ५१.१३
कण्ठिकावलयकुण्डल २७.१८
कनिष्ठायामाकाश ३१.८

कनिष्ठां चालयेद्धीमान् २६.१४
कनिष्ठिकां चालयेद्धीमान् ४५.७
कपालकृतमूर्धजो २.५
कपालपर्शुदंष्ट्राश्चक्र १७.१३
कपालमालाभरणं २.१५
कपालमालिनं वीरं ३१.४, ३२.१३
कपालं त्वन्त्रसंपूर्णं २.१७
कपालार्घपात्रं तु ३५.७
कपिलाया घृतं पीत्वा ३७.३
करद्वयेन तां धूलिं ४५.१५
करद्वयेन सम्पूर्ण ४५.२३
करन्यासं भवेदेतत् ३१.११
करमूर्ध्नि बन्धयेच्चेत् ४९.१२
करवीररक्तपुष्पं तु ४५.२१
करवीररक्तपुष्पाणि ४५.१
करवीरलतां गृह्य ४५.१८
करसम्पुटमध्यस्थं ४५.२३
कराली विकृता घोरा १९.२१
करे षट्संस्थितं चक्रं ४४.२
कर्णं स्पृशते या तु २०.१०
कर्णाभरणं कटकं च ३.१२
कर्णिकायां न्यसेद् वीरं २.१४
कर्पूरगन्धा सततं १६.१०
कलशांश्च ततः कुर्यात् २.२०
कलिङ्गे कोशले चैव ४१.७
कष्टक्लेशप्रसादादि ४९.१३
काकवकजम्बुकद्विज ३२.५
काकास्यादयोऽष्टौ २६.९
काकोलूकादिगृध्रश्च ४९.१४
कामरूपे मालवे च ४१.८
कामरूपो महावीर ४९.१५
कामाचारोऽयं मन्त्रः ९.६
कामिनी भीमा रूपा १७.२
कायवाक्चित्तमध्ये तु ४.५
कालमृत्युवञ्चनं चैव ३५.६
किञ्चित् कुञ्चिततर्जनीं २२.४
कु इति डाकिनी स्मृता १५.७
कुञ्चिताश्च तथा केशाः १९.१३
कुण्डलं ब्रह्मसूत्रं च २७.१४
कुर्यान्नृत्यं तथैवात्र ४२.१
कुलक्रियां न परित्यजति १६.१४
कुलतायां विविक्ते च ४१.६
कुलविद्याक्षराणि च १६.११
कुलिकां पूजयेन्नित्यं १.६
कुष्ठं चापानयुक्तं तु ३७.७
कुसुमाञ्जलिमुत्क्षिप्यात् ४३.५
कुहरे गह्वरे गुह्ये ३८.१७
कृत्वा रजतं हिरण्यं वा २.२३
कृत्वा संकुलिकां मन्त्री ३७.५
कृष्णपक्षे तु शुक्ले वा २७.३१
कृष्णशुनीपयसा कृष्ण ३२.६
केशान् दर्शयेद् या तु २०.८
कोष्ठकादेकोनविंशतिमं ३०.११
कोष्ठकाद्दशमं चैव ३०.२०
कोष्ठकाद् द्वितीयं बीजं ३०.१८
कोष्ठत्रितयेन भेदितं ३०.११

कोष्ठद्वयसमायुक्तं	३०.१३	गुलिकाञ्जननिधानं वा	३२.९
कोष्ठद्वात्रिंशति संगृह्य	३०.६	गुह्यकानां मध्ये तु	३८.५
कोष्ठषट्त्रिंशतिमं	३०.७	गुह्यतन्त्रे समाख्यातं	२७.२३
क्षणादङ्गुष्ठमात्रं तु	४३.१५	गुह्यं दर्शयेद् या तु	२१.६
क्षेत्रं प्रभाकरी ज्ञेया	५०.२१	गृहे च लिखितं पद्मं	१८.३
क्रियाज्ञानं सुगुप्तं च	२७.१९	गृहे चास्या भवेच्चिह्नं	२३.७
क्रूरा च सततं वामा	१८.११	गोदावर्यामर्बुदे चोड्डियाने	४१.८
खगानना हयकर्णा सुभद्रा च	४.२	गोपनीयं प्रयत्नेन	३७.११
खट्वाङ्गकृतहस्तं	२.१६	गोपनीयं मया तन्त्रे	५१.१
खण्डरोहा कुलोद्भूता	१८.१५	गोपयेत् सर्वाकारेण	३८.२
खण्डरोहारूपिण्य	१३.३	गोप्य ईक्षण पाणिं तु	३.२३
खरमानुषकूर्मोष्ट्र	४९.२	गोमायुमद्यमांसेन	५०.१२
खानपानाञ्जनैर्वस्त्रैः	३७.८	गोमायुहोमयत्याशु	५०.१७
ग इति लामयस्तथा त्री	१५.६	गोमांसरुधिरेणाशु	३४.३
गच्छन्त्याः खलु डाकिन्याः	२३.५	गोमांसं सुरयाऽऽलोड्य	५०.२,१६,
गजवाजितथामेघान्	४५.२७	गोमांसं हयमांसं च	२८.१२
गणमध्ये प्रतिष्ठं तु	१.१२	गोमांसाहुतयो होमः	३७.९
गण्डे चिबुके वापि	१६.१८	गोरोचनया विलिप्तं	४५.२२
गन्धोदकेन संसिच्य	२.२५	गोष्ठोपलिकाश्चैव	३२.१०
गम्भीरधर्मनिर्देशेन	५१.१८	गौरी कनकसङ्काशा	१८.१३
गरुडं दर्शयेद् या तु	२०.७	गौर्यापतिं समाक्रम्य	५१.१५
गर्दभाकारयोगात्मा	१४.१	ग्रामे ग्रामे व्रजन् तस्य	२७.२
गिरिगह्वरकुञ्जेषु	१.१६	ग्रीवायां कण्ठिका चैव	२७.१४
गिरिमस्तककिञ्जल्के	५१.१४	ग्रीवां दर्शयेद् या तु	२२.९
गीतनृत्यादि कर्तव्यं	३३.६	ग्रीवां स्पृशते या तु	२१.३
गुरवश्चानुमन्यन्ति	३८.७	घण्टानादमालम्ब्य	३.२
गुरुपर्वाभिषिक्तं च	२७.८	घण्टामुद्रा प्रदातव्या	१९.१६
गुरूपदेशसंरक्ता	२८.१६	घण्टां नादयेत् सुस्वरां	३.२

घृतपूर्णं यथा भाण्डं	५१.७
घोरेण बहुशब्देन	३९.२
चक्रगर्भे पूजयेत् तु	२.१९
चक्रयोगात्समुच्चार्य	३०.२६
चक्रवर्मिणी शौण्डिनी	४.२
चक्रस्थास्तु द्रष्टव्या:	४८.१५
चक्रस्य सममात्मानम्	२.८
चक्रात्मं भावयेन्नित्यं	४८.१५
चक्रोद्भासं तथा कुर्याद्	३४.७
चण्डाक्षी प्रचण्डा च	४.४
चण्डालम्लेच्छसत्त्वेऽपि	२९.११
चतुर्थवर्गाद्दकारं समुद्धृत्य	७.२०
चतुर्थस्य चतुर्थं तु	५.२२
चतुर्थस्य तृतीयं तु	५.१०
चतुर्थस्य य: पञ्चमं	५.३, ५.२०
चतुर्थस्यापि पञ्चमं	५.२२
चतुर्थान्तेन संयुक्तं	३०.१७
चतुर्दशाक्षरं मतं	७.४
चतुर्दशी चाष्टमी तु	१९.१०
चतुर्दशी पर्वणी तस्या	१९.१९
चतुर्द्वारसमाकीर्णं	२.१२
चतुर्भुजं चतुर्वक्त्रं	३२.१२
चतुर्वक्त्रं तु वीरेशं	३४.५
चतुर्विंशति डाकिन्या	४१.१६
चतुर्विंशतिवीराणां	४८.१४
चतुर्विंशपरा डाकिन्य:	२९.४
चतुर्विंशार्द्धसंयुक्तं	५१.१५
चतुश्चतुर्विज्ञेयं	५.२
चतुष्पथे गृहे वाऽथ	४३.२
चतुष्पथे सप्तजप्त्वा	४४.९
चतुष्पूजा तथा वीरा	१.१४
चतु:क्रोधसमायुक्तम्	३०.२५
चतु:सप्ततिमं चैव	७.३०
चराचरे त्रैधातुके	४३.३१
चरुं च भक्षयेच्चैव	२८.४
चरुं च भोजयेन्नित्यं	२७.५
चलचित्ता विशेषेण	१९.१५
चिताग्नौ वा हुनेच्चूर्णं	४४.६
चित्यङ्गारचूर्णेन	२.३
चिबुकं स्पृशते या तु	२०.१२
चिह्नं तस्या गृहे वज्रम्	१८.७
चुम्बनं गूहनं नित्यं	२६.३
चुम्बिका शून्ये तु	३१.१३
चुम्बिका सा तु विज्ञेया	१७.६
च्युतिकाले तु योगी ना	५१.१०
छन्दोहमभिमुखं(खी) चैव	५०.२२
छागले कुक्कुटे वापि	१८.६
छोम्मकान् दर्शयेत् पञ्च	३१.५
ज इति जङ्घायुगलं	१५.७
जटामुकुटपट्टाङ्कं	२७.१५
जपति स्वकुलां विद्यां	१६.१५
जप्तेन शतान्तेभि: नृपति:	४५.१०
जप्त्वा हृदयमन्त्रेण	४९.९
जम्भनं स्तम्भनं चैव	३३.११
जाग्रतसुप्तकृतोत्तिष्ठ	५०.७
जातिवत्येकगन्धा च	१६.५

जानन्ति ते महात्मानः	५१.२०	डाकिन्यः समयस्थानं	४३.२
जानुं दर्शयेद् या तु	२१.७	डाकिन्यो लामयश्चैव	३.१६
जानुं स्पृशते या तु	२०.५	तच्चूर्णग्रहणाच्चापि	४४.११
जायते तु सदा नित्यम्	३.१८	तच्चूर्णं गोपयेत्तत्र	४४.९
जिह्वां लालयेद् या तु	२०.४	तडागकूपपुष्करिणी	३८.१४
जीमूतवर्णा या नारी	१८.१८	तत उत्तिष्ठते प्रेतः	३२.८
जीवनोपायहेतुत्वाद्	२९.१०	ततस्तद्भावनां कृत्वा	२.२
जृम्भणं स्तम्भनं चैव	४१.२	ततस्तस्य तुष्यन्ति	३.१५
ज्ञातव्याः साधकैर्नित्यं	२६.१२	ततस्तस्य भवेत्सिद्धिः	४५.२४
ज्ञात्वा श्रीहेरुकं मन्त्रं	५.२६	ततस्तु गुरवे दद्यात्	३.११
ज्ञात्वा सप्ताक्षरं मन्त्रं	४३.२०	ततस्तु साधयेत् सिद्धिं	५०.२७
ज्ञानसंभोगनिर्माणं	१०.५	ततस्तेनात्मानं	३७.४
ज्ञायतेऽदूरतो येन	२३.१	ततस्त्वेकादशे दिवसे	४५.३
ज्वरग्रहापस्मारगृहीतस्तु	४३.२६	ततः छोम्मकानि तु डाकिनीनां	३८.१
ज्वरो ग्रहाद्यपस्मारं	४३.१८	ततः पूजयेन्मुद्राम्	३.७
ज्वलमानेऽपि चित्यग्नौ	४५.१९	ततः पूर्णसप्तरात्रेण	३७.२
ज्वालामालार्णवं पश्येत्	३४.४	ततः सम्यक्प्रणिपत्य	३.९
डा इति पुरुषः स्मृतः	१५.२	ततः संदर्शयन् तस्मै	३९.१
डाकिनी तु महाविद्या	८.७	ततः संप्रवक्ष्यामि	४०.१
डाकिनीनां कुलानीह	१७.१२	ततः सिद्ध्यन्ते मन्त्रा	३३.५
डाकिनीनां तु महाविद्या	८.६	ततः स्वमात्मानं	८.१
डाकिनीनां मनोज्ञः स्यात्	४०.९	ततो ज्ञात्वा भावयेन्नित्यं	४.७
डाकिनीनां योगिनीनां तु	४८.४	ततो ज्ञात्वा विधिवद्योगी	३२.१५
डाकिनीनां योजनं मन्त्री	३६.२	ततो डाकिन्यो भुवनानि	४.१
डाकिनी विशेषतः निषुम्भ	३.१९	ततो नवाहुतीर्दद्यात्	३४.४
डाकिन्यश्च चतुर्विंशा	२.१८	ततो मृतकसूत्रेण	२.११
डाकिन्यः कथितास्तास्तु	४१.५	ततो वीरः कुसुमोदकं	४२.१
डाकिन्यः सप्त संहृताः	१७.२	ततो वै कारयेत् कर्म	४५.१८

तत्क्षणात् वायुवेगेन	४५.२१
तत्क्षणाद् वशमायाति	२२.४, ३७.९
तत्तत्स्थानप्रदेशेषु	३८.१७
तत्तद्रूपो तिलकेन	४९.१०
तत्त्वसंग्रहे परमाद्ये	३०.२४
तत्त्वसंग्रहे यदुक्तं च	२७.२३
तत्त्वसंग्रहे संवरे वापि	३.२४
तत्र विश्ववराहश्च	४९.३
तत्रस्थमुद्धरेद्वीरं	५.३, ३०.५
तत्रापातगोमयेन	२.१
तत्राभिरतो नित्यं	३९.४
तत्सर्वं साधयेन्मन्त्रः	४८.६
तथा एकादशं चैव	५.९
तथागतकुलोत्पद्य	५१.६
तथा द्याकारमेव च	५.१७
तथा द्वा(षड्)विंशमेव च	३०.१९
तथा पञ्चदशं चैव	५.१२
तथा पापं च नश्यति	५१.८
तथा योजनानां शतसहस्रम्	१४.३
तथैव च द्वितीयस्वरयोजितम्	७.१०
तथैव तेन च तस्या	२३.६
तदा चित्तैकाग्र्यं निर्माण	१०.४
तदा समाहितानां च	१०.३
तदिदं ध्यानमात्रेण	२७.२४
तदेव चूर्णं यत्नेन	४४.१०
तदेव वज्रकणिकया	१.१५
तपः संक्षीयतेऽवश्यं	२८.७
तर्ज्जयन्तीं दिशः सर्वान्	२.१८
तस्मादेषु प्रदेशेषु	४३.९
तस्य दूती वरा दिव्या	२८.१५
तस्य मध्ये पद्मं	२.१३
तस्य मासत्रयेणैव	५०.८
तस्यालिङ्ग्यं स्थिता देवी	२.१६
तस्याहमनुग्राही डाकिनी	३८.७
तस्याहं नित्यं तिष्ठामि	२९.११
तस्योपरि भावयेन्नित्यं	४८.९
तं गृह्योदकेन संयुक्तं	४५.५
तं दूती तु सत्त्वार्थ	२६.३
ताथागतीं च लभते	५१.५
ताप्यमानं तु राजानं	४५.१३
ताभिर्वामकरे गृह्य	३९.३
ताभिः सार्धं सुखं कुर्यात्	२७.१२
ताम्रसूच्या तु तां बिद्ध्वा	४५.9
ताः पूजिता भक्तिमतो जनस्य	२७.३२
ताः सर्वाः कामरूपिण्यो	४१.९
तिर्यग्दृष्टिभृकुटीवक्त्रा	१७.६
तिर्यग्दृष्टिः सकृन्मन्त्रं	१६.१८
तिस्रो रेखा ललाटे च	१९.७
तुषाणां कण्डयति स	९.४
तुष्टा च डाकिनी तस्मै	५०.१०
तुष्यन्ति वीरयोगिन्य	४१.१८
तृतीयस्य प्रथमं तु	७.९
तृतीयस्य प्रथमेन संयुक्तम्	७.१०
तृतीयस्य यः प्रथमं	५.१०
तृतीयस्वरयोजितं	७.२४
तृतीयस्वरसंयुक्तं	७.६

तृतीयं तु शिखां दद्यात्	६.४	दन्तं किटकिटायते या तु	२०.६
तृतीयं वाक्यतश्चैव	४३.३०	दन्तान् दर्शयेद् या तु	२२.८
तृतीयेन तु संयुक्तं	३०.१५	दर्शनस्पर्शनाभ्यां च	१.८
तेजस्कं तु सुदीप्ताङ्गम्	२.१४	दर्शयते करं यस्य	४४.३
तेजः पाण्डरा ख्याता	३१.१२	दर्शयेत् श्रीहेरुकादि	३.६
तेन च अद्वययोगात्मा	२७.२७	दर्शयेद् योगस्थानानि	२७.११
तेन तस्य सुजन्मनः	३८.१३	दले दूत्यश्च चत्वारि	३४.५
तेन प्राशितमात्रेण	४९.७	दशनं दर्शयेद् या तु	२१.२
तेन श्रुतेन तं वीरं	३९.२	दशपारमिता भूमौ	५०.२४
तेनैव च स्वकायेन	५०.११	दशमी पर्वणी तस्याः	१९.५
तेनैव प्रियो भवेत्तासां	४२.८	दशसहस्रहोमेन	४३.२१
तेषां प्रणम्य यत्नेन	३८.१२	दारिद्र्यं दुःखसन्तापं	५१.१३
तेषां हृदिस्था वाराही	३८.१३	दासदासीं भगिनीं वा	३.१३
तैः पुष्पैर्योनिमध्यस्थैः	४५.३०	दिव्यमानुष्यतासौख्यं	१.१५
त्रयस्त्रिंशं ततो गृह्य	५.६	दिव्यं दिव्यकथां चैव	४३.७
त्रयस्त्रिंशसमादाय	३०.९	दिशासु मातराः सर्वा	२.२७
त्रयस्त्रिंशं समादाय	३०.१९	दीपमालासमाकीर्णे	३०.३
त्रिकटिकां दर्शयेद् या तु	२१.४	दीपानां तु शतं दद्याद्	२.२५
त्रिकटुकेन लिप्ताङ्गं	४५.८	दीर्घग्रीवा तथा चोच्या	१९.१४
त्रिकोणं मण्डलं कुर्यात्	२८.१२	दुर्लभं त्रिषु लोकेषु	१.४, ३७.११
त्रिपञ्चाशस्तथा पुनः	७.२०	दुर्लभा योगिनीनां तु	१७.१
त्रिषष्टिः पुनश्चैव	७.२४	दूतयः सम्यगुक्तं च	२७.८
त्रिशमं तु समादाय	५.५	दूतयः सहजाः सिद्धा	१.७
त्रैलोक्ये यद् भवेत् किञ्चित्	९.१,	दूतयोऽसिधारं च	२७.२
	१२.१, १३.१	दूती च ततोऽद्यात्	३३.३
दक्षिणहस्तं प्रदर्शयेद् या तु	२०.१०	दूतीमार्गरता नित्यं	२७.५
दक्षिणां मूर्तिमाश्रित्य	३.५	दूतीरक्षा सदा मोक्ष	२८.६
दत्त्वा चैकां [तथा सिद्धिं ततो]	३२.९	दूतीं त्यक्त्वा न चान्यं तु	२८.५

दूत्यं तु प्रथमं शौचं २७.२१
दूत्याद्वययोगेन सिद्ध्यन्ते ३४.८
दूरङ्गमेति मेलायां ५०.२२
दृष्ट्वा दृष्ट्वैव संहृष्य ३८.१०
दृष्ट्वा योगवरं श्रेष्ठं ४.६
देवानां मुखचालनं ३२.४
द्रवन्तं द्रवते सर्पिः ५१.८
द्वाचालीशतिमं चैव ७.१५
द्वात्रिंशत्ततो गृह्य ३०.८
द्वात्रिंशत्यक्षरं त्रयोदश ७.११
द्वात्रिंशदक्षरं चैव ५.१३
द्वात्रिंशमेव च चतुर्थस्य ५.७
द्वात्रिंशं पुनश्चैव ५.१४
द्वादशैतन्महाकर्म ४१.३
द्वापञ्चाशतिमं चैव ७.१९
द्वाविंशतिसमायुक्तं ३०.१०
द्वाशीत्यक्षरं चैव ७.३६
द्वितीयकोष्ठसंयुक्तं ३०.२१
द्वितीयस्य तृतीयं चैव ५.१४
द्वितीयस्य यस्तृतीयकं ५.८
द्वितीयस्वरयोजितम् ७.१६,२२
द्विरभ्यासपदं चैव ३०.१६
द्विविधः साधयेच्चैव २७.७
द्व्यङ्गुलिं दर्शयेद् या तु २२.२
धकारं तत्र योजयेत् ७.३४
धर्मकायशरीराणां १०.२
धर्मज्ञानशरीराणां ३१.४
धर्मता सर्वदाऽचिन्त्या ५१.२१
धर्मार्थमोक्षकामानां ३०.१८
धारणं सततं कुर्यात् २८.१४
धारायां स्थितो वीरः ३१.८
ध्यानादि यद् भवेत् किञ्चित् ४१.१७
ध्याने चिन्तितमात्रं वा ५१.९
ध्यायेच्च देवताः सर्वा ५०.११
ध्रुवमाकर्षयेत् तस्य ४४.४
ध्रुवमाकृष्यते तेन ४४.७
ध्रुवं शत्रुनिकृन्तनमन्तः ७.२१
ध्वजशक्तिर्ज्ञायते नित्यं २३.८
ध्वजै रक्तैस्तथा पीतैः २.२९
नखं दर्शयेद् या तु २०.८
नखा हि यस्या नार्या १८.३
नखेषु च हयग्रीवः ३१.९
नखैर्नखं संस्पृशते या तु २०.११
नग्नपूजनमुद्रायाः ४३.३
न च लभते गूढार्थं ३७.१२
न च लिखति वीरेश्वरो ३८.२
न च सम्पद्यते सर्पिः २९.९
न च सिद्धिं न च सौख्यं ९.५
न जरामृत्युः सर्वत्र ३९.५
न ज्ञात्वा श्रीहेरुकं ज्ञानं ९.४
न तत्र दृश्यते चोक्त ४३.६
न तत्र प्रकाशयेज्ज्ञानं २८.३
न दद्यात् कस्यचिन्मन्त्रम् २८.४
नदीतटसमुद्रेषु ३८.१४
नदीं प्रदर्शयेद् या तु २१.९
नद्यां पश्चिमपुष्पं तु ४५.४

न भवन्ति च योगज्ञा ३३.७
न भीयते यदि वीरः ३९.३
नमस्कारं हि यो बद्ध्वा १६.१५
नवमं ततो गृहाक्षरं ७.३
नवमं मध्यतः कलशं २.२३
न व्रतं न चर्या ९.२
न व्रतं न तपो ध्यानं ९.७
नाक्रोशेत् समयी नर २७.११
नातः परतरं किञ्चित् ५.२५, ४८.७, ५०.१४
नातः परतरा सिद्धिः ४९.१६
नात्र मे विषयो ह्येष ५१.१९
नादीर्घा नातिदीर्घा च १९.७
नानातूर्यनिर्घोषैः ५१.११
नानाधिमुक्तिकाः सत्त्वा ५१.१७
नानानयविनेयानां ५१.१८
नानापुष्पकरव्यग्रा ५१.१०
नानारूपधरो योगी ५०.१४
नान्यत् परमं शोभनं ७.३३
नान्यथा वच्म्यहं तस्य ४४.८
नाप्यधिक्षेसव्याः २६.८
नामयेदाश्वभगन ४३.१०
नारीश्वर्या समन्थानं २६.११
नाहं तस्य परित्राता ३८.५
नाहं तस्य पश्यामि ३८.३
निक्षिपेत भ्रुवोर्मध्ये ३४.२
निग्रहं कुरुते वाचा ४५.२७
निग्रहानुग्रहार्थेषु ३६.४
नित्यमेव महावीरं ३८.१२
नित्यं गान्धर्वकुशला १९.२२
नित्यं च कूपकौ यस्या १९.१२
नित्यं स्नानरता या च १८.११
निम्बवृक्षप्रयोगे तु ५०.५
निरीक्षयन् तु वज्रवाराहीं ३२.१३
निरोधात्तु भवेत्साध्यः ३५.४
निर्जात्यसुवर्णं शतसहस्रं ३.११
निर्धूमैः खदिराङ्गारैः ४५.१४
निर्धूमैर्खदिराङ्गारैस्तापयेत् ४५.९
निर्माणकायशरीराणां १०.४
निर्वाणं निर्गतं वीरं २८.१
निर्विघ्नः स यथा सिद्धौ २८.१५
निवसनं पञ्चमुद्रादि ५१.२
निष्ठीवनं दन्तकाष्ठं ५०.३
निःशेषाऽशेषकार्याणि ४१.१८
नीलोत्पलशुभगन्धा च १६.६
नृत्यं ततोऽश्रुभवं भक्त्या ४५.५
नृपतेः सपरिवारं ४५.११
नेत्रमुद्रां विजानीयाद् २२.३
पक्षिणां हंस एव च ३२.४
पञ्चदशाक्षरं गृह्य ७.५
पञ्चमस्य पञ्चमं ५.९
पञ्चमस्य यश्चतुर्थं ५.४
पञ्चमस्य यः प्रथमम् ५.१६
पञ्चमस्यापि चतुर्थकं ५.१२
पञ्चमस्यापि यश्चतुर्थम् ५.८
पञ्चमं तु भवेन्नेत्रं ६.४

पञ्चमुद्राप्रतिबद्धं तु	२७.१७
पञ्चमेन समायुक्तं	३०.९
पञ्चवर्णसमाचारो	२८.११
पञ्चविंशत्ततो गृह्य	३०.८
पञ्चविंशं समादाय	५.२१
पञ्चसप्ततिमं चैव	७.३१
पञ्चाङ्गं वा तरोर्मिश्र्य	४९.१२
पञ्चामृतसद्भावात्	१७.१
पञ्चामृतं भवेदत्र	१.१३
पञ्चालविषये गृहदेवता	४१.१२
पञ्चोन्मत्तकं संयोज्य	४४.११
पटान्तेन वा काष्ठेन	१७.१०
पट्टिशं दर्शयेद् या तु	२२.६
पतितोऽसौ बुद्धलोकाद्	३८.६
पत्रैः पुष्पैः फलैश्चैव	४३.२९
पद्ममुद्रा दातव्या	१९.४
परमसमयं स्थिता भव्या	१६.१
परमाहितयोगेन	१३.५
परिवर्तनं च वामेन	१९.१०,१९,२३
परिवर्तनं तु वामेन	१९.१६
पर्वणी लेहयेद् या तु	२०.१३
पवित्रीकृत्य देहं तु	२७.१०
पशवश्च तथा पञ्च	३२.२
पशुं वा यदि वा दूतीं	४५.१७
पशूनां कर्षणं चैव	३२.२
पशोरेव हि रोमाणां	४९.११
पातालग्रामारण्येषु	४३.८
पाताले डाकिन्यो याः काश्चित्	२.२७
पाताले यदि वा स्वर्गे	४८.५
पातालोत्तिष्ठ खड्गं च	३२.८
पादधूलिं तु साध्यस्य	४५.१३
पादौ दर्शयेद् या तु	२१.७
पापाचारो मूढो वञ्चितो	३८.४
पार्थिवं तु ततो गृह्य	३०.२२
पिशितं सोन्मत्तकेन	४०.२
पिशिताशना कोशले तु	४१.१३
पीठं प्रमुदिताभूमौ	५०.२१
पीतवस्त्रप्रिया नित्यं	१९.१७
पीतश्यामा तु या नारी	१६.८
पीतेन सर्वाभिभवनम्	४३.२३
पीतेनैव तु नौयन्त्र	४३.२४
पीषयेदात्मरक्तेन	३७.७
पुनरेवं पदश्चैव	३०.१२
पुल्लीरमलयादीनां	४१.९
पुल्लीरमलये कनकाद्रौ	४१.१४
पुल्लीरादिषु यथोद्दिष्टं	५०.२५
पुष्करैश्च केसरान्वितम्	२.१३
पुष्पपूर्णाञ्जलिं कृत्वा	३.४
पुष्पैः गन्धैस्तथा धूपैः	२.२८
पूजने नैव दृश्येत	४३.५
पूजयेत् कर्मसिद्धिं तु	३३.११
पूजयेत्ततो मुद्रां	३३.८
पूजयेत् पुरवरं रम्यं	२.२४
पूजयेत् वरमात्मानं	२८.१
पूजयेत् सततं तस्याः	१९.११
पूजयेदद्वयं वीरं	२.२०

पूजयेद् भ्रातृचारांस्तु २८.२
पूजयेद्विधिवद् देवं २.२८
पूजयेद् वीरयोगिन्यः २.२९
पूजाद्वययोगात्मा ३५.१
पूजाश्चैव प्रवर्तन्ते २७.४
पूजिताः पूज्यमिच्छन्ति ३३.८
पूज्यो भवति सर्वत्र ३८.९
पूर्वोक्तेन विधानेन ४८.१६
पृथिवी लोचना ख्याता ३१.१२
पृथिव्यां चतुरो रत्ना ८.७
पृष्ठे तु सर्वडाकिन्यो ३१.१०
प्रक्षिप्यान्यदम्बरं मुद्रां ४३.३
प्रचण्डादिं तु वै पूर्वं ४.४
प्रचोदिता सिद्धयस्तु २७.७
प्रच्छाद्य पटवस्त्रेण ३.३
प्रणवहूँकारभेदितम् ३८.११
प्रथमस्य द्वितीयं तु ५.१३,१८
प्रथमस्य प्रथमं गृह्य ७.८
प्रथमस्य यः प्रथमं ५.११
प्रथमस्यापि प्रथमं चैव ५.२२
प्रथमस्यापि यस्तृतीयं ५.१८
प्रथमं तु हृदयं चैव ६.४
प्रदक्षिणं च ततः कृत्वा ३.४
प्रदक्षिणं च पुनः कृत्वा ३.१०
प्रमादात् पठते मन्त्री ३८.३
प्रवृत्तिनादमादीनि ५१.३
प्रसाधयेत् प्रयोगार्थं ३६.५
प्रहृष्टा हसते गता १७.८
प्राण्यङ्गवाससावासं कण्ठिका २७.१३
प्राण्यङ्गवाससावासं सुखार्थी २७.१६
प्रातरुत्थाय चित्तात्मा २७.९
प्रेतपुर्यां महाकन्या ४१.११
प्रेतपुर्यां हिमस्थाने ४१.७
प्रेतालक्तकरोचनया ४५.११
प्रेतालये प्रसिद्ध्यर्थं ४५.१२
बध्नाति हि स्वकां मुद्रां १६.१२
बिल्वस्य च पलाशस्य ५०.१५
बीजमालां ततो ग्रस्तां ३५.३
बुद्धोऽपि वशमायाति ५०.२
ब्रह्मघ्नोऽपि सप्ताहात् ४५.७
ब्राह्मणं विंशतिरेव ४०.५
भ इति अभिवादनं १५.८
भक्ताय प्रदातव्यं १६.२
भक्षयित्वा तिलान् कृष्णान् ३७.६
भक्ष्यभोज्यखाद्यपानैश्च २.३०
भक्ष्यभोज्यमत्स्यमांसादिभिः ३३.१
भक्ष्यहोमबलिक्रिया ३१.२, ३२.६
भक्ष्यं न सो दुरात्मकः ३८.३
भविष्यति पराभूतः ४४.१०
भवेदाशु करे तस्य ५०.१२
भवेद् दर्शनमात्रेण ४३.१६
भवेद् योगिन्य वीराणां ४२.९
भास्करेण समायुक्तं ७.१२
भी इति भगिनी तथा १५.३
भुक्तमुद्गीर्णं भोज्यं तु ३७.२
भू इति मेलापकं पी १५ ५

भूमिभागे समे रम्ये	३०.२
भूमिं प्रदर्शयेद् या तु	२१.८
भूमिं विलिखते या तु	२०.११
भूर्लोके डाकिन्यो याश्च	२.२६
भृकुटीं दर्शयेद् या तु	२०.६, २२.८
भेदिता तत्त्वभेदेन	३६.५
भेदेन समयानां तु	१.११
भ्रातरं पितरं वापि	२९.२
भ्रातृपुत्रैकसार्धं	२८.३
भ्रूमध्यगतं त्रिशूलं श्यामा	१८.४
मण्डलं गुरवे सम्यक्	३.१०
मण्डलं तस्य रक्षार्थं	३०.२५
मण्डलोपरि पतेद् यत्र	३.६
मधुच्छर्दिराजिकागृह	५०.१९
मधु रक्तं सकर्पूरं	१.११
मध्यमां दर्शयेद् या तु	२२.५
मध्यमोत्तमश्वासेन	१.६
मध्ये तु सर्ववीरालयं	३१.१३
मनः समाधाय सुमतिः	३.५
मनोद्विग्ना करेणाथ	१७.९
मन्त्रजापेन खड्गेऽङ्गुष्ठे	४३.१३
मन्त्रमुद्रासमोपेतं	२८.१३, २९.६
मन्त्रं संयोज्य द्वौ लिङ्गे	३६.२
मन्त्रिणं च तदर्धेन	४०.४
मन्त्री सदाऽऽत्मयोगेन	४३.१३
मन्त्रेण त्रियन्त्रितं कुर्याद्	४२.२
मन्थमन्थानसंयोगं	१.५
मल्लिकामोदगन्धिनी	१८.१४
मल्लिकोत्पलगन्धा च	१६.८
महद्वाचा प्रभाषी वै	१६.१३
महाकवचेन संरक्ष्यो	५१.४
महाचक्रं सर्वसिद्धिस्थानं	४८.१६
महानद्यां तु वै गत्वा	४५.३
महाभैरवश्मशाने च	३८.१५
महामांसेन सर्वेषां	३१.१
महायोगधरा वीरा	२९.१०
महावज्रभैरवे च	२७.२४
महावीरं वज्रजटिलं तु	४८.१२
महावीर्या चक्रवर्तिनी	४.१
महाव्यालशतग्रस्तो	४३.२५
महाशङ्खमयं कुर्याद्	३२.११
महासिद्धिं प्रददाति	४०.३
महासौभाग्यसम्पन्ना	१८.९
महीं दर्शयेद् या तु	२२.७
मा इति माता वै स्मृता	१५.३
माता च भगिनी पुत्री	२८.७
माता भगिनी पुत्री वा	२६.५
माता वा यदि वा भगिनी	३३.४
मातृकाचतुर्थेनैव	७.१२
मातृकापञ्चमेन संयुक्तं	७.७
मार्जारनकुलेभ्यश्वान	४६.५
मासेन सिध्यते वीरं	४०.१
मांसप्रिया च या नित्य	१८.१५
मांसं तस्याग्रतो ध्यात्वा	३७.१०
मुक्तश्च प्रत्यानयनं	४४.१३
मुक्त्यर्थी तदर्थी च	२७.१२

मुखमुद्घाट्य शिष्यं च	३.८	यथार्थमुपदेशं तु	२८.५
मुखं यस्यास्तु विस्तीर्णं	१९.२	यथाविधि च दातव्यं	२७.३१
मुखादङ्गुलिं प्रक्षिपेद् या तु	२०.४	यथाविध्याकारेण	३४.६
मुच्यते सर्वपापैस्तु	१.९	यथाशक्त्या पूजयेद् गुरुं	३.१
मुद्रादिभूषितगात्रं तु	३२.१४	यथासुखेन सिद्ध्यन्ति	५०.१७
मुद्रानृत्योपहारेण	४१.१८	यदि कश्चित् समदन	५०.९
मुद्रा पोतङ्गिनीनाम	२२.५	यदि क्रुद्धो दीप्तेन	४६.४
मुद्राहीनं न सान्निध्यं	२९.६	यदि क्रुद्धो भवेन्नित्यं	३७.४
मुरजबन्धं ततः कृत्वा	३०.४	यद्यदिन्द्रियमार्गत्वं	१३.५
मुष्टिं दर्शयेद् या तु	२०.७	यद् विश्वपुरतः कुर्यात्	४२.७
मुष्टिं बद्ध्वा जनो युद्धे	४३.२६	यवर्गाच्चाष्टमं बीजं	६.१, ३०.१२
मूर्च्छिता चेतनरहिता	४५.१६	यस्तु पालयते तन्त्रं	३८.६
मूलमन्त्रपरं वीरं	३८.११	यस्य गले बध्नाति	४६.६
मूलमन्त्रं जपेन्नित्यं	२९.४	यस्य मन्त्रं ददेन्नित्यं	२६.५
मूलमन्त्रः प्रकीर्तितः	५.२६	यस्य मन्त्राभिसंलिख्य	४५.१९
मूलमन्त्रैस्तथा चान्यैः	४३.४	यस्य यस्य च सत्त्वस्य	४९.९
मृणालगन्धा च सततं	१६.७	यस्य ललाटे वज्रं वा	१८.१३
मृणालगौरा तु या नारी	१६.३	यस्य सुस्वनी वाणी	४९.५
मृत्युर्नाम विकल्पस्य	५१.११	यस्य स्मरणमात्रेण	४८.२
मौक्तिकैर्हेमरत्नैश्च	२.२१	यस्याभिमुखो जपेत्	४५.१२
य इमं ध्यायते नित्यं	५१.७	यस्या ललाटे शूलं	१८.१७
यज्ञोपवीतं च संत्यज्य	२७.१७	यस्याः चक्रं ललाटे तु	१८.८
यज्ञोपवीतं भस्म च	२७.१८	यस्याः शूलं ललाटे वै	१८.५
यज्ञोपवीतं सौवर्णं	३.१३	यस्मिन् कर्मणि सा क्षिप्रं	३४.१
यत् किञ्चित् वर्तते कर्म	४८.६	यं ताडयति पुष्पेण	४५.३१
यत्र कर्म समारभ्य	४४.१	यः काङ्क्षिष्यते कश्चित्	३.२२
यथा क्वचित् घृतार्थी	२९.८	यः समाचरति नरश्रेष्ठः	५१.५
यथापूर्वादि पापस्य	५१.६	या च कृष्णाञ्जनश्यामा	१८.१०

या नारी तप्तहेमाभा	१६.४	योगिनिमित्तं जपेद्यस्तु	१४.४
या नारी सुन्दरी चैव	१६.६	योगिनीनां डाकिनीश्चैव	४८.१८
यानि कानिचिद् दूतीनां	२०.१४	योगिनीनां तु सर्वेषाम्	४८.५
या(य:) स्त्रीणां प्रार्थितं कुर्यात्	१६.१४	योगिनीनां प्रियो नित्यं	३८.८
यावज्जीवं सदा वश्यं	३७.६	योगिनीनां सर्वकार्येषु	७.२८
यावत् शोषमायाति	४६.३	योगिनीयोगमुद्रां बद्ध्वा	४५.६
यावद् भ्रमन्ति संसारे	३३.७	योगिनीश्चैव नानारूपिण्यो	१३.३
यावन्तो योगसङ्घाता	२६.४	योगिनीं मन्थयेद्धीमान्	३६.३
यावन्न मुच्यते मुष्टि:	४३.२७	योगिन्य: खण्डरोहा वै	४८.९
या स्पृशते शिखां नारी	२१.१	योगिन्यै जुहुयाद् रात्रौ	४४.५
ये द्विषन्ति महायोगं	२९.७	योगी स्वेच्छानि कर्माणि	२७.३०
येन प्राशितमात्रेण	११.१	योगेश्वरीं समासाद्य	५०.१६
येन रूपधरं ध्यात्वा	४४.३	यो जानाति तत्त्वेन	१४.५, १५.१
येन विज्ञातमात्रेण	१०.१, १६.२, ३०.१, ४६.१, ४९.१	यो यस्य देवतास्थानं	३.९
		रक्तकुसुमं तु संगृह्य	४५.२८
येन विज्ञायते भ्राता	२२.१	रक्तगौरा च या नारी	१६.७
येन विज्ञायते सम्यग्	२०.१	रक्तगौरा तथा नित्यं	१९.१२
येन सम्यग्विजानाति	१८.१, २९.१	रक्तगौरा हि या नारी	१८.२
येन सम्यग्विधानेन	३२.१, ५०.१	रक्तवर्णं तु वृक्षाग्रे	४३.१०
ये प्रसिद्धिकरा मन्त्रा	३५.२	रक्ताक्षी रक्तगौरा च	१८.६
योगमद्वयज्ञानं च	२८.१४	रक्तेन च त्रिजप्तेन	३.८
योगमार्गरतानां तु	२७.२५	रक्तेन च वशीभूय	४३.२३
योगसिद्धिर्भवेदेषां	३.१७	रजोरक्तं भुक्तोद्गीर्णं	५०.४
योगस्तस्य प्रवर्तते	३८.९	रत्नवज्रं महाबलं	४८.११
योगं चैव विधिज्ञानं	१.५	रसाद्या: सर्वसिद्धिश्च	९.७
योगाभ्यासितजापी च	४९.१३	रहस्यमेतत्तन्त्रस्य	१४.४
योगित्वं परमं पुण्यं	१.९	रहस्ये परमे रम्ये	१.२
योगिनश्च क्रमात् प्राप्य	२७.२२	राजानं मारयत्याशु	४६.४

राजानं राजपत्नीं वा ४५.२४
राज्यारूढा तु नित्यं १८.१४
रात्रावहनि वाऽनेन ४२.४
रात्रौ गुह्ये च गोमांसं ४३.१९
रात्रौ च सततं नग्नः २७.१३
रात्रौ तु प्रकटं नित्यं २७.१९
रात्रौ तु सदा कुर्यात् ३३.२
रात्रौ मन्त्रजपं कुर्यात् ५०.१३
रात्रौ व्रती बलिं दद्यात् २७.३३
रिपुनाम लिखेत्तत्र ४४.१२
रूपकर्म च यच्छुण्डं ४२.४
रूपं संहरति प्राक् १७.४
रूपाण्यनेकानि कुरुते ३.१९
रूपिका चुम्बिका लामा १७.३
रूपिका सा तु विज्ञेया १७.५
रेचकं प्रेरणं हासं ४२.६
रोगी रोगविनिर्मुक्तो ४३.१६
रोचना हृदये तस्य ४९.८
लक्षणभेदं ज्ञात्वा तु २७.१
लक्षं होमयत्याशु ५०.१५
लम्पाकायां सौराष्ट्रे च ४१.११
लम्बोष्ठी कृष्णवर्णा च १९.२१
लम्बोष्ठी च विशालाक्षी १९.६
ललाटं दर्शयेद् या तु २०.३,२१.२,२२.९
ललाटे तिलकं कृत्वा ४९.११
ललाटे दृश्यते चैव १९.१३
लामादयस्तथा चापि ४८.१८
लिखितं च गृहे चक्रं १८.९
लिखितं परशुं यस्या १८.१९
लिखित्वा पर्वतं दिव्यं ४८.८
लु इति दुहिता स्त्री १५.४
लोकेश्वरीणां तु लामानाम् १९.११
लोमशा सर्वगात्रेषु १९.२०
लोहचूर्णेन संमिश्र्य ४४.८
वक्त्रे श्मश्रूणि नित्यं १९.२
वज्रप्रभममिताभं सुरावैरिणं ४८.१३
वज्रभद्रं सुभद्रं वै ४८.१२
वज्रवाराहीकुलोद्भूता १८.१०
वज्रवाराहीनां तु लामानाम् १९.२४
वज्रवाराह्याः कुलोद्भूता १८.१२
वज्रसत्त्वस्तनवे स्थितः ३१.७
वज्रसत्त्वं वैरोचनं ४८.१०
वज्रसत्त्वः परमं हि ७.१८
वज्रसत्त्वेन भेदितं ७.२५
वज्रस्य लङ्घनं कुर्याद् ४२.९
वज्रस्य लङ्घनं चैव ४२.५
वज्रं गृहे च सततं १८.१२
वज्रं च लिखितं यस्याः १८.१४
वज्रेण भेदयेच्चैव ३५.५
वर्णदूत्यादि तन्मन्त्रं ३५.२
वर्ममात्रं समालिख्य ३०.४
वर्णानां ब्राह्मणः पशुः ३२.३
वर्णावर्णमुखाक्षेपः २७.२०
वशं च कुरुते क्षिप्रं ४५.२५,३२
वशीकरणमेवं तु ३७.८
वशीकुर्यात्तु तत्रस्थं ४३.६

वश्याकर्षणविद्वेष	४१.१	विद्याराजचक्रवर्तिमन्त्रो	३०.२४
वस्त्रयुग्मशतं चैव	३.१२	विद्याराजस्य मन्त्रः	५.२५
वँकार यौंकार मौंकार	८.५	विद्याराजस्य हृदयं	८.३
वागीशं मातरं चाप्य	४३.७	विद्यार्णवे यथा वीर	३४.८
वाचया कुरुते सर्वा	४५.२७	विनायककुलोद्भूता	१८.१९
वाचया मारयेत् क्रुद्धो	४५.२५	विन्दते ह्यात्मनो जन्म	४९.६
वाचासिद्धि(द्ध)स्तु साधको	४५.५	विभज्य स्वेच्छया मन्त्री	३६.४
वाचोपहरणं मूक	४१.२	विभाव्य सप्तधा जप्त्वा	४३.१४
वामगृहणमात्रस्तु	२८.९	विलोमेन ततो गृह्य	३०.१७
वामहस्तपरिवर्तनं	२८.९	विविधमाशु विज्ञेयं	२३.४
वामहस्तं दर्शयेद् यस्तु(या तु)	२०.२	विषजन्या व्याधयश्च	४३.१८
वामाङ्गुष्ठलिखिन्या	१६.१६	विषेण मूर्च्छितो दृष्ट्वा	४३.२५
वामाङ्गुष्ठेन भूमिं विलिखते	२०.१२	विह्वलाचेतनरहिता	४५.३१
वामाचाररता नित्यं	१६.११	विंशकेन समायुक्तं	३०.१५
वामाचारश्च नग्नश्च	४१.१७	वीरत्वं गताः सिद्धा	४.७
वामाचारः सदा लोके	२८.८	वीरपूजाऽद्वयं ज्ञात्वा	३६.३
वामेन याति नरः स्त्री	२६.६	वीरमती महानासा	४.४
वामेन याति या नारी	१६.१२	वीराङ्गभेदं तथैव च	३८.१
वामेश्वरीणां तु सर्वेषाम्	४२.६	वीराणामालयो ह्येष	३१.६
वामोद्भवं जगत् सर्वं	३१.६	वीराणामासनं चैव	३३.६
वाराहशरभमार्जार	१७.७	वीराणां डाकिनीश्चैव	४८.१४
विकिरेन्मण्डले सर्वान्	२.२४	वीराद्वयसमापत्ति	१.१४
विचरेद् द्विगुणं मन्त्री	२.१३	वीरांश्च तथैवेह	२.१९
विचिन्त्य व्याधितं सूर्य	४३.१५	वीरोच्छुष्ममुखेनाग्नौ	३४.३
विज्ञायते सुदूरेऽपि	२६.७	वृक्षपर्णीरसं गृह्य	४९.१०
वितानैश्च काण्डपट्टकैः	२.३०	वृथा परिश्रमं तस्य	९.६
विद्यया सप्तजप्तस्य	४५.२९	वेतालैरप्यनेकैस्तैः	३८.१६
विद्यया सप्तजप्तं तु	४५.२०	व्याकारं वीरमित्याहुः	५.१९

शक्तिमुद्रा प्रदातव्या	१९.२३
शङ्खमुद्रा प्रदातव्या	१९.१८
शङ्खशुक्तिकमुक्तानां	३१.३
शतमष्टोत्तरं यावत्	३२.७
शतमेकं जपेन्मन्त्री	४५.३०
शतार्द्धार्द्धं समादाय	३०.७
शरीरयोग: प्रथम:	४३.२९
शववक्त्रे तु मन्त्रेण	३२.७
शशकादीनां रोमाणि	४६.६
शशिबिम्बाक्षरं ध्यात्वा	४३.१९
शशिमध्ये वामहस्ते	४३.१७
शंखा चाष्टमी स्मृता:	१७.१३
शान्तिपुष्टिवश्याकर्षण	३३.१०
शालिपिष्टकमयं मन्त्री	४९.२
शिरसि(शिरीष) पुष्पगन्धा च	१६.९
शिर:कण्डूयनं कुर्यात्	१६.१७
शिरो दर्शयेद् या तु	२२.७
शिष्याणां तु द्वितीयेऽह्नि	३.७
शुक्लचिन्तनमात्रेण	४३.२४
शुक्लेन जायते शान्ति:	४३.२२
शुद्धाशुद्धाथ मिश्रं वै	२६.१४
शुभवस्त्रा शुचि: सौम्या	१९.३
शूद्रे तु त्रयमेव स्याद्	४०.६
शूलाकारं ललाटं तु	१८.१६
शेषान्येषु हि यावन्त्य:	४१.१५
शोभनं वर्णोत्तमं	७.२५
शोभनं सर्ववर्णानाम्	७.३०
शौचं च त्रिविधं ज्ञेयं	२७.२०
शौचानां यत्पुण्यं तद्	२७.२५
श्मशानभस्मना युक्तं	२.१
श्मशानं याति नित्यं	१८.१६
श्मशानं साधुमतिश्चैव	५०.२३
श्मशाने तद्गोपनेन	४४.१२
श्मशानोत्सृष्टं भस्म	४५.१४
श्यामा जीमूतसदृशी नित्यं	१८.८
श्वकायोद्गीर्णकेशेन	५०.५
श्वानयोनिशतं गत्वा	२९.८
श्वासं निरुध्य वि(नि)क्षिप्तां	४५.१६
श्रद्धामात्रेण गृह्यन्ते	२६.१३
श्रियाणां तु लामानाम्	१९.५
श्रीचक्रसंवरमहातन्त्रं	५१.१२
श्रीवज्रहेरुकं चैव	४८.११
श्रीहेरुककुलोद्भूता	१८.५,७
श्रीहेरुकदेवस्य डाकिनी	१८.१७
श्रीहेरुकदेवाभिमुखां कृत्वा तु	२.१७
श्रीहेरुकपरो योग	२६.७
श्रीहेरुकमन्त्रं ज्ञात्वा	२६.१
श्रीहेरुकमभिश्चार्य	५०.२३
श्रीहेरुकमहाज्ञानविशुद्धं	२७.२६
श्रीहेरुकमहायोगं	५०.२५
श्रीहेरुकमहायोग:	४१.१५
श्रीहेरुकमहाराजं	५१.१६
श्रीहेरुकलामानाम्	१९.२०
श्रीहेरुकशक्तिकामेन	३९.४
श्रीहेरुकसंयोगं सर्व	१.१
श्रीहेरुकस्य निर्माणम्	२८.१३

श्रीहेरुकस्याङ्गाङ्गं ५०.२०
श्रीहेरुकस्वात्मानं १०.५
श्रीहेरुकात्मैव योगेन २७.३३
षट्पञ्चाशदक्षरं ७.२१
षट्षष्टि अक्षरं तु ७.२६
षट्सप्तजन्म[त]श्चापि ४९.४
षट्सप्तति चैव ७.३२
षड्योगिन्य कुलतायां ४१.१०
षड्वीरसमायोगैः ६.२
षण्ढत्वकरणं चापि ४१.३
षु इति स्तम्भनं सु १५.२
सकलीकृत्य चात्मानं ३०.३
सकृज्जप्तेन पुष्पेण ४५.२
सकृद्दृष्टेन योगेन ३.२०
सततं क्रूरकर्मा च १८.१८
सततं वज्रकुले भावितं १८.४
स तु तत्रैव च तदा ४३.२२
सत्कारं न च वै कुर्यात् २८.६
सत्त्वावतारशीलं तु ५१.२३
सत्यवाक् प्रियदर्शी च ४९.५
स त्वरि[तं त]तो गृह्य ४५.२०
सदा कालं तु साधकः ३२.१५
सदा काले जपेन्मन्त्री ५०.७
सद्धर्मरता नित्यं १९.३
सद्भावं यान्ति योगिन्यः १६.१८
सनामसुरया होमात् ५०.३
सन्तुष्टचित्ता वरदा भवन्ति २७.३२
सप्तचालीशतिमं चैव ७.१७
सप्तत्रिंशत् समायुक्तं ७.१३
सप्तरात्रेण सिद्धिः स्यात् ३७.१०
सप्तविंशतिमं तथा ५.२०
सप्तविंशतिमं पुनश्चैव ५.२१
सप्तषष्टिमाक्षरसंयुक्तं ७.२७
सप्ताक्षरविधानेन ४४.२
सप्तात्मकाक्षरं मन्त्रं ४३.११
सप्तैतानि मयोक्तानि १६.१०
समयघ्नो दुराचारो ३८.४
समया कुलाचारेण २८.१०
समयान् पालयेन्नित्यं १.१०
समयान्यतमं वक्ष्ये २६.६
समयो ह्येष डाकिनीनां ४१.१६
समाचरति नरश्रेष्ठः २७.२८
समाहितो धुतूराग्नौ ५०.६
समुद्रमेखलायां च ४३.३०
सम्पुटं सम्पुटीभावेन ३५.४
सम्पुटीकृत्य तं पुष्पं ४५.२९
सम्पूर्णज्ञानदेहोऽत्र २७.९
सम्यगङ्गावयवं जानीयाद् १९.१
सम्यग्जम्बूकमांसेन ५०.८
सम्यग्ज्ञानतन्त्रज्ञः २.४
सर्वकर्मेषु यत्किञ्चित् ३३.१२
सर्वकामार्थसाधकं ७.१३
सर्वडाकिनीमयः सत्त्वो १.३
सर्वडाकिन्यालयं वक्ष्ये ४८.८
सर्वतन्त्रोक्तसाधकः ३.२२
सर्वतः पाणिपादान्तं ५०.२६

सर्वत्र श्रूयते लोके	५०.२६	साधकः सिद्धिमाप्नोति	२७.३
सर्वधर्मोदये विश्वं	५.१	साधकः सुसमाहितः	२७.५
सर्वपापविनिर्मुक्तः	२७.२८	साधकानां हितार्थाय	५०.२७
सर्वपापविशुद्धात्मा	२७.२९	साधकानां हितार्थोपलक्षणं	१८.२०
सर्वभक्ष्यैस्तु सम्पूर्णान्	२.२१	साधकैरल्पपुण्यैश्च	३७.१२
सर्वमारप्रशमनं	२९.५	साधको गुणविस्तरः	२७.२६
सर्ववीरडाकिन्यः	३४.२	साधको येन ज्ञायते	२४.१
सर्ववीरयोगिन्यः	२७.१६	साधको वीरतां याति	३८.८
सर्ववीरसमायोगः	३१.१४	साधनं सर्वदेवानाम्	७.१४,१९
सर्ववीरस्य योगिन्यः	२८.२, ५१.१६	साधनं सर्वसिद्धीनां	७.२२
सर्वसद्भावं देयं च	२६.४	साध्यपादस्य धूलिं च	४४.४
सर्वसिद्धिसमावहं	८.१	साध्यप्रतिकृतिं कृत्वा	४५.८
सर्वार्थसाधकं नाम	३०.१४	साध्यमन्ते हासमुद्राभिः	४२.३
सर्वावस्थोऽपि वीरेशः	४०.२	साध्यस्याभिमुखो मन्त्री	४५.६
सर्वाः किङ्करीस्तस्य	३.१७	सामन्तानां द्वात्रिंशद्	४०.५
सर्वांस्ताननुपूर्वेण	४५.४	सामान्यं सर्वतन्त्राणां	२६.१२
सर्वांस्तान् त्रासयेत् ततः	१७.८	सामान्या सर्वसिद्धीनां	२९.३
सर्वे तुष्टाद्वयीभूता	५१.१७	सितदेहं [महोग्रं च]	३२.१२
सर्वेन्दीवरश्यामा	१६.५	सितवस्त्रप्रिया नित्यं	१६.३
सर्वोत्तरेषु डाकिन्य	४१.४	[सिद्धिदं] सर्वकार्येषु	७.२७
सवज्रपद्मं खट्वाङ्ग	२७.१५	सिद्धिं यावद् होमित्वं	४५.१५
ससैन्यं नृपतिं वश्यं	४०.४	सिद्धिः स्मरणमात्रेण	४१.४
सहस्राण्येकविंशतिः	४१.१४	सिद्धीनां कारणं नित्यं	२६.९
संगृह्य गावीक्षीरेण	४५.१	सिद्धो भवत्यसौ सद्यः	४९.८
संग्रामे मृतकानां तु	१९.८	सिद्ध्यते जपमन्त्रेण	१.१०
संभवान्नादरूपाद् विनिष्क्रान्ताः	१.४	सिद्ध्यत्यशेषनिःशेष	३१.३
संभोगकायशरीराणां	१०.३	सिन्धुदेशे लामा च	४१.१०
साधकस्य च सौख्याम्बु	२७.२७	सुगतवर्णितं यं ज्ञात्वा	९.७

सुगन्धगन्धमृदिते	३०.२
सुभाषितं बुद्धकोटीनां	४८.१७
सुयत्नतः पूजनीयाः	३३.९
सुराभक्षी वायुवेगा	४.३
सुवर्णद्वीपे सौराष्ट्रे	४१.६
सूत्रक्रियाभिचर्याणां	५१.२२
सूत्रयेन्मण्डलं घोरं	२.११
सूत्रेण वेष्टितान् कण्ठे	२.२२
सूर्येण भेदयेच्चैव	७.३३
सेवयन् देवतायोगं	४०.८
सो इति सोमपानं तु	१५.४
सोमपानवदास्वाद्य	१.१३
सौगतगोष्ठीरता चैव	१६.४
सौगतगोष्ठीरता सैव	१७.१२
सौम्यदृष्टिः प्रकृत्यैव	१८.२
स्तनौ दर्शयेद् या तु	२१.५
स्तम्भयेन्नदीं शकटं	४५.२६
स्त्रीणां सम्भाषणं कुर्यात्	१६.१६
स्त्रीणां हृष्टप्रहासी च	१६.१३
स्थानभेदविधिज्ञस्य	४३.१
स्थूलजिह्वा पिङ्गलाक्षा	२९.२
स्थूलेश्वरे त्रिशकुनौ	४१.१३
स्पृष्ट्वा हसते महाकुली	४२.३
स्फटिकाकारसदृशं	४३.१५
स्फटिकाक्षरसंकाशं	४३.१७
स्मरणेन समायुक्तं	२९.३
स्मरन्ति हृदयोपहृदयं	४३.९
स्रग्दामैर्विविधैश्चैव	२.३०
स्वनामोच्चारणमन्त्राणां	४.५
स्वप्ने प्रदर्शयेत् सर्वं	४३.१२
स्वयम्भूं ततो गृह्य	३०.१३
स्वयोनिषु ज्ञानयुक्ता	४१.५
स्वरः कोकिलध्वनिः	२३.६
स्वराणां चतुर्थेनैव	७.२
स्वराणां त्रयोदशमं तेन	७.८
स्वराणां त्रयोदशेनैव	७.१
स्वराणां द्वितीयेनैव संयुक्ता	७.३
स्वराणां द्वितीयेनैव अष्टमं	७.६
स्वराणां पञ्चदशं चैव	७.५
स्वराणां पञ्चमेन तु	७.१८
स्वराणां पञ्चमेनैव	७.१७
स्वराणां पञ्चमेनैव योजितं	७.१६
स्वरूपैर्विनिविष्टां तु	३४.६
स्वरेतोबिन्दुभिर्बुद्धान्	१.८
स्वर्गभोगमवाप्नोति	५१.९
स्वर्गे मर्त्येषु पाताले	५०.२४
स्वविद्यास्मरणं तस्य	१६.१७
स्व(श्व)शोणितं कपालस्थम्	४६.३
स्वाङ्गे शिरः कृत्वा	३३.३
स्वेच्छाकारी भवेद्योगी	५०.१९
हसति जल्पति रुदति वा	१७.११
हसते गायते चैव	१९.१४
हसते रमते चैव	१९.८
हन्यते मुष्टिनाऽऽकाशं	३.२१
हस्ततले श्रीहेरुकवज्रवाराही	३१.१०
हस्तिचर्मावरुद्धं च	२.१५

हस्तेन हस्तं वादयेद् या तु	२०.९	ही इति मांसं वै	१५.५
हस्तौ दर्शयेद् या तु	२१.४	हीनाधिमुक्तिसत्त्वानां	२५.१
हस्त्यश्वखरकूर्मोष्ट्र	४९.१४	हू इति मृतकं विदुर्धी	१५.६
हा स्वा ये नी च रो	८.६	हूँकारफट्कार: समाख्यात:	८.५
हाहाकारं च कारयेत्	३.२	हृदयं सर्वयोगिन्य:	४८.१
हाहाकारो ह्यत्र सन्निधौ	४२.८	होमयेत् काकपक्षैस्तु	५०.६
हा हा हे हेति चतुर्विंशति	४८.१०	होमान्ते च बलिं दत्त्वा	३७.१०
हा हा हे हेऽष्टविधं हासं	४२.७	ह्रस्वा चैव स्थूलजङ्घा च	१९.१७
हिमाद्रौ चैव काञ्च्यां च	४१.१२		

*

[ख]- चक्रसंवरतन्त्र-गद्यानुक्रमणी

अतिमुक्तिकलतया ------------------ संक्रामयति गर्भम् ९.३

अथ पुरुषं श्वानं ------------------ स्वाभाविको भवति ४७.५

अथ पुरुषं स्त्रीकर्तुकामेन ------------ स स्त्री भवति ४७.४

अथ राजानं राजमन्त्रिणं ------------- विसर्जनं च करोति ४७.३

अनेन मन्त्रेण तर्जन्यग्रेण ------------- पुनः प्रविशति १२.४

अभिमन्त्र्य शिर:कपाले-------------- उपशमयति १२.४

ऊर्ध्वे निरीक्षमाणः ----------------- महावृष्टिं निवारयति १२.४

एवं विधिसमायुक्तं ----------------- एष भगवान् ९.२

ॐ सुम्भ निसुम्भ हुँ हुँ ------------- वज्र हुँ हुँ फट् ३०.२७

कपालमुद्रासम्पुटं ----------------- मनसा मोचयति १२.४

कर २ कुरु २ बन्ध २ -------------- धिलि २ हूँ २ ५.२४

कवचं जपमानो------------------ देवैरपि न दृश्यते १३.२

कवचं जप्तहस्तेन------------------ पादेन हनेन्मोक्षः १३.२

काकस्नायुरज्जुं------------------- सर्वधनान्याकर्षयति ४७.७

गोरोचनया परिजप्य---------------- वाचया मोचयति १२.४

चण्डालभस्मशतजप्तं---------------- पुनर्दृश्यते १२.४

ट्फ हूँ हूँ ह ह ह्रीः ॐ-------------- स स्तम्भितो भवति १२.२

ट्फ हूँ २ ह ह ------------------ ह्रौँ हाँ ॐ ८.४

ततो डाकिनीमहाविद्या -------------- विनाशो भवति ४७.२

तत्र कवचं जपमानोऽध्वानं----------- भयं न भवति १३.२

तत्र वीरैर्योगिनीभिः----------------- धिलि धिलि हूँ हूँ फट् २५.२

द्रव्यमद्रव्यं कर्तुकामः--------------- स्वाभाविको भवति ४७.६

नदीतडागावस्थितः ----------------- वश्या भवन्ति १३.२

परसैन्याभिमुखं ------------------ वज्रशरीरं भवति १२.४

पारिजातयूषं करे ----------------- स हस्ती भवति १३.६

पोतङ्ग्यभिवादनं ------------------ चतुर्वर्गलक्षणम् २४.२

मेघान् त्रासयति ------------------	पृथिवीं चालयति	९.२
यदि क्रुद्धः --------------------	महाग्रहेण गृह्यते	९.३
यस्य गृहे क्रोधाविष्टः --------------	प्रत्यानयनम्	१३.२
यस्य नाम्ना शिखां ----------------	मुक्तेन पुनर्दृश्यते	१२.४
यस्य पुरुषस्य -------------------	तांस्तान् ददाति	११.२
यस्य मुखं निरीक्ष्य ----------------	वाचमपहरति	१३.२
योगिनी लामा ------------------	साधकस्य सिद्ध्यति	१४.२
रूपसहस्राण्यनेकानि----------------	सोमं करोति	९.२
वीरमृतकपादतलचर्म---------------	हृदयोपहृदयम्	१२.३
वृक्षमारुह्य यत्रेच्छति---------------	पुनर्विसर्जयति	९.२
शर्करोटामभिमन्त्र्य ----------------	मनसा मन्त्रमावर्तयति	१२.४
श्रीहेरुकदेवस्य ------------------	सर्वकामार्थसाधकः	७.३८
सर्व कर्माणि करोति --------------	स्मरणान्मारयति	९.२
सर्वगन्धानपहरति-----------------	केनचित् प्रतिहन्यते	९.२
सर्वे तस्य वश्यानुगा ---------------	वा गच्छति	१३.४
स्वरक्तं स्वरेतो वा----------------	रुधिरमाकर्षयति	१३.२
हस्तं सहस्राभिमन्त्रितं --------------	पुनर्जीवापयति	४६.७
हास्वा ट्फ --------------------	येनीकिडाद्धबुर्वस ॐ	४८.३
हा स्वा रं व सं -----------------	हे हे ज्रव श्री	८.२
हा ही है हौ हः -----------------	मारयेद्रिपुम्	४६.२
हृदयजापेन योजन----------------	स्तम्भयति वा	१०.७

*

[ग]- चक्रसंवरविवृतावुद्धृत-वचनानुक्रमणी

अग्नीन्द्रवायु---स्थाननियम: २२
अत्यन्तक्रूररौद्रेषु ५१४
अदेयै: पुत्रदाराद्यै: ४१
अनामाङ्गुष्ठवक्राभ्यां ३८
अप्पकायां निविष्टान् १२८
अभिषेक्ता कर्मकर्ता २९
आइ ण अन्त ण मज्झ १८
आधाराकृत्युपायैश्च २०
आसु प्रयत्नात्परिपूजनीया ४९७
इति प्राप्तुं बोधिं स्थिरविहित ५९१
इदं तत्सर्वमन्त्राणां २३
इदं ते नारकं वारि २४
इयं सा सर्वबुद्धानां ३८
एवं मया श्रुतमिति---संगातव्या: १९
एहु सो परम महासुह १८
ऐश्वर्यस्य समग्रस्य ७
कण्ठिकावलयकुण्डल ४९३
कनकशशिदिनकराणां ८८
कल्पनाजालनिर्मुक्तो ५
कूटयोर्हानियोगेन ७८
क्रियाज्ञानं सुगुप्तं च ४९३
गजचर्मपटार्द्रधृग् ३३
गुरुराचार्यशब्देन २९
गुलिकाबन्धक्रमशो ८८
गुह्यशुक्रं विशालाक्षो २३
घृतपूर्णं यथा भाण्डं १९
चतुर्णां क्लेशादिमाराणां ७
चतुर्थं तत्पुनस्तथा १८
चतु:क्रोधसमायुक्त ५१३
चित्तमेव महामारम् ५८४
चित्तं मनोऽथ विज्ञानं विज्ञप्ति: २३
ज्ञानस्याथ प्रयत्नस्य ७
डाकिनी च तथा लामा ५२८
डै वैहायसगमने ६
तत्त्वसंग्रहे परमाद्ये ५१३
तत्र सामान्यतन्त्रोक्तो २८
तथा नश्यति पापं च १९
तथा रागाग्निदग्धाश्च ४
तस्माद् हि विरागित्वं ४
तादृशै ह्याचार्ये---स्यात् ५२५
ताभ्यां [नि]पीडयेद् योगी १८
ता: पूजिता भक्तिमतो जनस्य ४९७
त्वयापि हि सदा धार्या ३८
द्रवन्तं द्रवते सर्पि: १९
द्वयं शब्दात्मकमिति ३८
न कर्माणि प्रणश्यन्ति ५८९
न बोधिं निष्क्लेश: क्षतगति: ५९१
न विद्यते सहजं त्रिष्वे(षु) १७
नहि कार्यमनुद्दिस्य २
न हि चित्तं चित्तं जानाति ५९४
नागृहीतविशेषणा---प्रवर्तते ४८
नादिं गादिं तथा हादिं २५

नान्यद् विरागसदृशं	४	यथा पावकदग्धाश्च	४
नाफलित्वा विनश्यन्ति	५८९	यस्मिन् कर्मणि विद्यन्ते	२८
नित्यं सुसमयाचार्यं	४१	यातीतैर्भाषिता बुद्धैः	२
निर्लेपं निर्विकारं शिवमसम	८२	यावत्प्रयोजनं नोक्तं	२
नैकाकारप्रवृतं त्रिभव	८३	यो नैको नाप्यनेकः स्वपरहित	८२
पञ्चमुद्राप्रतिबद्धं	४९३	रहस्ये परमे	१९
परमार्थविकल्पोऽपि	७	रात्रौ तु प्रकटं नित्यं	४९३
परीक्षाधिकृतं वाक्य	४	रुकारापगतं व्यूहं	५९१
परोच्छिष्टं न भुञ्जीत	५००	रुकारोऽपगतव्यूहं	५
पश्चादुत्पद्यते ज्ञानं	१८	रुकारो रूपनिर्मुक्तं	५
पृथिव्यप्तेजोवायवः	२०	रूपशब्दादयः कामाः	२३
प्रज्ञाबाध्याश्च ये क्लेशाः	८	लोकातीतामचिन्त्यां सुकृत	८३
प्रत्युत्पन्नाश्च संबुद्धा	२	विज्ञानाच्छून्यतानाम	५९४
प्रबन्धस्तन्त्रमाख्यातं	२०	विण्मूत्रशुक्ररक्तानां	२६
प्रयोजनं सपिण्डार्थः	२	व्यतिरिक्ता व्यतिरेकित्वं	५९४
बध्यन्ते [चैव] भावेन	५९१	शून्येभ्यो धर्मेभ्यः----प्रजायन्ते	५१५
बुद्धानां सर्वलोकप्रसृतमविरतो	८३	शौचं च त्रिविधं ज्ञेयं	४९३
भकारो भग इत्याहुः	४९	श्रद्धाधनं प्रज्ञा---स्मृतिधनं चेति	५०३
भक्षयेद् विधिना नित्यम्	२६	श्रीकारमद्वयं ज्ञानं	५९१
भञ्जनं भगमित्याह	८	श्रीकारमद्वयं ज्ञानं हेकारो	५
भावेनैव विमुच्यन्ते	५९१	श्रीकारमद्वयं ज्ञानं [हेति]	५
भ्रूमध्यं वज्रवरटकम्	३३	षण्णामनन्तरातीतं	१०
मण्डलं तस्य रक्षार्थं	५१३	सत्कायदृष्टेरन्यत्र	८
मन्त्रं मन्त्रमिति प्रोक्तं	५५९	सत्त्वानां पाकहेतोः	८३
महामांसेन सर्वेषां	५१४	सद्धर्माध्यापको यश्च	२९
मायाजाले महातन्त्रे या	२	सन्तुष्टचित्ता वरदा भवन्ति	४९७
मोहो निदानं दोषाणाम्	८	समा(सा)क्षिकं वदन् वक्ता	७
यज्ञोपवीतं भस्म च	४९३	सम्बन्धानुगुणोपायं	४

सर्वकामोपभोगैस्तु	२३	सोमपानवदास्वाद्य	३८
सर्वस्य चैव शास्त्रस्य	२	स्वभावशुद्धा: सर्वधर्मा:	३७
सर्वासां दोषजातीनां	८	स्वभावशुद्धै: सन्सत्त्वै:	३७
संचोद्य परिहारश्च	२	स्वसव्येतरपाणेस्तु	१८
सा चाविद्या तत: स्नेह:	८	हठेनाक्रम्य भुञ्जीत	५००
सामग्रीं प्राप्य कालं नो(च)	५८९	हस्तिचर्मावरुद्धं च	१७
सुखं समिति चाख्यातम्	६	हार्या: प्रभावात्	१२८
सुभाषितं बुद्धकोटीनां	२	हेरनिर्जितमारारी	५

*

[घ]- सङ्केत-सूची

अभि० को०	=	अभिधर्मकोश
गु० त०	=	गुह्यसमाजतन्त्र
गु० स०	=	गुह्यसमाजतन्त्र
च० सं०	=	चक्रसंवरतन्त्र
दो० को०	=	दोहाकोष
ना सं०	=	नामसङ्गीति
प्र० वा०	=	प्रमाणवार्तिक
यो० सं०	=	योगिनीसञ्चारतन्त्र
हे० त०	=	हेवज्रतन्त्र

*

རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་དཔལ་བདེ་མཆོག་ཉུང་ངུའི་ཚིགས་བཅད་ཀ་མད་གོ་རིམ།

གཞུང་ཚིག	ལེའུ་ / ཤློཀ་ཨང་།
ཀླའི་ས་བོན་བཏུས་ནས་ནི།	༤ / ༤༣
ཀཱ་ཀའི་གདོང་སོགས་བརྒྱད་པོ་ནི།	༢༦ / ༨
ཀཱ་མ་རཱུ་པ་སླཱ་ལ་ཤ།	༩༡ / ༧
ཀཱ་ཞེས་བྱ་བ་འདོད་པ་ཡིན།	༡༤ / ༡༠
ཀུ་ཞེས་དེ་བཞིན་མཁའ་འགྲོ་མ།	༡༤ / ༥
ཀུ་ལུ་ཏ་དང་དགོན་པ་དང་།	༩༡ / ༦
ཀུན་ཏུ་ཕྱུག་དང་ཞབས་ལྡན་ཞིང་།	༤༠ / ༢༦
ཀུན་ནས་ཚཊ་དགའི་ལེཊ་སྤྱོར་བས།	༢༧ / ༡༦
ཀོ་ས་ལར་ནི་ཤ་ཟ་བ།	༩༡ / ༡༣
སྐྱེ་བ་གཅིག་དང་སྐྱེ་བ་གཉིས།	༩༨ / ༩
སྐྱེས་པའམ་གལ་ཏེ་གཡོན་པ་ཀུན།	༩༡ / ༡༧
དཀར་མོ་བདག་པོ་རྣམ་གཞོན་ཅིང་།	༤༡ / ༡༤
དཀྱིལ་འཁོར་ཀུན་ཏུ་རིན་ཆེན་དང་།	༢ / ༢༩
དཀྱིལ་འཁོར་སྟེང་དུ་དོར་བར་བྱ།	༣ / ༦
དཀྱིལ་འཁོར་ས་ནི་ཉེར་བྱུགས་ཏེ།	༢ / ༢
སྐད་ནི་ཆེན་པོར་རབ་སྒྲ་བ།	༡༦ / ༡༣
སྐལ་བ་ཆེན་པོར་ཀུན་ཚོགས་ཤིང་།	༡༧ / ༨
སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་དབུས་སུ་ནི།	༩ / ༤
སྐྱེ་བོ་གུས་པས་དེ་རྣམས་མཆོད······།	༢༥ / ༢༣

གཞུང་ཚིག	ལེའུ་ / ཤློཀ་ཨང་།
སྒྲ་ནི་དེ་བཞིན་འཁྱིལ་བ་དང་།	༡༨ / ༡༣
ཁཊྭཱ་རྀ་ཀཱའི་རིགས་ལས་བྱུང་།	༡༧ / ༡༤
ཁ་ཆུ་སོ་ཤིང་དག་དང་ནི།	༤༠ / ༢
ཁ་བའི་རི་དང་ཀཱུ་ཡྱིར་ནི།	༩༡ / ༡༣
ཁུ་ཚུར་མ་བཀྲོལ་དེ་སྲིད་དུ།	༩༣ / ༢༥
ཁྱི་ཡི་སྐྱེ་གནས་བརྒྱར་སྐྱེས་ཏེ།	༢༨ / ༧
ཁྱིམ་དང་ཞིང་དུ་རྣམ་གནས་པ།	༢༦ / ༥
ཁྱིམ་དུ་མདུད་རྩེ་གསུམ་པ་ཡང་།	༡༨ / ༡༡
ཁྱིམ་དུ་རྡོ་རྗེ་འབྲི་བ་དང་།	༡༧ / ༡༣
ཁྱིའི་ལུས་ལས་སྐྱུགས་པའམ།	༤༠ / ༤
ཁྲུ་གང་ཁྲུ་བཞིའམ་ཁྲུ་བརྒྱད་པ།	༢ / ༡༣
ཁྲོ་བོ་བཞི་དང་ཡང་དག་ལྡན།	༣༠ / ༢༤
མཁའ་འགྲོ་ཀུན་དངོས་སེམས······།	༡ / ༢
མཁའ་འགྲོ་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་འདིས།	༩༡ / ༡༦
མཁའ་འགྲོ་དེ་བཞིན་ལཱ་མ་དང་།	༡༩ / ༢
མཁའ་འགྲོ་དྲ་བའི་སྦྱོར་བར་ནི།	༡༩ / ༨
མཁའ་འགྲོ་མ་མཆོག་ཉི་ཤུ་བཞི།	༢༨ / ༩
མཁའ་འགྲོ་མ་དང་ལཱ་མ་དང་།	༣ / ༡༦
མཁའ་འགྲོ་མ་དེ་དཔལ་ལྡན་ནི།	༡༧ / ༤

མཁའ་འགྲོ་མ་ནི་ཀུན་གྱི་གནས། ༧༥/༥
མཁའ་འགྲོ་མ་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱི། ༧༥/༤
མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ངེས་འགྲོ་བའི། ༢༢/༤
མཁའ་འགྲོ་མ་ཡི་ཚོགས་འདི་དག ༡༥/༢༠
མཁའ་འགྲོ་མ་ཡིས་ཟློས་གྱུར་ཀྱང་། ༣༥/༤
མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་རྟག་དགའ་བ། ༣༥/༥
མཁའ་འགྲོ་མར་བཅས་དགེ······། ༣༥/༦
མཁའ་འགྲོའི་སྙིང་ནི་འཇོམས······། ༦/༩༧
མཁའ་ལ་ཁྲུ་ཚུར་གྱིས་བརྡེག་དང་། ༣/༢༡
མཁྲུར་བའམ་ཀོ་སྙི་དག་དང་ནི། ༡༩/༡༥
འཁོར་ལོ་གང་གི་དཔྲལ་བའམ། ༡༥/༥
འཁོར་ལོ་འདི་ནི་སྙིང་གར་དགོད། ༢/༦
འཁོར་ལོའི་གོ་ཆ་ཆང་འཚོང་མ། ༧/༢
གང་གི་ཁ་ཡི་དྲི་ཞིམ་ཞིང་། ༧༩/༤
གང་གི་མཁྲུར་ཚོས་དག་ཏུ་ནི། ༡༨/༡༢
གང་གི་དཔྲལ་བར་ཐིག་ལེ་དང་། ༡༥/༡༦
གང་གི་བཞིན་ནི་ཡོངས་རྒྱས་པར། ༡༨/༢
གང་གིས་ལག་གཡོན་སྟོན་པ་ནི། ༢༠/༢
གང་དག་རབ་གྲུབ་བྱེད་པའི་སྔགས། ༣༤/༢
གང་ཞིག་ཁར་ནི་སོར་མོ་འཛུག ༢༠/༧
གང་ཞིག་མཁའ་ལྡིང་སྟོན་པ་ནི། ༢༠/༤
གང་ཞིག་གུང་མོ་སྟོན་བྱེད་པ། ༢༢/༤
གང་ཞིག་མཆུ་ནི་སྟོན་བྱེད་པ། ༢༡/༣
གང་ཞིག་རྟག་ཏུ་འདོད་གྱུར་པ། ༣/༢༢
གང་ཞིག་ལྟོ་བ་རྗེབ་པ་ནི། ༢༠/༣
གང་ཞིག་དྲན་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། ༧༥/༢
གང་ཞིག་འདི་ནུ་རྟག་སྒོམ་པ། ༤༡/༦
གང་ཞིག་ནམ་མཁའ་སྟོན་བྱེད་པ། ༢༡/༨
གང་ཞིག་ནི་མ་སྟོན་བྱེད་པ། ༢༡/༤
གང་ཞིག་ནུ་མ་ལ་རེག་པ། ༢༠/༡༢
གང་ཞིག་པ་ཏི་ས་སྟོན་པ། ༢༢/༩
གང་ཞིག་པུས་མོ་སྟོན་བྱེད་པ། ༢༡/༦
གང་ཞིག་པུས་མོ་ལ་རེག་པ། ༢༠/༤
གང་ཞིག་དཔྲལ་བ་སྟོན་པ་ན། ༢༡/༢
གང་ཞིག་དཔྲལ་བ་སྟོན་བྱེད་པ། ༢༢/༨
གང་ཞིག་མིག་ནི་རྣམ་འཛུམས····། ༢༠/༡༢
གང་ཞིག་ཡན་ལག་བསྐྱོད་པ་དང་། ༢༠/༨
གང་ཞིག་ལག་པ་སྟོན་བྱེད་པ། ༢༡/༧
གང་ཞིག་ལག་པ་གཡས་པ་སྟོན། ༢༠/༡༠
གང་ཞིག་ས་ནི་སྟོན་བྱེད་པ། ༢༢/༦
གང་ཞིག་སེན་མོས་སེན་པོ་རེག ༢༠/༡༡
གང་ཞིག་སོ་ནི་འཆའ་བྱེད་པ། ༢༠/༩
གང་ཞིག་སོ་ནི་སྟོན་བྱེད་པ། ༢༢/༥
གང་ཞིག་སོར་ཚིགས་སྟོན·····། ༢༡/༥

གང་ཞིག་གསང་བ་སྟོན་བྱེད་པ།	༢༡/༦
གང་ཡང་ལེགས་མཆོད་·······།	༢༨/༡
གང་ཡང་ས་འོག་མཁའ་འགྲོ་མ།	༢/༢༥
གང་ལ་སྲུཏ་ནི་མངོན་པར་བྲི།	༤༧/༢༠
གལ་ཏེ་ཁྲི་བོ་འབར་བ་དང་།	༤༦/༤
གལ་ཏེ་དངོས་གྲུབ་མཆོག·····།	༢/༢༨
གལ་ཏེ་དཔའ་བོ་མི་འཛིཏ་ན།	༣༩/༣
གལ་ཏེ་ལས་འདི་མ་བཏང་ན།	༣༥/༦
གུས་པ་ཉིད་ལ་རབ་སྦྱིན་བྱ།	༡༦/༢
གོ་ཆ་ཆེན་པོས་ཡང་དག་སྲུང་།	༧༡/༤
གོ་སྣ་ཡུ་ནི་བསྲེག་བྱས་པས།	༧༠/༡༥
གོ་སྣ་ཡུ་དང་ཤ་ཆང་གིས།	༧༠/༡༢
གོ་སྣང་ས་ནི་སྦྱོས་བྱེད་བསྲེ	༧༠/༢,༡༦
གོས་མཐའམ་ཡང་ན་ཤིང·······།	༢༠/༢
གོས་དང་ཕྱག་རྒྱ་ལྷ་ལ་སོཏ།	༧༡/༢
གོས་བཟང་གིས་ནི་ལེགས·····།	༢/༢༣
གོས་བཟང་གཙང་ཞིང་ཞི····།	༡༩/༣
གྲངས་དེ་དག་གི་ནང་ཚུད་པར།	༣༠/༦
གྲོང་དང་གྲོང་དུ་དེ་སོང་ནས།	༢༥/༢
གྲོང་དང་གྲོང་རྡལ་དེ········།	༤༣/༤
གླང་པོ་ཉིད་དུ་སྟོན་དུ་གང་།	༡༤/༤
གླང་པོ་ཏྲ་དང་དེ་བཞིན་སྦྱིན།	༤༧/༢༨
གླང་པོ་ཏྲ་དང་བོང་བུ་དང་།	༤༩/༡༤
དགུག་པ་ཡི་ནི་སྦྱོར་བ་དག	༤༧/༢༩
དགོད་ཅིང་དགའ་བ་ཉིད་དག་དང་།	༡༩/༨
དགོད་དང་ལྷ་དང་ལག་འཛིན་གྱིས།	༣/༢༣
དགྲ་ཡི་མིང་ཡང་བྲི་བར་བྱ།	༤༤/༡༣
མགུལ་རྒྱན་གདུ་བུ་ན་རྒྱན་དང་།	༢༥/༡༨
མགོ་ནི་འཁྲུག་པར་བྱེད་པ་སྟེ།	༡༦/༡༥
མགོ་ལ་མེ་ཏོག་དྲི་དང་ལྡན།	༡༦/༩
མཁྲིན་པ་སྐྲད་བུས་དཀྲི་བ་དང་།	༢/༢༣
འགྲུབ་པ་ཉིད་དུ་ཐེ་ཚོམ་མེད།	༤༤/༡༡
འགྲོ་བ་རྣམས་ཀྱང་ངེས་གནོན་པར།	༣/༢༠
རྐོད་སྲ་རྒྱུ་མེད་པ་ཏུ་ནི།	༡༥/༡༡
རྒྱལ་པོ་དཔུང་དང་བཅས་པར་ནི།	༤༠/༤
རྒྱལ་སྲན་ལ་ནི་སུམ་ཅུ་གཉིས།	༤༠/༧
རྒྱལ་མཚན་མདུང་འདྲར·······།	༢༣/༨
རྒྱུད་འདི་ཏུ་ནི་སྒྲུབ་པ་པོ།	༢༦/༨
སྒྲ་ཡི་ཚུལ་ལས་ངེས་འབྱུང·····།	༡/༤
སྒྲུབ་པ་པོ་ནི་སྡིགས་ལུས་ཅན།	༣༩/༧
སྒྲུབ་པ་པོ་ཡི་བདེ་བའི་རྒྱུ།	༢༥/༢༥
སྒྲུབ་པ་པོ་ཡི་ཚིག་ཉིད་ཀྱིས།	༤༧/༢༥
སྒྲུབ་པ་པོ་ཡི་གསང་གནས་སུ།	༤༧/༡༠
སྒྲུབ་པ་པོ་ཡིས་དུས་རྟག་ཏུ།	༣༢/༡༧

སྒྲུབ་པོ་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ཀྱི།	༩༠/༨
སྒྲུབ་པོ་གལ་ཏེ་དངོས་གྲུབ་འདོད།	༢/༢༠
སྒྲུབ་པོ་སྔགས་ང་ཕྱུག་རྒྱུ་དག	༨/༧
སྒྲུབ་པོ་རྣམས་ལ་དཔལ་སྦྱིན་པའོ།	༧/༤༦
སྒྲུབ་པོ་རྣམས་ལ་ཕན་འབྱུང་བའོ།	༧/༩༤
སྒྲུབ་པོ་དཔའ་བོ་ཉིད་འདོད་པ།	༣༥/༨
སྒྲུབ་པོའི་ཡོན་ཏན་རྒྱ་ཆེན་པོ།	༢༧/༢༦
སྒྲུབ་པོས་གི་ཞང་གིས་ཤུགས་ལ།	༩༤/༢༢
སྒྲོན་མ་སྐྱོས་བྱེད་བཅས་པ་དང་།	༩༠/༢
བགེགས་མེད་ཇི་བཞིན་དེ་གྲུབ་པ།	༢༥/༡༤
བརྒྱ་ཕྱེད་ཕྱེད་པ་ཡང་དག་ བླང་།	༣༠/༧
བསྒོམས་ནས་ལན་བདུན……།	༩༣/༡༩
བསྒྲུབ་པ་ལ་ནི་གནས་པ་ཡི།	༢༦/༡༢
བསྒྲུབ་བྱ་འགོག་པར་གྱུར་པ་ནི།	༣༤/༩
བསྒྲུབས་ན་ཚེ་ཟད་པ་དང་ནི།	༡༩/༣
ངག་གི་དབང་ཕྱུག་མ་རྣམས་དང་།	༩༣/༧
དངོས་གྲུབ་སྒྲུབ་པ་པོ་ལ་ནི།	༩༡/༩
དངོས་གྲུབ་སྒྲུབ་པའི་དཀྱིལ……།	༣༢/༢,༤
དངོས་གྲུབ་ཚོ་ག་ལ་སྤྱོད་ཚེ།	༢༧/༧
དངོས་གྲུབ་དང་ནི་བདེ་བ་དག	༨/༤
དངོས་པོ་ཀུན་གྱིས་སྒྲུབ་པ་པོས།	༣༢/༥
མང་ལ་ནི་རྣམ་པར་འཕོ་འགྱུར་ཏེ།	༩༦/༥
མངོན་འགྱུར་སེམས་ནི………།	༩༩/༣༢
མངོན་པར་ཕྱོགས་ཏེ་བརྒྱ……།	༩༤/༡༢
མངོན་པར་ཞེན་པས་ལྷ་བ་དང་།	༡༧/༩
ལྷ་བཅུ་རྩ་གཉིས་པ་ཉིད་ནི།	༧/༡༨
ལྷ་པ་ཡི་ནི་གཉིས་པ་དང་།	༤/༣༢
ལྷ་པ་ཡི་ནི་དང་པོར་ངེས།	༤/༣༦
ལྷ་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་དང་།	༤/༩, ༤༧
ལྷ་པ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་དང་།	༤/༣༤, ༩༠
ལྷ་པ་ཡི་ཡང་ལྷ་པ་དང་།	༤/༨
ལྷ་པ་ཡི་ཡང་ལྷ་པ་ལ།	༤/༢༧
ལྷ་པ་ཡི་ཡང་བཞི་པ་དང་།	༤/༥,༡༢
ལྷ་པའི་བདག་ཉིད་ཡོངས……།	༤/༤༤
སྔགས་ཀྱི་བཟླས་བརྗོད……།	༤༠/༡༢
སྔགས་དང་ཕྱག་རྒྱར་ཡང……།	༢༨/༦
སྔགས་དང་ཕྱག་རྒྱས………།	༢༧/༩
སྔགས་འདི་བསྒྲུགས་པས………།	༩༥/༩
སྔགས་པས་ཉིས་འགྱུར…………།	༢/༡༢
སྔགས་པས་འབྲས་ཀྱི་ཕྱེ་མ་ལས།	༩༨/༢
སྔར་བཤད་པ་ཡི་ཚོ་ག་ཡིས།	༩༥/༡༦
ཙམ་བི་ཀ་ནི་སྔོང་པ་སྟེ།	༣༡/༡༢
གཅིག་ཏུ་བྱས་ནས་བརྟག་པར་བྱ།	༩༩/༤
བཅུ་དྲུག་པ་ནི་གདན་དུ་བྱ།	༤/༣༨

ཆང་འཐུང་མ་དང་རླུང་ཤུགས་མ། ༧/༢
ཆུ་དང་བཅས་པར་བླངས་ནས་ནི། ༧༤/༦
ཆོ་ག་ཇི་བཞིན་རྣམ་པ་ཡིས། ༣༧/༦
ཆོ་ག་ཇི་བཞིན་སྦྱིན་པར་བྱ། ༢༥/༣༡
ཆོས་ཀྱི་སྐུ་ཡི་ལུས་ཅན་གྱི། ༣༡/༧
ཆོས་ཀྱི་སྐུ་ཡི་ལུས་ཅན་དུ། ༡༠/༢
ཆོས་དང་ལྡན་པའི་རྒྱལ་པོར······། ༢༥/༣༠
ཆོས་དོན་འདོད་དང་ཐར་པ་ཡི། ༣༠/༡༨
མཆུ་གཉིས་གློ་ཞིང་མིག་དཀྲུས་རིང་། ༡༩/༦
མཆོད་ཕྱིར་ཐོགས་ནི་ཡོངས······། ༢༥/༡༥
མཆོག་ལ་ལྡན་ཅིག་དགུག······། ༢༨/༨
མཆོད་བཞི་དཔའ་བོ་ཆེན་པོ་ནི། ༡/༡༧
ཇི་སྐད་གསུངས་བཞིན་སློབ་མ་ནི། ༢/༡༧
ཇི་སྙེད་རྣལ་འབྱོར་ཚོགས······། ༢༦/༧
ཇི་སྲིད་ཁྲ་ཚུར་མ་བཀྲོལ་བར། ༧༢/༢༨
ཇི་སྲིད་དེ་ནི་མ་ཚིག་པ། ༧༤/༢༡
ཇི་སྲིད་དྲོ་བའི་བུ་བ་དག ༢༨/༥
ཇི་སྲིད་ལུས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱང་། ༢༢/༨
མཛུག་པ་སྦྲ་ལ་སོགས་པ་ནས། ༤༡/༢
འཇིག་རྟེན་གསུམ་ན་རྟེན······། ༣༥/༡༡
འཇིགས་པའི་སྒྲ་ནི་རྣམ་མང་པོ། ༣༩/༢
རྗེས་སུ་ཆགས་པས་གསོལ······། ༡༥/༩
ཉལ་དང་མ་ཉལ་འདུག་པའམ། ༤༠/༥
ཉི་མ་ཡིས་ནི་དབྱེ་བྱ་སྟེ། ༥/༢༢
ཉི་མའི་དབུས་སུ་བསམས······། ༧༢/༡༤
ཉི་ཤུ་རྩ་གཉིས་པ་དང་ལྡན། ༣༠/༡༠
ཉི་ཤུ་བཞི་པ་དེ་ནས་བཏུ། ༤/༣༥
གཉིས་པ་ཉིད་ནི་འབད་པ་ཡིས། ༡༩/༡༦
གཉིས་པ་ཡང་ནི་འབད་པ་ཡིས། ༡༩/༢༢
གཉིས་པ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་ལ། ༤/༤༢
གཉིས་མེད་ཡེ་ཤེས་རྣལ་འབྱོར······། ༧༤/༣༡
མཉམ་པར་བཞག་པས་ཟླ་དུར་མི། ༤༠/༦
མཉེས་བྱེད་རྣམ་པར་དག་པ་དང་། ༢༦/༡༤
སྙིང་པོའི་སྔགས་ནི་བཟླས་ནས་སུ། ༧༩/༩
སྙིང་པོའི་ཉེ་སྙིང་ཏག་དྲན་ན། ༧༢/༩
ཊཱ་ཞེས་བྱ་བ་སྐྱེས་བུར་བཤད། ༡༤/༢
ཏིལ་མར་སྦྱ་ལུ་བཏགས་པ་དང་། ༣༥/༤
བཏོན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཐར་བར་འགྱུར། ༧༧/༡༢
རྟག་ཏུ་ག་བུར་དྲི་དང་ལྡན། ༡༦/༡༠
རྟག་ཏུ་བླུ་ལ་མཁས་པ་དང་། ༡༩/༢༢
རྟག་ཏུ་རྒྱལ་སྲིད་དག་ལ་གནས། ༡༨/༡༧
རྟག་ཏུ་མངོན་པར་རྩེ་བྱེད་དེ། ༣༩/༧
རྟག་ཏུ་དེ་ཡི་མཆི་མ་འབྱུང་། ༧༢/༤
རྟག་ཏུ་པདྨའི་རྩ་བའི་དྲི། ༡༦/༥

རྟག་པ་ཉིད་དུ་འཛིན་པ་ནི། ༢༥/༡༨
ལྟེ་བར་དགོད་བྱ་དཔའ་བོ་ནི། ༢/༡༨
སྟེང་དང་འོག་ཏུ་ཕོ་ཉ་འགྲུབ། ༣༢/༡༠
བརྟན་པར་དངོས་གྲུབ་ཐམས……། ༣༡/༥
བརྟུལ་ཞུགས་མ་ཉམས་བརྟུལ……། ༢༥/༡༠
བརྟུལ་ཞུགས་གཙང་སྦྲ་མེད……། ༤༠/༡༥
ཐམས་ཅད་དགྱེས་ཤེ་གཉིས……། ༤༡/༡༧
ཐམས་ཅད་སྒྲུབ་པོ་དེ་ཡི་ནི། ༣/༡༧
ཐམས་ཅད་དུ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མ། ༣༥/༡༤
ཐམས་ཅད་དེར་ནི་འཇིགས་བྱེད་པ། ༡༧/༥
ཐལ་མོ་མེ་ཏོག་གིས་བཀང་སྟེ། ༣/༨
ཐུང་ཞིང་བྱིན་པ་སྦོམ་པ་དང་། ༡༩/༡༧
ཐུན་མོང་དངོས་གྲུབ་ཐམས……། ༢༩/༣
ཐོད་པ་དགྲ་སྟ་མཆེ་བ་དང་། ༡༧/༡༣
ཐོད་པའི་མཆོད་ཡོན་སྣོད་དུ་ནི། ༣༤/༧
ཐོད་པའི་དུམ་བུ་ལ་སོགས་པ། ༨༥/༡༨
ཐོད་པའི་ཕྲེང་བའི་རྒྱན་དང་ལྡན། ༢/༡༤
ཐོད་པས་སྤྱི་བོར་བརྒྱན་བྱས་ཤིང་། ༢/༤
མཐོང་བ་ཙམ་གྱིས་སོད་ལ་ནི། ༨༣/༡༦
མཐར་གནས་པ་ཡི་གཉིས་པ་ཉིད། ༤/༣༥
མཐར་གནས་པ་ཡི་དང་པོ་གང་། ༤/༣༠
མཐར་གནས་པ་ཡི་བཞི་པ་དང་། ༤/༤
མཐར་གནས་པ་ཡི་གསུམ་པ་དང་། ༤/༧
ད་ནི་རབ་ཏུ་བཤད་བྱ་བ། ༨༠/༡
དག་བྱེད་ཟས་ལ་བཟའ་བར་བྱ། ༢༥/༨
དང་པོ་སྙིང་ག་ཉིད་དུ་སྟེ། ༦/༨
དང་པོ་ཡི་ནི་དང་པོ་དང་། ༤/༢༤,༨༩
དང་པོའི་གཉིས་པ་གང་ཡིན་དང་། ༤/༡༣,༡༥
དང་པོའི་དང་པོ་གང་ཡིན་དང་། ༤/༡༡
དང་པོའི་དང་པོ་ཉིད་དང་ནི། ༤/༢༨
དང་པོའི་དང་པོ་དེ་བཞིན་ཏེ། ༤/༤༠
དད་པ་ཉིད་ཀྱིས་བླང་བྱ་ཡི། ༢༦/༡༣
དམ་ཚིག་ཅན་གང་རྗེས་ཆགས་པ། ༢༣/༢
དམ་ཚིག་འཇོམས་ཤིང་ངན་སྤྱོད་དེ། ༣༥/༨
དམ་ཚིག་ཉམས་པས་དཀྱིལ་འཁོར་དུ། ༡/༡༡
དམ་ཚིག་གནས་ལ་དོན་ཅི་བཞིན། ༢༥/༤
དུར་ཁྲོད་མེ་ལ་ཕྱེ་མ་བསྲེག ༨༨/༦
དུར་ཁྲོད་ལེགས་པའི་བློ་གྲོས་ཉིད། ༤༠/༢༣
དུར་ཁྲོད་ལྷག་མ་ཐལ་བས་སྦྱོས། ༨༤/༡༤
དེ་ཉིད་བསྡུས་ལས་གང་གསུངས་དང་། ༢༧/༢༣
དེ་ཉིད་དབྱེ་བར་ཕྱེ་ནས་ནི། ༣༦/༤
དེ་ལྟར་ཆོ་ག་བཞིན་དཀྱིལ་འཁོར། ༣/༣
དེ་ལྟར་མཆོད་བྱས་དེ་ནས་ནི། ༢༣/༡༠
དེ་ལྟར་བདག་ཉིད་གོ་བགོས་ནས། ༢/༥

དེ་ལྟར་བདག་ཉིད་རབ་བསྲུངས་ཤིང་།	༢/༡༠
དེ་ལྟར་སྣ་ཚོགས་པག་དག་སྟེ།	༥༩/༣
དེ་ལྟར་དཔའ་བོས་རིགས་རིམ་གྱིས།	༥༠/༧
དེ་ལྟར་རབ་དྲེགས་མཐོང་ནས་ནི།	༡༩/༩
དེ་དག་ཐམས་ཅད་རིམ་བཞིན་དུ།	༥༤/༤
དེ་དག་ཐམས་ཅད་ལེགས་བསྡུས་ལ།	༤/༦
དེ་དང་དེ་ཡི་གཟུགས་སྣང་བར།	༡༥/༤
དེ་དང་དེ་ཡི་གཟུགས་སུ་ནི།	༥༩/༡༠
དེ་དང་དེར་ནི་དེ་ཡི་ཚེ།	༥༣/༢༢
དེ་དང་ལྡན་ཅིག་བདེ་བར་བྱ།	༢༧/༡༢
དེ་འདྲའི་དཔའ་ཆེན་རྣལ་འབྱོར་མ།	༤༡/༡༢
དེ་འདྲའི་བུད་མེད་མཐོང་ནས་ནི།	༡༩/༡༨
དེ་ནས་སྐུ་གསུམ་བཤད་པར་བྱ།	༡༠/༡
དེ་ནས་སྐྱེ་གནས་བརྒྱ་བཅིངས་པ།	༥༤/༧
དེ་ནས་མཁའ་འགྲོ་མ་དྲ་བའི།	༣༥/༡
དེ་ནས་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ནི།	༥/༡
དེ་ནས་གོ་ཆའི་ལས་རྣམས་ནི།	༡༢/༡
དེ་ནས་གོ་རིམ་བཟློག་པས་གཟུང་།	༣༠/༡༧
དེ་ནས་གྲུབ་པའི་རྣལ་འབྱོར་ཆེ།	༣༩/༡
དེ་ནས་སྒྲུབ་པ་པོ་དེ་ཡིས།	༥༤/༢༤
དེ་ནས་སྒྲུབ་པོའི་མཆོག་ཀུན་ནི།	༣༣/༡
དེ་ནས་སྒྲུབ་པོས་དངོས་ཀུན་གྱིས།	༣/༡
དེ་ནས་སྒྲུབ་པོས་རབ་ངེས་པར།	༣/༡༤
དེ་ནས་དངོས་གྲུབ་བསྒྲུབ་བྱ་བ།	༤༠/༢༧
དེ་ནས་ཐུགས་འདི་འགྲུབ་འགྱུར་ཏེ།	༣༣/༤
དེ་ནས་ཉི་ཤུ་གཅིག་པ་སྣང་།	༤/༥༥
དེ་ནས་ཉིན་ཞག་བཅུ་གཅིག་པར།	༥༤/༥
དེ་ནས་ཉེ་བའི་སྙིང་པོ་ནི།	༡༢/༡
དེ་ནས་རྙེད་དཀའ་རྣལ་འབྱོར་མ།	༡༧/༡
དེ་ནས་ཐམས་ཅད་ཆོས་འབྱུང་བར།	༤/༡
དེ་ནས་དོན་ཀུན་འདོད་པ་ཡི།	༢༤/༡
དེ་ནས་སྡོམ་པ་རྣམས་ལ་ནི།	༡༤/༡
དེ་ནས་བཛྲ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མའི།	༣༨/༡
དེ་ནས་རྣལ་འབྱོར་རྒྱུད་དུ་ནི།	༢༦/༦
དེ་ནས་དཔའ་བོ་མེ་ཏོག་ཆུ།	༥༢/༡
དེ་ནས་དཔའ་བོའི་སྦྱོར་བརྟུལ་ཞུགས།	༢༧/༡
དེ་ནས་སྤྱན་རས་གཟིགས་བཤད་དེ།	༥༣/༡
དེ་ནས་པོ་ཏ་ལ་བརྟེན་ཏེ།	༥༥/༡
དེ་ནས་པོ་ཏ་རབ་སྦྱིན་ཞིང་།	༣༣/༣
དེ་ནས་ཕྱག་རྒྱའི་མཆོད་ཆེན་དང་།	༣༦/༡
དེ་ནས་བླ་མ་དག་ལ་ཡོན།	༣/༡༡
དེ་ནས་དབྱངས་ཡིག་བཅུ་གསུམ་ཉིད།	༧/༡
དེ་ནས་འབར་བའི་བྱིན་ཟ་ལ།	༣༥/༥
དེ་ནས་སྦྱིན་སྲེག་ཚོ་ག་ནི།	༤༠/༡

དེ་ནས་ཟླ་བའི་གསང་སྔགས་ཀྱི། ༧/༡

དེ་ནས་ཛྷ་ཛ་བཅིང་བྱ་སྟེ། ༣༠/༩

དེ་ནས་གཞན་སྐད་བརྡ་རྣམས་ནི། ༢༩/༡

དེ་ནས་གཞན་ཡང་སྒྲུབ་པ་པོས། ༡༡/༡

དེ་ནས་གཞན་ཡང་འཇིག་རྟེན་ནི། ༢༦/༡

དེ་ནས་གཞན་ཡང་བསྟན་པ་ནི། ༢༧/༡

དེ་ནས་གཞན་ཡང་བཤད་པར་བྱ། ༢༢/༡

དེ་ནས་གཞན་ཡང་བཤད་བྱ་བ། ༡༨,༢༠,༣༠,༢༢,༣༥,
༩༥,༩༨,༩༧,༤༠,༤༡/༡,༡,༡,༡,༡,༡,༡,༡,༢༠,༡

དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་བྱ་བ། ༡༧,༢༢/༡,༡

དེ་ནས་ཡི་གེ་བཅུ་དྲུག་འོག ༤/༩༨

དེ་ནས་ཡི་གེ་ཏ་ལྷ་ནི། ༩༦/༡

དེ་ནས་ཡི་དྭགས་ལངས་ནས་ནི། ༣༢/༨

དེ་ནས་རང་གི་བདག་ཉིད་ཀྱི། ༨/༡

དེ་ནས་རང་འབྱུང་སླངས་ནས་ནི། ༣༠/༡༣

དེ་ནས་ལས་ཀྱི་མཆོག་རབ་ནི། ༩༡/༡

དེ་ནས་ལས་ཀྱི་ཕོ་ཉ་མོར། ༩༤/༡༧

དེ་ནས་ལས་ཀྱི་རབ་མཆོག་ནི། ༣༤,༩༤/༡,༡

དེ་ནས་ཤ་ཆེན་ཐམས་ཅད་ཀྱི། ༣༡/༡

དེ་ནས་ས་བདག་གཟུང་བྱས་ལ། ༣༠/༢༢

དེ་ནས་སུམ་ཅུ་གཉིས་པ་གླང་། ༣༠/༡

དེ་ནས་སེམས་མེད་སྨད་བྱའམ། ༢/༡༡

དེ་ནས་སློབ་དཔོན་ལེགས་པར་ནི། ༣/༥

དེ་ནས་གསང་བ་ཆེན་པོ་ཡི། ༢༡/༡

དེ་ནས་གསང་བ་བཤད་པར་བྱ། ༡/༡

དེ་ནས་གསང་བའི་དངོས་གྲུབ་ཆེ། ༡༦/༡

དེ་ནི་ངེས་པར་འགུགས་པར་འགྱུར། ༩༩/༩

དེ་ནི་དེ་ཡི་སྐད་ཅིག་ལ། ༩༤/༢༢

དེ་ནི་མྱུར་དུ་གནོན་པར་འགྱུར། ༩༩/༡༠

དེ་ནི་ཙུམ་པི་ཀར་ཞེས་བྱ། ༡༥/༦

དེ་ནི་ཚེས་བཅུའི་དུས་ཚིགས་ལ། ༡༥/༤

དེ་ནི་ཐོས་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། ༩༧/༥

དེ་ནི་གཟུགས་ཅན་མར་ཞེས་བྱ། ༡༥/༤

དེ་ནི་གསང་བའི་རྒྱུད་འདི་ཡི། ༡༩/༨

དེ་བཞིན་སྐྲ་གྲོལ་གཙོར་གྱུར་པས། ༩༣/༩

དེ་བཞིན་མགྲིན་པ་རིང་བ་དང་། ༡༧/༡༩

དེ་བཞིན་རྒྱལ་རིགས་དག་ལ་བདུན། ༩༠/༦

དེ་བཞིན་ལྷ་བཅུ་རྩ་གསུམ་པ། ༥/༢༠

དེ་བཞིན་ཉི་ཤུ་གཅིག་པ་ཉིད། ༣༠/༡༦

དེ་བཞིན་ཉི་ཤུ་དྲུག་པ་ཡང་། ༣༠/༡༧

དེ་བཞིན་ཉི་ཤུ་རྩ་བདུན་པ། ༤/༢༣

དེ་བཞིན་ཐིག་ལེས་རྣམ་བརྒྱན་པའོ། ༥/༤༧

དེ་བཞིན་ཕོ་ཉ་ལེགས་འགྲོགས་པས། ༢༥/༣

དེ་བཞིན་ཡི་གེ་ཊུ་ཉིད་དང་། ༤/༡༥

དེ་བཞིན་སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་པ། ༤/༤༥
དེ་ཡི་ཁྱིམ་དུ་དགྲ་སྟ་ནི། ༡༦/༡༩
དེ་ཡི་ཁྱིམ་དུ་རྡོ་རྗེའི་མཚན། ༡༦/༧
དེ་ཡི་བགྲོད་པ་བསམ་ཡས་ཞིང་། ༤༡/༢༢
དེ་ཡི་ངལ་བ་དོན་མེད་དེ། ༩/༥
དེ་ཡི་སྟེང་དུ་རྟག་བསྒོམ་པ། ༨༦/༩
དེ་ཡི་ཐུགས་ཀར་གནས་ཕག་མོ། ༣༦/༡༢
དེ་ཡི་དུས་ཚིགས་བཅུ་གཅིག་སྟེ། ༡༩/༢༨
དེ་ཡི་ཡན་ལག་ལྔར་ལྡན་ཞིང་། ༨༩/༡༢
དེ་ཡིས་གཏོར་མའི་བྱ་བ་དག ༡༨/༥
དེ་ཡིས་རང་གི་གདོང་བསྒྲུས་ན། ༣༧/༨
དེ་ལ་ཡིད་ཀྱི་གནས་བཞིན་དུ། ༨༤/༦
དེར་ནི་ཕྱི་བ་མ་ལྷུང་བས། ༢/༡
དེར་གནས་པ་ལས་དཔའ་བོ་ནི། ༣༠/༤
དེར་གནས་དཔའ་བོ་བཏུ་བར་བྱ། ༤/༢
དེས་ནི་དེས་པར་འགུགས་པར་འགྱུར། ༨༨/༧
དོན་ཀུན་སྒྲུབ་ཅེས་བྱ་བ་ཡི། ༣༠/༡༨
དོ་ཤལ་མགོ་བོའི་ཕྲེང་བ་ཡི། ༤༡/༡༨
དྲིལ་བུ་སྒྲ་ལྡན་དབྱངས་པ་དང་། ༢/༢
དྲུག་པ་ཡི་ཡང་གསུམ་པ་དང་། ༤/༢༥
གདུག་པ་རྣམས་ནི་སྐྲག་བྱེད་ཅིང་། ༧/༨༠
གདོད་ནས་གྲུབ་པ་ཡིན་པར་ནི། ༧/༣༡
གདོད་ནས་གྲུབ་བྱེད་འདི་ཡིན་ཏེ། ༧/༣༥
བདག་གི་ལུས་ལ་རྣམ་བཀོད་དེ། ༨༢/༡༡
བདག་ཉིད་ཀུན་ནས་ཞལ་ལ་ནི། ༢/༢༤
བདག་ཉིད་དེ་ཡི་མདུན་དུ་ནི། ༣༧/༡༠
བདུད་ཀུན་རབ་ཏུ་ཞི་བར་བྱེད། ༢༩/༤
བདུན་པ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་དང་། ༤/༢༩
བདེ་བ་ཆེན་པོའི་ངོ་བོར་བྱ། ༣༢/༡༡
བདེ་གཤེགས་པ་འདུས་ཉིད་ལ་དགའ། ༡༥/༨
འདབ་ཆགས་རྣམས་ལས་དང་པ་ཉིད། ༣༢/༨
འདི་ལྔར་ཕྱི་དང་ཕག་གི་ཤ། ༣༡/༢
འདི་དག་མཁའ་འགྲོ་མ་ཡི་ནི། ༣༡/༡༠
འདི་དག་རྟག་བསྟན་གསང་བ་པ། ༢༢/༡༠
འདི་དག་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱི། ༢༢/༢
འདི་དག་ལག་ཏུ་དགོད་པ་སྟེ། ༣༡/༡༡
འདི་ནི་ཁམས་གསུམ་རྒྱལ་ཞེས་བྱའི། ༣༠/༢༢
འདི་ནི་རྐྱེད་པ་ཙམ་གྱིས་ཀྱང་། ༣༠/༢༥
འདི་ནི་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་མཆོག ༧/༡༦
འདི་ནི་རྣལ་འབྱོར་སྔགས་མཆོག་གཙོ། ༡༨/༧
འདི་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་ཀུན་བྱེད། ༢༢/༢
འདི་ནི་རྣལ་འབྱོར་རབ་མཆོག་སྟེ། ༧/༢༢
འདི་ནི་དཔའ་བོའི་གནས་ཡིན་ཏེ། ༣༡/༥
འདི་ནི་རེ་མིག་ལས་བཏུས་པ། ༧/༥༢

འདི་ནི་སངས་རྒྱས་བྱེ་བ་དང་།	༨༦/༡༥
འདི་ནི་ལྷ་མི་ཟིལ་གནོན་འགྲོ།	༢/༢༨
འདི་བས་ཤིན་ཏུ་མཆོག་གྱུབ་པ།	༨༧/༡༩
འདི་ཡི་མཚན་མ་ཁྲིམ་དུ་ནི།	༢༢/༥
འདི་ཡིས་ཇི་སྲིད་འཚོ་ཡི་བར།	༣༥/༢
འདི་ཡིས་སྒྱུར་དུ་ལྷ་དང་ནི།	༣༩/༩
འདི་ལས་རབ་མཆོག་གཞན་དག་ནི།	༤༠/༡༨
འདི་ལས་ཤིན་ཏུ་མཆོག་གྱུར་མེད།	༨༦/༥
འདིར་སྔགས་ཚིག་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ།	༤/༢
འདིར་ནི་འགྲུབ་པར་ཐེ་ཚོམ་མེད།	༨༣/༣༡
འདོད་པའི་འཁོར་ལོ་བསྟན་པ་ནི།	༣༨/༥
འདོད་པའི་དོན་ཀུན་སྒྲུབ་བྱེད་ཡིན།	༥/༡༣
འདོད་པས་དོགས་པ་མེད་པ་རུ།	༣༢/༥
འདོད་མ་དང་ནི་དེ་བཞིན་འཇིགས།	༡༥/༢
རྟུལ་དེ་ལག་པ་གཉིས་ཀྱིས་ནི།	༨༤/༡༩
རྡོ་རྗེ་འཇིགས་བྱེད་རྒྱུད་དུ་ནི།	༢༥/༢༨
རྡོ་རྗེ་ཉིད་ཀྱིས་འདེབས་པར་བཤད།	༣༤/༩
རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་ལ་གཟིགས་པ།	༣༢/༡༣
རྡོ་རྗེ་ཕག་མོའི་རིགས་བྱུང་བའི།	༡༦/༡༠
རྡོ་རྗེ་དབྱེ་བ་ཉིད་དང་ནི།	༣༤/༤
རྡོ་རྗེ་བཟང་དང་རབ་བཟང་དང་།	༨༦/༡༣
རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་མཐེ་བོར་བཞུགས།	༣༡/༥
རྡོ་རྗེའི་འོད་ནི་ཉིད་དག་དང་།	༨༦/༡༣
སྡིག་པ་ཀུན་ལས་གྲོལ་འགྱུར་བ།	༡/༧
སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་དག་སྟེ།	༢༥/༢༧
ནམ་མཁའི་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ནི།	༢/༢༩
གནས་ནི་རབ་ཏུ་དགའ་བའི་ས།	༤༠/༢༡
ན་ཆ་ཚངས་པའི་སྐུད་པ་དང་།	༢༥/༡༨
རྣམ་པ་དེ་ལྟ་དེ་ཡི་ནི།	༢༣/༩
རྣམ་པ་དེ་ལྟར་གྱུར་པ་ཉིད།	༣༡/༤
རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་གཞན་དག་ཀྱང་།	༨༣/༡༣
རྣམ་པར་འགྱུར་བ་བལྟས་ནས་ནི།	༢༠/༦
རྣམ་དབྱེ་རང་དགས་སྔགས་པ་ནི།	༣༩/༨
རྣལ་འབྱོར་རྒྱུད་དུ་མི་རྣམས་ཀྱི།	༢༣/༧
རྣལ་འབྱོར་གནས་རྣམས་ངེས·······།	༢༥/༡༡
རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་འཕོ་བའི་ཚེ།	༤༡/༡༠
རྣལ་འབྱོར་པ་ཡིས་རྟག་པ་རུ།	༢༥/༢༣
རྣལ་འབྱོར་བ་ནི་བསྒོམས་ཤིང་བློས།	༨༧/༡༣
རྣལ་འབྱོར་མ་ཌཱ་ཀི་ལུ་ཏར།	༨༡/༡༠
རྣལ་འབྱོར་མ་ནི་མཁའ་འགྲོ་ཉིད།	༨༦/༡༦
རྣལ་འབྱོར་མ་ནི་སྣ་ཚོགས་གཟུགས།	༡༣/༢
རྣལ་འབྱོར་མ་ཡི་བྱ་བ་ཀུན།.	༥/༢༦
རྣལ་འབྱོར་གཞན་ལ་བརྟེན་པ་ནི།	༢༧/༡༠
རྣལ་འབྱོར་རབ་མཆོག་འདི་མཐོང་ན།	༨/༩

རྣལ་འབྱོར་ལམ་ལ་དགའ་རྣམས་ཀྱིས། ༢༥/༢༤
སྣ་ཚོགས་གང་དག་མདུན་བྱེད་ཅིང་། ༩༢/༥
སྣ་ཚོགས་སྲུང་དུ་ཤེས་བྱ་བ། ༢༣/༩
སྣ་ཚོགས་ཚུལ་གྱིས་གདུལ་བྱ་བ། ༤༡/༡༨
པདྨའི་ཕྱག་རྒྱ་སྦྱིན་བྱ་བ། ༡༧/༩
པུལླིར་མ་ལ་ཡ་དེ་བཞིན། ༩༡/༡༩
པུལླིར་མ་ལ་ཡ་ལ་སོགས། ༩༡/༧
པུལླིར་ལ་སོགས་གང་བསྟན་པ། ༤༠/༢༤
དཔའ་བོ་ཀུན་དང་རྣལ་འབྱོར་མ། ༢༨,༣༩/༢,༢
དཔའ་བོ་ཉིད་འགྱུར་གྲུབ་པ་ནི། ༩/༥
དཔའ་བོ་རྣམས་ཀྱི་སྟན་དག་དང་། ༣༣/༦
དཔའ་བོ་དཔའ་མོ་ཐམས་ཅད་ནི། ༢༥/༡༦
དཔའ་བོའི་འཚོལ་བར་བྱས་ཆཊ་པར། ༣༩/༢
དཔའ་བོའི་ཀློ་མ་སྣ་ཆེན་མ། ༩/༩
དཔའ་བོའི་དབང་པོ་ཞལ་བཞི་པ། ༣༩/༤
དཔའ་བོའི་དབང་ཕྱུག་མི་བྲི་ཞིང་། ༣༨/༢
དཔའ་བོའི་རྩ་བའི་གསང་སྔཊ་མཆོག ༣༨/༡༡
དཔའ་བོས་ཆོ་ག་སྔ་མ་ཡིས། ༩༠/༨
དཔལ་ལྡན་ཧེ་རུ་ཀ་ཡི་ནི། ༩༡/༡༤
དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་དཀྱིལ་འཁོར་གནས། ༢/༢༧
དཔྲལ་བར་ཐིག་ལེ་བྱས་ན་ནི། ༩༧/༡༡
དཔྲལ་བར་མདུང་རྩེ་ལྷ་བྱུར་ཡོད། ༡༨/༡༦
སྤྲིན་དང་བྱ་དང་ལྡན་ཅིག་ཏུ། ༢༨/༣
སྤྱི་བོར་ཐིག་ལེས་མནན་པའོ། ༥/༤༩,༦༡
སྤྲིན་གྱི་མདོག་འདྲའི་བུད་མེད་གང་། ༡༨/༡༨
སྤྲུལ་པའི་སྐུ་ཡི་ལུས་ཅན་དུ། ༡༠/༩
པ་རོལ་ཕྱིན་བཅུ་ས་རྣམས་ནི། ༤༠/༢༩
པན་ཚུན་མདུད་རྒྱུད་དཔའ་བོ་ནི། ༣༤/༣
པོ་ཉ་མོ་དེ་དོན་ཀུན་སྟེར། ༣༦/༣
པོ་ཉ་མོ་ནི་གང་ཡང་རུང་། ༢༠/༡༩
པོ་ཉ་གཙང་སྨྲ་དང་པོ་ཡིན། ༢༥/༢༡
པོ་ཉ་ལ་རྟག་བསྲུང་ཐར་པ། ༢༨/༦
པོ་ཉ་ལྡན་ཅིག་སྐྱེས་གྲུབ་མ། ༡/༥
པོ་ཉའི་ལམ་ལ་དགའ་རྣམས་ཀྱི། ༢༥/༤
ཕྱག་རྒྱ་སྔགས་དང་ཡང་དག་ལྡན། ༢༨/༡༣
ཕྱག་རྒྱུས་གཅེར་བུ་མཆོད་པ་ཡི། ༩༣/༣
ཕྱག་ན་ཁཊྭཾ་མི་ཐོད་བསྣམས། ༢/༡༦
ཕྱག་བཞི་པ་དང་ཞལ་བཞི་པ། ༣༣/༡༣
ཕྱིར་ཡང་གཡོན་ནས་བརྩམས་པ་ཡིས། ༣/༡༠
ཕྱུགས་རྣམས་ཀྱི་ནི་དགུག་པ་ཉིད། ༣༣/༣
ཕྱོཊ་དང་ཕྱོགས་ཀྱི་མཚམས་རྣམས་དང་། ༢/༡༧
བ་ལང་ཤ་དང་རྟ་ཤ་དང་། ༢༨/༡༢
བ་ལང་ཤ་སྲེག་སྦྱིན་སྲེག་ནི། ༣༥/༧
བིལ་བ་དེ་བཞིན་པ་ལ་ཤ། ༤༠/༡༤

བུད་མེད་གང་ཞིག་སེར་མོ་དམར།	༡༨/༢
བུད་མེད་རྣམས་གང་གསོལ་·······།	༡༦/༡༣
བུད་མེད་པད་ཙ་ལྟར་དཀར་གང་།	༡༦/༢
བུད་མེད་དབང་ཕྱུག་ལེན་པར་སྦྱོར།	༢༦/༡༡
བོང་བུའི་རྣམ་པའི་རྣལ་འབྱོར་བདག	༡༣/༡
བྱ་བ་ཀུན་ལ་གྲུབ་སྦྱིན་པར།	༥/༢༥
བྱ་བ་ཀུན་ལ་སྒྲུབ་པ་པོས།	༣༨/༡༤
བྱི་ལ་དང་ནི་ནེའུ་ལེ་དང་།	༣༦/༤
བླ་མ་བརྒྱུད་རིམ་གྱིས་ཐོབ་པའི།	༢༥/༨
བླ་མ་དམ་ཚིག་ལ་འཁྲུ་བ།	༢༨/༦
བླ་མ་ལས་ཀྱང་བླ་མ་སྟེ།	༡/༢
བློ་ལྡན་མཁའ་འགྲོ་མ་བསྒྲུབ་བྱ།	༢༦/༢
བློ་ལྡན་མཐེའུ་ཆུང་བསྐྱོད་པར་ནི།	༢༦/༡༣
བློ་བཟང་ཡིད་ནི་མཉམ་བཞག་པ།	༢/༤
དབང་པོ་གང་དང་གང་ལམ་གྱུར།	༡༢/༤
དབུཏ་འབྱིན་འཛིཏ་པར་བྱེད་གང་ཡིན།	༡༥/༥
དབུཏ་འབྱིན་བར་མ་མཆོག་དག་དང་།	༡/༦
དབུཏ་མི་འབྱིན་པར་སྨྲས་ན་ནི།	༣༤/༡༥
དབུལ་པོ་སྡུག་བསྔལ་གྱིས་གདུངས་པར།	༤༡/༡༢
དབྱངས་ཀྱི་བཅུ་བཞི་པར་ངེས་ལྡན།	༥/༤༨
དབྱངས་ཀྱི་བཞི་པ་ཉིད་ཀྱང་ནི།	༥/༢
དབྱངས་ཀྱི་གསུམ་པ་ཉིད་དག་ནི།	༥/༤
དབྱངས་དག་ལས་ནི་གསུམ་པ་ཉིད།	༥/༤༠
དབྱངས་རྣམས་ལས་ནི་བཅུ་གཅིག་པ།	༥/༣༣
དབྱངས་རྣམས་ལས་ནི་བཅུ་བཞི་ཉིད།	༥/༣༢
དབྱངས་རྣམས་ལས་ནི་གཉིས་པ་ཉིད།	༥/༣༨
དབྱངས་རྣམས་ལས་ནི་གསུམ་པ་ཉིད།	༥/༦༢
དབྱངས་རྣམས་ལས་ནི་གསུམ་པ་དང་།	༥/༣༥
དབྱངས་ཡིག་གི་ནི་གཉིས་པ་ཉིད།	༥/༥
དབྱངས་ཡིག་ལྔ་པ་ཉིད་དང་སྦྱར།	༥/༡༦
དབྱངས་ཡིག་བཅུ་གསུམ་པ་ཉིད་ནི།	༥/༨
དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་དང་ལྡན་པར།	༥/༢,༩
དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པར་ལྡན་པ་ནི།	༥/༣
དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པར་སྦྱར་བར་བྱ།	༥/༢༢
དབྱངས་ཡིག་གསུམ་པ་དང་ལྡན་པའི།	༥/༦
དབྱངས་ཡིག་གསུམ་པར་སྦྱར་བ་ནི།	༥/༢༣
དབྱངས་ལས་བཅུ་གསུམ་པ་ཉིད་དང་།	༥/༣༡
དབྱངས་ལས་གསུམ་པར་ཡང་དག་ལྡན།	༥/༣༩
འབད་དེ་བ་ཡི་འོ་མ་དང་།	༣༤/༢
འབབ་ཆུའི་འགྲམ་དང་རྒྱ་མཚོ་དང་།	༢༨/༡༣
འབྱུང་པོ་ཐམས་ཅད་སྐྲག་བྱེད་ཅིང་།	༥/༣༦
འབྲས་བུ་མི་རྟོག་འདབ་མ་དང་།	༣༢/༢༩
སྦས་དོན་རྙེད་པར་མི་འགྱུར་ཞིང་།	༢༥/༡༢
སྦོམ་ཞིང་རྣམ་འགྱུར་མི་བཟད་པ།	༡༩/༢༥

སྤྲིན་སྤྲེག་སྤྲོག་སྤྲུག་བཅུ་ཡིས་ནི།	༩༢/༣	མིག་དམར་མདོག་ནི་དམར་སེར་ཡང་།	༡༨/༧
སྤྲང་ཧྲི་ཚིགས་མ་སྐྱེ་ཚེ་དང་།	༤༠/༡༦	མིང་པོ་དང་ནི་ཕ་དང་ཡང་།	༢༦/༢
སྤྲུལ་ཆེན་བརྒྱ་ཡིས་ཟིན་པ་ནི།	༩༢/༢༤	མུ་ཏིག་གསེར་དང་རིན་ཆེན་དང་།	༢/༣
མ་དང་སྲིང་མོ་བུ་མོ་དང་།	༢༧/༤	མེ་ཏོག་གིས་ནི་གང་བསྒྲུན་པ།	༩༤/༣༢
མ་ནིང་ཉིད་དུ་བྱ་བ་དང་།	༩༡/༢	མེ་ཏོག་དེ་དག་མ་ལྷུང་ཞིང་།	༩༢/༧
མ་མོ་རྣམས་ལས་ལྷ་བ་ཉིད།	༥/༢༥,༢༨,༤༢	མེ་ཏོག་ཕྲེང་བ་དུ་མ་དང་།	༢/༣༠
མ་མོ་ལས་ནི་གཉིས་པ་ཉིད།	༥/༢༦,༤༡	མེད་པར་གྱུར་ཀུང་བཟའ་བ་ནི།	༣༢/༢
མ་མོ་ལས་ནི་བཞི་པ་ཉིད།	༥/༤༥	མོད་ལ་འགྲུབ་པར་འགྱུར་བ་སྟེ།	༩༦/༨
མ་ཞེས་བྱ་བ་མ་རུ་བཤད།	༡༤/༢	སྨྲུངས་པས་ཞི་བའི་བཏུང་བ་བཞིན།	༡/༡༢
མ་འམ་ཡང་ན་སྲིང་མོ་འམ།	༣༢/༩	སྨྲུར་དུ་འབད་པས་མཆོད་བྱ་སྟེ།	༢༥/༣༢
མ་ལུས་ལུས་པ་མེད་གྲུབ་ཅིང་།	༣༡/༢	དམར་པོས་དབང་དུ་འགྱུར་བ་སྟེ།	༩༢/༢༢
མ་ལུས་ས་རྣམས་སྤྱོད་པ་དང་།	༤༠/༡༠	དམར་ཞིང་སེར་བའི་བུད་མེད་གང་།	༡༨/༢
མ་དང་སྲིང་མོ་བུ་མོ་དང་།	༢༨/༥	རྨི་ལམ་དུ་ནི་བྱ་བ་ཀུན།	༩༢/༡༢
མར་མེའི་ཕྲེང་བ་ཡང་དག་དཀྲིར།	༣༠/༢	རྨུགས་དང་རེངས་པར་བྱ་བ་དང་།	༩༡/༢
མར་ནར་སྟེང་དུ་ཁུ་འགྱུར་ཞིང་།	༤༡/༨	རྨུགས་དང་རེངས་པ་དེ་བཞིན་ཏེ།	༣༢/༡༡
མར་ནར་འབྱུང་བར་མི་འགྱུར་གྱི།	༢༦/༦	སྨིན་མའི་དབུས་ན་རྩེ་གསུམ་ཡོད།	༡༨/༩
མཱ་ལི་ཀ་དང་ཨུཏྤལ་དྲི།	༡༧/༨	སྨོད་པ་དག་ཏུ་མི་བྱ་སྟེ།	༤༡/༡༦
མི་མཆོག་གང་ཞིག་ཀུན་སྤྱོད་པ།	༤༡/༤	ཙནྡན་དམར་པོའི་རྡུལ་ལས་ནི།	༩༤/༦
མི་སྣང་ཕུག་དང་ནམ་མཁར་རྒྱུ།	༢/༡༨	གཙང་སྦྲ་གསུམ་དུ་ཤེས་བྱ་ཞིང་།	༢༥/༣༠
མི་ཞེས་བྱ་བ་ཏ་ཡིན་ལ།	༡༤/༦	གཙོ་མོ་རྣམས་དང་དཔའ་བོ་ནི།	༩༢/༦
མི་ཡི་བདག་པོ་འཁོར་བཅས་པ།	༩༤/༡༢	ཙཀྲ་ནི་མངོན་འགྱུར་ཉིད།	༤༠/༢༢
མིག་གི་ཕྱག་རྒྱར་ཤེས་པར་བྱ།	༢༢/༩	ཚོགས་ཀྱི་ནང་དུ་བཞག་པ་ནི།	༡/༡༢

མཚན་ཉིད་འདི་དག་དང་ལྡན་པ། ༣༢/༩

མཚན་མ་གཉིས་ལ་སྔགས་སྦྱར་ཏེ། ༣༦/༢

མཚན་མོ་རྟག་ཏུ་ཤ་བཟའ་བ། ༨༢/༢

མཚན་མོ་རྟག་པར་གཅེར་བུ་སྟེ། ༢༥/༡༢

མཚན་མོ་རྟག་པར་གསལ་བྱ་ཞིང་། ༢༥/༡༩

མཚན་མོ་བརྟུལ་ཞུགས་ཅན་གཏོར་མ། ༢༥/༣༨

མཚན་མོའང་དེ་བཞིན་ཉིན་མོ་ནི། ༨༢/༨

མཚན་མོའི་སྦྱིན་སྲེག་བྱེད་ལ་གཞོལ། ༨༠/༢

མཚལ་ཆེན་ལན་གསུམ་བཟླས་པ་ཡིས། ༣/༧

ཛྙཱ་ཏི་ཙམ་པའི་དྲི་དང་ལྡན། ༡༦/༤

མཛེས་པའི་ཡི་གེ་ཀུན་མཆོག་ཉིད། ༥/༢༤

རྫོགས་སངས་རྒྱས་དང་དེའི་སྲས་ནི། ༤༡/༢༠

ཝ་ཡི་ཤ་ཡིས་བསྲེགས་བླུགས་བཀྲུས། ༤༠/༧

གཞན་དུ་ན་ནི་ང་མི་སྨྲ། ༨༨/༧

གཞན་ཡང་ཡི་གེ་ཉི་ཤུ་གཉིས། ༦/༡

བཞི་བཅུ་རྩ་གཉིས་པ་ཉིད་ལ། ༥/༡༤

བཞི་བཅུ་རྩ་དྲུག་པ་ལྡན་པ། ༥/༡༥

བཞི་པ་ཡི་ནི་ལྔ་པ་དང་། ༤/༨༡

བཞི་པ་ཡི་ནི་དང་པོ་དང་། ༤/༨༤,༨༥

བཞི་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་དང་། ༤/༢༢

བཞི་པའི་ལྔ་པ་ཉིད་དག་ཡིན། ༤/༢༠

ཟླ་མཚན་གྱི་ནི་ཁྲག་དང་ནི། ༤༠/༨

ཟླ་གཟུགས་ཡི་གེ་བསམས་ནས་ནི། ༨༣/༡༩

ཟླ་བའི་དབུས་སུ་རྣམ་བཀོད་ཅིང་། ༨༣/༡༥

གཟུར་ཅན་མ་དང་ཙུམ་བི་ཀཱ། ༡༥/༢

གཟུགས་ནི་དུ་མ་བྱེད་པ་དང་། ༣/༡༩

གཟུར་བཟང་བ་དང་གཟུར་ངན་དང་། ༨༩/༡༤

བཟའ་བཏུང་མིག་སྨན་གོས་ལ་ནི། ༣༥/༧

བཟའ་དང་སྦྱིན་སྲེག་གཏོར་བྱ་བས། ༣༢/༦

བཟའ་བ་ཟློས་མེད་དེ་ནས་ནི། ༣༥/༢

འོག་ཏུ་བཅོ་ལྔ་པ་ཡི་གདན། ༤/༨༢,༨༣

འོད་བྱེད་གདན་དུ་བྱས་པའོ། ༤/༣༢

ཡང་དག་ཤེས་ཤིང་རྒྱུད་ཤེས་པ། ༢/༨

ཡན་ལག་ལས་འདས་བསྟན་བཅོས……། ༢༥/༡༠

ཡི་གེ་ཀུན་ལ་མཛེས་པ་ནི། ༥/༣༠

ཡི་གེ་དགུ་པར་ཡང་དག་ལྡན། ༥/༨༣

ཡི་གེ་ལྔ་བཅུ་རྩ་ལྔ་པ། ༥/༤༣

ཡི་གེ་ལྔ་བཅུ་རྩ་དྲུག་པ། ༥/༢༡

ཡི་གེ་དྲུག་ཅུ་ལྔ་པ་ལའོ། ༥/༤༤

ཡི་གེ་དྲུག་ཅུ་རྩ་གཅིག་ཉིད། ༥/༢༢

ཡི་གེ་བདུན་གྱི་བདག་ཉིད་ཅན། ༨༣/༡༠

ཡི་གེ་བདུན་ཅུ་བརྒྱད་པར་ལྡན། ༥/༦༠

ཡི་གེ་བདུན་པའི་ཚོ་ག་ཡིས། ༨༨/༢

ཡི་གེ་སུམ་ཅུ་རྩ་གཅིག་པ། ༥/༡༡

ཡི་གེ་སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་པ། ༧/༡༢
ཡི་གེ་ཝཾ་དང་ཨེ་དང་ནི། ༥/༤
ཡི་གེ་བར་མ་དོར་བྱས་ལ། ༦/༢
ཡི་དྭགས་གྲོང་དང་ཁ་བའི་གནས། ༩༡/༧
ཡིག་བདུན་གསང་སྔགས་ཤེས་པར་དང་། ༩༣/༢༠
ཡེ་ཤེས་ལྡན་པའི་རང་སྐྱེ་གནས། ༩༡/༤
ཡེ་ཤེས་ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་དང་སྤྲུལ། ༡༠/༤
གཡོན་ནས་ཡོངས་སུ་བཟློག་པ་ནི། ༡༨/༡༨
གཡོན་པ་ཉིད་དུ་བསྐུལ་དང་བཅས། ༩༩/༣
གཡོན་པ་རྟག་ཏུ་མ་རུངས་པ། ༡༥/༡༡
གཡོན་པ་དག་ནས་ཡོངས་བཟློག་པ། ༡༨/༡༠
གཡོན་པའི་ཀུན་སྤྱོད་ལ་རྟག་དགའ། ༡༦/༡༡
གཡོན་པའི་དབང་ཕྱུག་ཐམས་ཅད་ཀྱི། ༩༢/༦
རང་གི་སྐྱེ་བ་ཤེས་པ་དང་། ༩༨/༦
རང་གི་ཁྲག་ནི་ཐོད་གནས་པ། ༩༦/༣
རང་གི་ཕྱག་རྒྱ་འཆིང་བ་དང་། ༡༦/༡༢
རང་གི་རིགས་ཀྱི་རིག་པ་བཟླས། ༡༦/༡༤
རང་རྫས་ཐིག་ལེས་སངས་རྒྱས་དང་། ༡/༥
རལ་པའི་ཅོད་པན་དར་གྱིས་དཔྱངས། ༢༧/༡༤
རལ་པའི་ཅོད་པན་མདུང་དང་ལྡན། ༣༢/༡༩
རས་ནི་ཟུང་གྱུར་བརྒྱ་ཉིད་དང་། ༣/༡༢
རི་བོ་ཚང་ཚིང་སྨན་ལྗོངས་སམ། ༡/༡༦
རི་བོང་ལ་སོགས་སྤྲུ་ལ་ནི། ༩༦/༦
རི་སུལ་ཚང་ཚིང་གསང་བ་དང་། ༢༥/༡༦
རིག་རྒྱལ་འཁོར་ལོས་སྒྱུར་བའི་སྔགས། ༣༠/༢༩
རིག་པ་ལན་བརྒྱ་བཟླས་པ་དག ༩༤/༣༠
རིག་པའི་རྒྱ་མཚོའི་ལས་དེ་བཞིན། ༣༩/༥
རིག་པའི་རྒྱལ་པོའི་སྙིང་པོ་ནི། ༥/༢
རིག་པའི་རྒྱལ་པོའི་གསང་སྔགས་ཏེ། ༤/༤༥
རིགས་སྐྱེས་རྒྱལ་པོ་ཆོས་ལྡན་འགྱུར། ༤༡/༦
རིགས་ངན་གླུ་གློ་ཡིན་ན་ཡང་། ༢༨/༡༡
རིགས་ལྡེ་ལ་ནི་ཀུན་སྤྱོད་པ། ༢༥/༡༡
རིགས་རྣམས་ཀུན་ལ་སྤྱད་པར་བྱ། ༢༧/༦
རིམས་དང་གདོན་སོགས་བརྗེད་བྱེད་དང་། ༩༣/༡༥
རིམས་དང་གདོན་དང་བརྗེད་བྱེད་ནི། ༩༣/༢༦
རིལ་བུ་མིག་སྨན་གཏེར་རྣམས་སམ། ༢༢/༨
རུ་རྟ་བཤད་པ་དང་ལྡན་པ། ༣༧/༧
རུས་པའི་ཕྲེང་བ་རྣམ་པར་འཕྱང་། ༢/༦
རེ་མིག་བཅུ་དགུ་པ་གཟུང་བྱ། ༣༠/༡༡
རེ་མིག་ཉི་ཤུ་གསུམ་པ་ལ། ༣༠/༢༡
རེ་མིག་ལས་ནི་བཅུ་པ་ཉིད། ༣༠/༢༠
རེ་མིག་སུམ་ཅུ་དྲུག་པ་དང་། ༣༠/༡༢
རེག་ནས་བཞག་ན་གཙོ་མོ་ཆེ། ༩༢/༣
རེག་པ་དང་ནི་སླ་བས་ཀྱང་། ༢༧/༢༥

རོ་ཡངས་ཀུང་ནི་དུ་མ་ཞིག	༣༥/༡༦	བཤད་དང་མ་བཤད་གང་ཅིའང་རུང་།	༣/༢༤
རོ་བསྲེགས་སོལ་བའི་ཕྱེ་མ་དང་།	༢/༣	ས་སྟེང་ན་ནི་རིན་ཆེན་བཞི།	༥/༧
རོལ་མོའི་སྒྲ་ནི་སྣ་ཚོགས་དང་།	༤༡/༡༡	ས་ནི་སྤྱན་ཞེས་བྱ་བར་བཤད།	༣༡/༡༢
རླུང་གི་ཤུགས་ཀྱིས་འོངས་ནས་ནི།	༨༤/༡༥	ས་བོན་འདི་ནི་མཆོག་བཟང་པོ།	༧/༢༤
ལག་མཐིལ་ཤྲཱི་ཧེ་རུ་ཀ་ཡི།	༣༡/༡༠	ས་བོན་ཡི་གེ་འདི་ཡི་ནི།	༧/༢༩
ལག་པ་སྒྱུར་བའི་དབུས་གནས་ལ།	༨༤/༢༨	ས་བོན་འདི་ནི་ལྷ་རྫས་མཆོག	༧/༢༦,༣༨
ལག་པ་གཡོན་པ་ཡོངས་སུ་བསྒྱུར།	༢༥/༩	ས་ཡི་ཆ་ནི་མཉམ་ཡིད་འོང་།	༣༠/༢
ལག་པར་བཟླས་བརྗོད་སྦྱོང་བྱས་ཏེ།	༨༦/༧	སངས་རྒྱས་པ་དང་རྟག་ཏུ་སྒྲ།	༡༧/༡༢
ལན་བརྒྱ་བཟླས་ཏེ་བཟླས་པའི་མཐར།	༨༤/༡༡	སངས་རྒྱས་ལ་སོ་ཐམས་ཅད་མཆོད།	༣༥/༡༢
ལན་བདུན་བཟླས་ལ་བཞི་མདོ་རུ།	༨༨/༩	སུ་ཞེས་བྱ་བ་སྐལ་བཟང་མ།	༡༤/༡༡
ལན་རེ་བཟླས་པའི་མེ་ཏོག་གིས།	༨༤/༣	སུམ་ཅུ་བརྒྱད་པ་འདི་དག་ནི།	༧/༡༨
ལམ་གྱི་བཞི་མདོའམ་ཁྲིམ་དག་གམ།	༨༣/༢	སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་པ་ཉིད་དང་།	༤/༡༨
ལཀྵྨཱ་དང་སོཾ་ནྲྀཏྱ་ར།	༨༡/༡༡	སུམ་ཅུ་གསུམ་པ་ཡང་དག་བླང་།	༣༠/༩
ལས་ནི་གང་དག་ཡོད་པ་དག	༨༥/༦	སེན་མོའི་དོས་ནི་ཏྲ་མགྲིན་གྱི།	༣༡/༩
ལུ་ཞེས་བྱ་བ་བུ་མོ་ཡིན།	༡༤/༨	སེམས་ཅན་སོས་པས་འཇུག་པ་རྣམས།	༤༡/༢༢
ལུགས་འབྱུང་ལུཏ་ལས་བཟློག་པ་ཡིས།	༢༦/༢	སེམས་ནི་རྣམ་པར་གཡོ་བ་དང་།	༡༩/༡༤
ལེགས་རྫོགས་ཡེ་ཤེས་རྒྱུ་སྐྱེས་པའོ།	༢༧/༩	སེར་པོས་དཔུང་ནི་གནོན་པ་དང་།	༨༣/༢༨
ཡོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པའི་ལུས་ཅན་དུ།	༡༠/༣	སེར་ཤིང་གསེར་གྱི་མདོག་འདྲར་སྣང་།	༡༥/༡༢
ཤ་ཆེན་དག་གིས་ལ་ལ་ཞིག	༤༠/༩	སོར་མོ་གཅིག་ནི་སྟོན་པ་ཡིས།	༢༢/༢
ཤིན་ཏུ་རིང་མིན་ཐུང་བའང་མིན།	༡༩/༧	སླར་ཡང་ཉི་ཤུ་རྩ་གཉིས་གཟུང་།	༤/༣༨
ཤྲཱི་ཧེ་རུ་ཀ་ཉིད་དང་ནི།	༨༥/༡༡	སླར་ཡང་ཉི་ཤུ་རྩ་བདུན་པ།	༤/༣༡
ཤྲཱི་ཧེ་རུ་ཀ་ལྷ་མ་ཡི།	༡༩/༢༠	སླར་ཡང་བདག་ཉིད་མཁའ་སྤྱོད་དུ།	༢/༩

གསང་སྔགས་འདི་ཡི་སྙིང་པོ་ནི།	༡༠/༤
གསང་སྔགས་ཟློས་དང་བསམ་གཏན་དང་།	༡/༡༠
གསང་བ་འདི་ནི་མི་བཤད་ཅིང་།	༣༡/༡༨
གསང་བའི་མཚན་ཉིད་མཁའ་འགྲོ་ཡི།	༣༦/༣
གསུམ་པ་དག་དང་ཡང་དག་ལྡན།	༣༠/༡༥
གསུམ་པ་དག་ནི་ངག་ཉིད་དོ།	༨༣/༣༠
གསུམ་པའི་དང་པོ་གང་ཡིན་དང་།	༥/༡༠
གསུམ་པའི་དང་པོ་ཡང་དག་ལྡན།	༧/༡༠
གསེར་ལས་བྱས་པའི་མཆོད་ཕྱིར་ཕོགས།	༣/༡༢
བསམ་གཏན་པ་སོགས་གང་ཅིའང་རུང་།	༨༡/༡༧
བསམ་གཏན་སེམས་པ་ཙམ་གྱིས་སམ།	༥༡/༩
བསམ་མི་ཁྱབ་པའི་ཆོས་ཉིད་ནི།	༥༡/༣༡
བསྒྲུབ་བྱ་སྒྲུབ་བྱེད་ཡང་དག་སྦྱར།	༡/༥
བསྒྲོས་པར་གྱུར་ན་རྒྱལ་པོ་ནི།	༨༥/༡༨
ཏ་ཏ་ཏེ་ཏེ་ཞེས་བྱ་བ།	༨༦/༡༠
ཏྲ་ཏྲ་ཞེས་བྱ་འདི་ཉེ་བར།	༨༢/༦
ཏྲ་ཏྲི་ཏེ་ཏཻ་ཏཿ	༨༤/༢
ཏྲི་ཞེས་བྱ་བ་དེ་བཞིན་ཤ།	༡༥/༥
ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་རོ་ཏུ་ཤེས།	༡༥/༤
ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ་ནི་མཐའ་མར་སྦྱར།	༧/༤༥
ཧེ་རུ་ཀ་དཔལ་རྒྱལ་པོ་ཆེའི།	༥༡/༡༤
ཧེ་རུ་ཀ་དཔལ་སྔགས་ཤེས་ན།	༥/༥༩
ཧེ་རུ་ཀ་དཔལ་ཆེ་ལ་ཕྱོགས།	༢/༡༧
ཧེ་རུ་ཀ་དཔལ་ཡེ་ཤེས་ནི།	༩/༨
ཧེ་རུ་ཀ་ཡི་བརྟུལ་ཞུགས་འཛིན།	༣༦/༡༠
ལྷ་གང་གི་ནི་གནས་གང་ཡིན།	༣/༩
ལྷ་དང་མི་ཡི་བདེ་བ་ནི།	༡/༡༥
ལྷ་དང་ལྷ་མིན་མིར་བཅས་པ།	༢/༡༦
ལྷ་དང་ལྷ་ཡི་ཚོགས་ཀྱིས་ཀྱང་།	༨༣/༥
ལྷ་རྣམས་ཐམས་ཅད་བསྒོམས་ནས་ནི།	༥༠/༡༡
ལྷ་མོ་རྣམས་དང་ཀུན་སྦྱ་བ།	༡༤/༡༤
ལྷ་མོ་གཞན་ཡང་ཀུན་སྦྱོར་བ།	༢༤/༡༠
ལྷར་བཅས་ལྷ་མིན་མི་རྣམས་ནི།	༨༥/༢༤
ཨཀྵ་ཡི་གཉིས་པ་དང་།	༥/༡༤,༡༩
ཨཱ་ཞེས་བྱ་བ་འོངས་པ་ཡིན།	༡༥/༡༢
ཨུཏྤལ་སྔོན་པོར་སྣང་བའི་དྲི།	༡༤/༤
ཨུཥྞཱི་ཥ་ཡི་བཞི་པ་ཉིད།	༥/༥༨
ཨུཥྞཱི་ཥ་ཡི་བཞི་པ་གཟུང་།	༥/༣༡
ཨུཥྞཱི་ཥ་ཡི་བཞི་པ་ལ།	༥༠/༩
ཨུཥྞཱི་ཥ་ཡི་གསུམ་དེ་བཞིན།	༥/༣༦
ཨུཥྞཱི་ཥ་ཡི་གསུམ་པ་ཉིད།	༥/༨༤
ཨུཥྞཱི་ཥ་ཡི་གསུམ་པ་དང་།	༥/༡༥
ཨོཾནམཿཤྲཱཧྲཱཝཻཕཊ	༤/༢

བདེ་མཆོག་དཀའ་འགྲེལ་དུ་གསལ་བའི་ལུང་འདྲེན་ཁག་གི་
ཀ་སྡད་གོ་རིམ།

ལུང་ཚིག	ཤོག་གྲངས།
སྔོན་གྱི་རིགས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི།	༡༧༣
ཁྱད་པར་དུ་བྱེད་པ་མ་གཟུང་བར······།	༢༦༡
ཁྲུ་གཉིས་དང་ནི་ཁྲུ་བརྒྱད་དང་།	༢༢༠
གལ་ཏེ་འདི་ལ་ལྷག་པར་མོས་པར·····།	༥༥༩
གླང་པོའི་པགས་པ་གོས་སུ་གྱོན།	༢༢༢
དགེ་སློང་དག་འདི་སྐད་བདག་གིས·····།	༡༥༦
རྒྱུད་ཆེན་སྒྲུ་འཕྲུལ་དྲ་བ་ལས།	༡༨༠
རྒྱུན་ལ་རྒྱུད་དུ་བརྗོད་པ་སྟེ།	༡༥༩
གཅིག་མིན་དུ་མ་མ་ཡིན་བདག······།	༣༧༧
ཇི་ལྟར་མེ་ཡིས་ཚིག་པ་ལ།	༡༨༨
ཉོན་མོངས་པ་མེད་པ་ཟད་པར་འགྱུར···།	༥༩༤
ཉོན་མོངས་ལ་སོཙ་བདུད་འཇོམས་པས།	༡༧༢
ཉོན་མོངས་ལ་སོགས་བདུད་རྣམས་ནི།	༡༧༢
ཉོན་མོངས་ཤེས་རབ་ཀྱིས་འཇོམས་པས།	༡༧༣
གཏི་མུག་ཉེས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ནི།	༡༧༨
སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ཆོས་རྣམས་ལས་སྟོང་པ།	༦༥༥
བསྟན་བཅོས་དག་ནི་ཐམས་ཅད་དང་།	༡༣༩
ཐོག་མ་ཐ་མ་དབུས་མེད་ཅིང་།	༡༥༡
དད་པའི་ནོར་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་ནོར····།	༦༧༨
དམ་པའི་ཆོས་ནི་སྟོན་པ་དང་།	༢༡༡
དྲི་ཆེན་དྲི་ཆུ་ཁུ་བ་ཁྲག	༢༠༨
མདོ་དོན་འཆད་པར་འདོད་པ་ཡིས།	༡༣༥
འདས་པའི་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱིས····།	༡༣༤
འདི་དེ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི།	༢༣༧
འདི་ནི་དམ་ཚིག་དཀྱིལ་བའི་རྒྱ།	༢༠༠
འདོད་ཆགས་བྲལ་བ་ལྷ་བུའི་སྡིག	༡༨༨
འདོད་པ་གཟུགས་དང་སྒྲ་ལ་སོགས།	༡༤༦
འདོད་པའི་ལོངས་སྤྱོད་ཐམས་ཅད་ལ།	༡༤༦
རྡོ་རྗེ་སྙིང་པོ་སྙིང་རྗེ་ཆེ།	༥༩༤
བསྡུས་པའི་དོན་དང་ཕྱོགས་ལས་མདོ།	༡༣༥
ན་དང་ག་དང་ཧ་དེ་བཞིན།	༢༠༡
དབང་ཕྱུག་དང་ནི་གཟུཙ་བཟང་དང་།	༡༧༢

འབྲེལ་བ་དང་ནི་རྗེས་མཐུན་ཐབས། ༡༤༣
མར་གྲིས་གང་བའི་བུམ་པ་ནི། ༡༨༤
མིག་ཡངས་ཁྱུ་བ་གླང་ས་ནས་ནི། ༡༩༨
མེ་དང་དབང་ཆེན་རླུང་དང་ཆུ། ༡༩༤
དམན་པ་ཡང་དགོས་པ་མ་བསྟན་ན······། ༡༣༨
དམན་པའི་ཡུལ་ནི་བདུད་རྩི་སྟེ། ༣༤༢
གཞོན་ནུ་མ་ཡི་བདེ་བ་བཞིན། ༡༨༢
གཡས་པས་ཅིག་ཤོས་ལག་པ་ཡི། ༡༨༢
རང་གི་འཁོར་བ་འཇིག་རྟེན·······། ༣༥༧
རང་རྟག་དམ་ཚིག་སློབ་དཔོན་ནི། ༢༤༤
ལས་རྣམས་བསྐལ་པ་བརྒྱ་རུ་ཡང་། ༨༦༥
ཤམ་ནི་བདེ་བའི་ཚིག་ཉིད་དེ། ༡༤༨
ཤྲཱི་ནི་གཉིས་མེད་ཡེ་ཤེས་ཏེ། ༡༤༥
སེམས་ཀྱིས་སེམས་མི་ཤེས་པའོ། ༨༨༨
སེམས་ཅན་རྣམས་ནི་སྨིན་པར་མཛད····། ༣༥༦
སེམས་དང་ཡིད་དང་རྣམ་ཤེས་དང་། ༡༩༧
སྲིད་པ་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་དག ༢༣༥
སློབ་དཔོན་དེ་ལྟ་བུའི་ལྡན་ཅིག་སྐྱེས་པའི། ༦༡༢
གསེར་དང་ཟླ་བ་ཉིན་འབྱེད་རྣམས། ༣༦༠
ཧེ་རུ་ཀ་དཔལ་ཞེས་མིང་གིས། ༡༨༥
ཧེས་ནི་བདུད་ལས་རྒྱལ་བ་སྟེ། ༡༤༥

●

ये धर्मा हेतुप्रभवा हेतुस्तेषां तथागतो ह्यवदत् ।
तेषां च यो निरोध एवंवादी महाश्रमणः ॥

॥ शुभमस्तु ॥

***